निराला की साहित्य साधना

तृतीय खण्ड : पत्र-संग्रह

रामविलास शर्मा

राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली : पटना

राम सहाय तेवारी

महिषादल के राजकुमार देवप्रसाद गर्ग बहादुर की कृपा से मुझे एक पुराना फोटोग्राफ़ प्राप्त हुआ था जिसमें बंगाल के गवर्नर, महिषादल महाराज तथा कुछ अन्य व्यक्तियो की पंक्ति के पीछे कई सिपाहियों के साथ रामसहाय तेवारी खड़े हैं। उस पुराने फोटोग्राफ़ से कला-कुंज आगरा के सत्यनारायण 'छविरत्न' ने यह चित्र तैयार किया है। इस सहयोग के लिए मैं इन दोनों सज्जनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

२५-७-७६ —रामविलास शर्मा

सूची

पहला भाग

पत्र-लेखक **पत्र-संख्या**

दूसरा भाग

जिसे पत्र लिखे गये **पत्र-संख्या**

तीसरा भाग

दूसरे संस्करण की भूमिका

१. भक्ति साहित्य और छायावाद

इंग्लैन्ड में व्यापारिक पूंजीवाद के युग में जो साहित्य रचा गया, वह पुनर्जागरण काल का साहित्य कहलाता है; औद्योगिक पूंजीवाद के युग में जो साहित्य रचा गया, वह रोमान्टिक आन्दोलन का साहित्य है। रोमान्टिक साहित्य की अनेक विशेषताएं पुनर्जागरण साहित्य में मिलती हैं, रोमान्टिक आन्दोलन एक तरह से पुनर्जागरण का दूसरा संस्करण है। भारत में व्यापारिक पूंजीवाद के युग में जो धारा सर्वाधिक व्यापक और शक्तिशाली थी, वह भक्ति साहित्य की थी। हिन्दी का छायावादी साहित्य इंग्लैन्ड के रोमान्टिक साहित्य से काफी मिलता-जुलता है, उसे स्वछंदतावाद का नाम भी दिया गया है। इंग्लैन्ड का पुनर्जागरण और हिन्दी का भक्ति साहित्य समकालीन हैं किन्तु हिन्दी का छायावाद अंग्रेजी के रोमान्टिक आन्दोलन से सौ साल बाद का है। इसका कारण क्या है? और छायावाद तथा भक्ति साहित्य में क्या वैसा ही संबंध है जैसा रोमान्टिक और पुनर्जागरण साहित्य में है?

व्यापारिक पूंजीवाद के युग में भारत स्वाधीन है, औद्योगिक पूंजीवाद के युग में भारत पराधीन है। इंग्लैन्ड में जब औद्योगिक विकास होता है, तब भारत का देहातीकरण होता है, उसका खेतिहरपन बढ़ता है। भक्ति साहित्य और पुनर्जागरण साहित्य की धाराएं सामंत विरोधी हैं; भक्ति साहित्य के निर्माण में किसानों-कारीगरों और उनसे संबद्ध कवियों की जैसी भूमिका है, वैसी उनकी भूमिका अंग्रेजी साहित्य में नहीं है। व्यापारिक पूंजीवाद के युग में हिन्दी प्रदेश की नगर-सभ्यता राजभाषा फ़ारसी से बँधी हुई है, देशी भाषा के माध्यम से वह अपनी भूमिका नहीं निवाह पायी। सामंती साहित्य की प्रतिनिधि रीतिवाद की धारा—पुनर्जागरण काल में क्षीण है, इंग्लैन्ड में गृह युद्ध के बाद उसे नया जीवन मिलता है। भक्ति साहित्य के समानान्तर, केशवदास के बावजूद, यहां भी रीति साहित्य की धारा क्षीण है, दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता के विघटन के बाद रीतिवाद को नया जीवन मिलता है। अंग्रेजी राज के कारण भारत के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन में जो अवरोध पैदा हुआ, उसका परिणाम है इंग्लैन्ड की तुलना में यहां रीति साहित्य की दीर्घकालीनता। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, निराला, इन सबकी प्रगतिशीलता मुख्यतः उनके रीतिवाद विरोध से निर्धारित होती है। इंग्लैन्ड के रोमान्टिक साहित्य का झुकाव वहां श्रमिक पूंजीपति विरोध के कारण समाजवादी विचारधारा की ओर होने लगा

है। भारत में यह झुकाव बीसवीं सदी में दिखाई देता है, १९१७ की बोलशेविक क्रान्ति से उसे जबर्दस्त प्रेरणा मिलती है। समाजवादी विचारधारा की मुख्य भूमिका यहां साम्राज्य-विरोधी है। छायावाद औद्योगिक क्रान्ति के दौरान या उसके बाद का रचा हुआ साहित्य नहीं है; वह औद्योगिक विकास के लिए प्रयत्नशील, राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले समाज का साहित्य है। रीतिविरोध के साथ मनुष्य के भावबोध की मुक्ति और विकास से साहित्य में जो विशेषताएं पैदा होती हैं, वे अंग्रेजी के पुनर्जागरण और रोमान्टिक साहित्य में विद्यमान हैं। वे भक्ति और छायावादी साहित्य में भी हैं। फिर भी रोमान्टिक और पुनर्जागरण साहित्य में उतना फ़र्क नहीं दिखाई देता जितना यहां छायावादी और भक्ति साहित्य में दिखाई देता है। भक्ति साहित्य के रचनाकार लगभग या पूरी तरह संपत्तिहीन हैं। छायावादियों में जो लगभग संपत्तिहीन हैं, वे भक्ति साहित्य के बहुत निकट हैं, शेष अपनी मध्यवर्गीयता के कारण दूर हैं।

मुकुटधर पाण्डेय ने १९२० में छायावाद पर जो निबंध लिखा, उसका विशेष महत्व यह है कि उसमें साहित्य को रीति और शास्त्रीय नियमों से मुक्त करने पर खूब जोर दिया गया है। कई किस्तों में प्रकाशित होने वाला यह निबंध—'हिन्दी में छायावाद'—डा. बलदेव द्वारा संपादित मुकुटधर पाण्डेय के लेख संग्रह **छायावाद एवं अन्य श्रेष्ठ निबंध** (श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़, १९८४) में सुलभ है। पाण्डेय जी ने लिखा है, कविता जब अपनी जन्म कुटीर से बाहर आना चाहती है, तब "उसे नियमों और रीतियों द्वारा चारों ओर से घेर रखने का यत्न आरंभ हो जाता है···बेचारा कवि इन रीतियों के दबाव में यहां तक आ जाता है कि वह उनकी सीमा से एक पग भी आगे बढ़ाना पाप समझता है···सभ्यता साहित्य में रीतिग्रंथों का पहाड़ खड़ा कर देती है, जिससे मौलिकता का द्वार रुक जाता है···नैतिक साहस के अभाव से कवि रीतिग्रंथों की सीमा को नहीं लांघ सकता।" (पृ. ५३-५४)। पंत जी ने **पल्लव** की भूमिका में, निराला ने **परिमल** की भूमिका तथा अन्य निबंधों में इसी तरह रीतिवाद का विरोध किया। ऐसी बातें महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचन्द्र शुक्ल भी कह रहे थे; मुकुटधर पाण्डेय का रीतिविरोध अधिक व्यापक है। वे कवि की प्रतिभा को, उसके भावावेश को शास्त्रीय और अशास्त्रीय नियमों से मुक्त रखना चाहते हैं। द्विवेदी जी और उनके सहयोगियों के लिए यह बात भी नयी नहीं है किन्तु मुकुटधर पाण्डेय ने उस पर ज़ोर अधिक दिया है। इसके सिवा उन्होंने प्रतिभा और भावावेश की बात को कवि की मौलिकता और उसके व्यक्तित्व से जोड़ा है। लिखा है, "मौलिकता का अभाव व्यक्तित्व का बाधक है जो कवि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बिना व्यक्तित्व दिखलाए कवि प्रतिपत्ति किसी को नहीं मिल सकती। वह व्यक्तित्व भाव में हो, भाषा में हो, छन्द मे हो या प्रकाशन रीति में हो, पर कविता में हो ज़रूर; जिसकी कविता में व्यक्तित्व नहीं, उसे कवि नहीं, अनुकरणकारी कहना चाहिए।" (पृ. ५४)।

रहस्यवाद और अध्यात्मवाद की चर्चा में व्यक्तित्व प्रकाशन की बात आंखों से ओझल हो जाती है। प्रतिभा, भावावेश, मौलिकता, इन सबका घनिष्ठ संबन्ध व्यक्तित्व प्रकाशन से है। यह व्यक्तित्व प्रकाशन स्वतंत्रता की भावना से जुड़ा हुआ है। "संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता की इच्छा रखता है, फिर उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों

पसंद होगा, यह बात समझ में नहीं आती।" (उप.) मानसिक और सामाजिक क्षेत्रों में स्वाधीनता का महत्व गद्य और पद्य में निराला का प्रिय विषय है। "छायावाद भाव राज्य की वस्तु है" (पृ. ६१); भाव की सत्ता रीतिवादी भी स्वीकार करते थे। यहां बात सामान्य भावों की नहीं, भावावेश की है। पाण्डेय जी के अनुसार कवि "अपने हृदय के आवेशों को प्रकट करता है" (पृ. ५४); "कविता लिखने के पूर्व उसके हृदय में जो भावावेश प्रकट हुए थे, वे शब्द सीमा के भीतर से नहीं आये थे। वे केवल उसके अनुभूति राज्य की सामग्री थे।" (पृ. ६१)। भावावेश की यह विशेषता छायावाद को रीति साहित्य से ही नहीं, समाजसुधारक, उपदेशात्मक समकालीन कविता से भी अलग करती थी, साथ ही उसे भक्ति साहित्य से जोड़ती थी। भावावेश अनिवार्यतः कवियों को लिरिक अथवा प्रगीतकाव्य की ओर ठेलता है। इंग्लैन्ड के नवजागरण काल में नाटक और महाकाव्य लिखे गये, रोमान्टिक काल में खंडकाव्य और नाटक लिखे गये; दोनों युगों में वहुत से गीत और प्रगीत लिखे गये। प्रगीत का गुण महाकाव्य, नाटकों और खण्डकाव्यों में भी है। यही स्थिति छायावादी और भक्ति साहित्य की है। रीतिकाव्य में मुक्तक वहुत लिखे गये, इनमें रीति-मुक्त वहुत कम है; इसलिए उनमें भावविह्वल गेयता का अभाव है।

छायावादी कविता का एक अन्य गुण उसे रीतिकाव्य से अलग करता है, वह है "चित्रकारी और संगीत का अपूर्व एकीकरण" (पृ. ६२)। अनुप्रासों की अतिशयता के कारण रीतिकाव्य में भाषा का सहज संगीत दवा रहता है, उसका उन्मुक्त प्रवाह भक्ति-काव्य में है। रीतिकाव्य की चित्रमयता अधिकतर रूढ़िग्रस्त होने के कारण प्रभावशाली नहीं होती। छायावादी कविता के चित्र, भाषा और छन्द का संगीत सांकेतिक व्यंजना के माध्यम वनते हैं। रीतिकाव्य में संकेतों की कमी नहीं पर सभी इशारे पहले से जाने पहचाने होने हैं। शब्द के निश्चित अर्थ की सीमा से आगे वढ़कर चित्र और संगीत की जो सांकेतिक व्यंजना है, वह नियमों की पकड़ में नहीं आती। "यदि यह कहा जाय कि ऐसी रचनाओं में शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य को खोकर सांकेतिक चिह्न मात्र हुआ करते हैं तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।" (पृ. ५९)। आवश्यक नहीं कि शब्द अपना स्वाभाविक मूल्य खो दें; सांकेतिक व्यंजना शब्दों के सहज मूल्य से जुड़ी होनी है, उससे अलग भी होती है। जैसे शब्दों की अनिश्चित व्यंजना उनके सहज निश्चित अर्थ का निषेध नहीं है, वैसे ही भाव विह्वलता मनुष्य की वैचारिक दृढ़ता का निषेध नहीं है। सूक्ष्म भाववोध और विवेकशील चिन्तन में गहरा संवंध है। मनुष्य का अन्तर्जगत् उसके वाह्य जगत् से असंवद्ध नहीं होता। प्रगीत का गुण नाटक में हो सकता है, नाटकीयता प्रगीत में हो सकती है। व्यक्तित्व का विकास और प्रकाशन सामाजिक संघर्ष से अलग रहकर नहीं, उसमें भाग लेने से संभव होता है।

पाण्डेय जी ने छायावाद की कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का समर्थन किया है जो नकारात्मक हैं; वे उसे कमजोर वनाती थीं और उनका विरोध हुआ तो यह उचित ही था। पाण्डेय जी ने छायावादी कवि-दृष्टि के लिए लिखा है, "छायावाद के कवि वस्तुओं को एक असाधारण दृष्टि से देखते हैं···इसमें स्थैर्य और पूर्णत्व का नितान्त अभाव रहता है, जिससे वह क्षण भर में, विजली की तरह, वस्तु को स्पर्श करती हुई निकल जाती है। पर यह स्पर्श इतना क्षीण होता है कि प्रायः वस्तु को उसका ठीक-ठीक ज्ञान भी नहीं होता।"

(पृ. ५९-६०)। यह एक प्रकार का अस्पष्ट विववाद हुआ। संभव है, इस प्रसंग में कुछ पाठकों को शमशेर बहादुर सिंह की कविताएं याद आयें। वस्तु को कवि-दृष्टि का स्पर्श-बोध हो चाहे न हो, कवि को वस्तु का --अनेक वस्तुओं के आपसी संबंध का--बोध अवश्य होना चाहिए। वर्ना यथार्थ जगत् से उसका नाता टूट जायेगा या कमज़ोर हो जायेगा। छायावादी कवि के सपने किसी नशेबाज़ की फैन्टसी हो जायेंगे। पाण्डेय जी ने सटीक उपमा देते हुए लिखा है, "जिस प्रकार किसी भंग भवानी भक्त के रंजित लोचनों में कोई वस्तु, उसकी भावना या लहर के अनुसार कुछ और ही सूझने लगती है, वही हाल इन कवियों की दृष्टि का भी समझिये।" (पृ. ६०)। यह बात छायावादी कविता की प्रशंसा में कही गयी है। स्वभावतः बुद्धिवाद से ऐसी कविता का कोई संबन्ध न होगा। पाण्डेय जी छायावादी कवि के आनन्द स्पन्दन के बारे में एक बंगाली लेखक का कथन उद्धृत करते हैं, "उसे बुद्धि के मार्ग से समझने की चेष्टा करना व्यर्थ है।" (पृ. ६२)। व्यंग्य चित्रों के छायावादी कवियों को मानों ध्यान में रखकर पाण्डेय जी ने लिखा है, "उनकी कविता देवी की आंखें सदैव ऊपर की ही ओर उठी रहती हैं। मृत्युलोक से उसका बहुत कम संबंध रहता है। वह बुद्धि और ज्ञान की सामर्थ्य सीमा को अतिक्रम करके मन-प्राण के अतीत लोक में ही विचरण करती रहती है, क्योंकि यहां उसे अपनी रुचि तथा इच्छापूर्ति का यथेष्ट अवसर मिला करता है।" (पृ. ६३)। यह छायावादी कविता का कमजोर पलायनवादी रुझान है. उसका ऐसा स्पष्ट उल्लेख अन्य छायावादी लेखकों के यहां दुर्लभ है।

इस कमज़ोर रुझान का संबन्ध पाण्डेय जी ने अध्यात्म चिन्तन से जोड़ा है। छायावादी कवि "गूढ़ातिगूढ़ रहस्य में ही मग्न रहते हैं।" (उप.)। पुराने रहस्यवाद का संबन्ध मृत्युलोक से था, उस समय के सामंत विरोधी संघर्ष से था। नये रहस्यवाद का संबंध भी मृत्युलोक से था किन्तु साम्राज्य विरोधी संघर्ष से उसका संबन्ध कमजोर था। हिन्दी के छायावादी कवियों का गहरा संबन्ध इस संघर्ष से है किन्तु ऐसा संबन्ध यथार्थवाद के स्तर पर है, रहस्यवाद के स्तर पर नहीं। रवीन्द्रनाथ का एक गीत उद्धृत करने के बाद पाण्डेय जी ने लिखा है, "उन्होंने अपने गीतों के विषय में जो कुछ कहा है, वही यहां संपूर्ण छायावाद के लिए कहा जा सकता है।" (पृ. ६५)। छायावाद को हिन्दी साहित्य में क्यों स्थान मिलना चाहिए, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पाण्डेय जी ने लिखा है, "हिन्दी में 'आध्यात्मिक साहित्य' का एकदम अभ व न होने पर भी वह कदाचित् पर्याप्त नहीं।" (पृ. ७२)। अध्यात्म जगत् और साधारण जगत् का संबन्ध इस तरह निश्चित होता है: "छायावाद अध्यात्म जगत् को लेकर खेलने की वस्तु है। जीवन यात्रा में उसका बहुत कम हाथ रहता है। अतएव केवल उसे ही लेकर जो जीना चाहते हैं, वे अवश्य भूलते हैं। वह मुट्ठी भर लोगों की क्रीड़ा भूमि है। उसमें साधारण जगत् का निर्वाह नहीं।" (उप.)।

पाण्डेय जी छायावादी धारा के प्रवर्तकों में हैं। उसके बारे में कई बातें उन्होंने अपने कविकर्म को ध्यान में रखकर नहीं, दूसरों की पुस्तकें पढ़कर लिखी हैं। 'छायावाद' शब्द के बारे में लिखा है, "अंग्रेजी या किसी पाश्चात्य साहित्य अथवा वंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखनेवाले तो सुनते ही समझ जायेंगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है...मैंने इस विषय में पाश्चात्य लेखकों की दो एक छोटी

मोटी रचना छोड़कर और कोई किताव नहीं पढ़ी। हां कवीन्द्र रवीन्द्र के मीष्टिक साहित्य की कुछ पुस्तकें अवश्य पढ़ी हैं। यद्यपि इस अल्पाति अल्प ज्ञान को लेकर एक नवीन और गहन विषय पर कुछ लिखने बैठना हास्यास्पद है, तथापि हिन्दी में उसका नितान्त अभाव देखकर, इधर उधर की कुछ टीका टिप्पणियों के सहारे, मैं यह दुस्साहस कर रहा हूं।" (पृ. ५६)।

कवि मुकुटधर पाण्डेय को भक्ति साहित्य जिस तरह द्रवित करता है, उस तरह नयी रहस्यवादी कविता नहीं। जिस निवंध में छायावादी कविता की अनिवार्य अस्पष्टता, साधारण जगत् से उसके संवंध-विच्छेद के लिए इतना आग्रह है, उसी में उन्होंने अपने एक अनुभव के वारे में वहुत स्पष्ट शब्दों में लिखा है, "अभी उस दिन जव हम श्रीमद्भागवत का दशम स्कंध पढ़ते-पढ़ते रो पड़े थे, तव हमने सोचा कि ऐसी सरल, सरस एवं स्वाभाविक रचना का भी तिरस्कार क्या किसी हृदय से संभव है ? नहीं, कदापि नहीं।" (पृ. ७२)। यही हाल महावीर प्रसाद द्विवेदी का था। दोनों की भावभूमि में वड़ी समानता थी। रवीन्द्रनाथ को इस भावभूमि का ज्ञान था। उन्होंने बंगाली जमींदार के हिन्दुस्तानी दरवान पर एक मार्मिक कविता लिखी है। अवकाश के समय वह तुलसी रामायण पढ़ता है और रोता जाता है। इस ग्रंथ के वारे में पाण्डेय जी ने लिखा है,

विश्व वाङ्मय का है शृंगार, हिन्द हिन्दी का है अभिमान,
राष्ट्र को है अनुपम अवदान, तुम्हारा मानस ग्रंथ महान्।

(डा. वलदेव द्वारा संपादित पाण्डेय जी का कविता संग्रह **विश्ववोध**, श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़, १९८४; पृ. ९५)। तुलसीदास के परम भक्त निराला भी थे। भक्ति साहित्य से छायावाद का ऐसा ही नाता है।

निराला और मुकुटधर पाण्डेय का संवन्ध 'समन्वय' काल का है। **विश्ववोध** में 'स्वागत' कविता के नीचे संपादकीय टिप्पणी है, "समन्वय १९२०, महाकवि निराला के आग्रह पर"। (पृ. ६२)। 'समन्वय' का पहला अंक माघ संवत् १९७८ वि. में निकला था। यह ईस्वी सन् १९२२ की वात है। ९ नववर १९२१ के कार्ड में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने निराला को सूचित किया था कि मायावती आश्रम के स्वामी माधवानंद ने संपादक के लिए विज्ञापन दे दिया है, फिर १७ दिसंवर १९२१ के कार्ड में लिखा था, "जान पड़ता है स्वामी जी ने वहाना कर दिया है। पसंद किसी और ही को किया होगा।" रामकृष्ण मिशन के इस पत्र से निराला का घनिष्ठ संवन्ध था। उसके प्रथम वर्ष के पहले अंक में मुकुटधर पाण्डेय की कविता छपे, यह तथ्य रोचक है। प्रथम वर्ष के ग्यारहवें और वारहवें अंकों में भी उनकी कविताएं प्रकाशित हुई थीं। उनकी प्रतिलिपि मेरे पास नहीं है। 'स्वागत' कविता इन्हीं में से कोई एक होगी। आओ हे घनश्याम उदार---कविता की यह पंक्ति पारंपरिक है किन्तु घनश्याम की व्याप्ति के साथ मूर्ति विधान नया है :

आओ, साथ उषा के आओ
किरणों के मिस कर फैलाओ
विकसित अमल कमल बन जाओ
पहनो मुक्ताहार।

जयशंकर प्रसाद से अपनी भेंट के बारे में पाण्डेय जी ने लिखा है, "उन्होंने अत्यन्त धीमी आवाज में कहा, 'आप छायावाद के प्रथम कवि हैं।' मैंने कहा--'मैंने तो आपका अनुकरण किया था।' उनकी आंखें सजल हो गयीं।" (**छायावाद एवं अन्य श्रेष्ठ निबंध**, पृ. १६६)। पाण्डेय जी ने बहुत तरह की कविताएं लिखी हैं, उनमें शैली की विविधता है। उनकी कुछ रचनाएं पढ़कर प्रसाद, निराला, पंत का स्मरण हो आता है तो कुछ को पढ़कर मैथिलीशरण गुप्त और सनेही का।

पाण्डेय जी ने अपनी कविता के संदर्भ में लिखा है, "किसान मेरा प्रिय विषय था"। (उप., पृ. १६६)। इस विषय पर लिखते समय कवि छायावाद की व्याख्याएं भूल जाये तो आश्चर्य नहीं।

धनियों को है मौज रात दिन हैं उनके पौ बारे
दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे···
वे हैं सुख साधन से पूरित सुधर घरों के वासी
इनके टूटे फूटे घर में छाई सदा उदासी···
भारत का यह कृषक खेत में कठिन काम करता है,
किन्तु वर्ष में कई महीने भूखों ही रहता है।

(**विश्वबोध**, पृ. १८-१९)।

छायावादी कवियों ने हिन्दी पाठकों के भावबोध में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। इसके साथ ही उन्होंने उनकी सामाजिक चेतना को निखारा। वे स्वाधीनता आन्दोलन के समर्थक हैं; इससे आगे बढ़कर वे श्रमिक जनता के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हैं। उनका यह कार्य कविता से अधिक गद्य में संपन्न होता है।

२. छायावाद और हिन्दी नवजागरण

इस पुस्तक के दूसरे खंड के अन्त में छायावाद का स्वरूप निर्धारित करते हुए मैंने लिखा था, "छायावाद साम्राज्य विरोधी चेतना के निखार का साहित्य है" और "छायावाद नये सामन्त विरोधी मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का साहित्य है"। इन धारणाओं के समर्थन में निराला की विचारधारा का विश्लेषण, मुख्यतः उनकी गद्य रचनाओं के आधार पर, मैंने उक्त खंड के प्रारंभिक अंश में प्रस्तुत किया था। "छायावादी" साहित्य पढ़ते समय साम्राज्य विरोधी चेतना, सामन्त विरोधी मूल्य जैसी चीजें अप्रासंगिक मालूम होती हैं। किन्तु जहां छायावादी कलाकार, पत्रकारिता वाले गद्य की ठोस धरती पर पांव रोपे हुए, साधारण पाठकों से बातें करते हैं, वहां साम्राज्य विरोधी चेतना और सामन्त विरोधी मूल्य जैसी चीजें निहायत प्रासंगिक ही नहीं, इतनी प्रासंगिक मालूम होती हैं कि उनके बिना उस गद्य का विवेचन हो ही नहीं सकता। यह गद्य पूर्ववर्ती भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और निकटवर्ती महावीर प्रसाद द्विवेदी के लेखन कौशल से जुड़ा हुआ है।

छायावाद के स्वरूप निर्धारण के प्रसंग में महावीर प्रसाद द्विवेदी का उल्लेख मैंने स्वाधीनता आन्दोलन के सुधारवादी पक्ष और उसके प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त के साथ किया है। भाव बोध और कलात्मक साहित्य के विचार से यह बात सही है। छाया-

वादी कविता से द्विवेदी जी को प्रेम न था, उन्होंने उसका विरोध किया था। किन्तु उनकी विचारधारा की भूमि लगभग वही है जो छायावादी गद्य लेखकों की है। जो अन्तर है, वह संभवतः इसलिए है कि द्विवेदी जी का अधिकांश गद्य लेखन सन् २० से पहले का है, छायावादियों का सन् २० के वाद का है। सन् ३० के वाद स्वयं छायावादियों के लेखन में परिवर्तन हुआ। यही नहीं कि राजनीति में वामपक्ष की ओर उनका अधिक झुकाव हुआ वरन् स्मरणीय है कि "छायावादी" कल्पना के स्वरूप में भी बहुत वड़ा परिवर्तन हुआ। "राम की शक्ति पूजा" और "तुलसीदास" छायावादी रचनाएं हैं किन्तु इनमें निराला की कल्पना का जो स्वरूप है, वह उनकी सन् ३० से पहले की रचनाओं में बीज रूप में ही है। इसलिए सन् २० से पहले द्विवेदी जी के गद्य में साम्राज्य विरोधी चेतना का वह निखार न मिले जो सन् २० के बाद निराला के गद्य में है, तो इस पर आश्चर्य न होना चाहिए। द्विवेदी जी की तुलना में भारतेन्दु की साम्राज्य विरोधी चेतना और भी कम निखरी हुई जान पड़े तो इस पर भी आश्चर्य न होना चाहिए।

भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा तथा **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**, मेरी ये दो पुस्तकें जिस साम्राज्य विरोधी, सामंत विरोधी चेतना का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं, उसी के अगले विकास का विवेचन **महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण** में है। प्रथम विश्व युद्ध के वाद जो हिन्दी लेखक राजनीति में सक्रिय थे, उनके गद्य लेखन का बहुत कुछ संवन्ध भारतेन्दु युग के रचना कौशल से था। इस सिलसिले में कुछ सामग्री **भारत में अंग्रेज़ी राज और मार्क्सवाद** के पहले खंड में है। **निराला की साहित्य साधना** के दूसरे खंड में छायावादी गद्य के वारे में जो वातें मैंने कही हैं, उनकी पुष्टि एक अन्य छायावादी कवि और गद्यकार का हवाला देते हुए मैं यहां करूंगा। किन्तु उससे पहले **निराला की साहित्य साधना** का पहला खंड पढ़कर श्रीकान्त जोशी ने मुझे जो पत्र लिखा था, उसे उद्धृत करना ज़रूरी है।

दि. ११.१२.६९

आदरणीय शर्मा जी,

अभी हाल ही में मैंने आपकी निराला जी से सम्बन्धित अप्रतिम कृति समाप्त की। यह कृति साहित्यकारों की जीवनी लिखने की विशिष्ट प्रणाली की स्थापना करने वाली है। यद्यपि प्रारम्भ से अन्त तक आपने निराला की हर वात को प्रशंसामुखी अभिव्यक्ति दी है फिर भी इस ग्रन्थ को पढ़ कर objective दृष्टिकोण बनाने में कोई बाधा नहीं आती। इस ग्रन्थ की 'कला' इसी खूवी में है।

अज्ञात, अल्पज्ञात सामग्री के प्रस्तुतीकरण में भी आपने बहुत महान कार्य किया है [1] आपका श्रम अनुकरणीय है और मेरे जैसे व्यक्ति के लिए प्रेरणामय भी कम नहीं है। सोचता हूँ कभी माखनलाल जी के क्रान्तिकारी घटना बहुल जीवन को इसी तरह लिख सकूंगा।

इस ग्रन्थ में माखनलाल जी का उल्लेख बहुत ही कम हुआ है और जिस रूप में हुआ है उससे उनके प्रति न्याय नहीं हो पाया है। माखनलाल जी और निराला जी के सम्बन्ध प्रगाढ़ चाहे न रहे हों पर उनके व्यक्तित्व में आजीवन एक महान निराला-समर्थक

सक्रिय रहा इससे इनकार नहीं किया जा सकता। आपके ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि सर्वश्री मैथिलीशरण जी गुप्त और प्रेमचन्द जी ने भी निराला के विरोध में छद्म नामों से लेख लिखे थे और उनके काव्य तथा उपन्यासों की कटु आलोचना की थी। इसके ठीक विपरीत माखन-लाल जी ने जब निराला के उपन्यासों की कर्मवीर में समीक्षा प्रकाशित की तो निराला ने उन्हें यह पत्र लिखा था—

C/o Ganga Pustakmala
Aminabad
Lucknow
१६.१.३४

आदरणीय चतुर्वेदी जी,

आपके अमूल्य कर्मवीर में अलका की आलोचना पढ़ी। हृदय को बल मिला। आलोचक ने जो सहृदयता अलका और अपरा [अप्सरा] को दी है वही अलका और अपरा [अप्सरा] की सृष्टि की वजह भी है। लेखक तो भिक्षुक की झोली की तरह रिक्त होकर द्वार-द्वार भटकता फिरता है। आलोचक श्री प्रतापसिंह (यह चतुर्वेदी जी के कई नामों में से एक नाम था) की मूल्यवान सम्मति मानकर चलने का प्रयत्न करूंगा। इति,

सविनय
'निराला'

स्पष्ट ही माखनलाल जी से निराला को सदा ही 'हृदय का बल' मिलता रहा। श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी चतुर्वेदी जी के समर्थक एवं निराला के विरोधी थे पर वे भी निराला के विरुद्ध एक भी शब्द उनसे प्राप्त कर न सके। यह बात बेहद महत्वपूर्ण है। निराला की मृत्यु पर अपनी तीव्र बीमारी के बावजूद माखनलाल जी ने श्री बांकेबिहारी भटनागर को भेजने के लिए लेख डिक्टेट करवाया था। उस छोटे लेख से ये पंक्तियां देखें— "एक सम्पादक बन्धु ने स्वर्गीय श्री गणेशशंकर जी विद्यार्थी और मुझ पर यह आरोप लगाया था कि हम दोनों ने निराला की आलोचना में उनका साथ नहीं दिया। किन्तु सच तो यह है कि बरसों बाद एक नयी प्रतिभा निराला जी के रूप में अवतरित हुई थी, उसका स्वागत होना चाहिए था।"

'संगम' में निराला पर लिखी अपनी कविता में उन्होंने लिखा था—

आ तेरी जीवित मौतों पर
जीने का त्योहार बना दूं
सूझों के मंदिर के गायक
तेरी कीर्ति-रागिनी गा दूं।

इस पत्र ने निराला विशेषांक निकाला था, यह कविता 'माता' काव्य संग्रह में है।

आपने पृष्ठ ३६० पर लिखा है कि लाहौर में कवि सम्मेलन का सभापतित्व स्वयं निराला ने किया था। यदि आपके पास 'नया साहित्य' का निराला अंक हो तो उसमें प्रकाशित श्री भदन्त आनंद कौसल्यायन का लेख देखें। उसमें उन्होंने लिखा है कि इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता माखनलाल जी ने की थी और जब निराला के कविता पाठ के समय

एक पंजाबी सिक्ख ने कुछ उल्टी-सुल्टी बातें कहीं तो माखनलाल जी ने उसे करारी फटकार दी। श्री कौसल्यायन लिखते हैं, "काश ! चतुर्वेदी जी का वह भाषण रेकार्ड हो सका होता।"

ये कुछ प्रसंग हैं जो इस बात का प्रमाण देने के लिए पर्याप्त हैं कि माखनलाल जी और निराला के सम्बन्ध आजीवन कैसे रहे। आपका ग्रन्थ या तो चुप रहता है या अनुकूल प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाता। आशा है इस ओर आप कुछ सोचना उचित समझेंगे।

इस बीच आपने 'माखनलाल चतुर्वेदी यात्रा पुरुष' ग्रन्थ सम्पूर्ण रूप में पढ़ लिया होगा। आशा है आप अपने पूर्व पत्रानुसार इस ग्रन्थ की बावत कुछ लिखेंगे, साथ ही माखनलाल जी के पुनर्मूल्यांकन की दिशा में भी अपना सबल सहयोग हिन्दी संसार को प्रदान करने में आगे बढ़ते रहेंगे।

आशा है आप सानन्द हैं।

विनीत
श्रीकांत जोशी

माखनलाल चतुर्वेदी और निराला के संबन्धों के बारे में श्रीकान्त जोशी की भेजी हुई सूचनाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैंने उन्हें लिखा था कि पुस्तक के तीसरे खंड में उनका पत्र उद्धृत कर दूंगा और पहले खंड का दूसरा संस्करण निकलेगा, तब लाहौर सम्मेलन वाली बात का ध्यान रखूंगा। पर ये दोनों बातें मैं भूल गया। चौदह साल बाद मैंने उनका १२.१.७० का पत्र न पढ़ा होता तो वे बातें मुझे याद भी न आतीं। वह पत्र आप भी देखें।

१२.१.७०

मान्यवर,

आपके ६.१. के कृपा पत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। निराला जी के पत्र में अप्सरा है—अपरा नहीं, शायद जल्दी में मैं अशुद्ध लिख गया हूँ। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि (१) मेरा पत्र आप अपनी पुस्तक के तीसरे खण्ड में दे रहे हैं व (२) लाहौर सम्मेलन वाली बात का पुस्तक के दूसरे संस्करण में ध्यान रखेंगे।

निराला और माखनलाल जी के सम्बन्ध सामान्य से बहुत ज्यादा थे। इसका एक प्रमाण मुझे और मिला है—सोच रहा हूँ एक लेख में यह सब मैं लिख डालूं। अनुमति दीजिए।

माखनलाल जी पर आप निराला जी की तरह कार्य करें यह मैं नहीं चाहता पर एक ऐसा लेख अवश्य चाहता हूँ जिसमें माखनलाल जी के संदर्भ में सही-सही सोचने की प्रेरणा परवर्ती समीक्षकों को प्राप्त हो। श्रमिकों, गरीबों और किसानों के माखनलाल जी जबरदस्त हिमायती थे और १९३५-३६ में जो समाजवादी विचारधारा हिन्दी में आई उसकी ओर अपने नाटक कृष्णार्जुन युद्ध में सन् १९१३ में उन्होंने बड़े ही शक्तिशाली संकेत दिये थे। मनुष्य को आदर्श रूप में ही नहीं उसकी समस्त कमजोरियों के साथ भी

वे प्यार करते थे —ये बड़ी भारी बातें हैं। कृपया माखन पुष्प में श्री मुकुट बिहारी वर्मा का लेख पढ़ें नवीन जी के संदर्भ में।

सानन्द होंगे।

श्रीकांत जोशी

जोशी जी निष्ठावान साहित्यकार हैं, बड़ी लगन के आदमी हैं। माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली का संपादन उनकी निष्ठा का प्रमाण है। मेरे १.२.७० के पत्र का स्मरण कराते हुए उन्होंने १२.१.८४ को मुझे जो कुछ लिखा, वह उनकी लगन का प्रमाण है। यह तीसरा पत्र जब आया, तब मैं निराला की साहित्य साधना (३) के दूसरे संस्करण की भूमिका लिखने के बारे में सोच रहा था। यह पत्र पाकर मैंने उनके दो पुराने पत्र ढूंढ़ निकाले; उन्हें पढ़ कर पुरानी बातें याद आईं। तीसरा पत्र आगे उद्धृत करूंगा। उस पहले उनके पहले पत्र पर टिप्पणी करना चाहता हूं। जोशी जी के पत्र में सबसे महत्वपूर्ण सूचना यह है कि जिस समय बनारसीदास चतुर्वेदी निराला का घेराव कर रहे थे, उस समय वह निराला के विरुद्ध एक भी शब्द माखनलाल चतुर्वेदी से छापा न कर सके। माखनलाल जी स्वयं छायावादी कवि थे, कवि रूप में वह निराला का महत्व अवश्य समझते रहे होंगे। उन्होंने निराला के उपन्यासों की समीक्षा प्रकाशित की, उन पर कविता लिखी, उनकी मृत्यु के बाद उन पर लेख डिक्टेट कराया, यह सब उनकी सहृदयता और साहित्य प्रेम का सूचक है।

जोशी जी ने निराला के विरुद्ध छद्मनाम से लिखने वालों में मैथिलीशरण गुप्त के साथ प्रेमचंद का नाम भी लिया है। मेरी पुस्तक पढ़ने से उन्हें ऐसा आभास हुआ। 'भावों की भिड़न्त' के लेखक मेरी समझ में मैथिलीशरण गुप्त थे किन्तु प्रेमचंद ने भी उनके विरुद्ध छद्मनाम से लिखा, मेरा यह आशय बिलकुल न था। अप्सरा की कटु आलोचना 'हंस' में छपी। इसे पढ़ कर "निराला के लिये यह सन्देह करना स्वाभाविक था कि उस लेख में प्रेमचंद का हाथ है।" निराला की साहित्य साधना (१) के सातवें अध्याय में मैंने निराला के सन्देह को स्वाभाविक बताया है। प्रेमचंद ने जगमोहन गुप्त के नाम से लेख लिखा, यह कथन चन्द्र प्रकाश सिंह का है जिसे मैंने उनके लेख से उद्धृत किया है। आगे मैंने लिखा है, "प्रेमचंद के बारे में निराला का सन्देह दूर करने का प्रयत्न उस समय के प्रसिद्ध कहानी लेखक और उपन्यासकार विश्वंभर शर्मा कौशिक ने किया। जगमोहन गुप्त फर्जी नाम नहीं है; 'विशाल भारत' और 'हंस' में उनकी कहानियां छपी हैं।" इससे स्पष्ट हो जायेगा कि मैं प्रेमचंद को छद्म नाम से लिखने का दोषी नहीं मानता। उनका दोष इतना ही था कि 'हंस' और 'जागरण' में उन्होंने निराला पर कुछ आपत्तिजनक सामग्री छापी थी।

लाहौर में जो कवि सम्मेलन हुआ, उसके संयोजक उदयशंकर भट्ट थे। इस संबन्ध में उन्होंने अपना संस्मरण मेरे पास भेजा था। इसका प्रारंभिक अंश इस प्रकार है:

"जिन दिनों अबोहर हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ तो स्वागताध्यक्ष और बाकी स्वागतकारिणी के मेम्बर लाहौर से चुने गये। दुर्भाग्यवश मेरे न चाहने पर भी कवि-सम्मेलन का संयोजकत्व मुझे सौंपा गया। स्वागतकारिणी के लोगों की राय थी कि कवि-सम्मेलन के लिए न तो कोई आदमी बाहर से बुलाया जावे और न बहुत रुपये ही खर्च

किये जाएं। मैंने इसी बात को लेकर अपना इस्तीफा पेश कर दिया। मैं चाहता था कि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को सभापति बनाया जाये। स्वागतकारिणी के सदस्यों ने काफी झगड़े और झंझट के बाद यह निश्चय किया कि सभापति को केवल मार्ग व्यय ही दिया जाये। मैंने निराला जी को कवि सम्मेलन के संयोजक के रूप में पत्र लिखा तो उन्होंने ५००) रु० मांगे। इसके बाद एक तरह से कवि सम्मेलन के संबंध में सम्मेलन वालों ने चुप्पी साध ली। मेरा आग्रह था कि निराला जी यदि ५००) रु० मांगते हैं तो उन्हें ५००) रु० दिये जायें। तब एक दिन स्वामी केशवानंद आकर गिड़गिड़ाए कि आप हम लोगों की तरफ से निराला जी से प्रार्थना कीजिए कि वह कवि सम्मेलन का सभापतित्व करें। और इस प्रकार एक पत्र लिखा गया। निराला जी ने स्वीकार नहीं किया। फिर मैंने व्यक्तिगत रूप से पत्र लिख कर उनसे अनुरोध किया कि जो कुछ भी सम्मेलन देता है, उसे स्वीकार करके वह सभापतित्व करने के लिए आ जायें। निराला जी मान गये।"

निराला जी गये; गेस्ट हाउस में ठहरे; लोगों को पार्टियां दीं। फिर—"दूसरे रोज कवि सम्मेलन हुआ। कवि सम्मेलन में पं. माखनलाल चतुर्वेदी आदि कई प्रतिष्ठित कवि थे। निराला जी ने शुद्ध उर्दू में अपना सभापति का भाषण दिया।" जनता ने विरोध किया, उदयशंकर भट्ट के कहने पर निराला ने हिन्दी में बोलना शुरू किया। कवियों को पुरस्कार और प्रमाणपत्र दिये। "कवि सम्मेलन की समाप्ति के बाद दूसरे रोज़ बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, माखनलाल चतुर्वेदी तथा और लोग लाहौर को रवाना हो गये।" वहां अपने ठहरने और भोजनपान की समुचित व्यवस्था करा लेने के बाद निराला ने कवि सम्मेलन में भाग लिया। "लाहौर के लोकसेवा मंडल के हाल में एक कवि सम्मेलन हुआ। उसके सभापति भी निराला जी हुए। उस सभापतित्व की यह विशेषता थी कि जब कवि सम्मेलन जमता तो निराला स्वयं अपनी कविता पढ़ने खड़े हो जाते और कुकुरमुत्ता जैसी लंबी कविताएं सुनाते।"

मेरे लिए भट्ट जी के विस्तृत विवरण पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं था। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता का महत्व निराला के लिए उस समय उनकी मानसिक स्थिति के कारण था; ऐतिहासिक महत्त्व इस बात का है कि निराला के साथ दो कवि सम्मेलनों में माखनलाल चतुर्वेदी भी थे।

अब श्रीकान्त जोशी का तीसरा पत्र देखें।

दि. १२.१.८४
जवाहर गंज/खण्डवा
४५०००१

मान्य शर्मा जी : सादर नमन

कृपया अपना थोड़ा-सा समय स-क्षमा मुझे दें—मैं आपकी व्यस्तता से सुपरिचित हूं।

मैं आपके ३० नई राजामंडी आगरा से लिखे गये दिनांक १.२.७० के पत्र की कुछ पंक्तियां आपके अवलोकन-मनन के लिए भेज रहा हूं जो इस प्रकार हैं। (पं. माखन-लाल जी चतुर्वेदी के संदर्भ में)

"तात्कालिक कार्य जो संभव है वह यह कि निराला की साहित्य साधना के दूसरे खण्ड में एक अध्याय छायावाद पर लिखूंगा— यानी २०-३६ के बीच के साहित्यकारों की सामाजिक-चेतना पर भी उसमें कुछ बातें लिखूंगा। वहां मैं माखनलाल जी पर कुछ पृष्ठ लिखने की सोच रहा हूँ। उनके राजनीतिक निवन्ध देखे बिना यह कार्य असम्भव है। यदि आप कर्मवीर के कुछ निवन्ध या उनके उपयुक्त अंश मुझे भेज सकें तो यह काम हो जायेगा।"

निवेदन यह है कि उन दिनों यह कार्य नहीं हो सका किन्तु अब माखनलाल जी के सम्पादकीय प्रभा के रचनावली के खण्ड दो में व कर्मवीर के खण्ड ९ व १० में उपलब्ध हैं। मैं श्री माहेश्वरी को लिख चुका हूँ कि वे रचनावली आपके पास प्रेषित करें-- यदि उन्होंने प्रेषित न की हो तो कृपया मंगवा लेने का कष्ट करें। मेरी दृष्टि में माखनलाल जी की रचनावली पढ़ कर आप जो भी लिखेंगे वह स्थापित मान्यताओं को हिला देने वाला तथा नयी जानकारी देने वाला सिद्ध होगा। मेरा इसी समीक्षकीय न्याय के लिए आपसे अनुरोध है।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ सानन्द हैं।

विनीत

श्रीकांत जोशी

चौदह साल पहले की वात याद रखना और समय आने पर दूसरे को उसकी याद दिलाना साधारण काम नहीं है। इसके लिए मैं जोशी जी की प्रशंसा करता हूं और उनके प्रति आभार भी प्रकट करता हूं। अपनी पुस्तक के दूसरे खंड के लिए तैयारी करते समय माखनलाल चतुर्वेदी पर कुछ पृष्ठ लिखने की वात मैं सोच रहा था। उपयुक्त सामग्री के अभाव में वह काम उस समय न हुआ। यहां जो कुछ लिखूंगा, पाठक उसे दूसरे खंड में छायावादी विचारधारा के विश्लेषण से संवद्ध मानें।

माखनलाल चतुर्वेदी ने जनवरी १९२० से 'कर्मवीर' पत्र का संपादन आरंभ किया। इससे पहले गणेशशंकर विद्यार्थी 'प्रताप' और उससे पहले वालकृष्ण भट्ट 'हिन्दी प्रदीप' निकाल चुके थे। वालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के प्रमुख लेखकों में थे, गणेशशंकर विद्यार्थी 'सरस्वती' में महावीर प्रसाद के सहयोगी रह चुके थे। माखनलाल चतुर्वेदी ने फर्वरी १९२१ में सरकारी दमन के विरुद्ध हिन्दी की साम्राज्य विरोधी पत्रकारिता की कड़ियां इस प्रकार जोड़ी थीं, "वह आवाज 'प्रताप' ही की थी जिसने 'हिन्दी प्रदीप' और 'कर्मयोगी' के द्वारा किये जाने वाले जागृति के प्रारंभिक पथ को अपनी कार्य शैली के वल पर विस्तृत वनाया"। (९/२९९; प्रथम संख्या रचनावली के खंड की है, दूसरी पृष्ठ की। आगे भी यही क्रम रहेगा।) 'प्रताप' के ही संदर्भ में चार महीने वाद उन्होंने 'कर्मयोगी' का परिचय इस प्रकार दिया था, "जिसे सन् १९०७-८ की पकड़ धकड़ और सरकारी क्रूरता के दिन याद हैं, उसे यह वताने की ज़रूरत नहीं कि देश में उस समय पत्रों के जीवन की क्या अवस्था थी। उस समय जो पत्र राष्ट्रीय सेवा में अपना कदम आगे वढ़ाने वाले थे, उनमें श्रीयुत सुन्दरलाल जी द्वारा प्रकाशित 'कर्मयोगी' का ऊंचा आसन था।" (९/३२५)। राष्ट्रीय पत्रों में 'कर्मयोगी' के साथ चतुर्वेदी जी ने माधवराव सप्रे के 'हिन्दी

केसरी' और बाबूराव विष्णु पराड़कर के 'हितवार्ता' का उल्लेख किया है। फिर 'प्रताप' के लिए उन्होंने एक अनमोल वाक्य लिखा है, "पत्र का निर्भीक स्वर 'कर्मयोगी', 'हिन्दी प्रदीप' और 'हितवार्ता' के पुनर्जन्म की सूचना कर रहा था।" (६/३२६)। भारतेन्दु युग की पत्रकारिता इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध से पहले और बाद की पत्रकारिता से जुड़ी हुई थी। 'कर्मयोगी' और 'हितवार्ता' के साथ 'हिन्दी प्रदीप' ने 'प्रताप' में नया जीवन पाया, यह स्थापना बालकृष्ण भट्ट के लेखन का क्रान्तिकारी पक्ष सही रूप में पेश करती है। इन पत्रों की शृंखला में एक गौरवपूर्ण कड़ी के रूप में था माखनलाल चतुर्वेदी का 'कर्मवीर'।

बालकृष्ण भट्ट और उनका 'हिन्दी प्रदीप' प्रसिद्ध पत्र 'मतवाला' के भी प्रेरणा स्रोत थे। बालकृष्ण भट्ट के नाम पर ही महादेव प्रसाद सेठ ने अपने प्रेस का नाम बालकृष्ण प्रेस रखा था। बालकृष्ण भट्ट क्रान्तिकारियों के समर्थक थे; गणेशशंकर विद्यार्थी को क्रान्तिकारियों से गहरी सहानुभूति थी, कुछ समय के लिए 'प्रताप' में उन्होंने भगतसिंह को अपना सहयोगी बनाया था और राम प्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा, शिव वर्मा से प्राप्त होने पर, गुप्त रूप से प्रकाशित की थी। 'मतवाला'-मंडल के सम्मानित सदस्य, निराला के 'मास्टर साहब' राधामोहन गोकुल जी क्रान्तिकारी थे, कानपुर में चंद्रशेखर आज़ाद से शिव वर्मा की भेंट उन्हीं के यहां हुई थी और कानपुर में ही सत्य भक्त तथा अन्य सहयोगियों के साथ राधा मोहन गोकुल जी ने कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने क्रान्तिकारी जीवन के बारे में लिखा है, "१९०५ से मैं क्रान्तिकारी था और उस समय तक रहा, जब हिन्दू युनिवर्सिटी की पुण्यशिला रखने के लिए गांधी जी वहां पर आये और कितने ही राजा वगैरा आये थे। पुण्यशिला किसने रखी थी, मुझे याद नहीं, परन्तु गांधी जी का भाषण हुआ था कि 'तुम मुझे पिस्तौल दो, मैं तुम्हें स्वराज्य दूंगा।' मेरे साथ ग्यारह बंगालियों ने अपनी अपनी पिस्तौलें दे दी थीं।" (३/८६-८७)।

क्रान्तिकारियों के लिए कोई नहीं कह सकता कि वे संघर्ष से डरते थे। किन्तु जन-आन्दोलन के बदले उनका संघर्ष लुके छिपे होता था। क्रान्तिकारियों और छायावादियों में यह लुका छिपी वाली बात सामान्य थी। चतुर्वेदी जी ने १९५८ में दोनों की तुलना इस तरह की थी : "अतः उस समय का क्रान्तिवाद यदि भारतीय पराधीनता के प्रति विद्रोह था और लुक छिप कर जिन्दगी बिताना उनकी [उसकी] लाचारी थी तो [यहां से छायावादी गद्य का नमूना शुरू होता है] सुधारवाद और गद्यात्मकता के अधिक उपदेशप्रद ऊंचे उठकर बोलने के दिनों में भाषा और कथन की मल्लविद्या सीखने की अपेक्षा भावों की जगदीश्वरी के आंगन में आंसुओं और अनुभूतियों के पंख लगा कर आनन्द और माधुर्य को न छूटने देने के लिए नगण्य कहला कर भी विद्रोह करने के लिए युग के माधुर्य की तबीयत मचल मचल उठती थी।" (४/१९६)। क्रान्तिवाद भारतीय पराधीनता के प्रति विद्रोह है, छायावाद भाषा और कथन की मल्ल विद्या के प्रति विद्रोह है। विद्रोह दोनों ओर है। पहले विद्रोह से स्वाधीनता की प्राप्ति होगी, दूसरे से माधुर्य की। दोनों में लुका छिपी की वृत्ति सामान्य है।

१९५८ में लुका छिपी की जरूरत न थी, न साहित्य में, न समाज में। युग के

माधुर्य की तबीयत मचल मचल उठती थी – यह शैली चतुर्वेदी जी क्यों अपनाये हुए थे? अधिकांश छायावादी साहित्यकारों ने सन् ३० के बाद इसे त्याग दिया था। चतुर्वेदी जी जिसे माधुर्य कहते थे, उसका विशेष संबन्ध इस शैली से था। यह माधुर्य और उससे जुड़ी हुई शैली भावुकता की उपज हैं, वे विवेकशील चिन्तन का परिणाम नहीं हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचन्द्र शुक्ल भावुकता से हट कर विवेकशील चिन्तन का समर्थन करते हैं, उनके गद्य का यह समर्थ और महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इस पक्ष के बहुत अच्छे प्रतिनिधि स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी हैं। किन्तु जिसे वह छायावाद कहते हैं, वह वास्तव में छायावाद का कमज़ोर पक्ष है। उनकी छायावादी कविता इस कमज़ोर पक्ष तक सीमित नहीं है। उनकी एक कविता क्रान्तिकारी युवकों को बहुत प्रिय थी :

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं प्रेमीमाला में बिंध प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं;
मुझे 'तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

(६/८०; रचनावली में चौथी पंक्ति में 'सिर सर' और पांचवीं में 'तोड़ देना' अशुद्ध पाठ हैं।) अतिशय लाक्षणिकता से मुक्त यह शैली सहज ही प्रभावशाली है।

छायावाद और माधुर्य वाले प्रसंग में चतुर्वेदी जी ने लिखा है, "इस तरह की रचनाओं को सबसे पहले स्वर्गीय श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' में प्रकाशित किया।" (४/१९६)। विद्यार्थी जी स्वयं कभी कभी छायावादी ढंग का गद्य लिखते थे किन्तु अपवाद रूप में। उनके और माखनलाल जी के मित्र वृन्दावनलाल वर्मा ने गद्य काव्य लिखा था किन्तु उपन्यासों में वह यथार्थ की ठोस धरती खूब मजबूती से पकड़े रहते थे। विद्यार्थी जी के सहयोगी बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' छायावादी कवि थे और कानपुर की मजदूर सभा के अध्यक्ष भी थे। मजदूर सभा में वह कम्युनिस्ट नेता रुद्रदत्त भारद्वाज के सहयोगी थे। माखनलाल चतुर्वेदी ने १९१३ में 'प्रभा' निकाली। बंद हो जाने पर दूसरी बार वह कानपुर से प्रकाशित हुई। पहला अंक जनवरी १९२० का है; संपादक गणेशशंकर विद्यार्थी और देवदत्त शर्मा हैं। जून १९२० के अंक में निराला की 'जन्मभूमि' (वन्दूं मैं अमल कमल), नवंबर १९२१ में 'अध्यात्म पुष्प' (जब कड़ी मारें पड़ीं दिल हिल उठा) कविताएं प्रकाशित हुईं। 'प्रभा' में 'भारतीय आत्मा' (माखनलाल चतुर्वेदी), प्रेमचन्द, सुभद्रा कुमारी चौहान, नवीन, उग्र आदि साहित्यकारों की रचनाएं प्रकाशित हुई थीं। इसका संपादन बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भी किया और इसमें क्रान्तिकारी आन्दोलन से संबंधित काफी सामग्री प्रकाशित की थी (यथा दिसंबर १९२४ के अंक में सुरेशचंद्र भट्टाचार्य का लेख 'भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन')। गांधीवाद के समानान्तर हमारे यहां क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रसार हो रहा था। उसका जन्म गांधीवाद से पहले हो चुका था। छाया-

वाद से उसका घनिष्ठ संबन्ध था और छायावाद का जन्म भी सन् २० के आन्दोलन से पहले हुआ था। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "चित्रमयी, कोमल और व्यंजक भाषा में··· नये ढंग की रचनाएं संवत् १९७०-७१ [सन् १९१३-१४] से ही निकलने लगी थीं"। (हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. १९९७; पृ. ७८१)।

३. अंग्रेजी लूट और किसान-संघर्ष

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने पारिवारिक परिवेश से वैष्णव संस्कार प्राप्त किये थे। उन्हें कृष्ण भक्ति के अनेक पद याद थे और शुरू शुरू में उन्होंने स्वयं इसी तरह के पद रचे थे। "किन्तु मेरा स्वभाव उग्र था। समस्त लाड़ प्यार के बावजूद यदि कोई मुझे छेड़ता, तो फिर मेरे वैष्णव पद मुझे लड़ने और मारपीट करने से नहीं रोक पाते थे।" (१/९९-१००)। सहज प्रतिरोध की यह वृत्ति क्रान्तिकारियों के साथ काम करने से पुष्ट हुई थी। क्रमशः उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक प्रपंच का अध्ययन किया और यह अध्ययन आश्चर्यजनक रूप से संपत्तिशास्त्र में महावीर प्रसाद द्विवेदी के विश्लेषण से मिलता जुलता है। माधवराव सप्रे और महावीर प्रसाद द्विवेदी मिलकर काम करते थे, एक दूसरे की सामग्री का उपयोग करते थे, दोनों के विचारों में बहुत समानता थी।* सप्रे जी को १९६९ में माखनलाल चतुर्वेदी ने "गुरुवर्य पं. माधवराव सप्रे" कहकर याद किया था। सप्रे जिसके गुरु हों, वह अंग्रेजों की आर्थिक नीति का विश्लेषण महावीर प्रसाद द्विवेदी की तरह करे, यह स्वाभाविक था।

भारत सदा ग्राम समाजों का देश रहा है, उसे सदा कृषि प्रधान देश बने रहना चाहिए, इस धारणा का खंडन करते हुए १९२६ में माखनलाल जी ने लिखा था, "भारत केवल किसान देश नहीं रहा। आज से ठीक १०९ वर्ष पहले प्रसिद्ध अंग्रेज डा. राबर्टसन ने लिखा था, '···उनका [भारतवासियों का] व्यापार, सदा से एक ही ढंग से चला आ रहा है और उनके हुनर और कुदरत की चीजों के बदले में उनके पास सोना आता रहा है।'

* द्विवेदी-सप्रे संबंधों के बारे में रायपुर से २ फर्वरी १९८० को लिखे हुए देवी प्रसाद वर्मा के पत्र को उद्धृत करने का यह उपयुक्त अवसर है। **म. प्र. द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण** पढ़कर उन्होंने लिखा था, "आपने स्व. माधवराव सप्रे के निबंधों की चर्चा की है परतु कई स्थानों में उनके बारे में पूरी सूचना न होने के कारण आपके कुछ तर्क गलत से होते दृष्टिगोचर होते हैं। उदाहरण के लिए स्व. माधवराव सप्रे त्रिमूर्ति, त्रिमूर्ति शर्मा, माधव बी. ए. आदि नामों से लिखते थे। इस [का] उल्लेख आपको हार्डीकर द्वारा लिखित माधवराव सप्रे की जीवनी में मिलेगा। मेरे पास कुछेक अभिलेख हैं जिनके आधार पर मैं यह प्रमाणित कर दूंगा कि 'इंग्लैन्ड की राज्य क्रान्ति', 'फ्रान्स की राज्य क्रान्ति' आदि सभी निबंध उनके हैं। उनके द्वारा लिखे गये इतिहास सबंधी सभी लेख 'माधवराव सप्रे : इतिहास चिन्तन' इस नाम से विश्व भारती प्रकाशन सीताबर्डी नागपुर में छप रहा है। साथ ही 'संपत्तिशास्त्र' के विषय में उनका एक अधूरा अप्रकाशित निबंध भी है जिससे यह उद्घाटित होता है कि हिन्दुस्तान का धन हिन्दुस्थान में रहना चाहिए। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपनी यह मान्यता सुधार लें कि द्विवेदी जी ही त्रिमूर्ति या त्रिमूर्ति शर्मा के नाम से लिखते थे।" पत्र में दी हुई सूचना के लिए मैं देवी प्रसाद वर्मा के प्रति आभारी हूं।

किन्तु अब तो सोना इंग्लैन्ड को चाहिए, उसकी सोने की लंका के कई गढ़ अभी बनने बाकी हैं। इधर भारतवासी चिथड़े और टुकड़े के लिए मोहताज हो रहे हैं। पहिले किसानी का रोजगार करने वाले कम थे, अब इंग्लैन्ड की लूट के कारण उनकी तादाद, फीसदी ७५ तक बढ़ गई है। किन्तु रायल कमीशन चाहता है कि भारतवासी और भी खेती पर ही जीने के लिए विवश हों; यह भारत के भूखे पेटों, सूखी हड्डियों और गरीब किसानों को चुनौती है। क्या हम इस चुनौती को चुपचाप बर्दाश्त कर लेंगे? हमें एक स्वर से गर्जना करनी चाहिए—हमें खेती का ब्रह्मज्ञान मत सिखाओ, हमें व्यापार की कुंजी चाहिए; हम प्राण रहते अपने बचे खुचे बाजार तुम्हें हरगिज़ न हथियाने देंगे।" (१०/१५७-५८)।

भारतीय उद्योग धन्धों द्वारा तैयार किये हुए माल और यहां की प्राकृतिक उपज की बिक्री से विदेशी सोना प्राप्त होता था। अंग्रेजी राज ने यह प्रक्रिया उलट दी; यहां का सोना लूट के ज़रिये इंग्लैन्ड पहुँचाया गया और भारत खेतिहर देश बना डाला गया। स्वभावत: खेती पर जीविका के लिए निर्भर रहने वालों की संख्या बढ़ गई। उद्योगीकरण के लिए पहली शर्त है, माल की खपत के लिए अपना बाज़ार हो। अंग्रेज़ों ने भारत के बाज़ार पर कब्ज़ा किया, फिर पूछने लगे तुम लोगों ने मशीनी उत्पादन क्यों नहीं शुरू किया? मानो अंग्रेज़ स्वयं मशीनी उत्पादन शुरू करने के बाद भारत आये हों! भारत की लूट पहले, इंग्लैन्ड में मशीनी उत्पादन बाद को—घटनाओं का क्रम इस प्रकार है। भारतीय व्यापार का नाश करके अंग्रेजों ने यहां का औद्योगिक विकास रोका, इंग्लैन्ड का औद्योगिक विकास संपन्न किया। इसीलिए हिंदी के जागरूक पत्रकार कह रहे थे, खेती का ब्रह्मज्ञान नहीं, व्यापार की कुंजी चाहिए; अपने बचे खुचे बाजार हम अंग्रेज़ों के हाथ न जाने देंगे।

पराधीन देशों के क्रान्तिकारी आन्दोलनों का समर्थन करने वाली अमरीकी लेखिका ऐग्नीस स्मेडले के एक लेख से माखनलाल चतुर्वेदी ने ज़ार पीतर का यह दिलचस्प कथन उद्धृत किया था, "इस बात को कभी मत भूलो कि हिन्दुस्तान का व्यापार समस्त संसार का व्यापार है और जो देश इस व्यापार को पूरी तरह से अपने हाथ में रखेगा, वही सारे यूरोप का प्रमुख राष्ट्र बनेगा।" (१०/२०)। यह बात उस समय की है जब भारत में अंग्रेज़ी राज कायम न हुआ था, जब यूरुप के राष्ट्र व्यापारिक पूंजीवाद के दौर में थे और उन्हें उन्नति का सबसे कारगर यह उपाय दिखाई देता था कि भारत का माल खरीद कर दूसरे देशों में बेचें। भारतीय माल की खरीद पर जिसका इजारा होगा, वही यूरुप का प्रमुख राष्ट्र बनेगा। पीतर के कथन का हवाला देने के बाद चतुर्वेदी जी ने बताया कि यूरुप के राष्ट्र भारत पर अधिकार जमाने के लिए लड़े, इंग्लैन्ड विजयी हुआ और इसके बाद वहां औद्योगिक क्रान्ति हुई। "इंग्लैन्ड और हिन्दुस्थान के इतिहास में दो विचित्र बातें दिखाई देती हैं—औद्योगिक क्रान्ति के आरंभ के समय इंग्लैन्ड निर्धन देश था, परंतु आज वह सर्वश्रेष्ठ धनी और बलवान देश बन गया है। उसके मुकाबले में हिन्दुस्तान की हालत क्या है? वह आरंभ में अमीर था परंतु आज गरीब है।" (१०/२०-२१)।

गरीबी की मार सही सबसे ज्यादा किसानों ने। उनके ऊपर केवल शासनतंत्र का भार नहीं था, इस तंत्र के सहायक ज़मींदारों और साहूकारों का भार भी था। जनवरी १९२१ में माखनलाल जी ने लिखा था, "रसद और बेगार के सरकारी और गैरसरकारी

जुल्मों से हिन्दुस्तान की प्रजा आजिज आ चुकी है।" (९/२६९)। रसद और बेगार का काफी विरोध हुआ था, फिर भी इन्हें रोकने के लिए कानून न वनाया गया था। "इसीलिए सरकार की जड़ को मजवूत रखने वाले छोटे-छोटे जमींदारों और ताल्लुकेदारों को अपने इलाके में रहनेवाले काश्तकारों पर जवरन रसद और वेगार लेने का हक हासिल हो गया है।" (उप.)। सरकार की जड़ को मजवूत करने वाले लोग भारत के हैं, ये जमींदार और तालुकेदार हैं। इनके विरुद्ध किसानों का संघर्ष संगठित किये विना अंग्रेजी राज की जड़ न काटी जा सकती थी। किसानों को यह वताने की जरूरत न थी कि उन पर अत्याचार होते हैं, जरूरत थी दमन से न टूट सकने वाले संगठन की, उस संगठन के वल पर किसानों के क्रान्तिकारी संघर्ष के संचालन की। उस समय किसान आन्दोलन का केन्द्र था अवध; यहां के किसानों ने स्वत: स्फूर्त ढंग से सामन्त विरोधी संग्राम छेड़ दिया था। इस संग्राम का अखिल भारतीय महत्व था।

चतुर्वेदी जी ने लिखा कि अन्य प्रान्तों में तो वेगार की सख्तियां रोकने के लिए नियमों के 'थोथे उपाय' रचे भी गये हैं पर "अवध के दुर्भाशी किसानों के कानून में ऐसी कड़ाई है, जिससे उन्हें अपने मालिकों—ताल्लुकेदारों—के जोर और जुल्म को, कानूनन सहना पड़ता है"। (उप.)। परिणाम यह कि "अवध के ताल्लुकेदारों तथा किसानों के बीच के असन्तोष की आग से चिनगारियां निकल पड़ीं।" (उप.)। किसानों ने एक विशाल सभा का आयोजन किया। आजकल भी ऐसी सभा का आयोजन महान् उपलब्धि माना जायेगा, उन दिनों तो वह चमत्कार ही था। "गत दिसंवर [१९२०] मास के अंतिम सप्ताह में अवध के किसानों ने तालुकेदारों के अत्याचारों के विषय में विचार करने और उनसे वचने के उपाय सोचने के लिए फैजावाद में एक सभा की थी। इस सभा में कहते हैं, एक लाख के करीव किसान एकत्र हुए थे। देश में यह पहला दिन था जव अपने दुखदर्दों पर विचार करने के लिए एक लाख किसान इकट्ठे हुए थे और यह इकट्ठा होना उन लोगों के लिए वहुत बुरा था जो सत्ताधारी सरकारी या जमींदार कहलाते हैं, और जिनके व्यवहार ही किसानों के कष्ट हो रहे हैं। उस सभा के उपदेशों और आदेशों के कारण किसानों में वह जागृति पैदा हो गयी थी जिसकी आशा कभी नहीं की जाती थी।" (९/२६९)। जागृति पैदा करने का श्रेय कांग्रेस को न था। "अवध में एक वड़ा किसान आन्दोलन फैल गया", इसमें जवाहरलाल नेहरू के लिए जो आश्चर्य की वात थी, वह यह थी कि "किसी शहरी मदद के विना या राजनीतिज्ञों आदि के दखल दिये विना वह विल्कुल अपने आप फैल गया। किसान आन्दोलन कांग्रेस से बिल्कुल अलग था; जो असहयोग आन्दोलन चल रहा था, उससे इसका कोई संवन्ध नहीं था।" (आत्मकथा; अंग्रेजी संस्करण, पृ. ५४)।

सरकार ने कुछ किसान नेताओं को पकड़ लिया। चतुर्वेदी जी के अनुसार "दूसरे दिन ता. ७ जनवरी को मुंशीगंज में किसान लोग एकत्र हुए और अपने मुखिया नेता 'वावा' [वावा रामचंद्र] को देखने के लिए जेल की ओर से [जेल की ओर ?] जाने लगे। उन्हें पुलिस ने उधर जाने से मना किया···जव किसान आगे वढ़े तव पुलिस तथा मिलिटरी के सिपाहियों ने गोली चला दी।···सरकारी रिपोर्ट कहां तक सच्ची होगी, यह वात

पंजाब के हत्याकाण्ड की सरकारी रिपोर्ट और कांग्रेस की जांच की रिपोर्ट की तुलना से समझी जा सकती है तथापि उसी को मान लेने पर यह प्रकट होता है कि ६ आदमी मार डाले गये तथा उनसे दूनों को ज़ख्मी करके सदा के लिये संसार में अनुपयोगी बना दिया गया।" (६/२६६)। निष्कर्ष यह : "अवध के किसान जाग चुके हैं। पूंजीपति सरकार तालुकेदारों की सहायता करती है और करेगी क्योंकि उसके जीवन की जड़ मजबूत बनाये रखने में पूंजीवालों की बड़ी भारी सहायता है। सरकार के लोहे के हाथ यदि सख्ती भी करें, तो भी किसानों पर अत्याचार किया जाना अब अधिक दिनों तक जारी नहीं रह सकता। किसानों के संगठन में शक्ति है वह अटूट शक्ति है जिसके सामने नाइल को रुकना और हिमालय को झुकना पड़ेगा।" (६/२७२)।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अवध के किसान आन्दोलन का समर्थन किया, यह तथ्य इसलिए और भी महत्वपूर्ण है कि अधिकतर शहरी बुद्धिजीवियों को इस आन्दोलन का पता न था और 'राष्ट्रीय' अंग्रेजी पत्रों ने इसकी ओर ध्यान देना आवश्यक न समझा था। जवाहरलाल नेहरू ने इस स्थिति के बारे में लिखा था, "इस महान् किसान आन्दोलन के बारे में शहर के लोगों का पूरी तरह अनजान होना मेरे लिए और भी आश्चर्य की बात थी। किसी अखबार में एक सतर इसके बारे में न छपी थी।" (आत्मकथा, पृ. ५४)। अंग्रेजी के 'नैशनल प्रेस' का जो भी हाल रहा हो, 'वर्नाक्यूलर प्रेस' उसकी ओर बराबर ध्यान दे रही थी। पराधीन भारत की हिन्दी पत्रकारिता स्वाधीन भारत की अधिकांश पत्रकारिता की तरह अंग्रेजी की नकल नहीं थी। गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, बाबूराव विष्णु पराड़कर ऐसे प्रबुद्ध और साहसी लेखक थ जिनसे अंग्रेजी की 'राष्ट्रीय' पत्रिकारिता बहुत कुछ सीख सकती थी।

समाज में पूंजीपति हैं, जमींदार हैं, किसान हैं, अंग्रेजों का कानून, उनकी फौज और पुलिस किसानों का दमन करने के लिए हैं, समाज में वर्गों की स्थिति, सरकार से कुछ वर्गों का सहयोग, कुछ की टक्कर, यह सारा विश्लेषण माखनलाल चतुर्वेदी के विवरण में स्पष्ट देखा जा सकता है। स्वाधीनता संग्राम में सभी वर्गों का महत्व एक सा नहीं है; सर्वाधिक महत्व किसानों का है। क्रान्तिकारी हिन्दी पत्रकारिता इस महत्व पर लगातार जोर देती रही थी। " 'प्रताप' हिन्दी जगत् के उन राष्ट्रीय पत्रों में से है, जिन्होंने निर्भीकता से देश के लिए अपनी आवाज उठाई और आये दिन सरकार से कभी चेतावनी, कभी जमानत और जमानत-जब्ती के दिन देखे। वह आवाज 'प्रताप' ही की थी जिसने 'हिन्दी प्रदीप' और 'कर्मयोगी' के द्वारा किये जाने वाले जागृति के प्रारंभिक पथ को अपनी कार्यशैली के बल पर विस्तृत बनाया···हिन्दी जगत् 'प्रताप' को अपनी खास चीज समझता है और उसके द्वारा मिलने वाले स्वाधीनता के सन्देश के उपासकों की संख्या हजारों की तादाद में है।" (६/२६२)।

'प्रताप' ने स्वाधीनता का जो सन्देश दिया, वह जमींदारों और किसानों को समान रूप में देशभक्त मान कर न दिया गया था। उसमें जमींदारों के शोषण से किसानों की मुक्ति के लिए आग्रह था। 'प्रताप' ने किसानों का समर्थन किया तो जमींदारों ने उसका विरोध किया। "साप्ताहिक 'प्रताप' गरीब और दुखियों की चीज था और दैनिक रूप में भी उसने

वही टेक निवाही'''रायबरेली में गरीव किसानों पर की जानेवाली गोलियों की मार की घटना पर 'प्रताप' ने कुछ अधिक प्रकाश पहुँचाया। सुनते हैं, 'प्रताप' की निर्भीकतापूर्ण बातों से जहां गरीवों, दुखियों और सरकारी कृपा की गर्मी से कुम्हलाए हुओं ने कुछ धीरज, ठंडक और सेहत पायी, तहां किसी धनिक मालगुजार सरदार वीरपालसिंह ने 'प्रताप' की उन्हीं लकीरों में से कुछ लकीरों को अपना अपमान करते देखा। उन्होंने श्रीयुत गणेशशंकर जी विद्यार्थी तथा 'प्रताप' के श्रीयुत शिवनारायण जी मिश्र पर मानहानि की नालिश कर दी। एक तरफ गरीव देशवासी और उनके विद्यार्थी और मिश्र जी हैं और दूसरी तरफ सरकार की अदालत और उसके'''[हिमायती ?] सरदार वीरपालसिंह जी हैं। ता. १ मार्च को इस मामले की सुनवाई है। इस समय सारा देश 'प्रताप' की ओर आदर की दृष्टि से देख रहा है और मामले का अंतिम निर्णय देखने के लिए हृदय थामे हुए बैठा है।" (९/२९३)।

एक तरफ गरीव देशवासी और उनके विद्यार्थी जी तथा मिश्र जी हैं, दूसरी तरफ सरकार की अदालत और उसके हिमायती सरदार वीरपालसिंह तथा इनके समर्थक पत्रकार हैं। देश में गरीव अमीर का भेद स्वाधीनता आन्दोलन को प्रभावित कर रहा था। अंग्रेजों को कांग्रेसी सत्याग्रहियों से उतना भय न था जितना किसानों के संगठनकर्ताओं से। 'कर्मवीर' में किसान नेता वावा रामचन्द्र की गिरफ्तारी का यह उल्लेख ध्यान देने योग्य है: "सरकार हमारी शान्ति, धैर्य और अहिंसक वृत्ति का नमूना अन्य स्थानों के समान वनारस में देख चुकी है जवकि उसके नौकरों ने हजारों की सभा में महात्मा गांधी के सामने श्रीयुत रामचन्द्र महाशय को गिरफ्तार करके भारी शिकस्त खायी, जव कि कोई भी गड़बड़ न हुई। तो भी नौकरशाही के नौकर वावा रामचन्द्र के मुकद्दमे के लिए पूरी बैटेलियन फौज और दो सौ सशस्त्र सिपाही चाहते हैं।" (९/२९१)। फौज भारतीय जनता को दवाकर रखने के लिए थी, वह दुनिया में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करने के लिए थी। अंग्रेज भारतीय जनता पर भारी टैक्स इसलिए लगाते थे कि "सरकार के डायर वड़ी-वड़ी तनख्वाहें पावें और उनकी तोपों के लिए गोलों का अटूट भंडार भरे, जिनकी वाढ़ खैवर की ओर हो और हां स्वयं हिन्दुस्तान की तरफ भी दागी जा सके।" (९/२९९)। प्रथम महायुद्ध के वाद "साम्राज्य सत्ता वढ़ाने की प्रवल तृष्णापूर्ति के लिए भारत के सिपाही वलि दिये जा रहे हैं। पर मोसल की खदानों से मिलने वाले लाभ के कारण साम्राज्यवादियों का दल अपनी नीति वदलने को तैयार नहीं है।" (९/२२२)। ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए और उस साम्राज्य की रक्षा के लिए अंग्रेजों के पास मुख्य साधन भारतीय सेना थी। सेना का खर्च मुख्यतः किसानों से वसूल किया जाता था और सेना के अधिकांश जवान किसान परिवारों के थे। लगानवंदी का आन्दोलन अंग्रेजी राज के लिए सवसे वड़ा खतरा था; वह सैनिक व्यवस्था की जड़ पर प्रहार था- सेना के लिए आवश्यक धन मिलना वंद, सरकार के प्रति सैनिक जवानों की वफादारी खत्म। ऐसे आन्दोलन से कांग्रेसी नेताओं को कोई दिलचस्पी न थी। अंग्रेजी राज में सेना पर खर्च वरावर वढ़ता गया, लगभग उसी अनुपात में किसानों की गरीवी वढ़ती गयी।

वढ़ती हुई गरीवी के वारे में माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा, "किसान स्वयं भी

अनुभव करता है कि वह गरीब होता जा रहा है। वह पहिले से अधिक कर्जदार है, उसके बैल पहिले से अधिक 'मरी हत्या' हो रहे हैं और वे कम हो गये हैं, उसकी जमीन भी कम हो गयी है।" (१०/५०)। खेती की जांच के लिए रायल कमीशन बिठाया गया। जमीन की मिल्कियत के सवाल को जांच की परिधि से बाहर रखा गया। जमीन की मालिक सरकार है या उसका मालिक जमींदार अथवा किसान है, यह प्रश्न उस समय के लेखकों के सामने था। इस सिलसिले में माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि बंगाल के जिस हिस्से में इस्तमरारी बन्दोबस्त है, वहां जमीन का मालिक जमींदार है, बाकी जहां अस्थायी बन्दोबस्त है, "वहां जमीन की मालिक सरकार है और किसान केवल उस जमीन का किरायेदार है। जब किसानों की भलाई के लिए खेती का रायल कमीशन मुकर्रर किया जाता है, तब यह उम्मीद होना स्वाभाविक है कि शायद यह कमीशन, किसानों को जमीन के किरायेदार की अवस्था से उठाकर, सरकार को सूचित करे कि किसानों को जमीन का मालिक घोषित किया जाये। किन्तु यह खयाल गलत है। लाट साहब कहते हैं कि इस कमीशन का यह काम न होगा कि वह इस बात पर बहस करे कि जमीन का मालिक कौन है। इसका मतलब यह कि जमीन की मालिक सरकार ही रहना चाहती है, वह किसान को जमीन का मालिक करार दिया जाय या नहीं, इस बात पर विचार भी नहीं करना चाहती।" (१०/१२९; किसान संकट पर यह टिप्पणी १९२६ की है।)

अंग्रेजों ने खेती में कई तरह के बंदोबस्त किये किन्तु इस अनेकता में एकता वाला तत्व यह था कि जमीन की असली मालिक सरकार थी। इसीलिए व्यापक किसान संगठन के बिना यहां साम्राज्यविरोधी क्रान्ति संपन्न न की जा सकती थी। अंग्रेजों की आमदनी का मुख्य भाग किसानों से वसूल किया जाता था। "सरकार देश भर से जो कर वसूल करती है, उसमें १०० में ९० रुपया किसानों से वसूल किया जाता है। और किसानों की अवस्था लगातार बिगड़ती जाने पर भी देश भर से तीसवें साल और मध्य प्रदेश में तो हर बीसवें साल लगान बढ़ा दिया जाता है।" (उप.)। खेती का संकट इसलिए और प्राणघातक हो गया था कि देशी धन्धों का नाश कर दिया गया था और ग्रामीण बेकारों की संख्या बढ़कर तेरह करोड़ हो गयी थी। (१०/१३०)।

जुलाई १९१४ की 'सरस्वती' में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा था, "यदि कृषकों से लगान मिलना बंद हो जाय तो बड़े बड़े राजा महाराजों और तअल्लुकेदारों की दुर्गति का ठिकाना न रहे, सरकार के शासन चक्र का चलना बन्द हो जाय, वकीलों और बैरिस्टरों के गाड़ी घोड़े बिक जायँ, और व्यापारियों तथा महाजनों को शीघ्र ही टाट उलटना पड़े।" ग्यारह साल बाद इस वाक्य का भाष्य करते हुए चतुर्वेदी जी ने लिखा, "उसे [किसान को] नहीं मालूम कि धनिक तब तक जिन्दा हैं, राज्य तब तक कायम है, ये सारी कौंसिलें तब तक हैं, जब तक वह अनाज उपजाता है और मालगुजारी देता है। जिस दिन वह इन्कार कर दे, उस दिन समस्त संसार में महाप्रलय मच जायेगा। उसे नहीं मालूम कि संसार का ज्ञान, संसार के अधिकार और संसार की ताकत उससे किसने छीन कर रखी है और क्यों छीनकर रखी है। वह नहीं जानता कि जिस दिन वह अज्ञान [अर्थात् अज्ञानी किसान] इन्कार कर उठेगा, उस दिन ज्ञान के ठेकेदार स्कूल फिसल पड़ेंगे, कालेज नष्ट हो जावेंगे

और विश्वविद्यालय धूल में मिल जायेंगे। उसे नहीं मालूम कि जिस दिन उसका खून चूसने के लिए न होगा, उस दिन देश में यह उजाला, यह चहल पहल, यह कोलाहल न होगा। फौज और पुलिस, वजीर और वाइसराय, सब कुछ किसान की गाढ़ी कमाई के खेल हैं। बात इतनी ही है कि किसान इस बात को जानता नहीं। (१०/५५-५६)।

सारा शासनतंत्र, विदेशी प्रभुसत्ता मुख्यतः किसानों के शोषण पर निर्भर हो तो यह निश्चित है कि किसानों के संगठन और संघर्ष के बिना उस प्रभुसत्ता को खत्म नहीं किया जा सकता, उस शासनतंत्र को बदला नहीं जा सकता। भारत में जिस हद तक ब्रिटिश कूटनीति सफल हुई है, उसका कारण यह है कि स्वाधीनता आन्दोलन ने उस कूटनीति को विफल करने के लिए किसान शक्ति का भरपूर उपयोग नहीं किया। साहूकार, जमींदार, राजकर्मचारी, इन सबकी मिलीभगत थी; ये भारत में अंग्रेजी शासनतंत्र की आधार-शिला थे। "न्यायालय में रिश्वत देने के लिए, पुलिस चौकी पर हथकड़ियों में बंद, अफसरों के सन्मुख बेगार देने और जूतियां खाने के लिए, और अगर फसल में कुछ पैदा हो गया तो साहूकार के द्वारा लूटे जाने के लिए आप सदैव किसान नामक प्राणी को हाजिर पाइयेगा।" (१०/५५)। सारी न्याय व्यवस्था, सारा दमनतंत्र इसलिए था कि किसान का शोषण बरकरार रहे। महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी की निगाह देश की बहुसंख्यक किसान जनता पर बराबर रहती है; स्वाधीनता आन्दोलन की सफलता के लिए और पुरानी समाज व्यवस्था बदलने के लिए वे इस किसान जनता को शिक्षित और संगठित करने पर बराबर जोर देते रहे हैं।

किसानों का आन्दोलन केवल किसानों के लिए नहीं, देश की समस्त जनता के लिए--यहां के पूंजीपति वर्ग के लिए भी—आवश्यक और उपयोगी था। भारत की संपत्ति अंग्रेजों के लिए थी, अंग्रेजी राज के लिए थी; धन इतने बड़े परिमाण में बाहर भेजा जाता था कि औद्योगिक विकास के लिए यहां आवश्यक पूंजी का संचय न हो पाता था। औद्योगिक विकास के लिए राजनीतिक और आर्थिक रूप से देश का स्वतंत्र होना जरूरी था। किसानों की शक्ति स्वाधीनता आन्दोलन को अजेय बना सकती थी।

४. ब्रिटिश साम्राज्य में भारत की भूमिका

१६ मई १९२५ के 'कर्मवीर' में प्रकाशित 'हिन्दुस्तान की साम्पत्तिक लूट' शीर्षक लेख में साम्राज्यवादी तंत्र का जो विश्लेषण किया गया है, वह १९वीं सदी के कुछ उदार-पंथी अर्थशास्त्रियों के विश्लेषण से मिलता-जुलता है। इसके साथ ही वह कुछ बातों में मार्क्स और मार्क्सवादियों के विश्लेषण से भी मिलता-जुलता है। खास बात यह है कि उक्त लेख में साम्राज्यवाद की विश्व व्यवस्था पर बराबर ध्यान केन्द्रित किया गया है और उस व्यवस्था के अन्तर्गत ही पराधीन भारत की भूमिका विवेचित है। "हिन्दुस्तान को छलबल से अपने अधीन करने के पश्चात् इंग्लैन्ड ने ३ बातों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया"। (१०/२१)। उन तीन बातों की चर्चा से पहले भारत को छलबल से अधीन करने पर विचार कर लें। छल और बल में अंग्रेजों ने बल से कम, छल से अधिक काम लिया। जो हमारा माल बेचकर अमीर बनने का सपना देख रहे थे, वे हमसे आर्थिक रूप में अधिक शक्तिशाली

हो न सकते थे। अंग्रेज स्वलिखित भारतीय इतिहास का "वह पात्र है जो अपने काले कलंकित मुख पर सफेदी पोतकर प्रेक्षकों के सामने सौन्दर्य का मूर्त स्वरूप बन कर रंगमंच पर आता है।" (१०/१८८)। यहां इतिहास के प्रति उदारपंथी सुधारकों के दृष्टिकोण से एकदम भिन्न विवेक दिखाई देता है। बंगाल और महाराष्ट्र के कुछ इतिहासकार अंग्रेजों की कपटनीति के प्रमाण जुटा रहे थे। १९वीं सदी के आरंभ में अंग्रेजों को मराठा शक्ति से निपटना था। "उस समय अंग्रेजों की हैसियत आजकल के रियासती शाहंशाहों की अपेक्षा अधिक नहीं थी। इसीलिए उन्हें फौजी मुकाबले के बजाय छल, कपट, घूस आदि मार्गों का अवलंबन करना पड़ता था।" (१०/१८९)। अपनी टिप्पणी के अन्त में चतुर्वेदी जी ने लिखा, "यूरोप में अंग्रेज जाति वीरता के लिए विख्यात नहीं है. विज्ञान में भी वह गिरी पड़ी सी है, परन्तु छल, कपट और चालबाजी में वह सबसे बढ़ी हुई है। इसी स्वभाव ने उसे हिन्दुस्थान का शासक बनाया।" (१०/१९२)। १८५७ में दिल्ली पर दुबारा अधिकार करने के बाद अंग्रेजों ने अपनी वीरता का जो बखान किया, उस पर मार्क्स की टिप्पणी तुलनीय है: "दिल्ली पर हल्ला बोलकर सैनिकों ने कब्जा कर लिया, इस बात को लेकर उनकी वीरता का जो शोर ग्रेट ब्रिटेन के आसमान में गूंज रहा है, उसमें हम शामिल न होंगे। अपना जयजयकार करने में, खास तौर से जब सवाल बहादुरी का हो, कोई भी जाति अंग्रेजों का मुकाबला नहीं कर सकती, फ्रान्सीसी भी नहीं। लेकिन तथ्यों की छानबीन की जाये तो सौ में निन्नानवे उदाहरण ऐसे मिलेंगे जिनमें वीरता की महिमा जल्दी ही घट कर मामूली सी चीज रह जाती है।" (Marx and Engels, The First Indian War of Independence, 1857-1859, पृ. ११७)। इसलिए छल-बल की नीति में छल की मात्रा ही अधिक होती थी।

छलबल से भारत को अपने अधीन करने के पश्चात् इंग्लैन्ड ने जिन तीन बातों की ओर विशेष ध्यान दिया, वे इस प्रकार थीं:

"(१) हिन्दुस्तान के आसपास के देश, जैसे ब्रह्मदेश, मलाया, स्याम, मैसोपोटेमिया और अरब आदि पर चढ़ाई की।

(२) इंग्लैन्ड से हिन्दुस्तान आने के जलमार्ग पर जो दो मार्के के स्थान पड़ते हैं, उन सब पर अधिकार जमाया।

(३) हिन्दुस्तान तक आनेवाले खुश्की के रास्ते पर पड़ने वाले देशों को या तो जीता या अपने अधीन किया।" (१०/२१)। ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार में पराधीन भारत की भूमिका—संक्षेप में यह है। यहां की धन-जन-शक्ति का उपयोग करने से ही एशिया में साम्राज्य का यह प्रसार संभव हुआ।

पिछले दो तीन दशकों में कुछ विद्वान् यह प्रचार करते रहे हैं कि भारत पर अधिकार जमाये रखने से ब्रिटेन को घाटा था, भारत को लाभ था। वास्तविक स्थिति यह थी कि अन्य साम्राज्यवादी गुटों का मुकाबला करने के लिए ब्रिटेन भारत के साधनों का ही भरोसा करता था। यह कहना बिल्कुल सही था कि "हिन्दुस्तान के जन और धन के बल पर इंग्लैन्ड एशिया की स्वतंत्र शक्तियों से, जापान आदि से, लोहा लेना चाहता है और अपना प्रभुत्व समस्त एशिया पर जमाना चाहता है। यूरुप अथवा एशिया के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों से इंग्लैन्ड

ने जो अन्तरराष्ट्रीय संधियां की हैं, वे भी इसी एक उद्देश्य को सम्मुख रखकर की गयी हैं—हिन्दुस्तान हाथ से न निकलने पावे। हिन्दुस्तान से इंग्लैन्ड के ४-५ करोड़ लोग पलते हैं, हिन्दुस्तान के वल पर इंग्लैन्ड का अधिकार संसार भर पर जमता है।" (उप.)। इंग्लैन्ड दूसरे साम्राज्यवादी देशों का मुकावला तभी कर सकता है, जव उसे सस्ते दामों कच्चा माल मिलता रहे और उसके पास अपने पक्के माल की खपत के लिए वाजार हो। "अंग्रेजी उद्योग-धन्धों को जिन्दा रखने के लिए इंग्लैन्ड के लिए आवश्यक है कि हिन्दुस्तान के कच्चे माल पर अपना नियंत्रण चलाये और साथ-साथ शासन सत्ता भी अपने हाथ में रखे जिससे हिन्दुस्तान का वाजार अकेले उसी के हाथ में रहे और वह पक्का माल वना सके।" (१०/२२)।

यह है इजारेदार पूंजीवाद। स्वच्छंद व्यापार का जमाना पीछे छोड़कर वह कच्चे-पक्के माल के वाजार पर एकाधिकार चाहता है। इस इजारेदार पूंजीवाद की एक विशेषता यह है कि वह पक्के माल के अलावा पूंजी का निर्यात भी करता है। भारत के कुल विदेशी व्यापार का ६४ फीसदी इंग्लैन्ड से संवंधित है। "इसके अलावा अंग्रेजी पूंजी के व्याज और मुनाफे से इतनी रकम इंग्लैन्ड को और प्राप्त होती है जिसके वल पर इंग्लैन्ड के हजारों कुटुंवों का भरणपोषण चलता है।" (उप.)। ब्रिटिश पूंजी पर भारत कितना व्याज देता है, यह प्रश्न साम्राज्यवाद का स्वरूप पहचानने के लिए जितना महत्वपूर्ण १९२५ में था, उतना ही १९८४ में है। इंग्लैन्ड ने भारत की वित्तीय व्यवस्था को लंदन के वैंकों से बांध रखा था। "हिन्दुस्तान के नोटों का सुवर्ण निधि, सारा का सारा, वैंक आफ इंग्लैन्ड में रखा जाता है। इंग्लैन्ड में सोने का पाउंड चलता है और हिन्दुस्तान में चांदी का सिक्का चलता है। हिन्दुस्तान [का] सर्राफा वजार इंग्लैन्ड के हाथ में है, इसलिए चांदी के रुपयों की सोने के साथ कीमत ठहराने में इंग्लैन्ड वहुत वड़ा मुनाफा हिन्दुस्तान से कमाता है।" (उप.)। ये सारी वातें कुछ विस्तार से रजनी पाम दत्त की पुस्तक **आज का भारत** में हैं। इसके प्रकाशित होने में अभी पंद्रह साल की देर थी। माखनलाल चतुर्वेदी का लेख भले ही ऐग्नीस स्मेडले के निबंध के सहारे लिखा गया हो, उससे सावित यह होता है कि सन् २०-३० के दशक में जागरूक हिन्दी लेखक इजारेदार पूंजीवाद का वह स्वरूप पहचान रहे थे जिसका विश्लेषण मार्क्सवाद की विशेषता है। इस विश्लेषण से जो नतीजा निकलता है, वह यह कि साम्राज्यवाद पराधीन देशों को आर्थिक-सांस्कृतिक रूप से पिछड़ा हुआ रखता है, उनकी मुक्ति के संघर्ष में वहुसंख्यक किसान जनता की भूमिका निर्णायक होती है।

पूंजी पर सूद और व्यापार के मुनाफे के अलावा ब्रिटेन के हजारों कर्मचारी भारत के सहारे पलते थे। "हिन्दुस्तान के शासन के लिए इंग्लैन्ड ने एक सिविल सर्विस स्थापित की है। इसकी वड़ी-वड़ी नौकरियां, वड़ी-वड़ी तनख्वाहों पर, अंग्रेजों को दी जाती हैं। कुछ दिन की नौकरी के वाद प्रत्येक अंग्रेज विलायत लौट जाता है और उसे आजीवन पेन्शन मिलती है। हिन्दुस्तान से खींची जाने वाली संपत्ति का यह एक मार्ग है और यह वर्ष में २ करोड़ पौन्ड या ३० करोड़ रुपये तक पहुँचता है! सर जान कैम्पवेल ने अन्दाज लगाया है कि इतनी ही रकम अंग्रेज लोग अपने घर प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान से भेजते हैं! प्रतिवर्ष इतना कर भी हिन्दुस्तान इंग्लैन्ड को देता है! इसका कोई वदला हिन्दुस्तान को नहीं मिलता

जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुतान दिन-ब-दिन गरीब होता जाता है।" (उप.)। इस तरह की ब्रिटिश आमदनी की तफसील सितंबर १८५७ में लिखे हुए मार्क्स के निबंध British Incomes in India में है। (देखें, The First Indian War of Independence, पृ. ८६)। ब्रिटेन ने अपनी सभ्यता का जो विकास किया, उसका आधार भारत से प्राप्त संपत्ति थी। इस संपत्ति में वहां का मजदूर वर्ग भी हिस्सा बँटाता था। "रैमसे मैकडोनल्ड के मंत्रिकाल में यह बात स्पष्ट हो गयी थी —जबकि हिन्दुस्तान के कुछ विशेष दमनकारी कानून बनाये गये थे।" (१०/२५)। (किन्तु यह धारणा गलत है कि "अंग्रेज कम्युनिस्ट भी 'गोरे आदमी का बोझ' उठाने की उम्मीद रखता है।" रजनी पाम दत्त की पुस्तक १९४० में प्रकाशित हुई; भारत में वह जब्त कर दी गयी। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि उनके शोषण तंत्र की भीतरी जानकारी भारत के शिक्षित जनों को हो।)

हिन्दी के अन्य जागरूक लेखकों की तरह माखनलाल चतुर्वेदी अन्य देशों के स्वाधीनता आन्दोलनों की ओर ध्यान दे रहे थे। इंग्लैन्ड ने छोटे देशों की स्वाधीनता की रक्षा के लिए जर्मनी से युद्ध किया था, इस दावे का मजाक उड़ाते हुए १९२० में माखनलाल जी ने लिखा था, "जर्मनी को दबाकर इंग्लैन्ड अपनी स्वातंत्र्यप्रियता का इश्तहार दे चुका था किन्तु आयरलैन्ड को स्वराज्यदान देते समय इंग्लैन्ड के बुद्धिमान कूटनीति विशारदों की अक्ल का दीवाला निकला दिखता है।" (९/१६५-६६)। आयर्लैन्ड के स्वाधीनता-संग्राम में मजदूरों की भूमिका पर विशेष ध्यान देते हुए लिखा था, "आयरलैन्ड के मजदूर तथा रेलवे कर्मचारी सरकारी शस्त्रास्त्र रेल पर से उतारने और चढ़ाने से हाथ रोक चुके हैं। प्रधान मंत्री लायड जार्ज इस कार्य को 'सरकारी सत्ता पर आघात' समझते हैं और रेलवे मैन्स युनियन के प्रतिनिधियों को धमकी देते हैं कि सरकार हर तरह से आयरलैन्ड में शान्ति प्रस्थापित करेगी।" (९/१६६)। आइरिश देशभक्त मैकस्वेनी की भूख हड़ताल के समय उनसे अपने भाईचारे की घोषणा करते हुए चतुर्वेदी जी ने लिखा, "हम भी मि. स्वेनी के पथ के पथिक हैं।" (९/२४१)। इंग्लैन्ड तो आयर्लैन्ड की तरफ प्रेम का हाथ बढ़ाता है, केवल आयर्लैन्ड हिंसा पर उतारू है, इस प्रचार का खंडन करते हुए उन्होंने लिखा, "यदि उस पंजे के बढ़ते हुए कोई देश शताब्दियों तक पराधीन रह सकता है तो ईश्वर और मुल्क के नाम पर उचित यही है कि वह पंजा लाचार कर दिया जाये और आगे न बढ़ने पाये"। (९/२७९)। बेशक, आन्दोलन शान्तिपूर्ण होना चाहिए किन्तु यह कहने का अधिकार अंग्रेजों को नहीं है। "जो लोग शान्ति आन्दोलनकारी मैकस्विनी को भूखों मारकर उनकी हत्या कर सकते हैं, उनकी पवित्र और लचीली जीभ को यह शोभा नहीं देता कि वे अपने ही हाथों दुखियों के कलेजों में छेद करें और फिर उन जख्मों पर शान्ति के उपदेशों का नमक छिड़कें।" (९/२७९)। भूख हड़ताल के कारण यतीन्द्रनाथ दास की मृत्यु होने पर चतुर्वेदी जी ने स्वभावतः मैकस्विनी को फिर याद करते हुए लिखा था, "६३ दिन के कठिन उपवास व्रत के पश्चात्, इस वीरात्मा [यतीन्द्रनाथ दास] का अंतिम श्वास, अमरत्व में विलीन हो गया। आयरलैन्ड के टेरेन्स मैकस्विनी ने भी इतने दिनों ब्रिटेन के जेलखानों के सीकचों में भूखों रहकर, अपने प्राण त्याग दिये थे।" (४/१२०)। ऊपर से आजादी, भीतर अपनी प्रभुसत्ता, अंग्रेजों के इस स्वांग का मजाक उड़ाते हुए उन्होंने लिखा, "सन् १९२१

तक आयर्लैंड के स्वाधीनता के आन्दोलकों को गदर मचानेवाला कहा गया, उन्हें जेल में ठूंसा गया, और फांसियां दी गयीं। किन्तु जब वे समझौते पर आये तब उन्हें 'फ्री स्टेट' के नाम से एक निकम्मी चीज दे दी गयी। भारतीय नेता चाहे जो कहें परन्तु भारतीय तरुण कभी आयरिश शासन विधान को अपने देश में नहीं लेना चाहेंगे।" (१०/३०५)। साम्राज्यवाद अपना आर्थिक शोषण कायम रखने के लिए विभिन्न देशों से अलग-अलग तरह के राजनीतिक संबंध कायम करके उन्हें अपने प्रभाव क्षेत्र में बनाये रहता है। यही नाटक अंग्रेज आयर्लैंड में खेल रहे थे।

"ब्रिटिश फौजी नीति का केन्द्र हिन्दुस्तान है" (१०/२४), इस स्थापना के प्रमाण आये दिन मिलते रहते थे। अंग्रेजों ने चीन के स्वाधीनता आन्दोलन का दमन करने के लिए भारतीय सेना का उपयोग किया। माखनलाल चतुर्वेदी ने ब्रिटिश नीति का विरोध करते हुए लिखा, "गुलाम भारत के लोगों ने पुकार मचाई पर पराधीन भारत की सेना उसकी अपनी नहीं; भारत का खजाना उसके अपने हाथ में नहीं। उन्होंने केवल अपना विरोध प्रगट कर दिया। गोले गोलियां लेकर, चीन की सहायता के लिए पहुँचना, हथियार छिने हुए पराधीन भारत के लिए असंभव था।" (१०/२४८)। इस वाक्य की ध्वनि स्पष्ट है। यदि भारत स्वाधीन होता, उसकी अपनी सेना होती, तो वह चीनी जनता के साथ मिलकर साम्राज्यवाद से युद्ध करता। इसी तरह अरबों के स्वाधीनता संग्राम का पूर्ण समर्थन करते हुए उन्होंने लिखा था, "भारत के धन और जन की बलि चढ़ाकर अरबों की स्वतंत्रता पर हमला करने वाली इस नीति को कोई भारतीय पसंद नहीं करता।" (९/२२२)।

विश्व पैमाने पर चलने वाले साम्राज्यविरोधी आन्दोलनों से रूसी क्रान्ति अभिन्न रूप में जुड़ी हुई थी। दुनिया के एक बड़े हिस्से में उसने साम्राज्यवाद का घेरा तोड़ दिया। उसने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को, इस आन्दोलन से संबद्ध लेखकों को प्रभावित किया। भारतेन्दु-द्विवेदी युगीन अनेक साहित्यकारों की तरह पहले माखनलाल चतुर्वेदी भी ब्रिटिश बादशाही को अंग्रेज नौकरशाही से भिन्न प्रपंच मानते थे। 'कर्मवीर' के प्रथम अंक में उन्होंने लिखा था, "सम्राट् की घोषणा सहायता के लिए बांहें पसारने वालों को सहारा है और सुधार की योजना आज तक की हुई तपस्या का परिणाम।" (९/१६)। यही बात उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय में मालवीय जी के भाषण का सारांश देते हुए लिखी, "सुधार योजना और सम्राट् की घोषणा ने भारत के इतिहास में नवीन युग उपस्थित कर दिया है"। (९/४२)। किंतु भारत का औद्योगिक विकास, सम्राट् की घोषणाओं के बल पर नहीं, भारतीय जनता के स्वदेशी आन्दोलन के फलस्वरूप हुआ, यह सत्य चतुर्वेदी जी ने प्रत्यक्ष देखा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि भारत के पूंजीपति इस आन्दोलन से लाभ उठाते हैं किन्तु उस लाभ का कोई अंश मजदूरों को नहीं देते। चतुर्वेदी जी ने भारतीय समाज के इस नये अन्तर्विरोध से रूसी क्रान्ति के विश्लेषण का सीधा संबन्ध जोड़ा था।

श्रीकान्त जोशी ने "रूसी क्रान्ति के भी काफी पहले" कृष्णार्जुन युद्ध में वर्गहीन समाज के स्वप्न की ओर सही ध्यान आकर्षित किया है। उस नाटक में चतुर्वेदी जी ने लिखा था, "आगे चलकर पृथ्वी पर समष्टिवाद का बल बढ़ेगा, लोग प्रयत्न करेंगे कि धनवान और धनहीन का भेद मिटे। सुवर्ण तथा ऐश्वर्य से दमकते हुए महल और पास ही में छप्पर

रहित झोंपड़ी दिखाई न देंगी, महल तोड़े जावेंगे, झोंपड़ियां हवेलियों में परिणत की जावेंगी, धन और धरती का संसार के सभी मनुष्यों में बराबर बँटवारा होगा।" (१/भूमिका)। गरीब और पीड़ित जनता के प्रति माखनलाल जी की गहरी सहानुभूति उनका बहुत बड़ा संबल रही है। उनकी राजनीतिक विचारधारा समतल भूमि पर विकसित नहीं हुई किन्तु उस संबल के कारण उसके विकास की दिशा पहचानना मुश्किल नहीं है। १९२० में उन्होंने साम्यवाद के बारे में लिखा था, "वह संसार की साम्पत्तिक, राजनैतिक, धार्मिक अथवा बौद्धिक महत्ता के ठेकेदारों को कहता है कि यदि तुम अपनी हठ से न हटोगे तो संसार तुम्हें हटने को विवश कर देगा।" (९/१३८)। भारतीय मजदूरों की हड़तालों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने लिखा, "हमारे देश में इस समय नार्थ वेस्ट रेलवे के कर्मचारियों, अहमदाबाद के मिलवालों, मद्रास के तेल के कारखानों में काम करनेवालों और ब्यावर (राजपूताना) के मिल कर्मचारियों ने अपने-अपने काम छोड़ रखे हैं।" (उप.)। स्वाधीनता आन्दोलन के उस प्रारंभिक दौर में ही भारतीय पूंजीवाद को सावधान करते हुए उन्होंने लिखा, "सम्पत्ति के यथोचित विभाग का प्रश्न उपस्थित है। मजदूर चाहते हैं, भरपेट भोजन मिले, पूंजीवाले अपने ऐशो आराम में कमी करना पसंद नहीं करते।" (उप.)। रूसी क्रान्ति का सबक यह है, "लोकसत्ता के सामने 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम्' [की] शक्ति रखनेवाली जारशाही तक की कुछ न चली!" अतः "पूंजीवाले यदि जल्द रास्ते पर न आये तो देश की उलझनें बढ़ जायेंगी।" (उप.)। यहां भारतीय समाज के उस अन्तर्विरोध की ओर संकेत है जो स्वाधीनता आन्दोलन को प्रभावित करने लगा था और जो स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश में भारी उलझनें पैदा करनेवाला था।

इसी वर्ष उन्होंने रामचन्द्र वर्मा की **साम्यवाद** पुस्तक की समीक्षा लिखी। (रचनावली में **साम्यवाद** के लेखक का नाम बाबूराम वर्मा गलत छपा है।) भारत में हिन्दी के समाचारपत्र पढ़नेवाले बोल्शेविज़्म, बोल्शेविक शब्दों से खूब परिचित हैं, इनकी विस्तृत जानकारी उन्हें नहीं है। रामचंद्र वर्मा का ग्रंथ "हिन्दी में अपने ढंग का पहला" है। "साम्य-वाद का अभिप्राय यह है कि सब मनुष्य एक समान हैं और सबको अपनी उन्नति करने का समान अवसर दिया जावे, संपत्ति पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार न रहे, पूंजीदारी की हानिकारक प्रथा तोड़ दी जावे, जमीन पर समाज का अधिकार होवे, प्रत्येक मनुष्य अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार कार्य करे और अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यथेष्ट सामग्री प्राप्त करे, इत्यादि।" (५/२१४)। इसकी उत्पत्ति का कारण यह है कि औद्योगिक उन्नति से आर्थिक विषमता उत्पन्न हुई; "साम्यवाद इस विषमता को दूर करने का अमोघ अस्त्र माना गया है और अनेक देशों में इसका अवलंबन किया जा रहा है और बहुत सफलता के साथ।" (उप.)। पूंजीदारों का आसन हिल गया है, वे समझने लगे हैं कि "उनकी धींगा-धींगी देर तक नहीं चल सकती" और श्रमजीवी संघशक्ति का प्रभाव समझने लगे हैं। "कहीं-कहीं साम्यवादियों ने आवेश में आकर बड़े-बड़े अन्याय कर डाले हैं —राज्य-सिंहासन तक उलट दिये हैं। रूस के बोल्शेविक लोग इसी अतिवादी साम्यवाद के अनुयायी हैं, उनका आतंक इस समय सारे संसार में छा रहा है।" (उप.)। पुस्तक के एक अध्याय में "भारतीय कृषकों और मजदूरों का मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है।" लेखक ने बहुत परिश्रम किया है।

"हमारा अनुरोध है कि प्रत्येक समर्थ हिन्दी भाषा भाषी इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़े।" यदि प्रकाशक "इस पुस्तक का सारांश लगभग १०० पृष्ठों में लिखाकर प्रकाशित करें, तो पुस्तक का प्रचार अधिक व्यापी होगा और जनता साम्यवाद के सिद्धान्तों से परिचित हो सकेगी और बोलशेविज़्म के सिद्धान्त समझने में अभी जो कहीं-कहीं नासमझी हो रही है, वह अधिकांश में दूर हो सकेगी।" (५/२१५)।

चतुर्वेदी जी बोल्शेविकों का अतिवाद—अर्थात् क्रान्ति नहीं चाहते। किन्तु वह पूंजीदारी प्रथा को हानिकारक मानते हैं और चाहते हैं कि बोल्शेविज़्म को समझने में जहां नासमझी हो, वहां उसे दूर किया जाये। १६२६ में उन्होंने 'श्रमोपासक रशिया और धनोपासक इंग्लैन्ड' लेख लिखा। इससे पता चलता है कि सन् २० के बाद वह साम्यवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन करते रहे थे। ब्रिटेन को रूस से भय तो पहले भी था "परन्तु जब से **रशिया की सोवियट सरकार** के हाथ में रशिया के शासन की बागडोर आयी है, जब से रशियन श्रमजीवी प्रजा के हाथ में रशियन राज का कारोबार आया है, तब से ब्रिटेन का भय और अधिक बढ़ गया है।" (१०,१६७)। सोवियत शासन से रूस के मजदूर, कारीगर, व्यापारी, किसान, स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे "सभी संतुष्ट हैं। सभी रशिया को अपना देश और अपने आपको रशिया की सन्तान मानने लगे हैं। अपने मन का [अपनेपन का] स्वाभिमान उनमें उत्पन्न हो गया है।" (१०/१६७)। इस स्वाभिमान के कारण फूट के बीज बोने में ब्रिटेन को भारी कठिनाई हो रही है।

ब्रिटेन और रूस का भेद साम्राज्यवादी धनिक सत्ता और साम्राज्यविरोधी लोकसत्ता का भेद है। इस प्रकार: "**साम्राज्यवादी ब्रिटेन** का अस्तित्व उसके उपनिवेशों, दलित देशों और उनके साथ किये जाने वाले प्रचंड व्यापार पर अवलंबित है। स्वभावतः ब्रिटिश जाति को धनिकों के शासन की आदत पड़ी हुई है। पूंजीपतियों की सत्ता का प्रभाव ब्रिटिश शासन पर विशेष रूप से दिखाई देता है। रशिया का राज गरीबों का और उस देश के बहुसंख्यक निवासियों का राज है, तो ब्रिटिश राज समाज के अत्यल्प संख्यक धनिकों का राज है।" (१०/१६८)। पूंजीवादी जनतंत्र और समाजवादी जनतंत्र का भेद यहां संक्षेप में, किन्तु बहुत स्पष्ट रूप में, बताया गया है। दोनों देशों की शासन पद्धतियां परस्पर विरोधी हैं, "इसी वजह से **रशियन सोवियट की बदनामी** का अथक प्रयत्न ब्रिटिश सत्ता करती रही है।" यह बदनामी भारत में खूब फैले, ब्रिटिश सत्ता इसका विशेष ध्यान रखती आई है। कारण यह कि "रशिया देश हिन्दुस्थान से निकट है, अतएव हिन्दुस्थान के लोगों में रशिया के नवीन कार्यों और समाजहित-साधक प्रयोगों के विषय में तिरस्कार भाव पैदा करने वाली खबरें प्रायः फैलाई जाती हैं।" (उप.)। महायुद्ध के बाद अनेक यात्रियों ने रूस जाकर वहां की स्थिति देखी और उसका वर्णन किया। "रशियन सरकार गरीबों की सहायक है। वह अपने ही नहीं, अपने देश के बाहर के गरीबों, श्रमजीवियों, हलाल खाने वालों की समर्थक है।" (उप.)। दुनिया के पूंजपतियों को इसी बात से बड़ा कष्ट है। पराधीन देशों के गरीब सोवियत संघ को अपना मित्र और सहायक मानते हैं।

केवल ब्रिटेन के नहीं, अमरीका के पूंजीपति भी एशिया में पैर फैला रहे हैं। "चीन में अमरीकन पूंजीपतियों का खासा अड्डा जमा हुआ है।" (उप.)। जिन्होंने शिकागो और

मास्को देखे हैं, उनका कहना है कि "शिकागो धनोन्माद का बाह्य दर्शन है तो मास्को श्रमजीवी संतोष का आन्तरिक प्रकट रूप है। रूस और अमरीका में केवल वैचारिक मतभेद नहीं है। एक चीन के स्वाधीनता आन्दोलन का समर्थक है, दूसरा उसका विरोधी। "चीन की पिछले दिनों की खबरों से दुनिया को मालूम हो गया है कि अमरीका का धनसत्तावाद और रशिया का जनसत्तावाद किसी न किसी दिन वहां खून की नदियां बहायेगा।" (१०/१६६)। भविष्यवाणी सही साबित हुई। १६२७ में अमरीका और चीन के अन्तर्विरोध को देखना, रूस समर्थित अमरीका-विरोधी चीनी क्रान्ति का अनुमान करना बड़ी राजनीतिक दूरदर्शिता है। हर देश के पूंजीपति अपने यहां के मजदूर आन्दोलन के लिए रूस को दोषी ठहराते थे। एक उदाहरण इस प्रकार है। "गत मास की इंग्लैण्ड की हड़ताल में रशियन ट्रेड यूनियन संस्थाओं ने कई लाख पौण्ड की सहायता अंग्रेज हड़तालियों के बाल-बच्चों के लिए पहुँचाई थी। ब्रिटेन ने इसे अंग्रेज हड़तालियों को भड़काने का प्रयत्न कहा और रशियन सरकार को इसके लिए जिम्मेदार बताया।" (उप.)। दुनिया को बदलने के लिए दुनिया के मजदूरों की एकता जरूरी है। इस एकता को तोड़ने के लिए अन्तरराष्ट्रीय पूंजीवाद सदा से प्रयत्नशील रहा है।

५. देशी पूंजीवाद और मजदूर आन्दोलन

माखनलाल चतुर्वेदी ने पूरी निष्ठा से असहयोग की नीति स्वीकार की थी। यदि अहिंसा और असहयोग की नीति सफल न हुई तो स्वाधीनता और आर्थिक विकास की समस्याएं बोल्शेविज़्म द्वारा ही हल होंगी, यह अहसास उन्हें १६२० में ही होने लगा था। "कोई नहीं कह सकता कि धनिकों द्वारा गरीबों पर होने वाले अत्याचार हटा न दिये जाएं, क्योंकि हटाये न जाने पर उसे [उन्हें] बोल्शेविज़्म आकर हटावेगा।" (६/१२४)। किन्तु जो बात उन्हें उस समय भी गांधीवाद से अलग करती थी, वह उद्योगीकरण के बारे में उनकी नीति थी। सबसे पहले भारत का निर्यात व्यापार भारतवासियों के हाथ में होना चाहिए। पहले हमारी जरूरतें पूरी हों, उसके बाद ही भोजन सामग्री तथा अन्य चीजें बाहर भेजी जायें। भारत के बाजार में स्वदेशी वस्तुएं बिकनी चाहिए। विदेशी माल के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार का परिणाम होगा भारतीय उद्योग-धंधों का विकास। "यह आत्मदमन कौन सह सकता है कि यूरोप की चीजें बन्द होते ही जापान की वस्तुएं हमारे बजारों को पाट दें और सरकार का कलेजा हमारे हाथों हमारी चीजें बनवाने के लिए तब भी न पसीजे? तब यह किसे अभीष्ट नहीं कि स्वदेशी तत्वों की उन्नति और हिन्दुस्तानी धन्धों की तरक्की की जाय और इसके लिए सरकारी खजाना थैली खोलने के लिए बाध्य किया जाय, और चुंगी के नियम ऐसे हों जो हमारी चीजों को हमारे देश और विदेशों में भी सुगमता से पाट सकें। तथा आने वाले उस माल को, जो हमारे यहां बन सकता है, हमारे देश के माल का प्रतिस्पर्धी न बनने दें।" (६/१२४)। 'हमारा देश' यहां चरखे करघे वाले स्वायत्त ग्राम समाजों का देश नहीं है। वह आधुनिक उद्योग-धन्धों का देश है, ऐसा देश है जिसका माल देशी-विदेशी बाजारों को पाट सकता है। यह तब होगा जब विदेशी माल देशी माल का प्रतिस्पर्धी न बनेगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी की

तरह कर्मवीर माखनलाल चतुर्वेदी उद्योगीकरण के पक्षपाती हैं, पिछड़े हुए अलग थलग, स्वायत्त ग्राम समाजों के स्वप्नद्रष्टा नहीं हैं। देश की रक्षा के लिए औद्योगिक विकास चाहिए, शस्त्र लेकर लड़ने वाली सेना चाहिए। अहिंसा व्यावहारिक नीति है, धर्म नहीं है। इसलिए उनकी मांग थी कि रेलों की आमदनी राष्ट्र को मिले और "डेढ़ सौ वरस की निहत्थी भारतीय जनता को वैसी ही पड़ी न रहने देकर नागरिक भारतीय सेना का संगठन किया जाय और अव आधी रात को सोते हुए, पुलिसमैन से 'होशियार रहो' सुनते रहने की अपेक्षा, सचमुच ही जनवल में होशियार रहकर दिखा दिया जाय।" (६/१२४)। वैलगाड़ियों के सहारे नहीं, रेलों के सहारे अखिलभारतीय यातायात व्यवस्था चलेगी; निहत्थी जनता नहीं, सशस्त्र जनवल का भरोसा करनेवाली नव जाग्रत भारतीय जनता, नागरिक भारतीय सेना देश की रक्षा करेगी।

भारत के अनेक नेताओं ने स्वदेशी आन्दोलन के एक व्यापक स्वरूप की कल्पना की थी। पुरानी लीक से हटकर लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस को "वाध्य किया था" कि वह "स्वदेशी का तपस्वी वन कर योगभ्रष्ट करनेवाली मनोमोहिनी दुनिया का वायकाट कर दे"। (६/२३३)। यह वायकाट व्यापक क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप ले सकता था। "तिलक ने एक बार कहा था--'सरकार को लगान वसूल करने में हम सहायता नहीं देंगे। हिन्दुस्तान की सीमा के वाहर की लड़ाइयों में हम सरकार को हिन्दुस्तानी सिपाही और धन नहीं देंगे, हम उनकी अदालतों की मदद नहीं करेंगे। स्वयं अपने न्यायालय खोलेंगे, मौका आने पर टैक्स नहीं देंगे।' उन्होंने इसे वहिष्कार कहा था—महात्मा गांधी और राष्ट्रीय सभा [अर्थात् कांग्रेस] इसे असहयोग कहती है।" (६/२३४)। चतुर्वेदी जी को विश्वास था कि कांग्रेस ऐसा व्यापक आन्दोलन चलायेगी, किन्तु वैसा आन्दोलन चलाया नहीं गया, विशेष रूप से लगानवंदी वाले पक्ष को निरंतर सीमित रखा गया। उस समय ऐसे नेता काफी थे जो ऐसे आन्दोलन को असंभव मानते थे, जो अंग्रेजों की दी हुई रिआयतें स्वीकार करके उन्हें अमल में लाने के पक्ष में थे। इनके लिए जिस शब्दावली का प्रयोग माखनलाल चतुर्वेदी ने सन् २० में किया था, उसे स्वाधीन भारत के नागरिकों ने वड़े प्रेम से अपना लिया है। "हम देख रहे हैं कि जिस तरह स्वराज्य की उस चतुः सूची को देश के **कुर्सीभक्त** नेताओं ने असंभव कहा था, ठीक उसी तरह, महात्मा गांधी के असहयोग के उपायों को असंभव कहा जाता है।" (उप.; शब्दों पर जोर मेरा है।) इस **कुर्सीभक्ति** ने कांग्रेसी नेताओं को वाध्य किया कि वे १९३७ में ब्रिटिश कानून के मातहत मंत्रिमंडल वनायें और दूसरे महायुद्ध के वाद अंग्रेज वाइसराय (अथवा गवर्नर जनरल) की अध्यक्षता में अन्तरिम सरकार के भीतर मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के सहयोगी वन कर काम करें।

माखनलाल चतुर्वेदी को सन् २० में भी जो चीज दक्षिणपंथी नेताओं से अलग करती थी, वह उनकी अन्तरराष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के प्रति गहरी सहानुभूति थी। इटली के मजदूरों ने हड़ताल की है। प्रार्थनाओं से कोई काम होते न देखकर उन्होंने "कारखानों पर कब्जा करना शुरू किया" और "कारखानों के मालिकों को 'सोवियत' के ढंग पर मजदूरों का प्रबंध करने का वचन देना पड़ा।" (६/२३५)। मजदूरों और मालिकों के वीच वैमनस्य पहले भी था किन्तु महायुद्ध के बाद मजदूरों के "मन की स्थिति वदल गई है।" महायुद्ध में

शारीरिक बल का मूल्य प्रकट हुआ, परिणाम यह कि "संसार का प्रत्येक मजदूर नींद से जाग कर समझने लगा है कि वह भी संसार में एक बड़ी शक्ति है और उसे भी अन्य मनुष्यों की तरह सुख से जीवन व्यतीत करने का अधिकार है। इस भावना में इन दिनों की महँगी ने और भी जोर पहुँचाया जिसका परिणाम अकेले रशिया या इटली में ही नहीं, वरन् संसार की कुल सरकारों में देखा जा रहा है। इंग्लैन्ड के कोयले वालों ने अपनी मजदूरी बढ़ाने का निश्चय कर लिया है···धनिकों की पृष्ठ रक्षक सरकार कहती है कि अधिक काम करके बताओ, मजदूरी भी अधिक दी जायेगी···कोयला इस समय संसार के सारे कार्य चलाने वाली शक्ति है। यदि इंग्लैन्ड के दो लाख कोयले वाले हड़ताल कर देंगे तो इंग्लैन्ड को अपना वाणिज्य-व्यवसाय सँभालना अति कठिन हो जायेगा।" (६/२३५-३६)। इंग्लैन्ड के मजदूरों की हड़ताल वहां के पूंजपति वर्ग को कमजोर करती थी, इसलिये स्वभावतः भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को वह शक्तिशाली बनाती थी।

पूंजीवाद भारत में विकसित हो रहा था, उसके साथ नये अन्तर्विरोध विकसित हो रहे थे। "मजदूरों और धनिकों के झगड़े से भारतवर्ष भी मुक्त नहीं रहा है, यहां के धनिक भी अन्य देशों की तरह धन लोलुप हैं और यहां के मजदूरों को भी अन्य देशों की तरह भूख की पीड़ा होती है।" (६/२३६)। जी. आई. पी. रेलवे के कर्मचारियों ने अधिकारियों को बाध्य किया कि वे उनकी बातें सुनें। बंबई के डाकतार विभाग के कर्मचारियों ने सरकार से तीन बार प्रार्थना की, "उसका कुछ असर न हुआ और अन्त में उन्हें हड़ताल का ही सहारा लेना पड़ा।" (उप.)। हड़तालें इंग्लैन्ड में भी होती हैं, कुछ दिन बाद वहां समझौता हो जाता है, "पर हमारे यहाँ की हड़ताल का महीनों तक चलते रहना भी सरकार और उसकी छत्र-छाया में रहने वाले पूंजीवालों को जरा भी विचलित नहीं करता। इसके दो कारण हो सकते हैं—पहला सहानुभूतिशून्य सरकार और दूसरा मजदूर दल की शक्ति का कम होना।" (६/२५४)। मजदूरों को संगठित करना जरूरी है। इसके लिए प्रयत्न शुरू हो गया है। लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में ट्रेड यूनियन कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन बंबई में हुआ। "हम आशा करते हैं कि यह कांग्रेस देश के गरीब श्रमजीवियों में जागृति फैलायेगी और उन्हें एक सबल समाज बना देगी।" (६/२५५)। ब्रिटिश मजदूरों की ओर से कर्नल वेजवुड आये। "अपने अन्तर्राष्ट्रीय भाई की हैसियत से कर्नल वेजवुड का स्वागत किया गया।" (उप.)।

विदेशी माल के बहिष्कार से भारतीय पूंजीपतियों को अपने उद्योग-धन्धों के विकास का मौका मिलता था। स्वदेशी आन्दोलन से तटस्थ रहकर उन्होंने उससे पूरा लाभ उठाया। यह बात वे नेता जानते थे जो अनेक पूंजीपतियों से घनिष्ठ संपर्क कायम किये हुए थे। किन्तु वे यह बात कहते न थे। इसके सिवा यदि मजदूर अपनी दशा सुधारने के लिए संघर्ष करें तो वे उसका विरोध करते थे, हल्ला मचाते थे कि इससे औद्योगिक विकास में बाधा पड़ती है। २६ सितंबर १९२५ के 'कर्मवीर' में 'मिलों की हड़ताल' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ। मई १९०७ की 'सरस्वती' में प्रकाशित माधवराव सप्रे के 'हड़ताल' शीर्षक लेख का मानो यह नया संस्करण है। इसमें चतुर्वेदी जी ने भारतीय पूंजीपतियों के बारे में जो बातें कही हैं, वे सन् २५ के बाद के ५० साल का इतिहास समझने में सहायक हैं। बंबई की मिलों

में दो लाख आदमी काम करते हैं। मजदूर समाज की ऐसी श्रेणी से आते हैं कि उन्हें घर छोड़ना अच्छा नहीं लगता। मिल के एजेन्ट उन्हें फुसलाकर शहर ले आते हैं। अब वे हड़ताल पर हैं। कई मिलों में ताले लग रहे हैं और मजदूर बंबई छोड़कर वाहर जा रहे हैं। इससे मिलमालिकों के सामने भारी कठिनाई पैदा हुई है, पर इसके लिए जिम्मेदार कौन है?

"हमारे देश में वस्त्र व्यवसाय ही सर्वप्रथम व्यवसाय है। इसको बचाना व बढ़ाना देश के हित के लिए आवश्यक है। परंतु दुर्भाग्य से यह व्यवसाय जिन लोगों के हाथ में जा पड़ा है, उनमें से कई लोगों को राष्ट्रीय हानि-लाभ का विलकुल ज्ञान नहीं है। बंबई के मिल वालों को पांच साल पहिले काफी मुनाफा मिल चुका है परंतु उस ऐश्वर्य और समृद्धि के समय उन्होंने आपत्तिकाल के लिए काफी धन संचय नहीं किया। स्वदेशी वहिष्कार की लहर वीस साल पहिले जव इस देश में आयी थी, तव भी वस्त्र व्यवसाइयों एवं मिल मालिकों ने देश का साथ नहीं दिया। अभी ४-५ साल पहिले खद्दर आन्दोलन के समय भी देश के वस्त्र व्यवसायियों ने देश का साथ नहीं दिया और नकली खद्दर वना एवं वेचकर काफी धन कमाया। महायुद्ध के समय उन्होंने लगभग दूना मुनाफा खाया, आखिर इस संपत्ति से क्या ये लोग अपने व्यवसाय की रक्षा एवं आकस्मिक आपत्ति का सामना करने की योजना नहीं कर सकते थे।" (१०/५७)। वेशक, सरकार की नीति वस्त्र व्यवसाय को वढ़ावा देने की नहीं है। उसकी चुंगी नीति का विरोध करना चाहिए, किन्तु इसके साथ ही "हमें अपना घर भी देखने की आवश्यकता है और इसी दृष्टि से हम देश के मिल व्यवसायियों से पूछते हैं कि आपने कभी देश का साथ दिया है? आपने गरीव मजदूरों की हालत सुधारने, अपने वड़े-वड़े अधिकारियों के खर्च कम करने तथा इस या उस रास्ते मैनेजिग एजेंट्स अथवा मैनेजिग डाइरेक्टर के घर में चालाकी से पहुँचने वाले पाप धन को रोकने का प्रयत्न किया है।" (१०/५७-५८)।

मैनेजिग एजेन्टों के द्वारा जनता की रकम का उपयोग पूंजीपति जिस तरह करते हैं, उसकी कैफियत इस प्रकार है: "प्रायः इस देश की मिलें लिमिटेड कंपनियों के अधीन हैं। उनके मैनेजिग एजेन्ट्स प्रायः धनिकों की वे ही दुकानें हैं जो मिल के अधिकतर शेअर्स खरीदती हैं या यों कहिए कि अपनी घरू मिल के लिए शेअर होल्डर की रकमों की वलि चढ़ाती हैं।" (१०/५८)। सार्वजनिक संपत्ति को व्यक्तिगत संपत्ति वनाने के पूंजीवादी तरीके अनेक हैं। उनमें एक यह है—मैनेजिग एजेन्टों के द्वारा शेअर होल्डरों की रकम का अपने लाभ के लिए उपयोग। मैनेजिग डाइरेक्टर के यहां पाप का धन कैसे पहुँचता है, माखनलाल जी इसका एक उदाहरण देते हैं। "हमें एक ऐसी मिल का हाल मालूम हुआ है जिसके मैनेजिग डाइरेक्टर साहव वंवई के वाजार से अपने एक गुमाश्ते के मार्फत फर्जी नाम से चीजें खरीदते थे और वे ही चीजें वंवई-भाव से कुछ अधिक भाव में मिल को वेच देते थे और प्रतिमास सैकड़ों रुपयों का मुनाफा कमा खाते थे।" (उप.)। और भी—"कुछ लोग तो इस हद तक पहुँच जाते हैं कि मिल की मशीनरी फर्जी नाम से खरीद लेते हैं और महँगे भाव में कंपनी के सिर मढ़ देते हैं। मिल के लिए कपास खरीदने में, शेअरों की खरीद-विक्री में, कपड़े के वेचने में, इसी तरह अन्य छोटे-वड़े कामों में मिल के व्यवस्थापक लोग कमाई

करते सुने गये हैं।"'उनकी यह कमाई पाप की कमाई है और शेअर होल्डरों के प्रति अन्याय है।" (उप.)।

जो पुण्य की कमाई है, कानून के अनुसार माल की पैदावार और बिक्री से प्राप्त की जाती है, वह मजदूरों के श्रम के बल पर सुलभ होती है; जो पाप की कमाई है, ठग विद्या से प्राप्त की जाती है, उसका स्रोत भी वही मजदूरों का श्रम है। अपनी श्रमशक्ति बेचकर मजदूर पूंजीपतियों के लिए जो अतिरिक्त मूल्य बनाता है, उसी से पूंजीपति और उनके मिल व्यवस्थापक अपनी पुण्य और पाप की कमाई करते हैं। वस्त्र-उद्योग देश का सबसे सुरक्षित उद्योग था। विदेशी माल के बहिष्कार में सबसे पहले वस्त्रों का बहिष्कार होता था। इसलिए स्वदेशी आन्दोलन से लाभ उठाकर भारतीय पूंजीपतियों ने जिस उद्योग का सर्वाधिक विकास किया, वह वस्त्र उद्योग था। राष्ट्रीय प्रयत्न से यह विकास संभव हुआ किन्तु इस विकास से लाभ उठाने वाले पूंजीपतियों ने राष्ट्रहित का ध्यान नहीं रखा, मजदूरों के हितों का ध्यान रखना तो और भी दूर की बात है। सरकारी नीति के साथ देशी पूंजीपतियों की स्वार्थपरता की आलोचना करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा, "मिल के व्यवसाय में हिन्दुस्थान में हानि होने की संभावना बहुत कम है परंतु जहां यहां की सरकार इस धंधे को पनपने नहीं देती, वहां इस धंधे में पड़े हुए लोग भी अपने स्वार्थ के सामने देशहित का जरा भी खयाल नहीं करते। देशहित ही नहीं, इन लोभियों को अपने ही स्वार्थ का खयाल नहीं है। जब कभी वर्तमान समय जैसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है, तब उन्हें अपनी मिलें बंद करनी पड़ती हैं और हानि उठानी पड़ती है। यदि वे अपने घर में सिर्फ इतना ही धन जाने दें जितना लेने का उन्हें अधिकार है तो मिलों की अवस्था बिगड़ने का कारण ही उपस्थित नहीं हो सकता।" (उप.)

यदि पूंजीपति उतना ही धन समेटें जितना उनके लिए जायज है तो वे पूंजीपति न रह जायें। मुनाफे पर अंकुश लगाने का मतलब है उनकी 'स्वाधीनता' को नियंत्रित करना। यह नियंत्रण उन्हें पसंद नहीं। जहां भी शासन जनता के दबाव से मुनाफे पर कुछ प्रतिबंध लगाता है, वहां वे उन्हें तोड़कर शासन की ही मदद से 'पाप का धन' कमाने की पचीस तरकीबें निकाल लेते हैं। स्वभावतः वह मजदूरों की दशा में बुनियादी सुधार नहीं कर सकते। मजदूरों और पूंजीपतियों के संबंधों के बारे में माखनलाल जी ने लिखा था, "इस देश में मजदूरों को मुनाफे में से बंटवारा देने की प्रथा अभी प्रचलित नहीं हुई है किन्तु आज या कल इस प्रथा का जन्म होगा। उस समय के लिए इस देश के वस्त्र व्यवसायियों को अपने आपको तैयार रखना चाहिए।" (उप.)। लगभग ६० साल बीत गये हैं। विदेशी सरकार की जगह देशी सरकार है। अभी तक मजदूरों और पूंजीपतियों में मुनाफे के बंटवारे की नौबत नहीं आई। बंटवारा हो भी तो पूंजीवादी राज्य सत्ता के रहते वह मजदूरों की दशा में कोई मौलिक परिवर्तन न कर सकेगा। जिस लोक सत्ता का आधार मजदूर किसान शक्ति हो, वही पूंजीवाद को नियंत्रित करके समाजवादी निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। "यथार्थ में मिल मालिक का तो केवल रुपया खेलकूद करता है। जिनकी रोज की भूख, गिरी हुई देह और नैतिक पतन के बल पर ये मिलें चलती हैं, वे हैं मजदूर। वे ही व्यवसायियों के अन्नदाता हैं। अन्य देशों में वे और उनके प्रतिनिधि सरकारें सँभाल रहे और

राज्य शकट का संचालन कर रहे हैं और इस देश में वे भूखों मरने के लिए लाख के ऊपर की तादाद में लाचार हो रहे हैं। सरकार दोषी है किन्तु इस दिशा में धनिक व्यवसायी भी दोषमुक्त नहीं हैं। अब मुकुटों और सिंहासनों के बल पर इतिहास के बनने का युग गया, इन डेढ़ लाख के लगभग मजदूरों का भूखा मर कर दिन काटना आज का इतिहास है और इस परिस्थिति के पैदा करने वालों को इसकी कीमत चुकाना पड़ेगी।" (उप.)।

कीमत चुकाने का दिन अभी तक नहीं आया, राष्ट्रीय स्वाधीनता से लाभ उठाने के दिन जरूर आये। मिल मालिकों के कर्तव्य के बारे में माखनलाल जी ने लिखा था, "उन्हें राष्ट्र की लड़ाई में शामिल होना चाहिए और विदेशी वस्त्र के बहिष्कार का प्रस्ताव आगामी कांग्रेस में पास कराना चाहिए और साथ ही उन्हें देशवासियों को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि देशी कपड़े की मांग के बढ़ने पर मिल वाले अपना लोभ संवरण करेंगे।" (१०/५९)। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का प्रस्ताव पास कराना मिल मालिकों के हित में था। कांग्रेसी नेताओं पर इन मिल मालिकों का प्रभाव था। इसीलिए उनसे कहा गया था कि वे कांग्रेस में बहिष्कार का प्रस्ताव पास करायें। माखनलाल जी जानते थे कि विदेशी कपड़ों के बहिष्कार से देशी कपड़ों की मांग बढ़ेगी, इसलिए उन्होंने मिल वालों से अपना लोभ संवरण करने की अपील की थी। जो लोग समझते हैं कि भारत में उद्योग-धन्धों का विकास अंग्रेजी राज के कारण हुआ, वे स्वदेशी आन्दोलन और वस्त्र उद्योग के आपसी संबन्ध पर विचार करें।

वस्त्र उद्योग के विकास में स्वयं मजदूरों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, इस तथ्य को पहचानना, उस पर जोर देना माखनलाल चतुर्वेदी की गहरी राजनीतिक सूझबूझ का प्रमाण है। देशी मिलों में बनने वाले कपड़े पर सरकार ने जो कर लगाया था, उसका व्यापक विरोध हुआ। "लार्ड रीडिंग की इन्साफ पसंद सरकार ने बजट में कमी होने का बहाना बता कर इस कर को उठाने से इन्कार कर दिया।" (१०/१०४)। मिल मालिकों ने कहा, मजदूरों को पूरा वेतन देना असंभव है। "वे मजदूरों से कहते थे— काम पर आ जाओ, जो मजदूरी हम दे रहे हैं, उसे स्वीकार कर लो। परंतु अनन्त कठिनाइयों के रहते हुए भी मजदूरों के संगठन ने मिल मालिकों की दाद नहीं दी। उनके सम-व्यवसायियों ने, यूरोप के मजदूर मंडलों ने, उन्हें आर्थिक सहायता पहुँचाई और वे लड़ाई का जमाना जानकर पेट-पानी की कष्टदायी कल्पनाएं सहते रहे। आखिर असंभव संभव हुआ। कपड़े के गिरते हुए व्यापार से एक पाई की भी आमदनी न होते देख, हड़ताल के मिटने एवं बंबई की मिलों के चलने की कोई आशा न देख, आखिर भारत सरकार ने १ दिसंबर १९२५ को जाहिर किया कि 'हम एक्साइज ड्यूटी मुल्तवी करते हैं।'" (उप.)। संभवतः भारत सरकार शान्ति का वातावरण पैदा करना चाहती थी। उसने "काटन ड्यूटी ही एक ऐसी वस्तु देखी जिसके उठाने से सरकार का कुछ भी बिगड़ता नहीं है और धन लोलुप पूंजीपति प्रसन्न होते हैं...जो हो, इस कर के उठने का वास्तविक श्रेय उन गरीब मजदूरों को है जिनके पसीने के पानी से मिल की बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हुई हैं।" (१०/१०५)।

यद्यपि वस्त्रों पर उस कर के उठ जाने से पूंजीपतियों को लाभ होने वाला था, फिर भी यह संभावना बराबर बनी हुई थी कि संकट का आभास मिलते ही मिल मालिक

मजदूरों की पगार में कटौती करेंगे। अतः पूंजीपतियों को सावधान करते हुए माखनलाल जी ने लिखा, "जब किफायत के अन्य कोई मार्ग नहीं दिखाई देते, तब मिल वाले मजदूरों का गला पकड़ते हैं और उन बेचारों की वलि चढ़ा कर घटी को पूरा करते हैं। हम भारतीय वस्त्र-व्यवसाय को देश की अत्यावश्यक धरोहर समझते हैं। इसी वजह से पूंजीपति मिल मालिकों से हम कहना चाहते हैं कि आप विदेशी वस्त्रों के मुकाबिले में अपने वस्त्र-व्यवसाय की उन्नति कीजिये। स्वयं धन और यश कमाइये, परंतु यह न भूल जाइये कि आपका धन मिलों के मजदूरों की वजह से पैदा होता है, आपका धन आपके वस्त्र को खरीदने वाले भारतीय खरीददारों से पैदा होता है। एक्साइज ड्यूटी के उठ जाने से आप विदेशी वस्त्र-व्यवसाय का मुकावला कर सकेंगे, परंतु इस मुकावले के समय महँगे वस्त्र अधिक मुनाफा और कम मजदूरी के पाप मार्ग की ओर हरगिज न जाइये।" (१०/१०५-०६)।

दिसंबर १९२५ में कानपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इससे माखनलाल जी को भारी निराशा हुई क्योंकि कांग्रेस ने देश के सामने संघर्ष का कोई कार्यक्रम न रखा था। कुछ आशा दिखाई दी तो राजनीतिक कैदियों के सम्मेलन में। इसके अध्यक्ष गोविन्दानन्द ने कहा, "हम लोग १९२१ के कार्यक्रम के स्थगित होने को राष्ट्रीय अपमान समझते हैं और चाहते हैं कि उसका पुनः ग्रहण हो।" (१०/१२२)। राजनीतिक कैदियों की दशा सुधारने के लिए "सरकार ने बाध्य होकर जो कुछ दिया है, वह हमारे बलिदान का ही फल है। कांग्रेस इस बात को स्वीकार करने में भी हिचकिचाती है। पूंजीपतियों के सदृश, जो मजूरों के अधिकारों की अवहेलना करके उनके परिश्रम से अपना पेट भरते हैं, कांग्रेस भी हमारे परिश्रम से प्राप्त फल को हड़पना चाहती है।" (१०/१२३)। बड़ी सटीक उपमा है। निष्कर्ष यह : "राजनैतिक स्वतंत्रता कौंसिल या चरखे से नहीं मिल सकती। भारतीयों को स्वतंत्रता का उचित मूल्य देना होगा।" (उप.)।

कांग्रेसी नेतृत्व में चलाये हुए आन्दोलन की विफलता जितना ही प्रत्यक्ष हुई, उतना ही किसानों और मजदूरों के संगठन की, आन्दोलन के लिए नये नेतृत्व की आवश्यकता स्पष्ट हुई। असहयोग आन्दोलन ने "जनता में जोश भर दिया, उनके हृदयों में स्वराज्य की ज्योति जलाई, फैशन को देश निकाला दे दिया, मानापमान की झूठी कल्पनाओं को विदा कर दिया, निर्भयता का सबक सिखाया, सादे आचार और ऊँचे विचारों को देशभर में फैलाया, कांग्रेस के सामने विधायक कार्यक्रम रखा, खिलाफत के लिए आवाज उठाकर मुसलमान समाज में भी जाग्रति की। उस समय मालूम होता था कि अब देश के अच्छे दिन दिखेंगे। लेकिन हाय, यह सब स्वप्न हो गया। धीरे-धीरे आन्दोलन शिथिल होने लगा। जोश का पारा नीचे उतर आया। राष्ट्रीयता के प्रभाव में फांटे फूट गये। नेताओं में दल-बंदियां बन गई। धूर्तों को विष बीज बोने का मौका मिल गया। भ्रातृभाव से परस्पर गले लगाने वाले एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये।" (१०/२२३)। जब देश के नेता संघर्ष का मार्ग छोड़कर समझौते की राह पर चलेंगे, तब यही हाल होगा। स्वदेशी आन्दोलन व्यापक रूप से न चलाया जायेगा तो वह जल्दी ही शिथिल होकर बिखर जायेगा। आगे बढ़ने के बदले "देश की प्रगति बीस-पच्चीस वर्ष पीछे हट गई।" (१०/२२४)।

अगस्त १९२७ में माखनलाल चतुर्वेदी ने कांग्रेस की ढुलमुल नीति की तीखी

आलोचना की। कांग्रेस के भावी सभापति डा. अन्सारी ने सब दलों से मिलकर शत्रु का सामना करने को कहा। ये दल ऐसे थे जो सरकार से सहयोग कर रहे थे। इसलिए प्रश्न यह था कि "सहयोग करने वालों का शत्रु कौन ?" (१०/२६९)। जो बड़ा दल बनेगा, उसमें नरम दल के लोग होंगे, ऐंग्लो इंडियन होंगे और भारत में बसे हुए अंग्रेज भी होंगे। केवल उसमें देश के क्रान्तिकारी युवक न होंगे। "कांग्रेस के भावी सभापति की दृष्टि में जिस तरह नरम, ऐंग्लो इंडियन और भारत में बसे अंग्रेज आ गये, क्या उसी तरह, उनकी दृष्टि से, देश के उन क्रान्तिवादी तरुणों का भुलाया जाना उचित हुआ, जिनकी जेलों, फांसियों, काले-पानियों और यंत्रणाओं ने देश में नये युग को जन्म दिया, और जो लोग, यदि अपनी पिस्तौलें फेंक कर, ईमानदारी से असहयोग का साथ न देते, तो कांग्रेस के अनुशासन की धाक और गांधी युग का अहिंसा का कार्यक्रम—वम और पिस्तौलों की आवाजों पर देखते [देखते-देखते] धूल में मिल जाता। क्योंकि धनवान और आरामतलब नेताओं का त्याग प्रदर्शनी का त्याग था, और देश के गरीबों का त्याग देश की स्वतंत्रता का यथार्थ मूल्य था।" (१०/२६९-७०)। चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन के अनुभव के बल पर देश के नौजवानों और गरीबों की ओर से यह बात कही थी। वह असहयोग आन्दोलन को समझौता किये विना व्यापक जन आधार पर चलाने के पक्ष में थे। असहयोग छोड़ कर लोग बम पिस्तौल के रास्ते चलें, यह उनका आशय न था। "यदि देश में काम करना है तो क्रान्तिवादियों से पुनः पिस्तौलों को थोड़ा विश्राम देने के लिए कहना होगा"। (१०/२७०)। किन्तु क्रान्तिकारी आन्दोलनों में मजदूर निर्णायक भूमिका निवाहते आये हैं, यह तथ्य अब उनके सामने स्पष्ट हो चुका था। हर देश में मजदूरों के दलों ने क्रान्तियां की हैं—यह सत्य १९१७ की वोल्शेविक क्रान्ति से उजागर हुआ था। कांग्रेसी नेता क्रान्तिकारी तरुणों को साथ नहीं लेना चाहते क्योंकि उन्हें "सरकारी पदों का लालच" है, साथ ही "प्रवल त्यागी और देशभक्त कहलाने का मोह" भी वे नहीं छोड़ सकते। (उप.)। ऐसे लोगों को स्वतंत्रता का नाम छोड़ देना चाहिए। उनके लिए उचित है कि दुखी जनता में निरर्थक आशा का संचार न करें, न मजदूरों के दुख से दुखी होकर उनके संगठन की वात करें "क्योंकि उनके संगठन का परिणाम, किसी भी देश में, निरंकुश सत्ता के नीचे पिसते हुए पराधीन रहना और राज्यकर्ताओं की खैरातों पर जीना नहीं रहा। हर देश में मजदूरों के दलों ने क्रांतियां की हैं। फिर माडरेटों, ऐंग्लो इंडियनों और भारत में बसे हुए अंग्रेजों के हाथ इन क्रान्तिवादियों को देकर क्या इनकी गोलियां मजदूरों पर चलवाने का तमाशा देखना है।" (उप.)। भारतीय समाज के अन्तर्विरोधों की ओर यहां स्पष्ट और महत्वपूर्ण संकेत है। एक ओर खाते-पीते घरानों के लोगों का नेतृत्व है, उन्हें सरकारी पदों का लालच है और त्यागी तथा देशभक्त कहलाने का लोभ है। दूसरी ओर मजदूरों का संगठन है, यह संगठन राज्यकर्ताओं की खैरात पर नहीं जीता, वह निरंकुश सत्ता के नीचे पिसता न रहेगा, उसमें क्रान्ति करने की क्षमता है।

१९२५ में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। उस समय यह प्रचार किया गया कि वह कांग्रेस के पंडाल में आग लगाना चाहती थी, गांधी जी को बेंतों से पीटना चाहती थी। स्मरणीय है कि कानपुर में कम्युनिस्ट सम्मेलन के संगठनकर्ता हिन्दी पत्रकार सत्यभक्त थे। वह सन् २५ से पहले और बाद को भी अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास करते रहे हैं।

कांग्रेस अधिवेशन में कम्युनिस्ट सम्मेलन की ओर से जो सज्जन क्रान्तिकारी कार्यक्रम का संदेश लेकर गये थे, वह स्वयं कांग्रेसी नेता—मौलाना हसरत मोहानी—थे। उस सम्मेलन के बाद चार साल के भीतर ब्रिटिश सरकार मजदूर आन्दोलन की प्रगति से चिन्तित हो उठी। १६२६ में उसने मेरठ षड्यंत्र का प्रसिद्ध मुकदमा चलाया। इस मुकदमे से वोल्शेविक एजेन्टों वाला ब्रिटिश प्रचार छिन्न-भिन्न हो गया। २२ जून १६२६ के 'कर्मवीर' में प्रकाशित 'श्रमजीवी, सरकार और कांग्रेस' शीर्षक लेख, इतने दिन बीत जाने पर भी, आज के संदर्भ में ताजा है। अप्रैल में असेम्बली में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंका; दिल्ली की अदालत ने इसके बारे में फैसला दे दिया, "परन्तु रशिया के वोल्शेविकों से संबंध रखने के नाम पर दायर किये गये मामले में अभी अनेक मासों की देरी है।" (१०/२६७)। कम्युनिस्टों के बारे में बहुत तरह की अफवाहें फैलायी जा रही थीं और कांग्रेस इनसे मुक्त नहीं थी। "इस बीच में चाहे कांग्रेस में हो, या कांग्रेस के बाहर, कम्युनिस्ट अथवा समाज-सत्तावादी के नाम से परिचित किये जाने वाले लोगों के विषय में कैसी-कैसी कथाएं इस देश में प्रचलित हो रही हैं, उन पर एक विहंगम दृष्टि डालना आवश्यक है।" (उप.)।

माखनलाल जी ने लिखा कि मेरठ में उन लोगों को लाया गया है जिनका संबंध बंबई-कलकत्ता के मजदूर आन्दोलनों से है। इन बड़े शहरों में मजदूरों के संगठित होने का कारण यह है: "संपत्ति की विषमता इन्हीं दो शहरों में विशेष रूप से दिखाई देती है। एक ओर साफ-सुथरे मुहल्लों में बने हुए गगनचुंबी प्रासाद हैं तो दूसरी ओर गलाजत में सड़ने वाली झोंपड़ियां हैं। एक ओर अनेक भोज्य और पेय पदार्थों को सूंघ कर फेंक देने पर भी 'अजीर्ण' की दवा खाने वाले धन कुबेर हैं तो दूसरी ओर पेट की पूरी खाई न भर सकने के कारण जठरानल से झुलसने वाले रोगी हैं।" (१०/२६७-६८)। विषमता गांवों में भी है किन्तु किसानों और मजदूरों के जीवन की परिस्थितियों में एक अन्तर है। विभिन्न गावों के किसान "कभी एक स्थान पर नहीं आते···इस वजह से कृषकों की अपेक्षा मजदूरों में ही श्रमजीवी आन्दोलन विशेष सफल हो रहा है।" (१०/२६८)। ब्रिटेन में अठारहवीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति हुई, वर्ग विषमता बढ़ी, "आज भी वहां इस अवस्था का सन्तोषप्रद हल नहीं हो सका है।" (उप.)। अब भारत में "औद्योगिक क्रान्ति का युग आ रहा है। ···कल कारखाने तथा हजारों आदमियों का एक स्थान में एकत्र होकर वस्तु विशेष का निर्माण करना आदि बातें हमारे लिए नयी हैं।" (उप.)। मशीनों के चलन से पहले उत्पादन दूसरे ढंग का था। अब "प्रचुर परिमाण में वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ संपत्ति की विषमता पैदा हुई और मजदूरों-कारखानेवालों की समस्या का जन्म हुआ।" (उप.)।

केवल व्याख्यानों द्वारा सहानुभूति प्रकट करनेवालों की अपेक्षा मजदूरों का संगठन करनेवालों को अधिक लोक समर्थन प्राप्त है। "इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि व्याख्यान मंच से प्रचार करनेवाले सज्जनों की अपेक्षा इन प्रत्यक्ष कार्य करने वालों की पीठ पर लोकमत की विशेष सहायक संख्या है।" (१०/२६७)। सविनय वैध गति से काम करने वालों की अपेक्षा मजदूरों को संगठित करने वालों की गति तीव्र है। कठिनाइयों के सामने इनका संगठन टूटता नहीं है। "बंबई की कई महीनों की हड़तालों के होते हुए भी मजदूरों का संगठन नष्ट नहीं हुआ दीख रहा। उनमें अनुशासन का उदय हो रहा है।"

(उप.)। मजदूरों का संगठन कांग्रेस के संगठन से भिन्न प्रकार का था, उनका अनुशासन कांग्रेस के अनुशासन से भिन्न प्रकार का था। विरोधी कहते थे, क्या कर्तव्य है क्या अकर्तव्य, यह विवेक मजदूरों में नहीं होता। इसका उत्तर यह है कि "वैध कहे जानेवाले आन्दोलन में" यदि प्रचार की आविश्यकता है तो "प्रत्यक्ष कार्य करने के मार्ग का अनुसरण करनेवाले आन्दोलन में अनुशासन की आवश्यकता है।" (उप.)। दो तरह के आन्दोलन हैं। पहली तरह के आन्दोलन प्रचार तक सीमित हैं, हड़ताल जैसी चीजों से दूर हैं। दूसरी तरह के आन्दोलन प्रत्यक्ष कार्य पर ज़ोर देते हैं, इनके लिए अनुशासन जरूरी है। "ऐसी अवस्था में अगर मजदूर संगठन का सदस्य कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं रखता तो वह उन 'बुद्धिमानों' से लाख गुना अच्छा है जो प्रत्येक वाक्य और शब्द पर दलीलों की वरसात वरसाकर अपने जोश की भाप को खतम कर देते हैं।" (उप.)। 'कर्मवीर' संपादक ने अपने पत्र के जन्म-काल से कर्म पर ज़ोर दिया था। उन्होंने वहसवाज़ बुद्धिमानों की तुलना में संघर्ष करने वाले मजदूरों को लाख गुना अच्छा कहा, यह वात पत्र की नीति के अनुरूप थी।

पहले संपत्ति की ऐसी विषमता न थी; तव श्रमजीवी आन्दोलन भी न था। अव विषमता वढ़ी है, अत: "श्रमजीवी आन्दोलन को वदनाम करनेवाले लोगों से हमें विशेष सचेत रहने की आवश्यकता है।" (१०/२९८)। सरकारी प्रचार इस तरह का था। "मीरट वाले मामले में सरकारी वकील महोदय ने श्रमजीवी आन्दोलन के प्रवर्तकों को 'राष्ट्रीयता के विरोधी', 'अनीश्वरवादी', आदि उपाधियों से विभूषित किया है।" (१०/२९८-९९)। ब्रिटिश सरकार का वकील कम्युनिस्टों को राष्ट्रीयता के विरोधी कह रहा था। पूंजीपतियों के चाकर लेखकों ने सरकारी वकील के इसी सूत्र का वरसों तक पाठ किया है। धर्म के ठेकेदारों ने सरकारी हितों की रक्षा के लिए धर्म की दुहाई दी, कम्युनिस्टों को अनीश्वरवादी कहा। समाज के पुरानपंथी सड़े-गले तत्वों के वारे में माखनलाल जी ने लिखा, "इस देश की हिन्दू-मुस्लिम जनता में 'परमात्मा और खुदा' का वड़ा ज़ोर है। हमारे देश का प्रत्येक चोटी और दाढ़ी रखनेवाला व्यक्ति धर्म के अगाध ज्ञान और ईश्वर तथा खुदा की पहिचान का दावा करता है। ऐसी अवस्था में जो लोग वोल्शेविकों की 'अनीश्वरवादिता' का ढोल पीटते हैं, वे संदेहास्पद प्रचार करते हैं। श्रमजीवी आन्दोलन के प्रवर्तक 'अराष्ट्रीय' हैं, अतएव राष्ट्रीयता के उपासक उनसे घृणा करें। वे 'समानता' के प्रचारक हैं, अतएव धनपति उन्हें नष्ट कर दें। वे 'अनीश्वरवादी' हैं, अतएव पाखंड पंडित उन्हें जिंदा गाड़ दें। और वे 'अराजक' हैं, इसलिए सरकार उनकी जड़ खोद दे। कितना वढ़िया प्रचार है—" (१०/२९९)।

इस तरह के प्रचार से कांग्रेसीजनों को सावधान करते हुए चतुर्वेदी जी ने आगे लिखा, "इस विचारधारा में जव कांग्रेसी समझे जानेवाले लोग डुवकी लगाते दिखाई देते हैं तव हमें सावधानी की सूचना देने की आवश्यकता प्रतीत होती है।" (उप.)। बंबई की हड़ताल खतम कराने के लिए बंबई के गवर्नर, मिल मालिकों तथा कांग्रेसी नेताओं ने सम-झौता कराने की चेष्टा की। "वंबई की कांग्रेस कमेटी ने, यह सोचकर कि श्रेणि युद्ध की इस समय आवश्यकता नहीं है, इस समझौते में भाग लिया।" (उप.)। चलो, कोई वात नहीं। किन्तु कांग्रेसी नेताओं ने मिल मालिकों के वदले मजदूरों की आलोचना की। "टाइम्स आफ

इंडिया' ने बंबई कांग्रेस के हड़ताल विरोधक वाक्यों की आड़ में कांग्रेस और श्रमजीवियों के बीच की खाई बढ़ाने का अवसर पा लिया है। यह बात हमारी दृष्टि से उचित नहीं है। कांग्रेस की आड़ में श्रमजीवियों पर यदि प्रहार किया जायगा तो आनेवाली सन्तान चाहे सही हो चाहे गलत, कांग्रेसवादियों पर छींटाकशी किये बिना नहीं रहेगी।" (उप.)। तथास्तु !

६. माखनलाल चतुर्वेदी और निराला

माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली के लिए जो लेख 'कर्मवीर' से चुने गये हैं, वे १९२९ तक के हैं। इसके बाद स्वाधीनता आन्दोलन के विभिन्न दौरों में चतुर्वेदी जी की राजनीतिक प्रतिक्रिया क्या थी, यह जानने के लिए व्यवस्थित सामग्री अभी सुलभ नहीं है। एक बात निश्चित है। सन् २० से पहले वाले क्रान्तिकारी जीवन की आग उनमें कभी बुझी नहीं। यतीन्द्रनाथ दास के बलिदान को याद करते हुए उन्होंने लिखा था, "हम जानते हैं, राष्ट्रीय सभा [कांग्रेस] का बांध आपको अंग्रेजों का शस्त्रों से खून नहीं करने देता, खून करना मजहब नहीं है; किन्तु क्या हमारी अँतड़ियों में यह वेदना भी उत्पन्न नहीं होती कि हम कम से कम यतीन्द्र की मौत पर बैठकर राष्ट्र को सबल बनाने का निश्चय करें, और देश के महान् आन्दोलन के बल पर, शासकों को दिखावें कि पाप की कीमत पर, तुम दो दिन भी चलने नहीं दिये जा सकते ? क्या हम में यह बल है ?" (१०/३४२)। दस साल बाद—१९३९ में—लाला हरदयाल को स्मरण करते हुए उन्होंने लिखा था, "उन्होंने प्रतिभा रख कर, मस्तक झुकाये पेट भरने को लात मार दी, और अपने गरीब देश के उद्धरार्थ, क्रान्तिकारियों का मस्तक चढ़ाने का पक्ष इख्तियार किया। किन्तु भारतीय तो उस अभागी जाति का नाम है कि अंग्रेज जिसे दुश्मन कह दे, वह हमारा अपना होकर भी हमारी नजर में दुश्मन हो जाता है। एक अंग्रेज, जर्मन, इटालियन या जापानी के अपमानित होने पर वहां के देश उकस उठते हैं, किन्तु हम तो लाला हरदयाल की मौत के बाद भी नहीं जानते कि कौन मर गया।" (४/२०६)।

इस लेख का स्मरणीय वाक्य है : "मस्तक चढ़ानेवाली जाति मौन रहकर आंसू नहीं ढाला करती।" उप.)। इसे पढ़कर बरबस निराला की पंक्तियां याद आती हैं :

सिंही की गोद से
छीनता रे शिशु कौन ?
मौन भी क्या रहती वह
रहते प्राण ? रे अजान !
एक मेष माता ही
रहती है निर्निमेष—
दुर्बल वह—
छिनती सन्तान जब,
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आंसू बहाती है—

किन्तु क्या
योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं--
गीता है, गीता है—
स्मरण करो वार वार—
जागो फिर एक वार !

छायावाद का यह भी एक पक्ष है, वह गद्य में व्यक्त हुआ हो चाहे पद्य में।

१९३७ में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने; १९३९ में वे कायम थे। कहां लाला हरदयाल का त्याग, कहां यह पदग्रहण। माखनलाल जी ने लिखा, "हम अपने देश में अपने मंत्रिमंडल देखते हैं, धारा सभाओं की चुनाइयां देखते हैं, और देखते हैं सिद्धान्तों की खींचतान के खिलवाड़, किन्तु हमारे वीच उस मस्तक का अभाव है जो दूर-दूर तक देखे, और जहां तक नजर जाय, वह वीरतापूर्वक कविवर मैथिलीशरण जी की 'जयद्रथ वध' में कही वाणी में बोल सके, 'जहां तक वाण मेरा जायगा, अपने जनों को आपदा से वह अवश्य वचायेगा।' " (४/२०७)। फिर देश स्वाधीन हुआ। अन्तरिम सरकार देश के स्वाधीन होने से पहले ही वन गयी थी। अंग्रेजों के जाने के वाद--"ब्रिटिशों के चले जाने के वाद यदि हमारे सफेद वस्त्र छीनकर फेंक दिये जायँ, यदि स्वांगों वाले मुँह पोंछ दिये जायँ, तो हम स्वयं अपनी विकृत मूरतें देखकर कांप उठें। परोपकार के अध्यवसायी हम अपने सार्वजनिक जीवन के व्यवसाय ही को परोपकार कहने के आदी हो गए हैं।" (३/२७)। निराला के शब्दों में—

लेंडी जमींदारों को आंखों तले रक्खे हुए;
मिलों के मुनाफे खाने वालों के अभिन्न मित्र;
देश के किसानो, मज़दूरों के भी अपने सगे
विलायती राष्ट्र से समझौते के लिए।

गरीवों का क्या हुआ ?
"हमने सांसों का जोड़ पैसों से वैठाकर, ग्रामीणों के मोती जैसे अन्न कणों को काले वाजारों के दांव चढ़ा दिया और स्वयं ग्रामीणों को कौड़ियों के भाव मरने के लिए छोड़ दिया।" (३/२७)। निराला के अनुसार—

खुला भेद, विजयी कहाये हुए जो,
लहू दूसरे का पिये जा रहे हैं।

जनता को ठगने वाले वड़े ज्ञानी हैं; जनता ठगी जाती है, इसलिए अज्ञानी है। ज्ञान-अज्ञान संबंधी वर्तमान स्थिति यह है : "जनता तो अज्ञान है। उसका हमें भय नहीं है। भय ईश्वर का भी नही है क्योंकि उसे हम या तो मानते नहीं हैं या ईश्वर का नाम लेना भी हमारी विजय के चातुर्यों मे से एक चातुर्यमात्र है। और अपने से डरने का तो सवाल ही

नहीं उठता। तब जहां ज्ञान कायर हो, प्रार्थना दृष्टिहीन हो और पुरुषार्थ उद्दंड, वहां सुधारना किसे होगा पढ़कर गिरे हुए को या बेपढ़े न उठ सकने वाले को ?" (३/२७)। निराला ने शोषकों के हाथ बिके हुए ज्ञान के बारे में लिखा था—

कितने ब्राह्मण आये
पोथियों में जनता को बाँधे हुए।
कवियों ने उसकी बहादुरी के गीत गाये,
लेखकों ने लेख लिखे,
ऐतिहासिकों ने इतिहासों के पन्ने भरे,
नाट्य कलाकारों ने कितने नाटक रचे,
रंगमंच पर खेले।

जनता पर जादू चला राजे के समाज का।

पुराने समाज को देखते आधुनिक समाज में आर्थिक विषमता बहुत बढ़ गयी है। क्या इसे दूर करने के लिए क्रान्ति होगी? माखनलाल जी ने लिखा, "रोटी के लिए तरसनेवाला व्यक्ति चोर नहीं है। चोर वह है जो अपनी दिमागी चतुराई और समाज तथा शासन के नियमों की भूलभुलैया में गरीबों को चूसकर उन्हें पहिले चोर बनाता है, और फिर अपनी चोरी को छुपाने के लिए गरीबों को चोर घोषित कर उनसे नीतिज्ञता वसूल करता है। आज या कल, शान्ति से या क्रान्ति से यह विषमता तो हमें हटानी ही पड़ेगी।" (३/४५)। और निराला—

जल्द जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ।
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी, पासी, चमार, तेली,
खोलेंगे अँधेरे का ताला,
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य की विशेषताएं गिनाते हुए चतुर्वेदी जी ने लिखा था, "उन्होंने किसी राजा अथवा धनिक की प्रशंसा में काव्य रचना को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया।" (४/२३२)। हिन्दी की इस गौरवशाली परंपरा के श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे माखनलाल और निराला। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्य में अनेक विधाओं का विकास किया। "जिस प्रधान सूत्र में हिन्दी साहित्य के ये मोती पिरोये गये थे, वह था लोकजागरण का तेजस्वी सूत्र जो भारतेन्दु जी के मुद्राराक्षस और भारतदुर्दशा और नीलदेवी नामक नाटकों में सुलभ होता है।" (उप.)। भारतेन्दु के समय से जो साम्राज्य विरोधी लोक जागरण की परंपरा शुरू हुई, उसी की महत्वपूर्ण कड़ियां हैं निराला और माखनलाल। अन्य देशों के नवजागरण को याद करते हुए उसी प्रसंग में उन्होंने लिखा था, "राजनीति अथवा समाज में जागरण

लाने के लिए साहित्य परम अमोघ अस्त्र है। रूस का नवजागरण मैक्सिम गोर्की जैसे कलाकारों का अत्यन्त ऋणी है। रूस उन राजनैतिक नेताओं को भूल सकता है जो समय-समय पर उसके रंगमंच पर आये और तिरोहित हो गए। किन्तु क्या वह मैक्सिम गोर्की तथा अन्य शिल्पी कलाकारों को भूल सकता है जिन्होंने आधुनिक रूस का निर्माण किया।" (उप.)।

समाज में जैसे-जैसे आर्थिक विषमता वढ़ी, वैसे-वैसे पूंजीपति वर्ग की ओर से इस वात के लिए निरन्तर प्रयत्न हुआ कि साहित्य को सामाजिक समस्याओं से दूर रखा जाय, आधुनिकता के नाम पर ऐसा साहित्य रचा जाय जो राष्ट्र का मनोवल तोड़ दे। माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य की दिशा इससे ठीक उल्टी है। उनका साहित्य लोक जागरण का साहित्य है। इस साहित्य का मुख्य अस्त्र गद्य है। इस गद्य के निर्माण में भारतेन्दु का योगदान अविस्मरणीय है। चतुर्वेदी जी ने ठीक लिखा है, "हिन्दी गद्य शैली को उन्होंने एक लोकप्रिय एवं निश्चित स्वरूप प्रदान किया जिसे हम वर्तमान गद्य शैली की प्राण प्रतिमा कह सकते हैं।" (४/२३१)। जिस हिन्दी के लिए भारतेन्दु के समकालीन लेखक उन्हें देवता के समान पूजते थे, वह उनकी कविता की ब्रजभाषा नहीं, गद्य की खड़ी वोली थी। माखनलाल चतुर्वेदी के गद्य में वड़ी विविधता है। निराला की तरह छायावादी अप्सरा से लेकर उन्हीं के यथार्थपरक 'चरखा' जैसे निवंधों तक माखनलाल जी ने अनेक स्तरों पर रचना की है। उनका जो साहित्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, वालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद द्विवेदी और गणेशशंकर विद्यार्थी के गद्य के सर्वाधिक निकट है, वह 'कर्मवीर' का राजनीतिक गद्य है। व्यवस्थित चिन्तन, साफ सुथरा विवेचन, पाठक को आन्दोलित करने वाला ओज, ठेठ हिन्दी की वाक्य रचना, वोलचाल का प्रवाह—इस गद्य की विशेषताएं हैं। ऐसा गद्य लिखना आसान नहीं है। वह गद्य हिन्दी साहित्य और हिन्दी राजनीति की परम उपलब्धि है।

कहीं-कहीं उनका गद्य निराला के वर्णनात्मक गद्य की याद दिलाता है। उसका अनूठा सौन्दर्य पाठकों को अचंभे में डाल देता है। यथा :

"विन्ध्या की घनी झाड़ियां, नालों के उतार, पहाड़ों के चढ़ाव, वस्तियों और शिखरों के घुमाव, सड़कों पर आती-जाती वैलगाड़ियां और नर-नारियों का वोझ लेकर आना जाना और मर्दों का कानों में वुंदे पहने, वंद लगी हुई लाठियां हाथों में लिये, तथा उनके ऊपर रेशमी फुन्दे लगे हुए, वालों में तेल, वढ़े हुए वाल, गले में मूंगे की कंठियां और सिर पर वोझा होते हुए भी अकड़कर चलना, किसी राहगीर के पास हाथ में अलगोझा सिर पर वोझा, पांव में जूते नहीं, धूल का उड़ना और तिस पर हँसी मजाक। क्या कहना है वुंदेलखंड की उस जिन्दगी के !" (१/८१)। तुलनीय है, निराला की लिखी चतुरी के "मजवूत जूतों की तारीफ"—"पासी हफ्ते में तीन दिन हिरन, चौगड़े और वनैले सुअर खदेड़कर फांसते हैं, किसान अरहर की ठूंठियों पर ढोर भगाते हुए दौड़ते हैं—कटीली झाड़ियों को दवाकर चले जाते हैं, छोकरे वेल, ववूल, करील और वेर के कांटों से भरे रुँधवाए वागों से सरपट भागते हैं, लोग जेंगरे पर मड़नी करते हैं, द्वारिका नाई न्यौता वांटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है, चतुरी के जूते अपरिवर्तनवाद के चुस्त रूपक जैसे टस से

मस नहीं होते"। अब हम ऐसे गद्य के लिए तरसते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने लड़कपन के जो संस्मरण बोलकर लिखाये हैं, वे **कुल्ली भाट, देवी, चतुरी चमार** आदि में निराला के संस्मरणात्मक गद्य से तुलनीय हैं। इन दोनों साहित्यकारों के जीवन में, उनके साहित्य में, अनेक समानताएं हैं। चतुर्वेदी जी ने निराला पर कविता लिखी थी। इसमें ऐसा तादात्म्य है जो निराला पर 'तटस्थ होकर लिखी अन्य कविताओं में नहीं है—

आ तेरी
जीवित मौतों को
जीने का त्यौहार बना दूं;
सूझों के मंदिर के गायक
तेरी कीर्ति रागिनी गा दूं। (६/२३५-३६)।

निराला की मृत्यु पर उन्होंने युवा साहित्यकारों को ललकारते हुए लिखा था, "मेरे तरुण मित्रों को सोचना यह है कि युग जो चरण-चरण इतना बढ़ आया था, वह निराला के साथ मर तो नहीं गया।" (४/२८३)। निराला के जीवन और साहित्य का सारतत्व उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया था, "श्री सूर्यकान्त जी ने जन्म से जीते रहने तक किसी भी विरोध की परवाह नहीं की। वे जब तक जिये संघर्ष करते रहे, इसीलिए कविता में जो संघर्ष करे, उसका नाम और उसका काम 'निराला' होना ही चाहिए।" (४/२८४)। जब संघर्ष करोगे, तब मार भी खानी पड़ेगी, बहुत कुछ सहना पड़ेगा। "कवि का मार्ग 'कहना' होता है, माना, किन्तु उसकी 'कहन' उसकी सहन में से आती है। इसीलिए निराला की वाणी में रस है, इसीलिए युग बेबस है कि निराला की कीर्ति में कुछ करे।" (उप.)। निराला की या औरों की कीर्ति रक्षा के लिए जो प्रयत्न किये जाते हैं, वे अक्सर अपनी ही कीर्ति कौमुदी के प्रसार के लिए होते हैं। 'तेरा स्मारक तू ही होगी तू इक अमिट निशानी थी' - रानी लक्ष्मीबाई के लिए सुभद्राकुमारी चौहान के ये शब्द क्रान्तिकारी योद्धाओं के लिए सही हैं और उन साहित्यकारों के लिए भी जिनकी जीवित मौतें जीने का त्यौहार हैं।

निराला के अभ्युदय काल में ही उनसे माखनलाल चतुर्वेदी की भेंट हुई थी। "पहले पहल निराला जी मुझे कलकत्ता में अपने अनेक साथियों को लेकर मेरे और स्व. गणेशशंकर जी के मित्र श्री नारायण कांपा के [यहां] मिले थे। उस समय उन्होंने अपनी नई अतुकान्त कविताएं भी सुनाई थीं। उस समय उन कविताओं को सुनकर लगा था कि हिन्दी का एक युग समाप्त हो रहा है और दूसरा युग आने की झिझक में व्यस्त। निराला जी ने हिन्दी को एक युग प्रदान किया।" (४/२८३)। माखनलाल जी निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों से प्रभावित हुए। "मुझे तो प्रारंभ में ही इस तरुण ने मोह लिया था। अतः मैं सम्यक् विरोध में भी शामिल न हो सका।" (४/२८४)। काशी में निराला के अभिनन्दन से वह प्रसन्न हुए क्योंकि वह हिन्दी के स्वभाव को जानते थे कि "वह धनिकों की घोर उपेक्षा करके गरीब प्रतिभाओं का सम्मान किया करती है।" (उप.)।

जीवन के अंतिम चरण में, अपनी अशक्त अवस्था में, चतुर्वेदी जी ने निराला संबंधी संस्मरण श्रीकान्त जोशी को बोल कर लिखाया था। इसमें उन्होंने कलकत्ते में निराला से भेंट को फिर याद किया है। निराला के साथ शिवपूजन सहाय थे; निराला के हाथ में श्री रामकृष्ण मठ से प्रकाशित होनेवाले पत्र [समन्वय] की कुछ प्रतियां थीं और उन्होंने अपनी अनेक कविताएं सुनाई थीं। "जहां तक मैं जानता हूं, अपनी 'तुम और मैं' शीर्षक विख्यात कविता को उन्होंने सर्वप्रथम मुझे ही सुनाया। यह कविता मुझे बहुत प्रिय रही है। और याद भी रही है—

तुम पथ हो मैं हूं रेणु,
तुम हो राधा के मनमोहन
मैं उन अधरों की वेणु...

अथवा

तुम पथिक दूर के क्लान्त
और मैं बाट जोहती आशा,
तुम भवसागर दुस्तार
पार जाने की मैं अभिलाषा..."

(यह संस्मरण रचनावली में नहीं है किन्तु उसकी प्रतिलिपि श्रीकान्त जोशी ने मुझे भेज दी है। इसके लिए तथा रचनावली में निराला संबन्धी संदर्भों की सूचना के लिए मैं उनका आभारी हूं।)

दूसरी बार निराला जी से सन् १९३४ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन दिल्ली में उनकी भेंट हुई। उस समय "उन्होंने दाढ़ी बढ़ा रखी थी और वे शरीर की ओर से लापरवाह थे।" (यह स्मृति चित्र १९३४ के बाद का होना चाहिए। १९३४ में मैं उनके साथ ही रहता था और अभी उन्होंने दाढ़ी न रखायी थी।) इसके बाद निराला जी से उनकी भेंट अनेक बार हुई। "सन् १९४० में निराला जी अबोहर सम्मेलन से होते हुए लाहौर पहुँचे थे। वहां साहित्य सम्मेलन में उन्होंने कविताएं पढ़ी थीं जिसकी अध्यक्षता भी मैंने ही की थी।"* इस संस्मरण में उन्होंने निराला-विरोधी प्रचार अभियान को फिर याद किया है, "एक संपादक बंधु ने स्वर्गीय श्री गणेशशंकर जी विद्यार्थी और मुझ पर यह आरोप लगाया था कि हम दोनों ने निराला जी की आलोचना में उनका साथ नहीं दिया। किन्तु सच तो यह है कि बरसों बाद एक नयी प्रतिभा निराला जी के रूप में अवतरित हुई थी, उसका स्वागत होना चाहिए था। सुना है, अब तो उक्त संपादक वर भी निराला जी के महत्व को

* संभव है, अध्यक्षता के बारे में चतुर्वेदी जी की स्मृति ने धोखा दिया हो। श्रीकान्त जोशी के फर्वरी १९८४ में लिखे हुए एक पत्र के अनुसार "१९६२ में चतुर्वेदी जी की स्मृति (आंखों के आपरेशन के बाद) मंद पड़ने लगी थी।"

मानने लगे हैं—यह बड़ी बात है।" गणेशशंकर विद्यार्थी क्रान्तिकारियों के सहायक थे, माखनलाल चतुर्वेदी वर्षों तक क्रान्तिकारियों का जीवन बिता चुके थे। ये लोग साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन का महत्व गहराई से समझते थे, इसीलिए वे निराला के समर्थक थे।

चतुर्वेदी जी का उक्त संस्मरण भेजते हुए श्रीकान्त जोशी ने ५.२.८४ के पत्र में मुझे सूचना दी है कि चतुर्वेदी जी की बहुत सी सामग्री अब भी प्रकाशित होने को बाकी है। "रचनावली मात्र १० खंडों की हो, यह निर्णय म. प्र. शासन ने पहले ही ले लिया था। अतः यह भी सोचा कि शेष सामग्री बाद के खंडों में ली जा सकेगी। तब तक प्रामाणिकता भी स्थापित हो सकेगी। अभी प्रताप, प्रभा, कर्मवीर की बहुत सी सामग्री और बहुत सारे पत्र शेष हैं। इन्हें निकालना है।" प्रामाणिकता का प्रश्न अप्सरा और अलका की समीक्षा को लेकर है। समीक्षा प्रतापसिंह के नाम के साथ प्रकाशित हुई थी। व्यास जी के अनुसार "यद्यपि 'प्रतापसिंह' नाम से माखनलाल जी ने लिखा है पर इस नाम के एक सज्जन भी थे जो माखनलाल जी के सूत्र पाकर लिखते थे। भाषा देखने पर पूर्णतः माखनलाल जी की ही प्रतीत हुई पर जरा सा संदेह भी मन में आया कि यदि माखनलाल जी ने स्वयं न लिखी हो तो···बस इसी पर उक्त समीक्षा को मैंने छोड़ दिया।" समीक्षा किसी की भी लिखी हो, उसका 'कर्मवीर' में प्रकाशित होना निराला के लिए महत्वपूर्ण था और निश्चय ही उससे उन्हें संतोष हुआ होगा।

'प्रताप', 'प्रभा' और 'कर्मवीर' की बहुत सी सामग्री शेष है। रचनावली को दस खंडों में सीमित किया गया, हर खंड की पृष्ठ संख्या भी सीमित की गयी होगी। योजना बनाते समय सीमाएं निर्धारित करनी ही पड़ती हैं किन्तु वे यांत्रिक ढंग से निश्चित नहीं की जा सकतीं। ऐसी योजनाएं बीसियों हैं जिनमें अनुमानित से अधिक व्यय किया गया है। फिर एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ-साहित्यकार की रचनावली में दो खंड और बढ़ जाते तो विशेष क्षति न होती। कलाकारों की गोष्ठियों के लिए भव्य इमारतें बनवाने, साहित्यकारों को पुरस्कार बांटने और अनेक सरकारी पत्रिकाएं निकालने से ज्यादा जरूरी काम है 'प्रताप', 'प्रभा' और 'कर्मवीर' के पुराने लेखों का पुनः प्रकाशन। इनका प्रकाशन और अध्ययन आज के राजनीतिज्ञों को उनका कर्तव्यबोध कराने के लिए जरूरी है, जनता के लिए पत्र निकालने वाले संपादकों, उन पत्रों के लेखकों को हिन्दी भाषा की पहचान कराने के लिए जरूरी है। पत्रकार माखनलाल चतुर्वेदी का गद्य लोक मानस का इतिहास है। वह ऐसा इतिहास है जो पाठ्य पुस्तकों में नहीं मिलता; उसकी ओर इतिहासकार कम ही ध्यान देते हैं। भारतीय जनता के साम्राज्य विरोधी नवजागरण में हिन्दी जाति का योगदान —इस विषय को कभी शोधकार्य के लिए उपयुक्त माना गया तो उसे संपन्न करने के लिए इन्हीं 'प्रभा', 'प्रताप', 'कर्मवीर' आदि की सामग्री का सहारा लेना पड़ेगा। 'कवि-वचन-सुधा' से लेकर 'प्रताप' तक यह सामग्री क्रमशः दुर्लभ होती गयी है, नष्ट होती गयी है। कुछ दिनों तक अभिनन्दन ग्रंथों के प्रकाशन पर रोक लगा दी जाये और पहले इस तरह की पुरानी सामग्री छाप दी जाये तो क्या बुरा है?

माखनलाल चतुर्वेदी ने स्वाधीनता आन्दोलन के अनेक पक्षों की ओर ध्यान दिया है। उन्होंने देशी राज्यों की प्रजा के आन्दोलन का समर्थन किया, उसे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का अंग माना; उन्होंने साम्प्रदायिक उकसावा पैदा करनेवालों की तीखी आलोचना की और इस वात पर ज़ोर दिया कि जब लोग साम्राज्य-विरोधी संघर्ष का मार्ग छोड़ देते हैं, तब संप्रदायवाद को सिर उठाने का अवसर मिलता है। उन्होंने साम्राज्यवादी युद्ध नीति का पर्दाफाश किया, ब्रिटिश कानून की अस्लियत जाहिर की, कैसे वह गरीब जनता के शोषण के बल पर साम्राज्य के विस्तार और उसकी सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। स्वाधीनता आन्दोलन यहां के सामाजिक आन्दोलनों से जुड़ा हुआ था। उसके संदर्भ में माखनलाल जी ने स्त्रियों को सामन्ती रूढ़ियों से मुक्त करने पर ज़ोर दिया। उस समय का शायद ही कोई पत्रकार हो जिसने स्त्रियों की स्वाधीनता के बारे में न लिखा हो। उन्होंने देश के पिछड़े हुए आदिवासीजनों की ओर भी ध्यान दिया; वह उनके जीवन से युवाकाल में ही परिचित हो चुके थे। उन्हें देश की प्रगति के लिए सबसे ज्यादा भरोसा युवा शक्ति का था। अपने जीवन की हर मंजिल में वह देश के तरुणों के विशेष प्रवक्ता बने रहे। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से अपने को धनिक वर्ग से अलग रखा; उनकी सहानुभूति पीड़ित मजदूरों और गरीब किसानों के प्रति अटूट बनी रही। उनके राजनीतिक चिन्तन का जितना महत्व अतीत के लिए था, उससे अधिक भविष्य के लिए है।

चतुर्वेदी जी के साहित्य का विस्तृत विवेचन अपेक्षित है, उनके राजनीतिक चिन्तन का अध्ययन और विश्लेषण ज़रूरी है। **निराला की साहित्य साधना** (३) की भूमिका में मेरा प्रयत्न केवल इस बात की ओर ध्यान दिलाने के लिए है कि छायावादी कवियों की राजनीतिक सूझबूझ केवल निराला में नहीं है, वह माखनलाल चतुर्वेदी में भी है। पूंजीवादी विचारधारा से अलग हटकर राजनीतिक चिन्तन — यह छायावाद की विशेषता है; उसे स्वीकार करना चाहिए। जो लोग मानते हैं कि देश में व्यापक परिवर्तन दरकार है और यह परिवर्तन एक शक्तिशाली जन आन्दोलन के द्वारा ही संभव है, उनके लिए माखनलाल चतुर्वेदी और निराला के राजनीतिक चिन्तन का महत्व असंदिग्ध है।

मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि आठ खंडों में निराला रचनावली प्रकाशित हो गयी है। इसके आठवें खंड में दुलारेलाल भार्गव के नाम लिखे हुए निराला के पत्र संकलित हैं। जो लोग निराला के पत्रों का अध्ययन कर रहे हों, वे इन पत्रों की ओर अवश्य ध्यान दें। रामकृष्ण त्रिपाठी के नाम लिखे हुए निराला के पत्र भी इस खंड में सुलभ हैं। अतः उन्हें मैंने अपनी पुस्तक के नये संस्करण में देना आवश्यक नहीं समझा। दुलारेलाल भार्गव को लिखे निराला के पत्रों के बारे में एक बात और। दिसंबर १९७५ में जगतपति शरण निगम ने मुझे लखनऊ से शिवसिंह 'सरोज' का एक वक्तव्य भेजा था। उसमें शिवसिंह जी का कहना था, "लगभग १० वर्ष पूर्व तीन दिनों के लगातार परिश्रम के बाद मैंने गंगा पुस्तक माला के संचालक स्व. श्री दुलारेलाल भार्गव के नाम महाकवि पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखे गये लगभग डेढ़ सौ पत्र और पुर्जियां खोज निकालीं।" मैंने गंगा पुस्तक माला कार्यालय में अन्य साहित्यकारों के बस्ते देखे हैं जिनमें उनकी चिट्ठियां

रखी हुई थीं। दुलारेलाल भार्गव से निराला के निकट और दीर्घकालीन संबंधों को देखते हुए डेढ़ सौ की संख्या कम हो सकती है, अधिक नहीं। निराला रचनावली में प्रकाशित निराला के ४५ पत्र और पुर्जे इस सामग्री का अल्प अंश मात्र हैं। शेष सामग्री की प्राप्ति और उसके प्रकाशन के लिए प्रयत्न जारी रहना चाहिए।

दिल्ली,
२७ मार्च १९८४

रामविलास शर्मा

भूमिका

१. यह पत्र-संग्रह

पुस्तक के इस तीसरे खंड में निराला के लिखे हुए पत्र तथा निराला को साहित्यकारों, पारिवारिकजनों और उनके मित्रों द्वारा लिखे हुए पत्र हैं। एक तरह से तीनों खंडों में यह सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें मेरा लेखन कम से कम है, दूसरों का अधिक से अधिक। इसका सम्बन्ध साहित्य के विवेचन से कम, निराला के जीवन-चरित से अधिक है। यहाँ वह अधिकांश स्रोत-सामग्री है जिसके आधार पर जीवन चरित लिखा जा सकता है और लिखे हुए जीवन चरित को परखा जा सकता है। स्रोत-सामग्री कच्चे माल की तरह है जिससे साहित्य का पक्का माल तैयार किया जाता है। किन्तु कच्चा माल जुटाने वाले यदि निराला और उनके सहयोगी हों तो कोई भी पक्का माल उसके मुकाबले में ठहरेगा, इसमें संदेह है। इसके अलावा साहित्यकारों के पत्र—जीवन चरित के संदर्भ से अलग हटकर—अपने आप में पक्का माल हैं, इसमें भी कोई सन्देह नहीं। सभी पत्र इस कोटि के नहीं हैं, फिर भी काफी ऐसे हैं, और बहुतों में काफी अंश ऐसे हैं, कि उन्हें श्रेष्ठ साहित्य की कोटि में रखना उचित होगा। निराला के युग और परिवेश की गम्भीर, आन्तरिक और मार्मिक जानकारी के लिए इनका ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद है।

दूसरों के पत्र पढ़ना एक तरह से नाटक पढ़ने की तरह है। नाटक में पात्रों का और उनके परिवेश का परिचय देने वाला विवरण श्रोता को नहीं सुनाया जाता, वह पात्रों का संवाद सुनकर कथासूत्र पकड़ता है, उनके परिवेश से परिचित होता है, और फिर उनके आपसी सम्बन्धों से, उनके वाह्य और आन्तरिक द्वन्द्व से, उसे गहरी दिलचस्पी हो जाती है। जहाँ मुख्य पात्र के संवाद अनेक पत्रों में सुलभ हैं, और उसके सहयोगी, प्रतिस्पर्धी जनों, वन्धु-बान्धवों के संवाद भी प्रचुर संख्या में सुलभ हैं, वहाँ नाटक से पत्र-संग्रह की तुलना और भी सटीक बन जाती है। अन्तर इतना है कि नाटककार हर जगह, हर संवाद में स्वयं उपस्थित रहता है, किसे क्या कहना है, कितना कहना है, कथा-

वस्तु को किस दिशा में आगे बढ़ना है, इस सब पर उस कलाकार का नियन्त्रण रहता है। यहाँ स्थिति इससे भिन्न ही नहीं, विपरीत भी है। पात्र जो कुछ कहते हैं, वह सब पत्रों के संकलनकर्त्ता की इच्छा से स्वतन्त्र हैं। वे एक नाटक के पात्र हैं, इसका उन्हें बोध नहीं है। नाटक के कथासूत्र की दिशा पात्रों और संकलनकर्त्ता, दोनों की इच्छाओं से स्वतन्त्र है। वहुत जगह श्रोता को लगेगा कि यह पात्र कुछ और ज्यादा वोलता तो अच्छा था किन्तु श्रोता और संकलनकर्त्ता चाहे जितना चाहें, चाहे जितना प्रयत्न करें, वे पात्र अब इससे अधिक वोलने के नहीं। श्रोता और संकलनकर्त्ता दोनों ही इस वात से दुखी हो सकते हैं कि जिन वातों को लेकर पात्रों को कुछ और वोलना चाहिए था, वहाँ वे चुप साध लेते हैं; यह भी सम्भव है कि श्रोता को लगे कि अमुक पात्र इतना ज्यादा क्यों वोल रहा है, किन्तु यहाँ उसके प्रति—यानी श्रोता के प्रति—संकलनकर्त्ता की कोई सहानुभूति नहीं।

पत्र-संग्रह ऐसा नाटक है जो योजना वनाकर किसी एक कलाकार द्वारा नहीं रचा गया। शायद इसीलिए वह अनेक नाटकों से अधिक महत्वपूर्ण, अधिक आकर्षक भी है। वह नाटक है, उसमें आन्तरिक और वाह्य द्वन्द्व का विशद उद्घाटन है, इसमें सन्देह नहीं। निठल्ले, आलसी, केवल मनोरंजन के लिए पुस्तकें पढ़ने वालों के लिए यह पत्र-संग्रह नहीं है। कल्पना से थोड़ा ही नहीं, काफी काम लेना जरूरी है। निराधार, मिथ्या वातों की कल्पना दरकार नहीं है; निराला, उनके सहयोगियों, उनके परिवेश को ध्यान में ले आना आवश्यक है। ये सब वास्तविक हैं किन्तु वे परस्पर सम्वद्ध, युग विशेष की इकाई के समान, हमेशा हमारे ध्यान में नहीं रहते। यहीं कल्पना की आवश्यकता है। जिसका अस्तित्व था, और जिसे हमने पूरी तरह पहचाना नहीं और जितना पहचाना, उसे भूल गए, उसी को कल्पना में पुनः साकार करना है। और क्या यह वताना आवश्यक है कि जिस काल खंड में आज आपका अस्तित्व है, वह एक और वड़े काल खंड का ही अंश है ? यहाँ खुद को पहचानने के लिए उस युग को पहचानें जिससे आज का जीवन जुड़ा हुआ है, भिन्न होते हुए भी जुड़ा हुआ है। आप चाहें तो कल्पना में उस युग को साकार देखने के लिए अन्यत्र प्रकाशित सामग्री का उपयोग कर सकते हैं किन्तु दरअसल इसकी जरूरत नहीं। जीवन-चित्र का जो भाग यहाँ दिखाई देता है, वह लगभग अपने में पूर्ण है, इस अर्थ में पूर्ण है कि यहाँ जो कुछ कहा गया है, उसकी पृष्ठभूमि को जानने की सामग्री भी यहाँ विद्यमान है। वाहर से दूसरों की कही हुई कहानी लाकर इस नाटक पर आरोपित करना आवश्यक नहीं है।

पत्र चाहे निराला के लिखे हों, चाहे दूसरों के, सभी का सम्वन्ध एक ही मुख्य पात्र, निराला, से है। निराला के माध्यम से यहाँ हम उनके सहयोगियों को देखते हैं और उनके सहयोगियों के माध्यम से स्वयं निराला को। दोनों का परस्पर सम्वन्ध एकरस या नीरस नहीं है और पूरी कथावस्तु को ध्यान में रखें तो इस सम्वन्ध में काफी हेर-फेर भी होता है।

महावीरप्रसाद द्विवेदी, एक वीते हुए युग के आचार्य, निराला से नितान्त भिन्न रुचि के, भिन्न आचार-विचार के, साहित्यकार, निराला को लिखे हुए पत्रों में वे निराला

के विरोधी नहीं, उनके मार्गदर्शक भी नहीं, वरन् जीवन-संघर्ष में अपने पैरों खड़े होने में निराला के सहायक, उनके अभिभावक के रूप में दिखाई देते हैं। और उनकी यह भूमिका निराला के संदर्भ में ही नहीं है, वह कुछ वर्षों बाद उदीयमान लेखक नन्ददुलारे वाजपेयी के संदर्भ में भी दिखायी देती है। (इस दूसरी बात का ज्ञान निराला के नाम नन्ददुलारे वाजपेयी के पत्रों से होता है।) द्विवेदी जी अपने बारे में कम लिखते हैं किन्तु जहाँ लिखते हैं, वहाँ बुढ़ापे में उनके जीवन की तेज झलक हमें मिलती है। जयशंकर प्रसाद, निराला के मित्र और अग्रज, सहयोगी और सहधर्मी, पत्रों में बहुत ही संक्षेप में बात कहने वाले, अपनी व्याधि और कठिनाइयों के बारे में अधिकतर खामोश, निराला की देखभाल करने वाले बड़े भाई का-सा भाव, जिस समय निराला बिल्कुल अकेले पड़ गए थे, उस समय आडम्बरहीन सौहार्द, औषधि-उपचार से सहायता करने वाले; और इनके पत्रों को विनोदशंकर व्यास, शिवपूजन सहाय, रूपनारायण पाण्डेय आदि के पत्रों के साथ मिलाकर पढ़ा जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि निराला के जीवन-नाटक का एक केन्द्र बनारस है, वहीं अनेक महत्वपूर्ण दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं और वहाँ सूत्रधार जयशंकर प्रसाद हैं। सुमित्रानंदन पंत जिनके प्रति निराला के मन में स्नेह और प्रति-स्पर्धा का द्वैत भाव था, जिनकी जीवन-कथा निराला के बिना अधूरी है और निराला की जीवन-कथा जिन पंत के बिना अधूरी है, प्रसाद के पत्रों से भिन्न इनके पत्रों का ऐतिहासिक ही नहीं, अपना स्वतन्त्र साहित्यिक मूल्य है। सादा, अलंकारहीन गद्य, पंत की सूक्ष्म भाव-दशाओं, मनःस्थितियों का सजीव चित्र, उनके लघु गीतों की तरह आकर्षक, निराला के प्रति निश्छल मैत्रीभाव,—यह केवल शिष्टता है, यह कोई कैसे मान ले,—पंत अपनी मनोव्यथा से जूझते हुए, दारुण रोग की कल्पना से पीड़ित, फिर भी धैर्य से उसका सामना करते हुए, और यह सब निराला के सामने उद्घाटित, निराला से सहानुभूति की आकांक्षा और उसकी प्राप्ति, फिर 'पल्लव' की कठोर आलोचना द्वारा पंत पर प्रहार, और उस आलोचना को पढ़कर पंत का ऐतिहासिक उत्तर जहाँ उनके व्यक्तित्व की गरिमा पूरी शक्ति से व्यंजित हुई है, सहनशीलता के साथ निराला का प्रहार झेलकर स्नेह-सम्बन्ध बनाए रखने का आह्वान, और इसमें सफलता भी, जिसका प्रमाण एक दूसरे को ब्रजभाषा और बँगला में लिखी हुई कविताएँ हैं, और इनमें पहले पंत ने कविता लिखी, निस्सन्देह पंत और निराला के द्वन्द्वमय सम्बन्धों में एक अटूट स्नेह-सूत्र कायम रहा तो इसका यथेष्ट श्रेय सुमित्रानंदन पंत को है।

प्रेमचन्द के पत्र सम्पादकीय दफ्तर से लिखे गए हैं और यह जरा अजीब-सा लगता है कि 'प्रेमाश्रम' का लेखक 'जुही की कली' के कवि की रचनाएँ प्रकाशित करने के बारे में उससे किसी तरह का पत्र-व्यवहार करे किन्तु निराला 'बादल राग' के— 'तुझे बुलाता कृषक अधीर' के—कवि भी हैं और दोनों में बहुत-सी समानताएँ हैं जो सतह पर नहीं दिखाई देतीं। इसके अलावा प्रेमचन्द कृष्णबिहारी मिश्र के सहयोगी, 'माधुरी' के सम्पादक थे। कम से कम उनका एक पत्र मार्मिक है, निहायत अनौपचारिक, जहाँ छतरपुर में निराला के बीमार पड़ जाने पर प्रेमचन्द चिन्ता प्रकट करते हैं और जहाँ इस चिन्ता प्रकट करने में पूर्व आत्मीयता का आभास है। कृष्णबिहारी मिश्र,

रीतिवादी कवियों के प्रशंसक हैं, देव और विहारी में कौन बड़ा है, इस विवाद में देव के समर्थक, प्रेमचन्द के सहयोगी, निराला के रूढ़िविरोधी, परम विवादास्पद लेखों को माधुरी में प्रकाशित करने वाले; युग का अन्तर्विरोध ! निराला के लेख प्रकाशित करना ही उनका सबसे बड़ा समर्थन करना था और इसके लिए कृष्णविहारी मिश्र को जिस-तिस के बोल भी सहने पड़े किन्तु वे अपना सम्पादकीय दायित्व समझकर अडिग रहे। दरअसल कृष्णविहारी मिश्र उतने रीतिवादी थे नहीं जितना वे समझे जाते हैं। विहारी के विरोध में देव का समर्थन लगभग वैसा ही कार्य था जैसा निराला द्वारा विहारी का विरोध किन्तु पद्माकर का समर्थन। निराला के लेखों के अलावा, औरों के साहित्यिक लेखों के अलावा, उन्होंने अनीश्वरवाद के समर्थन में राधा मोहन गोकुल जी की लेखमाला प्रकाशित की थी। 'वर्तमान धर्म' के लेख को लेकर जब निराला का सुनियोजित घेराव किया गया, उस समय निराला का प्रत्युत्तर 'सुधा' ने नहीं, 'माधुरी' ने प्रकाशित किया था। यहाँ रूपनारायण पाण्डेय स्मरणीय हैं जिनकी कड़ी आलोचना 'मतवाला' में निराला कर चुके थे किन्तु बहुत कुछ जयशंकर प्रसाद के प्रभाव से जिन्होंने निराला के प्रति उदार मैत्रीभाव अपनाया था। 'माधुरी'-कार्यालय से निराला को भेजे गए कार्ड कहीं-कहीं बिल्कुल औपचारिक जान पड़ते हैं। कार्ड किसी कर्मचारी ने लिखा और हस्ताक्षर सम्पादक ने कर दिए, अथवा कार्ड छपा हुआ है, संपादक ने प्रिय महाशय काट कर प्रिय निराला जी भी नहीं लिखा, केवल हस्ताक्षर करके, और वह भी कभी-कभी अंग्रेजी में, कार्ड भेज दिया। किन्तु 'माधुरी'-कार्यालय से लिखे हुए इन सभी कागजों को मिलाकर देखें, तब व्यष्टि-रूप से किसी एक सम्पादक का नहीं, वरन् समष्टि-रूप में 'माधुरी' पत्रिका का महत्व उजागर होगा।

'माधुरी' से भिन्न कोटि का पत्र 'सुकवि' था जिसके सम्पादक सनेही एक ओर राष्ट्रीय और साम्यवादी कविताओं के रचयिता थे, दूसरी ओर घनाक्षरी-सवैया वाले पुराने कवि-सम्प्रदाय के आचार्य भी थे। 'सुकवि' में निराला की कविताएँ अजीब ही लगतीं किन्तु उतना ही अजीब समस्या पूर्ति करने वालों का राष्ट्रीय कविताएँ लिखना भी था। पुनः युग का अन्तर्विरोध ! सनेही, निराला की तरह, बैसवाड़े के रहने वाले, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उन्हें कनौजिया सम्मेलन में शामिल होने को बुलाते हैं। निराला समय मिलता तो अवश्य जाते—या सम्भव है गए हों—क्योंकि ऐसे सम्मेलनों से उन्हें काफी दिलचस्पी थी और ससुराल में वह अहीरों का सम्मेलन देखने गए थे। रूपनारायण पांडेय की अपेक्षा निराला के प्रति अधिक आत्मीयता का भाव लिए हुए 'माधुरी' के अन्य सम्पादक मातादीन शुक्ल; निराला की साहित्यिक गतिविधि से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध दुलारेलाल भार्गव; 'मतवाला'-मंडल के सदस्य, निराला के अभिन्न मित्र, आगे चलकर 'सरोज' के सम्पादक, नवजादिकलाल श्रीवास्तव; और रामनाथलाल सुमन, छायावाद के समर्थक, विनोदशंकर व्यास की दृष्टि में अविश्वसनीय, 'त्याग भूमि' के सम्पादक, 'पल्लव' की आलोचना देखकर निराला से अपना स्पष्ट मतभेद व्यक्त करने वाले मित्र। बनारसीदास चतुर्वेदी, 'विशाल भारत' के सम्पादक, 'भारत' में आए दिन नन्ददुलारे वाजपेयी के चुटकियाँ काटते रहने से परेशान होकर; 'भारत' में प्रकाशित

,वर्तमान धर्म' लेख को लेकर 'विशाल भारत' में निराला का ऐतिहासिक घेराव करने वाले अपने बारे में कुछ ऐसी स्पष्ट बातें कहते हैं जिनसे निराला से, और साहित्य मात्र से, उनके सम्बन्ध अच्छी तरह समझ में आ जाते हैं। भगवतीचरण वर्मा, कवि और कथाकार, 'विचार' पत्र के सम्पादक, 'बापू तुम मुर्गी खाते यदि' विख्यात कविता के प्रकाशक, जिस पर उनकी सम्पादकीय टिप्पणी को लेकर निराला से मतभेद हुआ। और रामनरेश त्रिपाठी, 'कविता कौमुदी' पुस्तक-शृंखला के सम्पादक, निराला की कविताएँ और जीवन-सम्बन्धी तथ्य प्राप्त करने को आतुर, आगे चलकर 'राम की शक्ति-पूजा' की तुलना बिच्छू झाड़ने के मंत्र से करने वाले।

शिवपूजन सहाय, मतवाला के सहयोगी, अनेक पत्रों के सम्पादक, निराला के जीवन-संघर्ष में उनकी निरन्तर खोज-खबर रखने वाले सहायक और साथी, जिनके कलात्मक गद्य का एक प्रमाण नवजादिकलाल श्रीवास्तव पर उनका संस्मरण है, और दूसरा प्रमाण साहित्य परिषद पटना की पत्रिका में रूपनारायण पांडेय का सजीव रेखाचित्र है। उनके जो पत्र यहाँ प्रकाशित हैं, उनमें साधारण बातों की चर्चा है, फिर भी सतह के नीचे एक ऐसे मन की झलक मिलती है जो प्रवाह में अचल है, और कठिनाइयाँ आने पर अपने बारे में कम बोलता है, दूसरों का ध्यान ही उसे अधिक रहता है। निराला उचित ही उनके गद्य की प्रशंसा करते थे। वह काफी दिन बनारस में रहे और कुछ दिन तक विनोदशंकर व्यास के 'जागरण' का सम्पादन करते रहे जिसमें प्रसाद, निराला, पंत आदि की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुईं। स्वयं विनोदशंकर व्यास निराला से उम्र में छोटे, और इस कारण आमोद-प्रमोद में प्रसाद की अपेक्षा निराला से घनिष्ठ थे। उनके पत्रों में तत्कालीन साहित्यकारों में व्याप्त अवसाद की भावना अक्सर प्रकट होती है, निराला के व्यवहार से कभी-कभी वह खिन्न भी हो जाते हैं, फिर भी जिन व्यास के प्रेम पर बहुतों को विश्वास नहीं था, उनके हृदय में निराला के प्रति स्नेह का अटूट स्रोत था, और दोनों की साहित्यिक प्रतिभा में महत्वपूर्ण भेद रहने पर भी, मानवीय सम्बन्धों में ये एक-दूसरे के बहुत निकट थे। विनोदशंकर व्यास ने अपने पत्र बहुत ही अनौपचारिक, बहुत ही आत्मीयता और बहुत ही सहज भाव से लिखे हैं।

प्रसाद, विनोदशंकर व्यास आदि की मंडली के एक सदस्य थे शान्तिप्रिय द्विवेदी जिनके वास्तविक—या राम जाने कल्पित—नाम मुच्छन को लेकर उनके मित्र उन्हें चिढ़ाते थे। विधिवत् शिक्षा न पाने और निर्धन होने से अभिजात भद्रगण वैसे भी उन्हें मनोविनोद का आलम्बन समझते थे; फिर संक्षिप्त, निर्बल काया और ऊँचा सुनने की प्रवृत्ति। किन्तु अपने पत्रों में वे इस छेड़-छाड़ के आलम्बन रूप में नहीं हैं, समाज में सताए हुए, अकेले पड़ जाने वाले व्यक्ति की सी स्थिति उनकी नहीं है। वह प्रसाद-मंडली के मित्र-सदस्य हैं और इस मंडली को उनके बिना चैन नहीं और उन्हें इस मंडली के बिना चैन नहीं। कई जगह वे अपने अवसाद-विषाद की बात करते हैं जो विनोदशंकर व्यास के वाक्यों की प्रतिध्वनि सी लगती है। उनकी छायावादी साहित्यकार वाली मुद्रा परम दर्शनीय है किन्तु मुद्रा और भंगिमाओं के अतिरिक्त साहित्य के प्रति उनकी लगन और निराला के प्रति उनका स्नेह भाव कई जगह अच्छे गद्य-लेखन की प्रेरणा बन जाता

है। निराला और पंत के परस्पर सम्बन्धों में उनकी भूमिका सदैव सराहनीय नहीं है। वे अकेले साहित्यकार हैं जो निराला को उस समय निरन्तर उकसाते रहते हैं। निराला की देव-पूजा करने के वाद उन्होंने पंत को अपना इष्टदेव वनाया। इस परिवर्तन का मूल कारण उतना साहित्यिक अभिरुचि नहीं जितना उनके जीवन की परिस्थितियाँ थीं। जैसे-जैसे हिन्दी साहित्य में निराला के विरोध ने उग्र रूप धारण किया, और पंत को व्यापक समर्थन मिलता गया, वैसे-वैसे शान्तिप्रिय द्विवेदी के सामने यह स्पष्ट होता गया कि उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति निराला की अपेक्षा पंत का साथ देने से अधिक होगी और पंत का साथ ही न देना होगा, निराला का विरोध करना भी आवश्यक होगा। पंत और निराला के मैत्रीभाव को पहचानने, उससे प्रसन्न होने का भाव उनके पत्रों में कहीं दिखाई नहीं देता।

इससे भिन्न स्थिति नन्ददुलारे वाजपेयी की है। वह अपने छात्र जीवन से निराला के समर्थक रूप में सामने आते हैं और आजीवन निराला के समर्थक बने रहते हैं। वह निराला समेत प्रसाद और पंत को छायावाद के तीन प्रमुख कवि मानते हैं। उनके पत्रों में निराला के प्रति कहीं भी वह देव-पूजा का भाव नहीं है जो शान्तिप्रिय द्विवेदी के पत्रों में वहुत ही स्पष्ट झलकता है। आरम्भ से ही वह अपना मत प्रकट करने में यथेष्ट आत्मविश्वास का परिचय देते हैं और जहाँ निराला की कविता उन्हें पसन्द नहीं आती, वहाँ वैसा कहने में उन्हें हिचक नहीं है। कभी-कभी निराला के प्रति सामाजिक जीवन में अपने व्यवहार से उन्हें क्षोभ होता है, आत्मग्लानि को लेकर अन्तर्द्वन्द्व पैदा होता है, किन्तु वे निरन्तर इस मानसिक ऊहापोह से ऊपर उठने का प्रयत्न करते हैं और इसमें सफल होते हैं। वह अनेक आलोचकों की तरह शुरूआत कविता से करते हैं; कहानी भी लिखते हैं लेकिन वहुत जल्दी वे अपना रास्ता पहचान लेते हैं और आलोचक-रूप में ही निरन्तर आगे वढ़ते जाते हैं। दो-तीन साल के भीतर ही उनके चिन्तन में जो प्रगति हुई है, और उनकी गद्य शैली में जितना परिवर्तन हुआ है, उसका विस्तृत और सघन चित्र निराला को लिखे हुए उनके पत्रों में है। आरम्भ में वह साहित्यशास्त्र और जहाँ-तहाँ पुरानी नैतिकता से प्रभावित दिखाई देते हैं किन्तु यह दृष्टिकोण शीघ्र वदलता जाता है। विश्वविद्यालय के गुरु-सम्प्रदाय के प्रति उनका श्रद्धाभाव पहले ही काफी क्षीण था, एम० ए० में द्वितीय श्रेणी आने पर वह क्षीणतर हुआ, और जब उनके लेख प्रकाशित होने लगे और निराला से विचार-विनिमय का अधिक अवसर मिला, तो वह क्षीणतम हो गया। विश्वविद्यालय में छायावाद का प्रवेश रोकने के लिए कैसे-कैसे पहरेदार वैठे थे, यह नन्ददुलारे वाजपेयी के पत्रों से विदित होता है, और यह भी कि इन्हीं पहरेदारों की टुकड़ी का एक सिपाही, उन्हीं के गढ़ में, छायावाद का—यानी रूढ़ि विरोधी आधुनिक साहित्य का—झंडा उठाने पर तुला हुआ है, और वह अकेला नहीं है, रामअवध द्विवेदी जैसे और सिपाही भी उसके साथ हैं। विश्वविद्यालय के भीतर नन्ददुलारे वाजपेयी और वाहर जयशंकर प्रसाद, रूढ़िवाद के खिलाफ इन दोनों का संयुक्त मोर्चा हिन्दी साहित्य के इतिहास की रोचक कहानी है।

लगभग तीन वर्ष तक थोड़े-थोड़े समय के वाद लिखे जाने वाले नंददुलारे

वाजपेयी के पत्रों की अटूट शृंखला यहाँ सुलभ है। काल-विस्तार की कमी घनत्व ने पूरी की है। इस अवधि में निराला के, और स्वयं नन्ददुलारे वाजपेयी के, विकास और जीवन-संघर्ष की सजीव, ब्योरेवार कथा इन पत्रों में हैं। छायावाद के इतिहास में वाजपेयी जी की भूमिका एक जुझारू और पक्षधर आलोचक की है। दुर्भाग्य से इस समय लिखे हुए उनके अनेक आलोचनात्मक लेख, विशेषतः 'भारत' में प्रकाशित उनकी टिप्पणियाँ असंकलित हैं। इसलिए हिन्दी आलोचना में इस लेखन का ऐतिहासिक महत्व आँखों से ओझल रहता है। वह कमी इन पत्रों के प्रकाशन से एक सीमा तक पूरी होती है।

आनुषंगिक रूप में यहाँ गुलाबराय, राय कृष्णदास, सियारामशरण गुप्त, राधामोहन गोकुल जी आदि अन्य साहित्यकार हैं जो परिवेश की बहुत सी खाली जगह भर देते हैं। इनमें गुलाबराय के सम्बन्ध में दो शब्द कहना आवश्यक है। शिवपूजन सहाय की तरह वह मूलतः कलाकार थे किन्तु प्रकाशकों की कृपा से कलात्मक रचनाएं प्रकाशित करने की प्रेरणा उन्हें कम मिली, बाज़ार का काम—छात्रोपयोगी बिकाऊ माल—तैयार करने की प्रेरणा अधिक मिली। निराला से अपरिचय की स्थिति समाप्त होते ही उनका ललित निबन्धकार वाला, सहज आकर्षक गद्यशैलीकारवाला, रूप पत्रों में साफ झलक उठता है। निराला और गुलाबराय दोनों ही दार्शनिक थे; और दोनों के ही गद्य का लालित्य दर्शनेतर भूमि पर व्यंजित होता है। वैसे गुलाबराय ने कविता भी लिखी थी और उसकी बानगी केवल इसी पत्र-संग्रह में है।

इस संग्रह के दूसरे भाग में निराला के लिखे हुए पत्र हैं। इनमें अधिकतर पत्र उनके साहित्यिक मित्रों को लिखे गये हैं और खासी संख्या ऐसे पत्रों की है जो पारिवारिक हैं। निराला के साहित्यिक और पारिवारिक परिवेश की जानकारी के लिए इस सामग्री का महत्व स्पष्ट ही है। एक ओर भारतेन्दु युग के अन्तिम छोर पर नाथूराम-शंकर शर्मा हैं और उनके साथ स्वयं युग-निर्माता महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं, दूसरे छोर पर केदारनाथ अग्रवाल, अमृतलाल नागर आदि निराला के बाद वाली पीढ़ी के लोग हैं। इनके बीच जयशंकर प्रसाद, शिवपूजन सहाय, सुमित्रानंदन पंत, विनोदशंकर व्यास, बनारसीदास चतुर्वेदी, सनेही, उग्र, नन्ददुलारे वाजपेयी, पुरुषोत्तमदास टंडन आदि साहित्यकार हैं। इनको लिखे हुए निराला के पत्रों से किसी न किसी रूप में उनसे निराला के सम्बन्धों की, अथवा साहित्यकारों के आपसी सम्बन्धों की, झलक मिलती है और सर्वत्र निराला की मनोदशा का परिचय तो मिलता ही है। वह स्वयं विभिन्न भूमिकाओं में यहाँ दिखायी देते हैं। कहीं वह सम्पादक रूप में हैं—यथा नाथूरामशंकर शर्मा को लिखे हुए पत्र में—कहीं वह स्वयं अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराने के लिए सम्पादक को पत्र लिख रहे हैं—यथा महावीरप्रसाद द्विवेदी को, कहीं नई पीढ़ी के अभिभावक के रूप में हैं और कहीं मैत्रीभाव से जीवन-संघर्ष के साथियों को अपनी स्थिति की सूचना देते हैं। महावीरप्रसाद द्विवेदी को लिखे हुए पत्रों से स्पष्ट है कि २१-२२ साल की उम्र में उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण हो चुका है। साहित्य और जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण, बड़ों के बीच भी अपने व्यक्तित्व की स्वाधीन सत्ता का बोध, उनकी गद्य-शैली की अनेक विशेषताएँ, साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ

में लिखे हुए उनके पत्रों में दिखाई देती हैं। दो-एक पत्र उन्होंने द्विवेदी जी को अवधी में लिखे हैं जो परस्पर आत्मीयता के परिचायक हैं। निराला किस तरह की अवधी बोलते थे, उसका लिखित प्रमाण और उन्हीं क द्वारा लिखित, यहीं है। बाद को वे अक्सर कहते थे और ऐसा लिखा भी है कि हिन्दी उन्होंने 'सरस्वती' आदि पत्रिकाएँ पढ़कर सीखी। द्विवेदी जी को लिखे हुए पत्रों में वह ऐसे समर्थ गद्यकार दिखाई देते हैं कि लगता है, सीखने का काम उन्होंने बहुत जल्दी पूरा किया और ऐसा सीखा कि आगे चलकर सीखने को बहुत कम रह गया।

प्रसाद को लिखे हुए पत्रों में स्वयं को काफी नियंत्रित रखते हैं किन्तु शिवपूजन सहाय के नाम अपने पत्रों में, किसी निषेध-भावना के बिना, वह अपने मन की बात कहते हैं। शिवपूजन सहाय उनके सखा हैं, जीवन-संघर्ष में उनके सहयोगी और सहायक हैं, उन्हीं को लिखे हुए पत्रों में जब-तब उनके उत्तेजित मन की दशा का चित्र मिलता है। सुमित्रानंदन पंत को लिखे हुए जो विरल पत्र प्राप्त हैं, वे निराला के जीवन में ऐतिहासिक क्षणों की रचना हैं, मानों इसीलिए निराला ने उनकी प्रतिलिपि रख छोड़ी थी। विनोदशंकर व्यास के नाम उनके पत्र भिन्न स्तर वाली मैत्री का परिचय देते हैं। बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे हुए पत्रों में कहीं खूब तनाव है, और कहीं वैसा ही तनाव कम करने का प्रयत्न है।

एक पत्र उन्होंने अपनी माँ—यानी अपनी सास, मनोहरा देवी की माँ—को लिखा था। इसमें निराला वत्स के रूप में, वात्सल्य भाजन के रूप में दिखाई देते हैं, जननी के अभाव की पूर्ति मानों इस माता से कर रहे हों। कुछ पत्र साले को लिखे हैं, ससुराल से निराला के घनिष्ठ सम्बन्ध का परिचय देने वाले, जहाँ-तहाँ साले-बहनोई के सहज विनोद से सरस। अनेक पत्र भतीजों के नाम हैं जो निराला के सगे भतीजे नहीं हैं किन्तु जिनके पालन-पोषण की चिन्ता निराला को सगे से कम नहीं थी।

यहाँ मैं 'सम्मेलन पत्रिका' (भाग ४८, संख्या २-३-४) में प्रकाशित रामकृष्ण त्रिपाठी के लेख "महाकवि निराला का जीवन तथ्य : भ्रम निवारण" से एक अंश उद्धृत करना चाहता हूँ। पहले महायुद्ध के बाद महामारी के दिनों की बात है।

"पं० रामलाल जी (निराला जी के चाचा) घर के बाहर चबूतरे पर पड़े छटपटाते हुए दम तोड़ रहे थे। पिताजी ने उनके पैर छूकर जोर से आवाज दी—'काका!' पिताजी की आवाज पहचानकर रामलाल जी ने आँखें खोल दीं और रोने लगे। उन्होंने कहा—बेटा तुम आ गए, अच्छा हुआ, चलते समय तुम्हें देख लिया; खुश रहो, जीते रहो! इतना कहने के बाद वह पुनः रोने लगे। पिताजी ने भी रोते हुए सान्त्वना के शब्दों में कहा—काका! आप अच्छे हो जाएँगे। अब तक जो कुछ हुआ है, उसे ईश्वर की इच्छा समझकर, हृदय को शान्त करें, अधिक शोक न करें। रामलाल जी ने कहा—बेटा! सधारी (शिवाधार त्रिपाठी, जो निराला जी के पितामह थे) के चार पुत्रों में तीन पहले ही भगवान के घर चले गए, मेरा भी समय पूरा हो गया है और अब कुछ ही क्षणों का मेहमान हूँ। हमारी रानी बहू (निराला जी की पत्नी) और बदलू (निराला जी के चचेरे बड़े भाई) की असामयिक मृत्यु का हमें महान् दुःख है। तुम्हारी

कच्ची उम्र है, अभी बच्चे ही हो, फिर तुम्हारे दो बच्चों तथा बदलू के चार लड़कों और एक लड़की, इनकी परवरिश कैसे होगी, यही सबसे बड़ी चिन्ता है, जो मुझे शान्ति से मरने नहीं देती।

"निराला जी ने दृढ़ता से कहा था—काका! बच्चों की परवरिश का भार मैं लेता हूँ। आप विश्वास रखें, मैं प्राण रहते श्री योधा (अयोध्याप्रसाद) बदलू प्रसाद जी के पिता तथा श्रीराम सहाय (निराला जी के पिता) की वंशवेलि मुरझाने न दूंगा।"

यह गाँव के संयुक्त परिवार का चित्र है। परिवार की यह व्यवस्था, प्रेमचन्द और निराला के समय में, टूट रही थी और अब उसके अवशेष ही जहाँ-तहाँ रह गए हैं। निराला के पारिवारिक पत्रों को सही तौर पर समझने के लिए परिस्थिति का उपर्युक्त सजीव वर्णन ध्यान में रखना उचित है। [निराला के जिन भतीजों का यहाँ ज़िक्र है, वे रामलाल के नहीं, अयोध्याप्रसाद (उर्फ जोधा) के वंशज हैं। अपनी पुस्तक के पहले खंड में मैंने उन्हें रामलाल का वंशज लिखा है। यह गलती सुधारने के लिए मैं रामकृष्ण त्रिपाठी का आभारी हूँ।] जो लोग इस अफवाह के शिकार हैं या खुद उसे फैलाने के जिम्मेदार हैं कि निराला तो मस्त, फक्कड़जीव थे, जिन्हें घर-गृहस्थी की चिन्ता न थी, वे निराला के गृहस्थ जीवन, उनके दायित्व बोध, कर्तव्यनिष्ठा का चित्र यहाँ देखें। काफी पत्र रामकृष्ण त्रिपाठी के नाम हैं। जीवन के जिस दौर में निराला बहुत विक्षिप्त जान पड़ते थे, उस दौर में भी वे रामकृष्ण की पढ़ाई-लिखाई से लेकर उनकी गृहस्थी जमाने तक की ओर सतर्क थे। यहाँ सामान्य गृहस्थ का ही नहीं, पिता के विशेष दायित्व बोध का भी परिचय मिलता है। पिता-पुत्र के सम्बन्धों को लेकर कुछ लोगों ने जो कल्पनाएँ की हैं, उनके साधारणीकरण के लिए यहाँ पर्याप्त सामग्री है।

कुछ पत्र शिवशेखर द्विवेदी के नाम हैं जो पहले उनके शिष्य थे, फिर दामाद हुए। यहाँ भी संक्षेप में निराला का वही गृहस्थ-रूप दिखाई देता है। इसी पारिवारिक परिधि में रामशंकर शुक्ल आते हैं। वह महिषादल में निराला के पड़ोसी और बाल सखा थे। उन्होंने अपने भाई शिवशंकर शुक्ल की पुत्री फूल दुलारी को अपनी बेटी की तरह पाला था। (पुस्तक के पहले खंड में मैंने फूल दुलारी को रामशंकर शुक्ल की बेटी मान लिया है जो ग़लत है। यह ग़लती भी मुझे रामकृष्ण त्रिपाठी ने बताई।) निराला ने अपने इकलौते बेटे का व्याह रामशंकर शुक्ल की इस भतीजी से किया। संयुक्त परिवार के अन्य सदस्यों की तरह निराला उनकी भी खोज-खबर रखते थे और समय-समय पर यथासम्भव उनकी सहायता भी करते थे।

ससुराल के लोगों से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध निरन्तर बना रहा। नवम्बर सन् ४५ में अपने साले की लड़की के व्याह के लिए जो सामान उन्होंने खरीदा, उससे उनका गृहस्थ वाला रूप ही नहीं, उनकी विशेष अभिरुचि का पता भी चलता है। सामान की जो सूची उन्होंने रामधनी द्विवेदी को भेजी, उसमें तुलसीदास की रामायण के साथ कस्तूरी सेंट की शीशी उल्लेखनीय है (२७-११-४५ का पत्र)।

एक पत्र रामकृष्ण त्रिपाठी की पुत्री, अपनी नातिन, छाया के नाम निराला ने लिखा था। बाबा की हैसियत से परिवार के इस सदस्य के प्रति उनकी चिन्ता देखते ही

बनती है। उसकी पढ़ाई-लिखाई वहुत कच्ची है। उसे सलाह देते हैं कि किताबें लेकर हिन्दी पका ले। उन्हें ज्ञान है, इस समय उनका मन जहाँ है, वहाँ की वात छाया की समझ में न आयेगी। इसलिए उसे सावधान कर देते हैं, "हमारा हिसाव तुम्हारी समझ में न आएगा।" उसके विवाह के वारे में भी वह सोच रहे हैं। जाति, वर, घर आदि अनुकूल न होने पर विवाह करना उचित नहीं। फिर—"तुम्हारे घर में वूढ़ी-वूढ़े हैं, उनकी सेवा कौन करेगा।" (१५-७-५८ का पत्र)।

एक दो पत्र रामकृष्ण मिशन के संन्यासियों के नाम हैं। परिवार और साहित्य, दोनों से ही अलग, फिर भी गृहस्थ जनों की सेवा करने वाले, और अपने पत्र 'समन्वय' में साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित करने वाले, इन संन्यासियों के प्रति निराला के मन में बड़ी श्रद्धा थी। उनके साहित्य का प्रायः अदृश्य यह प्रेरणा-स्रोत यहाँ प्रत्यक्ष है।

निराला ने जिन्हें पत्र लिखे हैं, वे प्रसिद्ध साहित्यकार हैं, साधारण जन भी हैं। सभी से निराला का सहज मानवोचित व्यवहार उल्लेखनीय है।

कुछ पत्र अंग्रेजी और वँगला में हैं। जो लोग हिन्दी और वँगला दोनों से परिचित हैं, उनके लिए तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्प होगा और वे परख सकते हैं कि निराला के लिए सहज अभिव्यक्ति का माध्यम वंगला है या हिन्दी।

निराला के पत्रों से उनके व्यक्तित्व के अनेक पक्षों की रूपरेखाएँ उभरकर सामने आती हैं। जीवन में उनके स्नेह-सम्वन्ध दीर्घकालीन और आसानी से न टूटने वाले हैं। पंत से उनका ऐसा ही सम्वन्ध था और यह सम्वन्ध केवल व्यक्तिगत नहीं, ऐतिहासिक है, निराला यह जानते थे। उन्होंने वहुत सही लिखा था, "मेरा आपका हिन्दी साहित्य के इतिहास में अभिन्न सम्वन्ध है। मुझे सवसे वड़ी सफलता यही हुई, मैं समझता हूँ।" (सुमित्रानंदन पंत को, ४-४-३९)। दूसरे वाक्य में व्यंजित उनकी अतिशय विनम्रता का कारण उन पर लिखी हुई पंत की कविता है जिसकी चर्चा इस पत्र में है।

घोर निराशा के क्षणों में उन्होंने जयशंकर प्रसाद को लिखा था, "शरीर बिल्कुल क्षीण हो गया है। जीवन रहा तो दूसरा पत्र लिखूँगा। यह निराला का अन्तिम प्रणाम पत्र है। सव अपराध, सव त्रुटियों के लिए क्षमा।" (जयशंकर प्रसाद को, २९-१-२८)। छतरपुर में वीमार हो जाने पर उन्होंने यह पत्र लिखा था। ऐसी कातर वाणी उन्होंने अन्य किसी व्यक्ति को नहीं सुनाई, यह तथ्य प्रसाद के प्रति उनकी गहरी स्नेह भावना का प्रमाण है।

शिवपूजन सहाय को उन्होंने लिखा था, "मुंशी जी भी गए। अव मेरी वारी है।" (२७-९-३९)। यहाँ वाणी में वैसी कातरता नहीं है। स्वर सधा हुआ है। निराला मृत्यु के साक्षात्कार के लिए प्रस्तुत हैं, यह वात उन्होंने अभिन्न मित्र शिवपूजन सहाय को लिखी। 'अनामिका' में महादेवप्रसाद सेठ पर वह शिवपूजन सहाय का लेख देना चाहते थे। 'मतवाला'-काल की अनेक रचनाएँ 'अनामिका' में थीं। पुस्तक का नाम भी वीते दिनों की स्मृति रूप उसी नाम की पुस्तिका की आवृत्ति था। पुस्तक महादेवप्रसाद सेठ को समर्पित है। उन पर शिवपूजन सहाय का लेख भी उसमें होता,

सारी सज्जा पुराने स्नेह-सम्बन्धों की पुष्टि का प्रमाण थी। शिवपूजन सहाय ने जो लेख भेजा, वह निराला को मिला नहीं। तब उन्होंने लिखा, "अब किसी दूसरी अच्छी किताब की भूमिका लिखिएगा। किताब मुंशी जी को समर्पित करूँगा।" (शिवपूजन सहाय को, २५-१०-३६)। यह किताब नहीं लिखी गई, मुंशी नवजादिकलाल को वह समर्पित नहीं की गई, शिवपूजन सहाय उसकी भूमिका लिखें, यह नौबत न आई, किन्तु जो करना चाहते थे और नहीं कर पाए, उससे 'मतवाला'-काल के मित्रों के प्रति निराला के सुदृढ़ स्नेह-सम्बन्धों का ज्ञान तो होता ही है। वह महादेवप्रसाद सेठ पर कविता लिखना चाहते थे, नहीं लिख पाए। यह इच्छा भी जो पूरी न हुई, उसी स्नेह का प्रमाण है।

निराला उस वर्ग के कलाकार हैं जो अपने परिवेश के प्रति अत्यन्त सजग रहता है। अनेक पत्रों में, कहीं संक्षेप में कहीं विस्तार से, वह इस परिवेश का चित्रण करते हैं। केदारनाथ अग्रवाल को लिखते हैं, "यहाँ पानी गिरा। एकाएक यमुना में बाढ़ आई, गंगा भर गई—मुहाने का पानी रेलकर चढ़ आया, रेती डूब गई।" (८-७-४५) चित्र पूर्ण है और किसी लघु यथार्थवादी कविता की तरह कलापूर्ण भी।

रामकृष्ण त्रिपाठी को लिखते हैं, "कल से हमारी वसन्त की मेज लगेगी, काम होगा। अखीर मई से, जून जुलाई, दो महीने आराम करेंगे।" (३१-३-४६)। यहाँ भी परिवेश के प्रति वही सजगता है, और इस परिवेश से निराला के लिखने का सम्बन्ध है। लिखने का काम केवल वसन्त में करेंगे; जब ज्यादा गर्मी पड़ेगी तब आराम करने लगेंगे।

निराला के मन का सहज प्रसन्न भाव अनेक पत्रों में नए-नए मूर्ति-विधान जुटाकर व्यक्त होता है। अलंकारों पर पुस्तक लिख रहे हैं। शिवपूजन सहाय को (२१ मई सन् २६ के पत्र में) लिखते हैं, "रस तो ६० के कोठे में पूरे हो गए थे, परन्तु अलंकार अभी आधा भी नहीं हुआ। जनाब एक-एक अलंकार के आठ आठ बच्चे हैं। ऐसे १०० से भी ज्यादा अलंकार हैं।" इसी तरह नन्ददुलारे वाजपेयी को, गाँव के नाच की कल्पना से प्रसन्न होकर, लिखते हैं, "कौन आई थी श्माशान वाली? सितलन मुंह दाग, वित्ता भरे के वारन कै पातरि चोटी—जैसे खोपरी भरे मँडियारो लाग होय—नाटी न्माटी—कारि भुजैल—वहै न?"

जब-तब साहित्य-सम्बन्धी विश्लेषण को मूर्तरूप देकर वह विलक्षण वाक्य-रचना करते हैं। सितम्बर १९२९ के पत्र में, 'पल्लव' और 'परिमल' का संक्षिप्त तुलनात्मक विवेचन पन्त को लिख भेजते हैं, "पल्लव से कोई हानि नहीं, भय भी नहीं, बल्कि आनन्द ही है; पर परिमल, कभी-कभी किसी किसी वन्य झाड़ से जिस चटखारे से निकलता है, दिमाग ही फूंक जाता है, अस्वस्थ भी कर देता है।" भवभूति के नाटक में मालती का सौन्दर्य देखकर जो दशा माधव की होती है, कुछ वैसी ही दशा 'परिमल' के तीव्र गंध-भाव से निराला के सौन्दर्य-प्रेमी मन की होती है; सौन्दर्य की अतिशयता अमृत से विष बनकर मानों उन्हें मूर्छित कर देती है।

निराला के गद्य की अनेक शैलीगत विशेषताएँ उनके प्रारम्भिक गद्य में ही देखने को मिलने लगती हैं। कूट रूप में बात कहना, व्यंग्य को बहुत गहरे दबाकर रखना, शब्दों के अर्थ-भेद से व्यंजना में वक्रता उत्पन्न करना उनको आरम्भ से ही प्रिय है। ११

जनवरी सन् २१ वाले पत्र में महावीरप्रसाद द्विवेदी को लिखते हैं, "अक्षर हूँ, न साक्षर और न निरक्षर।" जो लोग निराला के 'वर्तमान धर्म' से, व्यथित थे वे कह सकते हैं कि निराला ने जब से लिखना शुरू किया तभी से सन्निपातग्रस्त थे। हिन्दी में जब अच्छे गद्य की पहचान होने लगेगी, तब सम्भव है निराला के इस संक्षिप्त सारगर्भित वाक्य को नए कलात्मक गद्य का आदि सूत्र माना जाय।

प्रसाद के प्रति निराला के मन में सामान्यतः विनय का भाव रहता है। किन्तु १२ फरवरी सन् ३६ के पत्र में प्रसाद के चारों ओर रचाए हुए प्रभा मंडल से असन्तुष्ट होकर कहते है, "पर मैंने सुना है, आप उपनिषदों से नीचे उतरना पसन्द नहीं करते। फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा, यदि आपको नीचे उतार सकूँ।" वाचस्पति पाठक को लिखे हुए १८ दिसम्बर सन् ३८ के पत्र में गान्धी से निराला की उक्ति भी ऐसी है। "महात्मा गाँधी ने जब मुझसे कहा था—मैं तो उथला आदमी हूँ, आपको याद होगा, मैंने जवाब दिया था, हम लोग उथले को गहरा और गहरे को उथला कर सकते हैं।"

निराला के जीवन के अन्तिम चरण में जहाँ उनके पत्रों में उनका मन डगमगाता सा जान पड़ता है, वह अक्सर उसी पुरानी कूट शैली का विकास है। २८ जनवरी सन् ५४ के पत्र में रामकृष्ण त्रिपाठी को लिखते हैं, "बाकी रजिस्ट्री आदि की बातें, सो तुम गैर नहीं, लड़के—पुत्र हो, जिनसे रजिस्ट्री खुद रहेगी, नहीं तो हजार हाथ पानी में हैं।" इसी तरह ६ अक्तूबर सन् ५६ को रामशंकर शुक्ल के नाम पत्र में लिखते हैं, "घबराहट की बात तभी है जब इधर का उधर होता है। हम रास कुल पकड़े हैं।"

निराला ने अपने पत्र, साहित्य समझकर, न लिखे थे जिसे वे प्रकाशित करते। कलाकार की सहज वृत्तियाँ यहाँ निर्बाध रूप में प्रकट हैं। सर्वत्र वह कलाकार हैं और गद्य उनकी कला का ऐसा माध्यम है जो पद्य से कम महत्वपूर्ण नहीं है। अनेक पत्रों में ऐसे वाक्य पढ़ने को मिलते हैं जो अपनी मार्मिक अभिव्यंजना के कारण अनुपम हैं और उनके साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ हैं।

दयाशंकर वाजपेयी को लिखते हैं, "ईश्वर की दुनियाँ में आदमी के लिए बहुत थोड़ी जगह है।" (१४-२-४०)। अपने मित्र बलभद्र दीक्षित पढ़ीस की मृत्यु पर लिखा था, "दीक्षित के लिए बहुत सोचता हूँ, मगर वह नस मेरी कट चुकी है जिसमें स्नेह सार्थक है।" (रामविलास शर्मा को २-२-४३ का पत्र)। और—"अकेला बैठा झरोखों से आकाश देखा करता हूँ।" (उपर्युक्त को, १६-२-४५ का पत्र)।

निराला निरन्तर गद्य लेखन में नए-नए प्रयोग करते हैं और यह प्रयोग नवीनता या मौलिकता के प्रदर्शन के लिए नहीं हैं। इन प्रयोगों के द्वारा वे अपनी मनोदशा, मनुष्य की सूक्ष्म भाव-सम्पदा, विचारों का कोई दुरूह पक्ष, समर्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं। गद्य के अध्ययन में अधिकतर तत्सम-तद्भव शब्दों के चुनाव, मुहावरों आदि के प्रयोग पर बल दिया जाता है। निराला के प्रयोग इन विशेषताओं को लेकर उल्लेखनीय नहीं हैं। उनके प्रयोगों का आधार है वाक्य-विन्यास। जितनी तरह के वाक्य निराला के इन पत्रों में हैं, उतनी तरह के वाक्य किसी अन्य हिन्दी लेखक के यहाँ कठिनाई से

मिलेंगे। वाक्य के भीतर शब्दों और शब्द-बन्धों का सहज स्थान बदलकर, वाक्य की प्रचलित व्यवस्था में नए-नए परिवर्तन करके, क्रिया पदों और सम्बद्ध शब्दों की स्थिति में हेर-फेर करके, निराला निरन्तर नए प्रभाव उत्पन्न करते हैं। वाक्यों को तोड़-मरोड़कर नया रूप देना, वाक्य की सहज व्यवस्था बदलकर उसे अजनबी बना देना कठिन काम नहीं है। अंग्रेज़ी वाक्य-विन्यास से प्रभावित पच्चीसों हिन्दी लेखक आए दिन यह काम करते हैं। किन्तु निराला के वाक्य-विन्यास-सम्बन्धी प्रयोग किसी विदेशी भाषा के वाक्यतन्त्र की छाया नहीं हैं। उनके वाक्य अपना जातीय रूप बनाए रहते हैं, वे हिन्दी के ही वाक्य हैं यद्यपि उनका यह हिन्दीपन नए ढंग का है। इस नएपन की मात्रा वह सन्तुलित रखते हैं। उदाहरण के लिए यदि उस तरह के वाक्य एक जगह इकट्ठे कर दिए जाएँ तो लगेगा कि अनोखापन बहुत ज्यादा है किन्तु जब उन्हें संदर्भ में देखेंगे तो लगेगा, बीस वाक्यों में एकाध वाक्य ही ऐसा आ जाता है। अंग्रेजी से प्रभावित होने वाली हिन्दी की वाक्य-रचना से निराला का वाक्यतन्त्र मूलतः दो बातों में भिन्न है। पहली यह कि निराला का वाक्यतन्त्र हिन्दी का है, हिन्दी न लिख पाने के कारण अंग्रेजी का अनिवार्य प्रभाव नहीं। दूसरी यह कि वाक्य-विन्यास में वह जो परिवर्तन करते हैं, वह कलात्मक दृष्टि से सार्थक होता है, निरर्थक नहीं। आजकल शैलीतात्विक विवेचन का काफी ज़ोर है। इस विवेचन को सार्थक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य-विन्यास की विविधता का विश्लेषण इस ढंग से किया जाय कि कलाकार की अभिव्यंजना-क्षमता का परिचय मिले। इस तरह के विवेचन से यदि उसकी कलात्मक क्षमता या अक्षमता का परिचय न मिले तो वह पुरानी परिपाटी के अनुसार कविता में अलंकार गिनाने से अधिक महत्वपूर्ण न होगा। सही ढंग के शैली-तात्विक विवेचन के लिए इस पत्र-संग्रह में—केवल निराला के पत्रों में—इतनी सामग्री है कि उस पर अनुसंधान करके पी० एच० डी० की ही नहीं, डी० लिट् की उपाधि भी प्राप्त की जा सकती है। हिन्दी में शोध कार्य के लिए नए-नए विषयों की तलाश निरन्तर होती रहती है। जिन्हें शैलीतात्विक अनुसंधान से दिलचस्पी हो, उनके लिए मैं अपनी ओर से अनुसन्धान का यह विषय प्रस्तावित करता हूँ। किसी न किसी विश्व-विद्यालय में, शोध समितियों के कोई न कोई सदस्य ऐसे निकल ही आएँगे जो इस कार्य का महत्व समझेंगे।

एक ढंग की वाक्य-रचना १९ जून सन् ३२ को लिखे हुए शिवपूजन सहाय के नाम पत्र में है, हर वाक्य छोटा है, कविता के एक-एक चरण की तरह, जहाँ विराम दुख की सघनता के कारण मनुष्य की धाराप्रवाह वक्तृता पर रोक लगाता है: "अकेला बड़ी परेशानी में हूँ। पहला अङ्क बाजार की समझ से ऊँचा कहा गया। दूसरा ठीक। पूरे कुल कालम भिन्न-भिन्न दूसरे के मैंने ही भरे। पहला तो स्पष्ट ही है। तीसरे ने अस्वस्थ्य होकर गिरा दिया। ४था संभालने का विचार है। क्या आपका वह खून बिल्कुल पानी हो गया? हाथ बटाइए। चल गया तो ठीक है। नहीं तो मस्तराम के सोंटे से। कलकत्ता अब वह नहीं, बहुत गिरा है, समय भी वैसा है।"

दूसरी तरह के वाक्य वे हैं जहाँ जैसे-जैसे बात याद आती जाती है, शब्दबन्ध

जोड़ते जाते हैं, फिर भी वाक्य असहज नहीं होता : "शिवपूजन जी की सिफ़ारिश से महाराज छतरपुर ने मुझे बुलाया था अपने सेक्रेटरी द्वारा, तारों और पत्रों से, आपको इतना मालूम हो चुका है मेरे बनारस रहते समय।" (जयशंकर प्रसाद को, ९-१२-२७)

एक मजे की बात यह है कि इस तरह की वाक्य-रचना खड़ी बोली में ही नहीं उनकी अवधी में भी है और साहित्यिक जीवन के प्रारम्भिक दौर में है : "हम जो रामायण पाठ आदि मं [में] बनियई क भाव राखा होव—अर्थात् लोग हम का अच्छा कहैं औ हम नामी ह्वइ जाई—वड़े सच्चरित्र साधु महापुरुष कहाई—हे राम हम तुम्हार नाव लेइत हैं बदले मं [में] तुम हूं कुछु दियव, तो जउन यहु ह्वय रहा है यहु सब ठीक है।" (महावीरप्रसाद द्विवेदी को, ६-११-२३)

इस तरह के वाक्य किसी हद तक उनकी तर्क पद्धति का चित्र भी प्रस्तुत करते हैं। एक तर्क से दूसरा तर्क फूटता है। सुनने वाला सावधान न हुआ तो शब्द-बन्धों की अमर बेल में उलझकर गिर पड़ेगा।

निराला के पत्र अलग-थलग वाक्यों में नहीं, अपनी पूर्णता में पठनीय हैं। प्रायः प्रत्येक पत्र कुशल संरचना का नमूना है। यह संरचना वैचारिक निबन्ध की तरह सोच विचार कर नहीं की गई। वह सहज है और सिद्ध करती है कि निराला की कला में इस संगठन तत्व का महत्व कितना अधिक है। दो-एक वाक्य औपचारिक या आनुषंगिक हो सकते हैं, शेष पत्र एक बँधा हुआ मज़मून होता है अथवा उनकी मनोदशा का संक्षिप्त किन्तु पूर्ण चित्र होता है। लम्बे पत्र वे कम लिखते हैं किन्तु जब लिखते हैं तब उनकी यह गठनक्षमता उल्लेखनीय होती है। मेरे नाम लिखा हुआ २० नवम्बर सन् ३६ का पत्र उनके विवरणात्मक गद्य का बहुत अच्छा नमूना है। सारांश यह है कि निराला के स्मरणीय वाक्यों को उनके संदर्भ में देखना चाहिए, वे वाक्य-बन्धों का अंश हैं, उनका अभिन्न अंश, और पूरे पत्र का सौन्दर्य उद्धरण में दिखाई नहीं दे सकता।

पत्र लिखने की अनेक शैलियाँ हैं। "प्रिय नारायण दीन को सूर्यकान्त त्रिपाठी का नमस्कार। आगे हाल यह है कि हम उन्नाव में सभापति त्रिपाठी जी से मिलकर लखनऊ आए और आते ही बीमार पड़ गए।" (नारायणदीन अवस्थी को, २५-७-३०)। गांव के किसान को लिखे हुए पत्र में यह पुरानी शैली का निदर्शन है। सास को आदर-पूर्वक लिखते हैं, "श्री अम्मा, चरण स्पर्श।" (२२-२-२८) पुरानी शैली को मानों नया रूप दे रहे हों। चचेरे भतीजों को लिखते हैं, "चिरंजीव केशव व कालीचरण को चूमी।" (१३-९-२७) यहाँ ठेठ काका के रूप में हैं। अपना पता सूचित करते हैं तो उसे भी पुराने ढंग से लिखते हैं :

पता :—पास राम शंकर सुकुल
मिलै सूर्य्यकान्त त्रिपाठी
१०/५ कैनल ईस्ट रोड
अवस्थी घोष कम्पनी
उल्टा डांगा
(कलकत्ता)

यहाँ 'मिले' की जगह 'मिलै' का प्रयोग गाँव के सम्बन्धों वाली आत्मीयता की झलक देता है। चिट्ठियों के अन्त में वे कहीं अपने को विनीत, कहीं केवल आपका, कहीं तुम्हारा काका आदि लिखते हैं। उल्लेखनीय है कि पत्रों के अन्त में दास सूर्यकान्त वह केवल संन्यासियों के लिए हैं या महावीरप्रसाद द्विवेदी के लिए।

मैंने भरसक प्रयत्न किया है कि पत्रों में जैसा जो कुछ लिखा गया है वह वैसे ही छपे। शान्तिप्रिय द्विवेदी 'सस्वस्थ' लिखते हैं, विनोदशंकर व्यास 'स्वास्थ', मैंने वैसा ही रहने दिया है। व्यास जी 'व' और 'ब' में अक्सर भेद नहीं करते। महावीरप्रसाद द्विवेदी यह देखकर चिन्तित होते क्योंकि बकरी को वकरी लिखने, या उसके वैसा छप जाने पर, उन्होंने आपत्ति की थी और बालमुकुन्द गुप्त ने इस पर उनका मज़ाक उड़ाया था। किन्तु स्वयं द्विवेदी जी अपने पत्रों में, सम्पादन काल समाप्त होने के बाद, बहुत सावधान नहीं रहते। २१ सितम्बर १९२१ वाले पत्र में उन्होंने 'सितम्बर' को 'सितंवर' लिखा है। एक जगह पते में 'मगड़ायर' को अंग्रेजी में 'Magrail' लिखा है। इस जवार के लोग इस गाँव को मगड़ायर कहते हैं किन्तु निराला, नन्ददुलारे वाजपेयी आदि सभी लोग 'ड़' की जगह 'र' लिखते है। सम्भव है, गाँव के नाम को शुद्ध रूप देने का, अथवा अधिक सुसंस्कृत उच्चारण वाला रूप देने का, यह प्रयास हो, अथवा अंग्रेजी वर्तनी का प्रभाव हो। किन्तु गुरुप्रसाद पाण्डेय निराला से पत्र व्यवहार करने वालों में अकेले सज्जन मिले जो वहाँ का बोला जाने वाला रूप 'मगड़ायर' लिखते हैं।

इसी तरह जिले और शहर का नाम गाँव वालों के बोलने में उनाव सुना जाता है किन्तु कुछ पढ़े लिखे लोग एक 'न' और जोड़कर उन्नाव भी लिखते और बोलते हैं। नन्ददुलारे वाजपेयी दोनों रूपों का व्यवहार करते हैं। इसी तरह निराला की ससुराल का शहर डल्मऊ है किन्तु उसे वे शुद्ध करके दल्मऊ भी लिखते थे। परिनिष्ठित हिन्दी से भिन्न अवधी में ह्रस्व एकार भी होता है। निराला और नन्ददुलारे वाजपेयी 'भेजवाऊंगा' जैसे रूप का प्रयोग करते हैं जो उनके अवधी उच्चारण का प्रमाण है। लिखने में जो दीर्घ एकार है, वह बोलने में ह्रस्व होता है।

जो लोग पाठ-शोध के पंडित हैं, वे अक्सर यह दलील देते हैं कि अमुक कवि अमुक रूप का प्रयोग करता था, इसलिए उससे भिन्न रूप उसका लिखा नहीं हो सकता। वैकल्पिक प्रयोग मनुष्य की सहज वृत्ति है; भाषा उतना परिनिष्ठित नहीं होती जितना व्याकरण की पुस्तकों मे वह दिखाई देती है। निराला अनुस्वार के प्रयोग में अक्सर लापरवाही दिखाते हैं। 'मे' लिखेंगे 'में' भी; 'नही' लिखेंगे, और 'नहीं' भी। एक ही पत्र में 'फीस' के 'फ' के नीचे एक जगह नुक्ता लगाएँगे, दूसरी जगह छोड़ देंगे। विनोद-शंकर व्यास अक्सर अनुस्वार छोड़ देंगे, जहाँ 'व' लिखना है वहाँ 'ब' का पेट चीरना भूल जाएँगे और अनेक गुजराती बन्धुओं की तरह ह्रस्व और दीर्घ इकार में भेद न करके 'इधर' की जगह 'ईधर' लिखेंगे। नन्ददुलारे वाजपेयी 'जवाब' की जगह 'जवाब' लिख जाएँगे और लखनऊ के 'ख' के नीचे नुक्ता भी लगा देंगे। सन् लिखने के

बाद 'ई' लिखेंगे और इस 'ई' के बाद कहीं शून्य का चिह्न लगायेंगे और कहीं छोड़ देंगे।

पाठ-शोध के सिद्धान्त स्थिर करने के लिए यहाँ पर्याप्त सामग्री है जिसका उपयोग विशेषज्ञ कर सकते हैं।

तीसरे खंड की अधिकांश मूल सामग्री मेरी खुद की देखी हुई है और उसकी प्रतिलिपि मेरी देखरेख में की गई है। इस सामग्री को प्रकाशन के लिए देते समय मैंने भरसक ध्यान रखा है कि जैसा जो कुछ लिखा गया था, वैसा ही वह छपे, भले ही वह अशुद्ध हो या पढ़ने वाले को अशुद्ध लगे। प्रूफरीडरों की नीति दूसरी होती है। भाषा की शुद्धता के लिए वे अपनी ज़िम्मेदारी समझते हैं। इस तरह की शुद्धता का समावेश इन पत्रों की भाषा में हो जाय तो मैं कुछ नहीं कह सकता। वर्तनी या विराम चिह्नों को लेकर अपनी ओर से कुछ जोड़ना आवश्यक हुआ तो वह बड़े कोष्टकों में दे दिया है। कुछ सामग्री मेरी देखी हुई नहीं है। वह या तो प्रकाशित है या उसकी प्रतिलिपि दूसरों ने की है। 'नया प्रतीक' में प्रसाद के नाम निराला के जो पत्र प्रकाशित हैं, उनसे एकाध जगह ऐसी ही प्राप्त प्रतिलिपि सुधारने में मैंने सहायता ली है। कहीं-कहीं 'नया प्रतीक' के प्रकाशित पत्र-रूपों में अशुद्धियाँ हैं, उनका उल्लेख यथास्थान मैंने कर दिया है। सामान्यतः लोग पत्रों के साथ पता प्रकाशित नहीं करते। जहाँ-तहाँ मैंने पता भी दे दिया है। पत्र-लेखक के बारे में कुछ बातों की जानकारी पता लिखने के ढंग से हो जाती है। गुलाबराय ने पते पर निराला को श्रीहर्ष लिखा। अवश्य ही छतरपुर में निराला ने उनसे हर्ष काव्य की चर्चा की होगी और इस चर्चा से गुलाबराय यह भी समझे होंगे कि श्रीहर्ष कहे जाने से निराला प्रसन्न होंगे। भगवतीचरण वर्मा ने 'बापू तुम मुर्गी खाते यदि' कविता के प्रसंग में लिफाफे पर उन्हें पोइट एम्परर, हिन्दी के कवि सम्राट् का अनुवाद करते हुए, लिखा था, निराला को छेड़ने के लिए। रामकृष्ण त्रिपाठी के पते में निराला अक्सर ऐस्० बी० लिख देते हैं—संगीत विशारद की डिगरी का संक्षिप्त-रूप। उनके पास डिगरी नहीं तो क्या, बेटे के पास तो है। पते में कौन कितनी नागरी, और कितनी रोमन लिपि का व्यवहार करता है, यह भी जब-तब दर्शनीय है।

मैं कितना ही प्रयत्न करूँ मूल पत्र देखकर जो दुख या सुख मुझे मिला है, वह केवल छपा हुआ रूप देखने वाले को न मिलेगा। कहाँ स्याही लुढ़क गयी है, कहाँ पानी या तम्बाकू की पीक गिरने से अक्षर मिट गए हैं, कहाँ घसीट के कारण अक्षर पढ़े नहीं जाते, यह दुख वाला पक्ष है। कौन से पत्र निराला ने बार-बार पढ़े, प्रारम्भिक पत्रों में उनकी लिखावट कैसी है, बाद में कैसे बदलती गई और कहाँ तक बदल गई है, पत्र लिखते समय पोस्टकार्ड में, ऊपर नीचे, या आगे-पीछे, या अगल-बगल में छूटी हुई जगह का उपयोग कौन लेखक किस तरह करता है, हिन्दी साहित्यकार की अंग्रेजी की लिखावट किस तरह की है, अपने हस्ताक्षर कौन स्पष्ट करता है, कौन अस्पष्ट, यह सब सुख वाला पक्ष है।

पंत जी के हिन्दी हस्ताक्षर कोई जानकार ही पहचान सकता है किन्तु अंग्रेजी में उनके हस्ताक्षर बहुत स्पष्ट होते हैं जिन्हें कोई भी पढ़ सकता है। निराला अपने नाम

सूर्यकान्त में कभी दो 'य' लिखते हैं, कभी एक; उपनाम निराला कभी उल्टे कौमा के भीतर लिखते है, कभी उनके बिना। जयशंकर प्रसाद अपना उपनाम प्रसाद उल्टे कौमा के भीतर लिखते हैं। शिवपूजन सहाय के अक्षर जल्दी लिखने पर भी साफ-सुथरे और देखने में सुन्दर होते हैं। निराला की तरह सामान्यत: वे बड़े-बड़े अक्षर लिखते हैं। नन्द-दुलारे वाजपेयी सबसे छोटे आकार के अक्षर लिखने वालों में हैं। एक पोस्टकार्ड में इतना लिख डालते हैं जितना निराला दो बड़े आकार के पृष्ठों में लिखते हैं। शान्तिप्रिय द्विवेदी के अक्षरों में वक्र रेखाएँ अलंकरण प्रवृत्ति की ओर संकेत करती हैं। पंत की हस्त-लिपि में यह प्रवृत्ति मात्राएँ आदि लगाने में, पत्र में सिरनामा, पता, वगैरह लिखने के ढंग में, और सबसे अधिक उनके हस्ताक्षर के चक्रव्यूह में दिखाई देती है। किन्तु उनके अक्षर सीधे, लघु आकार के और वक्र रेखाओं से हीन होते हैं। अलंकरण की सर्वाधिक प्रवृत्ति निराला में है। प्रारम्भिक 'समन्वय'-काल की हस्तलिपि बहुत सीधी-सादी, उनकी बाद की लिपि से भिन्न है। 'मतवाला' से 'परिमल' के प्रकाशन तक की अवधि में अक्षरों की भंगिमाएँ बढ़ने लगती हैं, फिर भी बहुत नियन्त्रित रहती हैं। सन् ३२ के आसपास, 'रंगीला' साप्ताहिक के दिनों में, वे खड़े अक्षर बनाते हैं और अलंकरण वाली वक्र रेखाएँ यहाँ सबसे अधिक हैं। इस हस्तलिपि पर पंत के अनुकरण का प्रयास स्पष्ट है, केवल अलंकरण वाली रेखाएँ पंत की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। यह स्थिति बहुत थोड़े दिन रहती है और सन् ३३-३४ में, 'देवी'—'चतुरी चमार'—'तुलसीदास' वाले दौर मेंवे फिर पहले की तरह तिरछे अक्षर लिखने लगते हैं, अलंकरण वाली रेखाएँ कम हो जाती हैं। सन् ४० के बाद और भी बड़े-बड़े अक्षर लिखते हैं और अन्तिम दौर में, सन् ५० से सन् ६१ तक के दौर में, उनके अक्षर मुझे अपने गाँव के अनेक किसानों की लिखावट की याद दिलाते हैं जिसकी विशेषता है—जल्दी न लिखना, अक्षर बड़े-बड़े बनाना, जिस कलम से लिखा जाय, उसकी नोंक पैनी न हो वरन् चौड़ी हो जिससे अक्षरों की रेखाएँ मोटी-मोटी बनें। आश्चर्य की बात है कि जिस दौर में उनका मन इतना उलझा हुआ लगता था, उन दिनों उनकी हस्तलिपि सबसे ज्यादा साफ-सुथरी होती थी। संयत अलंकरण वाली वृत्ति अब भी कायम रहती है।

पत्र मैंने काल क्रमानुसार दिए हैं। उद्देश्य यह है कि पाठक के सामने क्रमशः निराला का जीवन-चित्र खुलता जाय। जो लोग निराला के नाम किसी एक व्यक्ति के लिखे हुए पत्र या किसी एक व्यक्ति को लिखे हुए निराला के पत्र पढ़ना चाहें, उन्हें कोई कठिनाई न होगी। पुस्तक के आरम्भ में पत्र लेखक या पत्र पाने वाले के नाम के साथ पत्र की संख्या दे दी गयी है।

कुछ पत्रों में तारीख नहीं है। वहाँ डाक मोहर की तारीख देखकर या अन्य पत्रों से मिलान करते हुए अनुमान लगाकर तारीख दी गई है। जहाँ आवश्यकता हुई, पत्र में पहली बार उल्लिखित व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय दे दिया गया है। बाद वाले पत्रों में उल्लेख आने पर उस परिचय की आवृत्ति नहीं की गई। जहाँ इस तरह का परिचय नहीं दिया गया, वहाँ यह समझना चाहिए कि मैं परिचय देना भूल गया या आवश्यक परिचय मुझे प्राप्त नहीं हुआ या परिचय देना मैंने आवश्यक नहीं समझा।

इस खंड के तीसरे भाग में निराला के जीवन से सम्बन्धित कुछ कागज-पत्र हैं। कलकत्ते से चलते समय उन्होंने अपनी योग्यता के बारे में जो प्रमाणपत्र प्राप्त किए थे, वे यहाँ दिए गए हैं। निराला पर अपनी पहली पुस्तक लिखने के समय मैंने निराला के पास कुछ प्रश्न लिख भेजे थे। उन्होंने उनका उत्तर नरोत्तम नागर को लिखा दिया था। 'प्रश्नोत्तरी' नाम से वह पूरा विवरण यहाँ पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है।

शिवशेखर द्विवेदी ने मेरे आग्रह पर सरोज के विवाह, बीमारी और मृत्यु से सम्बन्धित विवरण लिख भेजा था। उसे भी मैं यहाँ प्रकाशित कर रहा हूँ। निराला की वंशावली से सम्बन्धित सामग्री रामकृष्ण त्रिपाठी ने भेजी है, वह भी यहाँ प्रकाशित है। इसके अलावा निराला के बारे में मुझे लिखे हुए कुछ पत्र हैं जिनका तात्कालिक साक्ष्य के रूप में महत्व है। उनका आवश्यक अंश यहाँ दे दिया है। दो-चार मनीआर्डर की रसीदें हैं, वे भी यहाँ दी गई हैं। उद्देश्य यह है कि निराला के जीवन का अध्ययन करने वाले को वह सारी स्रोत-सामग्री सुलभ हो जाय जो मेरे पास है।

२. जन्म संवत् और जन्मतिथि

निराला के जीवन चरित से सम्बन्धित एक समस्या का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। समस्या यह है: निराला का जन्म किस वर्ष हुआ और उनकी जन्मतिथि कौन-सी है? इस पुस्तक के पहले खंड में उनके जन्म का जो संवत् और जो तिथि मैंने लिखी है, उससे कुछ मित्रों को सन्तोष नहीं है। वे लोग उनके जन्म का साल १८९६ ई० मानते हैं और जन्मतिथि वसन्त पंचमी। इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन इस प्रकार है:

११ जनवरी सन् २१ के पत्र में निराला महावीरप्रसाद द्विवेदी को अपनी उम्र २२ साल बताते हैं। स्वयं निराला द्वारा अपनी आयु के बारे में यह पहला उल्लेख है जो सुलभ है। इसके बाद जब रामनरेश त्रिपाठी ने सन् १९२६ के अन्त में उनसे जीवन-सम्बन्धी विवरण माँगा, तब उन्होंने माघ शुक्ल ११, संवत् १९५५ अपनी जन्म-तिथि लिख भेजी। यह विवरण निराला ने स्वयं लिखकर भेजा था, यह रामनरेश त्रिपाठी के पत्रों से स्पष्ट है जो यहाँ प्रकाशित किए गए हैं। इसके सात वर्ष बाद सन् १९३४ में 'मिश्रबन्धु विनोद' का चौथा भाग प्रकाशित हुआ जिसमें जन्म संवत् १९५५ है। द्विवेदी जी को लिखे हुए पत्र में जो आयु बताई गई है, और 'कविता कौमुदी' तथा 'मिश्रबन्धु विनोद' में दिए गए संवत् के अनुसार उनकी जो आयु जनवरी सन् २१ में होनी चाहिए, उनमें कोई विरोध नहीं है।

इसके बाद सन् १९४१ में श्यामसुन्दर दास की पुस्तक 'हिन्दी के निर्माता' (भाग २) (इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद) प्रकाशित हुई। इसमें निराला की जन्मतिथि माघ शुक्ल ११ ही है किन्तु संवत् बदलकर १९५३ हो गया है। दो वर्ष बाद सन् १९४३ में राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'नए भारत के नए नेता' प्रकाशित हुई। इसमें निराला की जन्मतिथि है वसन्त पंचमी और संवत् है १९५३, जिसके आगे कोष्टकों में दिया है १८९६ ई०। राहुल जी ने १९५३ से ५७ घटाकर १८९६ सन् निकाला है। सन् २१ से सन् ३४ तक निराला का जन्म संवत् १९५५ बना रहता है। सन् ३४ के बाद सन्

४१ का अन्त होने से पहले किसी समय इसे बदलने का विचार निराला के मन में आता है। मेरा अनुमान है कि जिस समय वह 'कुल्लीभाट' लिख रहे थे, उस समय अपने जन्म संवत् को लेकर उन्होंने यह नया हिसाब-किताब दुरुस्त किया था। श्यामसुन्दर दास को इसी के अनुसार उन्होंने अपना जन्म-संवत् १९५३ लिखा किन्तु जन्मतिथि उन्होंने वही माघ शुक्ल ११ रहने दी। १९४३ में जब राहुल सांकृत्यायन उनके जीवन से सम्बन्धित विवरण प्रकाशित करने जा रहे थे, तब उन्होंने माघ शुक्ल ११ की जगह तिथि भी बदलकर वसन्त पंचमी कर दी। ये सारे परिवर्तन निराला ने किए थे, श्यामसुन्दर दास या राहुल सांकृत्यायन ने नहीं। किन्तु संवत् १९५३ की वसन्त पंचमी सन् १८९७ में पड़ती है न कि सन् १८९६ में। यान्त्रिक ढंग से ५७ की संख्या घटाने पर सन् १८९६ जन्म का वर्ष बन गया। निराला ने अपना जन्म २ वर्ष पहले स्थिर किया था; इस गलती से उसमें एक साल का इजाफा और हुआ। यह बहुत ही स्पष्ट है कि निराला ने जन्मतिथि और जन्म संवत् दोनों एक ही साथ न बदले थे। पहले उन्होंने संवत् बदला, उसके बाद उन्होंने जन्मतिथि भी बदली। और यह सारी कार्रवाई सरोज की मृत्यु के बाद हुई। निराला के प्रति लोगों की श्रद्धाभावना का प्रसार हुआ; वसन्त पंचमी की तिथि पर उनका जन्म दिवस मनाया जाने लगा। किन्तु बहुत से लोग अभी माघ शुक्ल एकादशी वाली जन्मतिथि भूले नहीं थे। 'अपरा' में उनकी वही जन्मतिथि है और वही जन्म संवत्, कोष्टकों में आगे लिखा है, २० फरवरी १८९९। निराला का निधन होने पर 'कादम्बिनी' पत्रिका में उनका जन्म संवत् और तिथि, अंग्रेजी तारीख और साल के साथ वही छपी जो 'अपरा' में दी हुई है। 'कादम्बिनी' के सम्पादकीय कार्यालय का पता है लीडर बिल्डिंग्स, इलाहाबाद; और 'अपरा' के प्रकाशक और मुद्रक हैं—लीडर प्रेस, इलाहाबाद। यह अनुमान असंगत न होगा कि 'कादम्बिनी' और 'अपरा' में सही जन्मतिथि और सही संवत् वाचस्पति पाठक के कारण हैं।

इस पुस्तक के पहले खंड में माघ शुक्ल ११, संवत् १९५५ सन् १८९९ ई० की २१ फरवरी है। 'अपरा' और 'कादम्बिनी' में यह तारीख २० फरवरी दी हुई है। २१ फरवरी पुराने पंचाङ्ग देखकर डा० भगवानदास माहौर ने बताई थी। उनकी गणना सही है या 'अपरा' में दी हुई तारीख, यह मैं नहीं कह सकता। पर यह केवल पंचाङ्ग देखकर तिथि के अनुसार तारीख निश्चित करने का प्रश्न है। मुख्य बात है तिथि और संवत् की।

'कविता कौमुदी' में मनोहरा देवी की मृत्यु के समय निराला की आयु २० वर्ष की बताई गई है। श्यामसुन्दर दास की पुस्तक में पत्नी की मृत्यु के समय निराला की आयु २२ वर्ष है। २ वर्ष जन्म-संवत् पीछे किया तो पत्नी की मृत्यु के समय आयु २२ वर्ष की होगी ही। पत्नी की मृत्यु सन् १९१८ में हुई थी। इस वर्ष को बदलना असम्भव था। अतः आयु का अनुपात ही बदला जा सकता था। जब वह १८९९ में पैदा हुए, तब १९१८ में २० साल के थे, और जब १८९७ में पैदा हुए तब स्वभावतः १९१८ में २२ साल के थे। पत्नी की मृत्यु के समय उनकी आयु के दो विवरण सिद्ध करते हैं कि निराला जन्म-संवत् को लेकर एक गाथा रच रहे थे और जन्म-संवत् बदलने पर जहाँ-जहाँ आवश्यक समझते थे, आयु-सम्बन्धी उल्लेखों में परिवर्तन करते जाते थे।

महिपादल के स्कूल में जब वह १३ सितम्बर १९०७ को आठवें दर्जे में भर्ती हुए, तब उनकी उम्र लिखाई गई १० साल ८ महीने। कोई नहीं जानता कि बेटे को स्कूल में भर्ती कराने स्वयं पण्डित रामसहाय तेवारी गए थे या किसी के साथ उसे भेजा था। असम्भव नहीं कि जिस आदमी के साथ सुर्जकुमार स्कूल भेजे गए, उसे उम्र तो बताई गई ८ साल १० महीने पर स्कूल पहुंचते-पहुंचते उसे याद रहा १० साल ८ महीने। यदि रजिस्टर में लिखी उम्र सही मानी जाय, तो भी उनके जन्म का साल १८९७ ठहरेगा, १८९६ नहीं। १८९७ की वसन्त पंचमी ६ फरवरी को थी और दिन शनिवार था, रविवार नहीं। (यह सब डॉ० भगवानदास माहौर द्वारा भेजी हुई गणना के आधार पर कह रहा हूँ।) निराला का जन्म इतवार को हुआ था, इसलिए वह सूरजकुमार कहलाए, यह धारणा महिपादल के रजिस्टर में दी हुई उम्र से प्रमाणित नहीं होती। अलबत्ता संवत् १९५२ की वसन्त पंचमी रविवार को थी परन्तु निराला ने जन्म-सम्बन्धी जो सूचनाएँ रामनरेश त्रिपाठी और श्यामसुन्दर दास को दीं, उनमें कहीं संवत् १९५२ नहीं है। महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पत्र में निराला की आयु का उल्लेख और रामनरेश त्रिपाठी तथा मिश्रबन्धुओं को दिया हुआ जन्म-संवत्-सम्बन्धी विवरण महिपादल के स्कूल-रजिस्टर में दी हुई उम्र की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक है।

निराला ने जीवन-सम्बन्धी विवरण देते हुए जनेऊ और ब्याह जैसी घटनाओं के समय अपनी जो आयु विभिन्न व्यक्तियों को बताई, वह एक-सी नहीं है। श्यामसुन्दर दास को उन्होंने जनेऊ के समय अपनी उम्र ९ साल बताई, मुझे ८ साल (१८-२-४३ का पत्र); ब्याह के समय श्यामसुन्दर दास को अपनी आयु १३ साल बताई, मुझे १४ साल। इस तरह का हेर-फेर किसी योजना के अनुसार नहीं है; उम्र उन्होंने अन्दाज़ से बताई, साल दो साल का फेर आसानी से हो सकता है। किन्तु मनोहरा देवी की मृत्यु के समय उनका एक जगह बीस साल का होना और दूसरी जगह बाईस साल का होना दूसरे ढंग की हेराफेरी है और वह योजना के अनुसार है।

गंगाप्रसाद पाण्डेय ने 'महाप्राण निराला' (१९४९) में लिखा है कि १८९६ ई० में वसन्त पंचमी के दिन निराला का जन्म हुआ। इस उल्लेख का आधार राहुल सांकृत्यायन हैं। नन्ददुलारे वाजपेयी अधिक सतर्क थे। उन्होंने विक्रमी संवत् से ५७ की संख्या घटाकर ईसवी सन् निकालना पर्याप्त नहीं समझा। 'कवि निराला' में लिखा है, इनका जन्म "माघ शुक्ल एकादशी सम्वत् १९५३, जनवरी सन् १८९७ को हुआ था।"

बच्चनसिंह ने १९४७ में लिखी हुई निराला पर अपनी पुस्तक में, और १९४६ में लिखी हुई अपनी पुस्तक में मैंने, राहुल सांकृत्यायन के आधार पर वसन्त पंचमी संवत् १९५३ को निराला का जन्म माना है। विश्वम्भर मानव ने 'काव्य का देवता निराला' (१९६३) में जन्म का साल १८९६ ई० मानते हुए पाद-टिप्पणी में लिखा है, "बाबू श्यामसुन्दर दास ने इनके जन्म की तिथि माघ शुक्ल ११ सम्वत् १९५३ मानी है, जो ठीक प्रतीत होती है।" मानव जी ने ई० सन् राहुल जी से लिया है, किन्तु वसन्त पंचमी वाली बात स्वीकार नहीं की। जानकीवल्लभ शास्त्री ने 'महाकवि निराला' (१९६३) में निराला की जन्मतिथि "वसन्त पंचमी रविवार (वि० सं० १९५५;

१८९६ ई०)" लिखी है। यहाँ दो स्रोतों से प्राप्त सन् और संवत् एक साथ विठा दिए गए हैं। 'निराला के पत्र' पुस्तक की भूमिका में शास्त्रीजी ने लिखा है, "प्रायः सन् ३५ में प्रकाशित 'हमारे साहित्य निर्माता' नामक अपने अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ में छायावाद के सबसे सहृदय समीक्षक श्री शान्तिप्रिय जी द्विवेदी ने निराला का जन्म संवत् १९५५ और रचनाकाल का प्रारम्भ संवत् १९७२ में वताया है।" (पृ० ५७)। शास्त्री जी के संवत् का आधार शान्तिप्रिय द्विवेदी हैं और सन् का आधार राहुल सांकृत्यायन।

नन्ददुलारे वाजपेयी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस वात की ओर ध्यान दिया कि जन्मतिथि वदलने का क्रम स्वयं निराला का है और इसका सम्बन्ध उनकी मानसिक स्थिति से है। 'कवि निराला' पुस्तक के परिशिष्ट में उन्होंने लिखा है, "कुछ वर्षों के अनन्तर जव कवि की मानसिक स्थिति कुछ डाँवाडोल रहने लगी, तव उन्होंने ही यह तिथि वदलकर माघ शुक्ल वसन्त पंचमी को अपनी जन्म तिथि वताया।"

यह पुस्तक १९६५ ई० में प्रकाशित हुई थी। वाजपेयी जी उन विरले आलोचकों में से थे जो साहित्य-क्षेत्र में निराला के विरोधियों को करारा उत्तर देते हुए निराला की स्वरचित गाथाओं से अपने मन को अभिभूत न होने देते थे। सवसे पहले अपने विवेक से उन्होंने पहचाना कि अपनी डाँवाडोल मानसिक स्थिति के कारण निराला अपनी जन्मतिथि में कुछ हेर-फ़ेर कर रहे हैं। वाजपेयी जी के सामने निराला को लिखे हुए रामनरेश त्रिपाठी के पत्र न थे। उन्हें इस वात की जानकारी न थी कि अपने जीवन से सम्बन्धित विवरण 'कविता कौमुदी' के लिए निराला ने ही भेजा था। इससे छह वर्ष पूर्व निराला ने महावीरप्रसाद द्विवेदी को अपनी उम्र के वारे में जो कुछ लिखा था, उसकी जानकारी भी उन्हें नहीं थी। इसलिए उनका यह लिखना वहुत स्वाभाविक था कि "प्राप्त प्रमाणों में डॉ० श्यामसुन्दर दास की पुस्तक 'हिन्दी के निर्माता' की तिथि तथ्यपूर्ण कही जा सकती है।" संवत् के वारे में उन्हें पूर्ण निश्चय नहीं था पर जन्म-तिथि के वारे में उन्हें कोई दुविधा नहीं थी कि निराला ने एकादशी वदलकर पंचमी की है।

जन्म संवत् और तिथि के वारे में 'कविता कौमुदी' और 'हिन्दी के निर्माता' में दिए हुए विवरण भिन्न हैं और इनमें न जाने कौन सही है, इस समस्या का विवेचन करते हुए १४ अक्तूवर १९६२ के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में डॉ० शिवगोपाल मिश्र का महत्वपूर्ण लेख 'निराला-सम्वन्धी कतिपय भ्रामक तथ्य' छपा था। इस लेख में वसन्त पंचमी को निराला का जन्म-दिवस मनाने के चलन का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा था, "वह स्वयं भी इस तिथि को मान्यता प्रदान करते रहे हैं, परन्तु कभी-कभी वह यह भी कह दिया करते थे कि वसन्त पंचमी मेरा नहीं सरस्वती पूजन का दिन है।" शिवगोपाल मिश्र को जन्मतिथि वदलने के वारे में उस तरह निश्चय नहीं है जिस तरह वाजपेयी जी को, किन्तु इस हेर-फेर की तरफ ध्यान उनका भी गया था और वाजपेयी जी से पहले गया था। निराला पर मेरी पहली पुस्तक तथा डॉ० वच्चन सिंह और राहुल सांकृत्यायन के उल्लेखों का हवाला देने के वाद लिखा है, "माघ सुदी ११ कहाँ से और किस प्रकार उपलब्ध हुई, कहना कठिन है···श्यामसुन्दर दास जी ने माघ सुदी

११ को जन्मतिथि स्वीकार करते हुए जन्म सम्वत् में दो वर्षों का हेर-फेर कैसे कर दिया, यह विचारणीय है···दूसरे वर्ग के लेखक निराला जी की जन्मतिथि वसन्त पंचमी के दिन मानते हैं। इसका आधार समझ में नहीं आता।"

रामनरेश त्रिपाठी ने जन्म का जो संवत् और जो तिथि दी है, उनका आधार निराला का दिया हुआ विवरण है। दो वर्षों का हेर-फेर श्यामसुन्दर दास ने नहीं किया, उसका आधार भी निराला हैं। फिर तिथि बदलकर वसन्त पंचमी को जन्मदिवस मनाने का आधार भी निराला हैं।

वसन्त पंचमी को जन्मदिवस मनाने की प्रेरणा निराला को दुलारेलाल भार्गव से मिली।

प्रकाशक होने के अलावा दुलारेलाल भार्गव कवि भी थे और इनका जन्म वसन्त पंचमी को हुआ था। निराला ने जब 'सुधा' में काम करना शुरू किया, तब इनका जन्मदिवस वसन्त पंचमी को मनाया गया और उस दिन वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास 'गढ़ कुंडार' का प्रकाशन हुआ। उस समय विद्वानों की सभा में निराला ने अपना लिखित भाषण पढ़ा जो 'गढ़ कुंडार' की भूमिका के रूप में प्रकाशित है। निराला यहाँ कहते हैं, "श्री दुलारे लाल जी का जन्म हुआ था वसन्त पंचमी को, उनके विवाह की वह अमूल्य स्मृति भी उन्हें मिली वसन्त-पंचमी की रात, गंगा पुस्तकमाला का प्रकाशन आरम्भ हुआ वसन्त पंचमी के दिन, और आज इस माला के १०८ वें जप-पुष्प की पूर्णता भी होती है वसन्त पंचमी को।" ('राम की शक्ति पूजा' में १०८ कमल पुष्प चढ़ाकर जप पूरा करने का पूर्वाभास !)

वसन्त पंचमी का ऐसा उजागर महत्व किसी युग प्रवर्त्तक कवि के जीवन में होना चाहिए था, न कि मूलतः व्यवसायी किसी प्रकाशक-लेखक के जीवन में। निराला ने इस समय दुलारेलाल भार्गव से कहा था कि वह भी अपना जन्मदिन वसन्त पंचमी को मनाएंगे। यह बात मुझे दुलारेलाल भार्गव ने बताई थी।

'गढ़ कुंडार' की उस भूमिका में निराला की कही हुई कुछ अन्य बातें ध्यान देने योग्य हैं :

(१) "श्रीयुत दुलारे लाल जी ने उस १६ वर्ष की छोटी ही सी अवस्था में अपनी जातीय महासभा की मुख पत्रिका का सम्पादन भार उठा लिया, और इस तरह हिन्दी की सेवा के लिए दत्तचित्त हो गए।" इसी उम्र में निराला को 'जुही की कली' का लेखक होना चाहिये।

(२) "मित्रवर पं० दुलारे लाल जी के जीवन की धारा को, उनके परिवार में प्रचलित प्रथा के प्रतिकूल उर्दू से हिन्दी की तरफ बहाने का श्रेय एकमात्र उनकी धर्म-पत्नी स्वर्गीया श्रीमती गंगादेवी को है।·········हिन्दी बहुत अच्छी जानती थीं········· उन्हें संगीत का भी ज्ञान था·········छोटी अवस्था में ही श्रीयुत दुलारे लाल जी के साथ इनका शुभ विवाह विपुल आयोजन तथा उत्साह के साथ हुआ·········स्वर्गीया सौभाग्य-वती श्री गंगादेवी ने, यहाँ इस उर्दू के अजेय दुर्ग में आकर देखा, लखनऊ हिन्दी के प्रेम से रहित है·········अपने पति के हृदय में हिन्दी की आशा की लता अपने सुकुमार प्रयत्नों

से उन्होंने रोपित कर दी।" मनोहरा देवी से गंगादेवी के जीवन और गुणों का साम्य बहुत ही स्पष्ट है। कम उम्र में व्याह होना साधारण बात है, विवाह के बाद पति का विधुर होना भी साधारण बात है किन्तु हिन्दी का ज्ञान और उससे इतना प्रेम कि पति के हिन्दी-शून्य हृदय में नारी उसका अमर बीज डाल दे, यह बात असाधारण है। साहित्य के साथ गंगादेवी को संगीत का भी ज्ञान था और इन गुणों के साथ उन्हें ईश्वर प्रदत्त "अपार सौन्दर्य मिला था।" दूसरी मनोहरा देवी हीं थीं।

(३) "तिरोधान के पश्चात् अपने पति की आभा में मिलित होकर यह हिन्दी का इतना बड़ा उपकार करेंगी, यह किसी को पहले स्वप्न में भी मालूम न था।" ये पंक्तियाँ 'गीतिका' के समर्पण की याद दिलाती हैं। मनोहरा देवी की हिन्दी के प्रकाश से, प्रथम परिचय के समय, निराला आँखें नहीं मिला सके, हीन-हिन्दी प्रान्त में हिन्दी की शिक्षा का संकल्प किया और हिन्दी सीखी, उनका स्वर निराला के (संगीत) स्वर को परास्त करता था, और उन्होंने "अन्त में अदृश्य होकर मुझसे मेरी पूर्ण परिणीता की तरह मिलकर मेरे जड़ हाथ को अपने चेतन हाथ से उठाकर दिव्य शृंगार की पूर्ति की।" दुलारेलाल भार्गव ने अपनी पुस्तक 'हृदय-तरंग' "अपनी प्राणाधिक स्वर्गीया सहधर्मिणी को" उनकी उस प्ररणा की याद दिलाते हुए समर्पित की। ठीक यही कार्य निराला ने 'गीतिका' के समर्पण में किया। और यह सभी देवियाँ अन्तर्धान होने से पहले अपनी दिव्य ज्योति पुरुष के शरीर में मिला देती हैं—राम के वदन में लीन होने वाली शक्ति के समान!

इतना सब साम्य होने के बाद दुलारेलाल का जन्म वसन्त पंचमी को हो और सरस्वती के वरद पुत्र निराला का न हो, यह बात समझ में आने वाली न थी।

इससे मिलते-जुलते परिवर्तन दो-एक और हैं। 'सुकुल की बीवी' कहानी सितम्बर सन् ३७ की 'सुधा' में प्रकाशित हुई थी। इसमें एन्ट्रेंस परीक्षा में फेल होने का कारण यह लिखा है, "गणित की नीरस कापी को पद्माकर के चुहचुहाते कवित्तों से मैंने सरस कर दिया है।" ४ साल बाद उन्होंने श्याम सुन्दर दास को जो सूचना दी, उसके अनुसार "प्रवेशिका की परीक्षा देने गये। उस समय पिता पर फालिज का आक्रमण हुआ, इससे लौट आये। परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सके।" लकवे की बात उन्होंने राहुल जी से भी कही किन्तु परीक्षा में फेल होने का कारण यह बताया कि एक पर्चे में शामिल न हुए थे।

यदि प्रवेशिका परीक्षा के समय पण्डित रामसहाय पर फालिज का आक्रमण हुआ तो इसके बाद वह कम-से-कम ३-४ साल तक जीवित रहे और गाँव आने से पहले इस हालत में कुछ समय तक महिषादल में भी रहे होंगे। लकवे वाली बात का प्रमाण किसी स्रोत से नहीं मिला। महिषादल में यह जानकारी अवश्य मिली कि डॉ० क्षेत्रमोहन गुप्त ने उनका हार्निया का आपरेशन किया था। मुझे 'सुकुल की बीवी' में कही हुई बात ही सही मालूम होती है।

परीक्षा में असफल होने की चर्चा के बाद श्यामसुन्दर दास कहते हैं, "कुछ समय पीछे संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ किया। इस समय संस्कृत में भी कुछ रचनाएँ की।"

संस्कृत स्कूली जीवन समाप्त करने के बाद सीखी, यह बात विश्वसनीय है। हिन्दी पढ़ने के बारे में लिखा है, "नौ वर्ष की अवस्था में घर में साधारण हिन्दी सिखाई गई। घर वालों को तुलसीकृत रामायण पढ़कर सुनाते थे। इसके फलस्वरूप ब्रजभाषा, अवधी और बैसवाड़ी से मिली तुकबंदियाँ भी किया करते थे।" यह उल्लेख भी सही है; जिस परिवेश में निराला का लालन-पालन हुआ, उसमें ऐसा होना बहुत स्वाभाविक था। निराला शुरू में हिन्दी में कविता करते थे; खड़ी बोली हिन्दी में नहीं किन्तु ब्रजभाषा और अवधी में, या दोनों के मिले हुए रूप में। उन्हें कविता लिखने की प्रेरणा तुलसीकृत रामायण से मिली, बँगला कविता से उनका परिचय बाद को हुआ।

बँगला के बारे में लिखा है, "जब आप स्कूल में पढ़ते थे तभी से कविता करने लगे थे। उस समय बँगला में कविता लिखते थे।" इस बात को घर में हिन्दी सिखाये जाने और ब्रजभाषा अवधी में प्रारम्भिक तुकबंदियाँ करने के संदर्भ में पढ़ना चाहिए। "खड़ी बोली सबके अन्त में अपने परिश्रम से सीखी"—यह बात इसी रूप में सार्थक है कि खड़ी बोली में गद्य-पद्य रचना का अभ्यास बाद में किया।

श्यामसुन्दर दास के विवरण के अनुसार "पहला लेख हिन्दी और बँगला के सम्बन्ध में १९१९ ई० की सरस्वती में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में निकला।" श्यामसुन्दर दास यदि स्वयं तथ्य संग्रह करते तो १९२० की जगह १९१९ कभी न लिखते। उन्हें जो विवरण निराला ने भेजा था, उसे उन्होंने ज्यों का त्यों स्वीकार किया था (इस तरह की भूलें मुझसे भी हुई हैं।) निराला का लेख १९२० में छपा था और उस समय 'सरस्वती' के सम्पादक महावीरप्रसाद द्विवेदी न थे यद्यपि निराला ने अपना लेख उन्हीं के पास भेजा था। स्पष्ट है कि निराला ने जहाँ जो कुछ अपने बारे में लिखा है, उसे आँख मूंदकर स्वीकार न कर लेना चाहिए।

३. मुक्तछन्द और उसका सृजन काल

जानकीवल्लभ शास्त्री ने 'निराला के पत्र' की भूमिका में लिखा है, "अब निराला तो रहे नहीं, मैं किससे कहलाऊँ कि सन् '१६ में 'जूही की कली' लिखे जाने की बात उन्हीं ने बताई थी; कि अकेले मैं ही नहीं, मेरी तरह कितने ही दूसरे भी दिग्भ्रान्त (!) हुए हैं।" (पृष्ठ ५६)। किसी से कहलाने की ज़रूरत नहीं है, मैं पूरी तरह विश्वास करता हूँ कि निराला ने उनसे 'जुही की कली' का रचनाकाल १९१६ बताया होगा। उनके द्वारा सम्पादित 'महाकवि निराला' पुस्तक १९६३ में प्रकाशित हुई थी। इससे १४ साल पहले १९४९ में प्रकाशित गंगाप्रसाद पाण्डेय की पुस्तक 'महाप्राण निराला' में ऐसा ही उल्लेख है; " 'जुही की कली' निराला ने सन् १६ में लिखी थी" (पृष्ठ ४६), और पाण्डेय जी की पुस्तक प्रकाशित होने से १८ वर्ष पहले १९३१ में नन्ददुलारे वाजपेयी को निराला ने लिखा था कि 'अधिवास' कविता "मेरे पास १९१६ की लिखी हुई पड़ी थी।" (नन्ददुलारे वाजपेयी, 'कवि निराला', वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी, १९६५, पृष्ठ ३०); और इससे पहले 'पन्तजी और पल्लव' लेख में उन्होंने सूचित किया था, "गुप्त जी द्वारा किया गया वीरांगना काव्य का अनुवाद जिन दिनों

'सरस्वती' में निकल रहा था, उन दिनों इस अमित्र छन्द की सृष्टि मैं कर चुका था—मैं कर क्यों चुका था, भाव के आवेश में 'जूही की कली' उन दिनों मेरी कापी में खिल चुकी थी।" (प्रबन्ध पद्म, गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, संवत् १९९१, पृष्ठ ९४); और इससे लगभग एक वर्ष पहले वह रामनरेश त्रिपाठी को सूचित कर चुके थे कि उनका रचनाकाल संवत् १९७२ से शुरू हुआ था, उसी के आधार पर रामनरेश त्रिपाठी ने उनके परिचय में लिखा था, "इनकी कविता का रचना काल सं० १९७२ से प्रारम्भ होता है। 'जूही की की कली' और 'अधिवास' इनकी पहली रचनाएँ हैं।" (कविता कौमुदी, दूसरा भाग, तीसरा संस्करण, फाल्गुन, १९८३, पृष्ठ ५९३)।

इससे पहले 'जुही की कली' या 'अधिवास' के रचना काल का उल्लेख नहीं मिलता। ये सारे उल्लेख 'पल्लव' के प्रकाशन के वाद के हैं और 'पल्लव' में पन्त जी ने कविताओं के साथ जो समय दिया है, उससे संवत् १९७२ में निराला के रचना काल के आरम्भ होने का गहरा सम्वन्ध है। 'कविता कौमुदी' के तीसरे संस्करण में प्रकाशन का महीना फाल्गुन है, और सम्वत् १९८३। ८३ में से ५७ घटाने पर २६ वचते हैं पर इससे यह न समझना चाहिए कि 'कविता कौमुदी' का यह संस्करण १९२६ में प्रकाशित हुआ था। १९२६ के अन्त में रामनरेश त्रिपाठी अभी निराला से कविताएँ और उनका जीवन परिचय माँग रहे थे और इसकी प्राप्ति उन्हें १९२७ के आरम्भ में हुई। 'कविता कौमुदी' में निराला का जीवन-परिचय 'पल्लव' के प्रकाशन के वाद भेजा गया और छपा है, यह याद रखना चाहिए। 'पल्लव' के अलावा निराला को इस बात का ध्यान रखना था कि पन्त से पहले और किन लोगों ने अतुकान्त छन्द में रचनाएँ की हैं। नन्ददुलारे वाजपेयी को ऊपर उद्धृत पत्र में उन्होंने यह भी लिखा था, "गुरुजी का 'ब्लेंक वर्स' वीरांगना काव्य भी पन्तजी की सृष्टियों से पहले 'सरस्वती' में निकला।" (कवि निराला, पृष्ठ ३०)। 'वीरांगना काव्य' का उल्लेख उन्होंने 'पन्तजी और पल्लव' लेख में भी किया।

मैथिलीशरण गुप्त ने 'वीरांगना काव्य' का जो अनुवाद किया, वह १९१९ में प्रकाशित हो रहा था। उस वर्ष की 'सरस्वती' के फरवरी मास में 'अर्जुन के प्रति द्रौपदी' वाली कविता छपी। अगस्त की संख्या में 'दुर्योधन के प्रति भानुमती' कविता छपी। १९१६ में गुप्त जी ने 'वीराङ्गना' का अनुवाद न किया था।

निराला ने १९१६ का साल क्यों चुना? सम्भव है, उन्हें यही याद रहा हो कि 'वीराङ्गना' का अनुवाद १९१६ में प्रकाशित हुआ था। 'जुही की कली' उन्होंने महावीर-प्रसाद द्विवेदी के पास नहीं भेजी थी, इसका प्रमाण तो १९२० में लिखा हुआ द्विवेदी जी के नाम उनका पहला पत्र है। इससे पहले द्विवेदी जी से उनका कोई पत्रव्यवहार न हुआ था। इस पत्र के साथ उन्होंने जो लेख भेजा था, उसमें उसी वर्णिक छन्द को कविता के लिए अनुपयुक्त वताया गया है जिसमें 'जुही की कली' लिखी गयी है। इस-लिए यह मानने का कोई कारण नहीं कि 'जुही की कली' उन्होंने १९१६ में लिखी थी।

मान लीजिए, उन्होंने यह कविता १९१६ में ही लिखी। उस समय उनकी उम्र क्या थी? 'पन्तजी और पल्लव' में हिन्दी और वँगला नाटक देखने और नटों के अस्वा-

भाविक उच्चारण की चर्चा के बाद उन्होंने लिखा था, "उस समय मैं १६-१७ से अधिक न था। कल्पना की सुदूर भूमि में हिन्दी के अभिनय की सफलता पर विचार करते हुए, बोलते हुए, पाठ खेलते हुए, जिस छन्द की सृष्टि हुई, वह यही है।" (प्रबन्ध पद्म, पृष्ठ ९७)। यदि 'जुही की कली' उन्होंने १९१६ में लिखी, और उस समय वह १६-१७ साल से ज़्यादा न थे, तो उनका जन्म किस वर्ष में हुआ? तब उनका जन्म १९०० या १८९९ में हुआ, इससे पहले नहीं। जो लोग निराला के कहने से यह मान लेते हैं कि 'जुही की कली' १९१६ में लिखी गयी थी, वे यह भी मान लें कि उस समय वह १६-१७ साल से ज्यादा नहीं थे और उनका जन्म १८९९ या १९०० में हुआ था। ऐसा नहीं हो सकता कि 'जुही की कली' १९१६ में लिखी जाय, उस समय कवि की उम्र १६-१७ साल हो, और उसका जन्म १८९६ में हुआ हो। न १८९७ को ही उनके जन्म का साल माना जा सकता है।

निराला ने अपने बारे में जो गाथा रची, उसकी कई मंज़िलें थीं। पहली मंज़िल की शुरूआत रचना काल को पीछे ठेलने से हुई। इस मंजिल में जन्म संवत् अपनी जगह स्थिर रहा।

दूसरी मंज़िल में उन्होंने जन्म का संवत् दो साल पीछे किया, जिसका उल्लेख श्यामसुन्दर दास की पुस्तक में है। तीसरी मंज़िल में उन्होंने जन्मतिथि भी बदल दी और उसे वसन्त पंचमी कर दिया। इसके बाद रविवार को जन्म होने के कारण सूरज कुमार नाम रक्खा गया, यह बात उन्होंने स्वयं इस गाथा में जोड़ी या दूसरों ने उसे जोड़ा, मैं नहीं कह सकता।

छायावाद के अभ्युदय काल में अतुकान्त छन्द की बड़ी महिमा थी और किसने सबसे पहले इसका व्यवहार करके युग-प्रवर्तन किया, यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न था। इसी कारण 'उच्छ्वास' के लेखक सुमित्रानन्दन पन्त ने 'पल्लव' की भूमिका में निराला के मुक्तछन्द की आलोचना की, इसीलिए उस भूमिका की आलोचना करते हुए निराला ने पन्त से ही नहीं, मैथिलीशरण गुप्त से भी पहले स्वयं अतुकान्त छन्द लिखने का दावा किया। यहाँ एक नाम छूटा जा रहा था, जयशंकर प्रसाद का। इनकी कविता 'महाराणा का महत्व' 'इन्दु' में, जून १९१४ में प्रकाशित हुई थी। यह उल्लेख कविता के पुस्तक रूप में छपने पर प्रकाशक के 'कथन' में है। और इससे पहले जनवरी १९१२ की 'सरस्वती' में गिरिधर शर्मा की कविता 'एक भावना' अतुकान्त छन्द में है। मार्च १९१३ में रूपनारायण पाण्डेय की 'तिलाञ्जलि', "अन्त्यानुप्रासहीन पद्य," प्रकाशित हुआ था। दरअसल 'सरस्वती' का सम्पादन-भार लेने से भी पहले महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अतुकान्त छन्दों के व्यवहार की आवश्यकता पर जोर देना शुरू कर दिया था। जब 'सरस्वती' के सम्पादक श्यामसुन्दर दास थे, तब जुलाई सन् १९०१ की संख्या में महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'कवि कर्तव्य' लेख छपा था।

द्विवेदी जी का यह लेख ऐतिहासिक महत्व का है। इसमें ब्रजभाषा की जगह कविता में खड़ी बोली के व्यवहार पर ज़ोर देने के साथ-साथ उन्होंने नई तरह के छन्द लिखने पर भी ज़ोर दिया। अन्त्यानुप्रासहीन कविता के बारे में लिखा, "हमारा यह मत

है कि पादान्त में अनुप्रासहीन छन्द भी भाषा में लिख जाने चाहिएँ। इस प्रकार के छन्द जब संस्कृत, अङ्गरेजी और बँगला में विद्यमान हैं, तव कोई कारण नहीं, कि हमारी भाषा में वे न लिखे जावें।...अनुप्रासयुक्त पादान्त सुनते-सुनते हमारे कान उस प्रकार की पंक्तियों के पक्षपाती हो गये हैं। इसीलिए अनुप्रासहीन रचना अच्छी नहीं लगती। विना तुक वाली कविता के लिखने अथवा सुनने का अभ्यास होते ही वह भी अच्छी लगने लगेगी; इसमें कोई सन्देह नहीं। अनुप्रास और यमक आदि शब्दाड़म्बर कविता के आधार नहीं हैं जो उसके न होने से कविता निर्जीव हो जावै या उसे कोई अपरिमेय हानि पहुँचै। कविता का अच्छा और बुरा होना विशेषतः अच्छे अर्थ और रस वाहुल्य पर अवलम्बित है। परन्तु अनुप्रासों के ढूंढ़ने का प्रयास उठाने में समर्पक शब्द न मिलने से अर्थांश की हानि हो जाया करती है जिससे कविता की चारुता नष्ट हो जाती है। अनुप्रासों का विचार न करने से कविता लिखने में सुकरता भी होती है और मनोऽभिलषित अर्थ को व्यक्त करने में विशेष कठिनाई भी नहीं पड़ती। अतएव पादान्त में अनुप्रासहीन छन्द भाषा में लिखे जाने की वड़ी आवश्यकता है।"

परम्परावादी लोग अतुकान्त कविता पसन्द न करेंगे पर धीरे-धीरे लोकरुचि वदलेगी, यह विश्वास प्रकट करते हुए रूढ़ियों के विरोध में द्विवेदी जी ने लिखा था, "किसी भी प्रचलित परिपाटी का क्रम भंग होता देख प्राचीनों के पक्षपाती विगड़ खड़े होते हैं और नवीन संशोधन के विषय में नानाप्रकार की कुचेष्टा और दोषोद्भावना करने लगते हैं। हमको आशंका है कि इस विषय में भी किसी-किसी का मत हमारे मत के प्रतिकूल होगा। परन्तु कुछ दिनों में हमारे प्रतिपक्षियों को इस नवीन सूचना की उपयोगिता स्वीकार करके, अपने मत को उन्हें अवश्यमेव भ्रान्तिमूलक मानना पड़ैगा। इसका हमको दृढ़ विश्वास है।"

वँगला में माइकेल मधुसूदनदत्त ने 'वीराङ्गना' और 'मेघनाद वध' जैसे काव्य अनुकान्त छन्द में लिखे थे। पहले इनका भी विरोध हुआ था। द्विवेदी जी इस तथ्य से परिचित थे। मधुसूदनदत्त उनके प्रिय कवि थे। जुलाई और अगस्त १९०३ की 'सरस्वती' में माइकेल मधुसूदनदत्त पर उनका लम्वा लेख छपा था। इस लेख में अपने प्रिय विषय अतुकान्त छन्द की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा था, "मधुसूदन के समय तक वँगला में अमित्राक्षर छन्द नहीं लिखे जाते थे। हमारे दोहा, चौपाई, छप्पय और घनाक्षरी आदि के समान उसमें विशेष करके पयार, त्रिपदी और चतुष्पदी आदिक ही छन्द प्रयोग किये जाते थे। लोगों का यह अनुमान था कि वँगला में अमित्राक्षर छन्द हो ही नहीं सकते। इस वात को माइकेल ने निर्मूल सिद्ध कर दिया।"

जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ध्यान रखते थे कि पड़ोसी प्रदेश वँगाल में क्या हो रहा है, उसी तरह महावीरप्रसाद द्विवेदी वहाँ की साहित्यिक गतिविधि पर नज़र रखते थे। अपने दरवे में वन्द रहकर वड़प्पन की डींग मारना उन्हें पसन्द न था। पड़ोसियों से सीखो, अंग्रेज़ी से ही नहीं, दूसरी भारतीय भाषाओं से भी सीखो, ऐसी उनकी नीति थी।

उसी निवन्ध में हिन्दी को लक्ष्य करके द्विवेदी जी ने लिखा, "जब इस प्रकार के छन्द वंगला में लिखे जा सकते हैं, और वड़ी योग्यता से लिखे जा सकते हैं, तव उनका

हिन्दी में भी लिखा जाना सम्भव है। लिखने वाला अच्छा और योग्य होना चाहिए।"
अप्रैल १९०४ की सरस्वती में रायदेवी प्रसाद की कविता 'मृत्युंञ्जय' प्रकाशित हुई। रचना अतुकान्त है, छन्द गणात्मक है, भाषा ब्रज है :

विपुल घोर उपद्रव मृत्यु के
अकथ शोक भरे करुनामयी
निरखि के भव बीच चहूँ दिशा
विविध भाव हिये उपजें घने ।

इसी छन्द में 'दिवस का अवसान समीप था' आदि 'प्रियप्रवास' का प्रसिद्ध प्रारंभिक अंश लिखा गया था। जनवरी १९१२ की 'सरस्वती' में प्रकाशित गिरिधर शर्मा की कविता 'एक भावना' यों शुरू होती है :

प्यारे पण्डित राज ! क्यों वदन में फूले समाते नहीं ?
क्यों सौन्दर्य अपूर्व दिव्य मुख पै छाया हुआ है महा ?
आखें क्यों विकसी हुई रसभरी देतीं दिखाई कहो ?
क्यों मन्द-स्मित-व्याज से अधर से माधुर्य जाता वहा ?

मार्च १९१३ की 'सरस्वती' में प्रकाशित रूपनारायण पाण्डेय की 'तिलाञ्जलि' मात्रिक छन्द में है।

चन्द्रिका-सदृश दमभर खिलकर, हा हन्त, हुई अन्तर्हित यों ।
कर हृदय हमारा अन्धकार, उठ गयीं जगत् से दम भर में ।।
प्रियतमे, देवि, तुम तो अनन्त सौभाग्यशालिनी निश्चित हो ।
वालक-वियोग-वेदना नहीं सह सकीं, गयीं पीछे उसके ।।

ऐसी रचनाएं देखकर मैथिलीशरण गुप्त का महत्व समझ में आता है। ये रचनाएँ अतुकान्त होने के अलावा भाषा की दृष्टि से कम वेतुकी नहीं हैं। गुप्त जी की सबसे बड़ी सफलता यह है कि संस्कृत वृत्तों में लिखी हुई उनकी कविताएँ पढ़ते समय यह ध्यान नहीं रहता कि इनका छन्द गणात्मक है। पर वह अतुकान्त कविता लिखने से बचते थे।

द्विवेदी जी मैथिलीशरण गुप्त से अवश्य कहते रहे होंगे कि अतुकान्त छन्द में कविता लिखो। 'वीराङ्गना' की भूमिका में गुप्त जी ने लिखा है कि वह (गुप्तजी) मात्रिक छन्द में अनुवाद करने की वात सोच रहे थे पर तभी 'सरस्वती' में 'यात्री' नाम की कविता प्रकाशित हुई जिसमें घनाक्षरी के आधे हिस्से का प्रयोग किया गया था। गुप्त जी ने लिखा है, वँगला का "मूलछन्द चौदह अक्षर का होता है। यदि हिन्दी में उसी का प्रयोग किया जाता तो ठीक न होता। दो-एक कवियों ने उसमें हिन्दी कविता लिखी भी पर वह प्रचलित न हो सका। वात यह है कि उच्चारण वैचित्र्य के कारण वँगला के ही अनुरूप उसका गठन है। ऐसी दशा में अनुवादक किसी मात्रिक छन्द का आश्रय लेने का विचार कर रहा था। इन्हीं दिनों 'सरस्वती' में 'यात्री' नाम की एक कविता प्रकाशित हुई। उसमें लेखक ने मिताक्षरी नाम देकर प्रसिद्ध घनाक्षरी छन्द के अर्द्धांश का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग किया था। घनाक्षरी या कँवित्त का प्रयोग हिन्दी कवियों ने जिस ढङ्ग से

वाहिक वर्णन उसमें शायद उतना अच्छा न मालूम हो। 'यात्री' नाम की कविता में जिस ढंग से उसका प्रयोग किया गया है वह धारावाहिक वर्णन के लिए अच्छा जान पड़ता है।"

'मेघनाद वध' काव्य यों आरम्भ होता है :

> सम्मुख समर में, अकाल में निहत हो,
> शूर शिरोरत्न वीरबाहु, यमपुर को
> गया जब, कह तब देवि, सुधाभाषिणी !
> किस वर वीर को निशाचर नरेन्द्र ने
> करके वरण निज सेनापति-पद पै
> भेजा रण में था उस राघव के वैरी ने ?

गुप्त जी के छन्द में हर पंक्ति की समाप्ति दीर्घ वर्ण से होती है। इससे छन्द का प्रवाह हर पंक्ति के बाद रुक जाता है और १०-५ पन्ने पढ़ने के बाद एकरसता से जी ऊबने लगता है। बँगला में छन्द की गति जहाँ धाराप्रवाह है, वहाँ हिन्दी में इस छन्द की गति रुद्ध-प्रवाह है। गुप्त जी की रचनाएँ देखने पर ही अच्छी तरह इस बात का ज्ञान होता है कि निराला ने अपने वर्णिक मुक्त छन्द में कितनी बड़ी सफलता प्राप्त की थी।

अतुकान्त कविता के लिए कौन सा छन्द चुना जाय, यह समस्या जयशंकर प्रसाद के सामने भी थी। 'महाराणा का महत्व' के प्रकाशकीय 'कथन' में कहा गया है, "लेखक ने भिन्न तुकान्त कविता के लिए कई तरह के छन्दों से काम लिया है। उनमें से २१ मात्रा का छन्द, जो अरिल्ल नाम से प्रसिद्ध था, वही विरति के हेरफेर से प्रचलित किया हुआ अधिकांश कविताओं में व्यवहृत है। इस छन्द में भिन्न तुकान्त में, सबसे पहली कविता, लेखक की भरत नाम की है। हर्ष की बात है कि इसी छन्द को भिन्न तुकान्त के लेखकों ने पसन्द किया है; और इसी छन्द में वे अपने विचार प्रकट करने लग गये हैं। ......मार्च १९१३ में लेखक ने करुणालय नाम का एक गीतिरूपक इन्दु में लिखा था। यह देखकर और भी हर्ष होता है कि पण्डित रूपनारायण पाण्डेय जैसे साहित्यिक ने हाल ही में तारा नामक गीतिरूपक का इसी छन्द में अनुवाद करके उक्त मत की पुष्टि की है।"

छायावादी कवियों के लिए यह प्रश्न महत्वपूर्ण था कि अतुकान्त कविता के लिए कौन सा छन्द उपयुक्त है और उसका चलन सबसे पहले किसने किया। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने 'हमारे साहित्य निर्म्माता' में, प्रसाद पर लिखते हुए, अतुकान्त छन्द के प्रसंग में पन्त का स्मरण किया है। 'ग्रन्थि' की भूमिका में पन्त ने लिखा था, "हिन्दी में रोला छन्द अन्त्यानुप्रास-हीन कविता के लिए विशेष उपयुक्त जान पड़ता है, उसकी साँसों में प्रशस्त जीवन तथा स्पन्दन मिलता है; उसके तुरही के समान स्वर से निर्जीव शब्द भी फड़क उठते हैं।"

सितम्बर १९२२ में पन्त ने 'उच्छ्वास' कविता लिखी। इसमें उन्होंने रोला

छन्द का प्रयोग किया,

> गरज, गगन के गान ! गरज गंभीर स्वरों में,
> भर अपना सन्देश उरों में, औ अधरों में;
> बरस धरा में, बरस सरित गिरि, सर, सागर में,
> हर मेरा सन्ताप, पाप जग का क्षण भर में।

यह रोला छन्द तो है पर अतुकान्त नहीं। यह स्थिति कुछ वैसी ही है जैसी मैथिलीशरण गुप्त की, जिन्होंने 'मेघनाद वध' की भूमिका में अतुकान्त छन्द रचने पर काफी जोर दिया और अन्त्यानुप्रास मिलाने की बड़ी निन्दा की पर कविता उसी पुराने ढर्रे पर की। उस भूमिका में गुप्त जी ने लिखा था, "सच तो यह है कि तुक एक कृत्रिमता है। जहाँ तक कानों का सम्बन्ध है, वह भले ही अच्छी मालूम हो; किन्तु हृदय हिला देने वाली वस्तु दूसरी ही होती है। जो अतुकान्त कविता को 'बेतुकी' कहकर उसकी हँसी उड़ाते हैं उन्हें याद रखना चाहिए कि वाल्मीकि, व्यास और कालिदास ने तुकबन्दी नहीं की। जब से शब्दालंकारों की ओर लोग झुक पड़े तब से कविता में कृत्रिमता और आडम्बर का समावेश हुआ।" इसे पढ़कर ऐसा लगता है कि गुप्त जी हिन्दी कविता को कृत्रिमता और आडम्बर से मुक्त करने ही वाले हैं और भविष्य में अतुकान्त कविता ही लिखेंगे। पर 'मेघनाद वध' की भूमिका में महावीरप्रसाद द्विवेदी के विचारों की प्रतिध्वनि है, गुप्त जी के अपने मन की बात उनकी पद्य-रचना से प्रकट होती है। इसी तरह पन्त जी ने 'ग्रन्थि' की भूमिका में अतुकान्त कविता के बारे में लिखा, "अतुकान्त का सौन्दर्य स्वरूप तब मेरे हृदय में प्रस्फुटित नहीं हो पाया था, अपने साहित्य में उन दिनों जैसा ढंग प्रचलित था, उसी के अनुरूप मैंने भी यह बेतुका लिबास पहना दिया। पर, हिन्दी में बड़ी ही मनोहर तथा परिपूर्ण, प्रासहीन सृष्टि हो सकती है।" यह मनोहर और परिपूर्ण सृष्टि 'पल्लव' या 'पल्लविनी' में देखने को नहीं मिली।

'पल्लव' के प्रकाशन से पहले 'मतवाला' में निराला की बहुत सी रचनाएँ मुक्त छन्द में छपी और उनसे जहाँ एक ओर निराला का विरोध हुआ, वहाँ दूसरी ओर बहुत से लोगों के मन में यह विश्वास भी जम गया कि कविता में युगान्तर मुक्त छन्द लिखने से ही होता है। 'पल्लव' की भूमिका में पन्त ने 'उच्छ्वास' को स्वच्छन्द छन्द की रचना माना। 'सम्मेलन पत्रिका' में "निगम" जी की प्रशंसा का उल्लेख करने के बाद उन्होंने कहा, "पर उस वामन ने, जो कि लोकप्रियता के रात दिन घटने बढ़ने वाले चाँद को पकड़ने के लिए बहुत छोटा था, कुछ ऐसी टाँगें फैला दीं कि आज, सौभाग्य अथवा दुर्भाग्यवश, हिन्दी में सर्वत्र 'स्वच्छन्द छन्द' ही की छटा दिखलाई पड़ती है।" इस कथन से 'महाराणा का महत्व' में दिए हुए प्रकाशक के 'कथन' की तुलना करनी चाहिए। प्रसाद ने अरिल्ल छन्द में अन्त्यानुप्रासहीन कविता लिखी और रूपनारायण पाण्डेय ने उसका अनुसरण किया, वैसी कविता लोकप्रिय हुई। इधर पन्त ने 'उच्छ्वास' कविता लिखी और उसके स्वच्छन्द छन्द की छटा अब सब जगह दिखाई देने लगी।

'उच्छ्वास' में अन्त्यानुप्रास का ध्यान तो रखा ही गया है, स्वच्छन्दता इतनी ही है कि कहीं रोला छन्द का व्यवहार किया गया है और कहीं उससे कम मात्राओं वाले

छन्दों का, यथा,

मन्द, विद्युत् सा हँसकर,
वज्र सा उर में धँसकर,

अथवा कहीं पंक्तियाँ छोटी-बड़ी कर दी गयीं हैं,

जरा है आदरणीय;
सुखद यौवन ! विलास उपवन रमणीय।

निराला ने वर्णिक मुक्त छन्द में जो कविताएँ लिखी थीं, उनकी गति पन्त जी को हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल न जान पड़ी। मात्रिक छन्दों में निराला ने जो छोटी-बड़ी पंक्तियों वाली कविताएँ लिखी थीं, उन्हें उन्होंने हिन्दी के स्वभाव के अधिक अनुकूल पाया।

निराला के लिए यह आवश्यक हुआ कि एक ओर अपने वर्णिक छन्द को हिन्दी के उच्चारण-संगीत के अनुकूल सिद्ध करें, दूसरी ओर वह पन्त से पहले न केवल वर्णिक मुक्त छन्द के वरन् मात्रिक मुक्त छन्द के भी स्रष्टा बनें। इसीलिए 'अधिवास' और 'जुही की कली', दोनों उनके लिए १९१६ की रचनाएँ हैं।

पर मुक्त छन्द से अधिक महत्वपूर्ण एक दूसरा प्रश्न सामने आ गया : वर्णप्रधान छन्द हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल हैं या नहीं ? हिन्दी में कवित्त छन्द को जो लोकप्रियता मिली, उसे सभी जानते हैं। दरअसल मात्रिक और वर्णिक छन्द दोनों ही हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल हैं। इन छन्दों के स्रोत बहुत पुराने हैं। रीतिवादियों के अलावा तुलसीदास जैसे भक्त कवि ने बहुत-से और अत्यन्त सुन्दर कवित्त लिखे हैं। 'कवितावली' में कवित्तों की प्रधानता है। इसके अलावा तुलसीदास ने 'गीतावली' और 'विनयपत्रिका' में वर्णिक छन्दों में गीत लिखे हैं। यह उनका साहसिक प्रयोग है क्योंकि उनसे पहले और बाद को मात्रिक छन्दों में ही गीत लिखे जाते रहे हैं। तुलसीदास के ये वर्णिक छन्द वाले गीत संस्कृत की तरह गणात्मक नहीं हैं वरन् बोलचाल के लहजे का ध्यान रखते हुए कवित्त की तरह मुक्त लय वाले हैं। गणात्मक छन्दों में प्रत्येक पंक्ति की लय एक-सी रहती है क्योंकि ह्रस्व दीर्घ वर्णों का स्थान निश्चित रहता है। बोलचाल में इस तरह गणात्मक बन्धनों में कसी हुई भाषा के दर्शन नहीं होते। इसीलिए हिन्दी के वर्णिक छन्दों की तुलना में संस्कृत के गणात्मक छन्द कम से कम हिन्दी के लिए कृत्रिम हैं और उनका चलन हिन्दी में नहीं हुआ। पर इसके विपरीत मुक्त लय वाले कवित्त का प्रसार गाँव से लेकर राजमहलों तक हुआ।

मैथिलीशरण गुप्त ने 'वीराङ्गना' की भूमिका में बँगला के चौदह अक्षरों वाले पयार छन्द को हिन्दी के लिए अनुपयुक्त माना था। प्रसाद के 'चित्राधार' में 'सन्ध्यातारा' इसी छन्द में लिखी गयी है :

सन्ध्या के गगन महँ सुन्दर वरन।
को हौ झलकत तुम अमल रतन ॥
तारा तुम तारा अति सुन्दर लखात।
तुम्हें देखिवे को नहि आनँद समात ॥

गुप्त जी ने अतुकान्त छन्द के लिए पंद्रह अक्षरों की पंक्ति चुनी किन्तु वह भी सहज प्रवाह के लिए उपयुक्त सिद्ध न हुई। निराला को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने अतुकान्त वर्णिक छन्द का यह रुद्ध प्रवाह तोड़कर अपने मुक्त छन्द को हिन्दी भाषण और वक्तृत्व कला के अनुरूप बनाया। मुक्त छन्द की विशेषता यह है कि वह "ध्वनि अथवा लय (rhythm) पर चलता है। जिस प्रकार जलौघ पहाड़ से निर्झर-नाद में उतरता, चढ़ाव में मन्द गति, उतार में क्षिप्रवेग धारण करता, आवश्यकतानुसार अपने किनारों को काटता-छाँटता, अपने लिए ऋजुकुंचित पथ बनाता हुआ आगे बढ़ता है, उसी प्रकार यह छन्द भी कल्पना तथा भावना के उत्थान-पतन, आवर्तन-विवर्तन के अनुरूप संकुचित प्रसारित होता सरल-तरल, ह्रस्व-दीर्घ गति बदलता रहता है।" ये शब्द पन्त जी के हैं। 'पल्लव' की भूमिका में वह स्वच्छन्द छन्द की विशेषताएँ बता रहे हैं। निराला के मुक्त छन्द का वर्णन करने के लिए ये शब्द बहुत ही उपयुक्त हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि अंग्रेजी में मिल्टन, और मिल्टन से अधिक शेक्सपियर, नपीतुली पंक्तियाँ कम, मुक्त छन्द ज्यादा, लिखते हैं। छपी हुई पंक्तियाँ देखने से लगता है कि पंक्ति में छन्द रचना के नियमों का ध्यान रखा गया है। किन्तु लय पर ध्यान दें तो विदित होगा कि पंक्तियाँ छोटी-बड़ी हैं यानी जहाँ लय के अनुसार रुकना पड़े, वहाँ आप समझें कि पंक्ति समाप्त हुई तो अंग्रेजी के ब्लैंक वर्स को फ्रीवर्स की तरह छापा जायगा। इसके अलावा लघु गुरु वर्णों का क्रम रखते हुए छन्द की जो लय निर्धारित है, उसका ध्यान न मिल्टन रखते हैं न शेक्सपियर। उनके छन्द की लय मुक्त है। इनका ब्लैंक वर्स दरअसल मुक्त लय वाला मुक्त छन्द है। जैसे हिन्दी के वर्णिक छन्द गणात्मक बन्धनों से मुक्त हैं, वैसे ही शेक्सपियर का ब्लैंक वर्स यूनानी भाषा की आयम्बिक पद-रचना के बन्धनों से मुक्त है। हिन्दी में जिस कवि की रचना अपनी मुक्त लय और मुक्त प्रवाह के कारण शेक्सपियर और मिल्टन के ब्लैंक वर्स के सर्वाधिक निकट है, वह निराला है।

निराला ने मुक्त छन्द के समर्थन में बहुत कुछ वैसी ही बातें कहीं जैसी 'पल्लव' की भूमिका में हैं। निराला ने अपने मुक्त छन्द के अलावा तुकान्त और बन्धन-युक्त छन्दों में भी काफी रचनाएँ कीं। एक दिलचस्प प्रयोग 'अनामिका' की 'नर्गिस' कविता है। 'वीराङ्गना' के अनुवाद से पहले 'यात्री' कविता में कवित्त छन्द का अर्द्धांश इस्तेमाल किया गया था किन्तु यह उत्तरांश था, पूर्वांश नहीं। उत्तरांश का नमूना गुप्त जी के अनुवाद में है, पूर्वांश का नमूना 'नर्गिस' में :

> चैत्र का है कृष्ण पक्ष, चन्द्र तृतीया का आज
> उग आया गगन में, ज्योत्स्ना तनु-शुभ्र-साज।
> नन्दन की अप्सरा धरा को विनिर्जन जान
> उतरी सभय करने को नैश गंगा-स्नान।

हिन्दी वर्ण वृत्त की पूर्ण गरिमा सोलह अक्षरों वाली पंक्ति में दिखाई देती है, चौदह या पन्द्रह अक्षरों वाली पंक्ति में नहीं। प्रसाद ने 'पेशोला की प्रतिध्वनि', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' और 'प्रलय की छाया' में वर्णिक मुक्त छन्द का प्रयोग

किया है। जिस अरिल्ल छन्द को उन्होंने अतुकान्त कविता के लिए उपयुक्त समझा था, उसे उन्होंने मुक्त छन्द का आधार नहीं बनाया। निराला की तरह उन्होंने कवित्त छन्द को उसका आधार बनाया। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने इन कविताओं के लिए 'हमारे साहित्य निर्म्माता' में लिखा था कि "वे निराला जी के अतुकान्त मुक्त छन्द के अनुसरण हैं। निराला और प्रसाद के अतुकान्त मुक्त छन्दों का प्रवाह इस प्रकार एक है, कि मानों वे एक ही आत्मा से निकले हुए दो उद्‌गार हों।" यह बात बहुत कुछ सही है और छायावाद के ज्येष्ठ कवि प्रसाद अपनी तीन लम्बी कविताओं में निराला का मुक्त छन्द अपनायें, यह उनके द्वारा निराला को बहुत बड़ा सम्मान देना था, जो लोग निराला के मुक्त छन्द को हिन्दी के उच्चारण-संगीत के विरुद्ध मानते थे, उन्हें प्रसाद ने अपने ढंग से उत्तर दिया था।

महावीरप्रसाद द्विवेदी बीसवीं सदी के आरम्भ से ही जिस तरह की अतुकान्त कविता के लिए निरन्तर प्रयत्न करते आये थे, उसका पूर्ण विकास निराला के मुक्त छन्द में हुआ। यह विकास देखकर उनका प्रसन्न होना अधिक स्वाभाविक था, न कि मुक्त छन्द में लिखी कविता देखकर उसे वापस कर देना। 'जुही की कली' उन्हें शृंगार रस के कारण भले नापसन्द होती पर उसके छन्द से वह क्यों असन्तुष्ट होते? दरअसल वह असन्तुष्ट नहीं हुए वरन् निराला की कविता 'पंचवटी प्रसंग' देखकर उन्होंने सम्मति दी थी, "हिन्दी वालों में ९० फीसदी इस छन्द को अच्छी तरह पढ़ भी न सकेंगे। पर चीज नई है। अगर इसका आदर हो तो आगे भी इसी छन्द में कुछ लिखिएगा। मुझे तो रचना ललित और भावपूर्ण जान पड़ती है।" महादेवप्रसाद सेठ ने 'अनामिका' की भूमिका में द्विवेदी जी की यह सम्मति उद्धृत की थी। उस समय, और बहुत दिनों बाद तक भी, निराला के मुक्त छन्द के पक्ष में इतना कहने को कोई तैयार न था। द्विवेदी जी को आशंका है कि लोग इसका विरोध करेंगे पर यदि छन्द का आदर हो तो निराला को उसमें आगे भी कुछ लिखना चाहिए। जहाँ तक स्वयं द्विवेदी जी का सम्बन्ध है, उन्हें रचना ललित और भावपूर्ण जान पड़ती है। महावीरप्रसाद द्विवेदी, और कुछ दिन बाद जयशंकर प्रसाद, ये दो उच्च श्रेणी के साहित्यकार थे जिन्होंने निराला के मुक्त छन्द का समर्थन किया था। बाकी उच्च से लेकर मध्य और निम्न श्रेणियों तक के साहित्यकार ज्यादातर उसके विरोध में ही उठ खड़े हुए थे। पर निराला ने यह कल्पना की कि द्विवेदी जी ने उनकी 'जुही की कली' वापस कर दी और "उन्होंने उसे वापस करते हुए पत्र में लिखा—आपके भाव अच्छे हैं, पर छन्द अच्छा नहीं, इस छन्द को बदल सकें, तो बदल दीजिए।" यानी द्विवेदी जी को 'जुही की कली' का शृंगार रस तो पसन्द था पर उसका मुक्त छन्द पसन्द न था यद्यपि 'पंचवटी प्रसंग' में इसी छन्द का प्रयोग देखकर वह निराला को लिख चुके थे, आगे भी इसी छन्द में कुछ लिखिएगा।

द्विवेदी जी ने मुक्त छन्द के प्रथम दर्शन 'पंचवटी प्रसंग' में किये, 'जुही की कली' में नहीं। निराला ने द्विवेदी जी को प्रथम पत्र २६ अगस्त १९२० को लिखा, इससे पहले नहीं। द्विवेदी जी को उन्होंने अपनी जो पहली रचना प्रकाशन के लिये भेजी, वह कविता नहीं, 'बंग भाषा का उच्चारण' शीर्षक गद्य लेख था जो 'सरस्वती' में प्रकाशित

भी हुआ। तब निराला ने यह कैसे लिखा कि द्विवेदी जी ने उनकी कविता वापस कर दी थी, वह भी छन्द के कारण ?

एक अन्य कवि की पद्य-रचनाएँ द्विवेदी जी ने अवश्य अस्वीकृत की थीं। एक कविता 'विनय' (माँ ! मेरे जीवन की हार) और 'अंधकार के प्रति' (अब न अगोचर रहो सुजान !)। किनारे पेन्सिल से द्विवेदी जी के हाथ का लिखा हुआ है Rjd (रिजेक्टेड) और नीचे तारीख है २२-१-२०। इससे पहले 'सरस्वती' की दिसम्बर १९१९ की संख्या में पन्त की कविता 'स्वप्न' छप चुकी थी। अवश्य ही इसे द्विवेदी जी ने नहीं, 'सरस्वती' के अन्य सम्पादक देवीप्रसाद शुक्ल ने प्रकाशित किया होगा। शान्ति जोशी ने इस प्रसंग में ठीक लिखा है, "स्वप्न कविता श्री देवीप्रसाद शुक्ल जी को भी बहुत अच्छी लगी जो उस समय सरस्वती के सम्पादक तथा हिन्दू बोर्डिंग हाऊस के वार्डन थे। उन्होंने अगले महीने ही, सम्भवतः दिसम्बर, १९ की सरस्वती में, जो तब हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका थी और जिसमें पन्त की एक बार रचना अस्वीकृत हो चुकी थी, उसे प्रकाशित कर दिया।" (सुमित्रानन्दन पन्त, पृष्ठ १४५)। पर इससे पहले 'गिरजे का घंटा' कविता के बारे में जो लिखा है कि मैथिलीशरण गुप्त ने उसे "सहज सौजन्यवश प्रशंसात्मक शब्द लिखकर उनके पास लौटा दिया। पन्त ने प्रोत्साहित होकर वह रचना सरस्वती में प्रकाशनार्थ भेज दी। किन्तु सरस्वती के सम्पादक श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी जी ने गुप्त जी के हस्ताक्षर के नीचे 'अस्वीकृत, म० प्र० द्वि०' लिखकर रचना लौटा दी। यह सम्भवतः उनकी प्रथम और अन्तिम रचना थी जो किसी सम्पादक ने अस्वीकृत की थी।" (उप०, पृष्ठ ९४)। यहाँ आखिरी बात सही नहीं है। जनवरी १९२० में द्विवेदी जी ने पन्त जी की दो कविताएँ और अस्वीकृत कीं। वास्तव में द्विवेदी जी से टक्कर पन्त की हुई, निराला की नहीं। किन्तु निराला ने पन्त से जो स्नेह-सम्बन्ध कायम कर रखा था, जिसने उनकी कल्पना में तादात्म्य का रूप ले लिया था, इसे आप स्मरण करें तो यह असम्भव न लगेगा कि जो टक्कर पन्त से हुई, उसे निराला ने अपने ऊपर ओढ़ लिया। तादात्म्य-भाव में वह बहुत गहरे डूबे हुए न होते तो द्विवेदी जी के जीवन काल में वैसी बातें न लिखते जैसी 'पन्त जी और पल्लव' में उन्होंने लिखी थीं।

इस तादात्म्य भाव में भिन्नता और स्पर्धा का भाव तिरोहित न हो गया था। निराला का स्नेह-सम्बन्ध कुछ विशिष्टाद्वैत जैसा था, विशुद्ध अद्वैत जैसा नहीं। पन्त की 'स्वप्न' कविता 'सरस्वती' में १९१९ में प्रकाशित हुई थी। इसलिए 'बङ्ग भाषा का उच्चारण' लेख भी 'सरस्वती' में १९१९ में प्रकाशित हुआ यद्यपि उसे भेजा उन्होंने अगस्त १९२० में था। 'सरस्वती' के अङ्क उठाकर कोई भी देख सकता था कि वह १९१९ में न छपा था। पर गाथा रचते समय उन्हें इन छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देने की फुरसत न रहती थी।

प्रतिभाशाली कवि नये ढंग की कविताएँ ही नहीं लिखते, मुक्त छन्द द्वारा साहित्य में युगान्तर ही उपस्थित नहीं करते, वे यह क्रिया अपनी किशोर-अवस्था में ही प्रारम्भ कर देते हैं। महत्वपूर्ण प्रश्न यही नहीं था कि मुक्त छन्द लिखना पहले किसने

शुरू किया वरन् यह भी था कि पन्त या निराला जब छायावादी कविता लिखने लगे, तब उनकी उम्र क्या थी। 'पल्लव' में कविताओं के नीचे उनका रचना काल दिया है। इनमें सबसे पहले की रचनाएँ जनवरी सन् १९१८ की हैं। साबित हुआ कि पन्त जब सत्रह साल के थे, तब वह छायावादी कविताएँ लिखने लगे थे। अत: जब निराला ने कलकत्ते के नटों का अस्वाभाविक उच्चारण सुनकर 'जुही की कली' लिखी, "उस समय मैं १६-१७ से अधिक न था।" इसके अलावा 'मतवाला' में उन्होंने पन्त पर जो लेख लिखा था, उसमें "पन्त जी की उम्र इस समय बाइस साल की है। आपका जन्म अलमोड़ा प्रान्त में, १९०२ ई० में, हुआ था।" इस हिसाब-किताब में उन्होंने पन्त जी की उम्र दो साल कम कर दी थी। १९१८ में पन्त १६ साल के ही हुए। उसी हिसाब से उन्होंने रामनरेश त्रिपाठी को सूचित किया कि उन्होंने (निराला ने) कविताएँ लिखना संवत् १९७२ से शुरू किया यानी जब वह सोलह-सत्रह साल के थे।

यहाँ द्विवेदी जी के सम्बन्ध में इतना कह देना और उचित होगा कि उन्होंने पन्त की ही नहीं, मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ भी अस्वीकृत की थीं। गुप्त जी ने द्विवेदी जी पर अपने निबन्ध में अपनी कविताओं के अनेक बार अस्वीकृत किए जाने की बात लिखी है। द्विवेदी जी का यह व्यवहार उन्हें बुरा लगा और उन्होंने उन्हें रोषपूर्ण पत्र भी लिखे। उनकी 'क्रोधाष्टक' रचना पढ़कर द्विवेदी जी ने उन्हें लिखा, "हम लोग सिद्ध कवि नहीं। बहुत परिश्रम और विचारपूर्वक लिखने से ही हमारे पद्य पढ़ने योग्य बन पाते हैं। आप दो बातों में से एक भी नहीं करना चाहते। कुछ भी लिखकर उसे छपा देना ही आपका उद्देश्य जान पड़ता है। आपने क्रोधाष्टक थोड़े ही समय में लिखा होगा परन्तु इसे ठीक करने में हमारे चार घंटे लग गये···इसे हम अवश्य सरस्वती में छापेंगे, परन्तु आगे से आप सरस्वती के लिए लिखना चाहें तो इधर-उधर अपनी कविताएँ छपाने का विचार छोड़ दीजिए। जिस कविता को हम चाहें उसे छापेंगे। जिसे न चाहें उसे न कहीं दूसरी जगह छपाइये, न किसी को दिखाइये। ताले में बन्द करके रखिये।" (द्विवेदी पत्रावली, पृष्ठ ४९)। द्विवेदी जी से पन्त की टक्कर कविताएँ न छापने से शुरू हुई। फिर 'सरस्वती' में द्विवेदी जी ने 'सुकवि किंकर' के नाम से छायावादियों की जो आलोचना की, उसमें एक लक्ष्य पन्त थे। पन्त ने 'वीणा' की भूमिका में उसका उत्तर दिया। निराला ने 'पन्त जी और पल्लव' में महावीरप्रसाद द्विवेदी पर व्यंग्य किया, "खड़ी बोली की प्रथम कविता की स्वर्ण लंका को छायावाद के मलिनत्व के स्पर्श से बचाने के लिए सरस्वती के सुकवि किंकर महाशय ने छायावाद के कवियों की लांगूलों में आग लगा दी है।" द्विवेदी जी से निराला की सीधी टक्कर न हुई थी। जो कुछ असन्तोष था वह पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की नीति के कारण। वह पन्त की कविताएँ छापते थे, निराला की नहीं पर इसके लिए द्विवेदी जी उत्तरदायी न थे। उन्हें पन्त की कविताएं पसन्द न थीं जैसाकि सुकवि किंकर के लेख से स्पष्ट है। जहाँ तक निराला के मुक्त छन्द का सम्बन्ध है, वह द्विवेदी जी को तो पसन्द था ही, उनके विशिष्ट कवि मैथिलीशरण गुप्त को भी पसन्द था और इसका उल्लेख द्विवेदी जी को लिखे हुए निराला के २७-१०-२३ के पत्र में है, और 'पन्त जी और पल्लव' लेख में है।

छायावाद का प्रवर्तन किसने किया, अतुकान्त छन्द पहले किसने लिखा, वर्णिक और मात्रिक छन्दों की सृष्टि किसने की, छायावादी कवियों में सबसे कम उम्र में सबसे बढ़िया कविताएँ किसने लिखीं—इन सारे प्रश्नों का समाधान एक ही बात से हो जाता था : निराला ने 'जुही की कली' और 'अधिवास' कविताएँ संवत् १९७२ (या सन् १९१६) में लिखीं जब वह १६-१७ साल से ज्यादा के न थे। पन्त के विकास में बाधक हुए महावीरप्रसाद द्विवेदी, फिर निराला के विकास में वह बाधक क्यों न होते ?

४. निराला के पत्र और जानकीवल्लभ शास्त्री

यहाँ जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे हुए निराला के पत्रों की चर्चा प्रासंगिक होगी। 'निराला के पत्र' नाम से ये राजकमल द्वारा प्रकाशित हैं। आरम्भ में लम्बी भूमिका है, पत्रों के साथ विस्तृत पाद-टिप्पणियाँ हैं।

ये पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। ये जुलाई सन् ३५ में शुरू होते हैं और जनवरी सन् ५७ में खत्म होते हैं। इनमें केवल दो पत्र सरोज की मृत्यु से पहले लिखे गये हैं, शेष उसके बाद। ९८ पत्र सन् ३५ से सन् ४६ के बीच लिखे गये हैं, शेष ७ पत्र सन् ४७ से सन् ५७ के बीच। (९८ संख्या वाले जिस पत्र पर २७-७-४७ की तारीख है, वहाँ सन् ४६ होना चाहिए। "मेरे साले मृत्युशय्या पर हैं"—यह उल्लेख सन् ४७ का नहीं है क्योंकि रामधनी द्विवेदी की मृत्यु सन् ४६ में हुई थी।) सन् ३५ से ४६ तक की अवधि छायावादी काव्यधारा की क्षीणता और स्वयं प्रमुख छायावादी कवियों द्वारा नयी प्रगतिवादी धारा के अपनाये जाने की अवधि है। निराला के जीवन में—इसी अवधि में—सरोज की मृत्यु, प्रेमचन्द, प्रसाद, नवजादिकलाल श्रीवास्तव की मृत्यु, उनके साले रामधनी द्विवेदी और पुत्रवधू फूलदुलारी की मृत्यु होती है और इसी में वह स्वयं गम्भीर रूप से बीमार पड़ते हैं जब, उनके अनुसार, उनका वजन करीब एक मन कम हो गया, और दूसरे महायुद्ध के दौरान उनकी मानसिक स्थिति बहुत खराब हो गई। ऐसी अवधि में निराला किसी को लगभग सौ पत्र लिखें तो वे निराला के जीवन चरित का अध्ययन करने वाले के लिए असाधारण महत्व के तो होंगे ही, जिसे वे लिखे गये हैं, निराला के जीवन में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका भी असंदिग्ध होगी। जानकीवल्लभ शास्त्री ने बिलकुल ठीक लिखा है, "इन पत्रों में मुंदा-मुंदा ऐसा क्या कुछ नहीं खुलता !" ('निराला के पत्र,' पृ० ६६)। इसके अलावा "इन पत्रों के होने-न-होने से निराला का कुछ नहीं आता-जाता, अलबत्ता ये न हों तो मेरी प्रत्यभिज्ञा न हो; कोई न जाने कि किसी परमशिव ने कभी स्वेच्छा से अपने पट पर मेरा चित्र आंका था।" (पृ० ६७)।

यह चित्र किस तरह का है, निराला के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहने वाले जानकीवल्लभ शास्त्री के व्यक्तित्व की विशेषताएँ कौन-सी हैं, निराला के पत्र पढ़ने वाले के लिए ऐसी बातों की जानकारी आवश्यक है।

जानकीवल्लभ शास्त्री की माता का देहान्त उनके बचपन में हो गया था। पिता ही माता, बन्धु और गुरु सब कुछ हुए। इनमें गुरुवाला रूप भयंकर था। जानकीवल्लभ शास्त्री ने अपनी काव्य-कल्पना की भूमि से अलग, यथार्थवाद की ज़मीन पर, 'पितृदेव'

का संस्मरण लिखा है। उसमें पिता के गुरु-रूप की उग्रता इस प्रकार वर्णित है :

"उन्होंने मुझे इतना पीटा है; इतनी वार पीटा है और इतनी उग्र निर्दयता से पीटा है कि वह, अधिक से अधिक, मेरे लिए मान्य और श्रद्धेय ही वने रह गए हैं; लाख-लाख चेष्टाओं के वाद भी मैं उन्हें प्राणों का प्यार न अर्पित कर सका।···

"कोई भी सभ्य व्यक्ति जैसी गालियाँ जवान पर लाते हमेशा हिचकेगा, उनका प्रत्येक वाक्य में सन्निवेश किए विना वह भरसक मुझसे वार्तालाप भी नहीं करते···

"गालियाँ सुनते-सुनते मैं वहुत छोटी उमर में ही इस विद्या में पारंगत हो गया था"। ('स्मृति के वातायन', पृ० १४१)

दुर्भाग्य से पिता के अलावा स्कूल के मास्टर भी उन्हें वहुत मारते थे। इसका कारण यह था कि "स्कूल में मैं सवसे भोंदू विद्यार्थी समझा जाता था। मेरा नाम कक्षा में अंतिम रहता था" (उप०, पृ० १३९), और "सात-आठ साल तक मैं वुरी तरह तुतलाता था। 'क' को 'त' कहता था और संयुक्त वर्णों के उच्चारण के समय हकलाने और थरथर कांपने लगता था।" (उप०)। इसलिए "खजूर की छड़ी से पिटना रोज़-मर्रे में दाखिल हो गया था; फिर कान उमेठने और चांटे जड़ने की तो वात ही क्या।··· एक दिन मास्टर साहव ने मुझे इतना पीटा कि मेरी पीठ फट गई; लहू के धव्वे कुर्ते पर उग आए।" (उप०)।

जिस वच्चे को घर और स्कूल में इस तरह मार खानी पड़े, उसकी व्यथा की कल्पना की जा सकती है। फिर मातृहीन वालक। ऐसे वालक को वाल्यकाल से विद्रोही होना चाहिए, दूसरों के दुख से उसे गहरी सहानुभूति होनी चाहिए।

इस तरह की मारपीट वाली शिक्षा का एक परिणाम यह होता है कि वच्चे को जो आता है, वह भी भूल जाता है, उसका सहज वौद्धिक विकास कुंठित हो जाता है। अधिकतर वह रट्टू तोता वनकर रह जाता है। फिर जानकीवल्लभ की संस्कृत शिक्षा का आरम्भ 'लघु सिद्धान्त कौमुदी' और 'अमरकोष' से हुआ जहाँ आदि से अन्त तक रटाई ही रटाई थी। इस शिक्षा के प्रति विरोधभाव उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

जानकीवल्लभ अंग्रेजी पढ़ना चाहते थे, दो साल तक इसके लिए उन्होंने प्रयत्न भी किया, "नान मेट्रिक वावुओं के दरवाजे-दरवाज़े मारा फिरा" (उप०, पृ० १४०), किन्तु सफलता न मिली। "गाँव के दो-एक रईसों ने पिता जी की गरीवी पर तरस खाकर मुझे अंग्रेजी न पढ़ाने की सलाह दी।" (उप०)। पिता ने इसी "दुष्ट सम्मति" के अनुसार काम किया और इस क्रम में जो मार खानी पड़ी और अंग्रेजी जानने वाले भद्र समाज में जो दवकर रहना पड़ा, उससे शिक्षा पद्धति ही नहीं, जिस भाषा की शिक्षा दी जा रही थी, उससे—संस्कृत से—विरक्त होना भी स्वाभाविक था। जव संस्कृत के विद्वान् वन जाने पर "अपने मानस को सर्वतो भावेन नीरस होने से किंचित् वचा सका हूँ, मुझे इसके विरुद्ध वाग्युद्ध करना नहीं भाता", पर वह यह कहे विना नहीं रह सकते कि "मुँह वन्द कर नाक से सांस लेते हुए मुझे वड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी है" (उप०)। इस कठिन शिक्षा का भौतिक पक्ष यह है : "आज के, विदेशी ढंग से सजे देशी वाजार में संस्कृत-विद्या का सौदा वहुत महँगा पड़ा है।" (उप०)

संस्कृत जानकीवल्लभ के गले पड़ गई थी। स्वेच्छा से उन्होंने उसका अध्ययन न किया था। इसका एक कारण उनकी समझ में आर्थिक विपन्नता और पिता का देहाती होना था। यदि उनके पिता ने "नागरिक जीवन बिताया होता तो आज उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति उच्चतर होती" (उप०)। इस तरह जानकीवल्लभ के मन में, वहुत गहरे उतरकर, अपनी सामाजिक स्थिति को लेकर हीन भावना उत्पन्न हुई।

उनके विकास में गांव की एक विधवा की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। वह इन्हें अपने घर ले जाती और "रूखे-सूखे वदन को चिकना-चुपड़ा वना मुझे चुचकार कर चूमती और अपने गोरे-गोरे गालों को आस्फालित कर मुझे भी चूमने को कहती" (उप०, पृ० १२६); "वह गोवर से लीपी हुई जमीन पर ताड़ की चटाई डाल अस्तव्यस्त सोई हुई थी। अचानक चौंक कर जगी तो मुझे झपट कर उठा लिया, और माथे का पसीना पोंछ तावड़-तोड़ दुलारने लगी।" (उप०, पृ० १२६)। "फिर उसने मेरे दांतों के वीच अपनी उंगली उलझा, होठों से गाल गुदगुदा कर कहा— 'अव एक वात मैं भी पूछूं?' उत्तर देने की तत्परता सँजोए बिना ही मैंने अपनी नयन-तारिका में उसका सुखद मुख प्रतिविंवित हो जाने दिया। उसने पूछा—'मेरे अलावा तुम्हें और कोई प्यार करता है क्या?' " (उप०, पृ० १३२)

इस सुखद अनुभूति में एक वाधा थी। लिखा है, "किसी दुर्वल की वधू को भाभी कह कर कृत्रिम सन्तोष का अनुभव कर सकता था—पर मां की समवयस्क उस भाभी का जिस मृत-वत्स पिता ने गला घोंट दिया था, उसकी क्रूर कापुरुषता किसी भी संभाव्य भाभी में मुझे अव तक दृष्टिगोचर होती है। नहीं-नहीं, मुझे उस मातृत्व-महिमा को भाभी मानने के लिए विवश न करे कोई।" (उप०, पृ० १२८)।

जानकीवल्लभ समझने लगे थे कि "उसके उतने गोरे गठीले वदन पर मैला-फटा कपड़ा कुछ जँचता न था; उतने लंवे वाल खुले, धूल-भरे या चीथड़ से वँधे रहने पर खूव खुलते न थे" (उप०, पृ० १२८।) जितना सुख, पिता की मार खाते रहने पर भी, उन्हें इन दिनों मिला, उतना शायद आगे कभी नहीं मिला। विवाह वचपन में हो गया था; "मैं वारह वर्ष का था, वह चौदह-पन्द्रह की। व्याह के वाद वह अट्ठारह-उन्नीस वर्ष जीवित रहीं···अट्ठारह-उन्नीस वर्षों में हम अट्ठारह-उन्नीस दिन भी साथ न रहे।" ('निराला के पत्र', पृ० २५५)। इनके देहान्त के एक वर्ष वाद जानकीवल्लभ का दूसरा व्याह हुआ। पर "सन् '२८ में वाल-विवाह और सन् '४८ में वृद्ध विवाह! मेरे अनव्याहे मन को दो-दो वेमेल व्याहों से ताल-मेल वैठाना पड़ा।" (उप०, पृ० २५९)।

सन् २८ में जव व्याह हुआ तव उनकी पत्नी उनसे दो-तीन साल ही वड़ी थीं; उनके साथ न रह पाये, वह अलग वात है। सन् ४८ में वह ३२ साल के थे। इस उम्र का आदमी वृद्ध तो न कहा जायगा। ऐसा लगता है कि गांव की उस विधवा के संपर्क से उन्हें "प्रगाढ़-प्रगल्भ" हो जानेवाली, "उत्कट-उन्मद", उसकी जिस "अतृप्त वात्सल्य-वासना" की अनुभूति हुई थी, उसकी आवृत्ति की आकांक्षा उनके मन में वरावर वनी रही किन्तु इसकी आवृत्ति कराना किसी सामान्य स्त्री के लिये संभव न

था। इसीलिये उसके द्वारा चूमे जाने की याद, उसके गोरे गालों को चूमने के निमंत्रण की याद—"उस समय की वह अतिक्षीण स्मृति आज कितनी तीव्र और तीक्ष्ण लगती है !" (उप०, पृ० १२६)।

एक ओर जीवन की अतृप्त यौन आकांक्षाएँ, दूसरी ओर हीन सामाजिक स्थिति—इन सब की पूर्ति का एक ही साधन था संस्कृत की शिक्षा। भले ही यह शिक्षा नापसन्द हो, पर अपने जीवन को सार्थक सिद्ध करने का और कोई माध्यम न था। जानकीवल्लभ शास्त्री रटने की कला में प्रवीण थे। जिस पद्धति से अन्य छात्रों को विद्या पढ़ाई गई थी, उसी से इन्हें भी पढ़ाई गई थी पर इन्हें अधिक ताड़ना दी गई थी, उस पद्धति के अनुरूप रटन्त-अभ्यास अधिक कराया गया था। इसका सुफल उन्हें प्राप्त हुआ।

"सन् '३४ में, मैं 'साहित्याचार्य्य' हो चुका था। बिहार और उड़ीसा भर में सर्वप्रथम आया था। स्वर्णपदक से समादृत भी हुआ था।

"सन् ३५ में पूर्ववङ्ग सारस्वत समाज, ढाका से 'साहित्य रत्न' की उपाधि प्राप्त की थी। पुराने रेकार्ड तोड़कर सर्वोत्तमता का एक नया रेकार्ड स्थापित किया था। प्रशस्ति-समेत स्वर्णपदक मिला था। केन्द्राधीक्षक के निर्देश से मैंने वङ्गाक्षरों में ही प्रश्नों के उत्तर लिखे थे।

"और, काशी विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में शास्त्री होकर शास्त्राचार्य्य की तैयारी कर रहा था।" ('निराला के पत्र', पृ० २८)।

और भी—

"वेदान्ताचार्य्य की परीक्षा में मैं सूबे भर में अव्वल आया था। दो स्वर्णपदक मिले थे—एक वेदान्त में प्रथम श्रेणी में प्रथम होने के कारण, दूसरा उस वर्ष के सभी विषयों के परीक्षार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण।" (उप०, पृ० १८७)

ऐसी सफलता पर किसी भी छात्र को गर्व हो सकता था, फिर उस छात्र को तो गर्व होना ही चाहिये जिसने इतनी मार खाकर संस्कृत पढ़ी हो। पर संस्कृत-शिक्षा में यह सारी सफलता जानकीवल्लभ के मन से यह हीन भावना न निकाल पाई कि वह अंग्रेज़ी न पढ़ पाये, और समाज में मान-सम्मान संस्कृत के माध्यम से नहीं मिलता। उन्होंने अंग्रेज़ी पढ़ना फिर शुरू किया किन्तु अब तक संस्कृत की शिक्षा-पद्धति में उनकी बुद्धि ऐसी ढल चुकी थी कि वह हर भाषा रट कर सीखते थे—यहां तक कि उस भाषा की कविता भी घोट डालते थे। " 'चयनिका' [रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चुनी हुई कविताओं का संग्रह] की भाँति 'गोल्डेन ट्रेजरी' भी घोंट डाली थी"। (उप०, पृ० २८)

इस तरह कविताएं रटने का एक परिणाम यह होता है कि रटनेवाला विद्वान् कविताओं के उद्धरण ज्यादा देता है, उन्हें समझता कम है। इसके अलावा अंग्रेज़ी की पढ़ाई न कर पाने पर अंग्रेजी कविता के उद्धरणों द्वारा अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का लोभ ऐसे विद्वान संवरण नहीं कर पाते। 'निराला के पत्र' में संस्कृत उद्धरणों की अपेक्षा अंग्रेज़ी के उद्धरण अधिक हैं, इसका यही कारण है।

ऐसा विद्वान् यदि कवि भी हुआ, तो वह दूसरों की शब्दावली, भाव और विचार से सहज ही अपनी काव्यकला सँवार सकता है। जानकीवल्लभ शास्त्री ने संस्कृत

में कविताएँ लिखीं और इनमें भी उन्हें वैसी ही सफलता मिली जैसी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते समय मिली थी।

" 'सुप्रभातम्' में प्रकाशित मेरी एक कविता अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठता के लिए स्वर्ण-पदक प्राप्त मेरे···इस श्लोक के समान ही वहुत दिनों तक चर्चा में रही थी।" (उप०, पृ० २५)

संस्कृत के अलावा उन्होंने हिन्दी में भी कविताएं लिखी थीं (उप०, पृ० २१), "हिन्दी-संस्कृत की पत्र-पत्रिकाओं में मेरी कुछ रचनाएं छप चुकी थीं" (उप०,पृ० २२)।

निराला उन्हें हिन्दी में न लाए थे। हिन्दी में वह पहले से ही थे, केवल हिन्दी काव्य क्षेत्र में प्रसिद्धि पाना उतना सरल न था जितना संस्कृत के आधुनिक सीमित क्षेत्र में। दरअसल वह हिन्दी ही नहीं, उर्दू में भी कविताएँ लिखते थे, और इनके अलावा बँगला और अंग्रेजी में भी प्रयास किया था। सफलता उन्हें संस्कृत काव्य-क्षेत्र में ही मिलती दिखाई दे रही थी। उन्होंने संस्कृत कविताओं का संग्रह 'काकली' नाम से प्रकाशित किया। इस पर उन्हें संस्कृत के वड़े-वड़े पण्डितों की सम्मतियाँ प्राप्त हुईं। संस्कृत और बँगला की पत्रिकाओं में समीक्षाएँ निकलीं। उन्होंने इसकी प्रतियाँ हिन्दी पत्रिकाओं को भी भेजीं। " 'सरस्वती' और 'विशाल भारत' ने भी ऊँचे शब्दों में आशंसित किया; किन्तु 'सुधा' मौन रही।" (उप०, पृष्ठ २८)

जुलाई १९३३ की 'सुधा' में निराला की एक सम्पादकीय टिप्पणी छपी थी—'हिन्दी में आलोचना'। यह टिप्पणी जानकीवल्लभ शास्त्री को पसन्द नहीं आई। "मैंने तिलमिलाकर उसका प्रतिवाद लिख भेजा था। निराला ने पहली वार उस दर्प-डँसे लेख में मेरा अनछपा नाम देखा होगा। टिप्पणी उन्हीं की थी, मालूम हाने पर जैसे मेरी विद्या की किश्ती ढलान पर आकर टेढ़ी हो गई; तर्कों के झाईदार झाग के गिर्द रुक गई।" ('स्मृति के वातायन', पृष्ठ १४)। इस उल्लेख से ऐसा लगता है कि टिप्पणी पढ़ने पर जानकीवल्लभ शास्त्री को यह अनुमान न हुआ था कि उसके लेखक निराला हैं। किन्तु 'निराला के पत्र' में वह निश्चयपूर्वक लिखते हैं, "शैली से मैंने जिसे निराला-लिखित समझा था, वर्षों वाद मालूम हुआ, वह सचमुच उन्हीं की लिखी हुई थी।" (उप०, पृष्ठ २३-२४)

उस टिप्पणी को पढ़ते ही उन्होंने निराला-लिखित समझा हो, चाहे वाद में जाना हो, मुख्य प्रश्न यह है कि वह उससे तिलमिला क्यों उठे। 'स्मृति के वातायन' में इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं वताया गया। 'निराला के पत्र' में यह कारण वताया गया है कि इसमें जहाँ कालिदास के एक श्लोक के कलापक्ष की वड़ाई की गई थी, वहाँ "संस्कृत के वड़े-वड़े पण्डितों की आलोचना शक्ति की कमी पर व्यंग्य भी किया गया था। मैं तव इस चुनौती के लायक हर्गिज़ न था, मगर मुझसे जवाव दिए वगैर न रहा गया।" (उप०, पृष्ठ २४)।

'सुधा' वाली टिप्पणी में संस्कृत पण्डितों पर व्यंग्य नहीं है। स्वयं जानकी-वल्लभ उसी पृष्ठ पर आगे कहते हैं, "यद्यपि निराला ने संस्कृत के वड़े-वड़े पण्डितों की सुस्पष्ट चर्चा नहीं की थी," फिर भी जानकीवल्लभ ने वड़े-वड़े पण्डितों का अर्थ

संस्कृत के बड़े-बड़ पण्डित ही लगाया ।

निराला और जानकीवल्लभ शास्त्री के सम्बन्धों को समझने के लिए इस टिप्पणी पर कुछ ठहर कर ध्यान देना आवश्यक है। इसका शीर्षक है—'हिन्दी में आलोचना'। निराला हिन्दी के उन आलोचकों की नुक्ताचीनी करते हैं जो रीतिवाद के समर्थक हैं और छायावाद के विरोधी हैं। लिखा है, "केवल रस, अलंकार और नायिका भेद की सीढ़ियों से चढ़ना-उतरना काव्यज्ञान का प्रकृष्ट परिचय नहीं।" टिप्पणी का मूल सूत्र यह वाक्य है। कोई भी लेखक यदि छायावाद के रीति-विरोधी पक्ष को समझता, तो अवश्य इस टिप्पणी का स्वागत करता। बहुत ही स्पष्ट शब्दों में समकालीन हिन्दी आलोचना के बारे में लिखा है, "पर हिन्दी का आलोचनात्मक वर्तमान साहित्य देखकर किताब फाड़कर फेंक देने की तबियत होती है, वह मानवीय मन से इतनी दूर है, इतना स्थूल, इतना जड़ है।" कोई कितना भी संस्कृत पण्डितों से इस टिप्पणी का सम्बन्ध जोड़े, इसमें जरा भी संशय नहीं कि निराला का आक्रोश समकालीन हिन्दी आलोचना पर है, छायावाद के विरोधी रस-अलंकार के पण्डितों पर है, कालिदास के व्याख्याकार संस्कृत-पण्डितों पर नहीं।

जानकीवल्लभ शास्त्री छायावाद का रीतिविरोधी पक्ष न समझ रहे थे; वह रस-अलंकार के पण्डितों—आधुनिक साहित्य के रीतिवादी विरोधियों—के समर्थन में मैदान में आए थे।

इस टिप्पणी में कालिदास का उल्लेख इस संदर्भ में है कि कविता भावोद्गार नहीं है, उसमें बुद्धितत्व का महत्वपूर्ण योग होता है। छायावादी कवियों में यह बात सबसे पहले, और इतने स्पष्ट रूप में, निराला ने कही थी। रोमान्टिक कविता के विरोधी टी० ऐस्० इलियट ने बुद्धि-तत्व पर जोर देते हुए इससे मिलती-जुलती बात कुछ दिन बाद कही थी। शास्त्री जी इलियट के उद्धरण बहुत देते हैं। उन्हें इलियट की इस स्थापना से परिचित होना चाहिए था। मान लीजिए, न परिचित हो सके, काव्य में बुद्धि-तत्व पर जोर देने का समर्थन तो करना चाहिए था। निराला का ऐतिहासिक वाक्य यह है, "हृदय का महत्व लेकर निकलने वाली कविता भी यदि विचार और शृंखला से सम्बद्ध नहीं, तो शैशव संलाप की तरह भावोच्छ्वास मात्र है, उससे साहित्य को कोई बड़ी प्राप्ति नहीं हो सकती।"

यह टिप्पणी १९३३ में लिखी गयी थी। निराला न केवल छायावाद का रीति-विरोधी प्रगतिशील पक्ष पहचानते हैं, वरन् छायावाद का कल्पनाविलासी भावुक पक्ष भी पहचानते हैं, और उसकी सीमा पार करके ऐसी कविता रचने पर जोर दे रहे हैं जिसमें बुद्धि पक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण हो। यह सब जानकीवल्लभ शास्त्री की समझ से बाहर की चीज़ें थीं।

निराला ने जो कविताएँ छायावाद से भिन्न दिशा में लिखीं, उनसे सहानुभूति होना दरकिनार, अभी उन्हें निराला की छायावादी रचनाएँ भी पसन्द नहीं थीं। लिखा है, "बँगला का ऐसा नशा चढ़ा था कि दूर-दूर से खड़ी बोली की ज़मीन उजाड़ और ऊबड़-खाबड़ नज़र आती थी। जनवरी ३१ की सुधा के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित निराला

का 'पद' (नर जीवन के स्वार्थ सकल) 'महाजन पदावली' की कौन कहै, 'भानु सिंहेर पदावली' के मुकावले भी मुझे गद्यात्मक लगता था।" ('निराला के पत्र,' पृष्ठ ५२)। 'सुधा' की टिप्पणी से अप्रसन्न होने का मुख्य कारण यह था। न उन्हें निराला की कविताएँ पसन्द थीं, न सामान्यतः आधुनिक हिन्दी की कविताएं, न इनके समर्थन में लिखी हुई आलोचनाएँ।

उन्होंने अपनी संस्कृत कविताओं की पुस्तिका निराला के पास भेजीं। निराला ने तुरत उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिख भेजी, उसे देखकर उन्हें अपनी लड़कपन की संस्कृत काव्य-रचना याद आई, और उन्होंने किसी पत्रिका में उसकी चर्चा करने का वादा किया। 'सुधा' को भेजी हुई 'काकली' की प्रतियाँ यदि उन्हें देखने को मिली होतीं, तो अवश्य वे ऐसी ही प्रतिक्रिया पहले भी भेजते। इसी तरह 'सुधा' की टिप्पणी का प्रतिवाद भी उन्हें देखने को मिला होता तो वे उसका उल्लेख अपने पत्रों में करते। 'सुधा' के सम्पादन के लिए यदि वह वास्तव में जिम्मेदार होते, तो उस प्रतिवाद के बारे में उन्हें पत्र लिखते।

'सुधा' में क्या छपे, क्या न छपे, इसका निर्णय निराला नहीं, दुलारेलाल भार्गव करते थे। इसी कारण 'वर्तमान धर्म' वाले विवाद में निराला का प्रत्युत्तर 'माधुरी' में छपा था, 'सुधा' में नहीं। इसी कारण पन्त की 'ज्योत्स्ना' नाटिका पर मेरा लेख निराला ने दुलारेलाल भार्गव को दिया था और वह 'सुधा' में प्रकाशित नहीं हुआ था। ३० अप्रैल सन् ३६ के पत्र में निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखा था, "'सुधा' को मैं आपके लेख-कविताएँ देता, पर 'सुधा' सम्पादक कुछ दूसरी तरह के आदमी हैं, फिर मेरी घनिष्ठता भी अब वैसी नहीं रही। फिर भी मैं पूछूंगा। वे चाहते हैं, लेखक या कवि स्वयं उनसे पत्रव्यवहार करे। मैं आपका जिक्र उनसे करूंगा।" इससे स्थिति स्पष्ट हो जानी चाहिए कि 'सुधा' के सम्पादन के लिए निराला की जिम्मेदारी कितनी थी। किन्तु शास्त्री जी ने इस प्रसंग का उल्लेख इस ढंग से किया है मानों निराला ने जानबूझकर उनका लेख छपने से रोक दिया हो। निराला अवश्य ही यह प्रसंग भूल गये होंगे या शास्त्री जी की युक्तिपूर्ण स्थापनाएँ याद न रही होंगी, इसलिए उन्होंने वाद को इस निबंध की प्रतिलिपि मँगवायी थी।

'सुधा' में निराला की 'तुलसीदास' कविता छपी। इसका प्रतिवाद न करके जानकीवल्लभ शास्त्री ने उसी कविता के छन्द में, निराला की शैली का अनुकरण करते हुए, उनकी प्रशस्ति लिखी। निराला की शैली का अनुकरण दुष्कर है। वताया न जाय कि जानकीवल्लभ की कविता निराला की प्रशस्ति है, तो लोग उसे 'तुलसीदास' की पैरोडी समझ सकते हैं। कविता पढ़कर निराला प्रसन्न हुए। उन्होंने उदारतापूर्वक अपने प्रशंसक की प्रशंसा करते हुए लिखा, "आप की काव्य प्रतिभा 'निराला' की तारीफ में, उसके 'तुलसीदास' के मुकावले न्यून नहीं।" (२३-११-३५ का पत्र)।

निराला पर यह कविता लिखने के वावजूद जानकीवल्लभ शास्त्री और निराला के काव्य वोध का अन्तर वना ही न रहा, वरन् पहले से और वढ़ गया। जानकीवल्लभ शास्त्री ने निराला की काव्य कला की तारीफ़ में जो निवन्ध लिखा, उसमें जगह-जगह

उन्होंने निराला की खिल्ली भी उड़ाई। 'जागो फिर एक वार' (१) की परिसमाप्ति उन्हें "दो कौड़ी की" मालूम हुई "जैसे कलम को रुलाकर जवर्दस्ती उतनी लाइनें उगलवायी गयी हों।" और 'जागो फिर एक वार' (२) की पंक्ति

पर क्या है, सव माया है—माया है

उन्हें "असाहित्यिक" और "एकदम नीरस" ही न लगी वरन् "राम नाम सत्य है की तरह असत्य" भी प्रतीत हुई। इसके वाद 'गीतिका' पर अपने लेख में उन्होंने निराला का और भी खुलकर विरोध किया। कहीं-कहीं भाव और भाषा का सम्वन्ध उन्हें चमत्कार पूर्ण लगा "पर अधिकांश स्थल का सजल सौन्दर्य कृत्रिमता के प्रहार से चूर्ण-चूर्ण हो रहा है। निराला जी के अतिरिक्त किसी भी महान् कवि की भाषा सौन्दर्य की इतनी पिपासा नहीं रखती।" स्वभावतः निराला को इस तरह की आलोचना न तो पसन्द थी, न वह उससे सहमत हो सकते थे।

निराला जिस नई दिशा में वढ़ रहे थे, उसमें कालिदास की काव्य-कल्पना उन्हें प्रतिरोध जैसी लगती थी। कालिदास का खंडन करते हुए वह जिस तर्क पद्धति का आश्रय लेते थे, उसमें असंगतियाँ भी होती थीं। उन्होंने छायावादी कवियों, विशेषकर पन्त जी, की रचनाओं में दोष दिखाने के लिए "शणवल" सूत्र रचा और इसका सम्वन्ध उन्होंने कालिदास से जोड़ा। इस प्रसंग को जानकीवल्लभ शास्त्री ने इस तरह प्रस्तुत किया है, " 'शणवल' की अनोखी खोज निराला को कालिदास की मर्मज्ञता का प्रमाण पत्र देने वाली न थी। जव निराला और डॉ० रामविलास शर्मा इकट्ठे वैठकर कालिदास की खिल्लियाँ उड़ाते थे तव मेरी रोनी सूरत पर नकली हँसी पुत जाती थी; जब तुलसीदास में 'शणवल' के आधार पर कालिदास का कुप्रभाव सिद्ध किया जाता था तव मुझे इन महान् आलोचकों की विनम्र अहम्मन्यता पर रोना आता था।" (उप०, पृष्ठ ५३)। यद्यपि निराला के साथ महान् आलोचक कहे जाने पर मुझे गर्व है और जानकीवल्लभ शास्त्री के रोना आने से पूर्ण सहानुभूति है, फिर भी वास्तविक स्थिति इससे कुछ भिन्न थी।

सन् ४६ में लिखी हुई मेरी 'निराला' पुस्तक में इस विषय की चर्चा इस प्रकार है, "उनकी तर्क-प्रणाली में हमेशा तर्क ही की प्रधानता नहीं होती। एक वार कालिदास और रविन्द्रनाथ की तुलना करते हुए वह कालिदास के दोष दिखाने लगे। शकुन्तला नाटक से उस स्थल का हवाला दिया जहाँ प्रथम मिलन के वाद शकुन्तला दुष्यन्त से विदा होती है। कालिदास ने उपमा दी है, यष्टि के समान उसका शरीर तो आगे वढ़ता था परन्तु पताका के समान उसका मन पीछे की ओर उड़ रहा था। निराला जी ने कालिदास के अज्ञान की चर्चा करते हुए कहा कि यष्टि आगे चलेगी तो पताका उसके आगे कैसे उड़ेगी। यह तो अत्यन्त अस्वाभाविक क्रिया है, लगभग आध घंटे की वहस के वाद वह यह मानने के लिए तैयार हुए कि कालिदास के श्लोक में पताका पीछे भी उड़ सकती है लेकिन इस शर्त पर कि 'तुम्हारा मतलव सही हो सकता है लेकिन हम जो कह रहे हैं वह भी विल्कुल गलत नहीं है'।" (तीसरा संस्करण, पृष्ठ २७)

और भी स्पष्ट रूप में 'शणवल'-प्रसंग का उल्लेख इस प्रकार है, "पंत जी और

अन्य छायावादियों की शब्दावली को निराला जी ने सूत्र रूप में 'शणवल' नाम दिया। हिन्दी की प्रकृति 'श' को 'स', 'ण' को 'न', 'व' को 'व' कहने की है। 'ल' को लोग 'ल' ही कहते हैं लेकिन शणवल के साथ मिलकर उसमें क्लीवता आ जाती है। यहाँ पर निराला जी संस्कृत उच्चारण के विपरीत ब्रजभाषा और ग्राम भाषाओं की प्रकृति का समर्थन कर रहे थे। छायावादी कवियों ने अक्सर जन साधारण की भाषा की उपेक्षा करके काल्पनिक सौन्दर्य के लिए एक असाधारण शब्दावली गढ़ी थी। निराला जी ने यह लेख सन् ३५ में लिखा था और उसके बाद उनमें क्रमशः यह प्रवृत्ति जोर पकड़ती गयी कि गद्य में ही नहीं, पद्य में भी सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करें। छाया-वादी चतुष्पद के स्वयं एक स्तम्भ होने के कारण वे उसकी कमजोर नस को पहचानते थे। इसलिए उनका वार भरपूर बैठा पर पन्तजी पर ही नहीं, वह वार उनकी अपनी रचनाओं पर भी है। 'विजन वन वल्लरी' में 'व' ही बोलता है और 'तुलसीदास' के आरम्भ में 'शत-शत अब्दों का सान्ध्य काल' है। बातचीत में वह कहते थे कि यह शपा-शप कालिदास के प्रभाव के कारण है।" (उप०, पृष्ठ ८४)।

निराला की शणवल-चर्चा काव्य बोध के नवीन विकास के संदर्भ में ही समझी जा सकती है। उसे अक्षरशः ग्रहण किया जाय तो वह हास्यास्पद है, सही संदर्भ में देखा जाय तो वह आंशिक रूप में सही लगेगी।

इसी प्रसंग का उल्लेख 'निराला की साहित्य साधना' के पहले खंड में है :

"कालिदास काव्य में शणवल वर्णों का प्राधान्य है; वही बात पन्त काव्य में है। निराला का अपना काव्य हिन्दी के अनुकूल स, न, व, ल पर जोर देता है।..... इस लेख की अनेक मान्यताओं को लेकर उनसे मेरी बहस हुई। 'विजन वन वल्लरी पर—यहाँ 'व' बोलता है या नहीं ? शत शत अब्दों का सान्ध्य काल—यहाँ शपाशप है या नहीं ? इस तरह की पंक्तियाँ उद्धृत करने पर वह तीन तरह के उत्तर देते। श, ण, व—वर्ण आए हैं पर पंक्ति में ये बोलते नहीं हैं; मुख्य वर्ण दूसरे हैं। इस तरह की पंक्ति में ऐसे ही वर्ण आवश्यक थे। इधर-उधर शणवल आ गए हैं, कालिदास के प्रभाव से !" (प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३०२-३०३)।

किन्तु जानकीवल्लभ शास्त्री का विचार है कि मैं निराला के साथ बैठकर कालिदास की खिल्ली उड़ाता था और निराला के साथ मिलकर 'तुलसीदास' कविता में शणवल के आधार पर कालिदास का कुप्रभाव भी सिद्ध करता था। खिल्ली उड़ाने से चिढ़कर उन्होंने रामविलास से संस्कृत में प्रश्न किए। रामविलास की समझ में संस्कृत न आई और उन्होंने शास्त्री जी से अपनी बात हिन्दी में कहने की प्रार्थना की। इस पर शास्त्री जी हँसे और बोले, "जब आप मेरी संस्कृत नहीं समझते, कालिदास को कैसे समझते हैं ? अर्थमात्र तो काव्य नहीं है।" शास्त्री जी की संस्कृत सुनकर "निराला ने अपनी संस्कृत में कुछ कहकर अप्रार्थित मध्यस्थतता की और वार्तालाप का विषय तत्काल बदल दिया।" (उप०, पृ० ५३)

संस्कृत में अपनी अयोग्यता मैं स्वीकार करता हूँ किन्तु इस सारे दृश्य और संवाद की रचना जानकीवल्लभ शास्त्री ने 'निराला की साहित्य साधना' (खंड १) पढ़ने

के बाद की है। उनकी क्षुब्ध कल्पना ने संस्कृत के पाण्डित्य से रामविलास के पराभव की बात गढ़ी है। उन्होंने अपनी संस्कृत से मुझे नहीं जयशंकर प्रसाद को आंतकित करने का प्रयत्न किया था। निराला मेघदूत के कुछ श्लोकों की "अपनी मौलिक व्याख्या" सुनाकर प्रसाद की राय जानना चाहते थे; प्रसाद ने जानकीवल्लभ की ओर संकेत किया। तब—"झड़े दिमाग से संस्कृत का एक क्लिष्ट और लच्छेदार वाक्य बोल गया। प्रसाद जी ठठाकर हँस पड़े।" ('स्मृति के वातायन,' पृ० ४५)।

शास्त्री जी की अदाएँ देखकर लखनऊ में उनके मित्र भी मुस्कराते थे, बेशक ठठाकर न हँसते थे। "इसी समय 'चकल्लस' (श्री नरोत्तमप्रसाद नागर द्वारा सम्पादित) का भावी अङ्क निकला। उसमें मेरे माधुरी के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित मेघ गीत की पैरोडी निकली। दिल कड़ाकर, ओंठ चबाकर सब झेलना पड़ा।" ('निराला के पत्र', पृष्ठ ४४)। जहाँ तक याद है, उस पैरोडी में ओंठ चबाने की तो ऐसी कोई बात न थी :

मुखरमधीरं त्यज मंजीरं चल प्रिय शयनागारे,
हिमगिरि गरुअ पयोधर परसत जागूं मैं भिनुसारे।

शास्त्री जी ने इसी प्रसंग में आगे लिखा है, "वहाँ निराला के प्रशंसकों में रामविलास शर्मा, नरोत्तम नागर और अमृतलाल नागर ही सूझ बूझ वाले थे। इनमें भी व्यंग्य नरोत्तम जी अधिक करते थे; रामविलास शर्मा बेझिझक फटकारते थे,—रूप-अरूप के कुछ छपे फर्मे देखकर कहा था कि यदि ये कविताएँ उनकी होतीं तो (भूसामंडी की मोरियाँ दिखलाकर) वे फाड़कर फेंक देते"। (उप०, पृ० ४५)। यहाँ भी शास्त्री जी की स्मृति उन्हें धोखा दे रही है। किताबें फाड़कर फेंकने की बात निराला ने 'हिन्दी आलोचना' शीर्षक 'सुधा' वाली टिप्पणी में लिखी थी, "पर हिन्दी का आलोचनात्मक वर्तमान साहित्य देखकर किताब फाड़कर फेंक देने की तबियत होती है"। इसे उन्होंने भिन्न संदर्भ में मुझ पर आरोपित कर दिया है। यदि यह बात सही होती तो उन जैसा स्वाभिमानी व्यक्ति इस घटना के बाद मुझे अपनी पुस्तकें क्यों भेजता ?

जानकीवल्लभ शास्त्री ने "एक राष्ट्रीय खंड काव्य" लिखा था—'वन्दी मन्दिरम्'। इसे सुनकर निराला इतने प्रभावित हुए कि कहने लगे, "मैं फिर संस्कृत पढ़ूंगा।" ('निराला के पत्र,' पृष्ठ १०१)। यद्यपि निराला "अपनी संस्कृत" ही बोल सकते थे, कालिदास की "अपनी मौलिक व्याख्या" ही प्रस्तुत कर सकते थे, तथापि शास्त्री जी अपने खंडकाव्य की भूमिका संस्कृत में निराला से ही लिखाना चाहते थे। इसका कारण यह था कि "वन्दी मन्दिरम् की प्रस्तावना लिखवाकर मैं यह चमत्कार प्रदर्शित करना चाहता था कि संस्कृत भाषा और साहित्य में भी निराला की कितनी गहरी पैठ है।" (उप०, पृष्ठ १०८)। ऐसे ही किसी क्षण में जब वह निराला से अपनी पुस्तक की भूमिका लिखाने की बात सोच रहे होंगे, उन्हें "निराला ने अपने संस्कृत साहित्य के गहन ज्ञान से अभिभूत किया" होगा। (उप०, पृष्ठ ९०)। किन्तु निराला ने 'वन्दी मन्दिरम्' की भूमिका लिखी नहीं।

कालिदास की तुलना में निराला को श्री हर्ष अधिक गहन जान पड़ते थे। दोनों

कवियों के बारे में निराला ने लिखा, "दोनों महान् हैं : पर श्री हर्ष का प्रभाव अधिक स्थाई होता है। फिर भी कला की जानकारी कालिदास को अधिक है,—अगर कुछ गहन होते।" (१४-८-३५ का पत्र)। इस विषय पर शास्त्री जी ने बड़े परिश्रम से एक निबन्ध लिखा था; "यह निबन्ध निराला जी की असावधानी से नष्ट हो गया। इस तुलनात्मक अध्ययन में मैंने जी खपा डाला था।" (उप०, पृष्ठ ७८) सरोज की मृत्यु ३१ जुलाई सन् ३५ को हुई थी। निराला को इसका समाचार पत्र द्वारा मिलने में ३-४ दिन तो लगे ही होंगे। श्री हर्ष और कालिदास वाली बात उन्होंने १४ अगस्त सन् ३५ के पत्र में लिखी जिसके आरम्भ में ही कन्या के देहान्त का उल्लेख है। उन दिनों निराला की असावधानी से शास्त्री जी का निबन्ध नष्ट हो गया हो तो यह असावधानी क्षम्य होनी चाहिए। अपनी मानसिक स्थिति के बारे में निराला ने अगले साल ११ फरवरी को लिखा, "आपके दो पत्रों पर भी निरुत्तर रहा। मैं मानसिक स्फूर्ति उत्तरोत्तर खोता जा रहा हूँ। केवल विश्वास रह गया है। इस स्थिति में शास्त्री जी को लेख और पत्र खोजकर पढ़ना और उत्तर देना उनके लिए कष्टप्रद था। वह 'सरोज स्मृति' कविता लिख रहे थे जो अब तक पूरी हो गयी थी। पर इस बीच कालिदास वाला विवाद भी उन्हे उलझाए था। निराला ने पत्र में जो कुछ लिखा, उसमें शास्त्री जी को क्रोध की झलक दिखाई दी। निराला उसी पत्र में अपनी कैफियत देते हुए कहते हैं, "यह ठीक है कि भाषा की ओजस्विता कभी-कभी क्रोध की परिचायिका होती है, पर यह भ्रम है, सत्य नहीं। मैं तो आपको छोटे कवि-मित्र की ही तरह देखता हूँ। दूसरों पर भी वैर नहीं रखता। पर न जाने क्यों मुझे वैर ही दूसरों से मिला।"

३१ मार्च सन् ३६ के पत्र में निराला फिर कैफियत देते हैं, "कटु आलोचना मेरा उद्देश्य नहीं। हो भी जाय अगर कहीं कटुत्व तो उसे रस मानता हूँ। कहने के लिए दुनिया है।"

इस पत्र में कालिदास के साथ एक दूसरा नाम जुड़ जाता है, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का। निराला गर्व से लिखते हैं, "रवीन्द्र नाथ की नकल बनूं, मेरी इच्छा नहीं; मैं मैं हूँ : सूर्य्यकान्त रवीन्द्रनाथ नहीं,—कान्त 'इन्द्र' और 'नाथ' की गुरुता चाहेगा ?"

वर्ष भर बाद २७ मई सन् ३७ के पत्र में निराला लिखते हैं, "आप पर कालिदास का जो रंग है, वह मेरी धारा का बाधक है, मुझे ऐसा जान पड़ता है। जिसे मैं दुर्बलता मानता हूँ, वह आप लोगों की निगाह में सौन्दर्य बन जाता है।" दो प्रकार के सौन्दर्य-बोध यहाँ टकरा रहे हैं। शास्त्री जी की सूचना के अनुसार, "जाने क्यों, निराला ही नहीं, प्रसाद जी भी कालिदास से खिचते थे।" (उप०, पृष्ठ ११५)। इससे और भी स्पष्ट हो जाता है कि सन् ३०-३२ के बाद छायावादी कवियों की चेतना में जो परिवर्तन हो रहा था, उसकी मिसाल अकेले निराला नहीं थे। शास्त्री जी का पछतावा वाजिब है, "अब तो कोई उपाय नहीं, निराला ने मेरा लेख खो दिया, वह छपा होता तो निराला के तिनकने का रहस्य मालूम हो जाता।" (उप०, पृष्ठ ११५)। एक बार पुनः निराला का व्यवहार क्षम्य है, उन दिनों वह पुत्री के निधन से शोक-संतप्त थे।

महीने भर बाद २३ जून को निराला कालिदास वाले प्रसंग में शास्त्री जी को फिर लिखते हैं, "समझ की सनद तो आपके पास ऊँची है ही। इस परीक्षा में मैं तो समझदारी में बहुत पीछे हूँ।" दो महीने बाद १२ अगस्त सन् ३७ के पत्र में वह अधिक उत्तेजित होकर लिखते हैं,

"आपने मेरे लिए जो कुछ लिखा है सब ठीक है। पर अभी आप लड़के हैं, जब भी अपनी और पदवी की समझ से समझदार।

"मैं जो कुछ लिखता हूँ, साहित्य समझकर। नहीं बन पड़ता, मेरी कमजोरी है। लोग क्या चाहते हैं, लोग जानें। मैं क्या देता हूँ, मैं समझता हूँ।

"आज परिमल के वे गीत आप चाहते हैं, जिन्हें पहले (उन गीतों के ज़माने में) लोग नहीं चाहते थे। मुमकिन, फिर आज की चीजें आपको अच्छी लगने लगें:—मेरा मतलब 'आप' से हैं।"

आज जानकीवल्लभ शास्त्री लिखते हैं कि निराला एक नहीं तीन थे और तीनों महान् थे। एक निराला "व्यंग्यों की आधुनिकता सिरजता है," दूसरा निराला "अनुराग-सम्राट् और विराग योगी है," तीसरा निराला "भक्ति और ज्ञान के सहज समन्वय का महान् कवि है" (उप०, पृष्ठ ४९)। "ये तीनों निराला अजेय हैं।" (उप०, पृष्ठ ५०)। किन्तु उस समय निराला के नये प्रयोगों के प्रति उनकी स्थिति नितान्त सहानुभूतिशून्य विरोधी आलोचक की थी। निराला के पत्र उस स्थिति के प्रमाण हैं।

'निराला के पत्र' में शास्त्री जी ने टी० ऐस्० इलियट की कविताओं से अनेक उद्धरण दिए हैं। इन्हें देखकर विश्वास हो सकता है कि उन्हें सामान्य रूप से अंग्रेजी कविता ही प्रिय नहीं है वरन् इलियट की कविता उन्हें असामान्य रूप से प्रिय है। "ईलियट जैसे जागरूक कवि" (पृष्ठ ९) का उल्लेख भी यही प्रमाणित करता है। इलियट की अपेक्षा कालिदास के काव्य बोध से अधिक विपरीत दिशा में चलने वाले कवि की कल्पना करना कठिन है। पर इलियट की पंक्तियाँ उद्धृत करना एक बात है, इलियट और कालिदास के काव्य बोध का अन्तर समझना दूसरी बात। यही नहीं, निराला-सम्बन्धी जो अंग्रेजी उद्धरण दिए गये हैं, उनमें नवीन काव्य बोध का बहुत स्पष्ट उल्लेख है। यह काव्य बोध पराजय, विद्रोह और आधुनिक संसार की निर्जीव अनुर्वरता समेट लेता है; इस प्रसंग में इलियट की 'वेस्टलैंड' कविता का नाम भी लिया गया है (उप०, पृष्ठ १३८)। निराला के लिए कहा गया है कि संसार में पराजित होने का भाव उनके यथार्थ अनुभव का ऐसा वास्तविक अंश है कि वह जो कुछ कठिन है, कठोर है, नग्न और तटस्थ है, समर्पित है, उसकी पहचान में विस्तार पाता है (उप०, पृष्ठ १४०)। शास्त्री जी द्वारा दिए हुए अंग्रेजी के उद्धरण उनकी हिन्दी में लिखी स्थापनाओं का खंडन करते हैं।

अपने नवीन काव्य-बोध से जानकीवल्लभ के भाव बोध का अन्तर स्पष्ट करते हुए निराला ने लिखा था, "मैंने चाहा था, आपको नई हवा खिलाऊँ। कोशिश की थी। पर आपने एक स्थिति से दूसरी स्थिति को समझना चाहा। मेरी आदत किसी को बिगाड़ना नहीं। जब दर्द पैदा होता है, तब हर आदमी दवा के लिए दौड़ता है। सोच-

कर मैं चुप हो गया।" (५-९-३८ का पत्र)।

निराला के नवीन काव्य बोध का विकास उनके तीव्र आत्म संघर्ष का परिणाम था। यह आत्म संघर्ष उनके जीवन की बहुत ही विषम परिस्थितियों में चल रहा था। जितना ही यथार्थ की कटुता और दुख की गहराई प्रत्यक्ष होती थी, उतना ही रूमानी कल्पनाएँ निस्सार प्रतीत होती थीं। कभी-कभी उनके मन में आता था कि वे अपनी सारी पुरानी कविताएं फिर से लिख डालें और विल्कुल विरोधी दृष्टि से लिखें। ऐसा सोचने और कहने का साहस निराला जैसे महान् साहित्यकारों को ही होता है। लिखा था, "एक रोज दिल में आया जो कुछ पद्य साहित्य में लिखा है, उसका उल्टा लिख डालूं।" (२६-५-४३ का पत्र)। कालिदास-सम्बन्धी विवाद निराला के इस आन्तरिक संघर्ष के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

कालिदास के सम्बन्ध में अपनी कैफियत देते हुए निराला ने लिखा था, "कालिदास को नीचा दिखाना मेरा अभिप्राय नहीं। वे मेरे दैहिक—मानसिक—दोनों प्रकार के सर्वोत्तम भोज्य हैं।" (१७-१०-३७ का पत्र)। किन्तु जानकीवल्लभ शास्त्री कालिदास को मुकाबले में खड़ा करके निराला को नीचा दिखाने पर तुले हुए थे। कालिदास के अलावा सहायता के लिए उन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी साथ ले लिया था। इन दो महाकवियों को आगे करके वह निराला को सलाह देने लगे थे कि उन्हें क्या लिखना चाहिए और क्या न लिखना चाहिए, कैसे काम करना चाहिए, कैसे काम न करना चाहिए। निराला ने चिढ़कर लिखा, "रवि बाबू बहुत काम करते रहे हैं, करते हैं; मैं तबियत से जो कुछ कर सकता हूं : मैं रवि बाबू नहीं।" फिर कालिदास के प्रभाव के संदर्भ में, स्वयं अपनी कविता के बारे में, " 'तुलसीदास' आपको बहुत अच्छा लगता है, मुझे नहीं, तो क्या करूँ ? लिखूंगा दो चार वैसी चीजें और, यथासमय आप लोगों की मनस्तुष्टि के लिए, फिर कालिदास को पढ़कर।" (२५-१०-३७ का पत्र)

इसके बाद—प्रसाद के निधन के बाद—१८ मार्च सन् ३८ के पत्र में निराला रवीन्द्रनाथ वाले प्रसंग में फिर लिखते हैं, "रविबाबू की तरह के अनेक अर्थ हैं। लिखता भी हूँ जब वैसी तबियत होती है, कुछ। पर रवि बाबू अब जमाने के विचार से दूर हो गये हैं, यह आधुनिक साहित्य के विचार से लिख रहा हूँ।" कोई भी साहित्य-समीक्षक बंगला समेत भारतीय भाषाओं के तत्कालीन साहित्य पर दृष्टिपात करेगा तो वह निराला से सहमत होगा। उस समय जो भी उल्लेखनीय नवीन विकास हो रहा था, वह रवीन्द्रनाथ की कल्पना-भूमि छोड़कर। और यह कल्पना-भूमि कालिदास के आलोक से जगमगा रही थी। इस आलोक की विशेषता यह थी कि यथार्थ जीवन की ऊबड़-खाबड़ भूमि, झाड़-झंखाड़, सब परिवर्तित होकर यथार्थ जीवन की विषमता खो देते थे। उसी पत्र में रवीन्द्रनाथ और कालिदास का सम्बन्ध जोड़ते हुए निराला कहते हैं, "मेरी दृष्टि में रवि बाबू एक श्रेष्ठ कवि और साहित्यिक हैं, बस। उनमें कमजोरियाँ भी अपार हैं। आपको अच्छे इसलिए लगते हैं कि रवि बाबू भी 'कालिदासो विलासः' हैं।"

जानकीवल्लभ शास्त्री के लिए स्वाभाविक था कि न केवल निराला की नए ढंग की चीजें उन्हें नापसन्द हों वरन् 'गीतिका' के गीत भी उन्हें पसन्द न हों। जब 'माधुरी'

में 'गीतिका' पर जानकीवल्लभ शास्त्री का लेख प्रकाशित हुआ, तब निराला के मन में उसकी गहरी प्रतिक्रिया हुई। उनके मन की यह प्रतिक्रिया कालिदास सम्बन्धी विवाद से जुड़ गयी।

'निराला के पत्र' की भूमिका में 'गीतिका' की इस आलोचना के प्रसंग का अनेक बार उल्लेख है और अनेक प्रकार से है। एक उल्लेख इस प्रकार है, "ऐसे ही समय मुझसे भी एक अपराध बन पड़ा जिसका परिगुंठित पछतावा आजीवन मेरा पीछा करता रहेगा। जहाँ मैंने निराला पर पहली कविता लिखी थी; पहला बड़ा लेख लिखा था, वहाँ मुझसे परिचय के बाद निकली उनकी पहली पुस्तक—'गीतिका' पर पहला (और कदाचित् अन्तिम भी) बड़ा आलोचनात्मक लेख भी मेरा ही प्रकाशित हुआ था। मेरे तब तक के लिखे लेखों में वह सबसे तीखा था।" (पृष्ठ ४४)। कहना चाहिए कि 'सुधा' की टिप्पणी के प्रतिवाद की यह अगली कड़ी थी।

'निराला के पत्र' की भूमिका में आगे लिखा है, "हिन्दी में लिखते हुए अभी दो ही वर्ष बीते थे कि 'गीतिका में निराला'—जैसा निबन्ध साहसपूर्वक लिखकर मैंने माधुरी में छपा डाला। उस निबन्ध का स्थापत्य एक अनाड़ी की करामात में बदल गया।.........मेरा कथ्य कमजोर न था, मगर मेरे पास भाषा के नाम रामदुहाई थी। पता नहीं, किनके बहकावे में पड़कर निराला बिगड़ खड़े हुए और उन्होंने कड़ा विरोध पत्र भेजा।" (पृष्ठ ५१)। यदि निराला के बहकाये जाने की बात सही है तो पछतावे की बात झूठ है। अपने निबन्ध की स्थापनाओं के सही होने पर जानकीवल्लभ का विश्वास दृढ़ है; यदि निराला ने उन्हें स्वीकार नहीं किया तो इसका कारण यह होगा कि वह किसी के बहकावे में आ गए थे।

आगे लिखा है, "निराला अपनी प्रशंसाओं से नहीं, मेरे द्वारा दरसाए गए काव्य दोषों से अधिक प्रभावित हुए, यह जानकर अपना प्रथम श्रम भी मुझे चरम-जैसा सार्थक प्रतीत हुआ। फिर उन्होंने दुष्ट गीत जो नहीं लिखे!" (पृष्ठ ५४) निराला ने अपनी भूलें चाहे 'गीतिका' से पहले लिखे हुए गीतों की आलोचना देखकर सुधारी हों, चाहे 'गीतिका' की आलोचना देखकर, यह स्पष्ट है कि जानकीवल्लभ शास्त्री निराला के विरोध में जो कुछ लिखते आए थे, उस पर वह अडिग रहे।

'गीतिका' की आलोचना पढ़कर निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखा, "कुछ अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा: इसलिए नहीं कि उसमें मेरी कोई तारीफ़ नहीं, बल्कि इसलिए कि ज़माना जितना बढ़ता जाता है, लोगों की बुद्धि उतनी मन्द होती जाती है।" (९-८-३८ का पत्र)।

जानकीवल्लभ शास्त्री के बौद्धिक विकास के बारे में निराला की यह राय महत्वपूर्ण है। दोनों के काव्य बोध का अंतर तो स्पष्ट है ही।

साहित्य के मैदान में तरह-तरह के लोग निराला का घेराव कर चुके थे। 'गीतिका' पर जानकीवल्लभ शास्त्री का लेख उन्हें ऐसे ही घेराव से संबद्ध जान पड़ा। 'माधुरी' में शास्त्री जी के लेख और कविताएँ प्रकाशित हों, इसके लिये निराला अनेक बार प्रयत्न कर चुके थे। उसी 'माधुरी' को उन्हीं जानकीवल्लभ शास्त्री ने निराला पर

अपने आक्रमण का माध्यम बनाया था। निराला ने लिखा,

"मैंने आपको कोई उत्तर देने की हिम्मत नहीं की। आप अच्छे हो जाइये। मानसिक अशान्ति ईश्वर दूर करें।

"सुनता हूं, कोई-कोई आपको जवाब देने वाले हैं; कोई गीतिका की तारीफ़ में लिखनेवाले हैं। यह सब अपनी तबियत की बात है।

"मैं जैसा समझता हूं, लिख देता हूं। जब बहुत घिरता हूं, तब जवाब देता हूं।

"आपको उत्तर तो मैं दूंगा ही नहीं : क्योंकि खड़ी बोली अपने आप खड़ी होगी अगर खड़ी होगी। फिर मैं प्रचारक नहीं।

"आप लोग बड़े-बड़े निबन्ध लिखिएगा, ग्रन्थ लिखिएगा, बड़ी-बड़ी दोहाईयां दीजिएगा, मुझे भी, जितना समझूंगा, आनन्द आयेगा।

"मैं तो कालिदास और रवीन्द्रनाथ से अपनी मां का मुख ही अधिक पहचानता हूं।" (३०-८-३८ का पत्र)।

निराला को कालिदास और रवीन्द्रनाथ जैसे बड़े नामों से आतंकित न किया जा सकता था। कालिदास संस्कृत में महान् हैं, रवीन्द्रनाथ बंगला में महान् हैं, कुछ सम्पत्ति हिन्दी की अपनी भी है। निराला हिंदी साहित्य को देखते और पहचानते हैं; उनके लिए बंगला या संस्कृत की निगाह को अपनी निगाह बना लेना सम्भव नहीं है। कविता का अनुवाद करना इसीलिए असम्भव है कि वह किसी भाषा विशेष से अभिन्न रूप में जुड़ी होती है। रवीन्द्रनाथ को बंगला से अलग करके किसी भी भाषा के माध्यम से—फिर चाहे अनुवादक स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ही हों—पहचाना नहीं जा सकता। ऐसा ही अभिन्न सम्बन्ध निराला का हिन्दी से है। "मैं तो कालिदास और रवीन्द्रनाथ से अपनी मां का मुख ही अधिक पहचानता हूं"—इस सारगर्भित वाक्य का यही आशय है। पत्र के नीचे पाद-टिप्पणी में इसे "भीष्म तर्क" कहकर जानकीवल्लभ ने निराला की बात का मखौल उड़ाया है। निराला से कोई असहमत भले हो पर उनके मन पर जो बीत रही थी, उसे कोई अनदेखा कैसे कर सकता था? इस सारे विवाद से निराला के दर्द का गहरा सम्बन्ध था, इसमें सन्देह की गुंजाइश कहां है? लिखा था,

"मेरा जो कुछ होगा, होगा। जिन्हें लिखना है और जो कुछ लिखा जाना है बिना मेरे भी लिखेंगे, लिखा जायेगा।

"यही है कि एक समझ होती है, वह पहले चाहिए। वही मौलिक साहित्य पैदा करती है। बाकी सब पीछे लगे रहते हैं। मैं अपने मित्रों से यही कहता रहा हूँ। पर सब जगह परिणाम उल्टा मिला है। ईश्वरेच्छा, जैसा आप मेरे लिए लिखते हैं!!!" (२०-१२-३८ का पत्र)

ये शब्द दर्द भरे मन की बड़ी गहराई से निकले हैं।

निराला ने साहित्य की जातीय विशेषताओं की बात विस्तार से समझाई। "रचना में बहुत सी बातें रहती हैं, आप लोग जिस तरह प्रान्त-प्रान्त की भिन्न-भिन्न संस्कृति का पता लगाते हैं, उसी तरह हिन्दी का भी लगता है, संस्कृति, दर्शन, सामाजिक विचार, साहित्यिक प्रभाव, मानसिक स्थिति, शिक्षा आदि बहुत सी बातें रचना के

हृदय में रहती हैं—देश-काल—कलाबोध—समन्वित; प्रादेशिकता तो रहती ही है। मेरे सुधार न करने या न पाने का यही कारण है।" (३०-५-३९ का पत्र)।

निराला जितना ही प्रयत्न करते थे कि जानकीवल्लभ शास्त्री हिन्दी भाषा और साहित्य की विशेषताएँ पहचानें, उतना ही शास्त्री जी को लगता था कि निराला उन्हें साहित्य की व्यापक ज़मीन से घसीटकर हिन्दी के संकीर्ण दायरे में बन्द कर देना चाहते हैं।

कालिदास-सम्बन्धी विवाद जानकीवल्लभ शास्त्री के प्रति निराला की किसी व्यक्तिगत धारणा का परिणाम नहीं था, इसका एक प्रमाण यह भी है कि वह कालिदास को लेकर मैथिलीशरण गुप्त से भी टकराये थे।

"अभी तीन दिन से गुप्त जी से—'दूरादयश्चक्र निभस्य तन्वी' श्लोक चल रहा है।

"गुप्त जी ने कहा, तुम मूर्ख हो, हठी हो, कालिदास का मतलब बड़े-बड़े विद्वान् नहीं समझ सके, मैं जो कुछ कहता हूँ, वही सही है।

"मैंने मन में कहा, या तो कालिदास मूर्ख था या आप हैं; पण्डिताः समदर्शिनः तो हैं नहीं, एक तरफ से 'गवि हस्तिनि' नज़र आते हैं।" (१६-२-४० का पत्र)।

सन् ३५ में आरम्भ होने वाला विवाद सन् ४० में समाप्त हुआ। सन् ४० में निराला के मित्र की बेटी, रामकृष्ण त्रिपाठी की पत्नी, फूलदुलारी को वही बीमारी हुई जो सरोज को हुई थी। पहले पुत्री, फिर पुत्रवधू। दोनों का अन्त— एक सा। निराला अपना मन साधकर जिस नई दिशा की ओर बढ़ रहे थे, उसी ओर और भी साहसपूर्वक बढ़े। उन्होंने लिखा, "मैंने अत्याधुनिक धारा और समाजवाद का इधर कुछ अध्ययन किया है, कुछ लिख रहा हूँ।" (१६-३-४१ का पत्र)। जो लोग निराला के प्रसंग में सामाजिक संघर्ष या समाजवाद का नाम सुनते ही क्रोध से बावले हो जाते हैं, वे उनका यह वाक्य ध्यानपूर्वक पढ़ें।

शास्त्री जी कहते हैं, "संक्षेप में, मेरे लेख से बिदके हुए निराला कुछ ही दिनों में प्रकृतिस्थ हो गए थे। उस क्रम में मुझे कुछ कड़वे पत्र भी लिखने पड़े थे।" (उप०, पृष्ठ ६०)। शास्त्री जी के पत्रों में कितना कड़वापन था, इसे जानने का कोई साधन नहीं। किन्तु निराला ने उनको जो पत्र लिखे, उनमें जितनी कटूक्तियाँ हैं, उतनी अन्य सभी जनों को लिखे हुए उनके २०० से अधिक प्राप्त पत्रों में नहीं हैं। इससे अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि शास्त्री जी के पत्रों में कितना और किस तरह का कड़वापन रहा होगा। सन् ४२ में निराला तीन महीने बीमार रहे। उनका वज़न करीब एक मन घट गया। वह अंग्रेज़ी में उपन्यास लिखने की बात सोचने लगे, स्वयं को भारत का सबसे पुराना विश्व पर्यटक घोषित करने लगे। वह कल्पना करने लगे कि उन्होंने लन्दन में अंग्रेज़ी में व्याख्यान दिया है और संसार के सभी प्रधान नगरों में कविताएँ सुनाई हैं। (देखें, २२-१२-४७ का पत्र)

निराला के मन की यह असन्तुलित दशा एक दिन में न हो गयी थी। उनमें बड़ी दृढ़ इच्छा शक्ति थी और उसे तोड़ने का काम अनेक घटनाओं ने किया और अनेक

वर्षों तक किया। इनमें प्रमुख घटना सरोज की मृत्यु थी और इसके बाद, दूसरों को जो घटनाएँ छोटी लगती हैं, उन्होंने निराला के मन को असाधारण रूप से प्रभावित किया था। इन्हीं में एक घटना जानकीवल्लभ शास्त्री से वर्षों तक चलने वाला उनका विवाद है।

'निराला के पत्र' पुस्तक का तीन चौथाई भाग जानकीवल्लभ शास्त्री के बारे में है, एक चौथाई भाग निराला के बारे में। निराला और उनके पत्र जानकीवल्लभ शास्त्री के प्रसंग में आते हैं, निराला के प्रसंग में जानकीवल्लभ शास्त्री नहीं आते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शास्त्री जी का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है और अपने बारे में वह जितनी जानकारी देते हैं वह स्वागत योग्य है।

जब निराला उनसे मिलने आये, तब वह साहित्य-यात्रा पर अकेले ही निकल चुके थे—"कालिदास, भवभूति की बारीकियाँ परखता हुआ; शेक्सपीयर, रवीन्द्रनाथ के दरवाजे खटखटाता हुआ।" ('स्मृति के वातायन,' पृष्ठ २०) यद्यपि हिन्दी कविता उन्हें बंजर ज़मीन लगती थी और वह कालिदास और भवभूति का दरवाजा न खटखटा रहे थे वरन् उनकी बारीकियाँ पहचान रहे थे, फिर भी वह अनुकरण अपनी संस्कृत कविताओं में हिंदी कवि सुमित्रानन्दन पंत का कर रहे थे। 'निराला के पत्र' की भूमिका में उन्होंने पन्त जी की अनेक पंक्तियों के साथ अपनी संस्कृत पदावली उद्धृत करके यह प्रमाणित किया है कि हिन्दी की बंजर भूमि से देववाणी के शृंगार के लिए उन्हें कौन-कौन से पुष्प प्राप्त हुए थे। कोई आश्चर्य नहीं कि 'काकली' की रचनाओं पर "भारत-भर के महामहोपाध्यायों की ऊँची से ऊँची सम्मतियाँ" (उप०, पृष्ठ १०८) उन्हें सहज ही प्राप्त हो गयी थीं। रवीन्द्रनाथ की 'उर्वशी' से प्रभावित होकर उन्होंने 'शकुन्तला' लिखी और निराला की 'तुलसीदास' से प्रभावित होकर 'निराला' कविता लिखी। इन दोनों कविताओं की पद-रचना 'काकली' से बहुत भिन्न नहीं है, का, सी, में आदि हिन्दी का परिचय देने वाले चिन्ह दो चार ही जहाँ तहाँ दिखाई देते हैं। संस्कृत-पद-रचना में उन्हें बड़ी महारत थी, इसमें कोई सन्देह नहीं। राजा ने कहा, 'जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली', इसका संस्कृत पद्य में रूपान्तर करो। जानकीवल्लभ ने तुरत इसका अनुवाद कर दिया, वैसे ही जैसे बहुत से लोग हिन्दी में समस्यापूर्ति करते थे, यद्यपि दुहाई आत्मानुभूति की देते थे। (उप०, पृ० १६१-६२)।

परीक्षाओं में सफलता पाने और कवि रूप में ख्याति मिलने पर भी जीविका की समस्या सन्तोषजनक ढंग से हल न हुई थी। साथ के लोग सामाजिक जीवन में आगे बढ़ते चले जा रहे थे, जानकीवल्लभ पीछे छूटे जा रहे थे। कुछ दिन तक वह रायगढ़ राजा के दरबारी कवि रहे पर यह नौकरी ज्यादा दिन चली नहीं। उनका यह सोचना स्वाभाविक ही है, "वाकई चारण भाट होता तो कोई न कोई कुर्सी जरूर मेरे भी हाथ लग जाती।" (उप०, पृष्ठ ५५)। उनकी ओर से प्रयत्न में कोई कमी न हुई थी। निराला ने उनकी मनोवृत्ति पहचान कर ठीक ही सलाह दी थी, "अब संसार में तेल लगाने के दिन नहीं रहे, हिन्दोस्तान में हैं, लगाइये; पर मालिश अच्छी नहीं।" (२०-१२-३८ का पत्र)

दैन्य-प्रदर्शन उनके स्वभाव की एक विशेषता बन गया था। निराला से पहली भेंट हुई तब सूखे चने चबा रहे थे। सामने एक बुझा-सा शीशा था और एक पुस्तक रस गंगाधर। इन्हें सामने रखकर वह कविता लिखते थे। "तभी चने चबाने पड़ते थे—सूखे चने। अव भी वही वेढंगी रफ्तार है, क्योंकि लिखने का ढंग अब भी नहीं बदला। तो अभी मैं चने चबाकर चुका ही था कि दो विशिष्ट अपरिचितों ने एक साथ कमरे में प्रवेश किया।" ('स्मृति के वातायन' पृष्ठ १०-११)। साहित्य सेवा के पीछे "मैं वर्षों वेकार रहा, भूखों मरा" ('निराला के पत्र,' पृष्ठ १७१); रायगढ़ का राजदरबार छोड़ने के बाद "छह-आठ वर्षों का लम्बा अरसा भयानक मुफलिसी में गुजरा" (उप०, पृ० २०७)। इसके अलावा जब-तब वीमार पड़ते रहते थे। निराला दूसरों को दुखी देखकर तुरत द्रवित होते थे, फिर साहित्यकार दुखी हो तो उनकी करुणा की कोई सीमा न होती थी। सरोज का देहान्त हुए दो हफ्ते ही बीते हैं, वह रूपनारायण पाण्डेय से जानकीवल्लभ शास्त्री की सिफारिश कर रहे हैं, 'माधुरी' में उनकी रचनाएँ प्रकाशित करने को कहते हैं (१४-८-३५ का पत्र)। पाण्डेय जी से कहते हैं कि जानकीवल्लभ शास्त्री को पुरस्कार अवश्य दिया जाय (१७-९-४० का पत्र)। कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह से कहते हैं, "आपके जो १५) मुझ पर बाकी हैं, मैं जानकीवल्लभ जी को भेज दूंगा।" पर—"अफसोस, इधर मुझे वैसी कोई प्राप्ति नहीं हुई।" (२६-६-४१ का पत्र)। लखनऊ रेडियो में प्रसारण के लिए उनका नाम भेजते हैं (२५-७-४१ का पत्र)। पुनः लिखते हैं, "All India Radio में मैंने आपकी सिफारिश भेज दी" और "All India Radio, Lucknow के Director से आपकी सिफारिश President, All India Hindi Poets' Conference की हैसियत से कराई है, लिखित; खुद जबानी भी की है उनके कर्मचारी से और इस वार के कवि सम्मेलन में बुलाने के लिए कहा है।" (३०-१-४३)। १७ सितम्बर ४३ के पत्र में लिखते हैं, "आपके लिए मैं प्रयत्न करूँगा। रेडियो मैं नहीं जाता। दूसरे की राय पर शायद वे लोग कम ध्यान देते हैं अगर वह गैर सरकारी है।" और इसी पत्र में सूचित करते हैं, "चौधरी राजेन्द्र शंकर जी कहते हैं कि अक्टोबर के अन्त तक १००) भेजेंगे।" इसी वर्ष २ नवम्बर को लिखते हैं, "आपका हाल और रुपये ५ से पहले भेजने की बातचीत पद्मकान्त जी से कह दी। अगर भेजें तो आयें। कह दिया कि ६५) भेजें, चाहें तो कार का खर्च काट लें।" फिर अगले महीने २ तारीख को, "चौधरी साहब यहाँ आये थे। मैंने १००) तत्काल आपको भेजने के लिए कह दिया था।" अगले वर्ष ३ जनवरी को लिखते हैं, "आपको यहाँ के कवि सम्मेलनों में बुलाने का अवश्य प्रवन्ध करूँगा। और भी देखता हूँ यदि कुछ कर सकूँ।" १६ फरवरी ४४ को लिखते हैं, "जैसा लिखा है, चौधरी जी आये थे, हमने रुपये भेज देने के लिए कहा है। आज फिर तार कर रहे हैं कि तार से भेज दें।"

निराला जब साहित्यकार संसद में थे, तब पहली अक्तूबर सन् ४९ को उन्होंने जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखा था, "हमने महादेवी जी से कहा था। वे ५०) अभी आपके पास भेजती हैं। पुस्तक बुक की गई। फिर यथा प्राप्ति मिलता रहेगा। इलाज कीजिए। अभी तक राह देख रहे थे, मगर देवी पाख खाली गया।" स्वयं निराला की

मानसिक स्थिति इस समय कैसी थी, इसका आभास पत्र के इन दो वाक्यों से मिलेगा, "हम कल संन्यास ले रहे हैं, कथनानुसार अर्थात् ४२ की प्रयागवाली ए० आई० सी० सी० में दिये कथाप्रसङ्ग—विश्वसम्वन्ध—आय आदि के ब्यौरे के साथ समावर्तन के हिसाव से। विश्वमयी वात्सायन [वात्स्यायन] और शङ्कर के शास्त्र प्रमाणों को सत्य साबित कर चुकीं।" (यह पत्र जानकीवल्लभ शास्त्री को भेजा न गया था और गंगाप्रसाद पाण्डेय के पास था जिनसे वह क्रमशः उदयशंकर शास्त्री को प्राप्त हुआ)। कलकत्ते में अपने अभिनन्दन के दौरान निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री को रुपये दिए, वह इसी पुरानी सहायता प्रक्रिया के अन्तर्गत।

यह सव होने पर भी जानकीवल्लभ शास्त्री को हिन्दी साहित्य में वह प्रतिष्ठा न मिली, जिसके वह अधिकारी थे या जिसके वह अपने को अधिकारी समझते थे।

वैसे वडे-वड़े कवियों ने उनकी कविता की प्रशंसा की थी। वालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और मैथिलीशरण गुप्त ने उनकी रचनाओं को "देर-देर तक रस ले लेकर सुना, सराहा था," और उनकी "भावार्द्र प्रशंसा" की थी (उप०, पृष्ठ ३७)। किन्तु हिन्दी आलोचकों ने उनकी ओर ध्यान न दिया। उनकी 'रूप-अरूप' पुस्तक देखकर "काव्य रस के आलोचक उन्मत्त न हुए थे," उनकी "प्रशस्ति किसी ने नहीं गायी थी," फिर भी उन्हें विश्वास था कि निष्पक्ष समीक्षक उनकी "ताजगी को प्राथमिकता देंगे," क्योंकि उस वक्त तक के सुने स्वर से उनकी "टेर निराली थी। पर यह सव कुछ न हुआ।" (उप०, पृष्ठ १५९) जो नहीं हुआ, उसकी पूर्ति वह निराला से अपने सम्वन्धों को प्रभामंडित करके, कल्पना से उन्हें भव्य रूप देते हुए करते हैं। निराला के पत्रों के सम्पादन में वह स्वयं को प्रतिष्ठित करने का ध्यान वरावर रखते हैं। इन पत्रों को उचित संदर्भ देने के लिए अपनी कविताओं से अनेक और लम्वे उद्धरण तो देते ही हैं, अपनी रचना-प्रक्रिया के वारे में पाठक को आवश्यक सूचनाएँ भी देते चलते हैं, यथा : कवि सम्मेलनों में उनकी किस तरह की कविताओं पर दाद मिलती थी, किस तरह की कविताएँ "मेरी नई उपलब्धि थीं" (उप०, पृष्ठ १८७), स्टेशन पर विदा करने जव निराला समेत डेढ़ दर्जन आदमी आये, तव गाड़ी में वैठकर वह कौन सा गीत गुनगुनाने लगे (उप०, पृष्ठ २३७), किन दिनों उन्होंने अपने "सवसे अधिक अवसादपूर्ण गीत" रचे (उप०, पृष्ठ २४२), कव उन्होंने निश्चय किया, "निराला की काव्य कला पर सवसे पहला लेख मैं लिखूंगा" (उप०, पृष्ठ २९), अथवा यह निश्चय किया कि "निराला पर पहली कविता मैं लिखूंगा" (उप०, पृ० ३४) इत्यादि। उन्होंने जव जो कुछ लिखा, यथासम्भव उसका तुलनात्मक अध्ययन भी वह प्रस्तुत करते जाते हैं। निराला से पहली मुलाकात का हाल "कदाचित् सवसे पहले मैंने लिखा था"; इसे नन्ददुलारे वाजपेयी ने इतना पसन्द किया कि अपनी पुस्तक 'कवि निराला' में "उन्होंने भी उसी लहजे का इस्तेमाल किया" (उप०, पृष्ठ ५५)।

जानकीवल्लभ शास्त्री तथा सुमित्रानन्दन पन्त की काव्य कला का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन उपलव्ध नहीं है किन्तु संक्षेप में उसका एक सूत्र सुलभ है। वह इस प्रकार कि दोनों कवियों ने निराला पर कविताएँ लिखीं और पन्त की कविता वहुत

प्रसिद्ध हुई किन्तु शास्त्री जी के अनुसार "मेरे क्षितिज की असीमता को धूमिलता, गम्भीरता को अशान्ति और प्रकाश के ईषत् स्पर्श को कुन्तलमेघ मानने वालों को मालूम हो,—'उर्वशी' विश्वकवि की पहली या प्रारम्भिक रचना न थी; अवस्था में मुझसे सत्रह वर्ष बड़े और काव्य कला में एक शताब्दी बड़े महाकवि पन्त की निराला पर लिखी हुई अद्वितीय कविता अवस्था में मेरी कविता से ४ साल छोटी है..... आज (सन् ६९ में) सन् ३५ की इस समास-बहुल संस्कृत हिन्दी को चाहे जितने व्यंग्य वाण ओंजने पड़ें, तब इसकी सार्थकता सुस्पष्ट थी। इसे ही निकट भविष्य में निराला पर लिखी गई एक हज़ार कविताओं में 'या सृष्टिः स्रष्टुराद्या' का गौरव प्राप्त होना था।" (उप०, पृष्ठ ३५-३६)।

शास्त्री जी का क्षितिज धूमिल नहीं है, असीम है! रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता 'उर्वशी' बहुत प्रसिद्ध हुई किन्तु वह उनकी प्रारम्भिक रचना न थी; 'उर्वशी' से प्रभावित जानकीवल्लभ की कविता, 'शकुन्तला' उनकी प्रारम्भिक रचना थी। यदि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रारम्भिक रचनाओं से इसकी तुलना की जाय, अथवा 'उर्वशी' से शास्त्री जी की परिपक्व रचनाओं की तुलना की जाय, तो तौल में किसका वज़न ज़्यादा होगा, किसी को सन्देह न होना चाहिए। पन्त ने निराला पर कविता लिखी, शास्त्री जी की रचना के चार साल बाद। फिर निराला पर सैंकड़ों कविताएँ लिखी गईं। इन में जो विधाता की आदि सृष्टि के समान सबसे सुन्दर है, वह निराला पर शास्त्री जी की रचना है, भले ही वह विनम्रतावश पन्त की कविता को अद्वितीय कहें।

आधुनिक कविता के प्रसंग में मुक्तिवोध और अज्ञेय का नाम बहुत लिया जाता है। जहाँ तक मुक्तिवोध का सम्बन्ध है, कुछ आलोचक उनमें निराला-काव्य की कतिपय विशेषताएँ देखते हैं। परन्तु नन्ददुलारे वाजपेयी तथा विष्णुचन्द्र शर्मा को "मेरी संगीत-कविताओं में निराला के उदात्त गीतों का आभास मिलता है;" वेशक, ऐसा कह कर उन्होंने "हिमायत की हद कर दी" पर यह सही है कि "मुक्तिवोध में भाषा और भावों की कहीं विविधता नहीं है" और उनकी रचनाओं से तुलना करने पर जानकी-वल्लभ के गीतों से "निराला की उदात्त और ललित गीत-कला की प्रत्यभिज्ञा सम्भव है" (उप०, पृष्ठ २; अवश्य ही यह उदात्त और ललित गीत-कला निराला की 'गीतिका' से वाहर कहीं विकसित हुई होगी!) रह गये अज्ञेय सो "अज्ञेय की इतिहास-निर्मात्री प्रतिभा अपाश्चात्य प्राणों को चौंकाती रहेगी, कभी भारत की आत्मा से एकाकार न होगी।" (उप०, पृष्ठ ४२)।

जानकीवल्लभ के कृतित्व और व्यक्तित्व से तुलनात्मक अध्ययन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त निराला ही हैं। प्रसिद्ध है कि निराला का जन्म वंगाल में हुआ था और वँगला उनके लिए मातृभाषा के समान थी। इस भाषा से जानकीवल्लभ का परिचय भी कुछ ऐसा ही था, "वँगला मैं वचपन से जानता था" (उप०, पृष्ठ २६)। निराला ने सोलह-सत्रह साल की उम्र में 'जुही की कली' लिखी, इसी उम्र में जानकी-वल्लभ भी कविताएँ रचने में निपुण हो गये थे। निराला का जन्म माघ में हुआ था, जानकीवल्लभ शास्त्री का जन्म भी माघ में हुआ, और विशेष वात यह कि निराला से

पहले हुआ । जब उन्होंने निराला को अपनी जन्म तिथि माघ शुक्ल द्वितीया बताई, तो निराला ने भावविह्वल होकर हवा में हाथ उछालते हुए कहा, "अरे-अरे ! तुम तो मुझसे तीन दिन बड़े निकले !" (उप०, पृष्ठ ५७) ।

शास्त्री जी ३ दिन की जगह ९ दिन कर सकते हैं क्योंकि निराला का जन्म पंचमी को नहीं एकादशी को हुआ था ।

निराला अपने और दूसरों के गीत बड़े सुन्दर ढंग से गाते थे । जानकीवल्लभ शास्त्री न केवल गीत-रचना में निराला से होड़ करते थे, वरन् संगीत में भी वह लगभग अद्वितीय थे । एक दिन की बात है, "मैं भैरवी में गा रहा था । [पन्त जी का एक गीत गा रहे थे ।] जिन्होंने उस अवस्था में मुझे सुना होगा, उन्हें मेरा आजकल वाला गला बिल्कुल ही बेसुरा, बासी और उतरा हुआ लगता होगा । तब की बात और थी । संस्कृत के अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में मेरा काव्य-पाठ सुनकर आँखों में आशीर्वाद भरे हुए श्रोता अनावश्यक साँस तक न लेते थे; फुसफुस करने वालों की फूँक सरक जाती थी ।" (उप०, पृष्ठ ३९) ।

बेशक, ऐसी सफलता निराला को किसी हिन्दी कवि-सम्मेलन में नहीं मिली । कलकत्ता अभिनंदन के समय जब जानकीवल्लभ शास्त्री के "भाषण का सारांश मोटे टाइप के शीर्षकों में दैनिक पत्रों ने दमकाकर छापा था", तब अनेक रागों में उन्होंने निराला के गीत सुनाये किन्तु जब निराला ने रामकृष्ण त्रिपाठी से बाजा मँगाया और स्वयं गाने लगे, तब "अपनी स्वर रचना में उक्त गीतों में नए प्राण प्रतिष्ठित कर मेरा (सभा में अलौकिक लोकप्रियता का) अहंकार हर लिया ।" (उप०, पृष्ठ ४०) ।

वैसे तो मनोहरा देवी ने अपनी संगीत-प्रतिभा से निराला का अहंकार हर लिया था, पर निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री का अहंकार हर लिया हो, यह बात समझ में नहीं आती । क्या यह बात सही नहीं है कि निराला ने "गीतिका की भूमिका में प्राचीन कवियों और गवइयों को अपने कँटीले तर्कों में बुरी तरह घसीटा था" ? (उप०, पृष्ठ ५२) । जानकीवल्लभ शास्त्री को रीतिवादी शास्त्र के आगे जैसे निराला की आलोचना पसन्द नहीं थी, वैसे ही 'गीतिका' की भूमिका में दरबारी गायकी की आलोचना भी उन्हें पसन्द न थी । यह बात आश्चर्यजनक ही होती यदि कविता और आलोचना के क्षेत्र में जानकीवल्लभ रीतिवाद के समर्थक होते और संगीत-क्षेत्र में उसके विरोधी होते । अतः निराला द्वारा उनके अहंकार-हरण की बात विनम्रता का प्रदर्शन मात्र है ।

हिन्दी साहित्य में जानकीवल्लभ शास्त्री को निराला की उतनी आवश्यकता न थी जितनी निराला को जानकीवल्लभ शास्त्री की । इसीलिए नन्ददुलारे वाजपेयी के साथ वह "छात्रावास में मुझे ढूढ़ते हुए मेरे कमरे में आये थे" (उप०, पृष्ठ २५) । जिन दिनों वह रायगढ़ में राजकवि थे और रूपनारायण पाण्डेय के पत्र उनके पास आते ही रहते थे, जिन दिनों "'माधुरी' में धड़ाधड़ मेरी रचनाएँ छपने लगी थीं; 'सरस्वती' ने भी प्रथम पृष्ठ पर मेरे कुछ गीत छापे थे; उन दिनों निराला ने अपने पत्रों में मुझसे तरह-तरह के साहित्यिक प्रश्न पूछे थे ।" (उप०, पृष्ठ ६०) । निराला

गीत लिख रहे थे—'ऐ कहो, मौन मत रहो।' उन्होंने सोलह शृंगार कौन-कौन से हैं, जानना चाहा। शास्त्री जी ने उन्हें सोलह शृंगारों के नाम लिख भेजे। निराला को "संस्कृत नाटकों पर वार्ता प्रसारित करनी थी" (उप०, पृष्ठ ६०), शास्त्री जी ने उन्हें अश्वघोष, दिङ्नाग आदि के अपेक्षाकृत अल्प प्रचलित नाटकों की सूची भेज दी। "एक वार बुद्ध और शंकराचार्य के दर्शनों में कहाँ-कहाँ समता है, इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी माँगी थी।" (उप०)। "मुझसे कालिदास और रवीन्द्रनाथ के मिलते-जुलते हुए भावों वाले पद पूछते" थे (उप०)। शास्त्री जी ने विनम्रतापूर्वक लिखा है कि निराला का अभिप्राय "मुझे हीनता की भावना से पीड़ित न होने देना ही था। वह क्या नहीं जानते थे!" (उप०)

निराला बहुत-सी बातें नहीं जानते थे। वह समझते थे कि उनकी 'तुलसीदास' कविता कालिदास से प्रभावित है पर कालिदास उन्हें प्रिय तो थे नहीं, फिर "जिसे कालिदास प्रिय न हों उसने संस्कृत पढ़ी ही नहीं······कालिदास का अध्येता 'चित्राङ्गदा', 'विदाय' 'अभिशाप' या 'फॉस्ट' लिखता है, 'तुलसीदास' नहीं।" (उप०, पृष्ठ ५३)। सिद्ध हुआ, निराला न तो कालिदास का काव्य समझते थे, न उनमें यह विवेक ही था कि वह पहचानते कि वह कालिदास से प्रभावित नहीं हुए।

निराला बँगला जानते थे, थोड़ी बहुत संस्कृत भी जानते थे, अंग्रेजी से भी परिचित थे, फिर भी उनके पास साहित्य का व्यापक परिप्रेक्ष्य न था। यही नहीं, वह शास्त्री जी के व्यापक परिप्रेक्ष्य को समझ न पाते थे, उल्टा उसे संकीर्ण वना लेने की सलाह देते थे। "मैं तव तक साहित्य को संस्कृत, अंग्रेजी, बँगला के व्यापक परिवेश में देखने लगा था, वह मुझे राष्ट्रभाषा हिन्दी के दायरे की याद दिलाते रहते थे।" (उप०, पृष्ठ १६३)

निराला को किन नए विषयों पर लिखना चाहिए, समय-समय पर जानकीवल्लभ शास्त्री उन्हें बतलाते रहते थे। रवीन्द्रनाथ का कविता-संग्रह 'कथा ओ काहिनी' पढ़ने के बाद "मैं प्रायः ही निराला जी से कहा करता था: आप भी कुछ ऐसी चीजें लिखें। सूरदास पर लिखने के लिए भी मैंने उन्हें जाने कितनी बार लिखा और कहा था। वह न लिख सके, पर उन्हीं दिनों उस भावी संकलन का नामकरण संस्कार हो गया था—गाथा।" (उप०, पृष्ठ २१६)

शास्त्री जी की सूचना के लिए यह कहना आवश्यक है कि निराला 'गाथा' में जैसी कविताएँ रखना चाहते थे, उन्हीं में सबसे पहली कविता 'तुलसीदास' थी। उसकी रचना के समय तक निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री के दर्शन न किए थे। 'तुलसीदास' के बाद वह सूरदास पर उसी ढंग की कविता लिखना चाहते थे किन्तु इस बीच सरोज का देहान्त हुआ और सूरदास पर लिखने के वदले उन्होंने 'सरोज स्मृति' कविता लिखी, फिर उसी क्रम में आगे 'राम की शक्ति पूजा'।

जानकीवल्लभ शास्त्री ने 'गाथा' नाम निराला से सुनकर उसे अपनी पुस्तक के लिए इस्तेमाल किया। फिर अपनी इस 'गाथा' पर निराला से सम्मति भी चाही। स्वभावतः "निराला ने जवाब में करारी डाँट पिलाई।" (उप०, पृष्ठ २२९)।

निराला की कविताओं में कहाँ कैसा सुधार अपेक्षित है, यह उन्हें बताना शास्त्री जी अपना कर्तव्य समझते थे। निराला ने उनकी इस्लाह मंजूर न की, तो इससे घाटे में निराला ही रहे। 'हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र' कविता में निराला ने पहले लिखा था—"मैं हूँ केवल किसलय-आसन।" जानकीवल्लभ ने सुझाया कि "किसलय" की जगह "पल्लव" लिखना ज्यादा मौजूं होता "क्योंकि पल्लव (पद्+लव) का 'पद' पद-प्रान्त एवं 'लव' (dividend) तक ध्वनि विस्तार कर अर्थ गौरव प्रदर्शित करता था।" किन्तु निराला ने "पल्लव" न लिखा, "किसलय" की जगह "पदतल" अवश्य कर दिया। "पल्लव" न लिखने से निराला घाटे में रहे क्योंकि "ऐसे तीक्ष्णता बढ़ गयी, पल्लव में फिर भी गूढ़ व्यंग्य था।" (उप०, पृष्ठ १३०)

'पल्लव' नाम की एक प्रसिद्ध कविता-पुस्तक छपी थी जिसके लेखक सुमित्रा-नंदन पंत थे। "पल्लव" लिखने में निराला को व्यंग्य बहुत गूढ़ न लगा हो, तो आश्चर्य नहीं।

दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे प्रतिभाशाली साहित्यकार का उचित मूल्याङ्कन हिन्दी में नहीं हुआ। कला के प्रति अपनी अडिग आस्था के कारण कलाकारों को अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। निराला के कष्टों को लेकर बहुत लिखा गया है किन्तु एक अन्य कला-कार के वैसे ही कष्ट उपेक्षित रहे। बनारसीदास चतुर्वेदी दिनकर के प्रशंसक थे। निराला ने सुझाया कि दिनकर के मुकाबले जानकीवल्लभ को खड़ा किया जाय। "कहना न होगा, मैंने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व को बुझ जाने देना पसन्द किया; किन्तु निराला को ऐसा अप्रिय और अवाञ्छनीय आन्दोलन कभी नहीं खड़ा करने दिया।" (उप०, पृष्ठ ८५)

निराला ने सुझाव दिया कि शास्त्री जी संस्कृत और आधुनिक हिन्दी कवियों की एक तुलनात्मक आलोचना लिख डालें, वह कोशिश करेंगे कि आलोचना छप जाय और उन्हें उस पर पारिश्रमिक मिले। इस सुझाव पर शास्त्री जी की टिप्पणी है, "मैं ऐसी (निराला द्वारा प्रस्तावित जैसी) आलोचना अनायास लिख सकता था; किन्तु यत्र-तत्र कलात्मक अभिव्यक्तियों में आंशिक समता देखना एक बात है, निराला, प्रसाद और पन्त को कालिदास, भारवि, भवभूति की कोटि का कवि समझना दूसरी।" (उप०, पृष्ठ १७१)। इस टिप्पणी से ऐसा लगता है कि निराला चाहते थे कि उन्हें ही नहीं, प्रसाद और पन्त को भी, कालिदास, भारवि, भवभूति की कोटि का कवि सिद्ध किया जाय। निराला ने शास्त्री जी से "पक्षपात रहित होकर" आलोचना लिखने के लिए कहा था (१६-२-४० का पत्र); शास्त्री जी ने उसका यही अर्थ लगाया कि उनसे संस्कृत के मुकाबले हिन्दी का पक्षपात करने को कहा जाता है। इसी संदर्भ में अपने आत्म त्याग के बारे में शास्त्री जी ने लिखा, "मैं वर्षों बेकार रहा, भूखों मरा, मगर आत्मा के प्रतिकूल यह अर्थप्रद कार्य नहीं किया।" (उप०, पृ० १७१)

निराला दूसरों को दिए हुए अपने ही उपदेश भूल जाते थे। स्वार्थवश कला की साधना छोड़कर द्रव्य की साधना करने लगते थे। जानकीवल्लभ शास्त्री ऐसे प्रलोभनों से दूर रहते थे। निराला चाहते थे, जानकीवल्लभ शास्त्री के यहाँ कवि-सम्मेलन हो

और कविता-पाठ के लिए उन्हें उचित पारिश्रमिक मिले; "फीस पूरी नहीं, तो जाने लायक दिलाने की बातचीत कीजिए, वहाँ तो अच्छे-अच्छे आदमी हैं। काव्य-प्रेमी भी होंगे।" (७-७-४५ का पत्र)। इस पर शास्त्री जी कहते हैं, "प्रचार और विज्ञप्ति से पृथक् रहकर अखंड साधना का सतत उपदेश निराला भूल गए थे शायद।" (उप०, पृष्ठ २३१)।

जानकीवल्लभ शास्त्री और निराला में किसका व्यक्तित्व अधिक महान् है, इस बारे में अब संदेह की गुंजाइश नहीं रह जाती। और भी प्रमाण देखिए।

निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री को सम्मेलन में बुलाया, सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित डेढ़ सौ रुपये का खर्च स्वयं मंजूर कर लिया किन्तु "सब ठीक ठाक हो चुकने पर महज पैसे पर जान देने वालों के हाथ आत्मा के न बिक सकने से मेरा जाना स्थगित हो गया।" (उप०, पृष्ठ १९४)। विचार कीजिए, किसकी आत्मा बिकी और किसकी अनबिकी रह गई।

कलकत्ते में निराला के अभिनंदन के दौरान उन्हें सौ सवा सौ रुपयों का बटुआ भेंट किया गया। निराला ने बटुआ न लिया और जानकीवल्लभ से कहा, "तुम रखो। मैं क्या करूँगा?" इस पर शास्त्री जी ने कहा, "रामकृष्ण को दे देंगे।" तब निराला ने पूछा, "और तुम कौन हो?" इस पर शास्त्री जी ने बटुआ रख लिया। निराला के कुपित हो जाने का भय रहा होगा; वर्ना बटुआ अपने पास क्यों रखते? जब रामकृष्ण ने बटुआ माँगा तो शास्त्री जी ने देने से इन्कार किया। शास्त्री जी का कहना है कि रामकृष्ण ने उन्हें कठोर पत्र लिखा था और मुकदमा चलाने की धमकी दी थी, इसलिए उन्होंने बटुआ उन्हें न दिया। यह घटना १९५३ की है। इससे ४ साल पहले निराला के सर में चोट लगी थी। इस चोट का रहस्य शास्त्री जी की समझ में तब आया जब रामकृष्ण त्रिपाठी ने उनसे रुपये माँगे।

शास्त्री जी कहते हैं "अब कहीं निराला के माथे का घाव फूटा। सुना था, 'अपरा' पर जो उन्हें पारितोषिक मिला था, उसे उन्होंने नहीं लिया था। स्व० मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तव की विधवा के नाम उत्सर्ग कर दिया था। इस आत्मदान की खीझ स्वजनों ने उनकी खोपड़ी से निकाली थी। निराला ने मुँह ढँककर खोपड़ी खोलने वालों का किस्सा सुनाया था।" (उप०, पृष्ठ २६३)।

जिन निराला ने २१०० रुपये का पुरस्कार अपने स्वर्गीय मित्र की विधवा को दे दिया था, वह तो अखंड साधना का उद्देश्य भूल गये थे, जिन जानकीवल्लभ शास्त्री ने निराला को भेंट किया हुआ सौ सवा सौ रुपयों का बटुआ उनके पुत्र को देने से इन्कार किया, वह अपनी अखंड साधना में अडिग रहे, दोनों के व्यक्तित्वों के तुलनात्मक अध्ययन से कुछ ऐसे ही अद्‌भुत निष्कर्ष निकलते हैं।

जिन परिस्थितियों में जानकीवल्लभ का लालन-पालन हुआ, शिक्षण और विकास हुआ, उन्हें देखते हुए आशा की जा सकती थी कि अन्याय के विरुद्ध निर्धन और पीड़ित मनुष्यों के संघर्ष से उन्हें सहानुभूति होगी। किन्तु रायगढ़ के भूतपूर्व राजकवि ने इस संघर्ष का विरोध करने में अपना कल्याण समझा। व्यवस्था का विरोध करने के

बदले उन्होंने उससे समझौता किया और इस समझौते को अध्यात्मवाद की रेशमी चादर से ढँक दिया। सन् ३५ से ४६ तक का समय निराला के जीवन में और हिन्दी साहित्य के विकास में बहुत महत्वपूर्ण था। इस अवधि में निराला तथा पंत जैसे कवियों ने पुरानी कल्पना-भूमि छोड़कर यथार्थवाद की नई जमीन पर साहित्य रचना की। ऐसा प्रयत्न केवल हिन्दी में नहीं, अन्य भाषाओं में भी, अखिल भारतीय स्तर पर हुआ। इस विकास से जानकीवल्लभ शास्त्री को कोई सहानुभूति न थी। प्रगतिवादी आलोचकों से उन्हें नाराज होना ही चाहिए क्योंकि शास्त्री जी के अनुसार इन लोगों ने निराला की पृथिवी-स्थानीय, अन्तरिक्ष-स्थानीय तथा द्यु-स्थानीय जीवनानुभूतियों को "मिट्टी में मिलाकर प्रगतिशील समीक्षा की खाद" तैयार की थी। (उप०, पृष्ठ ४)। इन लोगों ने 'सरोज स्मृति' कविता के संदर्भ में सरोज की सामान्य चिकित्सा न हो पाने, प्रकाशक से रुपये न मिलने, निराला के अर्थकष्ट आदि की बातें की थीं। शास्त्री जी कहते हैं, "यह कसक वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था में आग लगाकर मार्क्सवाद की दुन्दुभी बन जाती तो निराला को विरज की बुलन्दी से मिट्टी में घसीट लाना क्या बुरा होता; किन्तु गीते मेरी तज रूपनाम···लिखने वाले की दमदार पीड़ा तूफानी नारेबाजी या दम दिलासे की नहीं हो सकती।" (उप०, पृष्ठ १३) निराला ने स्वयं 'सरोज स्मृति' में अपने अर्थ-संकट के बारे में जो कुछ लिखा है, उसे उद्धृत करना यहाँ अनावश्यक है। निराला का वेदान्त प्रगतिशील विचारधारा का विरोधी नहीं, उसका मित्र है। पर जानकीवल्लभ शास्त्री को हिन्दी साहित्य में अपनी स्थिति से जितना ही असन्तोष होता है, उतना ही वह अध्यात्मवाद का नारा जोरों से बुलन्द करते हैं, उतना ही प्रगतिवाद का विरोध करते हुए भारतीय संस्कृति की दुहाई देते हैं और पश्चिमी कुरूपता की भर्त्सना करते हैं। कहते हैं, "हम पश्चिमी कुरूपता को सौन्दर्य, अस्वस्थ प्रवृत्तियों को विकासशील और विवेक-विक्षेप को नई बौद्धिक उपलब्धि स्वीकारने के लिए विवश नहीं हैं।" (उप०, पृष्ठ ४३)। विवश होना भी नहीं चाहिए परन्तु इस पश्चिमी कुरूपता की लपेट में प्रगतिवादी ही नहीं, निराला भी, और निराला ही नहीं रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी आ जाते हैं।

'निराला की काव्य कला' निबन्ध में जानकीवल्लभ शास्त्री ने निराला के गीत 'कौन तुम शुभ्र किरण वसना' से रवीन्द्रनाथ की 'अचल आलोके रएछो दाँडाए' आदि पंक्तियों की तुलना करते हुए लिखा था, "पश्चिमी भावों के मिश्रण का पाप दोनों के सिर पर लदा है, इसलिए भारतीय दृष्टि से दोनों ही चित्र दूषित हैं।"

शास्त्री जी अतीन्द्रिय अनुभूति में विश्वास करते हैं ('निराला के पत्र', पृष्ठ १८), जन्म-जन्मान्तर से अन्तर्मन में जमी हुई प्रज्ञा की बात करते हैं (उप०, पृष्ठ २५), वह तन-मन से पृथक् आत्मा की अनुभूति करते हैं (उप०, पृष्ठ ५१), निष्कर्ष यह कि "भौतिकवादी की दृष्टि समसामयिक सृष्टि पर टिकती है, अध्यात्मवादी तात्कालिकता को अधिक महत्व नहीं देता।" (उप०, पृष्ठ ६९)

जन्म-जन्मान्तर में जो भी हुआ हो, इसी जन्म में अपने बाल्यकाल में शास्त्री जी को जो अनुभूतियाँ हुई थीं, और जो बहुत अतीन्द्रिय नहीं थीं, वे समय-समय पर

उनकी सुसंस्कृत अध्यात्मवादी चेतना को परेशान करती रही हैं। 'गाथा' में उन्होंने ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत की थीं जिन्हें कुछ लोग अश्लील कहते थे।

तू नंगी थी नहा रही, मुझ पर पड़ते ही दृष्टि—
पड़े सौ घड़े पानी के, ज्यों वची न सूखी सृष्टि। (उप०, पृष्ठ २१५)।

नग्न स्त्रियों के दिवा-स्वप्न से जानकीवल्लभ अध्यात्मवाद का कोई विरोध नहीं है, उसका **विरोध है समाज** व्यवस्था को वदलने के प्रयत्नों से, सामाजिक अन्यायों के खिलाफ मनुष्य **के संघर्ष से।**

अपने और निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन करके जानकीवल्लभ शास्त्री ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, उन्हें निराला-सम्वन्धी पुस्तकों में न पाकर वह क्षुव्ध हो उठते हैं। निराला के "जिन छोटे और खोटे कामों की अति यथार्थता में निराला का वड़प्पन झलकाया गया है, वस्तुतः वह विपन्न और अति श्रान्त मन का आंशिक चित्र मात्र है। वह महर्षि विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का, जूठा, मांस खाने जैसा है।" (उप०, पृष्ठ ६०)।

फिर शास्त्री जी निराला के ऐसे समालोचकों को कोसना शुरू करते हैं: "चौकोर तिकड़म से कमाई कीर्ति को कलेजे से लगाकर रखने वाले इतिहास के सतत प्रवाह की राह में पड़े हुए इस पर्वत को लाँघने की कोशिश में वह जाएँगे, अपने ही भूगोल में गोल हो जाएँगे, जाल डालकर भी मछुए उनके अष्टावक्र अस्थिपंजर का अता-पता न पा सकेंगे। निराला का अन्न, रस, प्राण छीनकर मुँह जुठारने वाले अव उसकी वाणी छीनने के लिए हाथ लपका रहे हैं, ऐसे हूठा देकर सरकसी मृत्यु-कूप में इतरा-इठला गाड़ी दौड़ाने वाले कव गाड़ी में हेला मारने के लिए हाय-हाय मचाएँगे, कहना कठिन नहीं है।" (उप०, पृ० ६२)

वचपन में पिता की गालियाँ सुनते-सुनते वहुत छोटी उम्र में वह उस विद्या में पारंगत हो गये थे और प्रायः निर्दोष व्यक्तियों पर उसका प्रयोग करके वह अपने को "योग्य पिता का योग्य पुत्र सिद्ध करने" लगे थे ('स्मृति के वातायन', पृष्ठ १४१)। वचपन का वह संस्कार मिटा नहीं; अपने उदात्त रूप में वह 'निराला के पत्र' की भूमिका में जहाँ-तहाँ प्रकट हैं।

वायीं ओर एक वुझा-सा शीशा और दाहिनी तरफ एक पुस्तक—रस गंगाधर। इन्हें "अक्सर सामने रखकर मैं अपने को लिखा करता था" (उप०, पृष्ठ १०)। वुझे शीशे की जगह अनवुझा शीशा आ गया, 'रस गंगाधर' की जगह और पुस्तकें आती-जाती रहीं। शीशे में अपनी छवि देखकर, पुस्तकें रटकर, जानकीवल्लभ शास्त्री ने वहुत कुछ लिखा, पर निराला को, या खुद को भी, पहचानने का यह तरीका वहुत अच्छा नहीं है। कारण यह कि "अहन्ता अंधकार है," और "अपने व्यक्तित्व का परिहार किए विना 'समग्र' पकड़ में नहीं आता। असीम आनन्द अहन्ता के उन्मूलन में से फूटता है।" (उप०, पृष्ठ १८) इन वाक्यों में वहुत सुन्दर उपदेश हैं। उनके अनुसार आचरण करने में कोई हानि नहीं है। तथास्तु।

५. शेष प्रसंग

एक लघु चर्चा और, फिर उसके बाद धन्यवाद, और बस।

निराला ने एक कविता लिखी थी—बापू, तुम मुर्गी खाते यदि। यह कविता भगवतीचरण वर्मा ने 'विचार' नाम के पत्र में छापी थी। इस कविता पर वर्मा जी ने टिप्पणी की थी, "अगर ऊल-जलूल बातें लिखना और उनकी घोषणा करना, अगर लोगों की सुरुचि पर प्रहार करना, अगर जनमत अथवा लोकमत की भद्दे तौर से हँसी उड़ाना ही उत्कृष्ट कला है, तो हम स्वीकार करते हैं कि निराला जी का इस युग का सर्वश्रेष्ठ कवि अथवा कलाकार होने का वह दावा जो वह अक्सर मौके-बे-मौके उचित-अनुचित ढंग से किया करते हैं, सोलह आना ठीक है।" और इसी तरह की कुछ और बातें। इस पुस्तक के पहले खंड में मैंने लिखा था कि वर्माजी ने निराला से यह कविता सुनी थी, 'विचार' के लिए उसे भेजने को कहा था, न भेजने पर उन्हें ताकीद की थी, कविता मिल गई तो कविता और अपने नोट की एक प्रूफ कापी उन्हें भेजी थी। इस विवरण पर वर्मा जी को आपत्ति हुई। वह आपत्ति अप्रैल-जून, १९६९ की 'आलोचना' में मेरी पुस्तक की समीक्षा करते हुए अमृतलाल नागर ने यों बयान की थी, "डा० शर्मा की किताब से मैंने यह जाना कि छोटे कद और बड़े बाँके मिजाज वाले हमारे भगवती बाबू का नाम निराला जी ने 'बेंटराज' रखा था। पढ़कर बड़ी जोर से हँसी आई, साथ ही अनूठे और उपयुक्त नामकरण करने वाली निराला जी की बैसवारी प्रतिभा की दाद दिए बिना भी न रहा गया। भगवती बाबू से भेंट होने पर जब यह प्रसंग आया तो वे बोले—'मैं तो अपनी लाइक्स और डिसलाइक्स (पसन्द और ना-पसन्दगी) में शुरू ही से निराला जी से एकदम साफ़ रहा। वे हमारे मुंह पर कहते थे, मैं उनके मुंह पर। मगर उनकी बापू तुम मुर्गी खाते वाली कविता को 'विचार' में मेरे द्वारा नोट लगाकर छापे जाने के प्रसंग में रामविलास ने मेरे साथ न्याय नहीं किया। मैंने न तो वह कविता मँगाई थी और न रिमाइन्डर भेजा था। यह ग़लत स्टेटमेंट है।'

"हमारे मित्र ज्ञानचन्द जैन ने कहा कि यह तो निराला जी के पत्र के आधार पर ही लिखा गया है। इस पर भगवती बाबू बोले—'बात उस पत्र से ही उठती है। निराला जी की यह बात कि कविता मैंने मँगाई थी और न पहुंचने पर रिमाइन्डर भेजा था, शत-प्रतिशत ग़लत है। तुम तो जानते ही हो, उन दिनों मैं पक्का गांधीवादी था, ऐसी कविता मँगाकर छापने का सवाल ही नहीं उठता। वह कविता मुझे दी गयी थी। बात यों हुई कि मैं इलाहाबाद गया था, वाचस्पति पाठक के यहाँ निराला जी से भेंट हुई। उन दिनों वे पाठक जी के यहाँ रहते थे। उन्होंने यह कविता सुनाई और मुझसे कहा कि छापोगे। पहले तो मैं सकुचाया पर जब उन्होंने मुझे दो बार चुनौती दी तो हमने भी कहा कि दे दीजिए, छापेंगे। निराला जी ने वह कविता मुझे वहीं दे दी। पाठक जी भी उस समय मौजूद थे।' "

यह विवरण सुनकर अमृतलाल नागर ने मेरे पक्ष में जो कुछ लिखा है, वह यह मानकर लिखा है कि वर्मा जी की कही हुई बात सही है। अवश्य ही वर्मा जी की स्मृति उन्हें धोखा दे रही थी जब उन्होंने कल्पना की कि निराला ने उन्हें अपनी कविता

इलाहाबाद में दी थी। यह कविता उन्हें इलाहाबाद में नहीं कलकत्ते में मिली थी, इसका प्रमाण निराला का पत्र ही नहीं, स्वयं भगवतीचरण वर्मा का पत्र है जो उन्होंने कविता मिलने पर निराला को लिखा था। इस पत्र का हवाला इस पुस्तक के पहले खंड में भी है और इस तीसरे खंड में वह पूरा पत्र प्रकाशित है। २७ जून १९४० के इस पत्र में वर्मा जी ने निराला को लिखा था, "आपकी कविता मिली, धन्यवाद—कोटि कोटि धन्यवाद ! उसे मैं 'विचार' के अगले अंक में अपने सम्पादकीय नोट के साथ प्रकाशित कर रहा हूँ। नोट और कविता का प्रूफ आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।"

यदि वह इलाहाबाद से निराला के चुनौती देने पर कविता ले गये होते तो उसके मिलने की सूचना कलकत्ते से निराला को लखनऊ के पते पर न भेजते, न उसके लिए उन्हें कोटि-कोटि धन्यवाद देते। कविता उन्होंने इलाहाबाद में सुनी जरूर होगी लेकिन वह उन्हें वहाँ प्राप्त न हुई थी। इसीलिए सम्पादकीय नोट पढ़कर निराला ने भगवतीचरण वर्मा को याद दिलाया था, "नोट में आप इतना लिखना भूल गए हैं कि यह रचना आपने छापने के लिए खुद माँगी थी और न भेजने पर फिर याद भी दिलाई थी।"

दिलचस्प बात है, यह कविता छापने के बाद, उस पर वैसा सम्पादकीय नोट लिखने के बाद भी, भगवतीचरण वर्मा 'विचार' में प्रकाशन के लिए निराला से रचनाएं मँगा रहे थे। २९ जुलाई १९४१ के पत्र में निराला ने इस तरह की सूचना कुँवर सुरेश सिंह को दी थी, "भगवतीचरण वर्मा का एक पत्र आपके पत्र के साथ आया है। उसमें उन्होंने लिखा है—'हमने सुना है कि आप कहानी तगड़ी लिखते हैं। लिहाजा हमें कहना यह है कि पूजा के अवसर 'विचार' का एक विशेषाङ्क निकल रहा है। उसके लिए एक कहानी और एक कविता आप भेजें। कहानी और कविता दोनों ही भेजनी होंगी, समझे आप ?' "

अवश्य ही निराला ने कुँवर सुरेश सिंह को भगवतीचरण वर्मा के इस पत्र की बात मन से गढ़कर न लिखी थी। निराला उन्हीं के वाक्य उद्धृत करके कुँवर सुरेश सिंह को सुना रहे थे कि भगवतीचरण वर्मा ने ऐसा-ऐसा लिखा है। अब रही बात वर्मा जी के पक्का गांधीवादी होने की, और ऐसी कविता मँगाकर छापने के सवाल न उठने की, तो वर्माजी ऐसे पक्के गांधीवादी कभी थे नहीं जैसे वह बातचीत में अमृतलाल नागर को जताना चाहते थे। 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' जैसे उपन्यास उनकी राजनीतिक दृष्टि के परिचायक हैं। वे इतने गांधीवादी जरूर थे कि 'विचार' में 'बापू तुम मुर्गी खाते यदि' जैसी कविता छापें और निराला को बदनाम करके मज़ा लें। उनके सामने 'वर्तमान धर्म' वाला आन्दोलन नमूने के तौर पर पहले से मौजूद था। निराला ने इसी की ओर अपने पत्र में संकेत किया था, "अपने जैसे और अनेकों का जो मेरी कला के सम्मतिदाताओं में उल्लेख किया है, यह उनके प्रति आपकी उदारता है; उनके नाम भी आप लिख देते तो पाठकों को भ्रम में न पड़ना पड़ता।"

अपनी समझ में मैंने वर्माजी के साथ कोई अन्याय नहीं किया और न निराला ने अपने पत्र में कविता के मँगाने के बारे में जो कुछ लिखा था, वह एक प्रतिशत भी

गलत था।

इस तीसरे खंड में जितनी भी सामग्री संकलित है, उसके लिए मैं सबसे पहले और सबसे अधिक निराला का ऋणी हूं। लखनऊ छोड़ते समय वे बहुत-सी पत्र-सामग्री मुझे दे गए थे जिसका आंशिक उपयोग, उनके जीवन काल में प्रकाशित, उन पर अपनी पहली पुस्तक में मैंने किया था। वह सामग्री पूरी की पूरी यहां प्रकाशित की जा रही है। निराला सामग्री-संकलन के प्रति अत्यन्त सजग थे। उनके फक्कड़पन की कहानियों के कारण जैसे उनका गृहस्थ रूप आँखों से ओझल हो गया है, वैसे ही और इसी कारण उनका सावधान संग्रहकर्त्ता वाला रूप भी लोगों की आंखों से ओझल है। किन्तु निराला ने गढ़ाकोला में रहते समय साहित्यिक मित्रों से प्राप्त पत्र सावधानी से रखे। इसके अतिरिक्त जहाँ बन पड़ा, वे अपने भेजे हुए पत्र भी वहां से उठा लाए। सास, साले, दामाद के नाम भेजे हुए पत्र इसी तरह उन्होंने प्राप्त किए और अपने संग्रह में उन्हें सुरक्षित किये रहे। अपने चचेरे भतीजों को भेजे हुए मनीआर्डरों की रसीदें, अनेक पत्रों की प्रतिलिपियाँ, अधूरे पत्र आदि, जीवन के एक चरण में, उन्होंने कुछ भी नष्ट न होने दिया था। आश्चर्य की बात है कि नन्ददुलारे वाजपेयी की पचीसों चिट्ठियाँ निराला के पास सुरक्षित रहीं और निराला के पत्र नन्ददुलारे वाजपेयी के यहां सुरक्षित न रहे। इस बात पर विश्वास करने को जी नहीं चाहता। मुझे अब भी आशा है कि न केवल नन्ददुलारे वाजपेयी को वरन् सुमित्रानन्दन पन्त और दुलारेलाल भार्गव को भी लिखे हुए निराला के पत्र एक दिन प्रकाशित हो जाएँगे।

निराला के बाद इस खंड की तैयारी में रामकृष्ण त्रिपाठी ने मेरी यथेष्ट सहायता की है। निराला ने उन्हें जो पत्र लिखे थे, वे सारे पत्र यहां प्रकाशित करने की अनुमति उन्होंने मुझे दी, इसके लिए मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। उनसे कई तरह की उपयोगी जानकारी भी मुझे प्राप्त हुई; उसका यथास्थान उल्लेख मैंने कर दिया है।

नागरी प्रचारिणी सभा काशी के अधिकारियों ने द्विवेदी-संग्रह में निराला के पत्र मुझे देखने दिए और उन्हें प्रकाशित करने की अनुमति दी। शिवपूजन सहाय ने पटना में अपना सारा पत्र-संग्रह मेरे सामने रख दिया और उसमें मुझे वे पत्र भी मिले जिनकी ओर शिवपूजन सहाय का ध्यान न गया था। अपनी जानकारी से उन्होंने मेरी विविध सहायता की, वह तो की ही। जयशंकर प्रसाद को लिखे हुए निराला के पत्र रत्नशंकर प्रसाद की कृपा से प्राप्त हुए। हरिशंकर शर्मा ने अपने पिता नाथूरामशंकर शर्मा को लिखा हुआ निराला का पत्र मुझे दिया। निराला के बाल सखा रामशंकर शुक्ल ने जो पत्र आदि उनके पास थे, मुझे भेज दिए। नलिनविलोचन शर्मा की पत्नी श्रीमती कुमुद शर्मा ने अपने यहां की सामग्री मुझे दी। कलकत्ता प्रवास के समय निराला के शिष्य और मित्र दयाशंकर वाजपेयी को लिखे हुए पत्र मुझे उनके पुत्र शान्तिस्वरूप वाजपेयी से प्राप्त हुए। बनारसीदास चतुर्वेदी, परमानन्द शर्मा, उग्र, गंगाप्रसाद मिश्र, केदारनाथ अग्रवाल, अमृतलाल नागर, गंगाधर शास्त्री, मेरे लखनऊ के मित्र रामप्रसाद उर्फ लल्लू ने अपने पास के पत्र मुझे दिए। राजा बख्शसिंह के नाम निराला के पत्र कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह ने भेजे। कुंवर सुरेशसिंह से उन्हें लिखे हुए निराला के पत्र

प्राप्त हुए। वाचस्पति पाठक को लिखे हुए निराला के पत्रों की प्रतिलिपि त्रिलोचन शास्त्री ने करके भेजी थी; उन्हें प्रकाशित करने की अनुमति पाठक जी से प्राप्त हुई। गुलाबराय, शिवशेखर द्विवेदी, उदयशंकर शास्त्री, नागार्जुन, विष्णुकान्त शास्त्री, शिवमंगलसिंह सुमन, कल्याणमल लोढ़ा, जगतपतिशरण निगम, घनश्याम अस्थाना, ब्रज किशोर सिंह, रमेशचन्द्र दुबे आदि महानुभावों ने अनेक प्रकार से मेरी सहायता की है। एक तरह से यह पुस्तक सामूहिक प्रयास का फल है। इसके लिये मैं सभी सम्बद्ध व्यक्तियों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

आगरा, | रामविलास शर्मा
२६-१२-७५

पहला भाग

(निराला को लिखे हुए पत्र)

१. महावीरप्रसाद द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
४-६-२१

शुभाशिषः सन्तु

आशा है, आप अच्छी तरह हैं। कुशल समाचार भेजिए।

फरवरी २१ की सरस्वती लौटा दीजिए। कभी कभी काम पड़ता है। जो पुस्तकें आप पढ़ चुके हों उन्हें भी डाक से भेज दीजिए।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

[पता]

पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी
मौजा गढ़ाकोला
डाकखाना मगरायल (उनाव)
P. O. Magrail
(Unao)

२. महावीरप्रसाद द्विवेदी

जुही, कानपुर
२१-९-२१

आशीष,

१६ सितंवर की चिट्ठी मिली। प्रताप प्रेस वालों ने २०) या २५) पर काम देने को कहा है, शुरू शुरू में। पर जल्दी वुलाया है।

मैं आजकल तकलीफ में हूं। यहां पर बड़ी भानजी दस रोज से बीमार है। बुखार कभी कभी १०४, १०५ दरजे तक हो जाता है। भानजा भी बीमार है।

शुभैषी
म० प्र० द्वि०

[पता]

पण्डित सूर्य्यकान्त त्रिपाठी
मौजा वसियां
डाकखाना ईंदामऊ (उन्नाव)
P. O. Indamau
(Unao)

[कार्ड की दूसरी तरफ खाली जगह में निराला ने लिखा :

श्री हरिः
कृपा पत्र मिला
श्री वहिन की बीमारी
का हाल मिला ।]

३. रघुनन्दन शर्मा

ओ३म्

कानपुर
[२१-१०-२१]

श्रीयुत पं० सूर्यकुमार जी,

नमः

मैं दृढ़ आशा के साथ लिख रहा हूं कि आपने स्थिर कार्य आरंभ कर दिया होगा या शीघ्र ही आरंभ करने की चिन्ता में होंगे। यदि ग़फलत में होंगे तो मैं नहीं कह सकूंगा कि आपके मन में क्या है।

जो कार्य उस दिन मैंने स्थिर किया है अव्यर्थ है, मांगलिक है और सारी व्यग्रताओं को दूर करने वाला है। आर्थिक दृष्टि से उससे अच्छा कार्य किसी भी स्वावलम्बी के लिए न तो सोचा जा सकता है और न अब तक उपलब्ध है। मैं उत्तर की प्रतीक्षा में हूं कि आप लिखें कि सिद्धि प्राप्त हो गई।

विशेष कुशल है [।] मैं दीपमालिका के दो दिन आगे पीछे आऊंगा—इति

शीघ्र उत्तराभिलाषी
रघुनन्दन

पं० सत्यदेव वैद्य का मकान; प्रयाग
नारायण का मंदिर कानपुर

[पता]

P. Surya Kumar Tewari
Garhakola गढ़ाकोला
P. O. Magrayar
Dt. Unao

['अक्षर विज्ञान' के लेखक रघुनन्दन शर्मा ने निराला के लिए कौन-सा कार्य स्थिर किया था, यह अज्ञात है।]

४. महावीरप्रसाद द्विवेदी

जुही, कानपुर
१-११-२१

आशीष,

मेरी तबीयत पहले से कुछ अच्छी ही है। पर कमज़ोरी बहुत आ गई है। परसों से दुलारी (बड़ी भानजी) और छोटी बिट्टी भी फिर बुखार में पड़ी हैं। देखूं कैसे इन तकलीफ़ों से नजात मिलती है। मैंने रामकृष्ण मिशन के स्वामी जी को लिख दिया है कि संपादक दरकार हो तो मुझसे सलाह कर लें।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

[पता]

Soorya Kant Tripathi
Garhacola-vill.
P. O. Magrair
(Unao)

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
गढ़ाकोला
मगरायल उनाव

[जवाबी कार्ड पर अंग्रेजी में पता निराला का लिखा है, हिंदी में द्विवेदी जी का। रामकृष्ण मिशन के स्वामी, माधवानन्द, हैं।]

५. महावीरप्रसाद द्विवेदी

जुही, कानपुर
६-११-२१

आशीष

मायावती-आश्रम के स्वामी माधवानंद आज आये थे। उनसे आपका हाल कहा। यह भी कहा कि ५०) मासिक कम से कम मिलने पर आप कलकत्ते जा सकेंगे।

उनका पता उद्बोधन आफिस, बाग बाजार, कलकत्ता है। आपको वे शायद लिखेंगे। पता ले लिया है। एडिटर के लिए वे विज्ञापन दे चुके हैं। बहुत संभव है वे आप ही को लें।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

[पता]

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
मौज़ा गढ़ाकोला
डाकखाना मगरायल (उनाव)
P. O. Magrail
Unao

६. महावीरप्रसाद द्विवेदी

सूर्यकान्त जी

इस चिट्ठी को लेकर आप बनारस चले जाइए। मैंने आपके विषय में सब कुछ बाबू शिवप्रसाद जी को लिख दिया है। कलकत्ते से बनारस अच्छा है। मैं १ दिसंबर को गांव चला जाऊंगा (।)

म० प्र० द्वि०
२८/११/२१

[महावीरप्रसाद द्विवेदी ने यह नोट पेंसिल से शिवप्रसाद गुप्त के पत्र पर लिखा है। पत्र पर ज्ञानमंडल का ब्लाक छपा है : सबसे ऊपर ब्रह्म देश समेत हिन्दुस्तान का नक्शा, नक्शे के बीच में "ॐ", अरब समुद्र में "बन्दे" और बंगाल की खाड़ी में "मातरम्"; "ज्ञानमंडल कार्यालय काशी"—बड़े बड़े अक्षरों में, इसके ऊपर छोटे अक्षरों में—"ज्ञान-मंडल ग्रन्थमाला," नीचे वैसे ही छोटे अक्षरों में "हिन्दी पुस्तक प्रकाशक"; दाहने किनारे पुष्पों-पत्तों के बीच तीन पुस्तकों पर रखी चौथी पुस्तक के खुले पृष्ठों पर छपा है : "हिन्दी पुस्तक विक्रेता"। शायद पता नाकाफी समझ कर द्विवेदी जी ने उसकी सजधज के नीचे लिखा :

ज्ञानमंडल प्रेस
और
ज्ञानमंडल कार्य्यालय
महल्ला
कबीरचौरा
बनारस

शिवप्रसाद गुप्त का पत्र उनके कर्मचारी ने लिखा है, उसके अंत में "विनीत शिवप्रसाद गुप्त" तथा बीच में "घर में विवाह होने के कारण" गुप्त जी का लिखा हुआ है। पत्र यों है :

"श्री पूज्य पण्डित जी,

आपने जिन सज्जन के विषय में लिखा था, कृपा कर उन्हें आप काशी भेज दीजिए। यदि उनके योग्य कोई कार्य ज्ञानमण्डल, इत्यादि में मिल सका तो मैं उन्हें अवश्य रख लूंगा, अन्यथा उन्हें आने जाने का व्यय देकर जैसा कुछ उचित होगा, उत्तर दे दूंगा। आप उन्हें काशी में सीधे ज्ञानमण्डल कार्यालय (कबीर चौरा) में आने के लिए कह दीजिये। मुझे आजकल घर में विवाह होने के कारण अवकाश बहुत कम मिलता है, अतः संभव है मैं उन्हें घर पर न मिल सकूं। इसलिए ठीक यही होगा कि वे स्टेशन से उतर कर सीधे ज्ञानमण्डल कार्यालय में ही चले आवें। मैंने ज्ञानमण्डल कार्यालय के व्यवस्थापक श्री मुकुन्दीलाल जी को आदेश दे दिया है। वे उनके ठहरने का यथोचित प्रबन्ध कर देंगे।

विनीत
शिवप्रसाद गुप्त"]

७. महावीरप्रसाद द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
१७-१२-२१

आशीष,

आपके दोनों कार्ड मिल गये। मैं यहां २ दिसंबर को आया। ५ से ११ तक फिर बुखार में पड़ा रहा। अब अच्छा हूं।

दुलारी १ दिस० बृहस्पति को ही गई थी। साथ छापेखाने का एक लड़का था। दुलारी को आप पहचानते नहीं। वह मेरी बहन की नातिन है। विधवा है।

जान पड़ता है स्वामी जी ने बहाना कर दिया है। पसंद किसी और ही को किया होगा। ख़ैर उनकी इच्छा। इधर बनारस जाने में भी आपने देर कर डाली।

आप जब चाहें चले आवें। मगर आठ कोस पैदल आने जाने में आपको कष्ट होगा। जो पूछना था, चिट्ठी से क्यों न पूछ लिया?

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

८. सुमित्रानन्दन पन्त

३, म्योर रोड
प्रयाग।
३१. मार्च '२६

प्रियवर निराला जी,

आप मुझे पत्र क्यों नही लिखते? मैंने एक बार श्रीयुत मतवाला-सम्पादक जी से आपका पता भी पुछवाया था, पर तब आप अपने गाँव में थे।

कल श्रीयुत शान्तिप्रिय द्विवेदी जी मुझे मिले [;] उन्होंने आपके विषय में चर्चा की। मैं बहुत चाहता हूँ कि आप मुझे अपने कृपापत्रों से बराबर आभारी करते रहें। आपके पुराने पत्र कल मैंने पढ़े, वे कैसे स्नेहपूर्ण हैं! क्या आप अब मुझसे नाराज हैं? मैंने ऐसा क्या अपराध किया, निराला जी? क्या आप मुझे बतलावेंगे? यदि मुझसे अनजान में कुछ हो भी पड़ा तो क्या आप मुझे क्षमा न करेंगे?

पिछले वर्ष मेरा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा, अब भी अधिक अच्छा नहीं, इसीलिए मैं आपको न लिख सका—मैंने कोई नवीन कविता भी परिवर्तन के बाद नहीं लिखी।

श्रीयुत शान्तिप्रिय द्विवेदी जी कहते थे कि आपका स्वास्थ [स्वास्थ्य] भी अच्छा नहीं रहता, आप बहुत दुबले हो गए हैं—आप क्यों अपने स्वास्थ्य को नहीं सुधारते? खूब तनदुरुस्त तथा सुन्दर बन जाइए निराला जी, अपना खूब यत्न कीजिए। आप कभी प्रयाग भी नहीं आते। आपके दर्शन कब होंगे?

मैं एप्रिल के अन्तिम सप्ताह तक यहाँ हूँ फिर अलमोड़ा चला जाऊँगा, अगस्त में फिर लौट आऊँगा।

आजकल इण्डियन प्रेस में मेरी कविताओं का एक संग्रह छप रहा है, नाम "पल्लव" है। एप्रिल के अन्त तक प्रकाशित हो जाएगा।

आप आजकल क्या करते हैं? स्वास्थ्य आपका कैसा है? आप मेरे पत्र का उत्तर तो देंगे? मुझे अवश्य पत्र लिखा कीजिए निराला जी, आप बड़े अच्छे पत्र लिखा करते थे, न जाने फिर क्यों नाराज हो गए?

आपका पत्र पाकर मैं प्रसन्न रहूँगा, आप अवश्य लिखिए, शीघ्र ही लिखिए—

आपकी कविताएँ कभी २ "मतवाला" में पढ़ने को मिल जाती हैं—

क्या आप ही के शब्दों में आपको लिखना पड़ेगा—"जागो एक बार!"

आप वैसे ही स्नेहपूर्ण, कृपापूर्ण पत्र मुझे लिखा कीजिए, मुझे उनकी बड़ी जरूरत है, मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।

अपना यत्न कीजिए—पत्र अवश्य दीजिए—

और आपको क्या लिखूं—मुझे विश्वास है आप मुझ पर अवश्य कृपा करेंगे—

मैं अच्छा हूँ—
आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

९. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी,
Benares City
३/४/२६

गुरुदेव, प्रणाम।
वहुत दिन हुए मैंने आपको एक कार्ड भेजा था, उत्तर न मिला। आशा है, आप सस्वस्थ हैं—मैं भी।

परसों मैं इलाहावाद गया था—पन्त जी के शुभ-दर्शन हुए। दरअसल वे दर्शनीय हैं। उनकी कविताओं का एक वृहत्-संकलन "पल्लव" नाम से इण्डियन-प्रेस से अप्रैल तक निकल जायगा—उसकी भूमिका में पन्त जी ने आपकी शैली पर जो आलोचना की है—विचारणीय है।

अधिक क्या लिखूं? पन्त जी को मैंने अपनी हाल में लिखी हुई कुछ कविताएँ दिखलाई थीं, आश्चर्य है वे उसमें 'शेली' और 'बाइरन' के भावों की महँक पाते हैं और अपनी भी। खैर।

विजय और पद्म को प्रेम। उनका कोई पत्र नहीं मिलता—क्या वात है?

विनीत—
शान्तिप्रिय द्विवेदी

सेठ जी, मुन्शी जी,
दयाशंकर जी को नमस्कार

[पता]

श्रद्धेय
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
'मतवाला-मण्डल'
३६, शंकरघोष लेन,
कलकत्ता—Calcutta

१०. सुमित्रानन्दन पन्त

३, म्योर रोड,
प्रयाग
१६.४.'२६

प्रियवर निराला जी,

आपको एक पत्र लिखा था, उत्तर की प्रतीक्षा करते २ हार गया—क्या आप मुझे शीघ्र पत्रोत्तर देकर आभारी नहीं कीजिएगा?

पत्र अवश्य दीजिएगा निराला जी, मैं बड़ा उत्सुक हूँ। आजकल मुझे खूब लम्बे चौड़े पत्र अच्छे लगते हैं [।] अभी खूब बड़ा सा पत्र लिखिएगा—आशा है आप मुझे हताश न करेंगे—

आपका सविनय—
सुमित्रानन्दन पन्त

[पता]

Sriyut.
Suryakanta Tripathi je,
"Nirala"
C/o
The Editor **Matwala**
26, Shunker Ghose Lane
Calcutta

११. सुमित्रानन्दन पन्त

प्रयाग
१-५/२६

प्रियवर निराला जी,

प्रिय-पत्र आपका मिला, जुकाम से बेचैन था इसलिए विलम्ब से उत्तर दे रहा हूँ क्षमा कीजिए—

आपने अपनी लेखनी की नोंक पूरी ताक़त से मेरे हृदय में चुभा दी, क्या आपको यह अच्छा लगता है ? भला, बतलाइए तो कौन से वे पुराने नियम हैं जिनके दलदल में आपके पत्र ग़ायब हो गए ? और कितने आपके पत्र ग़ायब हुए ?

केवल एक पत्र को छोड़ कर—जो शायद आपका अन्तिम था—और जो मेरे बड़े भाई साहब के मेज की दराज़ में ३ महीने तक पड़ा रहा, वे मुझे देना भूल गए—और कौन सा पत्र आपका कब ग़ायब हुआ ? उस पत्र में आपने मेरी कविताओं की आलोचना की थी, जो अशुद्धियाँ बतलाई थी मैंने ठीक करलीं [।] उन दिनों मेरा मानसिक-स्वास्थ्य इतना खराब था कि मैं आपको यह सब न लिख सका—आप ही बतलाइए क्या इसी बात को लेकर आपको रुष्ट हो जाना चाहिए था ? ख़ैर misunderstanding हो ही जाती है, मैं आपसे अपने जाने अनजाने अपराध के लिए बार २ क्षमा माँगता हूँ—मुझे आशा है भविष्य में आप मुझ पर वैसा ही स्नेह रक्खेंगे मुझे विश्वास भी है—

अब आप मुझ पर कभी अपने व्यङ्ग्य-वाण न छोड़िएगा—"पल्लव" के लिए जो आपने बधाई दी धन्यवाद। अभी प्रकाशित नहीं हुआ, शायद मई के अन्त तक हो जाय।

अपना यत्न कीजिए, पत्र अवश्य प्रदान कीजिए—

आपका
सुमित्रानन्दन पंत

१२. शिवपूजन सहाय

दण्डपाणि भैरव, (काशी)
मुहल्ला, कालभैरव
Benares City
29/5 [१९२६]

मान्यवर निराला जी

सादर सप्रेम प्रणाम।

आपका कृपापत्र और रस अलंकार नामक ग्रंथ मिला। धन्यवाद। मेरी स्त्री जब से आई, सख्त बीमार है। बहुत परीशान हूँ। चित्त स्थिर नहीं है। चिन्ता और चंचलता के कारण समय पर आपको उत्तर न दे सका। क्षमा चाहता हूँ।

आपके घर २५) भेजने के लिये लहेरियासराय पत्र लिख दिया है। आप भूमिका आदि भेज दीजिए। पुस्तक शीघ्र ही प्रेस में जायगी।[1] प्रूफ़ भेजूंगा। बेनीपुरी भी घर गये हैं—बीमार होकर। यहीं से ज्वरग्रस्त होकर गये थे। शान्तिप्रिय जी सदा मिलते हैं। आपको प्रायः स्मरण करते हैं। मैं स्त्री की बीमारी से कहीं आ-जा नहीं सकता। बड़े संकट में जी पड़ा है। पत्रोत्तर में देर होने से आप कोई दूसरी बात न समझें। आप के लिये काम की कोशिश कर रहा हूँ। हाथ में आते ही भेजूंगा। आप प्रकाशकों की और हिन्दी संसार की हालत जानते ही हैं। अधिक क्या लिखूं। मुंशी जी को एक पत्र लिखा था। उत्तर नहीं मिला। मतवाला के केस का हाल सुना। वह एक निश्चित होनी थी। आखिर होकर ही रही। विश्वास है कि मतवाला विचलित नहीं होगा। बनारसी लोग तो ऐसी ही चर्चा करते हैं। मैं जब से आया, मतवाला के किसी अंक के दर्शन नहीं हुए। ॐशान्तिः वाला एक अंक भेजने को कह दीजियेगा। जरा स्वस्थ-चित्त होकर कुछ लिखूंगा। रूपनारायण जी आये थे। आपको पूछते थे। बिहारी सम्मेलन के समय (२२ जून) तक स्त्री को कुछ आराम हुआ तो लहेरियासराय जाऊँगा और आपके महाकाव्यों के विषय में बातें करूंगा। मुझसे जहाँ तक हो सकेगा, कोई कसर न रक्खूंगा। आइन्दे हिन्दी का भाग्य। यहाँ आने के बाद से तिमारदारी में इस क़दर फँस जाना पड़ा है कि जिसका पैसा खाता हूँ उसका कुछ काम नहीं हुआ। बड़े संकोच और संकट में जान पड़ गई है। शुरू में मुन्शी जी के आने की प्रतीक्षा करता रहा। फिर मामले का हाल सुनकर समझ गया कि अभी देर है। ब्रजकिशोर और बबुनी का समाचार लिखियेगा।

यहाँ के एक सज्जन रामचन्द्र कपूर पूछते थे कि रवीन्द्र गांधी सम्बंधी निराला जी का लेख कृष्णसंदेश में कब पूरा होगा। मैंने कह दिया कि निराला जी अस्वस्थ हैं। क्षमा कीजिएगा।

आपका कृपाकांक्षी—शिवपूजन

२५) रुपये आपके घर चले जायँगे उसी पते पर जो आपने लिखा है। वहाँ से पत्र आने पर सूचना दूंगा। शिव०

[पुस्तक प्रेस में नहीं गई, न निराला को प्रूफ भेजे गये। मुंशी—नवजादिक लाल श्रीवास्तव।]

१३. रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी मन्दिर, प्रयाग
२८-९-२६

प्रिय त्रिपाठी जी,

नमस्कार। कविता-कौमुदी के दूसरे भाग में मैं आपकी जीवनी और चुनी हुई कविताओं का संग्रह देना चाहता हूँ। आशा है, इस काम में मुझे आपसे काफी सहायता मिलेगी। आपकी जो जो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हों कृपया उन्हें वी० पी० से भेजवा दीजिये और कुछ कविताएं जो अप्रकाशित हों, उन्हें भी कृपया नकल करा के भेजवा दीजिये। जीवनी किसी मासिक पत्र में प्रकाशित हुई हो तो कृपया उसका वह अंक वी० पी० से भेजवा दीजिये। न प्रकाशित हुई हो तो कृपा कर किसी मित्र से लिखवाकर भेजवा दीजिये।

आशा है आप स्वस्थ और खुशी होंगे।

आपका
रामनरेश त्रिपाठी

कविता-कौमुदी प्रेस में जा चुकी है, कृपया जीवनी और कविताएँ जल्दी भेजवाइयेगा।

१४. रामनरेश त्रिपाठी

[राज्य की मुद्रा]

C/o Shanti Bhavan,
Deara Raj,
Sultanpur,
OUDH.
[१६(?)-१०-२६]

प्रियवर निराला जी,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद।

मैं इस पत्र द्वारा आपसे पूरा अनुरोध करता हूँ कि आप कृपया अपनी जीवनी किसी से लिखवा कर भेज दें। और अपनी कविताएँ भी चुन दें। आप हिन्दी कविता में

एक नये युग के प्रवर्त्तक हैं। आपका यथेष्ठ वर्णन हुये बिना वर्तमान कविता का इतिहास अधूरा ही रह जायगा। आपकी जीवनी और कविताएँ कविता कौमुदी में न जायँगी तो सचमुच मुझे हार्दिक दुःख होगा।

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरा आग्रह न टालेंगे। मैं अपने एक मित्र के यहाँ ठहरा हूँ! अतएव पत्र ऊपर के पते पर ही भेजिए।

आपका—
रामनरेश त्रिपाठी

[पत्र पर वड़ा बाजार कलकत्ते की डाक मुहर में तारीख है: १८ अक्तूबर २६।]

१५. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. राधाकृष्णदास B.A. कोठी-भदैनी
Benares १६-११-२६

प्रणाम। वहुत दिनों पर एक कृपा-कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई।

मुझे कल स्थानीय दैनिक "आज" में आदरणीय पं० श्री नंदकुमार देव शर्म्मा की मृत्यु का समाचार पढ़ कर वड़ा खेद हुआ। मेरा प्रिय मित्र 'विजय' अनाथ होगया। हायरी प्रभु की लीला! पिता की मृत्यु से 'विजय' का भविष्य कैसा होगा—इसे मैंने खूब समझा है। वेचारा वचपन से ही "टुअर" और स्नेहवञ्चित है, मुझे मालूम है कि उसके साथ घरवालों ने कैसे-कैसे व्यवहार किये हैं। पिता के वात्सल्य का एक सहारा था, वह भी चला गया। क्षोभ। ग्लानि। अशान्ति। अनुताप। प्रिय 'विजय' से मेरी सहानुभूति कहदीजिएगा। आपसे प्रार्थना है कि आप उस भावुक हृदय कवि को कभी कभी व्यावहारिक परामर्श और सान्त्वना से संतुष्ट करते रहियेगा। कविता की हरियाली में विचरने वाले हृदय! तेरा भविष्य परमात्मा ही सुनहला करे। शुभ।
क्या आपने 'पन्त' की 'सरस्वती' में आलोचना की है? 'पल्लव' के सम्वंध में मैं भी कुछ लिखूंगा।

चरण-सेवक
शान्तिप्रिय

[पता]

श्रद्धेय
पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"
३०, अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता—
Calcutta

१६. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी
३०-११-२६

पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में श्रद्धापूर्वक प्रणाम ।

भगवन्,

मैं एक पत्र आपके कार्ड के उत्तर में भेज चुका हूँ। मिला होगा। फिर कोई कुशल-पत्र नहीं मिला । आशा है, आप सकुशल और सस्वस्थ हैं।

एक आवश्यक परामर्श सुनिए। पन्त जी का 'पल्लव' निकलने के बाद मेरी और अन्य मित्रों की उत्कट अभिलाषा हो गई है कि आपकी सम्पूर्ण रचनाओं का भी एक सर्वाङ्ग सुन्दर सचित्र संकलन निकले। एक दिन बातों ही बातों में मैंने अपनी यह धारणा भावमयी 'साधना' के आदरणीय लेखक श्रीमान रायकृष्णदास जी से प्रकट की। इतना मैं कह देना चाहता हूँ कि रायसाहब ने आपकी कविताओं के गूढ़ाशय और आपके मर्म्मस्थल को जितना स्पन्दित किया है उतना शायद ही दूसरा कोई। खैर।

रायसाहब चाहते हैं कि यदि आप अपनी सुकृतमयी कृतियों को ग्रंथरूप में प्रकाशित करने का अधिकार उन्हें दें तो वे उसे अनेक भावमय मौलिक चित्रों द्वारा अलंकृत कर 'पल्लव' से भी कई गुने सजधज के साथ प्रकाशित करें। मैं भी इतना अवश्य कहूँगा कि वे आपकी रचनाओं का जितना सुन्दर संस्करण निकाल सकते हैं उतना शायद ही कोई हिन्दी-प्रकाशक। व्यवसायी प्रकाशक और भावुक लेखक का अन्तर आप स्वयं समझ सकते हैं। मैं आपके हृदय की जिस प्रकार पूजा कर रहा हूँ चाहता हूँ उसके अनुरूप ही आपका काव्य-ग्रंथ देखूँ ।

समस्या यही है कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आपकी कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर रायसाहब 'पत्रं-पुष्पं-फलं' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया है अतः पुरस्कार के मामले में वे एकाएक कलकत्ता और बम्बई के प्रकाशकों का मुकाबला नहीं कर सकते फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हों, लिखें। अविलम्ब। किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता है—अवश्य लिखिये। अधिक क्या। स्नेह चाहिए ।

चरण-सेवक
शान्तिप्रिय द्विवेदी

प्रिय 'पद्म' और 'विजय' को प्रेम। बड़ी दया हो
यदि आप कभी उन्हें मेरा यह सन्देश दे दें—
"क्या कभी उन्हें इस अभागे की भी याद आती है?"

१७. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/o राधाकृष्ण दास B.A.
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी.
१०-१२-२६.

पूज्यवर,

प्रणाम ।

आपका कार्ड यथासमय मिला ।

आपकी अस्वस्थता का समाचार पाकर बड़ी मार्मिक पीड़ा हुई । मुझे खद हुआ कि न मैं कलकत्ते में रहा और न आपके श्री चरणों की सेवा का लाभ उठा सका । दुर्भाग्य ।

मैं आपकी रचनाओं द्वारा आपके जीवन का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करता जाता हूँ, वेदनाओं ने आपको वहुत प्यार किया है और आपके हृदय ने करूणा-रस को विश्व के व्यथित मात्र को । यही अदृश्य प्रभावोत्पादक प्रणय ही तो आपको अगली शताब्दियों के लिये अमर कर देगा—पन्त को नहीं । क्योंकि पन्त को आकांक्षाओं और सुख की मीठी दर्दभरी वासनाओं ने हिलमिल कर प्यार किया है—यही उनके गीतों की लय है ।—वह लय जो हृदय को स्पन्ज की तरह देर तक पकड़ नहीं सकती आपकी चिरकाल तक । सृष्टि में वेदना का अंश अधिक और अनन्त है अत: सम्पूर्ण सृष्टि की वेदनाओं के साथ सहानुभूति रखने वाले कवि ही अमर हैं । पन्तजी की कविताएँ अपने-आप तक परिमित हैं आपकी निस्सीम । आप अपने जीवन को सराहिये जिसने 'विधवा,' 'खंडहर', 'भिक्षुक', 'दीन' जैसे गीतों का प्रणयन किया । आपकी अस्वस्थता और वेदना से मेरा इतना ही निवेदन है कि वह आपके प्रति अपना प्यार सीमा के बाहर न जाने दे ।

\+ \+ \+

यदि आपकी 'मतवाला' में छपी सभी कविताओं का अधिकार मिलना दुरूह हो तो सेठ जी से इतना अनुरोध कर दीजिये कि वे उनमें से केवल ३० कवितायें चुन लेने दें । इसके अतिरिक्त ३० कवितायें आप अपनी अप्रकाशित कविताओं में से दीजिये । अच्छा होगा कि तत्काल आपकी ६० रचनाओं का एक सचित्र संस्करण निकल जाय ।

समयानुकूल इसकी वड़ी आवश्यकता भी है । इस प्रकार यदि एक वार राय साहब से आपका प्रकाशन-सम्वन्ध स्थापित हो जाय तो वे यथासमय आपकी सभी प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं का प्रकाशन-भार अपने ऊपर ले लेंगे ।

यदि आप अपनी ६० कविताओं का एक संकलन राय सहाव को देने की चेष्टा करें तो मैं उनसे आपको तत्काल पुरस्कार देने की बात कहूँगा—सफलता के साथ ।

इस पत्र का उत्तर आने पर राय साहब ने आपको पत्र लिखने का विचार किया है।

अधिक क्या लिखूं।

आपके स्वास्थ्य का समाचार जानने का उत्कण्ठित इच्छुक

शान्तिप्रिय द्विवेदी

अच्छा हो यदि आप अपना स्वास्थ्य बनाने के लिये 'गढ़कोला' जाने का विचार करें। उस जहरीले शहर को थूकिये।

[जहरीला शहर—कलकत्ता]

[कलकत्ता : डाक मुहर : ३०-१२-२६]

१८. रामनरेश त्रिपाठी

Allahabad

Date	Hour	Minute	Words
30	19	25	22

Recd. here at 23·50

Pandit Sooryakant Tripathi 30 Upper Chitpore Road Calcutta

Please send your life with selected poems by return mail

Ramnaresh Tripathi

१९. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

C/ राधाकृष्णदास B. A.
कोठी-मदैनी
Benares City

१-१-२७

भगवन्,

प्रणाम।

कितने ही दिन हो गये, मैं एक लिफाफा-बन्द पत्र आपकी सेवा में भेज चुका हूं—उत्तर न मिलने की चिन्ता है।

आपका स्वास्थ्य कैसा है?

मैंने पिछले पत्र में लिखा था कि यदि आप अपनी अप्रकाशित तथा प्रकाशित रचनाओं में से चुनकर कुल ६० कविताओं का संग्रह प्रकाशित करने का अधिकार दें तो मैं रायसाहब से तत्काल पुरस्कार दे देने की बात कहूं। उत्तर दीजिये। आपका पत्र आने पर रायसाहब आपको स्वयं पत्र लिखेंगे। उनका पता यह है—

रायकृष्णदास, शान्ति कुटीर, रामघाट, बनारस सिटी।

प्रिय पद्म और विजय को प्रेम।

उनका समाचार ?

[पता अपर चित्तपुर रोड कलकत्ते का]

—शा०

२०. रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी मन्दिर, प्रयाग
१-१-२७

प्रिय निराला जी,

आपका कार्ड ठीक समय पर मिल गया था। कल आपकी जीवनी और कविताओं के लिए एक तार दिया है। आशा है मिल गया होगा और आपने जीवनी भेज दी होगी। न भेजी हो या तार न मिला हो तो कृपया इस पत्र के पाते ही जीवनी और कविताएं भेजवा दीजिये। आपके लिये मैं स्थान रोक रखता हूँ। कृपया जल्दी कीजियेगा।

सरस्वती में मैं आपके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।

आपका
रा० न० त्रिपाठी

२१. रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी मन्दिर, प्रयाग
४-१-२७

प्रियवर निराला जी,

आज की डाक से जीवनी मिल गई। अनेक धन्यवाद। स्थान के अनुसार मैं कविताओं का चुनाव कर लूंगा।

आपका
रा० न० त्रिपाठी

२२. कृष्णविहारी मिश्र

नं० 974.
नवलकिशोर-प्रेस (बुक डिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ

तार—"UKHBAR"
माधुरी-कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० २४-३-१९२७

प्रिय निराला जी,

करहु कृपा समरथ बड़े उचित भाव नहिं अन्य;
कविता दै अपनाइए होहि माधुरी धन्य।

निवेदक
कृष्णविहारी मिश्र

[पता] कलकत्ता

२३. वाचस्पति पाठक

१०-५-२७
नवाबगंज
काशी

प्रिय निराला जी !

नमस्कार

कल यकायक आपके यहां जाने पर पता लगा कि आप चले गये—मुझे आपके यों जाने का अत्यंत दुख हुआ—इधर मैं आपकी दवा एक विशेषज्ञ से तयार करवा रहा था [,] इसलिये आपसे मिल न सका—और उधर आप काशी ही से चले गये—इसे आप स्वयं समझें मुझे कितना दुःख हुआ—खैर यदि अभी आवश्यकता हो तो लिखिये मैं दवा भेज दूं [।] मुझे पूर्ण विश्वास है कि ३-४ दिन में ही रोग समूल नष्ट हो जायगा। पत्र देखते ही इसके विषय में लिखियेगा। और सब यहां कुशल है [।] मेरी तबीयत कुछ उद्विग्न एवं चिंतित रहती है [।] कभी २ पेट में मन्द २ दर्द हुआ करता है। और सब लोग मजे में हैं—विशेष क्या लिखूं ।

आपका
वाचस्पति

२४. विनोद शंकर व्यास

व्यासभवन
मानमन्दिर
१७,५, [२७]

प्रियवर निरालाजी, सप्रेम वन्दे

आपका कार्ड आज मिला। आपकी बीमारी बढ़ने का समाचार सुनकर दुख हुआ। ईश्वर करे आप शीघ्र अच्छे हो जायं। दवा लग कर कीजियेगा। बदपहरेजी [बदपरहेजी] न कीजियेगा। सब आनन्द है। आपके चले जाने से कई दिन तक सूना लगता था। बाबू साहब अच्छी तरह हैं।

शिवपूजन जी को भी आपका समाचार दे दिया। शान्तिप्रिय ने शायद आपको पत्र लिखा हो। कल आये थे। जिसको जिसको आपने याद किया था, सब से आपका यथायोग्य कह दिया। मुन्नी का प्रणाम ! कृपा कर अपना समाचार बराबर देते रहियेगा।

मेरे लायक सेवा लिखें ! मैं कई झंझटों में फिर फंस गया हूं। अभी गांव नहीं गया हूं [,] यहीं हूं।

आपका
विनोदशङ्कर व्यास

२५. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी,
बनारस सिटी.
१६.५.२७

प्रणाम ।

श्री 'विनोद' जी के पास, आपका ६ मई का लिखा हुआ पत्र आया । मित्रों को आनंद हुआ । मैं आपको एक कार्ड लिख चुका हूं, आशा है, मिला होगा।

दवा जाती है । जगन्नाथ का कहना है कि, एक गोली सुबह और एक गोली शाम को खाना चाहिए । पानी के साथ । इसको एक पत्थर पर घिस कर घाव पर लगाने के लिये भी कहा है । आप इसका विश्वास-पूर्वक सेवन करें ।

यहाँ आनंद है । आपके स्वास्थ्य के लिये बाबा विश्वनाथ से बारंबार शुभ-कामना है । दवा की पहुंच लिखियेगा ।

सविनय—
शांतिप्रिय द्विवेदी

आप अपने स्वास्थ्य की चिन्ता पूर्ण रूप से करें, इसके बिना आपका साहित्यिक-क्षेत्र वीरान हो रहा है । खेद । आपसे फिर-फिर अनुरोध है कि, आप व्यर्थ के झमेलों में न पड़कर इस समय एकमात्र 'स्वास्थ्य' की सेवा करें, इस सेवा के फूल श्री नंदिनी देवी (पंतजी) की शब्दावली को अर्पित करने के लिए । 'पल्लव' के इन्द्रजाल का पर्दाफ़ाश अवश्य होना चाहिए । इसके बिना बात का बतंगड़ हो रहा है । विशेष बातें फिर लिखूंगा—

शां० प्रि०

२६. जयशंकर 'प्रसाद'

काशी
१६-५-२७ ।

प्रिय 'निराला जी',

पत्र आपका मिला, यह जानकर दुःख हुआ कि काशी से जाने पर आप की बीमारी बढ गई । अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखिए । संयम से रहिए ।

इस अवस्था में यदि अत्यन्त आवश्यक हो तभी और झमेलों में पड़ना चाहिए । शिवपूजन जी से कह दिया है ।

अपने कुशल समाचार से सूचित करते रहिए।

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

[पता :]
To,
Pt. Surya Kanta Tripathi "Nirala"
Village Garhakola
P. O. Magrair
(Unao)

२७. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी
[मई १९२७]

प्रणाम।

दो दिन मकान से बाहर रहने के बाद, आपका लिफ़ाफ़ा बंद पत्र मिला; इससे पहिले भी आपका एक कार्ड मिला था, उसका उत्तर मैं दे चुका हूँ—मिला होगा। यह पत्र कुछ देर में लिख रहा हूँ, क्षमा कीजियेगा।

मैंने बाबू साहब द्वारा, जगन्नाथ से दवा के लिए कहला दिया है, स्वयं भी कहलाया है; दवा तैयार होते ही भेजूंगा। आपसे प्रार्थना है कि, जगन्नाथ की दवा का पुनः सेवन करने पर, फिर किसी दूसरी दवा के फेर में न भटकियेगा—बाबू साहब भी यही कर रहे हैं। आप विश्वासपूर्वक जगन्नाथ की दवा का भरपूर सेवन कीजिये। जब तक कि अच्छा न हो जाय।

शिवपूजन यहीं हैं, भला वे कब कलकत्ता जाने लगे। ईश्वरी जी का मामला अभी हाईकोर्ट में विचाराधीन है।

आजकल मैं बेकार हूँ। आपको मालूम होगा कि, गया से महतो के संपादन में "राम" नामक मासिक पत्र निकलता था, वह अब काशी से निकलेगा—उसका संपादन आपके चरणों के आशीर्वाद से मैं ही करूँगा। संपादक होने का मेरा मुंह नहीं किन्तु पेट की फ़िक्र ही तो ठहरी ! पत्र सर्वसाधारण को लेकर चलेगा, प्रकाशक की यही इच्छा है, साहित्यिकता कम रहेगी। साहित्यिक पत्र तो सभी निकालते हैं, पर, सर्वसाधारण के लिये शायद ही कोई। आप अपनी "भिक्षुक" कविता के ढंग पर कोई सरल गीत देने की कृपा कीजियेगा। कृतज्ञता का ठिकाना न रहेगा।

आप पंत जी की हस्तलाघवता के नमूने तो अवश्य ही भेजिये, समालोचना यथासमय लिखियेगा। मैं पंत जी से प्रयाग में मिलने का विचार कर रहा हूँ, यदि आप समालोचना न भी लिख सकें तो मैं उनकी हस्तलाघवता उनके सम्मुख उपस्थित करूँगा। बड़ी इच्छा है।

अधिक क्या लिखूं ! आप अपने स्वास्थ्य की जितनी ही अधिक चिंता कर सकें, मैं उतना ही प्रसन्न हूँ ।

सेवक
शां० प्रि०

[बाबू साहब—जयशंकर 'प्रसाद';
ईश्वरी जी—ईश्वरी प्रसाद शर्मा; महतो—
मोहनलाल महतो गयाकाल 'वियोगी' ।]
[पुरवा की डाकमुहर में तारीख—२ जून '२७]
[पता]

पूज्य पं० सूर्य्यकांत त्रिपाठी "निराला"
गांव—गढ़ाकोला,
पोस्ट—मगरायर P. O. Magrair
(उन्नाव) (Unao)

२८. विनोदशंकर व्यास

छावनी सरौना
P. O. जमालापुर
Dist. Jaunpur
1. 6. 27
जौनपुर

प्रियवर निरालाजी,

प्रेमाभिवादन [।]

आपको पत्र लिखने के दूसरे दिन ही मैं छावनी पर चला आया। बड़े झंझट में हूं। चि० प्रमोद के पत्र से आपका समाचार मिला। बीमारी के बढ़ने का हाल सुनकर दुख हुआ। बहुत परहेज से रहिये। और लगकर दवा कीजिये।

अभी मैं यहां एक सप्ताह तक और रहूंगा। पत्र आप काशी के पते से भेजा कीजिये। मुझे वहीं मिल जायगा।

सब आनन्द है। आजकल तो सब मित्रों से बहुत दूर हूं। अकेले यहां पड़ा हूं। तबीयत भी गड़बड़ रहती है। योग्य सेवा लिखें।

आपका
विनोदशङ्कर व्यास

काशी जाने पर वहां से सब हाल लिखूंगा। इधर ११, १२ दिन से कोई नया समाचार नहीं मिला है। घर के पते से पत्र दीजियेगा—

नवाबगंज
काशी
[जून १९२७]

२९. वाचस्पति पाठक

प्रिय निरालाजी—

नमस्कार

आपका पत्र यथासमय मिला किन्तु बाबू साहब एवं सुमन के कहने पर मैंने दवा अभी तक नहीं भजी थी [।] उनका ऐसा विचार था कि यदि दवा शीघ्र यह भी पहुँच जायगी तो कदाचित् जल्दीबाज़ी में मेरी तथा ये दोनों दवा खाकर कोई हानि न उठा लें [।] खैर आज रविवार होने से पैकट लौट आया है पोस्ट आफिस से [;] अतः इस तरह भेज रहा हूं—दवा का क्रम यों कीजियेगा—२ गोली काली जो हैं उन्हें पहले सुवह खाकर मिश्री का खूब शरवत पीजिये—वाद में दस्त होने शुरू होंगे [।] दस्त होने दीजियेगा—१०-१२ दस्त होने के पश्चात यदि आप चाहें तो गर्म जल पीकर दस्त रोक भी सकते हैं। पश्चात दूसरे दिन—साथ में जो वीज हैं उनको पीसकर १ गिलास जल से ग्रहण कीजियेगा। इससे ५-६ के होगी कदाचित १ आध दस्त भी हो जाय। इस उपक्रम से आप विलकुल शुद्ध हो जायंगे—दवा जो है उसे १ चावल मानन्द लेकर १ पत्ते पान के संग सुवह खा लिया कीजियेगा। आशा है कि आप ४ दिन में विलकुल स्वस्थ हो जायँगे। फोड़े को नीम के पानी से धोकर सुफेदा की वुकनी चमेली का तेल लगाकर छिड़क दिया कीजिये। आप अवश्य ही ४ दिन [में] आरोग्य हो जायँगे [।] विशेष क्या लिखूं कुशल समाचार शीघ्र भेजियेगा। तबीयत लगी रहती है।

आपका
वाचस्पति

C/o राधाकृष्णदास B.A.
कोठी-भदैनी
वनारस सिटी ८/६/२७

३०. शान्तिप्रिय द्विवेदी

चरणों में प्रणाम।

मैं आपको एक लिफ़ाफ़ा लिख चुका हूँ, आपका पत्र नहीं मिला। आपकी तवियत कैसी है, जानने की वड़ी इच्छा है। वाचस्पति ने दवा भेजी है, मिली होगी। कहीं ऐसा न हो कि, एक के वाद एक दवा के इस्तेमाल से वात का वतंगड़ हो जाय। आप एक दवापर विश्वास जमा कर चिकित्सा कीजिए। आपके स्वास्थ्य की खुशखवरी सुनकर मित्रों को एक अनुपम हर्ष-दिन का सुख प्राप्त होगा। ईश्वर आपको पूर्ण निरोग क[रें]।

यहाँ के सभी मित्रगण सकुशल हैं। मैं भी। एक नई खवर यह है कि, सेठ जी और मुंशी जी निर्दोष छूट गए किन्तु ईश्वरी जी ६ महीने के लिए चले।

आजकल पंत जी ने मुझे पत्र लिखना छोड़ दिया है। उन्होंने 'सुमन' जी को पत्रों द्वारा अपनाया है। बधाई। न जाने कब तक के लिए यह आकस्मिक मित्रता हुई है।

सकुशल सविनय

[पता गांव का] शांतिप्रिय

३१. जयशंकर 'प्रसाद'

काशी

९-६-२७

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र मिला था, परन्तु कामों के झंझट में फँसे रहने से उत्तर देने में विलम्ब हुआ। अब आपका स्वास्थ्य कैसा है ? दवा किसकी खाते हैं ? कुशल समाचार से सूचित कीजिएगा।

भवदीय

जयशङ्कर 'प्रसाद'

३२. शान्तिप्रिय द्विवेदी

[२१ जून १९२७]

श्री०

C/. श्री राधाकृष्णदास बी० ए०

कोठी-भदैनी,

Benares City

प्रणाम।

कृपापत्र पाकर आनन्द हुआ। आप जितना शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें, उतना ही अच्छा। प्रभु सदय हों। मेरी समझ में यह नहीं आया कि, जगन्नाथ की दवा से कुछ कुछ लाभ होने पर आपने एकाएक उसका सेवन बंद क्यों कर दिया। जगन्नाथ ने उसे बड़ा ही विश्वस्त उपचार बतलाया था। आप किसी एक दवा का जमकर सेवन कीजिए। अच्छा, वाचस्पति की दवा का क्या हाल है ? बरसात आ गई। इधर मौसिम में खूब ठंडक आ गई, आशा है, आपके स्वास्थ्य पर भी इस ऋतु-परिवर्तन का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा होगा।

आजकल आर्थिक-प्रश्न के कारण 'इंदु' का काम ढीला पड़ गया है, 'अंक' लेट है। मैं भी अलग हूँ। रोजी की भीषण समस्या फिर सामने आरही है, कदाचित काशी छोड़नी पड़े। मैंने इधर अध्ययन का अच्छा क्रम जारी किया था, यदि बाहर जाना पड़ा तो यहाँ जैसी सुविधा नहीं मिलेगी। एक कथावाचक-महोदय, वेतन देकर मुझे अपने साथ रखना चाहते हैं। कुछ सोच नहीं पाता हूँ।

कलकत्ते से श्री शिवशेखर जी के दो पत्र आये हैं। वहाँ के सब मित्र अच्छे हैं। 'मतवाला' छूट गया किंतु 'हिन्दू पंच' के मामले में ईश्वरीजी छः महीने के लिए चले। एक नई खबर यह है कि, "श्रीकृष्णसंदेश" कलकत्ते से पुनः निकलेगा। सम्पादक-प्रकाशक

पहिले ही के लोग होंगे । सम्भवतः जिज्जाजी उसमें जायँगे । पत्रों में उसके निकलने की सूचना छप चुकी है ।

"सुमन" जी यहाँ से यह कहकर गये हैं कि, मैं कलकत्ते की इम्पीरियल-लाइब्रेरी में कुछ पुस्तकें लिखने के लिए अध्ययन करूँगा, पर, वस्तुतः वे आजीविका की खोज में ही गये है । सफलता की आशा कम है । "मतवाला"-मंडल के पते से वे अपने पत्रादि मँगाते है, ठहरे हैं मेरे एक मित्र के यहाँ । शेष, फिर लिखूंगा । आप अपने स्वास्थ्य का समाचार दें ।

सेवक—
शां०

[पता गांव का]

३३. शिवपूजनसहाय

दंडपाणि भैरव, काशी
२३/६/२७

मान्यवर पंडित जी,

सादर सप्रेम प्रणाम । आपका कृपा पत्र मिला । मैं आपके आशीर्वाद से सकुशल हूँ । काशी में वड़ी सख्त गर्मी पड़ रही है, मानों विश्वनाथ जी ने तीसरा नेत्र खोल दिया है । वड़ी कठिनाई से काम कर रहा हूँ । काम का झमेला वैसा ही है । खैर, शिवशेखर जी ने कलकत्ते से एक पत्र भेजा है । उन्होंने भी अनुवाद का काम लेने के लिये लिखा है । किन्तु यहाँ के प्रकाशक महाशय से पटना कठिन है । वह वहुत सस्ते दर में अनुवाद कराते हैं—४)-५) से अधिक प्रति, फार्म देना नहीं चाहते, और कुछ ग्रंथ अनुवादित अभी अप्रकाशित रक्खे हैं । उनके प्रकाशन के वाद कुछ आगे कराना चाहते हैं । प्रकाशकों का हाल आप जानते ही हैं । अभी मेरी चेष्टा सफल होती नज़र नहीं आती । मेरे ध्यान में आपकी सेवा जरूर है; मगर ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है । आपके रोग का क्या हाल है ? बाबू साहव और व्यास जी सानन्द हैं । शान्तिप्रिय जी 'राम' के सम्पादक हुए हैं ।

शिवपूजन ।

३४. दयाशंकर वाजपेयी

श्री

२३-१, ताराचन्द्रदत्त स्ट्रीट
कलकत्ता ४-७-१९२७

वड़ा बाजार युवक सभा ।
BURRA BAZAR
YUWAK SABHA
23/1, Tarachand dutta Street,
CALCUTTA.

पूज्य पाद पण्डित जी,

सादर चरणस्पर्श ।

पत्र मिला । तबियत आप की फिर खराब हो गयी, आम खा लेने से । आम तो

आप 'सुधा' के लिये उसकी समालोचना अवश्य कर दीजियेगा। 'तूलिका' की कापी आपके पास भेजने के लिये मैंने पाण्डेय जी से कह दिया है।

मुझे हार्दिक दुख है कि आप अपनी फक्कड़मस्ती में कोई "सोलिड वर्क" नहीं कर रहे हैं। यह अच्छा नहीं है। आप जैसे विद्वानों से हिन्दी भाषा को बहुत कुछ आशा है; फिर इतना आलस्य क्यों?

कब आते हैं? लिखिये।

अभिन्न
विनोद

३६. विनोदशंकर व्यास

व्यास भवन
मान मन्दिर
काशी
१५.७.२७.

प्रियवर निरालाजी,

सप्रेम वन्दे

आपका कार्ड मिला। वास्तव में आपकी बीमारी का समाचार सुनकर बड़ा दुख होता है। आप भी विचित्र पुरुष हैं, परहेज तो करते नहीं, मनमानी करते हैं। वहाँ कोई कहने वाला भी नहीं है [,] इसलिये आपको समझ कर काम करना चाहिए।

बाबू साहब इधर कई झंझटों में पड़े हैं [,] इसीलिए साहित्य संसार से अलग है [हैं]। आपकी चर्चा वहाँ प्रायः हुआ करती है। 'सुमन' के सम्वंध में एक दिन मैंने बात उठाई थी, मैंने खूब फटकारा। वह कहने लगा—मैंने कलकत्ते में कुछ नहीं कहा है, वहाँ पहले ही से सबको यह समाचार विदित है। मेरी समझ में यह काम उसी का है। हम लोग तो उससे इसी से अधिक व्यवहार नहीं रखते। मैंने उसके सम्वंध में आपसे पहले ही कहा था। खैर कोई चिन्ता नहीं [,] किसी के कहने से आपका कुछ नहीं होगा, जो आप हैं, वह सब की दृष्टि में सदव वैसे ही रहेंगे।

निरालाजी, मैंने इस संसार को खूब देखा है, देखकर जी भर गया है। मैं मानव स्वभाव से खूब परिचित हो चुका हूँ। आदमी की परख उसके बाद ही होती है।

दवा आपकी पहुँच गई होगी। शान्तिप्रिय जी आजकल 'राम' का सम्पादन कर रहे हैं—इसीलिए दो सप्ताह से उनका दर्शन नहीं हुआ। वाचस्पति जी अच्छी तरह से हैं। शिवजी को अपने कार्य से ही छुट्टी नहीं मिलती [,] वह 'बालक' में ही व्यस्त रहते है। मित्र मंडल [मंडल] आजकल जमता नहीं, जैसा कि आपने देखा था।

'सुधा' अभी नहीं निकली है। अब एक सप्ताह के अन्दर निकल जायगी। सूचना मिली है। पन्तजी की समालोचना आप अवश्य लिख डालें, इसकी बड़ी आवश्यकता है।

कलकत्ते से उग्र की दो पुस्तकें निकलीं हैं, एक चन्द हसीनों के खतूत और दूसरी 'दिल्ली का दलाल।'

बाबू साहब की कामना और मेरा 'अशान्त' एक सप्ताह में तैयार हो जायगा, तब आपके पास भेजूंगा।

वर्षा हो रही है। हृदय में कभी उमङ्ग आती है, किन्तु साहस और सुख सदैव के लिए चला गया। अब मुझ में है ही क्या? किसी तरह संसारिक [सांसारिक] बंधनों में अपने को फँसाये हूँ। ईधर कुछ लिख भी नहीं रहा हूँ। विचारों में ही दिवस समाप्त हो जाता है। कभी कभी बड़ी इच्छा होती है कि आपसे मिलें; किन्तु पारिवारिक कार्यों में ही व्यस्त रहता हूँ। गाँव पर जाने वाला हूँ। देखिये, शायद सावन बाद कहीं फुर्सत मिले तो लखनऊ आऊँगा। और यहाँ सब आनन्द है। कोई नवीन समाचार नहीं है [।] सबका यथायोग्य। मेरे लायक जो कुछ काम हो, सदैव लिखते रहें। ईश्वर शीघ्र ही आपको निरोग कर दे यही मेरी हार्दिक शुभकामना है—और क्या लिखूं?

"एक चुल्लू में बहुत बहँक उठते थे दाग
सुना है आज निकाले गये मयखाने से"

आपका
विनोदशङ्कर व्यास

२७. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

२३-७-२७

चरणों में प्रणाम।

इतने दिन होगए, दो पत्र लिखने पर भी, आपका कोई पत्र नही मिला। मालूम नहीं, इस समय आपका स्वास्थ्य कैसा है, समाचार जानने के लिए जी उकता रहा है। एक दिन शिवपूजन जी के डेरे पर 'गर्ग जी' के पत्र से मालूम हुआ कि, आपका स्वास्थ्य अत्यन्त चिंतनीय है, बुरी हालत है। मैं घबड़ाया हुआ बाबू साहब के पास गया, पर, सिवा आपको पत्र लिखकर समाचार जानने के और कैसे संतोष हो सकता है! आप शीघ्र उतर दें, इसीलिए जवाबी कार्ड भेज रहा हूँ। दवा मिली या नहीं? मिली हो तो, मनोयोगपूर्वक उसीका सेवन कीजिए, अब और मत भटकिए।

यहाँ के मित्रगण प्रसन्न हैं। आपकी प्रसन्नता चाहिए। "सुमन" जी कलकत्ते से आगए। ईश्वरी जी हाईकोर्ट से छूट गए। "श्री कृष्ण-संदेश" निकल गया। जिज्जाजी उसी में काम करने के लिए कलकत्ते गए। 'उग्र' के दो उपन्यास मतवाला मंडल से निकले हैं—"चंद हसीनों के खुतूत" और 'दिल्ली का दलाल'। तीन पुस्तकें और निकलेंगी—'चाकलेट', 'चिनगारी', 'चुम्बन'। आजकल 'उग्र' की खूब धूम है। मतवाला-मंडल 'निराला' और 'शिवपूजन' की उतनी कद्र न कर सका, जितनी 'उग्र' की।

भाई विनोद जी का विचार इलाहावाद जाने का हो रहा है—वख्शी जी के निमंत्रण पर। मैं भी जाना चाहता हूँ—'पंत' जी से 'शेक हैण्ड' करने। आपने उनकी हस्तलाघवता के नमूने नहीं भेजे, किस मुँह से जाऊँगा। प्रभु का वल न मिलता तो वालि के सामने जाने में सुग्रीव की क्षमता ही कितनी ?

सेवक—
शांतिप्रिय

[पता गांव का]

२८. कृष्णविहारी मिश्र

तार—"UKHBAR"
माधुरी-कार्यालय
(संपादन-विभाग),
ता० २७-७-१९२७

नं० 4373
नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ

प्रिय महाशय,

आपकी 'रेखा' कविता मिली। धन्यवाद। वह सादर स्वीकृत है और 'माधुरी' के श्रावण मास के विशेषांक में प्रकाशित की जायगी।

कृपा-भाव वना रहे। योग्य सेवा की सूचना देते रहिएगा।

आपने जो और बातें लिखी हैं उनका उत्तर दूसरे पत्र में दूंगा।

भवदीय
K. B. Misra
संपादक

[पता :] Pt. Surya Kanta Tripathi
'Nirala'.
Garaha Kota Village
P. O. Magrair,
Dist. Unao

[पत्र दूसरे व्यक्ति से लिखाया गया है। कार्ड पर पते के साथ "प्रिय महाशय" छापा हुआ है। अंतिम वाक्य तथा हस्ताक्षर मिश्र जी की लेखनी से अंकित हैं। अंग्रेजी में पता भी उसी अन्य व्यक्ति का लिखा है किन्तु गांव का नाम मिश्र जी ने ही वताया होगा। अभी वह गढ़ाकोला के नाम से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं।]

३९. दयाशंकर वाजपेयी

० श्री ०

बड़ा वाजार युवक सभा । २३/१, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट
BURRA BAZAR कलकत्ता २-८-१९२७
YUWAK SABHA
402, Upper Chitpur Road
CALCUTTA,

पूज्य पं० जी,

सादर चरण-स्पर्श ।

आज शाम की डाक से या कल प्रातःकाल की डाक से एक पत्र सेवा में भेजूंगा; ...इस समय जल्दी में मैं कुछ नहीं लिख रहा हूँ । क्षमा कीजियेगा ।

उमादत्त के रुपये पहुँचे कि नहीं ? यदि नहीं पहुँचे हैं, तो जुलाई महीने की तनख्वाह पाते ही, हम लोग सेवा में रुपये भेज देंगे । रामशंकर जी आ गये हैं ।

आपका दास
दया शंकर

[रामशंकर जी—संभवतः रामशंकर शुक्ल ।]

४०. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भवैनी
बनारस सिटी
३.८.२७

पूज्य चरणों में प्रणाम ।

बहुत दिनों बाद कृपा-पत्र मिला । स्वास्थ्य का समाचार पढ़कर संतोष और आनन्द हुआ ।

यह जान कर और भी हर्ष हुआ कि आप पंत जी की समालोचना में हाथ लगा दिये हैं; किन शब्दों में बधाई दूं । 'माधुरी' के श्रावण का अङ्क विशेषांक होगा, यदि उस समय समालोचना निकलती तो क्या कहना था ! खैर, अब आप आलस्य न कीजिएगा, पूरी ही कर डालिए । आषाढ़ की 'माधुरी' में हम लोगों के सहृदय मित्र श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ एम० ए० एल० टी० का "छायावाद की छानवीन" शीर्षक लेख निकला है, उसमें आपका भी समर्थन है; पढ़ियेगा । क्या आपको मासिक पत्र-पत्रिकायें पढ़ने को नहीं मिलतीं ? 'सुधा' निकली, "माधुरी" में और उसमें यदि कुछ फ़रक है तो वह यही कि वह 'माधुरी' की सौत है । मुझे तो "सरस्वती" को छोड़कर अब भी हिन्दी में कोई और मार्जित पत्रिका नही देख पड़ती, गो कि उसमें भी त्रुटियाँ हैं ।

ईश्वरी जी की मृत्यु हो गई। 'सुमन [illegible] ानी एकेडेमी' में घुसने के लिए लखनऊ-कानपुर गये हैं। सब कुशल है।

शा०

आप दवा को सिर्फ़ पानी के साथ खाइए। पान की जरूरत नहीं, क्योंकि गोलियाँ ताम्बूल रस के सम्मिश्रण से वनायी गई हैं यह वात मैं जगन्नाथ के घर पर बैठ कर लिख रहा हूँ।

[पता गांव का]

४१. कृष्णविहारी मिश्र

तार—"UKHBAR"
माधुरी-कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० १२-८-१९२७

नं० 4930
नवल किशोर-प्रेस (बुक डिपो)
हज़रत गंज, लखनऊ

प्रिय महाशय,

आपका कृपा-पत्र मिला। धन्यवाद। आज्ञानुसार आषाढ़-मास की 'माधुरी' की एक प्रति सेवा में भेजी जाती है। लौटाने की कौन सी वात है। आप की रचना श्रावण के अंक में प्रकाशित हो रही है।

कृपा-भाव बना रहे। योग्य सेवा की सूचना दीजिएगा।

भवदीय
कृष्ण विहारी मिश्र
संपादक

[पता]

Sri Surya Kanta Tripathi "Nirala"
Garra Kote,
Magrayer,
Unao,

[कार्ड दूसरे से लिखाया गया है, केवल हस्ताक्षर मिश्रजी के हैं।]

४२. जयशंकर प्रसाद

काशी-सराय गोवरघन
१२-८-२७

प्रिय 'निराला' जी,

वहुत दिनों बाद आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अव आपका स्वास्थ्य सुधर रहा है। परन्तु अभी वहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। औषधि की आवश्यकता हो तो लिखिएगा। मैं समझता हूँ कि रोग जब तक निर्मूल न हो तव तक उसका सेवन करते रहिए। मैं सकुशल हूँ, अपना कुशल समाचार बराबर लिखते रहिए।

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

४३. विनोदशंकर व्यास

छावनी सरौना
P. O. जमालपुर[१]
मड़िया
Dt. Jaunpur
16 Aug 27

प्रियवर निराला जी,

सप्रेम वन्दे !

आपका कार्ड मिला। मैं आजकल फिर गाँव पर चला आया हूँ। एक सप्ताह में काशी लौटूंगा। आपकी बीमारी अच्छी होने का समाचार सुनकर, वास्तव में हृदय से प्रसन्नता हुई। 'अशान्त' उपन्यास छप गया है [,] काशी आकर शीघ्र ही आप के पास भेजूंगा। सब लोग काशी में अच्छी तरह हैं—मैं भी अपने जीवन के आवश्यक कार्यों को पूर्ण करने के उद्योग में लगा हूँ। आशा है बहुत शीघ्र निश्चिन्त हो जाऊंगा। देखूं अब आपका दर्शन कब होता है ?

क्यों नहीं आप एक मौलिक उपन्यास लिखते ? व्यर्थ अपनी प्रतीभा [प्रतिभा] को अनुवाद और दूसरे कामों में लगाकर नष्ट कर रहे हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप मौलिक पुस्तक लिखें चाहे कविता की हो या उपन्यास इत्यादि हो।

कृपा-सेवा—
आपका
विनोद

[१. अन्य पत्रों में जमालापुर]

४४. शिवपूजन सहाय

काशी
जन्माष्टमी
[अगस्त १९२७]

मान्यवर पंडित जी,

सादर सप्रम प्रणाम—

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आप की बीमारी अब सिर्फ एक आना है, यह सुखद संवाद सुनकर अत्यन्त आनन्दित हुआ। एक प्रकार की दुःखद चिन्ता लगी हुई थी। 'माधुरी' में आपका लेख अवश्य पढ़ूंगा। 'रेखा' भी देखूंगा। कृपया अब बराबर लिखा कीजिये। आप बहुत कुछ कर सकेंगे। आप में जो कुछ है, उसे मुझसे अधिक बहुत कम लोग जानते होंगे। पैर की अंगुली की चोट अब कैसी है। रक्षा कीजिये शरीर की। आप हिन्दी के धरोहर हैं। यहाँ सब लोग सकुशल हैं। दया बनी रहे।

शिवपूजन

[मगड़ायर की दो डाक मुहरों की तारीखें : २६ अगस्त तथा २७ अगस्त, २८।]

४५. रूपनारायण पाण्डेय

"सुधा"—कार्यालय
[संपादन-विभाग]
२९-३०, अमीना बाद-पार्क
लखनऊ २५/८/१९२७

प्रिय महाशय,

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। एक सज्जन की आवश्यकता अवश्य है। आप कितने वेतन में आ सकेंगे ? काम करने का समय ९. बजे से ५ बजे तक है।

मैं सकुशल हूँ। भार्गव जी भी। हाँ, आपके क्वालिफ़िकेशन क्या हैं, यह भी लिखने की कृपा करें।

भवदीय
रूपनारायण पाण्डेय
संपादक

४६. कृष्ण विहारी मिश्र

नं० 1775
नवल किशोर-प्रेस (बुकडिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ

तार—"UKHBAR"
माधुरी-कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० २७-८-१९२७

प्रिय त्रिपाठी जी,

आपको पत्रोत्तर देर से जा रहा है। क्षमा कीजिएगा। हम लोग 'माधुरी' के विशेषांक के फेर में थे। इसी से उत्तर देने में विलंब हुआ। आज विशेषांक से छुट्टी मिली। आप की लिखी पल्लव की समालोचना भाद्रपद की 'माधुरी' में छपने जा रही है। 'श्रावण' का अङ्क शीघ्र सेवा में पहुँचेगा। 'समालोचक' भी भेजूंगा। 'आषाढ़' की 'माधुरी' तो आपको मिल गई होगी। आश्विन की 'माधुरी' के लिये 'पल्लव' की समालोचना का अवशिष्ट भाग भेजिये।

आपका
कृष्ण विहारी मिश्र

[पता:]
Pt. Surya Kanta Tripathi
Nirala Kavi
Village Garha-Kola
P.O. Magrair
(Unao)

४७. शिवपूजन सहाय

सं० (Private)

ज्ञानमंडल यन्त्रालय
काशी
मि० २—९—२७

मान्यवर पंडित जी,

सादर सप्रेम प्रणाम ।

कृपापत्र मिला। धन्यवाद। वेनीपुरी घर गये। वीरांक निकल गया। आपके वहाँ जाने की खबर मेरी ओर से किसी को नहीं मिलेगी। इतना विश्वास रखिये। पं० रूपनारायण पांडेय जी का पत्र आया है। उसमें लिखा है—"निराला जी का एक पत्र आया है। वह हमारे कार्यालय में कार्य करना चाहते हैं। पर हमारी राय में उनके स्वभाव के कारण हमारी उनकी पटेगी नहीं। आप की क्या राय है? आपका उत्तर आने पर हम उन्हें उत्तर देंगे।"—बस। मैंने भी लिख दिया है खूब कसकर। सारांश यह है—"यदि आप लोग सहृदयता से, शान्त भाव से, काम लेंगे तो आपके सम्पादकीय विभाग के वह बड़े काम के होंगे। परन्तु आत्मसम्मान के भाव में धक्का लगा कि बात बिगड़ी। आप लोग चाहें तो निवह सकता है और आपके यहाँ उपयुक्त साधन और क्षेत्र पाकर वह अपनी प्रतिभा का जोहर दिखा सकते हैं। आप लोग अवश्य ही उनको रखिये और पिछली बातें एकदम भूल जाइये।" देखा चाहिये कि वहाँ से क्या जवाव आता है। मेरी चेष्टा विफल न होगी, ऐसी आशा है। यदि वहाँ ठीक हो जाय, तो आप वहीं जाइये। "आज" से कहीं अच्छी जगह है। "सुधा" में आपकी रुचि के लिए क्षेत्र है, 'आज' में नहीं। जब वहाँ का निर्णय हो जाय, तब—यहाँ देख लूँगा। ऐसा न होगा कि यहाँ वहाँ दोनो जाय। एक न एक मिलेगा ही। वहाँ कब तक ठहरियेगा?

S P Sahay
[शिवपूजन सहाय]

४८. नंददुलारे वाजपेयी

ओ३म्

सेन्ट्रल हिन्दू कालेज
काशी ७-९-१९२७ ई०

सम्माननीय कविवर,

सप्रेम वन्दे।

उचित तो यह कदापि नहीं कि एक अपरिचित अथवा अधिक से अधिक अर्ध-परिचित व्यक्ति होता हुआ भी पत्र-प्रेषण का अनधिकृत कार्य करूँ पर मेरा तो सिद्धान्त यह है कि कवि की कृति से परिचित होना ही कवि से सच्चा परिचय प्राप्त करना है। इस विचार से मैं कहूँ तो कह सकता हूँ कि आपका मेरा परिचय विगत पाँच वर्षों से है और वह परिचय भी बराय नाम नहीं प्रत्युत घनिष्ट तथा स्थायी है।

हाँ, यह सच है कि वैयक्तिक रीति से मैं आपको नहीं जानता—इसके लिये मैं दोषी भी हूँ क्योंकि आपके शुभस्थान के सन्निकट 'मगरायर' ग्राम का निवासी होता हुआ भी आपके प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न कर सका। इसके कतिपय कारण हैं पर हैं सव अनुल्लेख्य। अच्छा उन कारणों को जाने दीजिये और सुनिये वात मेरे मतलब की :—

मैं इस समय हिन्दी-साहित्य के आधुनिक कविता-काल का अध्ययन कर रहा हूं। मेरा विचार है कि इस काल के कवियों में आपका एक विशिष्ट स्थान है; आपने अपने मुक्त-वृत्त से हिन्दी-कविता में नवीन युग ही उपस्थित कर दिया है। मैंने आपकी कविताओं का अध्ययन किया है पर सर्वांश में नहीं क्योंकि आपकी सम्पूर्ण रचनायें अभी तक पुस्तकाकार नहीं प्रकाशित हुई हैं। कृपा करके आप कोई ऐसा साधन वतलाइये जिससे मैं आपकी समस्त रचनाओं का सम्यक् अध्ययन कर सकूं। एक वात और है, वह यह कि मेरे अनुमान से आपकी रचनाओं में अंग्रेज कवि 'शेली' Shelley की छाप पड़ी है—मैं नहीं कह सकता कि अनुमान कहाँ तक सच है। इस विषय में मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि क्या आपने 'शेली' का अपेक्षाकृत विशेष अध्ययन किया है और क्या उसके भावों से आप प्रभावित हुए हैं? विशेष फिर।

भवदीय

नन्ददुलारे वाजपेयी (एम० ए०, एल० एल० वी श्रेणी)

ज्ञानमण्डल यन्त्रालय,
काशी
मि० २०/९—१९२७

४९. शिवपूजन सहाय
सं०

मान्यवर पण्डित जी,

सादर सप्रेम प्रणाम।

आपका कृपा पत्र। धन्यवाद। आप मतवाला-मण्डल में दाखिल हो गये, और दो आर्डर भी पा गये, वड़ी ख़ुशी की वात है। यह शुभ संवाद यहाँ सभी के लिए सुखकर हुआ है। कहिये, अव तो 'सुधा' की खवर लेंगे न? चाहे जो करें; मगर अव कुछ दिन जम कर एक जगह रहिये। आसन जमा कर वैठिये। मन को स्थिर और शान्त कीजिये। चेष्टा कीजिये कि आपकी सभी कवितायें सुन्दर सजीले ढंग से हिन्दी संसार के सामने आवें—पुस्तकाकार। 'अनामिका' उसी में अन्तर्भुक्त। इसका वड़ा प्रभाव और लाभ नज़र आयेगा। आप कव से कव तक मण्डल में काम करने जाते हैं? आपकी दवा वाबू साहव भेजेंगे शीघ्र ही। सम्भव है, भेज चुके हों। पं० रामशंकर जी से मेरा प्रणाम, और कह दें कि दीवाली के लिये कुछ भेजने की चेष्टा अवश्य करूंगा। दिमाग खाली पड़ा है, खाक लिखूं? पत्रोत्तर। दयाभाव।

शिवपूजन

[राम शंकर जी—रामशंकर त्रिपाठी, 'मतवाला' के सहयोगी संपादक]

५०. राधामोहन गोकुल जी

पटकापुर
कान पूर
ता० २३/९—१९२७

प्यारे मित्र,

आपका पत्र पढ़ कर दुःख हुआ पर आपकी सत्य वादिता से प्रसन्नता हुई। अब आप सीधे मार्ग पर चलेंगे तो आपका कल्याण ही होगा। पुस्तक लिखें। सादा भोजन मूंग की दाल रोटी हलका शाक खायें और चौथे रोज 'केलोमेल २००' ले लिया करें तो रोग कुछ काल में जड से चला जायगा। मैं बहुधा फिरा करता हूँ। सम्भवतः कलकत्ते भी जाना पड़े। आप घर जायें तो कानपूर होकर जायें [,] मैं मिल जाऊँ तो ठीक [,] नहीं तो जब आऊँगा तब आपसे आपके ग्राम में जाकर मिल लूंगा।

मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि अब आपने [अपने] स्वभाव को और आचार विचार को सम्हाले [।] आप सदृश योग्य पुरुष का समाज के हाथ से निकल जाना बड़े दुख की बात है। समाज में रहने के लिए समाज का थोड़ा बहुत खयाल रखना ही पड़ता है—

आपका
राधे

[पत्र पर नाम, कानपुर, और "ता०" मुद्रित हैं।]

५१. जयशंकर प्रसाद

काशी
४-१०-२७

प्रिय निराला जी,

पत्र मिला, यह जान कर प्रसन्नता हुई कि आप 'मतवाला' में हैं। दवा का नियमित सेवन कीजिए—बैजनाथ कहता था कि अब तक उन्हें नीरोग हो जाना चाहिए—

मैंने पुस्तक ही भेज देने के लिए विनोद जी से कह दिया है—सम्भवतः वह आपके पास पहुँच भी गई होगी—

और सब कुशल है अपना कुशल समाचार लिखते रहिए—

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

५२. गुलाबराय

[गोलाकार मुद्रा के बीच दो पक्षियों वाला राज्यचिह्न है और वृत्त-रेखा के पास राजा के व्यक्तिगत सचिव का गोलाकार मुद्रित पता है।]

Private Secretary's Office
Chhatarpur,
Bundelkhand

Chhatarpur,
Dated ७/१०/२७

श्रीमन्

लाला शिवपूजन सहाय से ज्ञात हुआ है कि आप वङ्गला भाषा और व्रजभाषा के अच्छे ज्ञाता हैं और व्रजभाषा में कविता भी करते हैं। श्री महाराजा साहिब को एक एसे (ऐसे) ही विद्वान की आवश्यकता है। वह श्री चण्डीदास जी के ग्रन्थों का पद्यानुवाद कराना चाहते हैं (।) कृपया तार द्वारा सूचित कीजिये कि आप यहां आ सकते हैं या नहीं और आ सकते हैं तो कब और कृपया यह भी लिखिये कि यहां आने के लिये आपके क्या terms होंगे। उत्तर बहुत शीघ्र देने की कृपा कीजिये।

भवदीय
गुलाबराय
प्राइवेट सेकरेटरी

५३. सुमित्रानन्दन पन्त

२६, Beli Road,
Alld
U. P,
(11. X. '27)

प्रियवर निराला जी,

आपकी "पन्त जी और पल्लव" शीर्षक आलोचना माधुरी में पढ़ने को मिली। इसका समाचार मुझे श्रीयुत शान्तिप्रिय द्विवेदी जी से पहिले ही मिल चुका था, मैं उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहा था—

अच्छा ही हुआ, बहुत दिनों से आप हज़रत नाराज़ थे, अब शायद जी की जलन निकल जाने पर आप कुछ शान्त हो जाए [जायें] गे। "जलन" मैंने कुछ आपको चिढ़ाने के लिए भी लिख दिया। न जाने क्या आपको सूझी कि आपने चट से आलोचना, वह भी ख़ूब कड़ी, छाप ही तो दी। अच्छा साहब, यह सब कुछ तो हुआ—आप बनारस तक कई बार आते जाते हैं,—केवल प्रयाग ही पर इतने नाराज क्यों हैं? मैं कई बार शान्तिप्रिय जी को लिख चुका हूँ, लेकिन सदैव आपके दर्शनों को तरसता रहता हूँ—जैसाकि कहा करते हैं।

आपने तो जान पड़ता है खूब दर्शन शास्त्रों का अध्ययन कर लिया है—"आलोचना" के सिवा वैसे भी मुझे दो एक वार खबर मिली थी, और यह भी सुनता हूँ कि आपका स्वास्थ[स्वास्थ्य] आपकी मानसिक स्थिति के साथ ही साथ अवनत होता जा रहा है, वाह भई ! अच्छा, अब अगर गुस्सा मिट गया हो, पन्त को उसके १ से १०० तक और शायद इससे भी अधिक अपराधों का दण्ड वहुत कुछ आप दे चुके हों तो एक वार प्रयाग आकर दर्शन दीजिए—आपसे किसी प्रकार लड़ाई झगड़ा तो मुझे करना नहीं है, केवल मनोविनोद रहेगा। यदि आपको प्रयाग में ठौर-ठिकाना न मिलने का डर हो तो मेरी कुटी में आप सदैव अपनी ही समझकर (जैसाकि शिष्टाचार वश लोग कहते हैं) आ सकते हैं।

और आपको क्या लिखूं, आप "तुङ्ग-हिमालय शैलशृङ्ग" जो ठहरे ! कहीं क्या जाने कोई वात कलम से ठीक न निकली तो नाराज़ हो जाएंगे !

आना तो आपको एक वार यहां अवश्य चाहिए—यदि जल्दी ही हो तो और भी अच्छा। क्या आ सकेंगे ? अब भी क्या नाराज़ ही हैं ? आइए। मैं अब वहुत होशियार हो गया हूँ—चौर्य कार्य में नहीं जैसा आप लिखते हैं—और कई तरह, यहां आने पर मालूम होगा। सुनता हूँ, यहाँ लोग आपको Tit for tat उत्तर देने के लिए जोर शोर से तय्यारी कर रहे हैं—करने दीजिए—वे लोग क्या जानें कि आप "तुङ्ग हिमालय शैलशृङ्ग" हैं।

पत्रोत्तर अवश्य दीजिएगा। वड़ी प्रसन्नता मुझे होगी। और मेरी प्रसन्नता का मूल्य थोड़ा नहीं—सचमुच, अवश्य उत्तर दीजिए, चाहे नाराज़ होकर दीजिए चाहे प्रसन्न होकर [,] दीजिए जरूर—

मैं अच्छा हूँ—पत्रोत्तर की प्रतीक्षा करूँगा [,] नहीं देंगे तो दूसरा पत्र लिखूंगा—उसके वाद जैसा होगा—

सलाम—

आपका

सुमित्रानन्दन पन्त

५४. (क) विनोदशंकर व्यास

(ख) शान्तिप्रिय द्विवेदी

व्यास भवन
मान मन्दिर
काशी
१४.१०.२७

(क) प्रियवर निराला जी,

सप्रेम वन्दे।

कृपा कार्ड मिला। वीमारी का हाल सुनकर वड़ा दुख होता है। मैं तो यही समझता हूँ कि आप परहेज नहीं करते और मनमाना काम करते हैं।

हम लोग यहां सब सानन्द हैं। कोई नवीन समाचार नहीं है। पन्त जी पर आलोचना देखी। मैं तो समझता हूं कि आप अपना अमूल्य समय एक छोटे से विषय पर नष्ट कर रहे हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप कोई काव्य की अथवा कोई भी मौलिक पुस्तक लिखें। कृपा।

आपका
विनोद

(ख) पूज्य चरणों में प्रणाम।
क्या आप भूल गये किंकर को?
सेवक—शां० प्रि० [शान्तिप्रिय द्विवेदी]

[१५.१०.२७]

५५. शिवपूजन सहाय

मान्यवर पंडित जी

सादर सप्रेम प्रणाम।

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। पैरों के घाव से अभी तक परेशान हूं। दोनों पैर घाव से भर गये हैं। इधर एक सप्ताह से 'आज'-सम्पादक पराड़कर जी की दवा करता हूं। बड़ा फ़ायदा है। बाबू साहब, व्यासजी, शान्तिप्रिय जी सानन्द हैं। शान्तिजी से समाचार कह दिया है। सुमन जी बम्बई गये—मारवाड़ी-अग्रवाल के सम्पादक होकर—१००) वेतन। गर्ग जी का पत्र आया है। उन्हें मतवाला में साथ रखिये। उग्र भी ज्वरग्रस्त हैं। माधुरी देखी। समालोचना में कुछ कटुता आ गई है। मैत्री का पुट देकर दोषदर्शन कराते तो रंग जम जाता। आपकी ललकार पर पन्त—सम्प्रदाय बिगड़ेगा—खड्गहस्त रहिये। कृपा रखियेगा।

शिवपूजन

[बनारस की डाकमुहर में तारीख—१५ अक्टूबर '२७;
गर्ग - रामलाल गर्ग।

छतरपुर
२१/१०/२७

५६. गुलाबराय

श्रीमन्

यह पंडित श्री हरेकृष्ण मुखोपाध्याय श्री महाराजा साहिब बहादुर की ओर से आप से मिलेंगे। आप के पास वह पुस्तकें हैं जिनका कि अनुवाद ब्रजभाषा पद्य में होना है [।] कृपया पुस्तकें देख लीजियेगा और इनसे बातचीत करके अनुवाद का थोड़ा

नमूना चाहे इन्ही की मार्फत चाहे स्वतन्त्र रूप से श्री महाराजा साहिब बहादुर के अवलोकनार्थ भेज दीजियेगा। फिर जैसी श्री महाराजा साहिब की आज्ञा होगी उससे सूचना दी जावेगी।

भवदीय
गुलाबराय
प्राइवेट सेकरेटरी

५७. हरेकृष्ण मुखर्जी

Kurmitha
Batikar-P.O.
Dist. Birbhum (Bengal)
10-11-27

Dear Sir,

Recently I had the honor to be at the Chhatapur Raj. His Highness was enamoured of the poetry of Chandi Das—the Vaishnab Poet of Bengal & was anxious to have them translated in **Hindi.** You have been selected out for the task, as the best hand available.

I think you have already received letter from his Highness. I also went down to Calcutta to meet & talk with you on the subject. But unfortunately I could not meet you.

However, kindly translate, as sample, a few of the Poems of Chandidas, to His Highness, for his appreciation.

Chandidas is now considered a world-renonwned lyrical **Poet** & it is a matter of great pride to all alike that his Highness **is** willing to get it translated in Hindi. I would therefore request you, leaving all other consideration apart, to at once set in the task & and be the renowned translator of the World-Poet like Chandidas—It is glory to you & and the Maharaja Bdr alike.

If you desire or are in need of any help in the matter of translation, or right understanding of the Poems, I am always at your service.

Praying God for your success

I remain yours flly
Harekrishna Mukherji
Sahityaratna.

[पता :]

Pandit
Surjakanta Tripathi
Village—Garhakola
P. O.—Magrair
Dt—**Unao.**

[सारांश : छतरपुर महाराज बंगाल के वैष्णव कवि चंडीदास के बड़े प्रेमी हैं। उनकी कविता के लिये जो लोग सुलभ हैं, उनमें सर्वाधिक उपयुक्त समझकर आपको चुना गया है। महाराज का पत्र मिला होगा। मैं आपसे मिलने और बात करने कलकत्ते गया था; खेद है, भेंट न हो सकी। नमूने के तौर पर महाराज के अवलोकनार्थ कुछ कविताएं अनुवादित करें। चंडीदास अब विश्वविख्यात गीतकार माने जाते हैं। सभी के लिए गर्व की बात है कि महाराज उनका अनुवाद हिन्दी में कराना चाहते हैं। इसलिए और सब विचार छोड़कर आप इस काम में लग जायँ, चंडीदास जैसे विश्वकवि के यशस्वी अनुवादक हों। इसमें आप और महाराज—दोनों का गौरव है। अनुवाद में या कविताएं सही-सही समझने में, आप चाहें या आवश्यकता हो, तो मैं सेवा के लिए तत्पर हूं।]

५८. नंददुलारे वाजपेयी "ओ३म्" श्री काशी विश्वविद्यालय
१२-११-१९२७

सम्मान्य त्रिपाठी जी,

सादर सप्रेम वन्दे।

'कृपापत्र करगत हुए कई दिन हुए। शीघ्रतर उत्तर देने में विलम्ब हुआ। अपराध हुआ, कृपा कर कवि-कुल-सुलभ सदयता से उसे क्षमा करें।

शैली-सम्बन्धी मेरी जिज्ञासा का उत्तर मिला, धन्यवाद। उससे मेरे संदेह की आंशिक निवृत्ति हो गई— साथ ही इस धारणा की परिपुष्टि भी हुई कि कवियों की कृतियों में भावसाम्य का होना सम्भव ही नहीं स्वाभाविक भी है। इस विषय की विशेष बातें किसी अन्य अवसर पर निवेदित करूंगा।

पंतजी के 'पल्लव' की आपकी आलोचना को मैं ध्यानपूर्वक पढ़ रहा हूं। मैं उसे अधिकांश में तथ्यपूर्ण और विद्वत्तापूर्ण मानता हूं। भावापहरण के उदाहरण सभी निष्पक्ष विद्वानों को समभाव से स्वीकार होंगे—ऐसा मेरा विचार है।

माधुरी के विशेषाङ्क की "रेखा" में कुछ छापे की अशुद्धियां हो गई हैं ऐसा जान पड़ता है—क्योंकि कहीं २ ठीक २ अर्थ नहीं लगता। यदि ऐसा हो तो कृपया अशुद्ध शब्दों की सूची लिख भेजिएगा। अन्यथा क्षमा कीजिएगा—मैं फिर से समझने की चेष्टा करूंगा।

त्रिपाठी जी, आप वहां क्या काम करते हैं? इधर साहित्य-क्षेत्र से अलग हो गए से क्यों जान पड़ते हैं। कुछ लिख रहे हैं या नहीं? "मतवाला" के विगत अङ्क में प्रकाशित आपका "गीत" मुझे बहुत ही साधारण सा लगा। शब्दों का संगठन आपके योग्य नहीं है। सुकवि 'गुलाब' के "अभिनन्दन-वन्दन" को "वन्दन-अभिनन्दन" बनाकर आपने उसके स्वाभाविक सौन्दर्य को कुछ कम सा कर दिया है—आपकी क्या सम्मति है?

आपके समाज-सम्बन्धी विचारों को जानने की मुझे वड़ी उत्कण्ठा है। स्त्रियों के स्वातन्त्र्य के सम्वन्ध में मैं आपके विचार विशेष रूप से जानना चाहता हूं। श्रद्धेय पं० अयोध्यासिंह जी ने यहाँ एक ऐसे साहित्य-सेवी समुदाय के स्थापन का विचार किया है जो सामाजिक विषय पर समय २ पर लेख लिखे और यथाशक्ति समाज की बढ़ती हुई उच्छृंखलता का सुधार करे। स्त्रियों को स्वतन्त्रता दी जाय पर इतनी अधिक नहीं कि उसका दुरुपयोग हो। वर्णाश्रम धर्म ही हमारा सर्वस्व है। इसी ने हमारी शताब्दियों से रक्षा की है—इसके तोड़ देने से सिवा हानि के लाभ नहीं। उपाध्याय जी के ये ही और इस प्रकार के ही सिद्धान्त हैं और मेरे विचार से प्रत्येक विवेकशील पुरुष के ऐसे ही विचार होंगे। हम भारतवर्ष को भारतवर्ष ही की प्राचीन संस्कृति का पाठ पढ़ावें—यूरोप की संस्कृति का नहीं – संक्षेप में यही हमारा भी मत है। उपाध्याय जी ने मुझको उस साहित्य-सेवी-दल का मंत्री वनाया है और स्वयं अध्यक्ष हैं। "आर्य-महिला" पत्रिका जो महामंडल से निकलती थी अव विशेष परिष्कृत रूप में उपाध्याय जी के संरक्षण में निकलेगी। उसी में हम सव को अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलेगा। क्या मैं आशा करूँ और साथ ही साथ आप से निवेदन भी करूँ कि "आर्य-महिला" के लिये आप कुछ न कुछ लिखते रहें—अपनी अमूल्य विचारावलि से उसके पन्नों को अलंकृत करते रहें —उसकी सफलता के सहायक हों।

"दासता-सिंधु" शीर्षक एक साधारण-सी रचना, जो कि वर्तमान शिथिल राज-नीतिक परिस्थिति को लक्ष्य करके प्रोत्साहन के रूप में लिखी गई है—सेवा में भेजता हूं। यदि आप उसे उचित समझें तो उसे स्थानीय किसी पत्र में प्रकाशनार्थ दे दें। "माधुरी" की आश्विन की संख्या में "जिज्ञासा" शीर्षक एक कविता निकली है [,] कृपया उस पर अपनी सम्मति—उचित आदेशयुक्त लिख भेजने का कष्ट करें।

पंडित जी, मैंने यह पत्र ऐसा लिखा है, जैसे मैं आपका कोइ चिर परिचित मित्र होऊँ! पर मैं आपको अपना एक सम्मान्य सुहृद ही नहीं कुछ और भी मानता हूं। सुना है कविगण अंतर्यामी होते हैं—इसलिये मुझे कोई विशेष चिन्ता नहीं।

कृपाकांक्षी
"नन्ददुलारे वाजपेयी"

['मतवाला' में प्रकाशित गीत :
जीवन चिरकालिक क्रन्दन।
'अनामिका' में संकलित है।]

"दासता-सिन्धु"

सिंधु-संतरण के अभिलाषी
साहसमय सच्चे सन्यासी।
हिचकन दिखती कैसी ?
आह, मत विचलित हो आधी राह॥

अहा तीर की मधुर कल्पना !
सोचो क्या थी निरी जल्पना ?
नहीं नहीं, थी सच्ची चाह।
मत विचलित हो आधी राह ।।

कहते थे मनहर वह तट है,
ऊवा इससे, उसकी रट है—
चलो निकट है—कैसा दाह ?
मत विचलित हो आधी राह ।।

दहले इतने ही झोंकों से !
कहो क्या कहा था लोगों से ?
नकली निकली बातें ! वाह,
मत विचलित हो आधी राह ।।

है कमनीय भूमि आगे ही,
सुख की राशि बिना माँगे ही—
मिल जाती है वहाँ अथाह
मत विचलित हो आधी राह ।।

वीर वंश के वीर अंश हो।
विजयी बनना विघ्न-ध्वंस हो।
भूलो मत समुचित उत्साह।
मत विचलित हो आधी राह ।।

केवल दो ही हाथ लगा दो,
क्षण भर को भीरुता भगा दो।
अभी अभी मिलती है थाह
मत विचलित हो आधी राह ।।

उत्तर इस पते से दें :

Nand Dularey Bajpeyi
M. A., & LL. B.-Student
Central Hindu College
P. O. Benares Hindu
University
Benares

—o—

५९. गुलाब राय

From—

GULAB RAI, M.A., L.L B.,
Private Secretary

Chhatarpur
C.I.
14/11/27

To

H.H. the Maharaja Sahib
Bahadur, Chhatarpur.

श्रीमन्

मैंने पंडित हरेकृष्ण मुखोपाध्याय को आप के पास श्री महाराजा साहिव की आज्ञा से भेजा था। उनके पत्र से ज्ञात हुआ कि आप घर आये हुए हैं। यदि हो सके तो कलकत्ता लौटने से पूर्व श्री महाराजा साहिव से मिलते जाइये।

हरपालपुर पहुचने की तारीख से सूचित कीजिये—

भवदीय
गुलाबराय

[ऊपर अंग्रेजी में पता मुद्रित है।]

६०. कृष्ण विहारी मिश्र

नवल किशोर-प्रेस,
लखनऊ।

'माधुरी' कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० १८-११-१९२७

प्रिय त्रिपाठी जी,

वहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं मिला। मेरे पिता जी का देहांत हो गया है [,] इससे लखनऊ में मेरा रहना कम होता है। संभव है इस बीच में मेरे नाम आपके पत्र आये हों पर मुझे मिले नहीं। आपकी 'पल्लव' पुस्तक की समालोचना की दूसरी क़िस्त अगहन की 'माधुरी' में निकल रही है [।] अव इसकी तीसरी क़िस्त भी शीघ्र भेजिये। आशा है पुरस्कार आपको मिल गया है। कृपाभाव वना रहे। कभी-कभी पत्र भेजने की उदारता दिखलाते रहिये।

विनयावनत
कृष्ण विहारी मिश्र

[यह कार्ड 'मतवाला' के पते पर कलकत्ते भेजा गया था, वहां से गढ़ाकोला लौटाया गया है।

६१. विष्णुदत्त शुक्ल

वन्देमातरम्

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है।

'प्रताप'
प्रसिद्ध राष्ट्रीय
साप्ताहिक
पत्र

तार का पता—'प्रताप'

'प्रताप' कार्य्यालय
कानपुर २१-११-१९२७

उत्तर में यह संख्या
और तारीख लिखिए
संख्या

प्रिय निराला जी,

नमस्कार

आपकी यह कविता बहुत दिनों से पड़ी हुई है। प्रताप में दी जा सकेगी या नहीं इसका कुछ ठीक नहीं। यहां पड़े-पड़े उलटे उसके खो जाने का भय है। इसलिए मैं कविता आपके पास वापस भेजता हूं।

शेष कुशल है। आशा है आप भी सकुशल होंगे।

आपका
विष्णु दत्त शुक्ल

[नवंबर १९२७]

६२. हरेकृष्ण मुखर्जी

श्री हरेकृष्ण मुखोपाध्याय,
साहित्यरत्न।

श्री श्री रामकृष्ण
'सारदा कुटीर'
कुड़मिठा (वीरभूम)

वातिकार
पो

तारिख १४ अग्रहायण १३३४

सविनय निवेदन
नमस्कार ग्रहणकरून:।

आपनार १६-११-२७ तारिखेर पत्र यथासमये पाइयाछि। सिकेटारी छतरपुर हइते पत्र दियेछिलेन, ताहां के आपनार ठिकाना पाठाइयाछि, आपनि विलंब न करिया यथा संभव शीघ्र गुटि दुइ पद हिन्दी ते अनुवाद करिया पाठाइया दिवेन।

आमार इच्छा छिल आपनि ओ आमि एक संगे थाकिया एइ अनुवाद कार्य शेष करि। एइ कार्ये अन्ततः छय मास काल समय लागिवे। आमि जेमन यथाशक्ति आपना के साहाय्य करिताम तेमनि आपनार निकट हिन्दी शिक्षा करिले आमार एकटा गुरुतर अभाव पूर्ण हइत। ता छाड़ा शुधू पदावली अनुवाद नय, आपनाके दिया चंडीदासेर पदसमूहेर एकटा विश्लेषण मूलक विस्तृत भूमिका ओ हिन्दी ते लिखाइबार संकल्प करियाछिलाम। आपनार सहित साक्षात् हइले एइ सब विषय आलोचना करिताम।

पदावलीर अनुवाद प्रकाशेर पूर्व्वेइ आपनि श्रोट् आलोचना हिन्दी मासिक पत्रे प्रकाश करिले चण्डीदास लइया आपनादेर साहित्यिक समाजे ओ आपनि ए विषये यथेष्ट आन्दोलन तुलिते पारितेन । आमि चण्डीदास संबन्धे कलिकाताय थियोसाफिकल हले गत श्रावणे ओ भाद्रे ये चारिटि लेक्चार दियेछि, ताहा आपना के दिते पारिताम, कारण ताहा आमार निकटे लिखित अवस्थाय प्रस्तुत रहियाछे । किन्तु ए सब कथा आमि निज हइते महाराजा वहादुर के बलिते पारि नाइ। आपनि बलिलेइ इहा सहजेइ हय। अथच इहाते आपनार अर्थागम, वा सम्मान लाभ कोनो दिकेइ क्षति हइबे ना, वरं सुविधाइ हइबे, ओ परन्तु माझखान हइते आमि यथेष्ट उपकृत हइव। आपनि छतरपुर गिये बलिलेइ हइबे जे अनुवादेर कार्य्ये पदावली जाना एक जन वांगाली पंडितेर साहाय्य दरकार। महाराजा वहादुर द्विरुक्ति ना करिया आमाय संवाद दिबेन। एई रूपई बुझिया आसियाछिं। एखन आपनार जेरूप अभिरुचि । आमि आपनार एवं आमार दुइ जनेर जाहाते सुविधा हय ताहाइ करिते अनुरोध करिते छि। नि [वेदन] इति।

विनीत श्रीहरेकृष्ण मुखोपाध्याय

[सारांश :

आपका १६-११-२७ का पत्र मिला। सेक्रेटरी ने छतरपुर से पत्र लिखा था। उन्हें आपका पता भेज दिया है। आप शीघ्र दो पदों का अनुवाद करके भेज दें।

इच्छा थी कि हम और आप एक साथ रह कर यह काम करें। लगभग छह महीने लगेंगे। मैं आपकी जितनी सहायता करूंगा, उतना ही आप मुझे हिन्दी सिखाकर मेरा एक अभाव दूर करेंगे। आप चंडीदास की एक आलोचनात्मक भूमिका भी लिखें और किसी हिन्दी मासिक पत्र में प्रकाशित करके इस विषय में आन्दोलन कर सकते हैं। मैंने कलकत्ते में चंडीदास पर जो भाषण दिये थे, उन्हें आपके पास भेज सकता हूं। किन्तु यह सब मैं महाराजा वहादुर से न कहूंगा। आपका कहना ही उचित होगा। इसमें अर्थ या सम्मान—किसी की भी क्षति न होगी, सुविधा ही होगी और इससे मैं उपकृत हूंगा। आप छतरपुर जाकर यह अवश्य कहें कि अनुवाद के लिये पदावली के ज्ञाता एक बंगाली पंडित दरकार हैं। महाराजा बहादुर विरोध न करके मुझे सूचित करेंगे। आगे जैसा रुचे। हम दोनों की जिसमें सुविधा हो, वही करें—यह अनुरोध है।]

६३. जयशंकर 'प्रसाद'

काशी

३-१२-२७

प्रिय निराला जी,

कार्ड आपका मिला। इसके पहले भी आपका पत्र हस्तगत हुआ था। स्वास्थ्य ठीक न रहने से उत्तर देने में विलंब हुआ। अभी कहीं कुछ उत्तर तो नहीं देखने में आया। शिवपूजन जी ने स्थान बदलने जाकर अपना पैर तोड़ डाला था, अब धीरे २ अच्छे हो रहे हैं। विनोद जी कानपुर नहीं जा सके। और कोई नया समाचार नहीं है,

मेरा भी स्वास्थ्य अब अच्छा हो रहा है। आपने अपने पत्र में यह नहीं लिखा कि आप के रोग की क्या अवस्था है। कुशल समाचार लिखिए—

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

[केवल हस्ताक्षर प्रसाद के।]

६४. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी,
Benares City ६/१२/२७

प्रणाम।

बहुत दिनों से आपके स्वास्थ्य का समाचार नहीं मिला, आशा है, आप पहले से अधिक स्वस्थ हैं। परमात्मा आपकी सुख-शान्ति की वृद्धि करता रहे।

यहाँ मित्र-मंडली पूर्ववत् मिलती जुलती है, सब प्रसन्न हैं। एक नया समाचार ...कि, बहुत दिन हुए, शिवपूजन जी छत पर से गिर पड़ने के कारण घायल हो गये, ...ा हो रही है, अब सानंद हैं। चिंता की बात नहीं। वह गली वाला मकान छोड़ ...हुई। उनका वर्तमान पता—शिवपूजन सहाय जी, C/o अग्रवालप्रेस, तेलियाबाग, ...ीन्स-कालेज के पास, हवा-पानी बदलने के लिये एक बागीचे में ठहरे हैं—वहीं यह ...स कैन्ट। बेनीपुरी जी भी आए हुए हैं। 'विनोद' जी इलाहाबाद गये हुए थे। उनसे ...म हुआ है कि, बख्शी जी भी १२-१५ ता० तक यहाँ आने वाले हैं। श्री मैथिलीशरण ...के भी आने की बड़ी आशा है। अच्छा है, साहित्यिकों का एक मज़ेदार जमघट ...गा।

एक नई बात यह है कि, बख्शी जी आजकल मुझ पर सदय हुए हैं—'सरस्वती'— ...रा प्रोत्साहित करने के लिये। एक छोटी कविता नवंबर की 'सरस्वती' में छपी थी। ...ार्षिक अंक में मेरा एक लेख भी छपेगा। आपका आशीर्वाद बना रहे, यही साहित्यिक ...ंगल की कामना है।

मुझे आपकी सीख भूली नहीं है—वही अध्ययन करने की बात। आप विश्वास रखें, पानी के लिये कुँआ खोदने ने जो समय मिलता है, उसे मैं अध्ययन को ही समर्पित करता हूँ; किंतु चिंताओं से समय बहुत कम मिलता है। मैं अध्ययन के आनंद को जानता हूँ, मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो पढ़ना कुछ नहीं चाहते, किंतु साहित्य-महारथी, कवि-कोविद बनने के लिये मरे जाते हैं। मैं आपको फिर विश्वास दिलाता हूँ कि, जिस दिन 'शांतिप्रिय' को यह मालूम हो जायगा कि, वह केवल नाम कमाने अथवा कुछ ऐंड़ी-बेंड़ी लिखने के लिये, कलम और काग़ज़ का सम्मिलन कराता है, उस दिन वह अपने मुँह में कालिख पोत लेगा। मैं अनधिकार चेष्टा से बचूँगा। आपके चरणों से भी मुझे बहुत कुछ

सीखना है, वह सामग्री आपसे प्राप्त करना चाहता हूँ—जिसकी गुरुता को समझकर, मैं गुरुभाव से शीस झुकाता हूँ। आप इसकी उपेक्षा न करें, इसमें आपकी क्षति क्या है? यदि मैं अयोग्य हूँ तो आपके संकेतों से योग्य भी बन सकता हूँ। कब वह दिन आयेगा, जब आपके साथ रहने का मुझे एक लम्बा समय मिले, और मैं आपसे कुछ सीखूँ।— केवल अध्ययन का उपदेश नहीं, बल्कि अध्ययन की सामग्री भी प्राप्त करूँ।

सेठ जी का अनुरोध था कि, मैं उग्र जी के साथ 'मतवाला' में चला जाऊँ, मैं इसीलिये नहीं गया, वहाँ की क्लर्की से मेरे मानसिक विकास में आघात पहुँचेगा। मैं एक ऐसी संगति का आकांक्षी हूँ, जिससे कुछ सीख सकूँ। अस्तु।

'माधुरी' के इस नये अंक में आपकी पंत जी के प्रति नई समालोचना देखी— बहुत अच्छी। इन समालोचनाओं से न जाने पंत जी पर क्या बीते! मैं चाहता हूँ, उनका गुरुडम यदि कम हो जाय तो उन्हें क्षमा-दान भी दीजियेगा।

पंत जी के बाद एक हाथ महतो जी पर भी लगाइये। आवश्यक समझिये तो। अच्छा हो, पंत जी की ही तरह, हिन्दी के सभी प्रमुख कवियों की समालोचना कर जाइये— अलग,-अलग। ये समालोचनायें पुस्तकाकार होकर साहित्य की एक ठोस चीज़ होंगी। समालोचना के लिये कवितायें मैं एकत्रित कर दूँगा। क्या आपको वहाँ खास-खास सभी पत्रिकायें पढ़ने को मिल जाती हैं?

चरणाश्रित
श्री शांतिप्रिय द्विवेदी

[पता गांव का]

६५. (क) शिवपूजन सहाय
(ख) शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री.

C/o ज्ञानमंडल प्रेस,
बनारस सिटी
१८-१२-२७

मान्यवर पंडित जी,

सादर सविनय प्रणाम।

आपका कृपा-पत्र, शांतिप्रिय जी द्वारा मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आपका समाचार जानने के लिये अत्यंत उत्सुक था। बड़े हर्ष की बात है कि, आप छतर पुर जा रहे हैं। वह राजदरबार है; मेरी राय है कि आप वहाँ कुछ दिन रहें, कोई 'गारंटी' तो है नहीं, जब तक दाना-पानी साथ दे। मुझे विश्वास है कि आप वहाँ रहना चाहेंगे तो साहित्य का बड़ा उपकार होगा। मेरी आन्तरिक इच्छा यह है कि, आप वहाँ पहले आसन जमावें, फिर पैर फैलावें, उसके बाद आराम से सोवें या चाहे जो करें। आप तो एक दरबार में लड़कपन से बहुत दिनों तक रह चुके हैं, आप को मैं नहीं बता सकता कि राजदरबार में कैसे रहना चाहिये। इस विषय में आप ही भली भाँति सोच सकते हैं।

'पल्लव' की समालोचना मैं बड़े ध्यान से पढ़ता हूँ। उसकी पहली किस्त के बारे में मैंने लिखा था कि, कुछ कटु हुई हैं; पर, दूसरी किस्त बहुत ही सरस है। पहिली के समय आप शायद कुछ आवेश में थे। आपकी चंडीदास—अनूदित कविता बहुत अच्छी जंची। 'सुधा' में चंडीदास पढ़ने की उत्सुकता है। अब 'सुधा' और 'माधुरी' दोनों में आपके लेख पढ़ने को मिलेंगे। 'चंडीदास' के बाद यदि आप 'रवीन्द्र' पर लम्बी लेखमाला लिखें तो गंगा-पुस्तक माला से पुस्तकाकार छप भी जायगी, और आप जो 'रवीन्द्र' पर छानबीन किये बैठे हैं, वह भी सफल हो जायगी। जैसे 'माधुरी' और 'सुधा' पर जादू डाला, वैसे ही 'विशाल भारत' पर भी एक धौल रहे। वह कलकत्ते से ९१, अपर सर्कुलर रोड, 'माडर्न रिव्यू'—आफिस से निकल रहा है।

मेरे पैर की हालत अब अच्छी है। बाबू साहब और व्यास जी तथा शांतिप्रिय जी आदि दर्शन दिया करते हैं। छतरपुर पहुंच कर विस्तृत पत्र दीजियेगा।

शिवपूजन

देव, पूज्य चरणों में मेरा भी प्रणाम।

शांतिप्रिय।

[कार्ड शान्तिप्रिय द्विवेदी की हस्तलिपि में है, केवल हस्ताक्षर शिवपूजन सहाय के हैं।]

(ख) रवीन्द्रनाथ और तुलसीदास की तुलना करते हुए कुछ लेख निराला ने 'मतवाला' में लिखे थे। 'सुधा' की अनेक संपादकीय टिप्पणियों में रवीन्द्रनाथ का उल्लेख है। किन्तु जैसी लेखमाला की ओर शिवपूजन सहाय ने संकेत किया है, वैसी उन्होंने नहीं लिखी।

६६. प्रेमचन्द

तार—"UKHBAR"
'माधुरी' कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० २१-१२-१९२७

नं० 3287
नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ।

प्रिय सूर्यकान्त जी, वन्दे।

लेख और पत्र मिले। धन्यवाद। शीघ्र छपेगा।

मिश्र जी आपको नमस्कार कहते हैं।

रुपए मैंने अभी नहीं लिए। आप के पास भेज दिए गए। शायद आप को जरूरत हो। हिन्दी ड्रामा पर एक लेख क्यों न विशेषांक के लिये लिखने की कृपा कीजिए।

उसमें सूर्य विजय, व्याकुल आदि, मदन, अल्फ्रेड की चर्चा हो और मुख्य ऐक्टरों की विवेचना की जाय। लिखिएगा अवश्य।

भवदीय
धनपतराय

[पता]

Shrijut
Pt. Surya Kantji Tripathi
Vill. Garhakola
P.O. Magrayar
Dt. Unao

['महाशय' की जगह "सूर्यकान्त जी" से लेकर पते तक कार्ड प्रेमचन्द की हस्तलिपि में है। जैसा लेख मांगा गया है, वैसा लेख निराला ने नहीं लिखा।]

६७. राम सेवक त्रिपाठी

टेलीफ़ोन नं० ५ व ८.
[संपादकीय-विभाग]
नं०———

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी' कार्यालय,
नवलकिशोर-प्रेस
लखनऊ ३-१-१६२८

प्रिय निराला जी,

यदि, आप को 'माधुरी' के संपादन विभाग में सहायक की भांति कोई स्थान मिल सके तो क्या आप उन ज़िम्मेदारियों को निभा सकेंगे ? आप की हिन्दी, अंगरेज़ी आदि किन २ भाषाओं की योग्यता है ? प्रूफ रीडिंग का कैसा अभ्यास है ? विवरण सहित लिखिए। कम से कम क्या वेतन आप स्वीकार कर लेंगे। प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण कर दीजिए। ताकि, पत्रव्यौहार में व्यर्थ समय न जावे।

भवदीय
राम सेवक त्रिपाठी
संपादक तथा प्रबंधक

[पता:]

Pandit,
Surya Kant Tripathi
"Nirala"
गढ़ाटोला
Magrayar P.O.
Dt. Unao

[गांव का ठीक नाम अभी पत्र लेखक को मालूम नहीं।]

६८. प्रेमचन्द

तार—"UKHBAR"
'माधुरी' कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० 6-1-१९28

नं० 3753
नवल किशोर प्रेस,
लखनऊ।

प्रिय सूर्यकान्त जी।

लेख मिला [,] धन्यवाद। आप छत्रपूर पहुँचें तो समाचार लिखिएगा।
हम लोग सकुशल हैं।

भवदीय
ध० राय
[धनपतराय]

[पता]

Shrijut
Pt. Surya Kant ji Tripathi Nirala
Vill. Garhakotla
P.O. Magrayar
Unao

[२१-१२-२७ के कार्ड पर प्रेमचंद ने गांव का नाम ठीक लिखा था किन्तु ६ जनवरी और १ फर्वरी १९२८ के कार्डों पर स्पष्ट ही कोला का कोटला हो गया है।]

६९. विनोदशंकर व्यास

मानमन्दिर
काशी
६-१.२८

प्रिय निराला जी,

सप्रेम वन्दे।

मैंने समझा था कि आप पत्र लिखेंगे; किन्तु अब निराश होकर मैं ही लि रहा हूँ। मैंने ईधर [इधर] अपने किसी साथी को पत्र नहीं लिखा है। कुछ ऐसी तबीयत हो गयी थी। आज सबको लिखने बैठा हूँ, अतएव आपको भी लिख रहा हूँ

'उग्र' के न तैयार होने के कारण कानपुर मैं नहीं जा सका था जैसाकि आ५ वादा किया था। आप लखनऊ गए थे, यह समाचार भार्गव की जबानी मालुम हुआ। मेरा झगड़ा निपटाने काशी आए थे। एक तरह से मेल हो गया। लोगों के कहने पर।

भाई शिवपूजन के गिरने का समाचार आप को मिल ही गया होगा। ईश्वर की कृपा से अब अच्छे हो गए हैं।

मैं भी हंसता, रोता, गाता, अपने समय को काट रहा हूँ। एक तरह से अच्छा ही हूँ। आप अपना समाचार लिखिए।

हाँ, 'अशान्त' पर आपके [की] सम्मति की अत्यन्त आवश्यकता है। अपनी सम्मति लिखकर भेजिए। बस। फिर कभी।

आपका
विनोद

७०. जयशंकर 'प्रसाद'

काशी
१०-१-२८

प्रिय निराला जी,

आप का लेख 'भारत जीवन' में न भेजकर पं० रूप नारायण पाण्डय जी को मैंने दे दिया। वे उसे प्रकाशित करेंगे। भारत जीवन का मासिक रूप में निकलना असम्भव-सा है। और 'सुधा' में उन्होंने आपके और लेखों को भी सपुरस्कार छापने के लिए वचन दिया है। आशा है कि आप उनके लिए कुछ न कुछ बराबर लिखा करेंगे। चण्डीदास का अनुवाद मैंने देखा, बहुत सुन्दर हुआ है। शिव पूजन जी के पास आपका वह पत्र भेज दिया था। छतरपुर आप कब तक जायेंगे? हमारे हाथ में कुछ चोट है [।] और सब कुशल है, अपना कुशल समाचार लिखिए।

भवदीय :—
N. K. Dubey.
for जयशङ्कर 'प्रसाद'

[प्रसाद जी के लिखाये हुए अनेक पत्र इन्हीं सज्जन की हस्तलिपि में हैं किन्तु एकाध पत्र किसी और की लिखावट में भी है।]

७१. प्रेमचन्द

नं० 4689
[संपादकीय विभाग]

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी'—कार्यालय
नवलकिशोर-प्रेस,
लखनऊ १-२-१९२८

प्रिय सूर्यकान्त जी।

कृपा पत्र मिला। मीयादी बुखार क्या इसी लिये आप की ताक में बैठा था कि घर से निकलें तो धर दबाऊँ। क़िसमत ने वहां भी आप का साथ न छोड़ा। इस बीमारी ने तो आपको बिलकुल घुला डाला होगा। पहले ही ऐसे कहाँ के मोटे ताज़े थे। ईश्वर जल्द आप को चंगा कर दे।

आप की आलोचना जल्द निकलेगी। बीच में एक महीना का गैप पड़ गया। अब की विचार है कि उसका एक अंश जरूर दे दिया जाय।

सप्रेम
धनपत राय।

[पता] Shrijut
Pt. Surya Kant Tripathi Nirala
Vill. Garhakotla
P. O. Magrair
Dt. Unao

७२. राम सेवक त्रिपाठी

'माधुरी'—कार्यालय
नवलकिशोर-प्रेस,
लखनऊ १-२-१९२८

प्रिय निराला जी,

पत्र मिला। धन्यवाद,

इन शर्तों पर अभी आपको न बुला सकूंगा। आशा है, कष्ट के लिए क्षमा करेंगे।

भवदीय,
राम सेवक त्रिपाठी

७३. विनोदशंकर व्यास

५.२.२८
आधी रात

प्रियवर निराला जी,

सप्रेम वन्दे।

आपका कार्ड मिला। मैं बड़े फेर में था कि इधर आपका समाचार क्यों नहीं मिल रहा है। बाबू साहब और शिवपूजन जी से पूछने पर मालुम होता था कि आपका कोई समाचार नहीं मिल रहा है। अब १ महीने के बाद आपने अपना हाल लिखा है। शुक्र है।

आपकी बीमारी का हाल सुनकर दुख हुआ। मेरी तबीयत भी इधर खराब ही रहा करती है। दिल में बेचैनी है। कुछ भी नहीं कर रहा हूँ, लिखना पढ़ना बन्द है। आप क्या कर रहे हैं? कोई मौलिक पुस्तक क्यों नहीं लिखना आरम्भ कर देते? छत्तरपुर में शायद मंजूर नहीं किया। कुछ तो करना ही होगा। इस तरह कितने दिन चलेंगे।

हिन्दी संसार की आर्थिक दशा जानते ही हैं। खैर हम लोगों को तो अपना दिन पूरा करना है।

आजकल आपकी बड़ी याद आती है—परसाल गर्मी का दिन—हमारी आपकी वातचीत—हारमोनियम—गंगा नहाने जाना—मस्ती—वगैरह वगैरह—आजकल मैं बड़ा दुखी हूँ। तवीयत कहीं लगती ही नहीं। कल सवेरे की गाड़ी से गाँव पर जा रहा हूँ— [,] इसीलिए आज रात के समय १२ वजे आपको लिख रहा हूँ। गाँव के पते से उत्तर दीजिएगा—

मुन्नी का प्रणाम।

स्नेही
विनोद

पता विनोदशङ्कर व्यास
छावनी सरौना
जमालापुर
तहसील मड़ियाहूँ जिला : जौनपुर

नोट :—होली के दो चार दिन पहले वनारस आइएगा, उस समय मैं भी यहाँ आजाऊगा।

७४. रूपनारायण पाण्डेय

[सुधा कार्यालय]

Lucknow ८/२/192८

प्रिय भाई निराला जी,

वंदे। आपकी ३ रचनाएँ मिलीं। एक कविता भी। एक रचना मैं जयशंकर जी से ले आया था। ये सव क्रमशः छपेंगी। व्यंग्य-विनोद इसी संख्या में जा रहा है। पत्रिका आप की है। हम लोग आप के हैं। मैं भी हूँ। आशा है, इसी तरह कृपा वनाए रक्खेंगे। भार्गव जी वाहर गए हैं।

भवदीय
रू० ना० पा०
[रूपनारायण पाण्डेय]

[पता]

७५. महादेव प्रसाद सेठ

मतवाला कार्य्यालय
३६, शङ्करघोष लेन, कलकत्ता।

[बोतल, पेग और पियक्कड़ का चित्र] MATAWALA ता० १५-२-१९२८

मान्यवर,

सदा की भांति इस वर्ष भी मतवाला अपने होलिकाङ्क के लिए आपसे कुछ पत्र

पुष्प की प्राथना [प्रार्थना] करता है। लेख तथा कवितादि २५ फरवरी तक आ जाने चाहिए।

आपका
म. प्र. सेठ
सम्पादक

[ऊपर वाला अंश छपा हुआ है। हस्ताक्षर करने के बाद महादेव प्रसाद सेठ ने नीचे लिखा है :]

प्रिय त्रिपाठी जी,

आशा है [,] स्वास्थ्य ठीक होगा। जहां तक सम्भव हो कुछ भेजिए। यदि कुछ कष्ट हो तो भी। मतवाला आप ही का है।

मिति १६/२/२८

७६. शिवपूजन सहाय

'बालक'
सचित्र मासिकपत्र

हिन्दी-पुस्तक-भंडार
लहेरिया सराय

काशी, ज्ञानमण्डल

मान्यवर पंडितजी,

सादर सप्रेम प्रणाम—आपकी दो चिट्ठियां मिलीं—एक छतरपुर से और एक घर से। बड़ी दया।

मेरा पैर अभी एकदम ठीक नहीं हुआ। दस-बीस कदम किसी क़दर चल सकता हूं। सूजन अभी तक है। चलने पर दर्द होता है। तेल मालिश और fomentation जारी है। इधर हफ्तों वर्षा और सर्दी के कारण बड़ा कष्ट हुआ। शादी बैसाख में होने वाली है। अगर पैर दुरुस्त न हुआ, तो आषाढ़ में होगी। आपको सादर निमंत्रण भेजूंगा। आप अगर सम्मिलित होने की कृपा करें तो मेरा अहोभाग्य। बनारस की मण्डली चलेगी। छतरपुर का सब हाल मालूम हुआ। अ ... र्टर के लिये ताक में हूँ, पर हिन्दी वालों की दशा आप जानते हैं। टीका के लि सूझता। स्वस्थ होकर आप काशी में नौकरी कीजिये। कु लाभ हो। बहुत काम होगा। आपके रु० के लिए स्पष्ट : अपने स्वास्थ्य का हाल लिखिये। आपका—शिव० [f

[पता]

७७. विनोदशंकर व्यास

होली का प्रेमालिङ्ग

प्रिय निरालाजी,

सप्रेम वन्दे !

बहुत दिनों से आपका समाचार नहीं मि

लिये बड़ा दुखी हूँ। मैंने एक कार्ड गांव जाते समय आपके पास भेजा था; किन्तु उसका उत्तर भी आपने नहीं दिया। क्या वास्तव में आप मुझसे रुष्ट हैं?

बाबू साहब ईधर [इधर] कुछ अस्वस्थ थे। शिवपूजन जी घर गये (आरा)। आजकल बनारस विनारस हो रहा है। आप अपना सब समाचार कार्ड देखते ही लिखिये। क्या कर रहे हैं? हम लोग यहाँ अच्छे हैं। आशा है आप भी निरोग होंगे।

मुन्नी का प्रणाम।

आपका
विनोदशङ्कर व्यास

[पता]

७८. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. राधाकृष्ण दास बी० ए०
कोठी-भदैनी
बनारस
२/३/१९२८

प्रणाम।

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ। इससे पहिले भी मैंने एक कार्ड लिखा था। पर, आपने कुछ लिखा नहीं—शायद अस्वास्थ्य के कारण।

दो तीन दिनों बाद होली है, किन शब्दों में अभ्यर्थना करूँ। परमात्मा नवीन संवत् से आपको नवीन स्वास्थ्य दे। आप एक बार फिर उठ खड़े हों, वही पूर्व उत्साह नवीन वर्ष से आपमें प्रस्फुटित हो।

मैं सकुशल-सस्वस्थ् हूँ। आप अपने स्वास्थ्य का समाचार दें। बड़ी उत्कंठा है। यहाँ सब मित्रगण प्रसन्न हैं। बाबू साहब को इधर फोड़ा हो गया था, इसलिए वे आपको कोई पत्र न लिख सके। शायद अब लिखें। मेर योग्य सेवा से सूचित कीजिये।

सविनय—शान्तिप्रिय

[पता गांव का]

७९. महादेव प्रसाद सेठ

मतवाला-मण्डल

मान्यवर महोदय,

आपकी रसीली रचना हमें यथा समय मिल गयी थी। उसे हमने अपने होली के [**होली की बधाई!**] प्याले में सादर ढाल कर पियक्कड़ पाठकों के आगे परोस भी दिया है। आशा है, आप इसी प्रकार सदैव अपने 'मतवाला' और उसके पागल 'मण्डल' पर कृपा करते रहेंगे।

होली का त्योहार आपको सुखद हो !

प्रेमी—
महादेव प्रसाद सेठ
मतवाला-संपादक

५-३-२८
कलकत्ता } [छपा हुआ कार्ड]

८०. रामनारायण शर्मा

साहित्य सेवा सदन
छतरपुर राज्य
५/३/२८

प्रिय निराला जी,

सादर वंदे

आशा है कुशल से होंगे। जब से गए मोरी सुधिहू न लीनी............। मेरी आंखें अब बारह आना स्वस्थ है। बीमारी के कारण पत्र व्यवहार बंद रहा। हिन्दू पंच का होलिकांक देखियेगा, उसमें हुजूर का लेख ६१ पृष्ठ पर है [।] एक—नज़र डालना—बाबू गुलाबराय जी यथायोग्य कहते हैं

भवदीय
राम नारायण शर्मा

८१. गुलाबराय

छतरपुर
६/३/२७ [२८]

प्रियवर—

बहुत दिन से आपके कुशल समाचार नहीं मिले। आशा है कि आप कुशल से होंगे [।] आप आजकल घर पर ही है या और कहीं। और क्या कर रहे हैं। आजकल हम लोग खजराहो में हैं। पं० रामनारायण जी अभीं [अभी] तक नेत्र रोग से पीड़ित रहे [।] अब जरा अच्छे होते जाते है।

कुशल समाचार शीघ्र भेज दीजिएगा [।]

भवदीय
गुलाबराय

८२. गुलाबराय

प्रेमाभिवादनसहित
गुलाबराय

नव वर्ष
१६८५

हरा भरा कोमल पुष्पमाल सा
विकास की आस भरा नवेन्दु सा
प्रमोद दाता नवजात वाल सा
प्रभात आभा नव वर्ष आ लसा
घरी घरी हो फलवान कामना
सुसद्म तेरा धन धान्य से भरा
रमै रमा श्री ग्रह मे सशारदा
हरी रहै प्रेमलता सदा मुदा

साहित्य सेवा सदन
खुजराहो
छतरपुर राज्य
चैत्र शुक्ला १

गुलाबराय
रामनारायण शर्मा

[कविता गुलाबराय के हाथ की लिखी है; रामनारायण शर्मा ने उनके नाम के नीचे हस्ताक्षर मात्र किये हैं। लिफ़ाफ़े पर मगड़ायर डाकखाने की मुहर में तारीख है २७ मार्च '२८।]

८३. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. राधाकृष्ण दास बी० ए.
कोठी भदैनी
काशी
२५.3.२८

प्रणाम।

वहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ। क्षमा चाहता हूँ इस विलंव के लिए। आपका होली का अशीर्वाद-पत्र मिला था—वड़भागी हुआ।

अव आपके पत्र यहाँ किसी भी मित्र के पास नही आते। कहिए तवियत कैसी है?

आपका लेख 'हिन्दी कविता की प्रगति' 'सुधा' में पढ़ा। रोचक है। एक वात कहूँगा, आप उसमें श्रीधर पाठक का नामोल्लेख करना भूल गए। क्या आपने जानवूझ कर उन्हें छोड दिया?

पंत जी की एक नई किताब 'वीणा' निकली है। उसमें उनकी १६१८-१६ की कविताओं का संग्रह है! मैंने खरीद ली है—सिर्फ़ पंत जी के चित्र के लिये।

एक रहस्य की बात सुन… णा' जब पहले पहल बाजार में बिकने आई, तो दो ही एक रोज बाद इंडियन प्रेस वालों ने उसे वापस मँगा ली। कारण, पंत जी ने उसमें जो भूमिका लिखी थी, उसके द्वारा द्विवेदी जी (सुकवि किंकर) के 'सरस्वती' वाले लेख की अच्छी चुटकी ली थी। इंडियन प्रेस वाले उतने अंश को निकालकर अब फिर 'वीणा' को बाजार में भेजा है। शायद इसी रंज में पंतजी ने 'सरस्वती' में लिखना बंद कर दिया है। वे उदासीन हो गए हैं। अस्तु। मेरा एक कष्ट स्वीकार कीजिए। मैं रविबाबू के दो चार पद्यों का अनुवाद आपसे करवाना चाहता हूँ—स्वीकार करें तो भेजूं। आवश्यक है।

शांतिप्रिय

[पता गांव का]

काशी विश्वविद्यालय
२७.३.१९२७+१

८४. नंददुलारे वाजपेयी

सम्मान्य त्रिपाठी जी,

सविनय वन्दे।

आपके कथनानुसार अब तक प्रतीक्षा में रहा पर न तो दर्शनों की लालसा ही पूरी हुई और न कुशल समाचारों की सूचना ही मिली। संभवतः आपके काशी न आने का कारण स्वास्थ्य संबंधिनी त्रुटि है क्योंकि कार्यक्रम में व्यतिक्रम होने का कारण साधारणतः स्वास्थ्य ही हुआ करता है। मुझे इसकी चिन्ता है [।] कृपया कुशलता की विज्ञप्ति से उद्विग्नता का उपशमन कीजिए।

"गुलाब" जी के "अभिनन्दन वन्दन" लिखने के पूर्व की आपकी यह कविता मुझे मिली है—

ओ मेरे !—मेरे उन्मोचन-वन्धन
ओ मेरे !—ओ मेरे क्रन्दन-वन्दन
ओ मेरे अभिनन्दन
ये सन्तप्तलिप्त कब होंगे गीत
हृत्तल में तव जैसे शीतल चन्दन ?

भाव और भाषा दोनों ही परमोत्तम हैं। अन्तिम पंक्तियां में अद्भुत अनोखापन है—पण्डित राम नरेश त्रिपाठी की सुप्रसिद्ध पंक्तियां—

मेरे करुणा निधि का आसन गरम होगा
कौन जाने कब मेरे शीतल उसास से।

क्या उपर्युक्त पंक्तियों का रूपान्तर मात्र नहीं हैं ?

क्या इस प्रकार का साम्य भी भावापहरण नहीं कहा जायेगा ? स्वतंत्र रचनाओं का साम्य ऐसा हो सकता है :—

× × जब गिरिगृह छोड़ के
सविता सवेग जाती सागर की ओर है
शक्ति किस की ! तब रोके गति उसकी ?
—माइकेल मधुसूदन

रोक टोक से कभी नहीं रुकती है
यौवन-मद की बाढ़ नदी की—
किसे देख झुकती है ?
"निराला जी"

इससे अधिक समता चोरी ही कहायगी। आप की क्या सम्मति है ? शेष कुशलता है। मैं अधिक से अधिक १५ अप्रेल तक यहाँ रहूँगा। पत्रोत्तर दीजिए।

भवदीय नन्ददुलारे वाजेपयी

८५. गयाप्रसाद शुक्ल सनेही

सुकवि प्रेस,
फ़ीलख़ाना, कानपुर।
तारीख २-४-१९२८

प्रिय निराला जी।

वन्दे

'सुकवि' निकालने का निश्चय हो गया है। उसके लिए कोई रचना या लेख अवश्य भेजिए।

उन्नाव कनौजिया सम्मेलन के अवसर पर अवश्य पधारिए। कवि सम्मेलन की सूचना भेजी जा चुकी है।

भवदीय
सनेही

[कार्ड के दूसरी ओर छपा हुआ विज्ञापन :

—सुकवि—

सम्पादक—सनेही

यह कविता सम्बंधी मासिक पत्र प्रति मास प्रकाशित होता है। इसमें वर्तमान और प्राचीन सुकवियों की चुनी हुई कविताएँ, निष्पक्ष समालोचनाएं, कवियों की जीवनियां, प्रकाशित होती हैं। काव्य रसिकों का मनोरंजन और नवीन कवियों को प्रोत्साहन देना इसका मुख्य उद्देश है। वर्षिक मू० ३) एक प्रति का।—)

मैनेजर—'सुकवि'
फ़ीलख़ाना, कानपुर।]

८६. गुरुप्रसाद पाण्डेय

श्री

12-4-28
कानपुर

पूज्य निराला जी

वन्दे ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । आप उन्नाव नहीं आये । स्वास्थ्य कैसा है ? लिखियेगा । और अधिक क्या लिखूं पत्रोत्तर दीजियेगा । भूल न जाइयेगा । आप 'मतवाला' वालों को भी एक पत्र लिख दे । जैसा आपने कहा था ।

आपका—
गुरु प्रसाद पांडेय
लच्छू बगीचा
कानपुर

[पता :]

सेवा में—
श्री० सूर्यकांत त्रिपाठी
'निराला'
पो० मगड़ायर
मु० गढ़ाकोला
उन्नाव

[गुरुप्रसाद पाण्डेय के बारे में कुछ नहीं मालूम किन्तु इस संग्रह में वह एकमात्र पत्र लेखक हैं जिन्होंने मगड़ायर गांव का नाम, जैसा वह बैसवाड़े में बोला जाता है, वैसा लिखा है ।]

८७. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

C/o राधाकृष्णदास बी० ए०
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी
१७/४/२८

सविनय प्रणाम—

दोनों कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई । आपके स्वास्थ्य का समाचार पाकर तो बड़ा ही आनन्द आया । मित्रों को भी यह सुसंवाद दे दिया । बाबूसाहब और विनोद जी की इच्छा है कि, आप एक बार पुनः काशी आवें । यदि इन दिनों आने की कृपा करें तो नाव पर संगीत का आनन्द फिर मिले । कुछ दिनों अच्छी चहल-पहल रहेगी ।

'माधुरी' में 'पंत और पल्लव' का तीसरा अंश देखा—गंभीर, विषद, तर्क-पूर्ण। कुछ लोगों का मतभेद है। उनका कहना है, अभी आपने 'पल्लव' पर कुछ लिखा नहीं। मूल विषय पर आपकी समालोचना देखने की उत्कंठा है। मेरा निवेदन यह है कि आप आगे चलकर यथास्थान 'पल्लव' की कविताओं के गुण भी दिखावें। पंत जी का हिन्दी-कविता के इस युग में जो स्थान है, उसको स्पष्ट करें।—कला की दृष्टि से उनकी त्रुटियाँ भी। अधिक क्या। काशी आइए। सेवक—शांतिप्रिय

[पता गांव का]

८८. (क) शिवपूजन सहाय — P.O. Itarhi

(ख) राम नारायण शर्मा — Via, Buxar E. I. Ry. (Bihar)

(क) मान्यवर पंडित जी,

सादर सप्रेम प्रणाम।

यह पत्र छतरपुर से काशी होता हुआ मेरे घर पर आया है। मैं लगभग दो महीने से घर पर हूँ। शादी का दिन अभी ठीक नहीं हुआ है। विवाह तिथि निश्चित होते ही सूचना दूंगा। पैर की दशा सुधर रही है। अब कुछ-कुछ चलता फिरता हूँ। इस पत्र का उत्तर छतरपुर अवश्य भेज दीजिएगा। अब आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

स्नेहाकांक्षी—शिवपूजन

आप कब तक घर पर रहेंगे ? आगे का कुछ प्रोग्राम भी बनाया है ?

(ख)

'साहित्य सेवा मंडल'
छतरपुर राज्य
११—४—२८

प्रिय निराला जी,

सादर वन्दे !

बहुत दिन हुए आपकी कोई भी खबर नहीं मिली [।] क्या कारण है ? हम लोगों ने प्रायः ५ पत्र डाले किन्तु एक का भी उत्तर नहीं मिला [।] कृपया पत्र पाते ही कुशल समाचार दीजिए। गुरू जी ने दो तीन बार कई जगह पूछा भी कि आप कहाँ पर हैं किन्तु पता नहीं मिला [।] आशा है आप कुशल से होंगे।

भवदीय
राम नारायण शर्मा

पुनश्च :—

कृपया पता सदा लिखते रहने की कृपा करते रहिए

N. B.

सुधा में चंडिदास सम्बन्धी लेख देखा—

धन्यवाद

[राम नारायण शर्मा ने जो पत्र निराला को शिवपूजन सहाय के पते पर काशी

भेजा था, वह वहाँ से उनके गाँव भेजा गया। उसी के खाली हिस्से में अपनी ओर से लिखकर उन्होंने उसे निराला के पास भेज दिया। राम नारायण शर्मा ने अपना पत्र ११ अप्रैल को लिखा था; इसके सात-आठ दिन बाद शिवपूजन सहाय ने उसे अपने यहाँ से रवाना किया होगा।]

८९. विनोदशंकर व्यास 18.4 28

प्रिय निराला जी,

सप्रेम।

आपका कार्ड मिला था। भला, आप कभी २ इस अकिंचन को याद तो कर लिया करते हैं।

आपका स्वास्थ्य कैसा है? ईधर [इधर] तो आप बहुत भ्रमण कर रहे हैं। काशी कब तक आने का इरादा है। बहुत दिन हो गये। अब तो अवश्य आना चाहिये। मैं भी फिर बाहर जाने वाला हूँ।

यहाँ कोई नवीन समाचार नहीं है। बाबू साहब अच्छी तरह हैं। मैं भी दिन काट रहा हूँ। शिवपूजन जी अपने घर गये हैं।

मैथलीशरण जी आजकल काशी आए हुए हैं। शान्तिप्रिय से भी आपका समाचार मिला [।] आपकी दो लाइनों से सन्तोष नहीं होता [,] पूरा हाल लिखा कीजिये।

मुन्नी का प्रणाम

आपका
विनोदशङ्कर व्यास

९०. शिवशेखर द्विवेदी

श्री

१९३/२, कुमार सभा
हरीसन रोड,
२०-४-२८

श्री चरणकमलेषु,

आपकी तबियत खराब ही रहती है। क्या बीमारी फिर उखड आयी है? संयम रखिये। पं० उमा दत्त जी शीघ्र 'हिन्दी-बंगला-शिक्षा' निकालने को कहते हैं। उनसे एक दिन रास्ते में ही बात हुई थी। दो बार आफिस गया। लेकिन वे नहीं मिले। आज शाम को उनके घर जाऊंगा। दया शंकर जी कलकत्ता पहुंच गये। प्रसन्न हैं। मैं

यू० पी० की मैट्रिक की तैयारी करता हूँ। अब केवल अंग्रेजी में ही तैयारी करने से मैट्रिक में बैठ सकूँगा। क्योंकि वर्नाक्यूलर पास कर चुका हूँ। रुपयों की जरूरत हो तो लिखिये। केशव को प्यार

आपका शि—[शिष्य]
शिव शेखर द्वि—[द्विवेदी]

[निराला की हिन्दी-बँगला शिक्षा पुस्तक पोपुलर ट्रेडिंग कंपनी से उमादत्त शर्मा ने प्रकाशित की थी।]

९१. नवजादिकलाल श्रीवास्तव
'सरोज'-कार्यालय।

किशोर-भवन,
१५१, मछुआ बाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता २०-४-१९२८

प्रिय पण्डित जी,

इधर बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला। आशा है, आप प्रसन्न होंगे। आगामी दशहरा से मेरे सम्पादकत्व में 'सरोज' नाम का एक मासिक पत्र निकलने वाला है। कनका बाबू के विशेष आग्रह से मैंने यह गुरुभार अपने कन्धे पर उठाया है, कैसे पार लगेगा, भगवान जानें। प्रथम संख्या के लिये आपसे कुछ भेजने की प्रार्थना है। एक मोटो भी चाहिये। मैं आशा करता हूँ कि प्रार्थना विफल न जायगी। यदि आप स्वीकार करने की कृपा करेंगे तो 'सरोज' आपकी यथासाध्य सेवा भी किया करेगा। क्या आप नियमित रूप से इसके लिये कुछ भेजा करेंगे? विषय आप अपनी इच्छानुसार चुन ले सकते हैं। इसमें विशेष रूप से कहानियां ही छापने का विचार है और प्रतिमास किसी एक हिन्दी शिल्पी का चित्र और चरित्र देने का भी विचार है। आपका चित्र और चरित्र कैसे प्राप्त होगा? उत्तर शीघ्र दीजियेगा। सेठ जी अच्छी तरह से हैं।

आपका
नवजादिकलाल।

[कनका बाबू—नवजादिकलाल श्रीवास्तव के धनी साहित्य प्रेमी मित्र। जनवरी १९३१ के "हंस" में महादेव प्रसाद सेठ, निराला और शिवपूजन सहाय के साथ उन्हें और नवजादिकलाल श्रीवास्तव को चित्र में देखा जा सकता है। "सरोज" के कुछ अंक निकले; फिर पत्र बंद हो गया।]

६२. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

C/o राधाकृष्णदास बी. ए.
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी
२३/४/२८

सादर सविनय प्रणाम—

इससे पहिले मैं आपको एक कार्ड लिख चुका हूँ। आशा है, मिला होगा। मैं सानन्द हूँ, आपका आनंद मंगल सदा चाहिये।

पिछले दिनों यहां अच्छी साहित्यिक जमघट रही। श्री मैथिलीशरण जी और मुंशी अजमेरी जी आये हुए थे। परसों गये हैं। पिछला पत्र जब मैं लिखने वाला था, तब मुंशी जी ने आपको अपना प्रणाम लिखने को कहा था।

कहिये, इन दिनों आप क्या कर रहे हैं? तबियत कैसी है? मन का झुकाव किस ओर है? 'चंडीदास' का काम क्या अधूरा ही रहा। कलकत्ते से मुंशी नवजादिक-लाल जी के संपादन में आगामी.........'सरोज' नामक मासिक पत्र निकलने.........के द्वारा समाचार और लेख.........

एक नया समाचार यह है कि, राय साहब आपसे कुछ काम लेना चाहते हैं। उन्होंने अभी-अभी प्रकाशन-कार्य प्रारंभ किया है। वे आप से रवि बाबू के 'चित्राङ्गदा' और 'विदाय अभिशाप'—नामक काव्यों का हिंदी-पद्यानुवाद कराना चाहते हैं। यह पत्र मैं उन्हीं की ओर से लिख रहा हूँ। यदि आप पसंद करें तो उचित पारिश्रमिक ..... ध्यान रखिये कि प्रकाशन कार्य अभी.........रूप में है। पत्रोत्तर शीघ्र........ मित्रों की इच्छा है।

.........क [सेवक]—शांतिप्रिय

[पोस्टकार्ड का कुछ हिस्सा चूहों ने काट डाला था।]पता गांव का]

६३. दयाशंकर वाजपेयी

C/o युवक सभा
१६, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट
ता० २५-४-२८

पूज्य चरण पं० जी,

सभक्ति चरण-स्पर्श।

आज कई दिन हुए मैं सकुशल कलकत्ता आ गया। सानन्द हूँ। काम पर भी जाने लगा। राम लाल अब तक यहां नहीं आये। आप की तबीयत कैसी है?

कल उमादत्त शर्मा से भेंट हुई थी। वे आप से कुछ काम कराना चाहते हैं, एक बंगला उपन्यास का अनुवाद। मुझे आप से, लिख कर पूंछने को कहा है। आप जैसा

लिखें, मैं उनसे मिल कर तय कर लूं या आप ही यदि उचित समझें तो इस सम्बन्ध में उनसेडा इरेक्टली पत्र-ब्योहार कर लें। आदेश की अपेक्षा में हूँ। शीघ्र ही सूचित कीजियेगा। शेष सब कुशलता है। और कोई नये समाचार नहीं हैं। मुंशी जी के सम्पादकत्व में कनिका बाबू 'सरोज' के नाम से एक पत्र शीघ्र ही निकालेंगे। महादेव बा० और उग्र आप को पूछते थे। पत्र दीजियेगा। शिव शेखर मजे में है। कृपा बनी रहे।

दास

द० शं०

[दया शंकर]

९४. रामनारायण शर्मा

साहित्य सेवा सदन

छतरपुर राज्य

२७-४-२८

प्रियवर,

प्रणाम !

कृपाकार्ड मिला [।] धन्यवाद। लिखा गया 'हाथ धोकर तैयार रहना' [।] क्षमा कीजिएगा मैंने भूल की जो कार्ड रख दिया। मैंने समझा कि देहात मे यदि कार्ड शीघ्र न मिल सका तो मुझे पत्रोत्तर के लिए अधिक (एक दिन और) प्रतीक्षा करनी पड़ेगी [।] अस्तु इस धृष्टता को क्षमा कीजिएगा—धृष्टता करने का साहस यों हुआ कि आपने मुंह लगा रक्खा है। एक संदेह और होता है [,] वह यह है कि शिवपूजन जी के मा० एक पत्र भेजा था [।] उसका भी कारण यह था कि मेरे तीन चार पत्र के उत्तर नही मिले थे। अस्तु कुछ भी क्षमा कीजिएगा [।] गुरू जी ने भी कार्ड रखने पर लानत मलामत कही [।] उन्होने कहा इससे दूसरे की अप्रतिष्ठा होती है। खैर—

बनारस जाइये और अवश्य जाइये [।] देखिये यदि संयोग लग गया तो म भी मिट्टी सूंघता २ वहीं पहुचूंगा [।] 'स्वास्थ' के विषय में समाचार पढ़ अति आनन्द भया—'छोटे पंडित जी की कथा' का छीटा मेरी समझ मे आ गया था किन्तु जरा गहरा मजाक था इससे समझने में देर लगी—जब माधुरी पढ़ी तब स्मरण हुआ कही हो न हों यही छोटे पंडित जी है। मेरी दस्तकारी पर आपने कटाक्ष किया—खूब !!

यदि आपका स्वास्थ यहाँ पर अच्छा होता तो विचार था कि एक चित्र लेता किन्तु अभाग्यतावस सोचता ही रह गया—मुझे साहित्यिक गोष्ठी के लिए आपका चित्र चाहिए, या चित्र पाने का पता या सुभीता बतलाइये [।]

अभी तक कई कारणों से वह लेख छपने नहीं भेज पाया था [।] इस समय तैयार है [,] यदि चित्र मिल गया तो अच्छी बात है वरनः क्या करेंगे [।] बिना चुपड़ी खानी पड़ेगी और संतोष करना पड़ेगा ० इसी तरह कृपा बनाए रखिए—

चरणानुरागी

रामनारायण

पुनश्च: थोड़ी सी सुरती वनाकर भजिएगा हे ईश्वर ! वह दिन कहाँ ? !!

'वही'

[गुरूजी—गुलावराय। पत्र शिवपूजन सहाय को मिला; उन्होंने उसे गढ़ाकोला भेजा।]

[छतरपुर,
२७-४-२८]

६५. गुलाबराय

प्रियवर—यद्यपि रामनारायण जी के पत्र लिखते समय में [मैं] अन्तरध्यान था तथापि मेरा अत्यन्ताभाव नही हो गया था—आप के पत्र पाते समय में उपस्थित था—एक वार भाग्य ने धोका दिया किन्तु दूसरी वार न दे सका—पत्र में विना रामनारायण जी की उपस्थिति के भी लिख सकता था किन्तु आलस्य भक्त के लिए उत्तेजक की आवश्यकता रहती है [।] आपके पत्र ने वाञ्छित उत्तेजना दे दी।

आपका कुशल समाचार सुनकर अत्यन्त हर्ष हुआ क्योंकि आपने पहिले पत्र मे रामनारायण के मत्थे यह दोष रक्खा था कि जव आप उनको पत्र लिखते हैं तब आप ज्वर से पीड़ित हो जाते हैं। आप ज्वर से मुक्त हो गए और विचारे रामनारायण जी कलंक से—इससे वढ़कर क्या आनन्द की वात ? फिर आप जल विहार के लिए वनारस जा रहे है। जिस प्रकार मित्र के दुख मे दुखी होना परम धर्म है उसी प्रकार मित्र के सुख मे सुखी होना भी परम धर्म है। आप का भी सम्वाद आपकी सुधामई मधुर वीणा द्वारा मिलता रहता है। सुनायो किन सखी हरिनाम का नवरस में श्रवण दर्शन के सम्वंध में उल्लेख कर रहा हूँ। स्मृति को भी नवरस में समाविष्ट कर दिया है। आशा है पं० महावीर प्रसाद जी की भान्ति [भांति] आपत्ति न उठावेंगे।

छोटे पंडितजी का वृतान्त वतला दिया गया है। कृपया अपने कुशल समाचार लिखते रहिए। मैंने जवावी कार्ड भेजने का अपराध नही किया है। कचहरी को देर हो रही है नही तो और लिखता

भवदीय
गुलाबराय

[छतरपुर की डाकमुहर-तारीख :
२७ अप्रैल '२८ : पता :]
श्री युत 'आधुनिक श्रीहर्ष'
सूर्य्यकान्त जी त्रिपाठी 'निराला'
डाकखाना—मगरायर
गांव—गढ़ाकोला
उन्नाव

९६. कृष्णविहारी मिश्र

नं० 6827
[संपादकीय विभाग]

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी'—कार्यालय
नवल किशोर-प्रेस,
लखनऊ ३०-४-१९२८

प्रिय पं० सूर्यकांत जी,

नमस्कार

पत्र के लिये धन्यवाद । 'माधुरी' का मामला निपट गया । विशेष विवरण 'माधुरी' में देखियेगा । समालोचना आप भेजिये [,] जितनी जल्दी हो सकेगा उसे निकालेंगे । वैशाख के अंक में तो आपका लेख है । ज्येष्ट के लिये मैटर कल दिया है । अगर आपका लेख जल्दी आ गया तो संभव है नहीं तो आषाढ़ में अवश्य जायगा । आपका पत्र पं० राम शंकर जी को दिखला दिया है । विशेष विनय ।

आपका
कृष्ण विहारी मिश्र

[रामशंकर जी—रामशंकर शुक्ल]

९७. नवजादिक लाल श्रीवास्तव

"SAROJ"
OFFICE
Telephone 316, B.B.

'सरोज'—कार्य्यालय ।

किशोर-भवन,
१५१, मछुआ बाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता २-५-१९२८ ।

प्रियवर पण्डित जी,

सप्रेम प्रणाम ।

पत्र मिला, प्रसन्नता हुई । 'सरोज' का कार्य आरंभ हो गया है । मोटो और अपनी कोई अच्छी रचना शीघ्र भेजने की कृपा कीजियेगा । मेरी योग्यता आपसे छिपी नहीं है । कनका बाबू के विशेष आग्रह और आप लोगों की कृपा के भरोसे मैंने अपने जराजीर्ण दुर्बल कन्धोंपर यह गुरुभार उठाया है । इसलिये सफलता सर्वथा आप लोगों की कृपा पर ही निर्भर है । आप का चित्र और चरित्र तो चाहिये ही । टाल-मटोल से काम नहीं चलेगा । पहले से ही तैयार रहना चाहता हूँ, ताकि पत्र ठीक समय पर निकलता रहे ।

आपने अपने कलकत्ता आने के बारे में कुछ नहीं लिखा । कब तक आइयेगा ? कनका बाबू पुस्तकें भी प्रकाशित करना चाहते हैं और इस संबंध में आपको भी लिखने को उन्होंने कहा है । यदि आप को समय हो तो कोई नाटक लिखने की चेष्टा कीजियेगा । लिखाई आदि के बारे में उन्होंने पूछा है । आशा है, आप उत्तर देने की कृपा करेंगे ।

सेठजी, कनका बाबू, व्रजकिशोर आदि सकुशल हैं।

आपका
नवजादिक लाल श्रीवास्तव।

श्रद्धेय निराला जी,
सादर वन्दे
आशा है आप सकुशल होंगे, जान पड़ता है आप समन्वय को एक दम भूल गये [,] क्या कुछ भेजने की दया करेंगे।

कृपाभिलाषी
राम प्रसाद पाण्डेय

श्री निराला जी

६८. प्रेमचन्द

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी'—कार्यालय
नवलकिशोर-प्रेस,
लखनऊ ५/५/१६२८

नं० 6906
[संपादकीय विभाग]

प्रिय महाशय,
पंत जी और पल्लव शीर्षक समालोचना का (५) भाग मिला। तदर्थ धन्यवाद। वह सादर स्वीकृत है। और आगामी अङ्क में प्रकाशित भी कर दिया जायगा।

कृपा भाव बना रहे।
योग्य सेवा सदैव लिखिये।

भवदीय
Prem chand
संपादक

[पता] श्री० सूर्यकान्त जी त्रिपाठी "निराला"
Village—Garhakola (गढ़ाकोला)
Post—Magrair
Dt. (Unao)

[कार्ड पर अंग्रेजी में हस्ताक्षर प्रेमचंद के हैं; शेष सब दूसरे की हस्तलिपि में है।]

९९. विनोदशंकर व्यास

11.5.28

प्रिय निराला जी,

सप्रेम।

आपका कृपा कार्ड मिला। प्रसन्नता हुई।

भाई शिवपूजन की शादी पर अवश्य आईये [।] १९ ता० तक बनारस पहुंच जाना चाहिये [।] २० को बरात जायगी। बाकी मिलने पर बातें होगी [।]

आपका
विनोदशङ्कर
व्यास

१००. शिवपूजन सहाय

C/. Agrawala Press, Benares Cantt.
13/5['२८]

मान्यवर पण्डित जी, सादर सप्रेम प्रणाम—

एक कार्ड आपको भेज चुका हूँ। यह मेरे शुभ विवाह का सादर सप्रेम निमंत्रण है। कृपया सहर्ष स्वीकार करके सोत्साह पधारिये। ता० २० मई को १२ बजे दिन की गाड़ी से बनारस छावनी स्टेशन पर काशी की मित्रमण्डली प्रस्थान करेगी। उसी दिन शाम को ७-८ बजे छपरे पहुंचेगी, और १० बजे रात को मसरख स्टेशन पर पहुंचेगी, जहाँ रात-भर विश्राम कर प्रातः काल ता० २१ को विलासपुर के लिये प्रस्थान करेगी। सवारी का इन्तजाम है। दो कोस की दूरी पर विलासपुर है। स्टेशन से आमदरफ़्त की सवारी मिलेगी। आपसे सादर निवेदन है कि आप अवश्य आइये। पहले भी प्रार्थना कर चुका हूँ। सम्मेलन की तिथि बढ़ गई। मुहर्रम की छुट्टियों में होगा। विश्वास है, आप दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे।

भवदीय
दर्शनाभिलाषी—शिवपूजन

१०१. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री

C/o राधाकृष्णदास बी०ए०
कोठी-भदैनी,
बनारस सिटी,
१८-५-२८

प्रणाम—

आपका कृपा-पत्र मिले कई दिन बीत गए। इधर राय साहब बारात चले गए थे, बिना पूछे उतर न देते बना। राय साहब ने बतलाया है कि रवीन्द्र बाबू ने अपनी

संपूर्ण पुस्तकों का अधिकार—मूल और अनुवाद-सहित—'माडर्न रिव्यू' वालों को दे दिया है। हिन्दी में जिन प्रकाशकों ने उनके अनुवाद निकाले हैं, उनसे अधिकार खरीदा भी जा रहा है। इस प्रबंध के कारण राय साहब ने अनुवाद कराने का विचार छोड़ दिया। अस्तु।

आशा है, आप सस्वस्थ और प्रसन्न हैं—मैं भी।

'माधुरी' के नवीन अंक में 'पंत और पल्लव' समालोचना में पंतजी के कविता-भाग पर खूब विचार किया है। अब समालोचना का माधुर्य्य बढ़ गया है। समालोचना की भाषा मुझे तो बहुत पसंद आई। आप काशी कब तक आयेंगे? प्रतीक्षा है—

सेवक
शांतिप्रिय द्विवे०

[पता गांव का]

१०२. जयशंकर 'प्रसाद'

का
२५-५-२८

प्रिय निराला जी,

आपके दो पत्र मिले। यह जानकर कि आप फिर रुग्ण हो गए हैं दुःख हुआ। और पैर का क्या हाल है? शिवपूजन जी की बारात लौट आई—विनोद जी उसमें गये थे। मैं भी आज कल कुछ लिखता नहीं—बड़ी गर्मी पड़ रही है। अपना कुशल समाचार लि०

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

[यह पूरा पत्र प्रसाद की हस्तलिपि में है।]

१०३. विनोदशंकर व्यास

काशी
२८.५.२८

प्रियवर निराला जी
प्रणाम।

भाई शिवपूजन के विवाह में आपकी प्रतीक्षा करता रहा; किन्तु समाचार मिला कि आपके पैर में चोट आ गई है। दुख है।

आजकल आपकी बहुत याद आती है। मैं कुछ दिनों तक बनारस में ही हूँ। आप काशी क्यों नहीं आते? खैर, पानी बरसने पर ही आइए। आपके बजाने के लिये एक छोटा सा सुन्दर हारमोनियम बनवाया है।

ईधर क्या लिख रहे हैं ? क्या कर रहे हैं ? कुछ समझ में नहीं आता। पत्र भी आप अस्तव्यस्त होकर ही लिखते हैं।

'तूलिका' छप चुकी है। कापियाँ मिलने पर शीघ्र भेजूंगा। बाबू साहब अच्छी तरह हैं। शिवपूजन का विवाह आनन्द से समाप्त हो गया।

[अन्त में हस्ताक्षर नहीं हैं।]

१०४. रूपनारायण पाण्डेय

तार का पता—"गंगा, लखनऊ"

टेलीफ़ोन नं० ६

गंगा-पुस्तक माला-कार्यालय,
(प्रकाशन-विभाग)
लखनऊ, २/६/१९२८

प्रिय त्रिपाठी जी,

प्रणाम। आप साहित्यकला और विरह की आलोचना अवश्य भेजें। मैं छापूंगा। मैं इस विषय में किसी का पक्षपाती नहीं। पर हां, लेख तेरहवीं संख्या में जा सकेगा। बारहवीं संख्या तो प्रायः छप गई है। अब कुसुमकुंज वग़ैरह छप रहा है। कोई हर्ज नहीं, उनकी लेखमाला तो अभी चल रही है। मैं सकुशल हूँ, आप की कुशल चाहता हूँ।

भवदीय
रूपनारायण पांडेय

[छायावादियों पर हेमचन्द्र जोशी के आक्षेपों की ओर संकेत है। निराला का लेख 'कला के विरह में जोशीबन्धु' शीर्षक से छपा था।]

१०५. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री :

C/o राधाकृष्णदास बी. ए.
कोठी-भदैनी,
बनारस सिटी
११/६/२८

प्रणाम—

आपका कृपा-पत्र मिला। पैर के कष्ट का समाचार पाकर चिंता हुई। कठिनाइयाँ आपका पीछा नहीं छोड़तीं, शायद वे आपके साहस और सहनशक्ति पर फ़िदा हैं। मैं तो आपके कष्ट का अनुमान करके ही कांप उठता हूँ। यदि परतंत्र न होता तो इस दशा में आपके दर्शनों के लिए आता। परमात्मा आपको आरोग्य करे। इन दिनों दशा कैसी है ? पीड़ा कम है ?

मैं पिञ्जर-बद्ध-पक्षी की भाँति अपनी क्षुद्र सीमा में संतुष्ट और प्रसन्न हूँ। साहित्यिक संसार से साथ छूट गया है। पाँच छः महीने पहिले जो चीजें इधर-उधर भेजी थीं, वे ही छप रही हैं। सबसे मिलना-जुलना छोड़ कर एकांत-वास करता हूँ— परिस्थिति ने मुझे इसीलिए [इसी के लिए ?] मजबूर किया है। इतनी फुर्सत नही कि लोगों से मिलूं। आज कल उग्र जी यहाँ आये हुए हैं, सुमन जी भी बंबई से। वेनीपुरी ने 'वालक' और लहेरियासराय को छोड़ दिया। अब शिवपूजन जी एकच्छत्र सम्राट हैं।

शा०

[पता गांव का]

१०६. रामसेवक त्रिपाठी

'माधुरी' कार्यालय,
नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ ता० १५/६/१९२८

नं० 7619
[संपादकीय विभाग]

प्रिय महाशय,

आपकी निम्नलिखित रचना मिली। धन्यवाद। वह सादर स्वीकृत है, और शीघ्र ही 'माधुरी' के विशेषांक में प्रकाशित कर दी जायगी। कृपाभाव बना रहे।

"वंगाल के वैष्णव कवियों की
शृंगार-वर्णना"

भवदीय
रामसेवक त्रिपाठी
संपादक

१०७. नन्द दुलारे वाजपेयी

वड़ा वाजार हज़ारी वाग़
१९-६-१९२८

प्रिय निराला जी,

प्रणाम। मैं आप से विमुक्त होकर लखनऊ और काशी होता हुआ कल सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। कानपुर जाने का मेरा विचार पूरा न हो सका, परन्तु "प्रताप" सम्वन्धी कार्य मैं काशी से पत्र द्वारा कर चुका हूँ, आशा है अगले सप्ताह से "प्रताप" नियमित रूप से आया करेगा।

पुस्तकालय के संचालन का सब भार अब आप ही लोगों पर है [,] जैसे हो सके उसे चलाइए। पुस्तकें अभी ऐसी ही मँगाइए जिन्हे लोग पढ़ सकें और जिनसे मनोरंजन के साथ २ उन्हें शिक्षा भी मिले। अभी ठीक २ तो नहीं कह सकता पर

संभवतः जुलाई के प्रारम्भ में आ सका तो एक वार अवश्य आऊँगा। तभी पुस्तकालय के लिए कुछ पुस्तकें भी लाने का विचार है।

पण्डित आनन्द मोहन जी से मेरा सप्रेम नमस्कार कहिएगा। उनको इस वात की सूचना भी मिल जानी चाहिए कि मैंने वावू श्याम सुन्दर दास से पत्र द्वारा इस वात का निवेदन किया है कि वे एम.ए. में हिन्दी ले सकें।

पत्रोत्तर मिलने पर मैं शीघ्र ही उनकी स्वीकृति की सूचना भी दूंगा।

शेष कुशलता है—आप अपनी कुशलता के पत्र, तथा पुस्तकालय संवंधी समाचार शीघ्र शीघ्र लिखते रहें तो वड़ी कृपा हो।

[पुस्तकालय मगड़ायर में; आनंदमोहन वाजपेयी—मगड़ायर के निकट एक गांव के निवासी]

अभिन्न नन्ददुलारे।

११० नन्द दुलारे वाजपेयी

Benares Hindu University
14.7.1928.

प्रिय पंडित जी,

प्रणाम। मैं यथासमय काशी पहुंच कर नवीन वर्ष का कार्यारम्भ कर चुका हूँ—आनन्द मोहन जी पहले ही पहुंच चुके थे [।] उनके लिए "हिन्दी" लेने का प्रवन्ध हो गया है। खूव प्रसन्न हैं। शिव दुलारे को भी यहीं ले आया हूँ, यहीं अध्ययन करने का विचार निश्चित रहा।

आज मैंने कुछ पुस्तकों के लिए लिख दिया है, रुपए भी भेजे देता हूँ "वीणा-पाणि पुस्तकालय" के पते से ही भेजने को लिख दिया है। शायद वी.पी. का खर्च देना पड़े तो दिला दीजिएगा।

आपका यहाँ आने का विचार कव तक का है? यहाँ आपके स्वागत की तैयारियाँ धूमधाम से होने लगी हैं उपाध्याय जी एक सुन्दर सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं। वड़ा रंग रहेगा। वैसवाड़े की खूव धाक जमेगी [।] हाँ, एक सुन्दर भाषण उस अवसर पर देना होगा [।] रहस्यवाद की, अपनी कविता की वकालत करनी होगी [।]

भवदीय
नन्ददुलारे।

[शिव दुलारे—नन्द दुलारे वाजपेयी के छोटे भाई]

१०८. नन्ददुलारे वाजपेयी

Barabazar; Hazaribagh
4.7.1928

श्रीमान् त्रिपाठी जी,

सविनय वन्दे। कृपापत्र करगत, समाचारों से विशेष प्रसन्नता हुई। लखनऊ जाने का प्रयोजन क्या था [,] "सुधा" वालों से जोशी बन्धुओं के सम्बन्ध के लेख विषयक कोई बात-चीत तो नहीं हुई। कुछ वसूल—तहसील भी हुई—? गोविन्द-पदावलि पूरी हो चुकी होगी, बाजार भाव जांचा या नहीं? मैंने "विशाल भारत" को सत्परामर्श दिया है पर अभी तक उत्तर नदारद—शायद सम्पादक महोदय साहित्य-सम्मेलन को सुशोभित कर रहे हैं [।] जवाब मिलते ही इत्तिला दूंगा। पुस्तकालय का कार्य सम्यक रीत्या चल रहा है, क्यों न चले। प्रताप को रुपए देकर क्यों मंगा रहे हैं? विद्यार्थी जी तो ऐसे नहीं मालूम पड़ते थे [,] फिर उन्होंने पत्र पर क्यों ध्यान नहीं दिया? मैं तो देवव्रत से कहकर ही प्रवन्ध कर सकता था पर क्या बताऊँ कानपुर जा भी न पाया। मैं अत्यन्त शीघ्र कुछ पुस्तकें भेजने के विचार में हूँ—१५ तक काशी आकर रवाना करूंगा।

"आँसू" पर एक कविता नई हो या पुरानी अवश्य भेजिए। एक संग्रह "मोती की लड़ी" प्रकाशित हो रहा है, मैं आपके लिए वचन दे चुका हूँ, देखिए शिथिलता न होने पाए।

विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि "माधुरी" की समालोचना-प्रतियोगिता का पुरष्कार "निराला" जी को ही मिलेगा—आपने कुछ पता लगाया? शेष कुशलता है [।] पत्रोत्तर अब काशी के पते से [,] मैं ८-९ तक वहाँ पहुँच जाऊँगा [।]

कविता भेजने में यदि किसी बात का कुछ भी संकोच हो तो कदापि न भेजिएगा। यह नहीं कि उसके बिना काम न चले।

आनन्द मोहन जी के लिए बाबू श्याम सुन्दर दास जी ने लिखा है:—"जिस लड़के ने बी० ए० में हिन्दी नहीं ली एम० ए० में उसे हिन्दी न लेनी चाहिए—मैं उनके अध्ययन का विस्तार जान लूं तब निश्चित रीति से कुछ कह सकता हूँ"—यदि वाजपेयी जी हों तो उन्हें यह सन्देश मिल जाना चाहिए। नन्ददुलारे।

१०९. उमादत्त शर्मा

The Popular Trading Co.

115, Harrison Road,
Calcutta D. 4-7-28

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी।
११५, हरीसन रोड,
कलकत्ता।

प्रिय पण्डित निराला जी,

कृपापत्र मिला। बङ्गला शिक्षा छप रही है। एक डेढ़ मास में जरूर छप जायगी। छपते ही हिसाब [एक शब्द अस्पष्ट] करके भेज दिया जायगा। अब २० उपन्यास

निकाल रहा हूँ। आपकी जब इच्छा हो—लिखना—एक दो—पुस्तक भेज दूँगा।

कृपा रखें।

आपका

उ. द. श. [उमादत्त शर्मा]

१११. दुलारेलाल भार्गव

TELEGRAMS : "GANGA" TELEPHONE : No. 6

Press Department :
GANGA FINE ART PRESS

GANGA PUSTAK-MALA KARYALAYA

Leading Hindi Monthly :
THE "SUDHA"

PRINTERS, PUBLISHERS, BOOK-SELLERS & STATIONERS

Stationary Department :
BHOLA NATH & CO.

29-30, Aminabad Park...LUCKNOW

[जुलाई १६२८]

Dear Sir,

I shall feel highly obliged by your favouring me with a copy of your goodself's recent photograph to be published in our Premier Hindi Monthly the "Sudha" together with your article in the Sahitya Ank.

Should I expect to be favoured with one at your earliest convenience please?

Thanking you and assuring you of our best services,

Yours faithfully,

Dulareylal Bhargawa

Editor-in-chief & Proprietor

[मगड़ायर की डाकमुहर में तारीख : १६ जुलाई '२८]

११२. (क) हरिभाऊ उपाध्याय

(ख) रामनाथ लाल 'सुमन'

सस्ता-साहित्य-मण्डल

अजमेर

ता० २१-७-१६२८

(क) प्रिय निराला जी,

सस्नेह वन्दे। १२/७ के कृपा-पत्र के लिए धन्यवाद। आपकी रचनाओं के लिए पत्र-पुष्प आपको समर्पित किये जायंगे। दूसरी जगह से आपको जो कुछ मिलता है

उससे तो कुछ कम ही आप त्या० भू० से लेना चाहेंगे। तथापि आप की इच्छा मालूम होने पर उसकी पूर्ति के लिए भरसक उद्योग किया जायगा।

त्या० भू० की फाइल भिजवाने का प्रवंध कर दिया है। रचना और लेख शीघ्र भेजिए।

विनीत
हरिभाऊ

(ख) प्रिय निराला जी,

मैं यहां आ गया हूँ। अव भविष्य में मुझे ही पत्र लिखें तो विलम्ब न होगा। उपाध्याय जी की ऐसी ही आज्ञा है।

श्री रामनाथ लाल 'सुमन'

११३. नंद दुलारे वाजपेयी

काशी विश्वविद्यालय
२६-७-१९२८ ई०

प्रिय निराला जी,

सप्रेम प्रणाम। आपके दो पत्रों में मेरे संवंध की अनेकानेक वातें थीं परन्तु न जाने उनमें मेरा पता क्यों नहीं लिखा गया था [।] संभवत: आपको अब तक उसका पता ही न था। तो क्या वास्तव में मैं एक लापता जीव हूँ? नहीं नहीं मेरी इतनी अवहेला, इतना अनादर नहीं किया जा सकता [!] पता ठिकाना सव कुछ है और वह भी अत्यन्त निश्चित—ठीक—दुरुस्त।

"माधुरी" समालोचना-प्रतियोगिता संवंधी समाचार विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है। यदि अधिक आग्रह करते हैं तो लीजिए बतलाता हूँ गोल वात—गुप्त वात—वहीं के एक कर्मचारी से—इससे आगे न पूछिए।

पूछिएगा भी तो यही कहूँगा—सुयोग्य—प्रतिष्ठित—विश्वसनीय वस।

पुस्तकें मैं भेजने वाला था पर ऐन वक्त पर आनन्द मोहन जी से मालूम हुआ कि अजमेर मंडल की कितावें वावू रामरत्न जी दे रहे हैं। मैं ठहर गया हूँ—उनसे पूछकर लिखिएगा मैं दूसरी भेजने का प्रवन्ध करूँगा।

घवड़ाने की—भय की कोई वात नहीं है—यहाँ आपके हिमायती करीव करीव असंख्य हैं [,] विरोधी दो, चार। वड़ा आनन्द आवेगा—आइए भी तो।

विनीत
नन्द दुलारे वाजपेयी

स्थायी पता : नन्द दुलारे वाजपेयी एम. ए. फाइनल
आर्य भवन पो. आ. लंका (Lanka)
Benares City

[वावू रामरत्न—मगड़ायर-निवासी।]

११४. कृष्णविहारी मिश्र

नं० 8771
[संपादकीय विभाग]

'माधुरी' कार्यालय
नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ, ता० ३०-७-१९२८

प्रिय महाशय,

आपकी निम्नलिखित रचना मिली। धन्यवाद। वह सादर स्वीकृत है, और शीघ्र ही 'माधुरी' की किसी आगामी संख्या में प्रकाशित कर दी जायगी। कृपाभाव बना रहे।

'गोविन्द दास—पदावली'

भवदीय
K. B. Misra
सम्पादक

११५. विनोदशंकर व्यास

3 Aug [१९२८]

प्रिय निराला जी,

सप्रेम।

आपका कार्ड मिला। प्रसन्नता हुई। आशा है आप शीघ्र ही दर्शन देंगें।

गंगा खूब बढ़ी हैं। मगर मस्ती नही है। आजकल कुछ सन्नाटा सा है। खैर [,] आपके आने पर आ जायगी [।]

'सरोज के १,२ अकों [अंकों] में आपको देखा।

शिवपूजन अच्छे हैं। और क्या लिखू ? मिलने पर सब बातें होंगी।

अभिन्न
विनोद

११६. नंददुलारे वाजपेयी

काशी विश्वविद्यालय
४-८-१९२८ ई०

प्रिय निराला जी,

कृपापत्र प्राप्त, समाचार सूचित। ज्ञात में—पता वाले में जिस अलौकिक आनन्द की अजस्र और अदभ्र छटा छाई हुई—समाई हुई है [,] उसके निरीक्षण के लिए निराले-नेत्रों की आवश्यकता अनिवार्य नहीं, उनके बिना उसका काम रुका नहीं रहता। किन्तु वासनामय ओछे आनन्द में अनुरक्त व्यक्ति की आँखें न तो ऊपर उठेंगी न वह झलक उसे अपनी ओर आकर्षित कर सकेगी।

"वासुदेवशरण की समालोचना पर पुरस्कार पक्षपात का प्रश्रय लेने पर ही मिल सकता है" यह कथन मेरे एक प्रतिष्ठित लखनवी-मित्र का है जिसका संबंध "Madhury politics" से घनिष्ट नहीं तो न्यून भी नहीं है। कृष्ण विहारी जी पर काशी के साहित्य सेवियों में सर्वाधिक किसका प्रभाव पड़ सकता है किसकी बातों से वे पक्षपात का परित्याग कर सकते सत्पथ पर आ सकते हैं ? लिखिएगा।

मनोरमा आने लगी, अच्छा हुआ। मैं किस प्रकार की पुस्तकें भेजूं आप लिखिए। पत्र की ही प्रतीक्षा है।

स्नेह भाजन नन्द दुलारे।

११७. शान्तिप्रिय द्विवेदी

काशी
४-८-२८

प्रणाम—

बहुत दिनों बाद कृपा-पत्र मिला। प्रसन्नता हुई। मैं जो अबतक आपको पत्र न लिख सका—इसका कारण आपके ठीक ठिकाने से अपरिचित रहना था। न जानें कहां-कहां आप रहते हैं। सुना था, आपके पैरों में गहरी चोट आई है; खेद हुआ, आपकी उन्मुक्त भावुकता कभी कभी आपको आघात भी पहुंचा देती है।

इन दिनों मैं साहित्यिक जगत से बहुत अलग रहता हूं। जो रचनायें आपने पत्रों में देखीं, वे बहुत पहिले की लिखी हैं। इधर ७-८ महीने से मैंने कुछ नहीं लिखा। लिखने की इच्छा भी नहीं होती। न वह हौसला है, न वह महत्वाकांक्षा। मैंने साहित्य जगत से ही नहीं, सभी परिचितों से भी सन्यास ले लिया है। किसी से मिलता-जुलता नहीं। मुझे कहीं कोई आनंद ही नहीं मिलता। जीवन बड़ा नीरस मालूम पड़ता है। मुझे आर्थिक कष्ट नहीं, किन्तु, मानसिक व्यथा मेरे कलेजे को मथती रहती है। स्वस्थ होते हुए भी अस्वस्थ हूं। आप कब तक काशी आवेंगे ? शायद आपके आने पर पुनः जीवन-ज्योति जागृत हो।

सेवक
श्रीशांतिप्रिय

११८. रामनाथलाल 'सुमन'
C/o 'त्याग-भूमि'

सस्ता-साहित्य-मण्डल,
अजमेर
ता० ११/८/१९२८

प्रिय भाई,

तुम्हारा ७/८/२८ का कार्ड मिल गया।

तुम अभिभाषण की विस्तृत समालोचना लिखो। मुझे तो मेरे मित्र दो एक महीना चुप रहने को कह रहे हैं—यद्यपि कुछ लिखना मुझे आवश्यक जान पड़ रहा है।

वर्तमान नाटकों पर तुम क्या लिखना चाहते हो? विस्तार के साथ लिखो तो मैं भी तुम्हारे साथ सम्मिलित हो जाऊँगा।

लेख-कविता शीघ्र भेजो

एक बात कहूँ। मैं तो तुम्हें सदैव बंधु ही मानता आया हूँ। उस समय की बात याद होगी जब तुम्हारा विरोध शुरू हुआ था। मैंने अपना हृदय तुम्हारे आगे रख दिया था। शायद तुम्हारे बाहर के समर्थकों में मैं पहला आदमी था। पीछे तुम्हें मेरे बारे में बहुत ग़लतफहमी हुई। मुझे सब बातें बतायी गयीं पर मैंने कभी न तुमसे कुछ कहा और न किसी से। जानते हो, आत्माभिमान मेरा देवता है। उस पर मैं बहुत कुछ बलि कर सकता हूँ। जब देखा कि तुम बहुत जल्दी प्रवाह में बह जाते हो—कल मुझे सबसे अधिक सहृदय समझते थे और आज न जाने क्या समझने लगे—तो मैं उदासीन हो गया। फिर भी मेरे हृदय में तुम्हारे लिए जो स्नेह का बंधन है वह कुछ मतभेद के साथ भी स्थिर है—इसीलिये बंधुत्व के नाते क्या मेरा एक अनुरोध स्वीकार करोगे?

मुझे तुम्हारी पंत की आलोचनाओं से बड़ा दुःख पहुंचा है। मुझे ही क्या अभी तक जितने लोगों से मिला हूँ, सब उससे disgusted प्रतीत होते हैं। जो नये स्कूल के विरोधी हैं वे कहते हैं—"चलो एक चोर निकल गया और दूसरे की यह हालत है।" आपस में ही विवाद खड़ा कर हम लोग अपनी दीवारें कमजोर कर रहे हैं। कम से कम नये स्कूल के सब कवियों को कंधा-से-कंधा भिड़ाकर खड़ा होना चाहिए। माखनलाल जी की समालोचना पढ़कर तुम्हारी कविता के एक परम सहृदय admirer ने मुझे रोकर पत्र लिखा है। इस बारे में तुम्हारा justification सुनना मैं नहीं चाहता। हाथ जोड़कर मैं प्रार्थना करूँगा कि नये कवियों पर ऐसी आलोचनाएँ न लिखो। इस सम्बंध में तुमसे बहुत कुछ बातें करनी थीं। पर वे मिलकर ही हो सकती हैं। तुमसे मिलने को भी मन करता है। बहुत कुछ पूछना है, बहुत कुछ कहना है। भावी कार्यक्रम के सम्बंध में भी बातें करनी है। हिन्दी कविता पर मैं ५००-६०० पेज की एक पुस्तक लिखने की सामग्री एकत्र कर रहा हूँ। उसके लिए भी तुमसे कई बातें पूछनी हैं। 'नये स्कूल के हि० कवि' शीर्षक एक आलोचनात्मक सचित्र लेखमाला लिख रहा हूँ। उसमें तुम्हारे सम्बंध में बहुत कुछ लिखना है। क्या भेंट होने की कोई संभावना है?

सामने कम्पोजीटर्स कापी के लिये खड़े हैं। अतएव बहुत जल्दी में लिखा है।

तुम्हारा
'सुमन'

[अभिभाषण—साहित्य सम्मेलन के सभापति पद्मसिंह शर्मा का भाषण जिसमें छायावादियों की आलोचना थी।]

११६. महादेव प्रसाद सेठ

BISVIN SADI PUSTAKALAYA
GOUGHAT, MIRZAPUR CITY
बीसवीं सदी पुस्तकालय
गऊघाट, मिरजापुर सिटी
Dated १५-८-१९२८

No.—

प्रिय निराला जी,

बहुत दिनों वाद आप का कुशल संवाद पाकर प्रसन्न हुआ। मैं आज प्रायः डेढ महीने से वीमार होकर यहाँ आया हूं और हकीम का इलाज कर रहा हूं। धीरे २ आराम भी हो रहा हूं। मैं शीघ्र ही कलकत्ता जाने का विचार कर रहा हूं परन्तु कुछ निश्चय नहीं है। आप अपने वनारस आने की तारीख़ की सूचना दीजिए [।] यदि मिर्जापुर में उन दिनों रहा तो आपके दर्शन अवश्य करूंगा।

भवदीय
म० प्र० सेठ

[पता]

१२०. शिवपूजन सहाय

काशी, २०/८

मान्यवर पण्डितजी,

सादर सप्रेम प्रणाम

कृपापत्र पाया। लहेरियासराय भेज दिया। लिख दिया है कि रुपया भेज दें। आइन्दे मर्जी उनकी। मैं सच्ची वात से इनकार नहीं करता। आप कव तक यहाँ आइयेगा? मेरी स्त्री इस समय कुछ अस्वस्थ है—साधारणतः—केवल नये हमल के कारण। अपनी चिन्ताओं को पूर्ववत् झेलता हूँ। आप का स्वास्थ्य कैसा है? दया रखियेगा।

शिवपूजन
C/o ज्ञानमण्डल प्रेस

१२१. नंददुलारे वाजपेयी

Benares Hindu University
August 24th 1928.

प्रिय "निराला" जी,

आपका प्रिय पत्र पाकर प्रसन्नता हुई।—ठिकाना वेटिकाना और मकाँ वर ला—मकाँ रखना—यह तो समाज मे प्रवल वेग से वढ़ती हुई विकृति से भयभीत होकर भाग खड़े होने वाले किसी कापुरुष का कथन है। अपने राम तो मर मिटेंगे पर डर

कर बनबासी न बनेंगे। वासना निगोड़ी की मजाल क्या कि किसी कर्तव्य-रत व्यक्ति के निकट फटकने पावे।

जाने दीजिए; पारंगत विद्वानों के पारंगत पक्षपात पर अपनी और अपने असमर्थ साथियों की सीधी सादी सम्मति अब न लिखा करूँगा। यदि वासुदेव शरण की चर्चा आपने ही चलाई थी—विगत पत्र से यह स्पष्ट नहीं होता—तब तो आप भी पं० कृष्ण विहारी जी से सहमत हो गए। पर हृदय पर हाथ रख कर कौन कह सकता है कि वासुदेव शरण की समालोचना सचमुच उस योग्य है। वे मेरे सहपाठी, बी. ए. में दर्शन के दर्शन भी न कर पाए थे फिर इतने पारदर्शी कैसे बन बैठे ? ज़रा शैली पर दृष्टि डालिए—शैली पर—और बताइए है कुछ भी रोचकता-सुन्दरता। आत्मश्लाघा नहीं—बी. ए. की परीक्षा में वे विश्वविद्यालय में द्वितीय हुए थे—मुझ से १०-१२ नंबर अधिक पाए थे परन्तु हिन्दी में तो वे मुझ से पीछे—बहुत पीछे थे।

पुस्तकालय के लिए घर घर फिरने का कष्ट—धन्यवाद। और क्या कहूँ ?

हाँ, सर्वाधिक आवश्यक बात तो छूटी ही जाती थी। बताइए आने का विचार कब तक का है ?—है भी या नहीं। यहाँ पर्चे बँट चुके, "आज" में नोटिस निकल चुकी। क्या सब की आशाओं पर पानी फिर जायगा। आनन्द मोहन जी सानन्द हैं।

भवदीय नन्द दुलारे।

१२२. रामनाथलाल 'सुमन'

"त्याग भूमि"
५१०१

सस्ता-साहित्य-मण्डल,
अजमेर
ता० ४/६/१६२८.

भाई,

तुमने न पत्र का उत्तर दिया, न अब तक कुछ भेजा ही। एक कविता तो तुरंत—लौटती डाक से—भेज दो। प्रथमांक छपने जा रहा है।

तार से जरूरी समझो।

तुम्हारा
'सुमन'

१२३. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

DAILY VARTMAN OFFICE
दैनिक वर्तमान कार्य्यालय,
कानपुर।

Caunpore, १७-६-१६२८

प्रियवर निराला जी !

वन्दे

महीनों से आप का कुछ पता नहीं। और एक कष्ट यह देना चाहता हूं कि वर्त्तमान का विशेषांक निकलने जा रहा है [,] उसके लिए एक लम्बी कविता भेजने की कृपा कीजिए [,] कविता में २० छन्द से कम न हों। अवस्थी जी का विचार है कि

रहस्यबादी और स्पष्टवादी दोनों तरह के कवियों की ओर खास कवियों के लिए एक एक पेज सुरक्षित रहे। हां वर्तमान का पेज खयाल करके ऊवियेगा नहीं [।] उसका विशेषांक हिन्दू संसार के साइज़ में निकलेगा। उम्मेद है कि आप को बार बार लिखने की जरूरत न होगी। अंक का छपना अभी से प्रारम्भ हो गया है। मैं प्रतीक्षा करूंगा। आशा है कि आप शीघ्र उत्तर देगें।

भवदीय
सनेही

[अवस्थी जी—"वर्तमान"—संपादक रमाशंकर अवस्थी।]

'माधुरी' कार्यालय,
नवलकिशोरप्रेस,
लखनऊ, ता० २१-८-१९२८

१२४. कृष्णविहारी मिश्र
नं० 9515
[संपादकीय विभाग]

प्रिय महाशय,

आपकी निम्नलिखित रचना मिली। धन्यवाद। वह सादर स्वीकृत है, और शीघ्र ही 'माधुरी' की किसी आगामी संख्या में प्रकाशित कर दी जायगी। कृपाभाव बना रहे।

'वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति'

भवदीय
K. B. Misra
संपादक

'माधुरी' कार्यालय
(संपादन-विभाग)
ता० १-१०-१९२८

१२५. मातादीन शुक्ल
नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ।

प्रिय निराला जी,

आप सकुशल पहुंच गए होंगे। आप की कविता कब तक आवेगी? एक पत्र आप के नाम आया है। मतवाला आफ़िस से। उसकी नकल भेजता हूं। पत्र के भेजने वाले कोई रामलाल हैं—

"इधर मैंने कई पत्र आपके गाँव के पते से भेजे। जवाब न आया। मुंशी जी से मालूम हुआ, आप बनारस में हैं। रंगून से लौटती बार मेरे यहाँ आए थे। क्या आप कलकत्ता भी आवेंगे?" इत्यादि।

उन्हें आप ही पत्रोत्तर दे दीजिए। शेष फिर।

आपका
मातादीन शुक्ल

[रामलाल—रामलाल गर्ग। मुंशी जी—नवजादिकलाल श्रीवास्तव।]

१२६. हरिभाऊ उपाध्याय

सुख-निवास
माटुंगा G.I.P.
१ अक्टूबर [१९२८]

प्रिय त्रिपाठी जी,

सस्नेह प्रणाम। 'त्याग भूमि' के लिए अपनी सुन्दर भावमयी रचनायें भेजने के आश्वासन के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करने की कृपा कीजिए। प्रथमांक 'विजयादशमी' को प्रकाशित होकर आपकी सेवा में पहुंचेगा। आशा है, उस पर अपनी सम्मति देने की कृपा करेंगे।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि द्वितीय संख्या में आपकी कोई ललित जीवन दायिनी रचना प्रकाशित हो। आप यह सुनकर प्रसन्न होंगे कि हम 'त्याग भूमि' को व्यापक और उन्नत बना रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की वस्तु बनाने का उद्योग हो रहा है। हो सका तो तीसरे ही अंक से पृष्ठ संख्या ६४ से बढ़ाकर १२० कर दी जायगी और २ रंगीन तथा ८-१० सादे चित्रों की पत्रिका सिर्फ ४) में दी जायगी। इस दृष्टि से हिंदी-संसार में हमारा यह पहला ही उद्योग होगा और आशा है, आप हमें हर तरह से उत्साहित करने की कृपा करेंगे।

उत्तर और रचना अजमेर के पते पर।

हमारे योग्य सेवा लिखिएगा।

भवदीय
हरिभाऊ उपाध्याय

१२७. (क) नन्ददुलारे वाजपेयी
(ख) रामअवध द्विवेदी
(ग) आनन्द मोहन वाजपेयी
(घ) अवध विहारी श्रीवास्तव

(क)

काशी विश्वविद्यालय
४-१०-१९२८ ई०

प्रिय निराला जी,

आप जब से गये कोई पत्र नहीं मिला। प्रसाद जी से इतना पता अवश्य लगा कि लखनऊ से आपका विचार इलाहाबाद जाने का है। मैं यह पत्र घर के पते से लिख रहा हूँ—सम्भवतः आपः घूमघाम कर घर वापस आ गए होंगे।

एक अत्यावश्यक बात सुनिए, आगामी विजयादशमी के अवसर पर "स्वदेश" का विशेषाङ्क निकल रहा है। १३ तारीख तक मैटर Press में चला जायगा। आप यथासंभव शीघ्र ही एक कविता विशेषाङ्क के लिए भेजिए। विशेषाङ्क यथासंभव उत्कृष्ट निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है—प्रसाद जी, गौड़ जी, राय साहब आदि के

लेख मिलने की संभावना है—उन्होंने वचन भी दिया है।

पत्रोत्तर शीघ्र दें। शेष कुशलता है। सुधा अभी नहीं आई।

सविनय नन्ददुलारे

(ख) प्रिय 'निराला' जी,

सादर वन्दे।

आपका कोई पत्र नहीं मिला। कविता अवश्य भेजियगा। हम लोगों का विशेष अनुरोध है। और सब कुशल हैं।

आपका—राम अवध

(ग) प्रिय निराला जी,

जैसा कि द्विवेदी जी ने लिखा है स्वदेश का विशेषाङ्क विशेष सजधज के साथ निकलने जा रहा है। आशा है आप समय पर कोई कविता अवश्य भेजेंगे। १४-१६ तक घर आऊँगा। तब दर्शन होंगे।

आपका
आनन्द मोहन

(घ) श्रद्धेय निराला जी, सादर प्रणाम

मुझे भी आप न भूलें, यही प्रार्थना है।

भवदीय :
श्री पाण्डेय अवध विहारी

[पाण्डेय अवध विहारी का परिचय, नन्ददुलारे वाजपेयी के आग्रह पर, निराला के कहने से, 'मिश्र वन्धु विनोद' (भाग ४) में यों छपा था : अवध विहारी श्रीवास्तव 'विहारी', विहार, पकड़ी नरोत्तम, सत जोड़ा बाजार, सारन, जन्म सं० १९६२, सुकवि हैं। इनकी दो कविताएँ उद्धृत की गई हैं जिन पर प्रसाद और पन्त का प्रभाव दिखाई देता है :

अरी चिते ! चित बीच सर्प-सा
यह तेरा डसना कैसा ?
और—पवन के पावन तम श्रृंगार,
उषा के मंजु मनोहर हास।]

१२८. पाण्डेय अवधविहारी श्रीवास्तव

श्री हरि :

आर्य भवन,
श्री काशीपुरी,
१७-१०-२८।

श्रद्धेय निराला जी !

सादर प्रणाम—

वाजपेयी जी के पत्र में आप की ओर से अपनी यादगारी देख कर फूले नहीं

समाया। एक पंक्ति—हां एक पंक्ति ! एक वार नही कई वार मैंने पढ़ा। हृदय में आनन्द की मन्दाकिनी उमड़ने लगी। कुछ देर तक अपने को भूल सा गया।

सोचने लगा कि वड़ों को तो छोटों की याद नहीं रहती, फिर यह नई वात कैसी ?

आत्मा से उत्तर मिला—यह तुम्हारा भ्रम है।

तुम्हारी यह वात कम से कम—साथ लागू नहीं हो सकती। [अतिरिक्त स्थान लेखक का छोड़ा हुआ है।] वह सचमुच निराला है। लाखों में एक है। उसका हृदय उदार होते हुए भी समुद्र की तरह गंभीर है।

पूज्य निराला जी ! जब जब मैं यह सोचता हूँ कि आप मुझे भी याद रखते हैं तो मेरा मन मयूर नाच उठता है, और आप की साँवली सूरत आँखों के सामने नाचने लगती है। और न जाने तव मैं क्या क्या सोचने लगता हूँ।

वाजपेयी जी के पत्र में मैंने ही श्रद्धेय निरालाजी लिखा था, और जीवन भर यही लिखता रहूँगा। जगह की तंगी से नाम साफ साफ नही लिख सका था। आप मुझे छायावादी ही ढंग नहीं किसी और ही ढंग से याद रखें, पर याद तो रखें।

एक वात और भी कहूँ ? कहने दीजिए—आप मुझे भले ही भूल जायं पर मैं आपको कव भूलने वाला ? भूलना तो दूर रहे, मैं तो आप को प्यार करता हूं। और दिल से प्यार करता हूँ। वह कैसा प्यार ? यह भी सुन लीजिए—नही का वार रहने देता हूँ।

खैर, आज ही मैं भी घर जा रहा हूँ। लगभग एक मास की छुट्टी है। पुनः पत्र फिर दूंगा। आप से क्यों कर पत्र लिखने का अनुरोध करूं ? यह तो आप की दया पर है। मैं सानन्द हूं। आप की कुशल सर्वदा परमपिता परमात्मा से चाहता हूं। दया दृष्टि वनी रहे, यही प्रार्थना है।

भवदीय
श्री पाण्डेय अवध विहारी

घर का पता :—
श्री पाण्डेय अवध विहारी
विहारी-विहार
पो :— Satjora bazar (सतजोड़ा वाजार)
Dist :—Saran (Chapra) छपरा
Behar

१२६. नंददुलारे वाजपेयी

काशी विश्वविद्यालय
१७-१०-१९२८ ई०

प्रिय निराला जी,

आपके दो पत्र आए, पर मैं गोरखपुर चला गया था, वहां से अभी-अभी आ

रहा हूँ—सुनता हूं एक कविता भी आई थी पर वह तो आनन्दमोहन जी की कृपा से कल ही "स्वदेश" के लिए रवाना कर दी गई—मैं उसे देख न पाया और न उसके साथ जो पत्र था उसे ही क्योंकि आनन्दमोहन जी उसे अपने कमरे में बन्द कर Allahabad चले गए हैं—खैर छपने पर कविता देख लूंगा और उनके आ जाने पर वह पत्र।

गोरखपुर "स्वदेश" के विजयाङ्क का सम्पादन करने गया था। पहला अनुभव था पर अच्छा रहा। अजीब नज्जारे देखने को मिले। बड़े-बड़े प्रोफेसरों के—स्वनामधन्यों के—लेख अस्वीकृत कर देने पड़े और सुधार तो प्रायः प्रत्येक लेख में करना पड़ा। क्या बताऊँ व्याकरण की भद्दी भूलें—अशुद्ध पदविन्यास! मैं तो दंग रह गया। हाँ, आपकी "प्रथम प्रात के पुलकित पात"—कविता मेरे लेख के बीच में display की गई है। समालोचना सम्बन्धी एक छोटा सा लेख—एक प्रकार से भूमिका मात्र—मैंने "साहित्यप्रेमी" के नाम से लिखा है। "हिन्दी साहित्य का नवयुग"—शीर्षक है—स्वदेश के विशेषाङ्क में वह भी निकलेगा [,] जरा उसको देखिएगा—यदि इसी भूमिका के आधार पर आधुनिक कविता का विवेचन करते हुए एक विस्तृत लेख लिखूं तो क्या ठीक न होगा ?

अभी तो हजारीबाग जा रहा हूं पर विजयादशमी के बाद एक बार मगरायर आने का विचार करता हूं—देखिए मौका मिला तो अवश्य आऊंगा। आप वहीं रहिए—कहीं आइए जाइएगा मत नहीं तो दर्शन न हो पाएँगे।

'स्वदेश' की एक प्रति बराबर आपके पास जाया करे इसका प्रबंध कर आया हूँ—खासी धाक "वैष्णव कवियों की शृंगार वर्णना" को सुना कर जमा आया हूँ। अभी एक पत्र लिखता हूं कि आपकी यह दूसरी कविता मुखपृष्ठ पर निकले। "प्रसाद" जी आदि की भी कविताएँ हैं। कुल मिलाकर 'स्वदेश' अच्छा निकलेगा। "सुमन जी" ने भी कुछ लिखने को लिखा था पर कल तक तो कुछ नहीं भेजा। "अनूप जी" 'हरिऔध", "गोपाल शरण" सियारामशरण रसिकेन्द्र आदि की कविताएँ भी हैं। पर मुझे कोई भी विशेष पसंद नहीं आई शायद मेरा standard इन दिनों बहुत High हो गया है—हाँ, जरा मेरी कविता का तो मुलाहिजा फर्माइएगा—कैसी है—क्या त्रुटि है! राम अवध जी की कविता अच्छी है—"प्रयाम" की साधारण। किसकी किसकी प्रशंसा करूँ किसकी किसकी निन्दा!—आप से मिल कर विस्तृत-विवेचन किया जायगा।—लाइब्रेरी का क्या हाल है? "सुधा" अभी नहीं आई। पत्र हजारीबाग के निम्नाङ्कित पते से शीघ्र लिखिएगा।

सविनय नन्ददुलारे

पता :—बड़ा बाजार

Hazaribagh

१३०. नंददुलारे वाजपेयी

Bara Bazar. H. Bagh
21st. Oct. 1928.

प्रिय निराला जी,

एक पत्र इसके पूर्व भी लिख चुका हूँ—परन्तु तब काशी में था और अब उससे दूर--बहुत दूर हजारी बाग में। आपका कोई पत्र इस सुदूर स्थान में शायद ही आ सके क्योंकि एक तो पता अज्ञात दूसरे मुझे रहना भी बहुत कम दिन !

भाई आनन्द मोहन जी Allahabad गए हुए थे, संभवत: घर भी जाएँगे—मैं भी आने के विचार में हूँ तब एक बार—दो दिन के लिए ही सही—29 जमेगी। मुझको भी ज़राज़रा चस्का लग गया है।

इधर एक छोटा सा लेख शान्तिप्रिय जी के अनुरोध से किसी विशेषाङ्क के लिए लिखा है। शीर्षक है "अंतराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से गोस्वामी जी के स्थान-निर्धारण में कठिनाइयाँ" [,] छप जाय तो देखिएगा।

स्वदेश अभी क्या आया होगा—ज़रा "साहित्य प्रेमी" जी का मुलाहिजा फर्माइएगा। "सुधा" की उत्कट प्रतीक्षा है—आपके चित्र की सर्वाधिक !

नन्ददुलारे।

[२९ जमेगी—ताश का एक खेल जमेगा ; पता गाँव का]

१३१. नंददुलारे वाजपेयी

Bara Bazar Hazaribagh
Oct 31. 1928.

प्रिय निराला जी,

सादर वन्दे। आपका कृपा पत्र कल मिला था, साथ ही भाई आनन्दमोहन जी की ज़रा जल्दी में लिखी चिट्ठी भी मिली थी। अब तक तो वे काशी में विराजमान होंगे अत: उनके लिए पैसों की हिंसा नहीं करूँगा। मैं खूब समझता हूँ अपने प्रोफेसरों की लियाक़त, उनकी सूरत साफ नज़र आती है, पर अभी जैसी अवस्था मैं हूँ, ज़रा दुआ सलाम न किया करूँ तो काम कैसे चले ?—दूसरी बात यह भी तो है कि उनका ऐतिहासिक महत्त्व—हिन्दी पर उनका उपकार—यह भी तो एक चीज़ है। आप अधीरता पूर्वक मुझ सरीखे "नवीनों" का स्वागत करें, मैं भी ज़रा "प्राचीनों" से सहानुभूति दिखा—समवेदना प्रकट कर—आता ही हूँ, बहुत देर नहीं है। क्या लिखते हैं—भाषा-सौष्ठव ! अरे नहीं "निराला जी" दिल्लगी मत कीजिए—वह तो "उग्र" सरीखे कलाविदों की बपौती है, मैं तो उनके सामने बात तक नहीं कर सकता। एक काफी कर्री चोट उस दिन, रात को लगी थी, आप शायद उसको अधिक महत्त्व न दें—संभवत: सहमत भी न हों पर मैं तो एक लेख अंग्रेजी में लिख रहा हूँ—हिन्दी में भी लिख डालूंगा—जिससे अधिक नहीं तो मरहम-पट्टी तो हो ही जायगी। मैं "उग्र" को कुछ

नहीं—सचमुच कुछ नहीं समझता, अधिक से अधिक वे मेरी दृष्टि में एक पेट-पोषक औपन्यासिक—थर्ड रेट बाजारू—इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। मैं लेख का लिखित अंश भेजने ही वाला हूँ। ज़रा सहानुभूति से देखिएगा [।]

"स्वदेश" में आपके काम की कोई चीज नहीं है, आया तो होगा ही। "सुधा" की तीव्र प्रतीक्षा है, इधर फाँसी-अंक की भी शोहरत है—एक तमाशा और क्या [।] मैं अभी भी घर आने का विचार रखता हूँ पर अब कुछ दुविधा है, देखिए दर्शन होंगे तो हो ही जाएंगे।

[पत्र के अन्त में हस्ताक्षर नहीं किये गये ; पता गांव का]

१३२. सुमित्रानन्दन पन्त

21, Stanley Road,
Allahabad
(Nov. 8, '28)

प्रियवर निराला जी,

क्षमा प्रार्थी हूँ आपको यथासमय पत्र नहीं लिख सका; आशा है आप सानन्द समङ्गल हैं।

आज कानपुर से एक सज्जन आए हुए थे। कानपुर वाले एक कवि सम्मेलन करने का विचार कर रहे हैं—उसमें सब 'Young Crop' के कवि रहेंगे। समस्या अथवा विषय कुछ भी निर्धारित नहीं—अपनी २ इच्छानुसार कविगण अपनी सुन्दर २ कृतियाँ पढ़ेंगे।

वनारस से "प्रसाद" जी को भी बुलाने वाले हैं। यदि आप उस अवसर पर वहाँ चलने का विचार करें तो मैं भी जाऊँ। कृपया लिखिए, आपके पत्र आने पर मैं कानपुर वालों को अपने आने जाने की सूचना दूँगा—क्या आप अत्यन्त शीघ्र पत्र देंगे ? धृष्टता क्षमा—

मैं कई रोज तक प्रतीक्षा करता था कि आप अवश्य पत्र देंगे पर आपने मुझे निराश कर दिया। मेरा स्वास्थ्य आजकल अच्छा नहीं—जुकाम-खाँसी कुछ feverish सा दो एक रोज से रहता है।

आप आजकल क्या कर रहे हैं ? कुछ लिख रहे हैं ? अपने स्वास्थ्य का खूब यत्न कीजिएगा।

"Swami Vivekanand as a Calcutta Boy" का चित्र मुझे अभी नहीं मिला—

आशा है आप शीघ्र पत्रोत्तर देंगे—क्या अपना photo भेजूं ?

सप्रेम
आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

१३३. नंददुलारे वाजपेयी

काशी विश्वविद्यालय
१५-११-१६२८ ई०

प्रिय निराला जी।

प्रणाम। आपने कुछ भी नहीं लिखा इधर कुछ दिनों से। मैं कल आया हूँ काशी, आते ही आपकी "सुधा" वाली तस्वीर देखी। रद्दी तो है [,] आप क्या कह रहे थे कि बड़ी अच्छी है। मुँह खुल गया है, बाल स्पष्ट, सुन्दर नहीं आए इससे तो आपका सम्मिलित Group अच्छा आया है। लेख अभी तक नहीं पढ़ा [।] कल "प्रसाद जी" से लेकर पढ़ूंगा। स्वदेश के विशेषाङ्क के विषय में आपकी सम्मति भाई आनन्दमोहन जी ने दिखाई [।] मुझे तो आप की कविता सब से सुन्दर, सबसे अच्छी मालूम पड़ी।

मैंने "अनोखे कलाविद" शीर्षक लेख लिख डाला। Copy size के 20-29 पृष्ठ हैं "माधुरी" ६-७ पेज होंगे। एक बार आप देख लेते तो अच्छा था क्योंकि विषय-प्रतिपादन के संबंध में आप से अधिक मूल्यवान सम्मति मुझे मिल नहीं सकती। एक बार घर आऊँ तो काम बने।

द्विवेदी जी आज आ गए हैं—आनन्दमोहन तो पहले ही से डटे हैं।

सविनय—नन्ददुलारे।

द्विवेदी जी आपको प्रणाम [एक शब्द अस्पष्ट] हैं।

[द्विवेदी जी—राम अवध द्विवेदी ; पता गांव का]

१३४. (क) नंदकिशोर तिवारी
(ख) दुलारेलाल भार्गव

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
(सुधा-संपादन-विभाग)
लखनऊ ५/१२/१६२८

प्रिय महाशय,

आपकी भेजी रचना * मिली। धन्यवाद। स्वीकृत कर ली गई है। सुविधानुसार सुधा में वह प्रकाशित कर दी जायगी। योग्य सेवा लिखें। कृपा रक्खें।

भवदीय
नन्दकिशोर तिवारी
संपादक

*विस्मृति भोर [विस्मृत भोर]

मैं काशी गया था आज ही लौटा हूँ।

दुलारेलाल

[पता गांव का]

Madhuri Office
Lucknow
[५—१२—२८]

१३५ मातादीन शुक्ल

प्रिय निराला जी

तुम्हारे पत्र का अब जवाव दे रहा हूँ। आशा है अब पूर्णतः अच्छे होंगे। अगर काफी शक्ति आ गई हो तो सैर सपाटे के लिये निकल पड़ो। तुम्हारी वीमारी के पहले मैंने समझा था कि प्रयाग गए होगे। क्या वहां गए ही नहीं।

मैं किशुनपुर जा ही नहीं सका। वहां का हालचाल क्या लिखूं। विटिया सख्त वीमार हो गई थी। अब अच्छी है। इन दिनों उसकी मां का नंबर है। वह भी अच्छी हो जायगी। ईश्वर की कृपा से। अब तुम कब तक आओगे? मिश्र जी भी छुट्टी से लौट कर आ गए हैं। पहली तारीख को। काम वदस्तूर चल रहा है। अब इधर वह यही रहेंगे।

प्रेमचन्द जी को तुम्हारी ओर से धन्यवाद दे दिया था। आओगे कब तक?

अपने तथा बच्चों के हाल लिखना

वही
मातादीन शुक्ल

[पता गांव का]

[इलाहाबाद
दिसंबर १९२८]

१३६ सुमित्रानंदन पन्त

प्रिय निराला जी,

आपके पत्र का उत्तर स्वस्थ होने पर दूंगा।

कल प्रातः ८ बजे हमारे पूज्य प्रिय पितृ-चरण हमें सदैव के लिए छोड़ कर परमधाम चले गए हैं। उनकी अवस्था ७३ साल की थी। भगवान् ने उन्हें वृद्धावस्था के कष्टों से छुटकारा देकर अपनी गोद में बुला लिया। पर मनुष्य का हृदय, हम सब लोग शोक-संतप्त हैं।

कानपुर अब मैं न जा सकूंगा। चित्त शान्त होने पर आपको फिर पत्र दूंगा।

आशा है आप आनन्द पूर्वक होंगे।

आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

लखनऊ
८-१२-२८

१३७. कृष्णविहारी मिश्र

प्रिय पं० सूर्यकांत जी,

सादर नमस्कार।

'समालोचक' के लिये लेख मिल गया है। बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी वीमारी का हाल सुनकर बड़ा दुःख हुआ। आशा है अब आप विलकुल स्वस्थ हैं। लखनऊ कब

तक आइएगा ? सहित्य की प्रगति वाला आपका लेख अधूरा है उसे पूरा कर दीजिए। बड़ी कृपा होगी। लेख बड़ा सुन्दर है, माधुरी में मैंने जो छायावाद का विरोध नहीं किया है इससे कुछ प्राचीन प्रथा के लोग शायद मुझ से खुश नहीं हैं परन्तु Editor की हैसियत से मैं तो Secretary of public opinion हूँ। विशेष विनय।

आपका कृपापात्र
कृष्ण विहारी मिश्र

[माधुरी के अलावा कृष्ण विहारी मिश्र समालोचक पत्र का भी संपादन कर रहे थे। पता गाँव का है।]

१३८. नंदवुलारे वाजपेयी

आर्य भवन: पो० आ० लंका
काशी विश्व विद्यालय
१०-१२-१६२८ ई०

प्रिय निराला जी,

आपका सुन्दर साहित्यिक पत्र यथा समय मिला था, आप नहीं आए इसीलिए मैं भी जरा देर से लिख रहा हूँ। प्रतिशोध ही सही, पर हृदय की यही स्वाभाविक गति है, मेरे वश की वात नहीं।

हाँ, पत्र कितना सुन्दर है, मैंने माधुरी के सुमन-संचय में कभी ऐसे Notes नहीं देखे। कृष्णविहारी जी का पत्र आया था, मैंने उन्हें Suggest किया है कि सुमन-संचय के अन्तर्गत या किसी अन्य स्तम्भ के भीतर इस प्रकार के साहित्यिक पत्रों को प्रकाशित कीजिए, हिन्दी में नई बात होगी, अंगरेजी में तो साहित्यिक पत्रों को वही स्थान है जो निवंधों को, आख्यायिकाओं को या Lyrics को। यदि वे सहमत हों तो क्या आपका यह पत्र भेज दूं ? शुद्ध साहित्यिक तो है, कुछ भी तो Private Matter नहीं।

"You will not die a stone's death," मेरे लिए यह बात अनुरजंन का सामग्री नहीं, क्या करूं अपने अहंकार को, मुझे तो Stone आदि की उपमा अपने लिए एकदम अनुपयुक्त प्रतीत होती है।

आपकी तुलना Poe से ? पंतजी को क्या सूझी है, संभवत: उन्हें पता ही नहीं कि अंगरेजी में किस कवि को कौन सा स्थान है। हिन्दी वाले अधिकतर अंगरेजी साहित्य की चर्चा अपनी धाक जमाने के लिए ही करते हैं, पर वास्तव में यह बात अधिक श्रेयस्कर नहीं। आपने 'I do not love thee" वाली कवयित्री से पंतजी की तुलना की, चलिए साधर्म्य का आधार तो है !

कानपुर कवि सम्मेलन में आपका part एक poet-like ही हुआ, अच्छा रहा। यहाँ तो "कंटक" जी hero of the day माने गए—समझ लीजिए कैसा अखिल भारत-वर्षीय महासम्मेलन रहा होगा। हम लोगों का पूर्ण असहयोग ही रहा। द्विवेदीजी को कविता सुनाने को बुलाया गया तो वे वोल उठे—He is seriously ill. आनन्दमोहन

जी ने पहले "साइमन के भतीजे बनि आए हैं" की पूर्ति की थी पर ऐन मौके पर मौनावलंबन कर लिया।

काशी

१३९. विनोदशंकर व्यास

१४ दिसम्बर १९२८

प्रियवर निराला जी,

सप्रेम प्रणाम!

आज बाबू साहब के यहाँ आपका कार्ड देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। भला, मैं आपसे क्यों अप्रसन्न होऊ! मेरा तो सदैव आपके प्रति वही भाव रहता है। आपने अपना कोई समाचार नहीं दिया, इसीलिए मैं कोई पत्र न भेज सका। इसमें यदि आपका कोई अपराध है भी तो यही कि आपने पत्र नहीं भेजा। पुस्तकें आपकी रखी हैं, शीघ्र ही भेज दूंगा।

मैं स्वयं आजकल कुछ ऐसी झंझटों में हूँ कि न कुछ लिखूं ही और न किसी पत्र का उत्तर ही दूं।

आप आजकल क्या कर रहे है?

बाबू साहब का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। इसीलिए वह भी आपके कार्ड का उत्तर न दे सके! दीवाली से ही बीमार हैं। अब कुछ अच्छे हैं।

आशा है अब आपके मन में कोई भाव न रहेगा। मेरे प्रति ऐसा ख्याल करना ही आपका अपराध है। विशेष सब आनन्द है।

स्नेही

विनोदशङ्कर व्यास

१४०. सुमित्रानन्दन पन्त

२१, स्टैनले रोड,

प्रयाग।

१६. १२. २८

प्रियवर निराला जी,

आपका स्नेह-पत्र मुझे कल सन्ध्या को मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई।

हां अब भगवान की कृपा से तथा आप की कृपा से मेरा चित्त कुछ २ शान्त हो गया है। मैं आपके जाने के बाद से बड़ा उद्विग्न रहा। आपका उपकार मैं कभी न भूलूंगा। आशा है आप मुझे और भी अच्छी तरह शान्त होने में मेरी सहायता कीजिएगा।

चित्त की उद्विग्नता के कारण ही मैं आप को अपनी तस्वीर भी न भेज सका। अब शीघ्र ही भेजवा दूंगा। आपके दर्शन करने का सौभाग्य न जाने अब कब प्राप्त होगा। मेरा चित्त अच्छी तरह स्वस्थ हो जाय तो आप मुझे बनारस बुलाइएगा,—जब

आप ठीक समझें, तथा आपको सुभीता हो। आपके कहने के अनुसार मैं बार २ आपको याद करता रहा जिससे मुझे विशेष लाभ हुआ। आशा है आप सानन्द हैं, तथा मेरा चित्त शीघ्र ही शान्त करने में सहायता करिएगा।

भाई साहब को मस्तिष्क-विकार नहीं हुआ; न जाने किसने ऐसी ख़बर चला दी।

[पता]

कृपा रखिए—अत्यन्त स्नेहपूर्वक
आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

Sriman.
Suryakanta Tripathije
Village, Garha Kola,
P. O. Magrair
(Unao)

[शान्ति जोशी की पुस्तक **सुमित्रा नन्दन पंत, जीवन और साहित्य** में प्रकाशित अपने वक्तव्य में पन्त जी कहते हैं, "इसके बाद जैसा कि डा० रामविलास जी ने लिखा है, निराला जी अगले वर्ष मेरे पिता की मृत्यु के बाद मुझे सान्त्वना देने नहीं आये। हाँ, यदा कदा हमारा पत्राचार होता रहा, जिसके कुछ उदाहरण डा० रामविलास ने 'निराला की साहित्य साधना' में उपस्थित किये हैं जो केवल मेरे शिष्टाचार और सौजन्य के ही उदाहरण कहे जा सकते हैं।" (पृष्ठ ३७६)

मेरा अनुमान है कि यह पत्र पन्त जी ने अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद लिखा था और इसमें जो निराला के जाने की 'ग्त लिखी है, उसका सम्बन्ध निराला की उसी यात्रा से है जो उन्होंने पन्तजी के :जी के स्वर्गवास का समाचार पाकर की थी। इससे पहले पंत जी ने निराला को पिता के देहावसान की सूचना देते हुए पत्र लिखा था। उस पत्र पर तारीख नहीं है किन्तु वह होगा दिसम्बर १६२८ का ही। पिता के स्वर्गवास के दूसरे ही दिन पन्त जी ने निराला को लिखा था, "कल प्रातः ८ बजे हमारे पूज्य प्रिय पितृ-चरण हमें सदैव के लिए छोड़कर परमधाम चले गये हैं।" शान्ति जोशी की पुस्तक में पन्त जी का यह कथन उद्धृत किया गया है, "घर बिकने के एक ही वर्ष के भीतर मेरी मझली बहनों तथा दूसरे मझले भाई की मृत्यु के आघात के कारण पिताजी का रहा-सहा स्वास्थ्य तथा मानसिक धैर्य भी टूट गया और उसके दूसरे साल ही सन् २८ में प्रयाग में उनका स्वर्गवास हो गया।" (पृष्ठ २१७)। इससे स्पष्ट है कि पन्त जी के पिताजी का स्वर्गवास सन् २८ में हुआ था। इस वर्ष दिसम्बर में पन्तजी का मन उद्विग्न था और निराला उनसे मिलने इलाहाबाद गये, तो इसका सम्बन्ध पन्त जी के पिताजी के देहान्त से ही हो सकता है। पहले कानपुर जाने के बारे में पन्त जी ने निश्चय किया था, फिर पिता की मृत्यु के कारण वह निश्चय बदल दिया, इस उल्लेख से भी पन्त जी के पिता जी के स्वर्गवास का समय निश्चित किया जा सकता है।

शान्ति जोशी ने पन्त जी का जो कथन अपनी पुस्तक के पृष्ठ २१७ पर उद्धृत

किया है, वह आगे उन्हें याद नहीं रहा। इसलिए फरवरी सन् २९ में पन्त जी के पिताजी के स्वर्गवासी होने की सम्भावना का उल्लेख किया है। इस सिलसिले में लिखा है, "गंगादत्तजी ने चाय का व्यवसाय बन्द करने के साथ ही पीना छोड़ दिया था। हृदय में जो भी बात हो, बाहर से वे यही कहते थे कि दूसरे प्रकार की चाय मैं पी नहीं सकता। एक दिन, सम्भवत: फरवरी, २९ का अन्तिम सप्ताह था, सवेरे का समय। उन्होंने कहा—'मैं चाय पिऊँगा'। हरिदत्त जी उनके लिए चाय बना लाए। दो एक घूंट चाय पीने के बाद उन्होंने बहिन गौरी को देखने की इच्छा प्रकट की। बहिन निकट ही तीन म्योर रोड में थी। उन्हें बुला लाने के लिए नौकर भेज दिया गया। जिस समय उन्होंने अपने पति के साथ कमरे में प्रवेश किया, तब लगभग आठ बज रहे होंगे। गंगादत्त जी ने उन्हें देखा। एक मधुर मुस्कान उनके चेहरे पर आज दिनों बाद झलक गयी—'तू आ गई,' कहने के साथ ही उन्होंने बहत्तर वर्ष की आयु में सदैव के लिए आँखें मूंद लीं।" (पृष्ठ २२५-२२६)।

इस विवरण में सवेरे के आठ बजे निधन होने की बात पन्त जी के पत्र से भी पुष्ट होती है। किन्तु यह सन् २९ में फरवरी का महीना न रहा होगा। पन्त जी ने सन् २८ में पिता के देहावसान की जो बात कही है, वही ठीक है। उनके पत्रों को देखने से यह निश्चित हो जाता है कि यह घटना दिसम्बर में हुई थी और इसके बाद पन्त जी से मिलने और उन्हें सान्त्वना देने निराला इलाहाबाद गये थे। निराला का यह कार्य बहुत स्वाभाविक था क्योंकि पन्त जी के भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर निराला उनसे मिलने गये थे। इस प्रसंग में शान्ति जोशी ने ठीक लिखा है, "भ्रातृ विछोह के दारुण दु:ख में पन्त तप रहे थे कि उन्हें द्वितीय बार निराला जी के दर्शन हुए। निराला जी अपने जामाता के साथ पन्त से मिलने स्टेनली रोड पर आए, सम्भवत: रघुवर दत्त जी की मृत्यु का समाचार सुनकर, उनसे समवेदना प्रकट करने।" (पृष्ठ २२३)। परस्पर ऐसा स्नेह-सम्बन्ध होने पर यह अत्यन्त आश्चर्य की बात होती यदि निराला स्वयं पन्त जी से उनके पिता जी के स्वर्गवास का समाचार पाकर उनसे मिलने और उन्हें सान्त्वना देने न जाते।]

१४१. नंददुलारे वाजपेयी

Benares Hindu University
29 th Dec 1928.

प्रिय निराला जी,

सविनय प्रणाम। आपका छोटा सा पत्र मिला, उतने से भला कैसे सन्तोष होता, मैं तो क्या बताऊँ प्यासा ही रह गया। पं. श्याम विहारी जी से बनारस के संबंध में कैसी बातें हुईं कुछ पता न चला। अच्छा मैं Guess करता हूँ। सुकुल जी और बाबू श्यामसुन्दर दास के अनुकूल तो कोई बात कही नहीं होगी परन्तु कहीं अवश्य होंगी कुछ बातें। आप खुलासा लिखिएगा, बड़ी उत्सुकता है। एक बात और पूछनी है—

स्वभाव कैसा है मिश्र जी का, हो माकूल तो ज़रा मुझे introduce करा दीजिएगा। उनसे और द्विवेदी जी से एकएक Certificate लेना है एम० ए० पास कर लेने पर क्योंकि हिन्दी संसार में इनका इस समय बोलबाला है। कोई जल्दी नहीं है। और किससे किससे मिले थे। आप तो बस यही लिख देते हैं मिलने पर सब बातें बताई जाएंगी, पर बताइए अभी हाल में मिलने की कौन सी आशा करूँ, आप भी तो आने की कृपा नहीं करते। समालोचक वाला लेख निकले तो पढ़ूँ। मैंने एक चतुर्दशपदी स्वर्गीय लाला लाजपत राय पर लिखी थी, "महारथी" का लाजपत-अंक निकल रहा है, शर्मा जी का पत्र आया था, उन्हें ही भेज दी है।

सविनय-नन्ददुलारे

सुधा में जोशी बंधु संबंधी आप का लेख कब तक निकलेगा? निकले तो ज़रा हलचल रहेगी।

[शर्मा जी—महारथी-संपादक रामचन्द्र शर्मा; पता गाँव का]

१४२. कृष्णविहारी मिश्र

Telephone 5&8
नं० 2762
[संपादकीय विभाग]

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी'—कार्यालय
नवलकिशोर-प्रेस
लखनऊ ३-१-१९२९

प्रिय निराला जी,

नमस्कार।

कृपापात्र के लिये धन्यवाद। 'समालोचक' प्रकाशित हो गया है। शीघ्र सेवा में पहुँचेगा। 'माधुरी' के लिये एवं 'समालोचक' के और लेख भेजिए। 'वर्णाश्रम धर्म' पर आपका जो लेख है वह भी शीघ्र प्रकाशित किया जायगा। आशा है आप प्रसन्न हैं। विशेष विनय।

कृपापात्र
कृष्ण विहारी मिश्र

पं० मातादीन जी को जो पत्र आपने लिखा है और उसमें मेरा भी स्मरण किया है सो शुक्ल जी ने मुझको सूचित किया है। तदर्थ भी धन्यवाद।

[पता गाँव का] कृ० वि० मिश्र

१४३. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन; पो० आ० लंका
काशी विश्वविद्यालय
६-१-१९२९ ई०

प्रिय "निरालाजी",

सविनय प्रणाम। आपका कोई कृपापत्र नहीं मिला, मैं तो दो पत्र लिख चुका

हूँ। आज आनन्दमोहन जी से मालूम हुआ कि मेरा एक ही पत्र मिला जिसका उत्तर आप नहीं दे सके।

इधर "साहित्य-समालोचक" में हिन्दी में नवीन प्रगति पर आपका निबंध पढ़ने को मिला, साथ ही तत्संबंधी समालोचनाएँ भी सुनने को मिलीं। हमारे अध्यापकों को लेख में "व्यक्तित्व पर गंदे आक्रमण" इतने अधिक दिखाई देते हैं जिनकी आशा वे निराला से स्वप्न में भी नहीं करते थे। उनके मत में "साहित्य समालोचक" जैसे गंभीर प्रतिष्ठित पत्र में उसका छपना भी कम आश्चर्य का विषय नहीं है। कहते हैं सिद्धान्तों का प्रतिपादन एक बात है और गाली देनी दूसरी। कह तो नहीं सकता पर बहुत संभव है मामला अब कुछ बढ़े। अच्छा है लोक-लोचन समक्ष अब निपटारा हो ही जाय।

भाई आनंदमोहन जी की राय है कि लेख में सिद्धान्त-प्रतिपादन जिस सुन्दरता से किया गया है, भाषा उसे देखते कुछ अधिक मधुर होनी चाहिए थी। अच्छा, लेख में छायावाद के सम्बन्ध में विस्तृत रीति से लिखने का जो वचन है वह कब तक? अगले अंक के लिये कुछ भेजा है?

प्रसाद जी कहते थे कि फर्वरी में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से नये पुराने दलों का वाद विवाद कराने का निश्चय कराया गया है। उनको नये दल को संघटित करने और उसका spokesman बनने को कहा गया है। वे तो लिखित रीति से ही अपना वक्तव्य प्रकाशित करेंगे, पर वाद-विवाद के लिए आपकी उपस्थिति की बड़ी आवश्यकता है। प्रसाद जी ने संभवतः आपको इस सम्बंध में लिखा भी होगा, मुझसे कहते थे कि यदि नागरी प्रचारिणी सभा बुलाए तो बुलाए नहीं तो मैं तो उन्हें अवश्य बुलाऊँगा। वास्तव में यह एक Epoch-Marking घटना होगी—हिन्दी-साहित्य के इतिहास में एक नई बात। आइये इस बार—आनंदमोहन जी बड़े धूमधाम से स्वागतार्थ तत्पर हो रहे हैं, हम लोग तो परीक्षा के कारण ज़रा शिथिल पड़ गए हैं।

"माधुरी समालोचना पदक" का निर्णय अभी कहाँ हुआ है। कार्तिक की "माधुरी" निकल गई, अब निर्णय होगा। पता लगते ही सूचना दूंगा।

पं० कृष्णविहारी जी के पत्र आए थे। उन्होंने मेरी "सत्समालोचना" को "समालोचक" में निकाल दिया है। पौष की माधुरी में "अनोखे कलाविद" निकालने को लिखते हैं। साहित्यिक पत्रों के सम्बंध में लिखते हैं, वे छापने को तैयार हैं वशर्ते वे अच्छी तादाद में मिलें।

एक लेख "साहित्य समालोचक" के लिए भेजा है, अगले अङ्क में छपेगा। इधर तो बड़ी गहरी पढ़ाई हो रही है।

सविनय नन्ददुलारे।

१४४. विनोदशंकर व्यास

छावनी जमालापुर
जौनपुर
६ जनवरी १६२६

प्रियवर निरालाजी,

सप्रेम प्रणाम।

आपका कार्ड बनारस से लौटता हुआ यहाँ मिला। मैं भी आपकी तरह देहात में एक महीने से दिन काट रहा हूँ।

'उग्र' कलकत्ते में हैं। दो महीने से उनसे भेंट नहीं हुई।

एक सप्ताह में काशी जाऊँगा। बाबू साहब का स्वास्थ्य अब अच्छा है। आप क्या कर रहे हैं। फागुन में अवश्य आइये। अपना समाचार बराबर देते रहियेगा।

विशेष सब आनन्द ही है। कोई नवीन समाचार नहीं [।] आपका स्वास्थ्य कैसा है?

आशा है, इसी तरह आपका स्नेह-भाव बना रहेगा।

स्नेही
विनोदशङ्कर

[पता गांव का]

१४५. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन; काशी विश्वविद्यालय
२४-१-१६२६

प्रिय निराला जी,

मैं दूसरे दिन शाम को प्रसाद जी के यहाँ गया तो पता चला कि आप रात ही को चले गए थे। इधर आपके पत्र न मिलने से यह चिन्ता हो रही थी कि नशे की अवस्था में दूर की यात्रा और टिकट का यह हाल, कहीं किसी से चख-चख हुई तो बात बुरी होगी। मैं भी पत्र लिखता तो कैसे—शान्तिप्रिय जी तक से ठीक ठाक पता न मालूम हो सका। लाचार हाथ पर हाथ रखे बैठा था कि आपका पत्र मिला। सुना है सहानी साहब को आपके चले जाने की बात यथासमय मालूम हो चुकी थी और वे अपनी स्वभाव-सरल मुद्रा में मीठी हँसी हँस कर चुप हो रहे थे। मेरी तो उनसे जैसी बनती है, आप जानते ही हैं—नहीं तो ज़रा पूछता कि जनाब इसमें हँसने की कौनसी बात है, कुछ आधुनिक तहजीब ही सब कुछ नहीं है—मशीन में और मनुष्य में कुछ तो अंतर बना रहने दीजिए।

आनंदमोहन जी की ओर से "यमुने" की याद दिलाता हूं, हो सके तो "मतवाला" की वे प्रतियां ही भेजवाइयेगा, आप अपनी ओर से संशोधन कर दें तो और

अच्छा हो। रवीन्द्र कविता-कानन को देखा है। शेष प्रसन्नता है, अगला पत्र कुछ विस्तृत विवरण युक्त हो तो अच्छा हो।

[पता :]

Pandit Suryakant Tripathi "Nirala"
C/o The Matwala Office
36, Shanker Ghose Lane, Calcutta
पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"
मतवाला कार्यालय, कलकत्ता।

सविनय
नन्ददुलारे।

१४६. सुमित्रानन्दन पंत

२१, स्टैनले रोड,
प्रयाग
(२८-एक-२६)

प्रियवर निराला जी,

आपका अत्यन्त प्रिय पत्र मुझे कई दिनों बाद मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई। यथा-समय उत्तर नहीं दे सका, क्षमा प्रार्थी हूँ। मुझे अपनी प्रशंसा और किसी से सुन प्रसन्नता के वदले सङ्कोच ही होता है, पर जब कभी आपसे सुनता हूँ तो सचमुच मेरे हृदय को जैसे कोई भीतर ही भीतर गुदगुदा देता है: शायद मैं हमेशा डरता रहता हूँ कि कभी किसी वात से आप फिर नाराज न हो जायँ, क्योंकि मैं बड़ा ही Careless-सा हूँ।

श्रीमान् सेठ महादेव जी से जो आपने कविता प्रकाशन की वात लिखी उसमें मुझे कोई भी आपत्ति नहीं, केवल यही कि मुझे इण्डियन-प्रेस वालों से अपनी पुस्तकों को—यद्यपि वे Royalty System पर ही हैं—वापस माँगने में बड़ा सङ्कोच होगा, आप मेरा स्वभाव जानते हैं। हां, भविष्य में मैं सेठ जी की सेवा में भेज दूंगा—यद्यपि मैं एक पुस्तक "निर्मल जी" को तथा एक श्री दुलारे लाल जी को देने का वादा कर चुका हूँ। वादा क्या कर चुका हूँ मैं नहीं कह ही नहीं सकता—आप सेठ जी को समझा दीजिएगा [।] उन्होंने जो निराश होने की बात कही वह शायद इसलिए कि मैं मतवाला के लिए कविता नहीं भेज सका—पर यह किसी अभिमान वश नहीं—केवल मेरी Carelessness या शायद मानसिक ऊहापोह के सबब—मैं हमेशा यही प्रयत्न अव तक करता आया हूँ कि मेरी मानसिक ऊहापोह कभी किसी ठीक स्थान पर पहुँच जाय, पर अभी तक ऐसा नहीं हो पाया, यद्यपि मैं सदैव ही आशान्वित रहता हूँ।

और एक वात के लिए आप से बार २ क्षमा चाहता हूँ—वह यह कि आपके पास अपनी photo नहीं भेज सका! न अब मेरे पास ही है! उस रोज जब मैंने पिछला पत्र आपको लिखा था श्रीयुत Prof. Ambadatt Joshije तथा Prof Hafiz (Alld-Uni) मेरे यहाँ शाम को आए—मेरे टेबल पर मेरे चित्र देख कर माँगने लगे—मैं नहीं कही नहीं सकता—यद्यपि मुझे वड़ी तकलीफ़ हो रही थी कि आपको क्या भेजूंगा—पर मैंने उन्हें दे ही दिए अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने आप दे दिए—आप मुझे अवश्य क्षमा कीजिएगा—

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है ? मैं तो चाहता हूँ आप सदैव मुझे शीघ्र २ पत्र लिखा करें, यद्यपि स्वयं ही अन्यमनस्क रहता हूँ—

और फिर [।]

सस्नेह
आपका
सुमित्रानन्दनपन्त

[पता]

Suryakanta Tripathi Esqr.
C/o
"Matwālā"
36, Shunker Ghose Lane,
Calcutta

१४७. कृष्णविहारी मिश्र

Telephone 5 & 8
नं०—3537
[संपादकीय विभाग]

तार का पता—"UKHBAR"
'माधुरी'—कार्यालय
नवलकिशोर—प्रेस,
लखनऊ २९-१-१९२९

प्रिय तृपाठी जी !

'जीव विज्ञान' नामक पुस्तक समालोचनार्थ सेवा में भेजी गई थी, पर पहुंच की सूचना नहीं मिली। पुस्तक रजिष्ट्री से भेजी गई थी। मिली ही होगी। समालोचना शीघ्र लिख भेजने की कृपा कीजिये। कष्ट के लिये क्षमा। आशा है, आप सानन्द हैं। कृपा बनाए रहें।

भवदीय :—
कृष्ण विहारी मिश्र
संपादक।

[केवल हस्ताक्षर मिश्रजी के हैं।
कार्ड 'मतवाला के' पते पर भेजा गया है।]

१४८. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन काशी विश्वविद्यालय
७-२-१९२९ ई

प्रिय "निराला" जी,

आपके लिफाफे की प्रतीक्षा में इतने दिन रहा, अब तक उसका कहीं पता नहीं। आपके कुशल समाचार न मिलने से कभी-कभी कुछ उद्विग्नता रहती है, कृपा करके विस्तृत विवरणात्मक पत्र अवश्य लिखिएगा।

"प्रेमचन्द जी का दृष्टिकोण" शीर्षक एक लेख कल रात को लिखा है। इधर-

उधर की बातें मिला कर ७-८ पेज हो गए हैं—इसे देखकर प्रकाशित होने दीजिएगा—मैंने अभी Revise भी नहीं किया है। आप जानते ही हैं आजकल पढ़ाई-लिखाई में व्यस्त रहता हूं।

शिवदुलारे का विवाह वसंत पंचमी को होना निश्चित हुआ है। मैं कल निमंत्रण पत्र भेजूंगा। उसकी यह प्रवल आकांक्षा है कि आप विवाह में अवश्य सम्मिलित हों और मेरी आकांक्षा तो आपको मालूम ही है। मुझे भय है आप संभवतः न आ सकिएगा—पर इसकी सूचना आप कृपा कर शीघ्र ही दें—मैं तव तक काशी ही में ठहरा रहूँगा।

आनंदमोहन जी बराबर यमुने के लिये कहते हैं, आपका कोई उत्तर न आने से मैं उन्हें क्या जवाब दूं।

अवध विहारी जी द्विवेदी जी आदि सव प्रसन्नतापूर्वक हैं। शिवदुलारे तो कल घर चला गया है।

शेष प्रसन्नता है।

सविनय
नन्ददुलारे।

[पता 'मतवाला' का]

१४६. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
११-२-१६२६ ई

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र अव तक नहीं मिला—आप तो रहते हैं रहते हैं चुप हो जाते हैं। मैं परसों यहाँ से चले जाने के विचार में हूँ, संभव है कल ही चला जाऊँ। निमंत्रण पत्र भेज रहा हूँ, यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो आइएगा—शिवदुलारे का विशेष आग्रह है।

" 'सुधा' के नन्दकिशोर तिवारी तो वड़े भलेमानस हैं। अपने एक मित्र को पत्र लिखते हुए उन्होंने आपके सम्वन्ध में जैसी वातें लिखी हैं— वे उन्हीं के योग्य हैं। लिखा है कि "निराला जी" सुधा कार्यालय में ठहरे और मुझसे पूछने लगे—आप हमारी कविताओं को कैसी समझते हैं ? मैंने कहा 'Mr. Nirala, excuse me, you are no poet to me.' तव निराला जी वोले आप समझा कीजिए, मेरे प्रशंसकों का एक अलग समुदाय है—मेरे समर्थकों की एक अलग श्रेणी। इसके वाद उस पत्र में वहुत सी ऐसी वातें लिखी हुई थीं जिनको मैं अव तक नहीं जान पाया। हां, एक वात और जान पाया हूँ, वह यह कि सुधा का जो कार्टून अंक निकल रहा है उसमें आप पर भी दो एक कार्टून हैं। यह भी तिवारी जी की कृपा से ! मैंने तो उनके मित्र को सच्ची वातें समझा दी हैं—विचारे सीधे आदमी मान भी गए हैं—पर तिवारी जी महाराज किसके मनाए मानेंगे ?"—पं० राम अवध द्विवेदी।

मैंने तो द्विवेदी जी को कह दिया है कि वे मानेंगे तो खरी समालोचनाओं से—उनकी भी, देवीजी की भी, और निराला जी की भी। अभी तो "कविता क्या

—का युग हिन्दी संसार के सामने है, यही नहीं हल हो पाया; अंतरंग विषयों का तो
म मालिक है।

तीन चार दिन हुए लक्ष्मीनारायण "श्याम" मेरे यहाँ आए हुए थे। मैंने आपकी
कवि' वाली कविता दिखाई और पूछा कैसी है? आप बोले "Niralaji has ceased
to be a poet now." मैंने कहा क्यों? कहने लगे एक बार पढ़ने से जो समझ में
नहीं आती, हमारे ऐसे लोगों को भी समझने के लिये दिमाग़ को Strain करना पड़ता
है—वह कविता, कविता नहीं।—देखते जाइए कितनी कितनी परिभाषाएँ कविता की
निकलती हैं, मुझे तो हँसी भी आती है और कभी-कभी रुलाई भी।

मेरा विचार जाते हुये कृष्णविहारी जी से मिलने का है—वहाँ ज़रा साहित्यिक
खवरें अधिक मिलेंगी। समालोचना पारितोषिक का भी पता लगेगा। घर का कुछ काम
हो तो मुझे लिखिएगा [।] मैं १८--२० तक मगरायर में रहूंगा। "अक्षर विज्ञान" के
लिए लिख दीजिएगा मैं आपके यहाँ जाकर उसे अवश्य ले आऊंगा [।]

सविनय नन्ददुलारे वाजपेयी

["अक्षर विज्ञान"—रघुनन्दन शर्मा की कृति;
देवीजी—संभवतः महादेवी वर्मा; पता 'मतवाला' का]

१५०. कृष्णविहारी मिश्र

लखनऊ २०-२-१९२९

प्रिय पं० सूर्यकान्त जी,

नमस्कार।

वहुत दिनों से आपके कुशल-समाचार नहीं मिले। कृपया 'माधुरी' के लिये
कोई लेख भेजिए और 'समालोचक' वाला भी अपना लेख पूरा कर डालिए। आशा है
आप प्रसन्न हैं। विशेष विनय।

कृपापात्र
कृष्ण विहारी मिश्र

[पता 'मतवाला' का]

१५१. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन काशी विश्वविद्यालय
२१-२-१९२९

प्रिय निरालाजी,

आपका पत्र मुझे कल बीघापुर की स्टेशन पर मिला। एक दिन पहले मिल
गया होता तो अक्षर विज्ञान ला सकता था। ख़ैर अब महीने भर बाद छुट्टियों में निश्चित
होकर देखूंगा। यहां आकर आज प्रसाद जी के यहां मतवाला देखा और आपका वह
पत्र भी जो प्रसाद जी के पास आया हुआ है। उस लेख में उतना अंश और..........हो

या है, अब वह आपका ही लिखा मालूम पड़ता है—मेरी ....भूमिका मात्र रह जाता है। आपके शिर दर्द से मुझे बड़ी चिन्ता होती है। जलवायु की अननुकूलता ही का रूप होगा। न हो तो कुछ दिनों के लिए यहां चले आइए। दिमाग़ी कसरत आपके कमज़ोर स्वास्थ्य के लिए हानिकर (?) है। मेरी बात मानिए अभी अपनी Scheme को post-pone कर दीजिए, नहीं तो हम लोगों की आशा पर पानी फिर जायगा।

प्रसाद जी को भी आपके स्वास्थ्य की बड़ी चिन्ता है, वे कहते थे कि निराला जी यदि अपने स्वास्थ्य पर जल्दी ध्यान नहीं देंगे तो आगे चलकर बड़ी हानि होगी।

आपकी तीनों कविताएं मुझे बहुत पसंद आई हैं—वासन्ती सबसे अधिक।—

—विनयावनत नन्द दुलारे।

शेष फिर—

[कार्ड पर स्याही गिर गई थी। कुछ अंश पढ़ा नहीं गया। पता 'मतवाला' का]

१५२. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्रीः

C/. बा. राधाकृष्णदास बी०ए०
कोठी-मदैनी,
Benares city
२१-२-२६

पूज्यवर, प्रणाम—

आपका कार्ड यहां बाबू साहब के यहाँ आया। आपकी अस्वस्थता जानकर दुःख हुआ। मैं समझता हूँ, आपका स्वास्थ्य आपके हाथ में है, यदि तनिक ध्यान और सावधानी रक्खें तो अच्छा हो। भगवान सच्चिदानंद आपके आनंद की सीमा अपरिमित रखें।

मैं सकुशल हूं, यद्यपि छः महीने से अधिक समय से मेरा अन्तर्जगत शून्य और क्रंदनमय है—जीवन की किसी सुस्निग्ध आकांक्षा से। फिर भी यथावकाश हँसता हूँ, कारण, जीवित रहने के लिए इससे सस्ता और कोई आधार नहीं।

बाबू साहब के पत्र में आपने मुझे सूचित किया है कि मेरे संबंध की कुछ बातें आप मुझे सूचित करना चाहते हैं—मैं उत्सुक हूँ और उत्कण्ठापूर्वक पत्रोत्तर की राह देखूंगा।

मैंने "हिन्दी कविता का आधुनिक जीवन" शीर्षक एक लेख दो चार दिन हुए, 'विशाल भारत' के पास भेजा है, हो सके तो एक बार सम्पादक से मिलकर देख लीजिए। ज़रा 'सरोज' के मुंशी जी से कह दीजिएगा कि ७वें अंक से 'सरोज' फिर मेरे पास नहीं आया, पता ठीक करके भेजें।

सेवक
शां. प्र.

[पता 'मतवाला' का]

१५३. (क) जयशंकर 'प्रसाद'
(ख) विनोदशंकर व्यास

(क)

काशी
२३-२-२९

प्रिय निराला जी,

पत्र मिला। अभी मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है—आज से कविराज की दवा आरंभ की है—और कोई विशेष समाचार नहीं है।

अपना कुशल समाचार लि० सिर के दर्द का क्या हाल है ?

भवदीय
जयशङ्कर 'प्रसाद'

(ख)

[काशी,
२३-२-२९]

पहले मैं रुष्ट था, अब [आप रुष्ट हैं।] क्यों? खैर बनारस आने पर फैसला होगा।

आशा है मेरी दोनों पुस्तकें आपको मिल गई होंगी। फोटो काशी आने पर— विशेष सब आनन्द है।

तूलिका और·· ···की समालोचना उचित समझिये तो मतवाला के लिये लिख दीजिये। सेठ जी को भी लिख दिया है—

विनोद

[प्रसाद के ऊपर वाले पत्र के साथ ही विनोदशंकर व्यास ने यह नोट भेजा था। यदि आरंभ में कुछ और लिखा था तो वह सुरक्षित नहीं रहा। संभावना यही है कि इतना ही लिखा था; यह सब उसी कागज के आधे हिस्से में है जिसके एक हिस्से में प्रसाद ने पत्र लिखा था। निराला के पास दोनों टुकड़े अलग अलग थे। पत्र के एक भाग पर स्याही के गहरे धब्वे हैं, अन्य भाग के अक्षर पानी टपकने या तमाखू की पीक से अस्पष्ट हो गये हैं।]

१५४. नन्ददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन काशी विश्वविद्यालय
२५-२-१९२९

प्रिय निराला जी,

बारात से लौटने पर एक छोटा सा पत्र लिख चुका हूँ, परन्तु आपके लम्बे पत्रों में कुछ ऐसा आकर्षण, कुछ ऐसा नशा-सा मेरे लिए होता है कि इन परीक्षा के दिनों में भी रोज कम से कम एक बार उन्हें पढ़ना पड़ता है और जी करता है ऐसे पत्र प्रतिदिन पढ़ने को मिलें, Leader या Pioneer मिलें या न मिलें। एक अजीब प्रकार की तृप्ति,

एक न जाने किस तरह का संतोष होता है, थोड़ी देर के लिए जैसे जीवन में पूर्णता आ-
गई हो—और-कुछ न चाहिए।

आपने "सुधा" में प्रोफेसर अमरनाथ झा वाला लेख देखा ? कुछ लोग इसे युग-
प्रवर्तक घटना कहेंगे। कारण अंग्रेज़ी के एक धुरंधर प्रोफेसर को इस तरह तारीफ करते
किसने सुना था ? मनोरमा में किसी ग्रैजूएट ने वियोगी जी की रचनाओं की प्रशंसा
की है —लेख third class है तो क्या हुआ, जिस प्रवृत्ति का द्योतन हो रहा है वह
अवश्य आशाप्रद है।

"युवक" के दूसरे अंक में क़ाज़ी नजीरुल [नज़रुल] इस्लाम की "अग्निवीणा"
की प्रशंसा छपी है, आप देखिएगा। उसमें एक आधी कविता (जो उद्धृत है) मुझे इतनी
अच्छी लगी कि इच्छा होती है आप से बंगला बड़ी जल्दी सीख लूं और बराबर
Original में कविताएं पढ़ा करूँ। बतलाइए मेरी परीक्षा होली के एक दिन पहले ही
समाप्त होगी, इसके बाद आपके पास आऊं ?—दो बातें होंगी एक तो कलकत्ते में
बंगला atmosphere और दूसरे आप पढ़ाने वाले, अधिक नहीं महीने भर में पढ़ने-
समझने भर को जान सकूं तो अच्छा हो।

आप अपनी कविताओं का Collection निकलवा रहे हैं। कहां से यह नहीं
मालूम हुआ। मैं तो भारती भांडार काशी की छपाई पर मुग्ध हूँ, कलकत्ते में तो छपाना
कुछ जँचता नहीं है। एक बात और—कितना बड़ा Collection होगा ? कौन-कौन सी
कविताएँ रखने का विचार है ? प्रारम्भ में कुछ भूमिका आदि रहेगी न ? कुछ तो रहनी
ही चाहिए।

जोशी बंधुओं पर आक्रमण है बड़े ढंग से। प्रसाद जी बड़ी प्रशंसा करते थे।
मुझे प्रारंभ की personal बातें कुछ अनावश्यक सी लगीं। गंभीर लेखों में मैं ऐसी
बातों के पक्ष में नहीं हूँ। चाहता हूँ पहली ही पंक्ति में मतलब की बातें हों। उन्हें शेर
क़रार देना और इसी तरह की अन्य बातें समालोचना के बहुत उपयुक्त नहीं कहीं
जाएंगी। लेख का अंतरंग आप के अबतक के सब लेखों में मार्मिक हुआ है। देखें आगे
क्या होता है। Controversy चलेगी ऐसा पता चलता है—रहेगा ज़रा लुत्फ़।

यहाँ का कोपोत्सव समाप्त हो गया—सकुशल ही समझिए क्योंकि विरोध की
गुंजाइश ही नहीं रखी गई थी। मैं तो था नहीं पर सुना जाता है गौड़ जी जब रहस्यवाद
के पक्ष में और सुकुल जी के विपक्ष में कुछ बोलने चले तो रोक दिए गए और समया-
भाव बताकर आगे काम चलता किया गया। हमारे बाबू श्यामसुन्दरदास ने ५०००)
की थैली अस्वीकार कर दी—कितना महान त्याग है ? प्रसादजी ने "नारी और लज्जा"
पर एक कविता पढ़ी थी जिसकी यहाँ के पुराने लोगों में बड़ी प्रशंसा है। "मतवाला"
में छपवाइए, उन्हें लिखिए, भेज देंगे।

आपके शिर दर्द के लिए, मेरे दिल में एक खास जगह है, चिन्तित रहता हूं,
जिज्ञासा रहती है पर आपकी जैसी प्रकृति है—क्या किया जाय ! कुशल पत्र शीघ्र दें [।]

—सविनय नन्ददुलारे वाजपेयी

[पुनश्च]

आनन्दमोहन जी की इस साल की पढ़ाई समाप्त हो गई—परीक्षा वरीक्षा तो कुछ है नहीं [,] कल ही Allahabad जा रहे हैं उधर ही से होली तक घर पहुँचने का विचार कर रहे हैं। अब उनकी "यमुने" के लिये कुछ हड़बड़ी नहीं है, आप १०-१५ दिन बाद मेरे पते से भेज देंगे तो काम चल जाएगा।

द्विवेदीजी Law की तैयार में लगे हुए हैं। त्यागभूमि में सुमन जी ने उनके लिए प्रशंसा के दो शब्द कहे हैं। "साक़ी" शीर्षक एक कविता भी द्विवेदी जी की त्यागभूमि में छपने गई है।

अवधविहारी जी को तो इस समय परीक्षा का भूत सवार है। किसी से बोलते तक नहीं [,] और क्या कहा जाय।

इस बार की माधुरी में शायद मेरा लेख निकले। द्विवेदीजी (पं० महावीरप्रसाद जी) की 'लेखाञ्जली' की आलोचना भी इसी बार निकल जाने की संभावना है।

मतवाला के होलिकाङ्क के लिए आप क्या लिखेंगे ? मैं भी कुछ लिखूं ? समय तो नहीं है।

शेष प्रसन्नता है।

[पता 'मतवाला' का] नन्ददुलारे।

१५५. जयशंकर प्रसाद

प्रिय 'निराला' जी।

आप का जब पत्र आया था उस समय मैं स्वयं रोगी था [।] इधर महीनों से मेरा स्वास्थ ठीक नहीं। अब तो कुछ अच्छा है—आजकल आप क्या कर रहे हैं, और स्वास्थ कैसा है, सविस्तार लिखियेगा। और यह भी सुना है कि आप काशी आने वाले हैं। क्या यह ठीक है ?

भवदीय—
जयशङ्कर 'प्रसाद'
२१/३/२६

पुनश्च—
पीठ में जो फोड़ा हो गया था वह अब अच्छा है।

१५६. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन : काशी वि० वि०
२५-३-१९२९

प्रिय निराला जी,

आपका कृपा पत्र आया था, मैं परीक्षा में लगा हुआ था, इसी से उत्तर देने में विलम्ब हुआ, क्षमा कीजिए। कल परीक्षा खत्म हो गई, आज होली है।

परचे अच्छे नहीं हुए। वाहियात बेढंगे सवाल आए थे जिनमें साहित्यिक अभि-
रुचि का कहीं पता ही नहीं था। साहित्य के परीक्षक साहित्यिक होने चाहिएँ—
परिमार्जित साहित्यिक—पर यहाँ तो थे ऐसे ऐसे विकट महारथी [—] लज्जाशंकर
झा, ध्रुव साहब, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, विधुशेखर भट्टाचार्य (शान्तिनिकेतन वाले)
नको भगवान ने विद्वान तो बनाया है पर संस्कार में कसर रखदी है। मुकुल जी,
ामसुन्दरदास आदि के परचे अच्छे थे। रिजल्ट बीस पच्चीस अप्रेल तक निकल
ायगा, मुझे तो अच्छे Division की उम्मीद नहीं है—पर देखिए शायद क़िस्मत
ाथ दे दे।

अब फुर्सत है। मेरी एक बहन का गौना, और एक का विवाह चैत सुदी में है।
१५-२० दिन रह गए हैं। मुझे अभी तो घर जाना होगा, विवाह आदि के बाद कलकत्ते
आने का विचार करता हूं। इसी बीच में आनन्दमोहन जी का विवाह भी होने को है—
क्या आप न आएँगे।

आपका स्वास्थ्य तब तक क्या सुधरेगा जब तक आप अपने को Regulate नहीं
करेंगे। मैं जानता हूँ कि आपके लिए यह कार्य बड़ा कठिन है परन्तु खुदा के वास्ते अद्वैत-
वाद के व्यवहारात्मक रंग ढंग, अतृप्त वासनाओं की हानिकर अभिव्यक्ति थोड़े दिनों के
लिए दूर कर दीजिए, चिन्तन को विश्राम दीजिए और नियमों का बंधन स्वीकार
कीजिए। समझ लीजिए साल भर जेल में रहना है।

"सुधा" वाली आपकी कविता देखी। एक साहब कह रहे थे कि उसमें
Wordsworth के Ode to immortality की छाया है, इसी से देखने की ओर भी
इच्छा हो रही थी। क्या बेवकूफी है—आपकी यह कविता purely दार्शनिक है,
भारतीय दर्शनों के सिद्धान्तों पर अवलंबित—इसे Wordsworth की छाया बतलाते
हैं। मैंने तो उनका संतोष कर दिया है पर ऐसी ऐसी बातें कहने वालो पर हँसी अवश्य
आती है। एक जगह जहाँ निशा से निकल कर प्रकाश की ओर आने की उत्सुकता है—
"हा भोर" वाला बंद भावव्यंजना में थोड़ी सी कसर रख देता है [,] और तो सबंद
वही सुन्दर expression है जिसके लिए मुझे आपकी कविताएँ इतनी रुचती हैं। बुद्धि
की सब क्रियाएं सीमित, थक कर बीच ही में रह जाने वाली, अंतिम सत्य तक न पहुंचने
वाली—यही निशा है—इसी से प्रकाश की आकांक्षा है—"हा भोर" इसी आकांक्षा
का द्योतन करता है—तुलसीदास के

"वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुन भव पार न पावै कोई,
जिमि निशि मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहिं होई" में सिद्धान्त यही है—
यही भारतीय दर्शन है। इसे Wordsworth की लाख Odes to Immortali
बदल नहीं सकतीं—अभारतीय नहीं बना सकतीं। उन्हें क्या पता जो 'छायावाद'
हिन्दी रचनाओं को नकल समझते हैं—वर्ड्सवर्थ की, शेली की और टेगोर की।

तुलसीदास और टेगोर की तुलनात्मक समालोचना देख रहा हूं। पहला खंड
सुन्दर है, दूसरे खंड में उदाहरणों का आधिक्य है [।] उदाहरण कुछ कम हो
बड़ा अच्छा होता—तुलसीदास के उदाहरण कम हैं।

मैं होलिकाङ्क के लिए कुछ भी न लिख सका [,] अब कुछ लिखकर भेजने का विचार करता हूं [।] "छायावाद" के सम्बन्ध में ही लिखूं तो कैसा हो ?

"महारथी सम्पादक" मेरे मित्र श्री रामचन्द्र शर्मा आपकी कविता के लिए बहुत दिनों से मुझे लिख रहे हैं। एक कविता मार्च की संख्या के लिए अवश्य लिख दीजिए। उनके मोटो—वीर रस—के अनुकूल हो तो और अच्छा।

[पत्र संभवतः इतना ही लिखा गया था किन्तु अंत में हस्ताक्षर नहीं हैं। तुलसीदास और रवीन्द्रनाथ से संबंधित लेख 'मतवाला' में प्रकाशित हुए थे ।पता 'मतवाला' का]

१५७. मातादीन शुक्ल

House No. 73 — Husainganj
M. D. SHUKLA — Lucknow
Jaurnalist — Dated 29. 3. 29

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। आशा है, प्रसन्न हो। मैं फरवरी के महीने में २-३ हफ्ते के लिये किशनपुर गया था। उसके बाद से यहाँ आकर प्रायः सब लोग बीमार रहे। अभी होली के २ दिन पहले लक्ष्मी को पथ मिला है। अब तो जान पड़ता है, सब ठीक हैं। तुम अपना हाल चाल ज़रा विशद रूप से लिखना। क्या होता है—कहाँ हो और कैसे कटती है। यह सब जानना चाहता हूँ।

माधुरी के लिये इधर कुछ लिखा नहीं। चित्त तो ठिकाने है न। बाबू भगवती चरण वर्मा कलकत्ते गए थे। तुम से मिले होंगे। लिखना। पं० देवदत्त मिश्र और पं० रामशंकर त्रिपाठी के भी हाल लिखना। पत्र आने पर फिर यहाँ के साहित्य मंडल के अंतरंग हालचाल लिखूँगा।

वही—मातादीन शुक्ल

[पता 'मतवाला' का]

१५८. नंददुलारे वाजपेयी

मगरायर (उन्नाव)
७-४-१९२९ ई०

प्रिय निराला जी,

आपका एक पत्र उस समय आया था जब मेरी परीक्षा हो रही थी। मैंने काशी से ही एक पत्र लिखा था पर तब से आपका कोई समाचार नहीं मिला। चिन्ता रहती है। मैं अष्टमी के दिन यहाँ आ गया था, गाँव का मेला था। नाच-वाच का भी प्रबन्ध था। बाबू रामरतन जी की ओर से विरोध था, कुछ नवयुवक उनके दल में सम्मिलित भी थे, पर नाच तो हुआ ही। आनन्द मोहन जी भी एन मौके पर मौजूद थे।

यहाँ पर मुझे २०-२५ दिन का अटकाव है [।] आप इस बीच में यहाँ आएँगे ? आइये तो अच्छा हो। कई काम हैं [।] "हिन्दी कविता में छायावाद" शीर्षक एक

लेख लिखने का विचार है—आप से कई वातों की सलाह लेनी है। आनन्दमोहन जी का विवाह भी है। मुझे थोड़ी सी वंगला भी पढ़ लेनी है। इसके अतिरिक्त द्विवेदी जी तथा मिश्र वन्धुओं से Introduction भी हो जाता, यही उपयुक्त अवसर था। आइये तो लिखिए मैं कानपुर में जहाँ कहिए मिलूं। आपके स्वास्थ्य का क्या हाल है? संभवतः स्थान परिवर्तन से कुछ लाभ हो।

मेरा परीक्षा फल अब निकलने ही वाला है। देखिये क्या होता है? वावू श्यामसुन्दर दास दो साल Research Work करने को कहते हैं—सौ रुपये महीने Scholarship देंगे, मुझे तो विशेष जँचता नहीं है, पर इन दो वर्षों में स्वास्थ्य सुधार का अच्छा मौका मिल सकता है, D. Litt. की तो अधिक आशा नहीं है।

—लाइब्रेरी को पुनरुज्जीवित करने का विचार है। अभी तो कोई विशेष उत्साह नहीं दिखाई देता। शेष प्रसन्नता है। पत्र दें।

—सविनय नन्ददुलारे

मगरायर (उनाव)
२१-४-१९२९ ई०

५९. नंददुलारे वाजपेयी

प्रिय निराला जी,

आपके दोनो पत्र मिले। मैं "माधुरी" का विशेषाङ्क लेने आप के यहाँ गया हुआ था, वहाँ तो आपके वहुत शीघ्र आने की सूचना मिली थी, पर इस पत्र से मालूम हुआ कि आप अभी न आएँगे। आपका स्वास्थ्य अब सुधर गया है, और अब उपन्यास लिखने का विचार हुआ है—वड़ी प्रसन्नता की वात है। मेरे काम पीछे भी होते रहेंगे, अभी कोई हड़वड़ी नहीं है, अभी तो परीक्षाफल भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मुझे कोई विशेष उद्विग्नता नहीं है।

दो Certificates—साधारण सम्मतियाँ लेनी हैं, एक द्विवेदीजी से और एक मिश्रवन्धुओं से। आज एक पत्र द्विवेदी जी को लिखा है—पहले ही पत्र में स्वार्थ की भरमार—प्रायः दस पंक्तियों का, देखिए उत्तर में क्या लिखते हैं। मिश्रवन्धुओं को अभी नहीं लिखा, कृष्णविहारी जी से सहायता लेनी होगी, अथवा आपके आने तक ठहरना होगा क्योंकि उनसे मिलकर वातचीत करने से ही काम वनेगा।—और किस के यहाँ जाऊँ। अपने प्रोफेसरों की तो वड़ी वड़ी प्रशंसात्मक सम्मतियाँ मिल गईं हैं, मालवीय जी से मिल जाने की संभावना है। यदि Research Work ही करना निश्चित हुआ तब तो यह दौड़-धूप भी फिजूल ही होगी।

कलकत्ते की प्रोफेसरी मेरे विकास के लिए विशेष उपयोगिनी नहीं होगी। एक तो स्वास्थ्य की अनुकूलता होनी कठिन है और दूसरे हिन्दी-साहित्य का क्षेत्र वहाँ विशेष विस्तृत नहीं दिखाई देता। वंगालियों के बीच उनकी गवड़चौथ में पड़कर मैं कुछ भी न कर सकूंगा। मुझे तो काशी, प्रयाग, लखनऊ या कानपुर चाहिए [,] आखिरी दर्जे

में कलकत्ता है। दूसरी बात यह भी तो है कि वे अपनी यूनीवर्सिटी वालों को Preference देंगे। क्या सकलनारायण शर्मा आदि के प्रभाव से कुछ कार्य हो सकता है ?—आपसे उनका परिचय है ?

मैं अभी कलकत्ते कहाँ जा रहा हूं। अभी १०-१२ दिन का अटकाव तो यहीं है, इसके बाद एक बार बनारस और गोरखपुर जाना है। गोरखपुर से द्विवेदी जी ने बुलाया है, स्वदेश के "साहित्याङ्क" के सम्पादन के लिए। यह अङ्क वृहत् और हिन्दी-साहित्य में महत्त्वपूर्ण होगा। कोई दो ढाई सौ, या इससे भी अधिक पृष्ठ होंगे—ठोस और स्थायी लेखों के। द्विवेदी जी भरपूर खर्च करने को भी कहते हैं। "हिन्दी कविता में छायावाद" मैं इसी अङ्क के लिए लिखने का विचार करता हूँ।

छायावाद के सम्वन्ध में आपने जो कुछ लिखा और कहा है उसका सारांश मेरी समझ में इतना ही आया है कि आपके विचार में जो सत्य है वही कविता है, वही छायावाद या रहस्यवाद है। रहस्य वास्तव में रहस्य नहीं है, पहुँचे हुए के लिए वह साधारण सत्य है। इसी रहस्य के न समझने के कारण—सत्य की तात्त्विक व्याख्या न करने के कारण कहीं-कहीं Tagore भी भ्रामक बतलाए गए हैं और इसी कारण जोशी-वन्धु और गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि सच्ची अनुभूति के अभाव में विपथगामी हो गए हैं।

मुझे इन प्रश्नों का उत्तर लिख भेजिए :—

(१) जब साधारण सत्य ही कविता है तब कविता के सत्य और असत्य के आधार पर दो ही विभाग हो सकेंगे—उसके अन्य सूक्ष्म विभेद कैसे होंगे ?—अर्धसत्य, चतुष्पद सत्य, अष्टांश सत्य आदि ? यह बात कुछ जँचती नहीं है क्योंकि ऐसा करने से कविता Mathematics से कुछ मिलती जुलती-सी हो जायगी।

(२) अंग्रेजी में Romanticism, Classicism, Idealism, Realism, Symbolism, आदि न जाने कितने भेद कविता के हैं पर आपके Division के अनुसार तो Wordsworth और Shelly [Shelley]; Shakespeare और Keats [,] Milton और Tennyson आदि एक ही श्रेणी में रहेंगे—उन स्थलों में जहाँ वे सत्य का अभिव्यंजन करते हैं। आजकल समालोचकों का झुकाव Clearcut Classification की ओर है, किन्तु आपकी व्याख्या में उसकी गुंजाइश मुझे कम मालूम पड़ती है।

(३) "नैया बिच नदिया डूबी जाय"—में कबीर ने एक महान सत्य कह डाला है। यह सत्य क्या वही नहीं है जिसकी व्यंजना कबीर के पूर्व—बहुत पूर्व हो चुकी थी ? कबीर की मौलिकता क्या है ?—एक प्रश्न और है [,] इसमें काव्य की रसात्मकता कहाँ है ? "प्रसाद' का कितना अभाव है ? पहेली ही तो है ? क्या यही बात कवित्त्वपूर्ण ढंग से सब के समझने के लिए नहीं कहीं जा सकती ?

(४) साधारण सत्य तो दर्शन है [,] मेरे विचार में कविता नहीं। आप क्या दोनों की अभिन्नता स्वीकार करते हैं ? अंग्रेजी कवियों में Browning सबसे बड़ा

दार्शनिक था, पर वह सबसे बड़ा कवि नहीं माना जाता—क्यों ? मेरे विचार में इसलिए कि उसने 'सत्य' को काव्योपयोगी नहीं बनाया, उसमें कवित्व कम था।

(५) रहस्य वास्तव में रहस्य नहीं है [,] पहुंचे हुए के लिए वह साधारण सत्य है। यहाँ आपने रहस्य को सापेक्षिक माना है। पर सत्य तो Absolute है, वह सापेक्षिक नहीं है।—और रहस्य के प्रत्यक्षीकरण में भी तो भेद है।—गीता के "अणोरणीयान् महतो महीयान्" में जो रहस्य है वही रहस्य "नैया बिच नदिया डूबी जाय" में भी है पर एक में कहने का ढंग साफ और दूसरे में पहेलीनुमा है। मेरे विचार में पहला ढंग अधिक काव्योपयोगी है।

(६) मैं यह मानता हूं कि अनुभूतिविहीन बातें कहना घपलेबाजी है। साधना-विहीन ज्ञान ढकोसला है। इस दृष्टि से हिन्दी के छायावादियों में बतलाइये कौन सबसे बड़ा साधक है ?—क्या आप या पंत या प्रसाद ? विवाह न करना और दो घंटों तक बालों को Trim करके फोटो खिंचाना परस्पर विरोधी बातें हैं। साधना विचारी बीच ही में लटक गई है। विरक्ति तो विरक्ति ही है, उसमें एकांगिता नहीं हो सकती। साधक इंडियन प्रेस की नौकरी के लिए लालायित नहीं रहता और न सुंघनी की दुकान में बैठता है। यदि दूसरे पक्ष में देखिए तो विवाह कोई ऐसा प्रतिबंध नहीं है जो नर्क ही को ले जाए। साधना की कल्पना उसकी उपस्थिति में भी की जा सकती है, महात्मा गांधी उस क्षेत्र में कुछ दूर तक पहुंचते हैं—आप इसे मानते है या नहीं ?

(७) जोशी बंधु या गंगाप्रसाद कोरे पुस्तक-कीट हैं। पर तत्त्वज्ञानी और साधक भी तो कम ही हैं। अब हिन्दी में मध्यकालीन भक्त कवियों की-सी सच्ची अनुभूति का साहित्य कहाँ सृजित होता है ? ऐसी अवस्था में केवल परिमाण का [,] Degree का भेद रह जाता है जिसकी खोज करना बड़ा कठिन है। और थोड़ी-थोड़ी अनुभूति उपाध्याय जी, मैथिलीशरण जी आदि में भी स्वीकार करनी ही पड़ेगी। आपकी क्या सम्मति है ?

आम यहाँ अच्छे फले हैं। आपकी बाग भी अच्छी आई है। मेरी इच्छा तो यहीं रहकर आमों की फसल का उपयोग करने की है, परन्तु क्या होगा यह निश्चित नहीं है।

पं० रघुनन्दन शर्मा परसों यहाँ (मेरे यहाँ) आने वाले हैं। तीन चार दिन रहेंगे। आनन्दमोहन जी आज दो-तीन दिनों से कानपुर में हैं, विवाह उनका जेठ में है। शायद विवाह बेकरार का तय हुआ है।

यहाँ लाइब्रेरी का काम ज्यों त्यों चलता है। शर्मा जी से एक आध दिन व्याख्यान दिलाने का विचार करता हूं। कुछ चन्दा भी एकत्र करना होगा। पत्र पत्रिकाओं का कार्य पूरा हो रहा है। आपने वीणा, सरोज, त्यागभूमि, मनोरमा आदि का जो प्रबंध किया था, वह सब चार छः महीने से बंद है। पुस्तकें भी थोड़ी ही हैं—उतनी नहीं कि Library को वाचनालय के अतिरिक्त और कुछ कहा जाय। आप पत्रिकाओं को लिख दें तो अच्छा हो। पढ़ने की ओर लोगों का उत्साह तो धीरे ही धीरे होगा।

मतवाला, प्रताप आदि पत्र आते हैं और लोग उन्हें पढ़ते भी हैं। साधारण लोगों की प्रवृत्ति साप्ताहिकों की ओर अधिक है। कुछ उपन्यास भी पढ़े जा सकते हैं।

शेष प्रसन्नता है।

सविनय नन्ददुलारे

[वेकरार—दहेजसंबन्धी करार के विना।]

१६०. मातादीन शुक्ल

'माधुरी'—कार्यालय
लखनऊ २५/४/१९२९

प्रिय निराला जी,

माधुरी के लिये कोई कविता—छोटी या बड़ी—भेज दो। गोविंददास पदावली के सभी छंद छप चुके। दो चार छंद इस के भी, नई कविता के साथ भेजना। शेष फिर।

तुम्हारा
मातादीन शुक्ल

[पता 'मतवाला' का]

१६१. रूपनारायण पाण्डेय

रानीकटरा, लखनऊ
२९-४-२९

प्रिय निराला जी,

नमोनमः। मैं सकुशल घर पहुंच गया। घर में तवियत कुछ खराव हो जाने के कारण मैं वहुत शीघ्र घर लौट आया। इसी कारण आपसे फिर भेंट न कर सका। आशा है, आप इस अपराध को क्षमा करेंगे। आपने जो प्रस्ताव किया था, उसके सम्वन्ध में अभी तो मैं क्षमा चाहता हूँ। एक कारण यह भी है कि उतने वेतन में वहाँ कार्य करना असंभव है। यहाँ नवल किशोर प्रेस में ठीक हो गया है। इसके अतिरिक्त और जो कुछ सेवा मैं आपकी और आपकी मित्रमण्डली की कर सकता हूँ, उससे मुझे कभी इनकार नहीं। मैं सकुशल हूँ, आप की कुशल चाहता हूँ।

भवदीय
रूपनारायण पाण्डेय

[पता 'मतवाला' का]

१६२. नंददुलारे वाजपेयी

मगरायर (उनाव)
३-५-१९२९

प्रिय निराला जी,

आपके पत्र का उत्तर कुछ विलंव से दे रहा हूँ। पहले तो परीक्षा-फल की प्रतीक्षा में था और फिर उस पर गम मनाने में। Second Division में पास हुआ हूँ। परचे खराव हो गए थे, पर मुझे इसकी आशा न थी। खैर।

अब मैं २-४ दिनों में एक बार काशी जाने का विचार करता हूँ। वहाँ से एक चक्कर गोरखपुर तक लगा कर; लखनऊ होते हुए घर लौटूँगा। यात्रा में १५-२० दिनों से कम क्या लगेंगे। आप यदि घर आएँ तो मुझे लिखिएगा, शायद मैं काशी से घर तक आपका साथ दे सकूँ। काशी में आप उतरेंगे तो अवश्य ही; —बस वहीं से साथ होगा। जयशंकर जी के पते से पत्र दीजिएगा। इस महीने की "सुधा" आपने देखी है? जरा सम्पादकीय टिप्पणियाँ देखिए। नन्दकिशोर साहब ने धर्मपत्नी जी के परिहास का कैसा बदला लिया है? उस भले आदमी को यह भी नहीं मालूम कि "परा और अपरा" बंगालियों की ईजाद की हुई वस्तु नहीं है—वह प्रत्येक भारतवासी को पूर्व-परम्परा से सुलभ है। जैसे कोई विक्षिप्त बके।

आपका एक गीत मैंने महारथी को भेज दिया है और भविष्य में ऐसी बेशर्मी न करने की ताकीद कर दी है—दूसरा गीत "मतवाला["] में निकला है। तीनों ही सुन्दर और अत्यन्त सरस गीत हैं। बधाई।

आपका "नन्ददुलारे"

[पता 'मतवाला' का]

१६३. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. बा० राधाकृष्ण दास
बी०ए०
कोठी-भदैनी
बनारस सिटी
६/५/२६

प्रणाम—

बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला। आपका आनद चाहिए। मैंने एक पत्र पहिले भी आपको लिखा था, उत्तर नही मिला।

मेरा एक लेख आधुनिक हिन्दी-कविता पर विशाल भारत में छप रहा है, चतुर्वेदी जी उसमें कवियों के चित्र भी दिया चाहते हैं। आप कृपा करके अपना एक ताजा फोटो उनके पास मेरी ओर से भेज दें! अथवा 'सुधा'—आफ़िस से अपना ब्लाक ही भिजवा दें। बहुत जरूरी है। भूलिये नहीं। जल्दी।

आपका पत्र चाहिए पूरे समाचार के साथ। सेठ जी को जयशिव!

विनीत—शांतिप्रिय

१६४. नंददुलारे वाजपेयी

काशी
१५-५-१९२९

प्रिय निराला जी,

मैं आज दो दिन से "प्रसाद जी" के यहाँ आया हुआ हूँ, और आज गोरखपुर जाने के विचार में हूँ। विनोद जी कहते थे कि आप शीघ्र ही घर जाने वाले हैं। क्या सच है?

यदि आप आएं तो मुझे सूचना अवश्य दें, गोरखपुर से लौट कर साथ ही घर चलूंगा। विशाल भारत के लिए समालोचना लिखने का आयोजन कर रहा हूँ। "सुधा," सुनते हैं बंद हो रही है. आपने भी कुछ सुना है? आपका उपन्यास कहाँ तक पहुँचा? कविता-संग्रह में फिर विक्षेप हो रहा है!

सविनय—नन्ददुलारे

उत्तर—स्वदेश प्रेस, गोरख पुर के पते से दें।

['मतवाला' के पते पर भेजा गया, गाँव के पते पर लौटाया गया।]

१६५. शान्तिप्रिय द्विवेदी

C/. पं० विनोदशंकर व्यास,
व्यास-भवन,
मानमंदिर, बनारस
सिटी
६—६—२६

प्रणाम—

बहुत दिनों से आपका कुशल समाचार नहीं मिला। आशा है, आप सानंद हैं। यहाँ कोई नई बात नहीं। हाँ, भाई व्यास जी कुछ घरेलू झंझटों में हैं, उनकी पत्नी और एक बच्चा अस्वस्थ हैं।

नीरव, राज्यश्री, करुणालय की दो-दो प्रतियाँ जा रही हैं, एक-एक प्रति अपने पास रखकर, बाकी नंददुलारे जी को दे दीजियेगा। 'नीरव' पर आपकी सम्मति वाञ्छनीय है, और नंददुलारे जी की समालोचना भी। शेष, आपका कुशल पत्र चाहिए।

सेवक—शांतिप्रिय

१६६. रामनाथलाल 'सुमन'

"त्यागभूमि"

सस्ता-साहित्य-मण्डल,
अजमेर
ता० १०/६/१९२९

प्रियवर,

यह सूचित करते हुए बड़ा दुःख होता है कि आपने 'प्रभाती' नामक जो कविता यहाँ भेजी थी, उसे ही महारथी में भी भेज दी थी। वह 'महारथी' के इस अंक में प्रकाशित हुई है। आपके पास स्वीकृति भेजी जा चुकी थी। 'त्या०भूमि' को इसके कारण हानि उठानी पड़ी है।
आपसे ऐसी आशा न थी।

[अस्पष्ट चिन्ह]
'सुमन'

[कार्ड 'मतवाला' से गढ़ाकोला लौटाया गया।]

१६७. शान्तिप्रिय द्विवेदी श्रीः

पता—वही
श्री काशी
१०—७—२६

पूज्य चरणों में प्रणाम—

आपका कार्ड मिला, बहुत दिनों बाद एक पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आपका समाचार जानने के लिए उत्सुक था, इस पत्र से संतोष हुआ।

अब आप क्या कर रहे हैं? या, क्या करने का विचार कर रहे हैं? मैं सानंद हूँ, बाबा विश्वनाथ की कृपा से जीवन-नौका निर्विघ्न चल रही है। राय साहब के यहाँ काम करता हूँ, आजीविका की चिन्ता से साधारणतः मुक्त हूँ।

जून-भर की मुझे छुट्टी थी, यदि उस समय आपका कार्ड मिला होता तो मैं चरणों में अवश्य उपस्थित होता। आजकल तो मरने की भी फुरसत नहीं। आशीर्वाद दीजिए कि जीवन किसी तरह यों ही बीत जाय।

मैंने अपनी कविताओं का संग्रह 'नीरव' नाम से निकलवाया है। आपकी सेवा में उसकी कापी भेजे बहुत दिन हो गए, मिली या नहीं? आपकी सम्मति सापेक्ष्य है। देखूं आप कब तक दर्शन देते हैं।

सेवक—शांतिप्रिय

१६८. सुमित्रानन्दन पन्त

C/o Dr. N. C. Joshi
C. M. O.
Bharatpur State
13th. July 1929

प्रियवर निराला जी,

आपका पत्र घूमफिर कर मिला, मैं अभी अस्वस्थ ही हूं इसीलिए इलाज कराने भरतपुर चला आया हूं। श्री मतवाला सम्पादक जी के विषय में जो आपने लिखा वह सर्वथा स्पृहणीय है पर मैं तो अस्वस्थ हूं। डाक्टर साहब ने कम से कम एक साल तक कुछ न करने को कह दिया है [,] उसके बाद अगर जिन्दा रहा तो मतवाला सम्पादक जी को अवश्य मौलिक रचनायें लिख कर दे सकता हूं। आप उन्हें इस सम्बन्ध में जो कुछ ठीक समझें लिख दीजिये।

उमर खय्याम जब प्रयाग जाऊ तब आप की सेवा में भेज सकू। मुझे स्वयं ही वह अधिक पसन्द नहीं है। आज कल कुछ नहीं करता [,] चुपचाप लेटा रहता हूं [,] हाथ पांव हिलाना भी मना है [।] आशा है आप सानन्द हैं। पत्रोत्तर शीघ्र दीजियेगा [।]

आपका
सुमित्रानंदन पंत

[पता]

Suryakanta Tripathi
Esqr.
Village Garhakola
P.O. Magrair
गढ़ाकोला (Unao)
मगरायर

[पत्र गढ़ाकोला से गंगा पुस्तक माला, कार्यालय, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ के पते पर भेजा गया।]

१६९. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी. वि. वि.
[१४(?) जुलाई, १९२९]

प्रिय निराला जी,

आप लखनऊ में बहुत दिन रहे। मैंने कई दिनों तक प्रतीक्षा की, और अन्त में मंगल के दिन सन्ध्या की गाड़ी से इधर चला आया। शायद आप छतरपुर चले गये अथवा लखनऊ में ही किसी काम से रुक गये, क्या Selection की भूमिका लिखते होंगे?

यहाँ से बाबू श्यामसुन्दर दास या उपाध्याय जी के साथ आज ही Allahabad जाने के विचार में हूँ। घर पर द्विवेदी जी की चिट्ठी आ चुकी थी, उन्होंने अपनी सिफारिश इंडियन प्रेस के मैनेजर को लिख दी है। यहाँ से जाकर देखिए क्या होता है। आपने शिवशेखर जी के लिए क्या किया? प्रयाग आने का विचार कब तक का है?

शिवशेखर जी का लोटा छाता मेरे यहाँ से गायब हो गया है, क्या करूँ मुझे कभी कभी बड़ी आत्मग्लानि होती है। चित्रकूट कब तक चला जाय। अब तो ऋतु अनुकूल आ गई है [,] क्या आपने शुक्ल जी से (पं. त्रिभुवननाथ जी) इस संबंध में बातचीत की?

शेष फिर—

सविनय—नन्ददुलारे

[त्रिभुवननाथ शुक्ल—निराला के मित्र; कुछ दिन तक ५८, नारियलवाली गली, लखनऊ में साथ रहे थे। गांव के पते पर भेजा गया कार्ड गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ के पते पर लौटाया गया।]

१७०. नंददुलारे वाजपेयी

Aryabhawan. P.O. Lanka
B. H. University
19.7.29

प्रिय निराला जी,

आप का जवाब अब तक नहीं आया। मैं प्रयाग गया था, वहाँ मैनेजर साहब

ने फर्माया द्विवेदी जी ने लिखा तो है सही और बाबू श्याम सुन्दर दास की Recommen-
dation भी मेरे लिए अनुल्लंघनीय है पर सरस्वती की स्थिति अभी ४-६ महीने ऐसी
नहीं है कि आप जैसा आदमी रख सके। कहने लगे सरस्वती की ग्राहक संख्या बहुत
कम है और वह यों ही घाटे में चल रही है। उनकी समझ में घाटे का कारण यह है कि
सरस्वती में अत्यंत उच्चकोटि के लेख छपते हैं और साधारण लोग इसी कारण उसके
ग्राहक नहीं बनते। मैंने कहा आप के पिता जी इसे "प्रवासी" की टक्कर की पत्रिका
बनाना चाहते थे और आप अब तिजारत करने के विचार में हैं—यह हिन्दी के दिनों
का फेर है। मैंने समझाया कि उच्च कोटि के लेखों के कारण पत्रिका की ग्राहक संख्या
कम हो गई है—यह बात किसी भले मानुस के सामने कहने की नहीं है। साधारण
लोग ग्राहक बनकर पत्रिकाएँ नहीं पढ़ते, बड़े लोग ही साहित्य से अनुराग रखते और
पत्रिकाओं के ग्राहक बनते हैं। Standard गिराने से पत्रिका के ग्राहक बढ़ेंगे—"अंधहु
बधिर न कहहिं अस"। मैं चला आया [।] यहाँ Research-Scholar हो गया हूँ।
अभी Fifty पर। पं० देवीदत्त जी आप की याद करते थे। पंत जी से मिलने की इच्छा
थी पर नहीं मिला। आनन्दमोहन यहाँ आज आए हैं [।] [कार्ड में हस्ताक्षर के लिए
स्थान नहीं रहा। गाँव के पते पर भेजा गया, गंगा पुस्तकमाला के पते पर लौटाया
गया।]

१७१. सियारामशरण गुप्त श्री- चिरगांव (झांसी)
आ० कृ० १—८६

प्रिय निराला जी,

प्रणाम। आशा है, आप सानन्द हैं। मैं भादों क्वांर की प्रतीक्षा में हूँ, जब आपने मुझे दर्शन देने की प्रतिज्ञा की है।

आप की सेवा में पुस्तकें भेज रहा हूँ। कृपा कर स्वीकार कीजिए। और जिस पुस्तक की आवश्यकता हो कृपा कर अवश्य आज्ञा कीजिए।

झंकार का एक पैकट भट्ट जी के लिए है। उसे आप प्रेस के आदमी के हाथ अवश्य भिजवा देने की कृपा कीजिए। अन्यथा वह उन तक न पहुँच सकेगी।

आशा है, आप सानन्द हैं। विशेष विनय। दया रखिए।

आपका अपना
सियारामशरण गुप्त

आपकी पुस्तकों के साथ ही एक पैकट सुधा में समालोचनार्थ पुस्तकों के लिए है। वह उन्हें दे दीजिए। पहले की भेजी हुई गुरुकुल, गीतारहस्य, चित्राङ्गदा, हेमला सत्ता और विकट भट की समालोचना उन्होंने नहीं की है, यह भी कह दीजिए।

[भट्ट जी—बदरीनाथ भट्ट]

१७२. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी. वि. वि.
२७-७-१६२६

प्रिय निराला जी,

मेरे दो-तीन पत्र आपके घर के पते पर पहुँचे होंगे, पर शायद आप बहुत दिनों से लखनऊ में ही हैं। शिवशेखर जी की एक चिट्ठी आनन्दमोहन जी के यहाँ आई थी पर उसमें आपके संबंध की कोई बात नहीं देखी। शर्मा जी से सुना था कि कविताओं की भूमिका लिखने के लिए आप लखनऊ में ठहरे हुए हैं। तो अब कब तक घर जाएँगे ?

सरस्वती-सम्पादन के संबंध में जैसी कुछ बातचीत हुई, मैंने दूसरे पत्र में लिखा है, घर जाकर देखिएगा। मैनेजर महोदय सरस्वती का व्यापार करना चाहते हैं, फिर भला कैसे काम चले—शायद द्विवेदी जी यह बात नहीं जानते थे। उनका एक पत्र मुझे यहाँ पर परसों मिला था, उसी से ऐसा अनुमान करता हूँ। आजकल यहाँ रिसर्च का काम करता हूँ। विषय है "Theme of Love in Hindi Poetry" [।] मुझे कुछ और Suggestions की भी आवश्यकता है, आप कुछ अन्य अनुसन्धानोपयोगी विषयों की सूची शीघ्र भेजिए। मैंने मिश्र जी को भी लिखा था, उन्हें भी स्मरण दिला दीजिए। यज्ञदत्त जी से आपकी भेंट हुई थी, उनका पत्र आया था। शेष प्रसन्नता है। चित्रकूट कब चलेंगे ? यहाँ आइए तो Tanda falls भी चलें। पंत जी का उमर खैयाम का अनुवाद आया हो तो अवश्य भेजें।

"Theme of Love" की एक Out-line अभी बना रहा हूँ। आपसे सलाह लेनी है। क्या करूँ ?

द्विवेदी जी, आनन्दमोहन जी सब प्रसन्न हैं। अवध विहारी जी भी आने ही वाले हैं।

[कृष्णविहारी मिश्र के द्वारा "माधुरी", लखनऊ का पता]

१७३. सुमित्रानन्दन पन्त
C/o The Medical Officer
Bharatpur State
30 July [१६२६]

प्रियवर निराला जी,

आपका प्रिय कार्ड कल मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई। क्या किया जाय [,] स्वास्थ्य का भला बुरा होना तो मुझ जैसे मनुष्यों के हाथ नहीं : हृदय-रोग तो मुझे नहीं है। हाँ, उससे भी बुरा Lungs दोनों affected हैं। मुझे स्वयं ही दुःख है कि मुझे T. B. जैसी भयनक बीमारी का सामना करना पड़ा. शायद इसी तरह rest लेने से २/१ साल में कुछ ठीक हो जाय.

आजकल मैं पहिले से कुछ अच्छा हूँ। Temperature normal है. 4° अधिक शाम को रहता है। मुझे Complete rest लेने की इजाजत है. पत्र भी नहीं लिखना

चाहिए। आप यहाँ कब आइएगा ? मुझे बेहद उत्कण्ठा है। अवश्य आइए। पत्रोत्तर शीघ्र दीजिए—

आशा है आप सानन्द हैं।

सस्नेह—
आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

[पता]
Suryakanta Tripathi Esqr.
Village Garhakola,
P.O. Magrair
(Unao)

[दूसरे पैरा में 'इजाजत' साफ़ पढ़ा नहीं गया।]

१७४. नंददुलारे वाजपेयी

Hindu University
Benares, Ist. August 1929

प्रिय निराला जी,

आपका चिर इप्सित पत्र आज मिला। शान्तिप्रिय जी से बहुत दिनों से नहीं मिला इससे आपका दूसरा पत्र न मिल सका [।] उन्होंने भी यहाँ तक आने का कष्ट नहीं किया—अब कल जाकर देखूंगा। मैंने जो विषय खोज के लिए चुना है, उसके बारे में सोच रहा हूँ। पहले Love की Philosophy की कुछ पुस्तकें पढ़नी पड़ेगीं [,] फिर हिन्दी कविता की छानवीन करनी पड़ेगी। Christian Philosophy में God is Love या Love is God का सामंजस्य सूफियों के "इश्के बुतां" से हो जाता है और वैष्णव साहित्य में "प्रेम एव परोधर्मः" ढाई अच्छर प्रेम का etc. भी उसी तत्त्व तक पहुँचते हैं पर पता नहीं उपनिषदों के शुद्ध ज्ञान (ब्रह्मविद्या) में जो निवृत्तिमूलक है "प्रेम" को कुछ स्थान है या नहीं, शायद नहीं है। जो कुछ हो इस सम्बंध में अनुसंधान कर एक अध्याय तो इसके समन्वय में खर्च करूंगा। इसके उपरांत हिन्दी के वीरगाथा-काल के Love and War के Ideal पर, जायसी के रहस्यात्मक प्रेम पर, भक्तों के प्रेम पर, स्वकीया-परकीया के प्रेम पर [,] वात्सल्य प्रेम पर लिखने का काफी मसाला है। प्रेम का आदर्श किसी विशेष काल में क्यों उस प्रकार का रहा—इस सम्बंध में अनुसंधान करने की गुंजायश है। इसी तरह की एक Outline आप सोचकर लिख देंगे तो मेरे लिए उपयोगी होगा।

द्विवेदी जी का एक पत्र आया था, वे छंद : शास्त्र तथा काव्यानुशासन (कविता के कानून) पर खोज करने की सलाह देते हैं। मुझसे अब शायद कुछ प्रसन्न हैं—इस पत्र में आशीर्वचन लिखा है पहले नमोनमः लिखते थे।

आपकी पुस्तक के इतने शीघ्र निकल जाने की बड़ी प्रसन्नता है। तो क्या भूमिका-समेत ४-६ दिन में निकल जाएगी ? कितनी बड़ी भूमिका है—आपको पूरा संतोष है ? मैं घोर प्रतीक्षा में रहूँगा।

चित्रकूट चलने के प्रोग्राम में यदि मेरी ओर से कुछ आक्षेप है तो इतना ही कि मुझे 1st year और 2nd year को प्रतिदिन एक घंट पढ़ाना पड़ता है। बाबू श्यामसुन्दरदास ने Experienced बनाने के लिये यह काम मुझे सौंपा है। इससे इतनी बाधा अवश्य पड़ गई है कि या तो छुट्टी लेकर चलूं, या छुट्टी के दिनों में चलूं। जन्माष्टमी की छुट्‌टी कई दिनों की होगी, उसमें चलें तो कैसा हो ? इधर आनंदमोहन जी कहते हैं दशहरे में ससुराल की सैर करने को, और रास्ते में चित्रकूट बतलाते हैं, कहते हैं उसी समय तुम लोग भी चलो। उनका तो 'एक पंथ दो काज' सधता है और हम लोग कोरे "चित्रकूट के घाट में भई संतन की भीर" को चरितार्थ करेंगे—कुछ जंचता नहीं, उधर ऋतु भी दूसरी आ जायगी।

"माधुरी" के विशेषाङ्क के लिये मिश्र जी ने एक लेख लिखने को कहा है, मैं छायावाद के विकास पर लिखने का विचार कर रहा हूं, यदि दो-चार दिन में लिख सका तो आप भी देख लीजिएगा। मैं इस लेख में किसी Controversy के खड़ा करने का विचार नहीं रखता।

शेष प्रसन्नता है। "सुधा" की ज्येष्ठ वाली संख्या परसों प्रसाद जी के यहाँ देखी थी। उसकी अब कैसी स्थिति है। शिवशेखर जी कहाँ है ? उनके संबंध में यज्ञदत्त जी ने १५ जुलाई के "भारत" में क्या लिखा है ? मुझे भी देखना है।

सविनय नन्ददुलारे।

आनन्दमोहन जी, द्विवेदी जी, आदि प्रसन्न हैं—अवधविहारी जी अभी लौटे नहीं हैं।

घरेलू मामले आपके अधिक विकट हैं, पर मुझे भी उनका कटु अनुभव इस बार हुआ है। आप मेरी बहुत सी बातें जानते हैं—विस्तार से फिर कभी लिखूंगा।

—नन्ददुलारे।

[कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा "माधुरी" का पता]

१७५. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
१२-८-१९२९

प्रिय निराला जी,

परसों एक पत्र माधुरी के पते से लिख चुका हूँ, उसे देखिएगा। आज एक विशेष अभिप्राय से लिख रहा हूँ—"परिमल" के संबंध में एक दिन उपाध्याय जी से बातचीत हो रही थी, उन्होंने कहा कि यदि यह पुस्तक Hindustani Academy में भेजी जाय तो उसके लिए पुरस्कार-प्राप्ति की संभावना है। उनका Vote तो "परिमल" के लिए होता—ऐसा वे कहते थे। संभव है इसमें व्यंग्य अंतर्निहित हो पर

उस समय की वातचीत से ऐसी आशंका मुझे नहीं हुई थी। अव तक की आई हुई पुस्तकों में संभवतः वे वियोगी जी के "एकतारा, निर्माल्य" आदि को पसंद करते हैं, यद्यपि "पल्लव" आदि पुस्तकें भी वहाँ पहुंच चुकी हैं। इस वार मैथिलीशरण जी से लेकर शान्तिप्रिय जी की "नीरव" तक अनेक पुस्तकें आई हैं, इसलिए प्रतियोगिता है वड़े मार्के की। त्रुटि इतनी ही है कि निर्णायकों की भी पुस्तकें आई हुई हैं और उनके रहते औरों को मिलने में कुछ कठिनाई अवश्य होगी, फिर भी यदि गंगा-पुस्तक-माला उचित समझे तो "परिमल" की सात प्रतियाँ Academy को भेज दे। यह पता लगा लिया जाय कि अंतिम तिथि expire तो नहीं हो गई—

सविनय नन्ददुलारे

१५ जुलाई का "भारत" आपने देखा? उसमें यज्ञदत्त जी ने शिवशेखर जी के संवंध में कुछ लिखा है, यदि मिल सके तो वह पत्र भेज दीजिए, मैं भी देख लूं।

[गंगा पुस्तकमाला के पते पर भेजा हुआ कार्ड गाँव लौटाया गया।]

१७६. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन : काशी वि वि
१९-८-१९२९

प्रिय निराला जी,

आपने लगभग दो सप्ताह से कोई पत्र नहीं लिखा, और न मुझे "परिमल" की प्रति ही मिली। 'सुधा" के विज्ञापन और हरिऔध जी के कथन से यह पता चलता है कि पुस्तक विलकुल तैयार है, आपके पहले पत्र से भी इसी की पुष्टि होती है। मैंने एक पत्र "माधुरी" के पते पर और दूसरा C/o गंगा पुस्तक माला लिखा था, यह विचार कर कि आप कहीं न कहीं तो होंगे ही; पर उत्तर न मिलने से संदेह, उद्विग्नता आदि के कारण तवीयत अस्थिर रहती है। आप तो कभी कभी वड़ी लंवी चुप्पी साध लेते हैं।

आपने "भारत" का १५ जुलाई वाला अंक नहीं भेजा जिसमें यज्ञदत्त जी का लेख था, उसमें कुछ विशेष वातें मेरे प्रयोजन की हैं। यज्ञदत्त जी का पत्र आया था [,] उन्होंने उस लेख को पढ़ने को लिखा भी है। त्रिभुवन नाथ जी के कार्यक्रम की प्रगति का हाल लिखिएगा।

आनन्द मोहन जी अच्छी तरह हैं, उनकी कवीर-ग्रंथावली आप के पास है, उसे जव घर जाइए, भेज दीजिए क्योंकि उनकी पढ़ाई आजकल हो रही है।

और आपके आने का क्या हुआ? आइए तो ठीक हो। जव तक आते नहीं, और न पत्र लिखते हैं तव तक मैं क्या लिखूं?

हरिऔध जी ने आपके संवंध में परसों जैसी वातें कहीं, उनसे एक खंड काव्य की रचना हो सकती है। फिर कभी।

सविनय नन्ददुलारे।

['माधुरी' के पते पर भेजा हुआ कार्ड गाँव लौटाया गया।]

१७७. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
२५-८-१९२९

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र बहुत दिनों की प्रतीक्षा के उपरान्त मिला। अब तो आप लखनऊ आ गए होंगे। मैंने समझा था "परिमल" की भूमिका काफी लम्बी-चौड़ी होगी, पर आपने १८-२० पेज में ही लिख डाला। बुरा नहीं है, सचमुच दाम अधिक हो जाने से बिकने में कठिनाई होती।

"सुधा" तथा "माधुरी" के विशेषाङ्कों के लिए लिख चुके—किन विषयों पर लिखा है। मैंने कृष्णविहारी जी से भी पूछा है पर अबतक उनका उत्तर नहीं आया, अब आप ही लिख दीजिए।

संभव है मेरा अद्वैत-ज्ञान भ्रामक हो पर हमारे यहाँ प्रेय तथा श्रेय के दो विभाग तो हुए ही हैं—सीधा सीधा God is Love तो कह नहीं दिया गया। सत् [,] चित और आनन्द के आधार पर "भक्ति" का निरूपण तो मजे में किया जा सकता है पर "प्रेम" और "भक्ति" को पर्यायवाची मानने के पहले कुछ विचार करने की आवश्यकता होगी। साहित्य शास्त्रों में तो देव विषयक "रति" को "रसाभास" कहकर रस परिपाक तक स्वीकार नहीं किया गया। तो क्या इन साहित्यशास्त्रों की एकदम अवहेलना करनी पड़ेगी?—सो भी साहित्यक विवेचन में। संस्कृत साहित्य में वैष्णव कवियों तथा हिन्दी में कबीर, मीरा आदि की मधुर वाणी में रस की जो तरंगिनी वही है [,] वह क्या विहारी, दास आदि की शृंगारिक रचनाओं से अलग एक दूसरी श्रेणी की नहीं?

दूसरी बात यह कि संस्कृत कविता में वैष्णव कवियों के अतिरिक्त शुद्ध प्रेम का निरूपण करने वाला दूसरा कवि सम्प्रदाय नहीं है। इन वैष्णव कवियों का ऐतिहासिक अनुसंधान करने पर इनकी परम्परा कब से आविर्भूत हुई यह पता चलेगा। मैं अभी ठीक ठीक तो नहीं कह सकता पर संभवतः इस परम्परा का प्रारम्भ आधुनिक (ख्रीष्ट के बाद) ही ठहरेगा। ऐसी अवस्था में इन पर Christianity या Islam का कुछ भी असर न पड़ा होगा?

मेरी ये सब बातें अभी बिल्कुल Experimental हैं; आपका विरोध करने से संभव है, तथ्य की कुछ अन्य बातें भी निकलें, क्योंकि आप उत्तेजित होकर बड़ी-बड़ी बातें कह सकते हैं।

"भारत" का अंक मिला। कोई खास बात तो नहीं है। विशाल भारत यदि सच पूछा जाय तो अवश्य किसी बड़ी मौलिकता का प्रचार हिन्दी में नहीं कर रहा है। हाँ, राजनीतिक लेखों में चाहे जो विशेषता हो। अथवा घासलेट-साहित्य के सम्बन्ध में।

मैंने आपसे जो बातें छिपा रखने को लिखी थीं, वास्तव में आपको उनका अभिज्ञान है। मुझसे आनन्दमोहन कहते भी थे। प्रिय रामकृष्ण की बहन के विवाहोपलक्ष में मेरे सर्वथा अननुमोदनीय ढंग की ही मुझे सबसे अधिक ग्लानि है, शिव-शेखर जी की कई चीजों के खो जाने तथा स्वयं आपके साथ अपव्यवहारों को तो उतनी

चिन्ता नहीं। मैं उन बातों का क्या लिखूं—लिखने से अब वे फिर तो आएंगी नहीं। साधारण शिष्टता का भी परित्याग कर परिस्थितियों के चक्र में पड़ अपनी आत्मा को न जाने कैसे दबा, साधारण शिष्टता का भी पालन न कर सकना, सम्भवतः मुझसे ही हो सकता था। दुनियां तो वाह्य रूप ही देखेगी, हृदय की तह तक पहुंचने की वह आवश्यकता ही नहीं समझती। इस मामले में आपकी सहृदयता ही मेरा साथ दे तो दे, नहीं तो खो तो मैं सब कुछ चुका हूं।

पहले इतने का जवाब दे लीजिए, फिर और कुछ—

विनीत नन्ददुलारे।

[लिफाफे पर मातादीन शुक्ल के लिए लिखा है:]

प्रिय शुक्लजी, प्रणाम। यदि "निरालाजी" लखनऊ में न हों तो यह पत्र उनके घर के पते पर फेर दीजिएगा।

—विनीत नन्ददुलारे।

['माधुरी' के पते पर भेजा हुआ पत्र गांव लौटाया गया।]

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
५/६/२६ ई०

१७८. नंददुलारे वाजपेयी

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र कई दिनों से नहीं आया था, आज शिवशेखर जी से मालूम हुआ कि आप की तबीयत अच्छी नहीं है और आप घर पर ही हैं। मैंने एक पत्र मातादीन जी के ठिकाने पर लिखा था, शायद आप तक पहुंच गया हो। शिवशेखर जी कलकत्ते से आ रहे हैं और अपने कुछ विद्यार्थियों को सम्मेलन-परीक्षा में बैठाने लिए जा रहे हैं। इलाहाबाद होकर निसगर जाएंगे, फिर आपसे भी मिलने को कहते हैं। पता नहीं शायद आप को बुखार आ रहा है, आपके पिछले पत्र में तो कोई ऐसी बात नहीं लिखी थी। स्वास्थ्य का हाल शीघ्र लिखिएगा, मेरा जी लगा रहेगा।

यहां का हाल-चाल अच्छा ही है। सरोज के विशेपाङ्क में एक लेख किन्हीं दान्ते जी का निकला है आपने तो उसे देखा नहीं होगा, शिवशेखर जी के "सरोज" मे देखिएगा—कुछ मजेदार वातें भी हैं।

इस समय अखिल-भारतीय हिन्दी साहित्य के संबंध में दो एक छोटे मोटे लेख

देखे हैं—द्विवेदी जी ने तो सभापतित्व अस्वीकार कर दिया, अब देखिए क्या होता है—कुशल समाचार शीघ्र.

—सविनय नन्ददुलारे।

[निसगर—दयाशंकर वाजपेयी का गांव; द्विवेदीजी—महावीर प्रसाद द्विवेदी; पता गांव का]

१७६. सुमित्रानन्दन पन्त

C/O The Chief Medical Officer
Bharatpore State
12 Sep 29

My dear Nirala je,

Please order a copy of Chayanika, (चयनिका) by Tagore, for me per V.P.P. and oblige. I do not know the proper address.

I got your letter from Luck. duly. When are you coming to see me ? Eager to meet you. When is your book "Parimal" going to be published ? How you keeping ? Please write about yourself & oblige.

Excuse me my writing in English. In haste.

With best wishes,

V. Sincerely,
Sumitranandan Pant

Sriyut

Suryakanta Tripathi
Niralaje,
Garhakola,
P. O. Magrair,
(Unao)

[सारांश : रवीन्द्रनाथ की 'चयनिका' की एक प्रति वी. पी. पी. से भेजने का आर्डर दे दें। मुझे ठीक पता नहीं मालूम। लखनऊ से आपका पत्र यथासमय मिला। मुझ से मिलने कब आयेंगे ? मिलने को उत्सुक हूं। आपकी पुस्तक 'परिमल' कब प्रकाशित हो रही है ? स्वास्थ्य कैसा है ? कृपया अपना समाचार दें। अंग्रेजी में लिखने के लिये क्षमा करें। जल्दी में हूं।]

१८०. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
२५-६-१६२६

प्रिय निराला जी,

आपका एक पत्र कुछ दिन हुए मिला था, उत्तर में विलंब का कारण कुछ तो

उसका रूखापन और कुछ परिमल के आगमन की प्रतीक्षा थी। प्रतीक्षा में इतने दिन बीत गए अवतक गंगा पुस्तक माला के एजेंट के दर्शन दुर्लभ थे। कई वार पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ भी गया, पर सब पखवारे भर की मुहलत माँगते रहे। संयोग से आज एक एजेंट ने कल लाने का वचन दिया है, कल महात्मा गांधी भी विश्वविद्यालय में आएंगे। उनका यू. पी. भ्रमण हो रहा है।

आप की अप्सरा कहाँ तक पहुँची, ज़रा उसके Plot का परिचय अगले पत्र में दीजिएगा, और संगीत काव्य भी कुछ लिख रहे हैं या नहीं। एक वात और— पल्लव'-'परिमल;' ग्रंथि-रेखा; 'परी'-'अप्सरा' में पंत-निराला का अंतर होते हुए भी शब्द साम्य के आधार पर जिस अनुकरण का आभास मिलता है, उसकी कोई आवश्यकता दिखाई नहीं देती। क्या आपका ध्यान कभी इस पर गया है ?

दशहरे की छुट्टी सात अक्टूवर से लगभग एक महीने की होगी। मैं तो शायद हजारी वाग जाऊँगा पर शिवदुलारे दो-चार दिनों के लिए घर जाएंगे और त्रिभुवन नाथ जी के यहाँ से होकर लौटेंगे। आपने, चित्रकूट यात्रा तो मालूम होता है स्थगित ही कर दी, यहाँ भी अब न आ सकेंगे। गोरखपुर में साहित्य सम्मेलन अक्टूवर के अन्त में होगा, यदि आप चलने को कहें तो मैं हजारी वाग से लौटकर आपसे मिल सकता हूँ। पत्र शीघ्र लिखिएगा—नन्ददुलारे

आज "परिमल" देखने को मिली—Get-up, भूमिका अच्छी, छपाई की भूलें हैं। सब पढ़ रहा हूँ।

[पता गाँव का]

१८१. नंददुलारे वाजपेयी

बड़ा वाजार; हजारीवाग
१६-१०-२६

प्रिय निराला जी,

आपका प्रिय पत्र मिला। कितने रुपयों से किस कोटि का कितना आनन्द मिलता है इसका पता लगाने वाले आविष्कार वैज्ञानिक लोग कर नहीं सकेंगे, नहीं तो आपके पत्रों को ४)/५) रुपयों से कहीं अधिक वहुमूल्य—मेरे हक में अमूल्य —सिद्ध करने के लिए मुझे यह पंक्ति लिखनी न पड़ती। अच्छा हुआ जो "आनन्द" का भौतिकता से कुछ संसर्ग ही न रखा गया नहीं तो आजकल की दुनियाँ हवा पर भी टैक्स लगाने का प्रवंध कर रही है।

"परिमल" के सम्बन्ध में मुझे जिन साहित्यिकों से वातचीत करनी पड़ी, उनसे कई प्रकार की वातें सुनने को मिलीं। सोहनलाल जी का हाल पहले ही लिख चुका हूँ, एक और साहव कहने लगे 'परिमल" में कई स्थानों पर शब्दाडम्बर में पड़कर भावों की अवहेलना करनी पड़ी है। ऐसी वात प्रसाद और पंत में नहीं पाई जाती। मैंने उद्धरण माँगे। उन्होंने कहा उद्धरण क्या होगा, यह तो साधारण बात है कि या तो अनुप्रास ही सजा लिए जाएँ या भाव ही व्यक्त किये जाएँ, दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। मैंने

कहा यह साधारण बात तो है पर परिमल की कविता तो साधारण बात नहीं है। और प्रसाद-पन्त ने भी शब्दों को सजाया है—कहीं-कहीं बेजा तरीके से भावों का अथवा मुहावरों का तिरस्कार करके। "घनीभूत पीड़ा का बरसने आना", "चीरता हरे अचीर शरीर" आदि प्रयोग शब्द-प्रधान हैं। परिमल में जिस प्रकार का शब्द-चमत्कार है वह संगीतमूलक है, यही उसकी विशेषता है [,] पंत-प्रसाद में यही "विरोधाभास" आदि अलंकारों के रूप में आया है।

एक साहब दार्शनिक ढंग से और कुछ विकासवाद का आश्रय लेकर कहने लगे गद्य और पद्य की मूल मनोवृत्ति में अन्तर है। पद्य में मनुष्य की रागप्रियता, लयप्रियता प्रतिबिंबित होती है। कविता में छंदों आदि की उत्पत्ति मानव हृदय की इसी लयप्रियता के कारण हुई है। अतः छंदों का तिरस्कार करना कविता के मूल पर कुठाराघात करना है। वेदों के मुक्त छंदों के सम्बन्ध में आपने फरमाया कि उस समय भाषा का प्राथमिक विकास था, छंदों की रचना होने का लग्गा ही लगा था, इसीलिये उसमें कहीं-कहीं मुक्त प्रवाह (जिसको आप "विश्रृंखलता" कहते थे) देख पड़ती है। हिन्दी की उत्पत्ति जिस समय हुई उस समय भी (चन्दवरदाई के समय में) छंदों में बड़ी शिथिलता थी। भाषा की प्रारंभिक अवस्था में तो ऐसी बातें रहेंगी ही, पर उसके प्रौढ़-काल में ऐसा न होना चाहिए। मैंने कहा मूल मनोवृत्ति की तो बात ठीक है और "परिमल" के मुक्त छंदों में कहीं को [भी] मूल मनोवृत्ति का तिरस्कार नहीं किया गया, केवल समझ के फेर से उसमें किसी को लय न मिले तो इसमें दोष किसका है? और वेदों के मुक्त-छंदों को भाषा की प्राथमिक अवस्था में रचे जाने के कारण अज्ञान-जन्य मानना और उन्हीं की कक्षा में चन्दवरदाई के समकालीन भट्ट-चारणों की तुकबंदियों को रखना भाषा सम्बन्धी अज्ञान तो है ही, सत्य का अपमान भी है। वेदों के मुक्त छंदों में कहीं भी भट्ट-चारणों जैसी शिथिलता नहीं है। उनका मुक्त प्रवाह ज्ञान जन्य है, और हिन्दी की चारण-कविता में जो मुक्ति (मुक्ति नहीं शैथिल्य) है वह अज्ञान-जन्य है। यदि मुक्ति के इन दो स्वरूपों को ठीक-ठीक समझ कर परिमल के मुक्त-छंदों की जाँच कीजिए और स्वच्छ हृदय की सारग्राहिणी शक्ति से काम लीजिए तो सब बातें ठीक-ठीक समझ में आ सकेंगी।

अभी तक "माधुरी" नहीं आई है। कृष्णविहारी जी को कैसा मजमून लिखूं कि व्यवहार रक्षा भी हो और स्वार्थ-सिद्धि भी। मैं तो जब संकोच में पड़ जाता हूं तो लिखने की विधि भूल जाती है। इधर तो मैंने भी "हिन्दी साहित्य के विकास" पर लिखना प्रारंभ किया है, अब तक ६०-७० पृष्ठ लिखे भी हैं, पुस्तक में प्रायः ३००-३५० पृष्ठ होंगे और बहुत सी Original महत्त्वपूर्ण बातें भी होंगी। शायद अबतक के मेरे लेखों स आप उसे श्रेष्ठ मानेंगे। मैं कह तो नहीं सकता पर हिन्दी में अब तक जो साहित्य के इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें निकली हैं, वे अधिकतर Catalogue के रूप में हैं, तालिका मात्र हैं, उनमें साहित्यिक विवेचन नहीं के बराबर है। मैंने इसमें कुछ दूसरी चेष्टा की है। मिलने पर देखिएगा। क्या पुस्तकाकार छपने के पहले उसको मासिक पत्रों म प्रकाशित करना ठीक होगा?

कल रामअवध जी की चिट्ठी आई है, जिसमें साहित्य सम्मेलन के सम्बन्ध में
निराशाजनक वातें हैं, उसी में उनकी एक कविता भी है, मैं उनका पत्र भेज रहा हूं—
कविता भी देखिएगा। मेरी भी एक वहुत कुछ राजनीतिक कविता जाती है—यह
महारथी के मराठा अंक (विशेषाङ्क) में इस वार पहले पेज पर शायद छपी है। छंद
तो वही है जिसे आप पसन्द नहीं करते।

आप ठीक लिखते हैं हिन्दी की दशा विलकुल ऐसी ही है। ६० प्रतिशत तो
यहां उड़ती खबरें चलती हैं। जिन पुस्तकों के कभी दर्शन भी नहीं किए उन पर भी
राय देने के समय व्यास बनने वाले वहुत से हैं। और यह तो मेरे अनुभव की वात है कि
कालेज में हिन्दी लेकर एम० ए० पास करने वाले वहुत से अच्छे समझे जाने वाले छात्र
भी अंधेरे में टटोलते और 2nd hand 3rd hand या 100th hand information
ग्रहण कर संतोष करते हैं। यह परिस्थिति वड़ी ही निराशाजनक है, आपको मुझे काशी
के कुछ प्रख्यात लोगों तथा विश्व०विद्या० के विद्यार्थियों से भेंट करानी है जिनका अज्ञान
देखकर आप मेरे 2nd division में पास होने का कारण जान सकेंगे। मुझे 14 नंवरों
से Ist class नहीं मिला, इसमें कुछ रहस्य भी है, जो कुछ वाहरी लोगों को मालूम
हो चुका है, मुझे उन्हीं से मालूम हुआ। पर इन वातों पर विश्वास करने के लिए यहां
के जो एम० ए० के विद्यार्थी हैं उनसे एक वार भेंट करने की आवश्यकता होगी, उनमें
से कुछ तो देखिएगा Ist division में भी जाएँगे। खैर। आप की वातें अव ठीक ठीक
मेरी समझ में आती है, अब तक तो गुरु-गण-गरिमा में दवा हुआ था। मैंने प्रत्यक्ष देखा
रवीन्द्रनाथ की कहानियां भी हमारे पूज्य लोगों की समझ में नहीं आतीं, और वे ही
हिन्दी के रवीन्द्रनाथ वनने को तैयार हैं। वड़ा अन्धेर है, सचमुच आप लोगों ने जो
विद्रोह किया सोलह आने उचित था।

पारिवारिक मामलों को सुलझाकर अलग कर दीजिए। रामकृष्ण को पढ़ने के
लिए काशी भेज दीजिए, मेरे पास रहेंगे और अंग्रेजी पढ़ेंगे। यह अवस्था व्रीत
जाने पर जरा कठिनाई होगी। हम लोगों के साथ रहने में पढ़ाई का सिलसिला ठीक
रहने की संभावना है। शिवशेखर जी कव तक वहाँ रहेंगे ? मैं यहां से २४-२५ को चल
दूंगा। वनारस होकर, यदि सम्मेलन होने का निश्चय हुआ, तो आप से घर पर मिलूंगा
और यदि सम्मेलन न हुआ तव कुछ विलम्ब से भेंट करूंगा। अभी एक दम पक्की वात
नहीं है। पत्र शीघ्र लिखियेगा। त्रिभुवननाथ जी का पत्र आया है, उन्होंने मुझे भी
बुलाया है—यदि आप से मिला, तो उनसे भी भेंट होगी।

—आपका नन्ददुलारे।

[पुनश्च]

इधर पूज्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से मेरा एक नया प्रसंग उठ खड़ा
हुआ है। वात यह हुई कि द्विवेदी जी ने जो काशी विश्वविद्यालय को रुपए दिए हैं उनसे
जो छात्रवृत्तियां मिलती हैं उनमें से एक के लिए आनन्दमोहन जी ने अर्जी दी थी। जव
अर्जी द्विवेदी जी के पास पहुंची तव उन्होंने उसमें अपनी राय यह दी कि आनन्दमोहन
वाजपेयी तो नन्ददुलारे वाजपेयी की Family के हैं, शायद उनके Cousin हैं, और

नन्ददुलारे की पारिवारिक स्थिति अच्छी है यह मुझे मालूम है अतः आनन्दमोहन को स्कालरशिप न दी जाय। मैंने उन्हें सार-सूचना देते हुए लिखा कि आनन्दमोहन का मेरे परिवार से कोई सम्बन्ध नहीं है, और मेरे परिवार की साम्पत्तिक अवस्था विशेष सम्पन्न नहीं है। मैंने एक वाक्य यह भी लिख दिया कि मेरी आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में किसी ने मिथ्या सूचना आप को दी होगी नहीं तो जेठ की दोपहरी में इधर-उधर भटकते फिरना और पं० देवीदत्त जी तक को अपना भाग्य-विधाता बनाने को सहमत होना मेरी सम्पन्नता का तो परिचायक नहीं है—क्या अब तक आपने इस विषय पर विचार नहीं किया था। इसके पहले भी उनके किसी सवाल का जवाब देते हुए मैंने लिख दिया था कि इंडियन प्रेस से मेरी सिफारिश करने में आपने हार्दिक वृत्ति का दुरुपयोग तो नहीं किया पर "सरस्वती" का व्यवसाय करने वालों के लिए वह समय का दुरुपयोग ही तो ठहरा, मैं जब उनसे मिला तब बातचीत करने में उनके समयाभाव का मुझे विशेष रीति से अनुभव हुआ। आजकल कुछ दिनों से उनका पत्र बन्द है, अब वे कानपुर में रहते हैं। घर आकर आपके साथ चलकर एक बार उनसे भी मिलना है, इस बार कुछ स्वच्छंद रूप से। मैंने कोई अनुचित बात तो शायद लिखी नहीं। हाँ कुछ कठोर अवश्य हो गया।

आपका

नन्ददुलारे।

कर्मपथ

इधर "जी रहे हैं, जी लेंगे" की वाणी निरीह निर्द्वन्द!
उधर सत्यजीवन-अन्वेषण, कठिन कर्म, फिर चिर आनन्द।
इधर शिशिर की शीत निशा में सुख से सोने की माया,
उधर जागरण का, जीवन का, आकर्षण वसंत लाया।
इधर "नाश हूं, महाकाल हूं,"—कवियों के प्रमाद निस्सार,
उधर शक्ति-संचय में तत्पर, व्रत पर दृढ़ नवयुवक उदार।
वीर विप्लवी कहलाने की इधर मधुर-मृदु अभिलाषा,
उधर आत्मबल से बलशाली वीरों की नीरव भाषा।
इधर बने सिंहासन जिन पर आसन धर कितने उपदेश—
कितनी रीति-नीति की शिक्षा पग पग पर कितने संदेश—
कितने ओजस्वी शब्दों में देते कितने पुरुष महान!
उधर न इतने आयोजन हैं—केवल कर्म, कर्म ही ज्ञान।
शत सहस्र वर्षों का बंधन अंधकार का प्रबल प्रवाह,
आह न यों निस्तार मिलेगा पहचानो पहचानो राह।

नन्ददुलारे।

[पता गांव का]

दीपावली '८६
शान्ति-कुटीर
बनारस सिटी

१८२. रायकृष्णदास

प्रिय सूर्यकान्त जी—वन्दे—

आपका कार्ड शान्तिप्रिय जी के नाम का देखा [।] आपने पहिले ही ऐसा निराश कर दिया था—पत्र द्वारा कि प्रत्यक्ष बात करने की हिम्मत न हुई। अस्तु, आप ही के शब्दों में "अब उसके लिए कौन सी चिन्ता"। आप अब एक पुस्तक हमें भी अवश्य दीजिए। मैं आपसे पूर्ण सहमत हूँ कि सचित्र पुस्तक और भद्दी हो जाती। गुप्त जी के बाद वाले कवियों में मेरा सर्वोपरि ममत्व आपकी कविता पर है [,] उसे दूसरे के हाथ जाते देखकर बड़ा कष्ट हुआ है। मैंने समझा था कि मतवाला ही आप की सब किताबें छापेगा सो यह नया ही गुल खिल गया। दिवाली का स्नेहाभिवादन।

आपका—
कृष्णदास

[इस पत्र में ऊपर 'शान्तिकुटीर, बनारस सिटी' और निराला का गांव का पता शान्तिप्रिय द्विवेदी की हस्तलिपि में हैं।]

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
१०-११-१९२९

१८३. नंददुलारे वाजपेयी

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र कुछ देर से मिला। हम लोगों को बड़ी उत्सुकता थी, कहीं आप गोरखपुर चले न गए हों। दो पोस्टकार्ड घर के पते से लिख चुका हूँ, वे आपको नहीं मिले होंगे। गोरखपुर वालों का इस मामले में विशेष दोष नहीं है, साहित्य सम्मेलन के मंत्री महोदय इसके जुम्मेवार समझे जाते हैं। राम अवध जी तो कहते हैं कि वहाँ सब तैयारी ठीक ठीक हो चुकी थी और आसाम, मद्रास तथा पंजाब के कितने ही डेलीगेट आ चुके थे। वे सब निराश होकर लौट गए। केवल ४८ घंटे पहले सम्मेलन के स्थगित होने की खबर 'लीडर' में छपी थी, ये सब बातें वास्तव में अच्छी नहीं कही जा सकतीं।

राम अवध जी को आपका पत्र दे दिया है। वे आज ही अपनी कविता भेज रहे हैं। शायद वही जो मैंने आपके पास लिख भेजी थी। मेरे पास तो इस समय कोई लेख नहीं है, पर शीघ्र लिख कर भेजने का प्रबंध करूँगा। वह जो इतिहास लिखने की बात लिखी थी, एक अजीब कहानी उसकी है, आप सुनेंगे तो शायद बहुत हँसेंगे! लखनऊ में कब तक रहने का विचार है? कहानी कब सुनिएगा?

आपका नन्ददुलारे।

[पता गंगा पुस्तकमाला का]

१८४. (क) रामअवध द्विवेदी

(ख) नन्ददुलारे वाजपेयी

श्री काशीधाम

११ नवम्बर, १६२६

(क) पूज्य 'निराला' जी,

सादर वन्दे !

आपका कृपा पत्र मिला। क्या कहूँ पं. कृष्णकान्त मालवीय ने सम्मेलन स्थगित करके अनर्थ कर दिया। मुझे क्या मालूम था कि उनकी ऐसी कृपा हो जायगी। हम लोगों का सारा परिश्रम व्यर्थ गया। आप लोगों के दर्शन भी न हो सके। 'सुधा' के लिए एक कविता भेज रहा हूँ। इस साल आपने काशी को तो बिल्कुल भुला ही दिया। हम लोग सकुशल हैं।

आपका

रामअवध

(ख) प्रिय निराला जी,

यह द्विवेदी जी की कविता जा रही है। इसका शीर्षक 'निवेदन' था, पर यह उन्हें कम पसन्द है; मैं दूसरा कुछ सोच नहीं सका, आप कोई Suitable शीर्षक लिख दीजिएगा, अथवा 'निवेदन' ही रहने दीजिएगा। मैं अपना लेख ७-८ दिन में अवश्य भेजूंगा, आज लिखना प्रारम्भ करने का विचार कर रहा हूं, धीरे-धीरे लिखूंगा, क्योंकि कुछ बेगार भी आजकल करनी पड़ती है। आप लखनऊ में कब तक रहेंगे ? सुधा में किसी मतलब से, अथवा बेमतलब हैं ?—नन्ददुलारे।

[वाजपेयी जी ने कविता और अपने नाम राम अवध द्विवेदी का पत्र—दो चीजें निराला को भेजी थीं जो इस प्रकार हैं :]

गजपुर

१३ अक्टूबर, १६२६

प्रिय वाजपेयी जी,

वन्दे :

आपका कृपा कार्ड मिला। आशा है आप हजारी बाग सकुशल पहुंच कर सानन्द होंगे। मैं तो जब से आया तब से परेशान हूं। इधर चार-छः रोज से तो बुखार भी है। गान्धी जी के साथ जिले में घूमा था। लौटने पर जुकाम इत्यादि ने मुझे तंग करना शुरू कर दिया। खैर—आशा है अच्छा हो जाऊंगा।

सम्मेलन की तो बड़ी बुरी हालत है। वह तो इस बीच में शायद होगा भी नहीं—आगे की राम जाने। परमहंस बाबा राघवदास—स्वागत समिति के मन्त्री उसके बारे में इतने निरुपेक्ष हैं कि देख कर आश्चर्य होता है। अभी तक कुछ भी नहीं हुआ है। न कुछ होने की आशा ही है। एक मौलवी ने मुझे एक बार बताया था कि कुरान में लिखा है कि जो कुछ खुदा करता है [illegible] ही करता है। यही सोचकर मैं भी चुप

होकर घर आकर बैठा हूं। स्वयंभू नेताओं की वात अकथ है—तिस पर वाबाजी ठहरे परमहंस। सम्मेलन एक सूरत में अवश्य हो सकता है। सोहन गुरू आने वाले हैं ही [,] उनका स्वागतगान शहर के किसी चौराहे पर हो जायेगा। वस, इस साल का साहित्य सम्मेलन यहीं होगा।

एक कविता लिखा है [लिखी है]—भेजता हूं। आप अपनी राय लिखियेगा। वेढंगा छंद लिखने की ऐसी आदत पड़ी जा रही है कि पिंगल से बंध कर चलने की इच्छा ही नहीं होती !

पत्र शीघ्र लिखियेगा।

निवेदन

किया तुमने जब, प्राणाधार !
उस स्वप्नों के स्वर्ण-लोक में कोमल पद संचार,
सोती हुयी लालसा जागी,
मैं निर्लिप्त सदा का
उस दिन पहले पहल हुआ अनुरागी।
जीवन के उस नवप्रभात में, हे प्रिय प्रान !
प्रथम किरण से जब तुम आए,
ज्योतिर्मय, अम्लान,

मेरा बाल सरल भोलापन—
चिर-विस्मृति सा निद्रित-यौवन
उद्वेलित हो उठा, भर गया एक नया आवेश
—मिला नूतन संदेश।

अवगुन्ठित जीवन में कुन्ठित सा वन्दी था प्यार,
सखे, प्रिय प्राणाधार !
तुमने ही तो मुक्त कर दिया। एक बार,
फिर एक बार,
दर्शन हो, प्राणाधार !

राम अवध द्विवेदी गजपुरी
१३-१०-'२६

[सोहन गुरू—सोहनलाल द्विवेदी ?]

१८५. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन, काशी विश्वविद्यालय
२६-११-१९२६

प्रिय निराला जी,

डलमऊ और गढ़ाकोला से आपके दोनों पत्र मिले। मैंने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का जो उपक्रम किया था अब गुरु दक्षिणा में उसका उपयोग कर रहा

हूं—अब तक सवा सौ डेढ़ सौ पृष्ठ लिख चुका हूं पर "इदम श्री गुरवे" का संकल्प कर डाला। ऐसी अवस्था में अब यदि आप विशेष आग्रह न करें तो जरा देर से, एक अच्छा सा लेख लिखूं—जैसा आप कहें। पूरा इतिवृत्त मैं आपसे मिलने पर कहूंगा। यहाँ क्रिसमस की छुट्टी १२ दिसम्बर से होगी, आनन्दमोहन और मैं भी उनके साथ घर आने का विचार कर रहा हूँ।

भारतीय काव्य दृष्टि पर इधर एक व्याख्यान सुकुल जी का हुआ था। पाखंड-प्रतिषेध को गद्य का रूप मिल गया है। एक पूरी किताब लिख चुके हैं जिसमें यह सिद्ध किया गया है कि रहस्यवाद की कविता अभारतीय है—छप रही है, उसकी थोड़ी सी बेवकूफियाँ मेरी समझ में भी आई हैं, छप जाने पर आप देखेंगे ही।

शान्तिप्रिय द्विवेदी बड़े आग्रह से विनयपूर्वक कह रहे थे कि निराला जी अपने गीतों का संग्रह स्वरलिपि सहित भारती भंडार से छपने की अनुमति दें। रायकृष्ण दास की बड़ी अभिलाषा है। पुरस्कार से असंतोष नहीं होगा इसका वे जुम्मा लेते हैं।

आनन्दमोहन की कविता की समालोचना आपने लिख कर काट क्यों दी—क्या मैं पढ़ नहीं पाया ?

—नन्ददुलारे

[छायावाद और रहस्यवाद का मखौल उड़ाने वाले रामचन्द्र शुक्ल के कवित्त फरवरी १९२८ की "सुधा" में प्रकाशित हुए थे। पता गांव का]

१८६. नंददुलारे वाजपेयी

आर्यभवन; काशी विश्वविद्यालय
६-१२-१९२९

प्रिय निराला जी,

मेरे पिछले पत्र का उत्तर दीजिएगा। इस पत्र में एक समस्या पेश कर रहा हूं। आप अवधविहारी जी को तो जानते होंगे। ये मेरे मित्र बड़े सहृदय, बड़े विनयशील साथ ही महत्त्वाकांक्षी भी हैं। ये विहारी हैं पर विहार वालों से इनकी पटती नहीं है। एक विहारी महोदय के पास पं. गणेश विहारी जी की चिट्ठी आई थी, शायद लिखा था कि विनोद के चतुर्थ खंड के लिए काशीविश्वविद्यालय के विहारी साहित्य सेवियों की सूची—नाम धाम काम आदि भेज दें। अवध विहारी जी इस सूची में नहीं भेजे गए, इन पर अन्याय किया गया है। आप को गणेश विहारी जी ने कहा था नाम भेजने के लिए। आप अवध विहारी जी का नाम लिख कर और नीचे का परिचय भेज दें तो अवध विहारी जी की सम्मान रक्षा हो सकती है—

पाण्डेय अवधविहारी श्रीवास्तव
"विहारी विहार" पकरी; सतजोरा वजार
छपरा

ये चटपटी भाषा लिखने वाले हिन्दी के नए कहानी लेखक हैं। मनोरमा, 'स्वदेश' आदि में इनकी कहानियाँ निकली हैं। कहानियों का संग्रह प्रेस में है।

कविताएं लिखते हैं पर कम । काशी विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं आयु इक्कीस वर्ष ।
मैं १२-१३ तक करीब करीब अवश्य आऊंगा । आनन्द मोहन जी भी, इस पत्र
की स्वीकृति अवध विहारी जी को दिखलानी है—अतः—शीघ्र—नन्ददुलारे
काशी नागरी प्रचारिणी सभा से आप को निमंत्रण दिया जाने वाला है । केशव
जी पता पूछते थे [,] मैंने वतला दिया है । १३ तक तो आप घर पर ही रहेंगे ।

[पता गांव का]

आर्य भवन, काशी वि०विद्या०
१०-१-१९३०

१८७. नंददुलारे वाजपेयी

प्रिय निराला जी,

मैं डिवाई चला गया था, मेरी स्त्री कुछ अस्वस्थ हो गई थी । वहां से आने पर
आपका पत्र मिला । मेरी दीनता का हाल आप ने नहीं समझा, पर मैं तो आप लोगों की
करार दी हुई अपनी सम्पन्नता को न समझ सकने पर अन्ततोगत्वा दीन वना था । मेरी
निगाह में सुमन जी, इलाचन्द्र जी, अवध उपाध्याय [,] नन्दकिशोर तिवारी आदि थोड़े
वहुत अन्तर से एक ही क्लास के क्रिटिक हैं । अपने क्षेत्र में वासुदेवशरण जी भी लगभग
उतनी ही गहराई में हैं या अधिक ? हेमचन्द्र जी डाक्टर हैं तो क्या हुआ, मुझ पर कोई
गहरा इम्प्रेशन नहीं क्रिएट कर सके । साहित्यिक जानकारी में आप उन्हें शुक्ल जी के
मुकाविले में कैसा समझेंगे ? इधर "प्रसाद" जी के अजातशत्रु की एक टीका १००-
१५० पेजेस की निकली है प्रशंसा वड़ी की गई है. पर वहुत कुछ वेढंगी । "एक घूंट"
नामक उनका नवीन नाटक वाजार में आया है—उसमें विवाह पद्धति की विवेचना की
गई है, प्रसंगवश शायद शान्तिनिकेतन आदि पर कुछ तीखे व्यंग्यात्मक छींटे हैं । मैं
उन स्लिपों के शेषांशों को यथासंभव जल्दी ही भेजने का प्रयास करूंगा । आपने अप्सरा
में हाथ लगाया या नहीं, आपके प्रोग्राम के अनुसार तो उसे अब तक लिख जाना चाहिए
था । सुधा के विशेषाङ्क के लिए कव तक मैटर लिया जा सकता है । उन अवस्थी जी
का छपरे वाला लड़का वापस आया या नहीं, मेरी चिट्ठी का क्या हुआ था, यदि कभी
मिलें और याद रहे तो पूछ लीजिएगा—

आपका नन्ददुलारे

अवकी जव लखनऊ जाएं तो पं. गणेश विहारी जी को अवध विहारी जी का नाम
अवश्य दे दीजिए गा । रामावध जी को भी भेजूंगा, हम दोनों को तो आप जानते ही हैं
[,] फिर भी कुछ लिख कर दे दीजिएगा—

[पता गांव का]

१८८. (क) नंददुलारे वाजपेयी
(ख) अवधविहारी श्रीवास्तव

(क)
आर्य भवन काशी विश्वविद्यालय
२७-१-३०

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र जिस दिन मिला था, उसके दूसरे दिन त्रिभुवननाथ जी का पत्र भी आया था जिसमें आपके लखनऊ जाने की बात थी। आप शायद अचानक ही चले गए क्योंकि पत्र में तो १०-१५ दिन के बाद जाने को लिखा था। लखनऊ का समाचार लिखिएगा। कृष्णविहारी जी की एक चिट्ठी मेरे पास आई है, उसमें वे भविष्य में प्रकाशित होने वाले मेरे सब लेखों पर पुरस्कार देने को लिखते हैं। मैंने उन्हें लिखा था कि इतनी सम्पन्न पत्रिका होते हुए भी जब माधुरी अपने लेखकों के संतोष का विधान नहीं कर सकती, तो उसके लिये लेख आदि लिखने की नीति मुझे पसन्द नहीं। इसी के जवाब में उन्होंने लिखा है। मैंने तो अब तक कुछ लिख कर भेजा नहीं है, आज चिट्ठी का जवाब दे दूंगा। आज एक कहानी मैंने महारथी में भेजी है, शीर्षक 'क्षेपक' है—आपको छपने पर दिखाऊंगा। सुधा की ग्राहक संख्या क्या बहुत कम हो गई है। आज कल बहुत ढूंढ़े २ मिलती है। प्रसाद जी के पास तो पहले से ही बन्द है। परसों इलाचन्द जोशी से भेंट हुई। काशी वि० वि० में ठहरे थे, मुझ से मिलने आए थे। कहते थे निराला जी क्रुद्ध होकर लिखते हैं। आपके सम्बन्ध में काफी बड़ा सम्मानभाव है। पंत-निराला के बराबर तीसरा कोई कवि नहीं है। अभी हिन्दी कविता in the making है—ये दोनों होनहार हैं आदि। प्रसाद जी पुराने ढर्रे के हैं। मैं बिना अपनी स्लिपों को देखे अब पूरा नहीं कर सकता, यदि आप उसे Notes के रूप में न भेजना चाहते हों तो मेरे पास भेज दीजिए, लिख डालूं।

सुधा पौष की अब तक देखी नहीं है। विशेषाङ्क कब तक निकलेगा। कुछ गीत अगले पत्र में अवश्य भेजिएगा।

[कार्ड में नंददुलारे वाजपेयी ने हस्ताक्षर नहीं किये। एक ओर अवधविहारी श्रीवास्तव ने लिखा है :]

(ख) श्रद्धेय निरालाजी,

सादर वन्दे—

पत्र लिखते लिखते थक गया। फिर क्या लिखूं! कृपादृष्टि चाहिए। भवदीय
[पता गांव का]
श्री अवध०

१८९. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन, काशी वि. वि.
४-२-३०

प्रिय निराला जी,

एक पत्र घर के पते से लिख चुका हूं, दूसरा पत्र लखनऊ से आया, मुझे आशा थी आप घर शीघ्र ही लौटेंगे। स्लिपें जब भेज देंगे तब मैं उन्हें पूरा लिख दूंगा।

आपकी परिमल की समालोचना माधुरी में देखी, एक वाक्य समझ नहीं सका [।] "परिमल" को देहली के हिन्दी कहानी लेखक जैनेन्द्र कुमार माँग ले गए हैं—पढ़ना चाहते थे। मैं तब तक चन्द्रनाथ जी वाली प्रति से काम चलाऊंगा। प्रसाद जी की कंकाल पुस्तक निकली है। वे कभी कभी आपको याद करते हैं—काफी उत्सुकता के साथ। वर्णाश्रम वाला लेख अब तक नहीं देखा [,] आज देखूंगा।

आयु की तालिका इस प्रकार है [—]

श्री पा० अवधविहारी जी—तेईस वर्ष [,] श्री आनन्दमोहन जी—चौबीस वर्ष पाँच दिन [,] श्री द्विवेदी जी—पचीस वर्ष [।] मेरी आयु इस समय तेईस वर्ष की है [,] महीने-दो-महीने कम या अधिक ठीक ठीक नहीं कह सकता। शेष प्रसन्नता है, घर जाकर पत्र देखिएगा। शुक्ल जी का पत्र भी आया था [।] मैं कुछ कुछ अन्य-मनस्क हो गया हूँ—कमजोरी है, पर क्या करूं—दूर करने की कोशिश में हूं।

आपका नन्ददुलारे

[गंगा पुस्तकमाला के पते पर भेजा कार्ड गांव लौटाया गया।]

१९०. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन काशी विश्वविद्यालय
१३-२-१९३०

प्रिय निराला जी,

लखनऊ वाले पत्र का उत्तर लखनऊ के पते पर लिख चुका हूं, पर आप तो घर लौट गए। कविता बहुत पसंद आई [।] एक और प्रताप में निकली है, उसे देखने रहा हूं। हम लोगों की जन्म तिथि के विषय में आप बहुत अधिक particular ों हैं—२२-२३-२४ के बीच हम सभी लोग होंगे—इतने से तो काम चल सकता ा। नहीं, आपको गीत भेजने ही पड़ेंगे, मेरा काम नहीं चलेगा, समय नहीं कटेगा। प्रसाद जी का कंकाल उपन्यास निकला है—उसके बारे में प्रेमचन्द जी क्या कहते थे—अक्षर अक्षर लिखिएगा। मनसुखा की बात पहले ही सुनी थी, शायद गालिब वाली वही शेर थी जो आप सुनाया करते थे। उसका दार्शनिक विश्लेषण तो अवश्य अकाट्य है साहित्यिक उहापोह तो मैं जानता नहीं हूँ—सुधा में देखूंगा। सुधा कम देखने को मिलती है। द्विवेदी जी की प्रति उन्हें भेज देने को लिख दीजिए—इसी बहाने देख लूंगा। पत्र और शीघ्र-शीघ्र लिखिए [,] इधर मुझे जरूरत है—

नन्ददुलारे।

[पता गाँव का]

१९१. (क) नंददुलारे वाजपेयी
(ख) अवधविहारी श्रीवास्तव

आर्य भवन, काशी विश्वविद्यालय
२८-२-१९३०

(क) प्रिय निराला जी,

आपका प्रिय पत्र मिला। सुधा देखी, पहला गीत art paper पर अधिक सुन्दर है। आपने अवस्थी जी महाराज को फटकार तो पूरी बतलाई, देखिए अब कानपुर के

सब छोटे बड़े आप पर टूट पड़ेंगे, इधर सद्‌गुरुशरण पार्टी भी लोहा लेगी। आनन्दमोहन ने आपकी उग्रता पसंद नहीं की और कहानी भी नहीं। आपका पुरस्कृत गीत साम्प्रदायिक रहस्यवाद की श्रेणी में आता है—आपने उसे ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा में भेजा है? यहाँ जलसा २-३-४ मार्च को होगा, गोरखपुर मैं नहीं जा रहा—प्रतिवाद स्वरूप। परिमल की कैसी आलोचना सुधा में छपी है (माधुरी में या सुधा में?)—विट्ठल जी, बेताब जी आदि सब बढ़िया आलोचक हैं। मैंने भी थोड़ा लिखा है, थोड़ा और लिख लूंगा। परिमल पर। कहाँ छपेगी?—पत्र जल्दी दें.

नन्ददुलारे

[कार्ड के दूसरी ओर अवधविहारी श्रीवास्तव:]

(ख) श्रद्धेय निराला जी,

सादर वन्दे—

बहुत सोचने पर भी, मुझे नहीं मालूम होता, कि किस अपराध के कारण मुझे ऐसा दण्ड दिया जाता है? खैर, धैर्य है। जो कुछ सजा मिलेगी, उसे चुपचाप सह लूंगा। दर्शन होंगे ही पर जो कुछ भक्ति और प्रेम के नाते कहना होगा कह दूंगा। शेष सब प्रसन्नता है। कुशल चाहिए। अवध०

[पता गाँव का]

१९२. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन, काशी विश्वविद्यालय
८-३-१९३०

प्रिय निराला जी,

इससे पहले जो एक पत्र लिखा था, वह नशे की अवस्था में। कह नहीं सकता कि क्या लिखा क्या नहीं। होली की छुट्टियों में दो-एक दिन के लिए घर आने का विचार कर रहा हूं, यदि आया तो भेंट होगी। पहले डिबाई जाकर १७-१८-१९ तक घर पहुँचूगा—इन दिनों आप लखनऊ या कहीं जाएंगे तो नहीं? कृष्णविहारी मिश्र अखिल भारतवर्षीय हिन्दी कवि सम्मेलन के सभापति हो गए और सब लोग रखे रह गए—क्या सुन्दर बात है?

रहस्यवाद पर एक लेख लिखने का विचार कर रहा था, बीच में परिमल की विस्तृत आलोचना करने का। शायद आप से मिलने के पहले नहीं लिख सकूंगा [,] मिलने पर कई बातें कहनी हैं।—

[पता गांव का]

आपका
नन्ददुलारे।

१९३. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन, काशी वि. विद्या.
१२-३-३०

पूज्य निराला जी,

मेरा आपके प्रति जैसा पूज्यभाव आरम्भ से रहा है, पत्रों आदि में उचित

विशेषणों के अभाव में भी वह आपसे भी छिपा नहीं है। बाहर तो अनेक जानते हैं। मेरी विद्या के विजय पत्र मात्र से आपकी जैसी कुछ श्रद्धा हो सकती है, उसकी व्यंग्यात्मकता की कल्पना मैं क्या कर नहीं लेता। ऐसे तो कलकत्ते की अध्यापक मंडली के प्रसिद्ध जे. एल. बेनर्जी आदि आदि कितने ही और हिन्दी संसार के अपार असंख्य विद्वान आपका लोहा मानते होंगे, पर मैंने आपके जिस अंश से जो कुछ समझ कर श्रद्धा की है उसका कुछ तो मूल्य मान ही लीजिए। अथवा यदि निर्मूल्य ही हो तो स्तनपायीत्व से तो समता नहीं हो सकती, क्योंकि इसकी शिशुता मुझे स्वीकार नहीं और शायद द्वापर की पूतना का कृष्ण द्वारा स्तनपान आपको पसंद न हो। अब तक तो निश्चय ही सब प्रकार हम तुम सन हारे का पालन करने के योग्य ही अपने को मानकर तदनुरूप बर्तता आया हूं, और भविष्य में भी प्राणपन से चेष्टा करता रहूंगा, पर जब साहित्य की परीक्षा समिति के सामने आज नहीं, १० वर्षों के बाद अपना अपना उत्तर पत्र दिखाया जायगा तब क्या होगा, राम जाने, क्योंकि प्रतिभा और प्रकाश का द्वार सबके लिए एक सा खुला है और आज से १० वर्ष पहले आपका जो स्वरूप था वह मुझे मालूम है।

पंत जी का पत्र देखा। बहुत उपयुक्त और समझदारी का द्योतक है और किसी को नहीं दिखाया। २० के पहले आपके दर्शन करूंगा [,] तब पत्र लेता आऊंगा।

[पत्र में हस्ताक्षर नहीं हैं। पता गांव का]

१९४. शान्तिप्रिय द्विवेदी

श्री:

शान्तिकुटीर
रामघाट
बनारस सिटी
१६-४-३०

पूज्यवर, प्रणाम—

आपका कृपाकार्ड आज मिला। आपकी मंगल कामना पढ़ कर आपकी प्रसन्नता की सूचना मिली। मुझ पर सदा इसी तरह दया रक्खा कीजिए—सभी दृष्टियों से आपके सम्मुख बालक हूँ।

पंत जी के तीन चार पत्र तो मेरे पास भी आये थे। एक पत्र में उन्होंने लिखा था—'परिमल मुझे बहुत पसंद आया।' मैंने उन्हें बधाई अभी तक नही दी, समय पाकर दूंगा।

मेरा स्वास्थ्य बहुत गिर गया है। गर्मी के दिन, अलमोड़े में पंत जी के सहवास में बिताया चाहता था; उन्होंने दिक्कतें पेश की हैं, मेरा जी निराश होगया। वे बड़े आदमी हैं, अधिक क्या कहूं।

सेवक—शांतिप्रिय

'प्रसाद' जी का 'कंकाल' उपन्यास आपने पढ़ा ! कहिए तो भेज दूं ? शां०
आप नमक कानून तोड़ना चाहते हैं—बधाई।
जेलयात्रा का विचार तो मेरा और उग्रजी का भी है, आगे हरि की इच्छा।
लेख कब तक छपेंगे ?

शां.

१९५. नंददुलारे वाजपेयी

वड़ा बाजार, हजारीवाग
२८-४-१९३०

प्रिय निराला जी,

एक पत्र अभी-अभी लिख चुका हूं। यह पत्र एक विशेष आशय से लिख रहा हूं। सुधा में "शकुन्तला नाटक के कानूनी आधार" शीर्षक एक लेख मेरे अध्यापक, यहां के कालेज के प्रोफेसर, पंडित जी ने लिख कर भेजा है। पंडित जी साहित्यिक दुनियां से अलग पड़ गए हैं, नहीं तो हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों और विद्वानों से कम योग्य नहीं हैं। संस्कृत का विशेष अध्ययन करके हिन्दी के क्षेत्र में आने वालों को जो सुविधाएं मिलतीं हैं, पंडित जी को वे सभी प्राप्त हैं। यहां इस उजाड़ देश में रहकर साहित्यिक उर्वरता वड़े महत्त्व की वात कही जायगी। काशी, प्रयाग, लखनऊ, कानपुर आदि जैसी जगहों की वात नहीं की जा सकती। यहां वे साधन नहीं है, वह समाज नहीं है साहित्यिक प्रगति के लिए वह वायुमंडल······

······जाएं तव पंडित जी के लेख को अवश्य देखिए और आगामी अंक में उसके प्रकाशन का प्रवन्ध कर दीजिए। यदि "सुधा" वाले डिग्री धारियों और प्रोफेसरों का सम्मान करने के लिए प्रसिद्ध हैं तो कोई कारण नही कि पंडित जी को उनके लेख का पुरस्कार न मिले। उत्साह-प्रदान के लिए उसकी उपयोगिता स्पष्ट है। आप इस पर भी विचार कीजिएगा।

पंडित जी का शुभ नाम पं० परमेश्वर प्रसाद शर्मा है [,] मेरे आत्मीयवत हैं, वड़ा स्नेह रखते हैं। मैं १५ मई के आस पास यहां से चलकर घर पहुंचने का विचार करता हूं.

[गांव से गंगा पुस्तकमाला के पते पर लौटाया गया।] आपका—नन्ददुलारे

१९६. नंददुलारे वाजपेयी

आर्य भवन, काशी विश्वविद्यालय
२०-५-१९३०

प्रिय निराला जी,

आपके पत्र का उत्तर हजारी-वाग से न दे सका, यहां से लिख रहा हूं। यहां आज पहुंचा हूं, कल यहां से चलकर घर पहुंचने का विचार है, उन लोगों का आह्वान

मेरे पास भी आया था । यदि आप अब तक लखनऊ न छोड़ चुके हों, तो एक बार घर
आइए । विचार किया जाय । आज बिलकुल अचानक असंभावित रूप से यहां आर्य-
भवन जैसी उजाड़ जगह में द्विवेदी जी (रामअवध जी) से भेंट हो गई—बड़ा विस्मय
हुआ ।

—आपका नन्ददुलारे

[पता गंगा पुस्तकमाला का]

[जनवरी, १९३१]

१९७. सुमित्रानन्दन पन्त

प्रियवर निराला जी ।

अच्छा ही हुआ [।] यदि आप उन पत्रों का छपना बुरा नहीं समझते तो मुझे
भी कोई आपत्ति नहीं—आपका दृष्टिकोण भी ठीक ही है । आप बड़ी मज़े की बातें
कभी लिखते हैं—एक प्रकार से आप मेरे लिए mystic-भाषा का प्रयोग करते हैं ऐसा
जान पड़ता है ।

मुझे अपना जीवन स्वयं ही बड़ा रहस्यमय लगता है । मानसिक व्यथाएँ भी मुझे
१९२१ से कुछ कम नहीं रहीं । अब भी थोड़ी बहुत हैं । आपकी बङ्गला की कविता भी
कुछ कम रहस्य से भरी मेरे लिए नहीं थी । अपनी बुद्धि के अनुसार अनेक दृष्टिकोणों
से मैं सोचने की चेष्टा अधिकांश समय किया करता हूं । एक thinker की life में किस
प्रकार की आपत्तियाँ खड़ी हो उठती हैं, आप स्वयं ही विचार सकते हैं । विचारों के
संघर्ष के कारण poetic Joy अभी मेरे हृदय में पूर्ण मात्रा में उदित नहीं हो पाई है ।
यद्यपि मैं पहले से बहुत अच्छा हूं । मन का परिष्कार करने में काफ़ी समय लगता है ।
अवश्य ही आपसे मिलने को मेरा जी लालायित है, फरवरी १५ तक लखनऊ पहुंच
सकूंगा—आपसे अनेक प्रकार की बातें पूछनी भी मुझे हैं—एक प्रकार से मैं आपके
जीवन से बिलकुल ही अनभिज्ञ हूँ, केवल अनुमान ही अनुमान आपके बारे में मेरे पास
है—आपने भी कभी खुलकर नहीं लिखा—मैंने भी अनेक बातें अपने जीवन की आपको
नहीं बतलाईं, अब मिलने पर कह सकूंगा—आज तक प्रयत्न करने पर भी नहीं कह
सकता था—यदि मुझे यह ज्ञात होता कि आप उस व्रजभाषा की कविता को प्रकाशनार्थ
देंगे तो शायद मैं अच्छी तरह लिखता—उसमें अधिकांश परिहास भी है यह तो साफ़
ही है । "क्षुद्र हृदय को नारो मेरो" etc. ऐसे expressions एक प्रकार से मेरे हृदय के
प्रतिकूल हैं क्योंकि मैं भीतर ही भीतर बड़ा ही आशावादी हूँ, यद्यपि मेरे बाहरी चित्त
को व्यथाएँ कभी २ उदास बना देती हैं ।

एक प्रति "माधुरी" की मेरे पास भी भेजवाइए[,] मेरे पास वैसे आती नहीं—

पत्रोत्तर शीघ्र प्रदान कीजिए—

आपको बहुत २ प्यार—

आपका

सुमित्रानन्दन पन्त

पुनश्च—

आपकी रचनाओं का appreciation जो मेरे हृदय में है उसे मैं अभी साहित्य को नहीं दे सका, मानसिक स्वास्थ्य लाभ करने पर मैं अपने हृदय के स्नेह को अवश्य ही साहित्य में जमा कर सकूंगा ऐसी आशा है—मैं अभी केवल धैर्यपूर्वक अपने को रोके हुए हूँ कि mind पूर्णत: प्रकाशित हो सके—

आपका
सुमित्रानन्दन पन्त

१६८. नंददुलारे वाजपेयी

लीडर प्रेस प्रयाग
३१-८-१६३१

प्रिय निराला जी,

कभी कभी अपनी लापर्वाही पर इतनी ग्लानि होती है कि जिन्दगी से घृणा करने लगता हूँ। विचारता हूँ तो लापर्वाही निश्चेतन स्थिति—मृत्यु ही है, क्षणिक मृत्यु सही। इस तरह मर-मर कर जीते रहने से आज घृणा हो रही है। कोई कारण नहीं था कि आपके अत्यंत सान्त्वनाप्रद पत्र के उत्तर में जो कार्ड लिखा था वह आज तक पोस्ट आफिस में न छोड़ दिया जाता, क्या कारण था कि दूसरे पत्र के उत्तर में इतनी देर करता ? समय न मिलने का बहाना बिल्कुल झूठा है—वास्तविक बात है वही लापर्वाही जिसें आज मृत्यु का ही एक रूप समझ गया हूं। क्षमा चाहता हूं। आश्चर्य तो यह है कि जिस समय यह पढ़ा था कि दूसरे फोड़े के बाद आपका स्वास्थ्य गिरकर पहले की तरह हो गया है, तब भय से कांप उठा था, निश्चय किया था कि कल ही (आपका पत्र रात को मिला था) पत्र लिखकर आपको कुछ दिनों के लिए प्रयाग बुलाऊंगा, पर इसी बीच में आ गया विस्मरण [—] लापर्वाही—मृत्यु !

बहुत सी बातें लिखनी हैं, बहुत सी कहनी हैं पर क्या आप प्रयाग आएंगे ? सुमित्रानन्दन जी ने एक बार दावत में बुलाया था, सचमुच कालाकांकर में रहेंगे। कहते में [थे] महीने मे एक हफ्ते के लिए प्रयाग आया करेंगे।

यदि आप आएंगे तो आपके साथ चित्रकूट चलूंगा, नहीं तो कहिए मैं ही दो-एक दिन के लिए आऊँ।

विशेष पत्र मिलने पर

[पता गांव का]

नन्ददुलारे

१६९. नंददुलारे वाजपेयी

लीडर प्रेस, प्रयाग
7. 9. 31.

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र मिला। इसके पहले मैं एक पत्र आपको लिख चुका हूं। आशा है वह अब मिल गया होगा। दुलारेलाल जी के सम्बन्ध में 'भारत' में व्यक्तिगत तो शायद

कोई बात नहीं निकली। विवाह अवश्य एक व्यक्तिगत बात है पर दुलारेलाल जी का
विवाह तो बहुत कुछ public interest की वस्तु हो गई है। यह तो हम आप सब जानते
हैं। सम्मेलन के सम्बन्ध में, कवि समाज के सभापति के रूप में जो कुछ निकला है वह
भी बहुत अनुचित नहीं है, मैं जहां तक समझता हूं, हल्का व्यंग्य है। फिर भी अब मैं
उनके सम्बन्ध में कुछ ऐसी बातें नहीं छपने दूंगा, जिससे उन्हें कष्ट हो।

आप एक बार यहां आइए अवश्य। मैंने पिछले बार भी लिखा था। चित्रकूट
यहीं से चलिएगा। विशेष फिर

आपका
नन्ददुलारे बाजपेयी

[पता गांव का]

लीडर प्रेस, प्रयाग
१४-९-३१

२००. नंददुलारे बाजपेयी

प्रिय निराला जी,

दो पत्र लिख चुका हूं: यह तीसरा है। इस बार आप पिछड़ रहे हैं। स्वास्थ्य
कैसा है? मैंने तो आपके पास आने के लिए लिखा भी था, पर अब तक उत्तर नहीं
मिला। इधर रामावधजी की चिट्ठी भी आई है। चित्रकूट चलने के लिए लिखा है।
आपका पत्र न आने से मैंने उन्हें कुछ नहीं लिखा।

'युवक' में आपकी कविता देखी, बहुत दिनों के बाद रचना प्रकाशित देखी है।
'भारत' के लिए आपने साहित्य सम्मेलन पर लेख नहीं भेजा। क्या आपकी तबीयत कुछ
अधिक खराब हो रही है। पत्र न मिलने से कुछ पता नहीं चल रहा। आज एक पत्र
रामरतन जी को लिख रहा हूं। यहां का काम किसी तरह चला जा रहा है। 'भारत' तो
गांव के पते पर मिल रहा होगा?

—आपका नन्ददुलारे

[पता गांव का]

लीडर प्रेस, प्रयाग
१२—१०—३१

२०१. नंददुलारे बाजपेयी

प्रिय निराला जी,

वहां से आकर मैं बेहद चिन्ता में पड़ गया और अस्तव्यस्त रहा। मेरे छोटे भाई
का बुखार उतरा ही नहीं [,] आज ३६-३७ दिन हो रहे हैं। हजारीबाग में है। यहां से
काशी गया। काशी से शिवदुलारे को भेजा। वे वहां से लौटे हैं, पर बुखार अब तक
उतरा नहीं। चित्रकूट की याद इसी चिन्ता में भूल गया हूं।

मैं नित्य प्रति पत्र की प्रतीक्षा करता रहता हूँ। नित्य प्रति बुखार न उतरने की ही खबर आती है। बयालीसवें दिन उतरने की संभावना डाक्टर बतलाते हैं। जैसा होगा, लिखूंगा।

लेख का पुरस्कार भेज देने के लिए आज कह सका हूं। दो एक दिन में भेजेंगे। मैं स्वयम तन्देही रखकर भेजवाऊंगा। अब तक बहुत अधिक चिन्तित रहा और अब तक वैसा ही हूँ।

दूसरा पत्र शीघ्र ही लिखूंगा।

आपका
नन्ददुलारे

[पता गाँव का]

२०२. शिवपूजन सहाय

शिवपूजन सहाय
C/o. महाशक्ति-मन्दिर

बुलानाला, बनारस सिटी
ता० २२—४—१९३२ ई०

मान्यवर पण्डितजी,

सादर सप्रेम प्रणाम—

आपकी लड़की की तबीयत खराब सुनकर बड़ी चिन्ता हुई। बहुत दिन हो गये। क्या यह वही लड़की है जिसकी शादी शिवशेखर जी से हुई है? शिवशेखर जी का पत्र आया है। कलकत्ते में सकुशल हैं। आप इस समय बड़ी भारी चिन्ता में फंसे हैं। ईश्वर शीघ्र आपको चिन्तामुक्त करे। अभी रहने दीजिये स्वस्थ और शान्तचित्त होकर कुछ लिखियेगा। कवि-चित्र भी पूर्ण निश्चिन्त और स्वस्थ होने ही पर भेजियेगा। पं० नन्ददुलारे जी एक सप्ताह के लिये यहाँ आये हैं। 'जागरण' मिर्जापुर सेठ जी के यहाँ जाता है। कविता का संशोधन प्रकाशित कर दिया है। मेरे योग्य सेवा लिखियेगा। व्यास जी कलकत्ते में हैं। शि०

[यह पहला कार्ड है जिसपर शिवपूजन सहाय का नाम और पता छपा हुआ है। लेकिन उनका पता है दूसरे के केयर ऑफ ही!]

२०३. नंददुलारे वाजपेयी

५० लूकर गंज प्रयाग
१-५-३२

प्रिय निराला जी,

आपका पत्र काशी से लौटने पर मिला। लेख आदि निर्मल जी ने रख लिये हैं। एक कविता आज निकली भी है। मैं तो १८ अप्रेल से ही छुट्टी पर हूं। कल फिर काशी जा रहा हूं। ५ को लौटूंगा। शीघ्र ही घर आने का निश्चय करता हूं। मेरे लेखों का संग्रह शायद 'भारती भंडार' शीघ्र ही निकाले। विनोद जी भी मांग रहे थे पर अब

तक तो मैं उन्हें नहीं दे सका। काशी में एक दूसरे सज्जन के काम से जा रहा हूं। मिलने पर कहूँगा।

वाचस्पति जी मेरे साथ ही प्रयाग आए हैं। वे आपको याद भी कर रहे हैं। उनकी बड़ी इच्छा है कि इधर आप कुछ मुक्तवृत्त लिखें और मेरी भी इच्छा है। 'परिमल' पढ़ते पढ़ते ऐसी भावना उठी।

कृष्णगोपाल अवस्थी सेकेण्ड डिवीजन बी० ए० आनर्स पास हुए हैं। आपने सुना ही होगा। अच्छा हुआ।

आपसे मिलकर बहुत सी बातें करनी हैं इसलिए पत्र में लिखने को कोई बात ही नहीं मिलती !

—आपका
नन्ददुलारे

[कृष्णगोपाल अवस्थी—संभवतः मगड़ायर के ; पता गांव का]

२०४. सियारामशरण गुप्त

श्रीरामः।

चिरगांव (झांसी)
१. ५. ३२

प्रिय निराला जी,

कृपा कार्ड मिला। आपकी पुत्री की बीमारी का समाचार जानकर दुःख हुआ। राम-कृपा से आशा है, शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होगा।

"साकेत" आपको पसन्द आया यह हम लोगों का सौभाग्य है। इसकी आलोचना कभी आप किसी पत्र में लिखेंगे यह जानकर प्रसन्नता हुई। मैं उत्सुकता पूर्वक उसकी तीक्षा करूंगा। आशा है, आप स्वस्थ हैं। शेष कुशल।

आपका
सियारामशरण

श्री निवास का प्रणाम।

[निराला ने 'साकेत' की आलोचना 'रँगीला' में की थी। पता गांव का है।]

२०५. हर्षवर्धन नैयाणी

रायबरेली
१०. ३. ३७

प्रिय निराला जी

१ली मार्च से मेरी नियुक्ति मुस्तकिल रूप से यहाँ हो गई। काम यद्यपि अधिक है परन्तु यह स्थान भी कुछ कम रमणीक नहीं। मैं महाराज तिलोई के बंगले के निकट ठाकुर चयन सिंह के बंगले में टिका हुआ हूँ। एक बार अवश्य पधारिये। आशा

है यह स्थान आपको रुचिकर प्रतीत होगा। १९ तक यहीं हूँ। कम से कम एक आध दिन के हेतु ही चले आइये। मैं भी बिलकुल अकेला हूँ।

वंगला चारों ओर से पेड़ों से घिरा है। रात मे केवल चार प्राणी रह जाते हैं [—] मैं, मेरा नौकर, मेरा माली व चौकीदार; जरूर आइये।

अधिक क्या लिखूं—आजकल अवकाश के समय बगीचा ठीक करा रहा हूँ. पाठकजी से मेरा प्रणम [प्रणाम] कह दीजियेगा [।]

सेवक

हर्षवर्धन

[हर्षवर्धन नथाणी, निराला के साहित्य प्रेमी मित्र, जिनका उल्लेख 'देवी' कहानी में है, इन दिनों रायवरेली में सरकारी अफ़सर—शायद ट्रेज़री आफिसर—थे।]

२०६. बनारसीदास चतुर्वेदी

निजी

टीकमगढ़,

२३-१-४०

प्रियवर,

वन्दे। आपका १७-१२-३९ का कृपा पत्र ७ जनवरी को मुझे कलकत्ते में मिला। दो महीने से मैं यात्रा कर रहा हूं। और मेरी डाक आगरे में इकट्ठी होती थी। १६ तारीख को यहां लौटा हूं। अनिवार्य विलंव के लिए क्षमा प्रार्थी हूं।

आपने मुझे आज्ञा दी है कि मैं प्रवासी वालों से आपका परिचय करा दूं। प्रवासी सम्पादक श्री रामानन्द चट्टोपाध्याय सीधे पत्र व्यवहार के पक्षपाती हैं। वे इसे पसन्द नहीं करते कि कोई आदमी उनके और लेखक के वीच में आवे। यदि आपकी रचना अच्छी होगी तो उसे अवश्य स्थान देंगे। वैसे मेरी समझ में सर्वोत्तम उपाय यह होगा कि आप तथा अन्य महानुभाव, जो हिन्दी तथा वंगला दोनों ही जानते हों, एक छोटी सी उपसमिति वना लें, और और हिन्दी की सर्वोत्तम चीज़ों का ही वंगला अनुवाद करावें। मैं तो वंगला नाममात्र को ही जानता हूं। और आप तो वंगाल तथा उस प्रान्त की भाषा और मनोवृत्ति से भलीभांति परिचित हैं।

एक ज़बरदस्त खतरे की ओर से आपको आगाह करने की ज़रूरत है। मदरास में ज़ोर ज़बरदस्ती द्वारा हिन्दी का जो प्रचार किया गया है उसका वंगाल पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। राष्ट्र भाषा की लाठी लेकर हम वंगालियों को हिन्दी नहीं पढ़ा सकते। केवल एक ही तरीका है, वह है मिशनरी ढंग से काम करने का। विनम्रता यदि हममें नहीं है, और साथ ही अपनी सर्वोत्तम चीज़ श्रद्धापूर्वक अर्पित करने की मनोवृत्ति भी नहीं है, तो हमें वंगाल में हिन्दी प्रचार की आशा छोड़ देना चाहिये। संख्या के वूते पर प्रचार की आशा करना गलत है। सांस्कृतिक कार्य में संख्या का कुछ भी महत्व नहीं। इस स्पष्टवादिता के लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

सम्मेलन के प्रचार मंत्री से मेरा पत्रव्यवहार नहीं।

विनीत,

बनारसीदास चतुर्वेदी

टीकमगढ़,
२७-१-४०

२०७. बनारसीदास चतुर्वेदी

प्रिय निराला जी,

वन्दे। २४ ता० का कृपापत्र मिला। वैसे ही मैं काफी भार ग्रस्त हूं। नई जिम्मेवारी न लूंगा। हां, बिना बंधन में बंधे कुछ सेवा अपने ढंग पर कर सकता हूं वह करता रहूंगा। यदि धृष्टता न हो तो दो एक बातें निवेदन कर दूं।

१. आप सम्मेलन से इस कार्य में सहायता अवश्य लें, पर अपने को सर्वथा स्वाधीन रखते हुए। सम्मेलन का कर्तव्य है कि वह आपकी योग्यता का लाभ उठावे। आप की कलकत्ते तथा शान्ति निकेतन की यात्रा का प्रबन्ध उसे ही करना चाहिये। यही मौका है जब कुछ काम हो सकता है।

आप कलकत्ते में पूज्य बाजपेयी जी से मिलें, और फिर उनको साथ लेकर शान्ति निकेतन की यात्रा करें। वहां श्री क्षिति बाबू तथा मि० ऐण्ड्रूज़ से बात करें। कवीन्द्र का आशीर्वाद तो ज़रूरी है ही। एक बात का खयाल रखने की ज़रूरत है। इस समय बंगाल अत्यन्त क्षुब्ध है। हमें बड़ी विनम्रता से और सेवा भाव से जाना चाहिये। थोड़ा भी अभिमान हमारे काम को चौपट कर देगा। दूसरों की कमज़ोरी के प्रति हमें अत्यन्त सहिष्णु होना चाहिये। बंगाल इस समय अत्यन्त सहानुभूति तथा प्रेम का पात्र है।

२. मुझे इस बारे में शक है कि यह कार्य सम्मेलन के अधीन हो सकेगा। सम्मेलन की अपनी नीति है अपने प्रस्ताव, उस नीति के संकीर्ण दायरे में आपको कार्य करने की पूर्ण स्वाधीनता नहीं मिल सकेगी। आखिर संस्था संस्था ही है।

३. पूज्य टंडन जी के प्रति मेरे हृदय में बड़ी श्रद्धा रही है, पर अब मुझे यह शंका होने लगी है कि कहीं उनकी साहित्यिक साधना की पूंजी कम तो नहीं हो गई। क्या वे उस पिता की तरह नहीं हैं जो मोह वश जिन्दगी भर बच्चों का अभिभावक बना रहना चाहता है। पर मुश्किल तो यह है कि हमारे यहां ऐसा भी तो कोई नहीं, जो सम्मेलन की बागडोर अपने हाथ में ले सके।

४. सम्मेलन के अधिकारियों में सहृदयता की मात्रा बहुत ज़्यादा नहीं है। राष्ट्र भाषा और सत्यनारायण के जीवन चरित्र को बिना पैसा लिये देने पर भी और लगभग एक हज़ार सत्य नारायण कुटीर के लिये भिजवाने पर भी कभी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ मुझे नहीं मिले। यह शिकायत के तौर पर नहीं कह रहा। स्वयं श्री जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल को ही कोई ग्रन्थ नहीं मिलते।

५. आपके सामने यह बात स्वीकार करने में मुझे कुछ संकोच नहीं कि मेरी खुद की साहित्यिक साधना करीब करीब खत्म हो गई है। वैसे भी मैं इस क्षेत्र का आदमी नहीं था। २० वर्ष प्रवासी भारतीयों की सेवा में व्यय किये थे, पर किसी से मिल कर काम करने की प्रवृत्ति न होने के कारण वह कार्य भी असफल रहा। जीवन का मुख्यभाग योंही नष्ट हो गया। साहित्य तो मेरे लिये रपट पड़ने की हरगंगा ही रहा है। न तो

वर्कर ही बन सका, और न साहित्यिक, न खुदा ही मिला न विसाले सनम वाला मामला है। पर अब अड़तालिसवां वर्ष में साहित्यिक बनने के प्रयत्न में हूं। खैर, यह सब प्राइवेट बात है। आपने साहित्य सेवा में कष्ट सहे हैं। उस साधना के बल बूते पर आप बंगाल का काम हाथ में लीजिए।

बनारसीदास चतुर्वेदी।

२०८. भगवती चरण वर्मा

VICHAR
Leading Hindi Weekly

Vichar office
402, Harrison Road,
Calcutta
27. 6. 40.

पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
हाथी खाना, भूसामण्डी,
लखनऊ।

प्रिय निराला जी,

आपकी कविता मिली, धन्यवाद—कोटि-कोटि धन्यवाद ! उसे मैं विचार के अगले अंक में अपने सम्पादकीय नोट के साथ प्रकाशित कर रहा हूं। नोट और कविता का प्रूफ़ आपकी सेवा में भेज रहा हूं।

यहाँ एक बात और कह दूं। हमारा—यानी आपका और मेरा साहित्य के मसले पर मतभेद बड़ा स्पष्ट रहा है; पर व्यक्तिगत मैत्री का भाव भी बहुत ऊंचा रहा है। यह नोट साहित्य-क्षेत्र का है, इससे व्यक्तिगत मनोमालिन्य न आने पावे उसकी मैं आशा करूंगा। पर यदि आप समझते हैं कि व्यक्तिगत मनोमालिन्य आ सकता है तो आप मुझे स्पष्ट लिख दीजियेगा। ऐसी हालत में मैं यह कविता न छापूंगा; क्योंकि कविता इस नोट के साथ ही छापने को तैयार हूं।

आशा करता हूँ आप सानन्द होंगे। प्रणाम के साथ,

आपका
भगवतीचरण वर्मा

[पता]

The Poet-Emperor
Pandit Surya Kant Tripathi Nirala
Hathikhana Bhusamandi
Lucknow

दूसरा भाग

(निराला के पत्र)

१. महावीरप्रसाद द्विवेदी को

श्री हरि: Mahishadal Raj
26/8/20

परम पूजनीय
श्री १०८ महावीर प्रसाद जी
द्विवेदी महाराज,
श्री चरणों मे [में]

वावा,

सेवा पर 'वङ्गभापा का उच्चारण' शीर्षक लेख भेजता हूं। आशा है, वङ्ग-प्रवासी एक अपरिचित सन्तान के परिश्रम को आप सफल करेंगे। इस लेख को 'सरस्वती' में स्थान मिलेगा । इति—

आपका अपरिचित किन्तु
आपका एकान्त सेवक
सूर्य्यकान्त त्रिपाठी
पता—-Mahishadal Raj
P.O. Mahishadal
(Midnapore)

२. महावीरप्रसाद द्विवेदी को

श्री श्री गणेशायनमः महिषादल राज
११—१—२१

श्री चरणकमलेपु : वावा, असङ्ख्य भूमिष्ठ प्रणाम

६ जनवरी का आसीस पत्र मिला। उसमें आप लिखते हैं—'आप संवन्ध जोड़ना ही चाहते हैं तो कुछ हाल अपना लिखिए। आप कहां के रहनेवाले हैं, क्या उम्र है,·····कुटुम्व···· ··व्यवसाय ··इत्यादि इत्यादि ।' आपकी इस लिखावट से मालूम हो रहा है कि मेरे पूर्व्व प्रेरित पत्र की व्याख्या विज्ञ-दृष्टि से नही [नहीं] की

गईं। उस पत्र को फिर से पढ़िए। देखिए तो, उसमे [उसमें] स्वार्थ का गुप्त वर्णन है या वन्धुता का विशद विवेचन ? उससे सम्बन्ध जोड़ने की आशा व्यक्त होती है या जुड़े हुए सम्बन्ध का प्रमाण ?

आप हिन्दी संसार के स्वनामधन्य पुरुष हैं। मैं आपको हृदय से पूजता हूं। यही आपसे मेरा सम्वन्ध है। इससे अधिक मधुरता और किस सम्वन्ध में [में] है ?

मैं कान्यकुब्ज ब्राह्मण हूं। आपका पड़ोसी हूं। उन्नाव जिला में पूर्व्वा [पुरवा] के पास का रहनेवाला हूं। उम्र २२ शरीर पांच फुट ११½ इंच लम्बा, छाती ३९ इंच चौड़ी। हृष्ट पुष्टाङ्ग न तु स्थूलकाय। अक्षर हूं, न साक्षर और न निरक्षर। सगा यानी माता, पिता, भाई, वहन, चाचा, चाची स्त्री संसार कोई नही [नहीं]। सव थे किन्तु १९१८ के इन्फ्लुएन्ज़ा मे [में] सव गुज़र गए। जीवन का लक्ष्य निरे वाल्य-काल से है परमपदलाभ। रामकृष्णमठ के सन्यासी मुझ पर विशेष कृपादृष्टि रखते हैं। स्वामी प्रेमानन्द ने कहा था—तुम्हारा विचार ठीक है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि मुझ पर ईश्वर की कृपा होगी। परन्तु उपस्थित स्थिति मेरी क्रमोन्नति पर वाधा डाल रही है। मेरे सिर पर पितृमातृहीन ६ नावालक भतीजे आदि का पालनभार अर्पित है। इसलिए अभी मैंने नौकरी करना स्वीकार किया है। लड़कों को सवालक करके अपने लक्ष्य पर वढ़ूंगा। मैं एक साधारणवित्त मनुष्य हूं। विद्वन्मण्डली के सामने मेरा परिचय मूर्खों में है।

मेरा [मेरे] पिता-पितृव्य इस स्टेट के फौजी अफसर थे। गण्यमान्य थे। मेरा जन्म यहीं हुआ। शिक्षा यहीं मिली। हिन्दी मैं [मैं] ने किसी व्यक्ति विशेष से नहीं सीखी। यहां हिन्दी का एक भी ज्ञाता नही [नहीं]। (आप पर भक्ति का एक कारण यह भी है।)

महाराज महिषादल मुझ पर अत्यन्त कृपा करते हैं। महाराज दो भाई हैं। वड़े राजा—सती प्रसाद गर्ग और छोटे राजा—गोपाल प्रसाद गर्ग हैं। इनके पूर्व्व पुरुष ज़िला वांदा के रहनेवाले थे। राजा रामनाथ गर्ग की रानी पति शव को लेकर चिता पर चढ़ने के पूर्व्व दरिद्रवेशी—समागत—लक्ष्मणप्रसाद को, जो कि वर्त्तमान नरेश के आजा थे, राजासन पर स्थापित कर गई थी [गई थीं]। इस राज्य की गवर्नमेन्ट रेवन्यू ३,३६,००० है। और वार्षिक आमदनी है १२,००,०००।

अधिक और क्या लिखूं ? संक्षेप मे [में] आपके आग्रह को पूरा कर चुका।

जगन्नियन्ता का नियम है कि सेवा सेव्य की आत्मा पर तृप्ति की और सेवक की आत्मा पर शुद्धि की छाप लगाकर दोनों के उन्नति मार्ग को साफ़ करती है। मनोराज्य के इस नियम को मैं निश्छल होकर प्रणाम करता हूं—

चरणसेवक—
सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

(हिन्दी सिखाइए) इति ॥

[पता :]

श्री चरणकमलेषु

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी

P. O. **Daulatpur**

(Raebareli)

[U. P.]

३. शिवपूजन सहाय को

श्री :

28 College street
Market
Calcutta. 13. 3. 23.

प्रियवर

आपका लेख चैत्र की संख्या में प्रकाशित,—नहीं,—छप गया है; कृपा करके कुछ और भेजिए। स्वामी जी को आपकी भाषा —आपकी शैली वहुत पसन्द है।

महिला महत्व की समालोचना, वन पड़ा तो, वैशाख के अंक में कर दूंगा। पुस्तक पढ़ कर जो आनन्द हुआ, वह कहीं आपके दर्शनों से भी अधिक सुखकर है।

आपके समाचार वावूजी से मिल जाते हैं। मैं सकुशल हूं। भौजी के हाल लिखिए। अन्य नये समाचार जो हों, आशा है, आप सूचित करेंगे [।]

किमधिकम् ।

आपका—
सूर्य्यकान्त

[पता :]

Hindibhushan

Baboo Shivpujan Sahaya

The Editor 'Mar. Agra'.

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी

अग्रवाल महासभा।

स्वागतकारिणी-समिति चम

अधिवेशन

झरिया (विहार) **Jharia**

[पते में 'Mar. Agra.' का आशय है—"मारवाड़ी अग्रवाल" ।]

४. शिवपूजन सहाय को

[कलकत्ता
जून १९२३]

प्रिय शिवपूजन जी,

पत्र आपका मिला था । बृहत् उत्तर लिखा तो, पर पोस्ट नहीं कर सका; क्षमा । शीघ्र भेजूंगा । आपकी बीवी तो अच्छी हो गई होंगी ? क्या रुपये गये ? भूमिका के लिए इतनी जल्दबाजी क्या है ? आखिर सूची भी तो चाहिये ? संवाद-पत्रों में सेठ जी का हाल पढ़ा होगा आपने । मुन्शी जी विवाह के लिये जाने वाले हैं, शीघ्र ।

मतवाला की अपील हाईकोर्ट में होगी । सेठ जी ४ महीने की क़ैद से ज़मानत पर छूटे हैं । मैं आनन्दपूर्वक हूं ।

आपका
'निराला'

बबनी ब्रजकिशोर को घर गये एक महीने से ज़्यादा हो गया । रामशंकर भी नहीं आये ।

[१६ जुलाई १९२३ के पत्र में नवजादिकलाल श्रीवास्तव ने शिवपूजन सहाय को लिखा था, "विवाह हो गया । ईश्वर की इच्छा पूरी हो गई । बीवी को वहीं छोड़ आया हूं । अगहन में यहां ले आऊंगा ।" इसी विवाह का उल्लेख निराला के पत्र में है । १६ जुलाई तक मुंशीजी का विवाह हो गया था । निराला का पत्र जून के अन्त में या जुलाई के आरंभ में लिखा गया होगा । महादेव प्रसाद सेठ ज़मानत पर छूटने के बाद शायद फिर जेल में थे । उस पत्र में मुंशी जी ने उनके स्वास्थ्य के बारे में लिखा था, "सेठ जी दुबले हो गये हैं । खाने पीने की व्यवस्था अच्छी नहीं है । चेष्टा कर रहा हूं । देखें क्या होता है ।" निराला ने अपने पत्र में शिवपूजन सहाय की पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा था । मुंशी जी को उनकी बीमारी की बात ईश्वरी प्रसाद शर्मा से मालूम हुई थी । इसके बारे में उन्होंने शिवपूजन सहाय को उसी पत्र में लिखा था, "पंडित जी [ईश्वरी प्रसाद शर्मा] कहते थे कि उन्हें क्षय हो गया । राजरोग है ।" इसी रोग से उनका देहान्त हुआ था ।]

५. नाथूराम शर्मा शङ्कर को

ADVAITA ASHRAMA
(Publication Dept.)
28, College St. Market,
Calcutta 3. 7. 23

श्री

श्री कवि शिरोभूषण,

बहुत दिनों से कुछ मिला नहीं । विनीत निवेदन है कि कुछ भेजने की कृपा

करके पत्र को समलंकृत कीजिए। यदि किसी मास का पत्र न पहुचा [पहुँचा] हो तो सूचित कीजिएगा।

विनीत—सूर्यकान्त त्रिपाठी।

[पता :]

Pandit
Nathura'm Sankar Sarma
Hardua ganj,
(Aligarh)

[अद्वैत आश्रम का पता वहां की मुद्रा द्वारा अंकित है; तारीख निराला की लिखी हुई है।]

६. महावीर प्रसाद द्विवेदी को

"मतवाला" कार्यालय।

बालकृष्ण प्रेस,
२२, शङ्करघोष लेन,
कलकत्ता, २७/१०/१९२३

श्री १०८ कमलचरणनमां
विजया क असंख्य भूमिष्ठ
प्रणाम।

बाबा

लिखा रहे, कतों जाव। मुलो जाव नहीं भा। हियें रहि गयन। कलकत्ते की पूजा दीख। ८ मी के दिन बाबू मैथिलीशरण ते भेंट भै, राय कृष्णदास के साथ आये रहैं। ३/४ दिन कउनव माड़वारी की कोठी मं [मैं] रहे रहैं। स्वभाव के तो बड़े अच्छे हैं। एक एक 'अनामिका' दूनो जनेन क दीन। दुसरे दिन हियां प्रेस मं [मैं] मैथिलीशरण आये, औ छन्द का नाव [नांव] पूछेन। तब पढ़ि कै सुनावा। प्रसन्न खूब भे। कहेन पहिलेहे रचना बड़ी अच्छी जानि परी मुलो छन्द समुझ मं [मैं] नहीं आवा। हम कहा, हमरी समुझ मं [मैं] यहि छन्द ते तुम्हरे वीराङ्गना के अनुवाद के छन्द मं [मैं] बहुत थ्वारै फर्क है; वह वेतुका कवित्व छन्द है औ यहि मां कतों कवित्व छन्द की 3/4, कतों १/२, कतों १/३ लाइन आवति है। महादेव बाबू हमरे परिचय मं [मैं] तुम्हार सम्बन्ध जोरेन तो मैथिलीशरण कहेन कि हमका तो वई वनायन हैं। यही तना की बहुतेरी बातें होती रहीं। हमारि इच्छा है, अनामिका एक दईं तुमका पढ़ि कै सुनाई।

'मतवाला' की कविता औ समालोचना पढ़ि कै लिख्यो। भूल कतों होति होई तो सुधारब। 'निराला' की कविता मं [मैं] कहां का करैक चही लिख्यो। यह सम्मति हमरे हे लगे रही।

आशा है अच्छे हौ औ घर मां अच्छी भलाई है। चि० कमला किशोर कस हैं,

कानपुर कब तक जइहौ, घरवालेन क मलेरिया ज्वर छूट कि नहीं, सब लिख्यो।

दास

सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

हम रहित हियें हैं [है]। चहै समन्वय के पते पर लिख्यो चहै मतवाला के पते पर चिट्ठी हमका मिलि जाई।

दास

सूर्य्यकान्त

[पता :]

Shreeman
Pandit Mahavir Prasad ji
Dwivedi Maharaj
Daulatpur (Raebareli)

[पत्र दौलतपुर से जुहू कलां, कानपुर भेजा गया।]

७. महावीर प्रसाद द्विवेदी को

६/११/२३

श्री चरणेषु—

कृपापत्र पढ़ा। मतवाला कै संख्या दीख। सरस्वती सम्पादक के नोटन मं [मँ], न समुझि सकेन, भूलै काहे नहिन। कारण लिखि देत्यो तो समुझि जाइत। अबै तो मतवाला की समालोचना के पुष्ट कारण ते भूलै जानि परत है।

सरस्वती सम्पादक के विषय मं [मँ] लिखै बैठेन तो हमहूं ५/६ पृष्ठ लिखि डारा। मुलो पीछे जब जाना कि तुम्हारा समय अकारण नष्ट होई तब फारि डारा। याकन कहा, 'द्विवेदी जी का प्रत्यक्ष नहिन तो का भा सरस्वती ते परोक्ष सम्बन्ध तो है; उइ अपनी बिदाई मं [मँ] यह बात स्वीकार करि चुके हैं। अतएव सरस्वती क पक्ष उइ लेबे करिहैं। औ वहि का वई बनायन है [हैं] तो अपने रहत उइ वहिकै उल्टी समालोचना देखि सकति हैं?' कुछो होय हमका युक्ति ते काम। बात युक्तिपूर्ण होई तो चित्त मं [मँ] वैठि जाई, न होई, अलग ह्वइ जाई।

हम जो रामायण पाठ आदि मं [मँ] बनियई क भाव राखा होब—अर्थात् लोग हमका अच्छा कहैं औ हम नामी ह्वइ जाई—बड़े सच्चरित्र साधु महापुरुष कहाई—हे राम हम तुम्हार नाव लेइत है बदले मं [मँ] तुमहूँ कुछ दियव, तो जउन यहु ह्वय रहा है यहु सब ठीक है। यही तना का विपरीप [विपरीत] फल मिलत है। औ लोग प्रकृति का एक अध्याय पढ़ि कै समुझैवाली बहुती बातै पाय जाति हैं।

—दास सूर्य्यकान्त।

८. महावीर प्रसाद द्विवेदी को

ADVAITA ASHRAMA
(PUBLICATION DEPT.)
28, College St. Market,
Calcutta. 10/11/23

श्री :
श्रीचरणेषु निवेदनम्

सेवा में अभी अभी जो पत्र भेजा गया, भय है, उसे पढ़ कर आपके चित्त को व्यथा हो। मैं आपको किसी तरह की चोट नहीं पहुंचाना चाहता। यदि आप ही बुरा मानते हैं तो अब मैं सरस्वती की समालोचना न किया करूंगा। परन्तु उसके सम्पादक ने अकारण ही मेरे साथ दुर्व्यवहार किया। कविता न छापते, जवाब तो देते। इस पर अधिक और क्या लिखूं। आशा है आप और कमलाकिशोर अच्छे हैं।

दास
सूर्य्यकान्त

मेरे अकारण अपमान पर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया।

[पता:]

Pandit
Mahavirprasad ji
Dwivedi
Juhi Kalan
(Cawnpore)

९. गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री को

"मतवाला कार्यालय"
(बालकृष्ण प्रेस)

२३, शंकर घोष लेन,
कलकत्ता २९/४/१९२४

प्रियवर शास्त्री जी,

पत्र आपका मिला। शिवपूजन जी इस समय यहां नहीं हैं। घर गये हैं। आठ दस दिन में, सम्भव है, आ जायें। उनके आने से आपका यह पत्र उन्हें दे दिया जायगा। यहां तो आप पर किसी तरह का असन्तोष नहीं है। बल्कि यदाकदा आपके सौभाग्य और विद्वत्ता की प्रशंसा ही होती है। और यदि 'मतवाला' की किसी टिप्पणी पर आपको दुःख हुआ हो तो इसे आप अपना ही भ्रम समझिये। टिप्पणी मधुररसाश्रित थी, द्वेष-भाव-

कलुषित नहीं। आप पर सभी प्रसन्न हैं। केवल मैं असन्तुष्ट हूं। कारण यह कि मैं इस मतवाला-मण्डल का मुंह लगा और "बड़े आदर का" छोटा भाई हूं। तदनुसार आप भी मेरे बड़े भाई हुए। अब बतलाइये कि यह कहां का न्याय है जो आपने मेरी नामौजूदगी में विवाह भी कर लिया और मेरी "भौजी" को अभी तक मुझे दिखाया भी नहीं। इस अपराध का आप क्या दण्ड स्वीकार करते हैं? किमधिकम्

आपका—
त्रिपाठी 'निराला'

[पता]
श्रीमान् पण्डित गांगेय नरोत्तम शास्त्री
पं० विनायक मिश्र जी का क्षेत्र,
दशाश्वमेध,
(बनारस सिटी) (Benares City)

Matwala
36, Sunkerghose Lane,
Calcutta,
21. 5. 1926

१०. शिवपूजन सहाय को

प्रिय शिवपूजन जी,

आपकी कोई चिट्ठी नहीं मिली। आशा है आप सस्त्रीक प्रसन्न हैं। उत्तर शीघ्र दीजियेगा।

रस अलंकार कल-परसों भेजूंगा। कुछ बढ़ गया है। मैंने अपनी ओर से कुछ लिखा। लड़कों की पाठ्यपुस्तक है, रसों, भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी और अलंकारों के लक्षण और उदाहरण मात्र दिये गये हैं। शिष्टता का काफ़ी खयाल रक्खा गया है। साथ ही कुछ छोड़ा भी नहीं गया केवल नायिकाभेद को छोड़कर। आप समझिये कि २५१ पृष्ठ रँग डाले हैं लालाजी ने सिर्फ़ अलंकार लिखकर, सो भी बहुत विस्तृत नहीं। यदि दो एक फार्म बढ़ जाय तो क्या कोई हानि होगी? आज १०१ वा पृष्ठ लिख रहा हूं (मेरा एक पृष्ठ कुछ कम आपका एक पृष्ठ होगा) [।] रस तो ६० के कोठे में पूरे हो गये थे, परंतु अलंकार अभी आधा भी नहीं हुआ। जनाब एक एक अलंकार के आठ आठ बच्चे हैं। ऐसे १०० से भी ज्यादा अलंकार हैं। कम से कम पच्चीस रुपये अपने

[पत्र के एक किनारे] रुपये २५) घर अवश्य भेजिये अपने नाम से

Beharilal Tripathi
vill. Garhakola. P.O.. Magrair
Unao को, कापी पाते ही भेजियेगा। आप से पहले कह चुका हूं।

आपका—निराला

[पत्र के दूसरे किनारे] मुझे विश्वास नहीं कि पुस्तक के बढ़ने पर उन्हें कोई एतराज़ होगा जबकि ऐसी दशा है।

[पताः] Babu
Shivapujan Sahaya
Hindi Bhushan
c/o Gyan Mandal
Benares City

[लालाजी—लाला भगवानदीन, "अलंकार मञ्जूषा" के लेखक।]

११. रामगोपाल त्रिपाठी को

गढ़ बनैली [मार्च, १९२७]

चिरंजीव रामगोपाल,

अब हम को कलकत्ते के पते पर चिट्ठी न लिखना। जबतक हम चिट्ठी न दें तब तक चिट्ठी न लिखो। हम इस समय घूम रहे हैं, काम से।
केशव, कालीचरण को [आसीस]।

सूर्यकान्त

[पताः]
Shreejut
Ram gopal Tripathi
Gadhacola Village
P. O. Magrair
(Unao)

[चिरंजीव रामगोपाल त्रिपाठी—निराला के चचेरे भतीजे। कुछ शब्द मिट गये हैं, संभवतः पानी गिरने से।]

१२. रामशंकर शुक्ल को

श्री

गढ़ वनेली
पूर्णिया
[१८ मार्च १९२७]

बच्चा,

भागलपुर से वड़ा चक्कर काटना पड़ा। जिस लाइन से, कटिहार हो कर हम लोग भागलपुर गए थे, उसी लाइन से गंगा उतरकर पूर्णिया आना पड़ा। वनेली राज यहीं पर है। वनेली स्टेशन है। यहाँ मैं एक सज्जन मारवाड़ी ब्राह्मण के यहाँ ठहरा हुआ हूँ। आज सुवह नौ वजे राजा साहव से मिलने के लिये गया था, लेकिन उन से मिलने के पहले ही उनके नौकरों ने होली के कारण मेरे ऊपर धूल झोंक दी—कपड़े वरवाद हो गये। राजा साहव के कर्मचारी मुझे गढ़ के अन्दर ठहरने के लिए कहते थे। लेकिन वाहर मुझे आराम खूव है। आज तीन वजे मुलाकात के लिए जाऊँगा। प्रणाम।

सूर्यकान्त

राम लाल को प्रेम।

शिवशेखर और दयाशंकर को आसीस।

शिवशेखर ! तुम ने चिट्ठियों वाला वंडल जिस में चतुर्वेदी जी वग़ैरः की सम्मति थी दिया ही नहीं ! सूर्य्यकान्त

[पता:]

Shreejut
Ram Shanker Sukul
Awasthi+Ghose+Co
10/5 Canal East
Road
Calcutta

[वच्चा—रामशंकर शुक्ल ; गढ़वनैली की डाकमुहर में तारीख—१८ मार्च, २७।]

१३. विनोदशंकर व्यास को

उन्नाव
११-५-२७

प्रिय व्यास जी,

मैं सकुशल ६ मई को [के] दिन ११ वजे घर पहुँच गया। इस समय रोग कुछ वढ़ गया है, शायद रास्ते की धूप खाने की वजह। कल से दवा करूँगा। यहाँ आम खूव हैं।

शायद आप भी २-४ दिनों में गाँव चले जायँ। उत्तर दीजिये। गाड़ी में एक

मजेदार घटना हुई, अखबारो के लायक, फिर लिखूंगा ।

बावू साहव श्री जयशंकर प्रसाद जी, हिन्दी भूषण श्री शिवपूजन सहाय जी, श्री शान्ति, सुमन जी आदि से मेरा प्रेम।

विशेष हाल फिर लिखूंगा ।

मुन्नी को प्यार

[शान्ति—शान्तिप्रिय द्विवेदी ।]

१४. विनोदशंकर व्यास को

मगरायर, उन्नाव

१२-६-२७

प्रिय विनोद जी,

पत्र आपका मिला । आपके बनारस न रहने का समाचार शान्ति जी से मिल चुका था। इधर ५-६ दिनों के लिए मैं भी ससुराल चला गया था। लड़के का जनेऊ था।

यहाँ पत्र आने में देर होती है। ८-९ दिन बाद मिलता है। मेरे पास और नये समाचार कुछ नहीं। अपनी, नई खबर अवश्य भेजिये। बावू साहव+महा द्विवेदी प्रसंग अच्छा रहा ।

[महा द्विवेदी—महाप्रसाद द्विवेदी; नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा द्विवेदी जी के अभिनन्दन तथा प्रसाद जी से उनके छायावाद-संवन्धी वार्तालाप की ओर संकेत है।]

१५. विनोदशंकर व्यास को

उन्नाव

मगरायर, आषाढ़ सुदी १० मी

[जुलाई, १९२७]

प्रिय व्यास जी,

पत्र आपका मिला। यहाँ रोगग्रस्त जीवन दु:सह हो रहा है। आप लोगों के पत्रों से ही वचा हूँ। अव तक यहाँ वड़ी गर्मी थी। अव दो रोज़ से वर्षा होने लगी है। आम खूव पकते हैं।

वह पुस्तक पूरी हो गई थी। अव तक आपके शब्दो में मस्ती ले रहा था। अव एक दूसरी पुस्तक लिखूंगा, आर्डर-पूर्ति, अन्त:सार शून्य। इन्हीं दिनों पन्त जी की समालोचना भी लिख डालना चाहता हूँ। साधनाभाव है। किसी तरह लिखूंगा। वावू साहव के पत्र का जवाव अभी तक मैंने नहीं लिखा, क्योंकि वहुत दिनों वाद उन्होने जो कुछ लिखा, वह नहीं वरावर।

शिव पूजन जी को मैंने लिखा है। क्या 'सुधा' निकली? मुझे इस समय साहित्य से वनवास मिला है।

[गढ़ाकोला]
५-४-२७
[५-८-२७]

१६. विनोदशंकर व्यास को

पत्र आपका आया, आपका हार्दिक स्नेह, ईश्वर मुझे हमेशा दिलाये। उत्तर देर से जा रहा है—क्षमा।

अब बीमारी ३ आना और है, अन्दर १५ दिन के आशा है, बिल्कुल साफ हो जायगी। दवा निहायत अच्छी है। आम भी खा लिये, बीमारी भी अच्छी करली।

अब तो आप खूब मस्ती लेते होंगे। आपकी चिन्ता की क्लिष्ट, मृदु, कुछ गहन रेखा कवि की दृष्टि बनकर नहीं रह सकी। आशा है, लापरवाही से जो रत्न नष्ट हो चुके हैं, चिन्ता उन मणियों को निकालेगी।

क्या आप सरस्वती-सम्पादक का निमन्त्रण स्वीकार कर बनारस आ गये ?

आपकी सहृदय सरलता का सेवक
सूर्यकान्त

[विनोदशंकर व्यास की पुस्तक 'दिन रात' में इस पत्र पर छपी हुई तारीख ५-४-२७ सही नहीं है। व्यास जी ने इसे मई-जून के पत्रों के बाद रखा है, वह उचित ही हैं।]

१७. शिवपूजन सहाय को

श्री:

Garhakola
भादों बदी २

प्रिय शिवपूजन जी,

पत्र आपका मिला। ईश्वरी जी का हाल श्रीकृष्ण सन्देश में पढ़ चुका था, मृत्यु क्या आश्चर्य सा हो गया। रामशंकर जी से सुना आपका एक लेख सुधा के शीर्ष-स्थान में छपा है, शायद "सुधा" शीर्षक है भी। "सुधा" की शकल मैंने नहीं देखी। "माधुरी" के सावन के अङ्क में शायद मेरी "रेखा" का एक अंश छपे। पन्त जी की समालोचना के ३० स्लिप आज "माधुरी" में छपने के लिये भेज रहा हूँ, इस तरह के ६० स्लिप और होंगे, शायद तीन अंक तक क्रमशः प्रकाशित करना पड़े। बाकी अंश भी इसी उठान में पूरा करूंगा, नहीं तो स्वभाव तो आप जानते ही हैं। पढ़ियेगा।

मेरी बीमारी बस एक आना और है। लेकिन कई फोड़े हुए हैं। समय बडा खराब है। अंगुली में (पैर की) एक चोट लगी थी। पकी है, चला नहीं जाता, कई रोज़ से।

मतवाला वाले हमेशा टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं। उग्र की यह भी एक मौलिकता थी।

अपना और ललन का हाल लिखिये। मैं व्यास जी और बाबू साहब को लिख चुका हूँ। बाबू साहब की "कामना" मिली। शान्ति से अपने पत्र का सब हाल अवश्य कह दीजियेगा। उनका पत्र मिला, उत्तर दिया या नहीं, याद नहीं—

"निराला"

Hindibhushan
Babu Shivapoojan
Sahayaje
Dandapani bhairav
(Benares City)

[पोस्टकार्ड पर सफ़ेद चिकना कागज़ चिपका कर लिखा है। पते की जगह भी कागज़ चिपका कर लिखा है। संभवत: किसीको कार्ड लिखा, भेजा नहीं; उसी का उपयोग शिवपूजन सहाय के लिये किया। मगड़ायर की डाकमुहर में तारीख है: १६ अगस्त '२७।]

१८. स्वामी विश्वेश्वरानन्द को

Garhakola
23. 8. 27

Respected Prabhu Maharaj,

I receive your letter today. Sorry to read about Sarat Maharaj. I fear, I will not see him again. When I think of the attack of Apoplexy and of his lying in unconscious state...

[संभवत: इतना लिखने पर उन्हें असंतोष हुआ और पत्र दुवारा लिख कर—शायद बँगला में—उन्होंने स्वामी जी के पास भेजा। इन्हीं स्वामी जी के नाम बँगला में लिखा हुआ पत्र आगे देखें। सरत महाराज निराला के लिये साक्षात् महावीर थे; उनके अचेत अवस्था में पड़े होने के समाचार से निराला का विचलित होना स्वाभाविक था।]

१९. केशवलाल त्रिपाठी को

पता :—पास राम शंकर सुकुल
मिलै सूर्य्यकान्त त्रिपाठी
१०/५ कैनल ईस्ट रोड
अत्रस्थी घोष कम्पनी
उल्टाडांगा
(कलकत्ता)
[९-९-२७]

चिरंजीव केशव व कालीचरण को आसीस। आगे हम अच्छी तरह कलकत्ता आ गये। किसी बात की चिन्ता न करना। एक चिट्ठी डलमऊ से तुम को लिखी। मिली होगी। आज २०) बीस रुपया मनी अर्डर [आर्डर] से भेजते हैं। सो ५) पाँच रुपया तुम लेना और १५) मन्नीलाल जी पण्डित को देना। अभी हमारे रुपये नहीं मिले। जल्दी रुपये मिलें गे। तब तुम को और पण्डित जी को और खर्चा भेज देंगे। हमारी चिट्ठियाँ ऊपर के पते पर भेज दो। किताबें जो आवें उनको न भेजना।

हम अच्छी तरह हैं। रुपयों के पाने पर चिट्ठी जल्दी देना। दो दिन वाद रामगोपाल के पास जायंगे।

तुम्हारा काका

पता—Shreejut
Keshava Lal Tripathi
Garhakola Village
P. O. Magrair
(Unao) U. P.

[केशवलाल, कालीचरण—निराला के चचेरे भतीजे; मन्नीलाल—महाजन।]

२०. केशवलाल त्रिपाठी को

१०/५ कैनल ईस्ट रोड
उल्टाडांगा (कलकत्ता)
तारीख १३. ६. २७

चिरंजीव केशव व कालीचरण को चूमी।

तुम लोगों के भेजे हुए चिट्ठियों का वंडल, दो लिफ़ाफों में चिट्ठियाँ सब मिलीं। तुम्हारा हाल पढ़कर खुशी हुई। हम हरगोपाल के पास गये थे। वहाँ सब राजी खुशी है। विहारीलाल ने लिखा है कि हम बहुत वीमार हैं, सो हम ने चले आने के लिए लिख दिया है।

और वच्चा केशव, तुम ने जो लोगों के दाम दे दिये और अनाज खरीद लिया सो अच्छा किया। पंडित जी ने वाग का चारा २२) में वेच डाला यह भी अच्छा हुआ। देखना, पेड़ न चर जायं जो पौधे हैं। रुपया पंडित जी को हम वहुत जल्द भेजते हैं। हम को यहाँ १५०) डेढ़ सौ रुपये का एक छोटा मोटा काम मिल गया है। सो दस दिन में खतम कर के घर आवेंगे। लेकिन एक नौकरी भी मिल रही है और रुपयों की दिक्कत से वचने के लिये हम जवान भी दे चुके हैं, इसलिये कहा नहीं जाता कि हम ठीक ठीक आ सकें गे कि नहीं। हमारे पैर के घाव अच्छे हो गये।

तुम लोगों को जड़ावर भेजें गे। रामकृष्ण को अपने साथ ले आने के लिये घर जायं तो जायं। छोटकऊ भैया को प्रणाम।

—तुम्हारा काका

आज तुम्हारे नाम पंडित जी [को] ४०) चालीस रुपया भेजते हैं।

पता—
Shreejut
Keshava Lal Tripathi
Village Garhakola
P.O Magrair
(Unao) U. P.

२१. शिवपूजन सहाय को

10/5 Canal East Road
Ultadanga, Calcutta
13. 9. 27

प्रिय शिवपूजन जी,

आपके पत्र का एक उत्तर लिखा, पर पोस्ट करने की नौवत न आई। पाण्डेय जी को आपने जो कुछ लिखा है, वह आप जैसे लेखनकुशल साहित्यिक की निर्वैर लेखनी के अनुकूल ही हुआ है।

अच्छा सुनिये, पाण्डेय जी का कार्ड घर से redirected होकर यहां मिला। दो विषय मुख्य हैं—"आप कितने वेतन पर आ सकें गे ?" और "आपके क्वालिफ़िकेशन क्या हैं ?" वेतन के संबन्ध में १००) और क्वालिफ़िकेशन के संबन्ध में पहले मैंने ज़रा शाब्दिक दिल्लगी की थी, परन्तु फिर वह पत्र फाड़ डाला। सोचा, अकारण क्यों कष्ट दूं, उन्होंने व्यवसाय ठीक ही तो किया है। खैर अपने क्वालिफ़िकेशन पर सरल उत्तर लिखकर आज चिट्ठी पोस्ट कर दी।

खैर, सेठ जी मिले, रामशंकर जी के डेरे पर, उग्र जी को साथ लेकर, खास तौर से मेरे ही लिये आये थे, व्यथित, मैं उनसे मिलने मतवाला नहीं गया—इसलिये। क्षमा मांगी, उनकी सरलता। अव लोग इसे व्यवसाय कहते हैं। कारण दूसरे दिन मुझ से उन्होंने पूछा, सुना आप माधुरी जा रहे हैं ? मैंने कहा, "हैं" नहीं, "था"; जगह भर गई। उन्होंने कहा, हमारे यहां रह जाइये। बड़ी देर के वाद उन्होंने कहा, ६०) से अधिक पत्र में गुंजाइश नहीं है महाराज। भाई, मैं तो असमंजस में पड़ गया, मत० की सहका ···· स्वीकार कर ली। अभी join नहीं किया। १५०) २००) के दो आर्डर मिल गये हैं। इधर स्वास्थ्य का यह हाल है। वेणीपुरी जी को नमस्कार। आप वावू साहव से दवा भेजवा दीजिये, पत्र दिखा दीजिये। माधुरी में नाटक पर आपने खूव लिखा। मेरी वेतुकी अशुद्ध छपी कई जगह।

—निराला

Babu
Shivapoojan Sahayaje
Dandapani Bhairava
(Benares City)

[सहकार······; "का" के वाद का अक्षर अस्पष्ट है। "त्रिपथगा" (फर्वरी '६२) में शिवपूजन सहाय की भेजी हुई पत्र की जो प्रतिलिपि छपी है, उसमें यह शब्द "सहकार्यता" है। अंतिम अंश में "दवा भेजवा दीजिये" के वाद "समाचार कह दीजिये" भी छपा है; मैंने कार्ड की जो प्रतिलिपि की थी, उसमें ये शब्द नहीं हैं। संभव है, प्रतिलिपि करते समय छूट गये हों।]

२२. जयशंकर प्रसाद को

मतवाला
कलकत्ता

Matawala
36, Shanker Ghose Lane
Calcutta
[सितम्बर १९२७]

श्रीमान् बाबू साहब,

चिरकाल बाद पत्र दे रहा हूँ। इधर विनोद जी के पत्र से मालूम हुआ, आपकी तबियत कुछ अस्वस्थ है। आशा है, अब सकुशल होंगे। मैं कलकत्ते में तो हूँ, पर किसी स्थिति में नहीं हूँ। उसी तरह का निष्काम भाव रहता है। अब एक दूसरी बला सिर दर्द की लग गयी है। इधर १५ दिन से बेचैन रहता हूँ। पर कुछ लिखता भी जाता हूँ। इस समय Head Quarter मतवाला ही है। बहुत कुछ बेफिक्र हो चुका हूँ। देखिए आगे राम की क्या इच्छा होती है। पं० शान्तिप्रिय जी को पत्र देने के लिए कहिएगा, कुछ बात करनी है, उनके सम्बन्ध की।

सविनय
निराला

[पता]

Shriman
Babu Jay Shanker je
"Prasad"

Govardhan Sarai
Benares City.

[यह पत्र सितम्बर १९२७ में लिखा गया होगा जब निराला से महादेव प्रसाद सेठ ने 'मतवाला' में सहायक के पद पर काम करने को कहा था और निराला ने यह पद स्वीकार कर लिया था पर काम करना शुरू न किया था।]

२३. जयशंकर प्रसाद को

10/5 Canal East Road
Ultadanga
Calcutta
1-10-27

श्रीमान् बाबू साहब,

क्षमा। बहुत दिनों के बाद लिख रहा हूं। दवा मिल गई। आज शनिवार है। कल से सेवन करूंगा। मेरी नियुक्ति का हाल शिवपूजन जी से मिल गया होगा आपको। फिलहाल मतवाला का सहायक हूं। लिफाफे में पत्र लिखें और अपनी उन पंक्तियों को जो पुरानी हैं छपने के सन्-संवत तारीख के साथ भेजें जिनके मध्य भाग

में पूर्ण विराम आया है—आपको याद होगा, मैंने उनको पसंद किया था—वे मेरे काम की हैं, उनके अभाव से समालोचना का दूसरा अंश जो यहाँ से भेजा है जिसमें मुक्त काव्य का थोड़ा सा विचार आया है, अधूरा चला गया, अब तीसरे अंश में अच्छी तरह लिखूंगा।

सविनय

निराला

बहुत शीघ्र पत्र दें और वे पंक्तियां, मेरी पुस्तकें घर रह गईं। यहां कौन लायब्रेरी जाय।

["सरोज" में प्रकाशित उस लेख की चर्चा है जिसमें निराला ने प्रसाद-काव्य का विवेचन किया था।]

पता :

Babu
Jay Shankar Prasad
Govardhan Sarai
Benares City.

२४. शिवपूजन सहाय को

Awasthi Ghose & Co.
105, Canal East Road
Ultadanga,
Calcutta,
1/10/1927

प्रिय शिवपूजन जी,

दवा कल शाम को मिली, पत्र भी। मैं मतवाला में मुंशीजी का सहायक हूं। काम मधुचक्र आदि जो साधारण शीर्षक हैं, उन्हें पूरा करना, प्रूफ देखना आदि। ६०) देते हैं।

सुधा के लिये अभी कुछ भी नहीं किया, सेठ जी के पास 'सुधा' है भी नहीं। अभी तो रूसी रासपुटीन के १८॥ इंच के ठपाक (?) वे [वे] सँभालें। आगे हरि इच्छा।

पहले से कुछ अच्छा हूं। घर में सब कुशल है। बिहारीलाल रंगून में है। पत्र आया है, अच्छी तरह हैं। उमादत्त जी ने रुपये दे दिये।

समन्वय का काम रामप्रसाद जी ही करते हैं। मैं स्वामियों से नहीं मिला। सुनता हूं, इस साल के बाद समन्वय बन्द हो जायगा।

रामशंकर जी अच्छी तरह हैं। उनकी भादों की 'माधुरी' एक हफ्ता हुआ आ गई, अभी सेठ जी की नहीं आई। मेरी समालोचना निकल गई। दूसरा अंश भी यहां से भेज चुका। अब तक भादों का अंक आपको भी मिल गया होगा। पढ़ कर राय

लिखियेगा। प्रति अंक पढ़ कर राय लिखिये। सच्ची।

आपने छतरपुर महाराज के प्राइवेट सेक्रेटरी गुलावराय एम. ए. महाशय को मेरे संवन्ध में लिखा है। अभी उनका कोई पत्र नहीं आया। मैं स्टेट में रह चुका हूं। यदि वे लिखेंगे तो आपको लिखूंगा।

आप अपनी योग्यता के लिए रोते हैं। आपके आंसू पोछूं, वह शक्ति यहां नहीं। मैं तो जो कुछ देखता हूं, वहुत है मेरे लिये—पूछे हु मोंहि कि रहौं कहँ मैं पूछत सकुचाउँ। कोई कहता है, हाल, वेताव-ए-दिल होश में आलू [आलूं] तो कहूं। परन्तु यहां तो होश आने पर भी भूली हुई वातों की याद नहीं आती—जो कुछ जानता था, वह भी गया।

सेठ जी ने गर्ग जी को वुलाया है। चिट्ठी लिख दी गई है। अभी आये नहीं। उनकी इच्छा थी, जहां मैं रहूंगा, वहीं रहेंगे। शायद अव आ जायं। शान्तिप्रिय जी की कोई खवर नहीं मिली। मिलें तो पत्र देने के लिए कहिये गा। उग्र जी और सेठ जी घर जानेवाले हैं—पूजा के इधर-उधर। खूव विकती हैं उग्र जी की पुस्तकें। दिल्ली का दलाल डेढ़ महीने में ११०० विक गया। ललन के स्नेह।

आपका
—निराला

२५. विनोदशंकर व्यास को

१०-१०-२७

रोग वहुत अच्छा है। दाहिने घुटने में सूजन है। वात के लक्षण। देखिये क्या होता है। इधर तो समय वड़ा वुरा रहा। आपकी भाषा का शान्त सहज सौन्दर्य वहुत कम लोग समझेगें। दूसरे उसे साधारण से अधिक शायद और कुछ न कहेगें। पर लिखते हैं आप पुरदर्द। मैं कुछ समझता हूँ।

२६. आनन्दमोहन वाजपेयी को

C/o AWASTHI GHOSE & Co.

10-5, CANAL EAST ROAD,
ULTADANGA.
Calcutta, 16/10/1927

प्रिय भाई आनन्द मोहन,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। सभापति के गुरु उत्तरदायित्व का वोझ आप लोग मेरे कमज़ोर कन्धों पर रखना ही चाहते हैं तो अच्छा, स्वीकार करता हूं।

मैं प्रसन्न हूं। अपने समाचार देना।

तुम्हारा
सूर्य्यकान्त

२७. जयशंकर प्रसाद को

Dalmau
[नवंबर १९२७]

श्रीमान बाबू साहब,

आपको बहुत देर से लिख रहा हूं। बनारस छोड़ने के पश्चात् अब तक कहीं स्थिर नहीं रह सका। कल घर जाऊंगा। कल से कुछ दिनों तक आसन अविचल है। कानपुर के D. A. V. College का कवि सम्मेलन देखा। निवाह किया गया किसी तरह। वहां के विद्यार्थी आपके 'आंसू' के बड़े भक्त मिले। जान पड़ता है कि पताका छायावादियों के ही हाथ रहेगी। 'पल्लव' मुझे मिल गया। मेरे पास यहां कोई अखबार नहीं आता। पंतजी के मित्र कुछ लिखें तो सूचित करने की अवश्य कृपा कीजियेगा। विनोद जी व उग्र जी कानपुर में नहीं मिले। क्या हाल है, लिखियें गा कृपा कर घर के पते पर—

सविनय
निराला

माधुरी से समालोचना का
तकाजा कीजियेगा।

['नया प्रतीक' (जून १९७५) में प्रकाशित प्रसाद के नाम निराला के पत्रों में इस पत्र के ऊपर लखनऊ, अगहन बदी २ छपा है। मेरी प्रतिलिपि में डलमऊ है और तिथि नहीं है।]

२८. जयशंकर प्रसाद को

[गढ़ाकोला]
९-१२-२७

श्रीमान् बाबू साहब,

आपका कृपा पत्र मिला। बाबू शिवपूजन जी के समाचार से विचलित हूं। मैंने उन्हें पत्र नहीं लिखा था। आज लिखूंगा। मेरी बीमारी पहले से ठीक है परन्तु जड़ अभी है। शिव पूजन जी ने यदि अपना पहला पता बदल दिया (पत्र से कुछ समझ में न आया कि वे उसी पते पर हैं या दूसरा पता बदला) तो पता न मालूम रहने के कारण उनका पत्र आपके पास भेजता हूं, आप उनके पास भेजवा दीजिए। आपके पत्र में अधिक झुकाव उनके पूर्व पते की ओर ही जान पड़ता है पर कौन सन्देह में पड़े। आप मुझे लिफाफे में पत्र लिखने पर अपना एक सादा letter paper साथ ही रख दिया कीजिएगा। यहाँ कागज का बड़ा अभाव रहता है। बज्र देहात है। शिव पूजन जी की सिफारिश से महाराज छतरपुर ने मुझे बुलाया था अपने सेक्रेटरी द्वारा, तारों और पत्रों से, आपको इतना मालूम हो चुका है मेरे बनारस रहते समय। अब यहाँ भी उनके सेक्रेटरी के कई पत्र आ चुके हैं। एक बार जाने का विचार कर रहा हूँ। अभी तक

अर्थाभाव था। सेक्रेटरी गुलाबराय जी के आदेशानुसार ब्रज भाषा में चंडिदास की एक कविता का अनुवाद उनके पास भेज दिया है मैंने, आपको शायद नहीं लिखा था। बनारस में मेरे लिए कहीं सम्भव हो तो कोशिश कीजिएगा, जगह की हो या पुस्तक की। विनोद जी को लिखता हूँ। हाँ, वह पद्यानुवाद शिव पूजन जी के पत्र में भेजता हूँ— देखिएगा।

निराला

[पता]

Babu Jay Shankar Prasad
Govardhan Sarai
Benares City.

['नया प्रतीक' में तारीख ८-१२-२१ छपी है; वहाँ २१ की जगह २७ होना चाहिए। ८ सम्भव है, सही हो और मेरी प्रतिलिपि में ६ गलत हो।]

२९. जयशंकर प्रसाद को

[गढ़ाकोला]
[१५. १२. २७]

श्रीमान् बाबू साहब,

यह संपूर्ण पत्र पढ़ियेगा। सब हाल मालूम हो जायेंगे। फिर इसे बाबू शिव-पूजन जी के पास भेजवा दीजियेगा; उनका पता मालूम नहीं। श्री शान्तिप्रिय के पत्र से उनके परिवर्तन का समाचार मिला। मैं एक हफ्ते में छतरपुर चला जाऊंगा। वहां से आपको लिखूंगा। यथासंभव शीघ्र लौटूंगा।

"कामना" हिन्दी संसार की पहेली हो रही है। माधुरी या सुधा में कामना की समालोचना करूंगा, यथासंभव शीघ्र।

आपका
निराला
१५—१२—२७

["यह संपूर्ण पत्र" अर्थात् अगला पत्र, जो उन्होंने शिवपूजन सहाय को लिखा था और पता न मालूम होने से जिसे उन्होंने प्रसाद जी के पास भेजा था।]

३०. शिवपूजन सहाय को

गढ़कोला, मगरायर, उन्नाव
१५.१२.२७

प्रिय शिवपूजन जी,

श्री मान् बाबू साहब के पत्र से आपके पैर में चोट आ जाने की खबर पा विचलित हूँ। उन्होंने यह भी लिखा था कि अब आप पहले से अच्छे हैं। सविशेष लिखिये।

कलकत्ते से चले आने [पर] एक बंगाल [बंगाली] महाशय जिनकी उपाधि साहित्यरत्न है, मुझसे मिलने के लिये श्री महाराजा साहिब बहादुर की ओर से कलकत्ता गये थे। रामलाल ने उनसे मिलकर मेरे चले आने का कारण और समाचार कहा। गुलाबराय जी की चिट्ठी उनसे ले ली। मेरे पास रवाना भी डाक से कर दिया। यहाँ भी सेक्रेटरी के पत्र आये। बंगाली महाशय ने भी लिखे हैं दो पत्र। इन्होंने कलकत्ते के थियोसफिकल हाल में श्री चंडिदास पर कई लेक्चर दिये हैं जैसा कि इनके पत्र से मालूम होता है। इनकी इच्छा है कि मैं छतरपुर में इनकी सहायता का सवाल पेश करूँ यद्यपि इनके मन में मैंने इनके नाम लिखे गये अपने बंगला-पत्र से यह विश्वास करा देने की चेष्टा की है कि मुझे सहायक की आवश्यकता नहीं है। यह विश्वास खुलासा लिखकर नहीं किन्तु केवल अपनी भाषा द्वारा। ये कहते हैं, इससे आप का नुकसान न होगा—न आर्थिक, न साम्मानिक। खैर जहां तक होगा, मैं इनके लिये जरूर चेष्टा करूंगा, अभी मेरा यही निश्चय है। एक सप्ताह के अन्दर ही अन्दर छतरपुर जाता हूँ। यदि महाराजा साहिव न करावेंगे तो चंडिदास का अनुवाद हिन्दी में बिकने को न रह जायगा। सूझ एक अच्छी मिली।

कल लखनऊ से लौटा हूँ। दुलारे लाल जी और पांड़े जी से मिला। सब लोगों की कृपादृष्टि है। 'श्री चंडिदास' एक लेख 'सुधा' को दिया।

हां, सेक्रेटरी छतरपुर के पास व्रजभाषा में चंडिदास के एक पद्य का अनुवाद करके भेज चुका हूँ उनकी आज्ञानुसार। भई, बहुत ठोंक बजा रहे हैं।

अच्छा, वह अनुवाद चंडिदास वाले लेख में दे दिया है—आप भी देखिये, लिखता हूँ, वावू साहव से कौल कर चुका हूं कि दिखलाऊंगा।

आपके वहाँ क्या रंग है, पुस्तकें निकलती हैं या नहीं, रामायण की टीका कोई लिखवाना चाहते हैं या नहीं, और जो नई बातें हों लिखिये। आप की नई बीवी वाली कविता अच्छी रही। विवाह में निमंत्रण होगा जहाँ तक आशा है। मैं तैयार हूं। अबके साहित्यिक वरात ले चलिये। दो महीने की तनख्वाह न सही। फिर कुछ दिन अखबारी दुनिया में आपके विवाह का रंग रहे। अधिक और क्या इति।

आपका
निराला

वावू साहव,

मेरी तवियत अच्छी है। बीमारी क्रमशः अच्छी हो रही है। पैर का घाव अभी तक वैसा ही है।

सविनय निराला

[जो बंगाली महाशय निराला से मिलने कलकत्ते गये थे, वह हरेकृष्ण मुखोपाध्याय थे। अंतिम दो पंक्तियाँ वाबू साहब अर्थात् जयशंकर प्रसाद के लिये लिखी गई हैं।]

३१. जयशंकर प्रसाद को

Dalmau
Raebareli
मंगलवार तारीख याद नहीं
—२७-२८ होगी
[दिसंबर १९२७]

श्रीमान् बाबू साहब,

घर से शिव० पू० जी की चिट्ठी आपके नाम भेजकर मैं ससुराल चला आया। आज १० दिन से यहीं हूं। यहां कल बुध को अखिल भारतवर्षीय अहीरों (यादव क्षत्रियों) की सभा होगी। इसलिए उत्सुकता बढ़ी, मैं रह गया। वृहस्पति शुक्र तक घर जाऊंगा। फिर छतरपुर, यदि कुछ परिवर्तन छतरपुर वाले न कर देंगे। प्रसन्न हूं। अब तक आपका कोई पत्र घर गया होगा।

पत्र के साथ एक लेख भेजता हूं। आपके यहाँ कोई साप्ताहिक मासिक में परिवर्तित हुआ है। मुझे नाम याद नहीं। उसके मैनेजर ने उसकी एक प्रति (मासिक के रूप से दरिद्र निकली हुई—भविष्य की अपनी स्थूलता का विश्वास दिलाती हुई) मेरे पास भेजने की कृपा कर दी। साथ ही पत्र लिखकर लेख कविता की प्रार्थना की। कुछ पत्रं पुष्पं के रूप से देने के लिए भी लिखा। अतएव यह लेख मुद्रा के लोभ से मुद्रणयंत्र में जाना चाहता है। आप कृपा कर उनके पास भेज दें। लेख नष्ट न हो। दूसरी कापी मेरे पास नहीं।

पढ़ लीजियेगा। सुधार, आवश्यक समझें तो कर दीजियेगा। मैंने दोबारा पढ़ा नहीं। घर से उनका पत्र पढ़ कर मैं उन्हें लेख भेजने की सूचना देता हूं।

आपका—निराल

३२. विनोदशंकर व्यास को

[गढ़ाकोला]
७-१-२८

डलमऊ से एक पत्र आपके नाम मैंने लिखा था, पर पोस्ट करना भूल गया। किसी ने वहाँ से यदि पोस्ट कर दिया होगा तो अब तक पत्र आपको मिला होगा। बाबू साहब और शिव पूजन जी के पत्रों से आपके समाचार मिल जाते हैं। मेरे समाचार भी आपको मिलते रहे होंगे। पत्र न लिखने का आपके पास कोई कारण न होगा, सिवा नाराजगी के। कानपुर में तो आप लोग आप+उग्र खूब मिले। अब देहात में मेरा जी नहीं लगता। हो सका तो छतरपुर से लौटकर आपके उधर आऊँगा।

३३ शिवपूजन सहाय को

छतरपुर,
C/o बाबू गुलाबराय जी एम. ए.
एल एल बी
प्राइवेट सेक्रेटरी, महाराजा बहादुर
छतरपुर
[जनवरी १९२८]

प्रिय शिवपूजन जी,

मुझे यहाँ आये आज चौथा दिन है। परसों थोड़ी देर के लिये श्री महाराजा बहादुर से बातचीत हुई थी। महाराज स्वभाव के बड़े शीतल हैं। सेक्रेटरी साहब भी उस समय थे।

मैं जब से आया, महाराज छत्रसाल की बात मेरे मस्तिष्क से नहीं उतरती। यहाँ की प्रत्येक कृति में मैं गत गौरव देख रहा हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, यहां के लोगों को उनके विगत सूर्य की किरण उज्वल करे।

श्री महाराज को इस वर्ष K.C.I.E. की पदवी मिली है। अभी तक उत्साह-उत्सव हो रहे हैं। 'सरस्वती-सदन' पुस्तकालय की मीटिङ्ग में, श्री शुकदेव विहारी जी (राय बहादुर, दीवान साहब) की अध्यक्षता में यानी सभापतित्व में कुछ मुझे भी कहना पड़ा। एक गाना भी गाया—रचकर—आपको अलग लिखता हूं। बाबू गुलाब-राय जी भी थे—बोले भी। अन्त में मिश्र जी के भाषण के पश्चात [पश्चात्] सभा विसर्जित की गई।

मैं यहां बहुत अच्छी तरह हूं। किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने पाता। यह सब सेक्रेटरी साहब की कृपा और सज्जनता के कारण। उनके सहायक श्री रामनारायण जी शर्मा मित्रवत [त्] मेरे साथ ही रहते हैं—भंग उन्हीं के यहां छनती है। वे मुझे पुस्तकें भी पढ़ने के लिये दे जाते हैं। हिन्दी लिखते हैं और अनुप्रासाशी खूब हैं। नौजवान, प्रसन्न, मधुरभाषी। आप बालक के लिये इनसे प्रबन्ध लेकर अपनी प्रचलित प्रथानुसार अपनाइये—छापिये। हिन्दू पंच के आपके शिष्य (यद्यपि वह पत्र एक समय आपके श्री [एक शब्द अस्पष्ट] के हाथों रहा) इनके लेख छापते हैं, और ये लिखते भी हैं अच्छा, सेक्रेटरी साहब का भी हाथ रहता है।

काम मिल जाने पर विचार है, इलाहाबाद होकर घर जाऊंगा और निश्चिन्त होकर लिखूंगा। बनारस में एक पत्र आपके पास भेज चुका हूं मिला होगा। उत्तर घर के पते पर लिखिये।

आपका
—निराला

नयनन उमड़ि आयो सिन्धु ।
गगन जस-थल विमल-किरननि
धनि लख्यों नव इन्दु ।।
वहि चलीं रसधार नव
मति-कुमुदिनी उघरी ।
पाय कविता-दरस
परसत पग, परागन-भरी ।।
दियो वर हँसि, बसि रही उर,
मधुर भो मो प्रान ।
प्रात होइहि, करहु भारत-
भजन - गुन - गन - गान ।।
लख्यों नरपति-विश्वनाथहिं
द्वार स्मृति के खड़ो ।
छात्रसाल-महीप-महिमा को
नवल रवि कढ़ो ।।

चन्द्र और सूर्य दोनों से रात्रि और प्रभात की प्रकृति के साथ श्री महाराज की तुलना—निबाह

—निराला

३४. विनोदशंकर व्यास को

२२-१-२८

ससुराल से एक कार्ड आपको मैंने लिखा, पर पोस्ट करना भूल गया। इसके बाद घर आकर छतरपुर चला गया। वहाँ मियादी बुखार से बीमार पड़ा। १७ उपवास हुए। कल घर लौटा हूँ। अपराध क्षमा हो। प्रत्यक्ष पत्र तो आपके पास नहीं गया, पर मन ही मन मैंने न जाने कितने पत्र आपको लिख डाले। अब एक दिन न्योता दीजिए तो बनारस आवें मस्ती लेने।

दुलारेलाल से आपने खुशामद करा ली—खूब हुआ। प्रसाद जी आपकी तरफ थे ही। मामला बढ़ता तो मैं भी आप ही का पक्ष लेता।

३५. शिवपूजन सहाय को

Garhakola Village
P.O. Magrair (Unao)
29. 1. 28

प्रिय शिवपूजन जी,

कल छतरपुर से घर लौट आया। वहाँ मुझे मीयादी बुख़ार आ गया जिसमें

१७ उपास पड़े। वहां के डाक्टर ने इलाज अच्छा किया और बाबू गुलाब राय अच्छा इन्तज़ाम करते रहे।

वहां दो सभाओं में मुझे बोलने का अवसर मिला। इस वर्ष वहां के महाराजा साहिब को K. C. I. E. का खिताब मिला है। उत्सव इसी उपलक्ष में हुए थे। सभी [?] और लोगों से—आफ़िसर वगैर: से काफी तारीफ मिली।

दो रोज़, वहां के दीवान, १३००) मासिक पाने वाले, शुकदेव बिहारी जी मिश्र के यहां बैठक रही। सब बड़े बड़े आफ़िसर दूसरे दिन एकत्र थे। मेरा गाना हुआ और कविता पाठ। मिश्र जी ने कहा, आप जीनियस हैं।—और बड़ी तारीफ़ की। बाबू गुलाब राय ने मेरी बीमारी के वक्त कहा था, कीमती जीवन है—रक्षा होनी चाहिये—इनसे हिन्दी को बड़ा लाभ होगा।

जो अनुवाद मैंने पहले आपके पास भेजा था, उसे, महाराजा साहब के कहने पर, उन्हीं के प्रिय छन्द में इस तरह बदल कर उन्हें दिया—उन्होंने पूछा, आप ललित किशोरी के छन्दों में अनुवाद कर सकेंगे ? मैंने कहा, हां, मैं कर सकता हूं। थोड़ी देर तक जो बातचीत महाराजा से हुई वह अंग्रेज़ी में।

पद १

स्याम नाम किन आनि सुनायो
पल छिन कल न परत मोहिं आली।
स्रवनन मगु धँसिगो, बसिगो उर,
विकल कियो मो मन बनमाली॥
स्रवत सुधा, लवलीन मीन सम,
नाम नीर नहिं त्यागन चाहौं।
जपत बिवस भो मो तन-मन धनि
पावन-हित चित सों अवगाहौं॥
नाम-प्रतापहिं यह गति भइ जब
अंग-परस-रस धौं किमि होई।
बसत जहां वह लखि नयनन सों
निज कुल-धरम जुवति किमि गोई॥
भूलन चाहौं भूलि सकौं नहिं
अब कहु कौन उपाव रह्यो री।
चंडिदास बारी कुलवारी
तन-जोबन बनवारि लह्यो री॥

इस अनुवाद में मेरा अंश बहुत है।

—निराला

महाराज पर मैंने जो कविता लिखी थी, वहां से आपके पास भेज दी है। अब काम की बात सुनिये। चंडिदास का Work, माधुरी से कुछ छोटे साइज़

की किताब में, दो कालम प्रति पृष्ठ, ३५० पेज, वे केवल ४००) में कराना चाहते हैं यानी १) प्रति पेज ! बताइये, पद्यानुवाद का यह पुरस्कार ! २॥) पेज तो 'माधुरी' और 'सुधा' से गद्य की लिखाई मिलती है। मैंने इन्कार कर दिया। मैंने कम से कम ५) पेज कहा था, इसमें भी मुझे घाटा ही था। अनुवाद आप देख ही रहे हैं—मनमाने ढंगे [ढंग] से कराया जाता है—पच्चीस वार वदलना ! मैंने जितने रेट पर करना चाहा था, मुश्किल से एक पेज रोज अनुवाद कर पाता। पद्य है, जो करता है, वही जानता है। फिर मैं वैसा स्वयंभू कवि भी नहीं—कि जो अंट संट आया, लिखे सिद्ध। लाचार मैंने काम छोड़ दिया।

चलते समय एक सिपाही मुझे कानपुर तक छोड़ने आया था। और सब व्यवहार अच्छा रहा। ७५) चलते समय विदाई मिली।

मेरी तवियत अभी वहुत साफ़ नहीं हुई। कमजोरी वहुत है। अपने समाचार दीजिये। कोई काम हो तो कोशिश कीजियेगा—Order के लिये। नौकरी अभी नहीं कर सकूंगा। आपके वहां से मेरे जो रुपये मिलने थे, न मिले; न पुस्तक ही छपी। आप रामायण की टीका के वारे में कहते थे, मगर लहरिया सराय वाले करावें तो कोशिश कीजिये—शायद कोशिश करने पर कुछ कामयावी हो। रामायण की अच्छी टीका हिन्दी में एक भी नहीं है। क्या कहें, कोई मालदार कराता टीका, तो उसके लिये भी हमेशा के फायदे की एक चीज़ तैयार हो जाती। और क्या लिखें—उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः। खैर। गोली मार दीजिये—हम लोग भी साहित्य के वादशाह हैं—अन्धे क्या जानें—अच्छा सप्रेम। विवाह में ले चलियेगा कि नहीं?

आपका
निराला

वेनीपुरी जी को सप्रेम। शान्तिप्रिय जी को भी। उत्तर शीघ्र नवीन समाचारों के सहित।

– निराला

[निराला की चिकित्सा करने वाले डा. भट्टाचार्य नाम के बंगाली सज्जन थे।]

३६. जयशंकर प्रसाद को

Chhatrapur C. I.
C/o P. Secretary
[२६/१ तथा ७-२-२८]

श्रीमान् वावू साहव,

छतरपुर आये करीव २० रोज़ हो गये। आज १२ दिन से बुखार है, उतरता नहीं, हालत अत्यन्त शोचनीय हो रही है, दवा हो रही है, अभी मियादी बुखार उतरा नहीं। मेरे जीवन से दैव का यह क्या खेल है, वही जाने। कल परसों तक घर जाने वाला हूं। जिस काम से मुझे वुलाया गया था वह काम मुझे छोड़ देना पड़ा। 'माधुरी'

आकार के करीब ३५० पृष्ठों की कविता पुस्तक का पद्यानुवाद कराना चाहते हैं ४००) में यानी १) पेज [।] 'माधुरी' से गद्य की लिखाई २॥) मिलती है प्रति पेज और यहां पद्य १) पेज।

शरीर बिलकुल क्षीण हो गया है। जीवन रहा तो दूसरा पत्र लिखूंगा। यह निराला का अंतिम प्रणामपत्र है। सब अपराध, सब त्रुटियों के लिए क्षमा। विनोद जी को सप्रेम।

सविनय
निराला

पुनश्च:

यहां आपका पत्र मिला। लेख आपने रूपनारायण जी को दे दिया है, आपकी इच्छा। समाचार दीजिये। मैं बहुत दुर्बल हूं। मेरी वह बीमारी साफ़ हो गई।

श्री बाबू साहब

मैं घर पहुंच गया। अब अच्छा हूं। यह पत्र मैंने छतरपुर से लिखा था, पोस्ट नहीं कर सका।

निराला
२६-१-२८

पुन:

जो अनुवाद आप देख चुके हैं, महाराज छतरपुर के कहने पर उनके प्रिय ललित किशोरी के छन्द में मैंने इस प्रकार करके उन्हें दिया—(इस अनुवाद में मेरे अपने भाव भी हैं—छन्द की पूर्ति के लिये शब्द बढ़ाने पड़े) देखिये।—

पद १

स्याम नाम किन आनि सुनायो, पल छिन कल न परत मोंहि आली।
स्रवनन मगु धँसिगो बसिगो उर, विकल कियो मो मन बनमाली।
स्रवत सुधा लवलीन मीन सम, नामनीर नहिं त्यागन चाहौं।
जपत बिबस भो मो तन मन धनि, पावन हित चित सौं अवगाहौं।
नाम प्रतापहिं यह गति भइ जब, अंग-परस-रस धौं किमि होई।
बसत जहां वह लखि नैनन सौं, निज कुल धरम जुवति किमि गोई।
भूलन चाहौं भूलि सकौं नहिं, अब वह कौन उपाव रह्यौ री।
चंडिदास बारी कुलवारी, तन जोबन बनवारि लह्यौ री।

महाराज की तारीफ़ में एक पद्य मैंने लिखा था। शिवपूजन जी के पास है। आप देखना चाहें तो मँगा लीजियेगा। यहां मेरे पास उसकी कापी नहीं है।

आपका
निराला
७-२-२८

अपनी चोट का हाल दीजिये। यह पत्र भी दो तीन दिन पड़ा रहा, अब कुछ और अच्छा हूँ।

[पता]

Babu
Jay Shankar Prasad
Govardhan Sarai
Benares City

['नया प्रतीक' में छपी इस पत्र की प्रतिलिपि में पद्यानुवाद की दर २) पेज है जो सही नहीं है। निराला के अनुसार १) पेज ही पड़ता था; इसकी पुष्टि अगले ही वाक्य से, तथा शिवपूजन सहाय को लिखे हुए इससे पहले वाले पत्र से भी, होती है।]

३७. स्वामी वीरेश्वरानंद को

Garhakola-village
P.O. Magrair (Unao) U. P.
4. 2. 28

पूज्यपाद प्रभु महाराज,

अनेक दिन आपनार कोन संवाद पाइ नि। हय त आपनि भाल आछेन। आमि कोलकाता गियेछिलूम ता आपनि आमार पत्रे जानते पेयेछेन। कोलकाताय किछु दिन थेके, किछु वाकी टाका आदाय करे, वाड़ी फिरे आसि। महादेव बाबू बलते मास खानेक 'मतओयालार' काज करे आसि। कानपुर D. A. V. College थेके कवि-सम्मिलनेर सभापति हबार अनुरोध स्वीकार करा फिरबार कारन। सेइ कोलकाता थाकवार समय छतरपुर थेके महाराजा तांर सेक्रेटारी दिये तार करिये चिठि लिखिये डाकलेन। तांर इच्छे छिल चण्डिदास-पदावलीर हिन्दी अनुवाद करावेन। कानपुर सभा थेके फिरे एसे मास खानेक बाड़ी रइलूम। तार पर छतरपुर गेलूम। सेखाने दिन पांचेक परे Remittent fever हय, १७ दिन भुगि। २५ दिन थेके वाड़ी फिरे आसि। काज ओ ह'ल ना। बड़ कम दिते चाय। ७०) टाका आसबार समय 'बिदाइ' दिये छे। दिन पांचेक फिरे छि। क्रमशः भुगे भुगे एखन वड़ काहिल हये पड़ेछि।

वाड़ी वसे टाका ३०) मासिकेर व्यवस्था एक रकम करे निये छि—'माधुरी' ओ 'सुधा' देओया प्रवन्धेर मूल्ये। किछु भाल हये वइ लिखब। 'सुधा' ओयालारा नेबे वले छे।

आपनार समन्वयेर खवर कि, जानावेन। के जेनो वलछिल, आपनारा ए वछर थेके समन्वय वन्द करे देबेन। आमार इच्छे छिल, स्वामीजीर कवितागुलिर अनुवाद करे दिइ। बीरवानीर एकटा हिन्दी संस्करण वेरिये जावे। शरीर एकटु सुधाराले करव, भावछि।

समस्त सन्यासी ओ ब्रह्मचारी महाराजगण के आमार भूमिष्ठ प्रणाम। निर्मल

महाराज, बिमल महाराज ओ सत्येन महाराजेर खबर लिखबेन। एंरा कोथाय कोथाय आछेन। आपनार समस्त खबर देवेन।

दास—सूर्यकान्त त्रिपाठी

[पता]

Swami
Virishwaranand ji
Maharaj,
The President,
Advait Ashram,
Mayawati, (Almora)

[स्वामी वीरेश्वरानन्द अलमोड़ा में सुलभ नहीं हुए। तब पत्र १८२ ए मुक्ता राम बाबू स्ट्रीट के पते पर कलकत्ते भेजा गया। अंत में डेड लेटर आफिस मद्रास होता हुआ गढ़ाकोला वापस आ गया। इसकी लिखावट में एक विशेष बात यह है कि "कलिकाता" की प्रचलित बँगला वर्तनी बदलकर निराला ने दो जगह "कोलकाता"—उच्चारण के अनुरूप—लिखा है। पत्र का सारांश यह है : निराला कलकत्ते गये, कुछ रुपये अदा करके, "मतवाला" में कुछ दिन काम करके, कानपुर में डी. ए. वी. कालेज में कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए लौट आये। छतरपुर के राजा चंडिदास का अनुवाद कराना चाहते थे किन्तु पैसे कम दे रहे थे। १७ दिन ज्वरग्रस्त रहने के बाद ७०) विदाई लेकर वापस आये। गढ़ाकोला में सुधा-माधुरी से लेखों का पारिश्रमिक पाकर खर्च चलाते हैं, शरीर ठीक होने पर स्वामी विवेकानन्द की वीरवाणी का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करना चाहते हैं। स्वामी-समाज को भूमिष्ठ प्रणाम करने के साथ दास सूर्यकान्त उनके समाचार देने को कहते हैं। पत्र बँगला लिपि में है।]

३८. मनोहरादेवी की माता को

गांव—गढ़ाकोला
डाकखाना—मगरायर
जिला—उन्नाव
२२ २/२८

श्री अम्मा, चरण स्पर्श।

आपका कृपा-कार्ड मिला। अबके आपके नुकसान से तबियत उदास हो गई। अब मेरा पैर अच्छा हो गया है। चल लेता हूं। जरा जरा कसकता है। शायद इधर मुझे लखनऊ से बनारस तक जाना पडे। इस समय आपके वहां न जा सकूंगा। कर्वी के मेरे एक मित्र कलकत्ता से घर आने वाले हैं, पर साल वे यहां मेरे घर हो गये हैं, इस लिये अबके मुझे उनके घर जाना पड़गा। लेकिन अन्त चैत तक जाऊंगा। तब तक

डलमऊ में ही आप होंगी। कालीचरण वाकस से कुछ रुपये निकाल कर भग गया है। और सब कुशल है।

सविनय
सूर्य्यकान्त

आपका पूरा पता भूल गया हूं। अन्दाज़ देखूं कहां तक लड़ती है।

सूर्य्यकान्त

आप डलमऊ आवें तो वहां से अपने आने की सूचना ज़रूर दें।

सूर्य्यकान्त

[पता]

Shreejut
Ramdhani Dube
C/o **Pdt. Bhairaoprasad**
Munim

Bāzār Sarai } **Atarra**—
P. O.
(**Banda**)

३९. शिवपूजन सहाय को

गढ़ाकोला
मगरायर (उन्नाव)
२२. २. २८

श्री-

प्रिय शिवपूजन जी,

पत्र आपका मिला। बड़ी प्रतीक्षा रही। कारण न लिखने का कुछ समझ में न आता था। छतरपुर के पते पर मेरे नाम का वासन्ती कार्ड वेनीपुरी जी का भेजा हुआ लौटकर मुझे मिला। सप्रेम प्रणाम।

आपके पैर के समाचार से खिन्नता से आश्चर्य ही अधिक रहा। मैं समझता था अब तक आप खूब चलते फिरते हैं। इधर एक चोट मेरे पैर में भी लगी। छूटी आदत, शौक चर्राया। फुटवाल हो रहा था, मैं भी back के लिये तैयार हो गया। फिसला एक शॉट, दाहिना foot पींड़ा हो गया। चारपाई से न उठ सकने वाली अवस्था ३६ घन्टे, लठ्ठ सहायता से चलने वाली ७ दिन, अब चल लेता हूं खूब, पर कसक है। पहले से यानी छतरपुर से अब बहुत अच्छी हालत में हूं। विवाह में अवश्य चलूंगा—

आपका
'निराला'

[पता]

श्रीयुत

बाबू श्री शिवपूजन जी

'हिन्दी भूषण'

ज्ञान-मण्डल प्रेस

कबीर चौरा

(काशी) Benares City

४०. रामधनी द्विवेदी को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
२७ फ़रवरी १६२८

चिरंजीव बड़े मियां,

जिस दिन हमने तुमको चिट्ठी लिखी, उसी दिन तुम्हारी भी चिट्ठी आई। अम्मा का हाल उनके पत्र से मालूम हो चुका था। कालीचरण लखनऊ भग गया था, वहाँ से घर आया तो हमने घर में नहीं रहने दिया, वह कुछ रुपये लेकर भगा था, दूसरे दिन फिर वहीं चला गया, सुनते हैं कि किसुनपुर जाने को कहता था। अब केशव को घर में अकेले काम बहुत पड़ता है। हमारी गाई बियानी है। दूध का अभाव अब नहीं रहा। और सब कुशल है। हम जल्द ही बाहर जाने वाले हैं। अम्मा का आना कब तक होगा सो लिखो। बिटिया को जगन्नाथ भय्या पढ़ाते हैं या नहीं यह भी ज़ाहिर करो। तुम्हारी शिवरात कैसी रही, इसका हाल तुमने नहीं लिखा। फागुन का महीना है, बबुआ जी, अब कैसे करी?

तुमको व रामकृष्ण को आसीस। दोनों बिटिया को स्नेह। जगन्नाथ भय्या को नमस्कार। तुम्हारी बीबी को २७ फ़रवरी। अब तो जी भर गया होगा? क्या कबीर भी सुनियेगा [?]

—सूर्य्यकान्त

[बड़े मियां—निराला के साले रामधनी द्विवेदी। बिटिया अर्थात् सरोज जिसके पढ़ाने की बात है।]

४१. विनोदशंकर व्यास को

लखनऊ
४-४-२८

आपके पत्र का उत्तर इसी लखनऊ से किसी तरह घसीट कर मैं कानपुर होता हुआ बाँदा चला गया था। बाँदा से चित्रकूट। १५-२० दिन लग गये। आज बाँदा से लखनऊ आया। एक रोज घर रहकर उन्नाव कान्यकुब्ज सम्मेलन चला जाऊँगा। फिर

कुछ दिन किसी शहर में रहकर रिसर्च का कुछ काम करना चाहता हूँ। विस्तृत पत्र घर से दूंगा, क्षमा। मुन्नी को प्यार। बाबू साहब को सप्रेम।

४२. गुलाबराय को

गढ़कोला, मगरायर, उन्नाव
१२-४-२८

श्रीमान्, सेकरेटरी साहब, सादर।

इधर महीने भर चित्रकूट रहा। कल लौटा हूँ। यहाँ आपके दो कृपा-पत्र मिले। लज्जित हूं, उत्तर समय पर नहीं दे सका। मेरे इस मशहूर मर्ज की दवा शायद इस जीवन में न होगी। क्षमा।

आप से पत्र-व्यवहार न रहने पर भी आपके प्रसन्न लेखों से मुझे पत्र-प्राप्ति ही का आनन्द मिलता रहा है। छोटे पंडित जी [पंडित रामनारायण शर्मा] का सान्निपातिक-विकार क्या खासा मनोरंजन हुआ।

अभी तक मैं खूब प्रसन्न रहा। स्वास्थ्य भी बहुत कुछ सुधर चला था, इधर तीन-चार रोज से कुछ अस्वस्थ हूं। प्रवन्धों के अलावा अब उपन्यास, नाटक लिखने का विचार कर रहा हूं। श्रीगणेश दो-ही-एक रोज में करूंगा। इधर 'रेखा' कविता-पुस्तक की रचना में पड़ा था। निस्संग जीवन वाले के लिये आनुषंगिक नियम और कानून क्या—सब कुछ मनभाता हुआ करता है।

श्रीमान लाला जी का अंग्रेजी 'एट दी फीट आफ गोड' का संस्कृत अनुवाद कुछ दिनों में आप के पास भेजता हूं। अभी तक विशेष अवसर नहीं मिला, प्राणों की सम्पूर्ण स्वीकृति भी नहीं हुई थी। आप उनके पास भेज दीजिएगा।

सम्मान्य मिश्र जी और भट्टाचार्य महाशय को सविनय नमस्कार।

आप की कविता बहुत साफ आई।

मैं जब रस-ग्रहण करता हूँ उस समय गुंजार नहीं करता। इति सुप्रभात। रामनरायण जी को पृथक लिखता हूं।

सविनय
निराला

[गुलाबराय के अनुसार लालाजी संभवतः लाला कन्नोमल हैं। भट्टाचार्य महाशय वही निराला के चिकित्सक हैं।]

४३. शिवपूजन सहाय को

Magrair
२७ [अप्रैल १९२८]

Dear Sheopujanji

बहुत दिन बाद मिले [।] तबियत बड़ी हैरान थी। मैं चित्रकूट चला गया था। एक महीने बाद लौटा। खूब स्वस्थ हूँ। इधर Headquarter घर ही है। विवाह की

सूचना अवश्य दीजिये। होली में आपके नाम एक पत्र बेनीपुरी जी को लिखा था। क्या वह पत्र आपको नहीं मिला। ज्ञानमण्डल के पते पर भेजा था। इस समय ध्यान केवल स्वास्थ्य पर है। कोई डौल लगाइये। आपके पैर ने आपको बड़ा कष्ट दिया। छतरपुर को उत्तर दे चुका हूँ। नवविवाह के लिये धन्यवाद सहर्ष।

आपका
निराला

[पता]
Hindibhushan
Babu Sheopujanji
P. O. Itarhi
Via Buxar, E. I. Ry.
(Bihar)

४४. विनोदशंकर व्यास को

२८-४-२८

आपका पत्र मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने पत्र में मुझे बुलाया है। मेरी बड़ी इच्छा हो रही है। सालभर से तौबा है। ज़रा आजमाइश करनी थी। बिना मित्र मंडली के क्या आनन्द? आऊंगा जरूर परन्तु अब गर्मी भर बाहर निकलने की हिम्मत नहीं होती। बारिश शुरू होने पर आप लोगों से मिलूंगा। उस समय का बनारस और गंगा का दृश्य देखना है। चैत में पहले बनारस जाने का विचार था। वहाँ के एक एम० ए० क्लास के विद्यार्थी से जो मेरे यहाँ के रहने वाले हैं—मगरायर के; मैंने बनारस जाने का हाल कहा था। इससे वहाँ के बहुत से लोगों में मेरे बनारस जाने की खबर फैल चुकी थी। बाबू साहब को भी न जाने कैसे मालूम हो गया था। लेकिन फिर विचार बदल देना पड़ा। चित्रकूट जाना पड़ा। एक महीना वहीं बिताया। अब मैं खूब स्वस्थ हूँ। कोई शिकायत नहीं।

यदि शिवपूजन जी के विवाह में जाना हुआ तो मुलाकात उधर ही होगी, नहीं तो सावन में।

[एम्. ए. के विद्यार्थी—नन्ददुलारे वाजपेयी]

४५. विनोदशंकर व्यास को

मगरायर, उन्नाव
३-६-२८

आपका सुलिखित स्नेह पत्र मिला। आपके बाराती होकर जाने का उल्लेख मैं पहले ही पढ़ चुका था। आपने शिवपूजन की बीबी का स्वरुप वर्णन नहीं किया, जिसके

विना विवाह का तमाम हाल फीका जँच रहा है—कैसी हैं छोटी, मोटी, लम्बी, गोरी,
सांवली पढ़ी, अनपढ़ी, वड़े की वेटी या गरीव की दुलारी। विवाह समय के कुछ संघटन।
आप कहानी लेखक हैं या पत्र में कविता लिखा करते हैं। आप ही से कुछ आशा थी कि
पूरा-पूरा व्योरा मालूम हो जायगा सो आपने भी बैठा दिया।
आपका कहना ठीक है। अस्त-व्यस्त ही हूँ। जव सँभलता हूँ तभी प्रकृति का कोई
न कोई उत्पात हो जाता है। विगड़ी हुई प्रकृति की लिखावट भी अस्त-व्यस्त होगी।
इसमें क्या सन्देह ? हाल वेतावएदिल [वेताबिएदिल] होश में आलू [आलूं] तो कहूँ—
होश ही में नहीं आने पाता। लेकिन आप लोगों को उत्तर प्रत्युत्तर तो लिखना—वेहोशी
की हालत में आपको कहीं कुछ भला बुरा लिख डालूं तो मुआफ कीजिएगा। यह मैं वातें
नहीं रंगता, न मुझे वातें रंगना आता है, विल्कुल सत्य है।
मैं कुछ नहीं लिख रहा हूँ। व्रजभाषा साहित्य पढ़ रहा हूँ। कभी-कभी कोई
प्रबन्ध लिख डालता हूँ। एक कटु, मधुर, तिक्त, कषाय समालोचना हेमचन्द्र+इलाचन्द्र
जोशी के लेखकी की है। इधर समालोचना ही लिखता हूं। पैर कुछ अच्छा है।
हारमोनियम के हाल से वड़ी प्रसन्नता हुई। तमाम वातों में यही एक वात है। लाल
शिवपूजन जी तो लाल हो गये। ललाइन को घर ले गये होंगे ?

उन्नाव

४६. विनोदशंकर व्यास को

१७-६-२८

आपका पत्र मिला। मालूम नहीं उत्तर मैंने दिया या नहीं। इधर पत्रों में आप
खूब निकल रहे हैं। अच्छे ढंग से निकल रहे हैं। आपकी भाषा काविल तारीफ होती
है। भाव भी अच्छे।
मेरा पैर कुछ अच्छा है। अच्छी तरह बैठ तो नहीं सकता पर मील दो मील
चल लेता हूँ। 'सरोज' निकलने वाला था, निकला या नहीं ? सूचित कीजिएगा। आज-
कल सुनता हूँ चंडाल चौकड़ी इकट्ठा है। देखूं मेरे वनवास की अवधि कब समाप्त
होती है।
मैं विशेष कुछ लिखता-पढ़ता नहीं। सोचा जरूर करता हूं और कदाचित औरों
से ज्यादा और हर वात पर।
आपने जो हारमोनियम मेरे लिए खरीदा है इतने दिनों में एक यही काम आपने
समझ का किया है। निठल्ले दिन काटने से, मेरे विचार में गाना-बजाना वहुत अच्छा
है। हाँ इतना न गाया जाय कि फिर गला ही वैठ जाय।
गंगा जी वढ़ जायं तो लिखियेगा। वढ़ी गंगा में नाव की सैर बन्द तो नहीं
रहती। एक दफा गंगा की छाती पर ही गंगा जल और लाल पानी एक कर दिया
जाय।

४७. विनोदशंकर व्यास को

उन्नाव

२६-७-२८

आपका प्रिय पत्र मिला। इधर मैं फिर लखनऊ गया था, सब लोग मिले। विशेषांकों की अच्छी धूम है। पाण्डेय जी से आप लोगों की सिद्धेश्वरी पार्टी के समाचार मिले। धन्यवाद! बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मेरे मित्र कुछ एम० ए० के छात्र मुझे बुला रहे हैं, यह जानकर कि मैं बनारस आप लोगों (यानी आप+बाबूसाहब) के यहां ठहरूँगा, सुनता हूँ, स्वागत करना चाहते हैं। मुझे प्रोफेसरो के बीच में छायावाद सिद्ध करना पड़ेगा। मैंने सुना है, बाबू साहब ने इस सिद्धि के लिए बहुत सा मसाला इकट्ठा कर लिया है, बनारस के लिए तैयार हूँ। कलकत्ता से रुपये कुछ खर्च के लिए आने वाले हैं, उन्हीं की राह देख रहा हूँ। १०-१५ दिन तो जरूर ही लग जायेंगे। प्रसन्न हूँ।

४८. जयशंकर प्रसाद को

गढ़ाकोला, मगरायर,

उन्नाव

१७—११—२८

श्रीमान् बाबू साहब,

इधर बहुत दिनों से आपके समाचार नहीं मिले। मैं इलाहाबाद गया था। पन्त जी से मुलाकात हुई। लौटने पर बीमार पड़ गया। नौबत गोदान कराने तक की पहुँची। अब अच्छा हूं। एक दिन कुछ कपड़े खरीदने कानपुर गया था, वहां प्रताप प्रेस में 'सुमन' जी से मुलाकात हुई। अब तो वे बनारस ही होंगे। सुना है आप कानपुर आने वाले हैं। विश्वास तो नहीं होता। आवें तो लिखें। मेरा स्वास्थ्य बहुत दुर्बल है। पर प्रसन्न हूं। पन्त जी आपसे मिलना चाहते हैं, बल्कि कुछ उत्सुक हैं। मेरे साथ बनारस चलेंगे। देखें कब अवसर आता है। आशा है, आप प्रसन्न हैं।

आपका

निराला

[पता]

श्रीमान् जयशंकर जी 'प्रसाद'

सराय गोवर्धन

काशी

Benares City

४६. केशवप्रसाद त्रिपाठी को

३६ शंकर घोष लेन,
कलकत्ता
वसन्त पंचमी [१६२६]

चिरंजीव केशव, कालीचरण, रामकृष्ण व सरोज

हम अच्छी तरह से हैं। अपने समाचार देना। इधर १५) ख़र्च भेजा, वह मिला होगा। रामधनी वग़ैरः चांदपुर में हैं। सरोज को अभी न ले जाना। कालीचरण अकेले उसी तरह चले आवें जैसा चिट्ठी में लिखा है। डलमऊ में किसी तरह घर में रात काट लें। रामकृष्ण को भी जल्द बुला लेंगे या हमीं चले जायँगे। चैत तक किसी तरह मकान में पढ़ते रहें। गयाप्रसाद को आसीस।

तुम्हारा काका
सूर्य्यकान्त

बहुरिया को तकलीफ़ न हो। काम-धाम करती रहे।

[पता]

To

Keshavapd. Tripathi
Vill. Garha Kola
P. O. Magrair
(Unao)
केशव प्रसाद तेवारी
गढ़ाकोला

[कलकत्ते की डाकमुहर की तारीख : १५ फ़र्वरी २६]

५०. केशवलाल त्रिपाठी को

कलकत्ता
८/३/२६

चिरंजीव केशव,

तुम्हारा कार्ड मिला। समाचार मिले। बिटिया को वहां से अब गढ़ाकोला भेज जायं। पराग से कहो। और बिहारी लाल की दुलहिन भले आदमी की तरह रहे। यहां सब अच्छी भलाई है। कालीचरण को रामगोपाल के पास भेज दिया गया है। रामकृष्ण यहां पर है। अच्छी तरह है। और तुमको ५५) पचपन रुपये भेजते हैं। सो ४०) चालिस रुपये मन्नी पंडित जी को दे देना। हिसाब फिर हम आ के करेंगे। यहां सब कुशल है।

तुम्हारा काका
सूर्य्यकान्त

[पता]

Keshava Lal Tripathi
Vill. Garha Kola
P. O. Magrair
(Unao)

५१. रामघनी द्विवेदी को

श्रीगणेशाय नमः

३६ शंकर घोष लेन,
कलकत्ता
१९. ३. २९

चिरंजीव रामघनी,

इधर बहुत दिनों से तुम्हारे हाल नहीं मिले। चिन्ता है। तुम लोग अच्छी तरह होगे। यहाँ सब कुशल है। कालीचरण और रामकृष्ण दोनों यहां चले आये हैं। कालीचरण को रामगोपाल के पास भेज दिया है। रामकृष्ण यहीं पढ़ता है। अच्छी तरह है। केशव, बिहारी लाल की बहू और सरोज घर में हैं। वैशाख तक हमारा घर जाने का विचार है। तुम लोग कैसे हो, यहां कौन कौन हो, उत्तर में लिखना। पत्र लिफ़ाफ़े में देना। अम्मा को प्रणाम। तुमको आसीस। पंडित भैरव दत्त जी को नमस्कार।

मंगलाकांक्षी—
सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

[जिन्हें पत्र लिखा गया है, वह डलमऊ में हैं। "घर जाने का विचार" अर्थात् गढ़ाकोला जाने का विचार।]

५२. पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र को

[अप्रैल १९२९]

प्रिय उग्रजी

Times of India का वह अंक जिसमें महाराज भरतपुर का चित्र है (उनके पोलो के खिलाड़ियों के साथ) कृपा कर आज ही गर्ग जी के हाथ भेज दीजियेगा। बड़ी ज़रूरत है।

आपका—निराला

[यह छोटा सा पत्र किशोरी लाल चौधरी, १५१, मछुवा बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता के गुलबहार हेयर आयल के इश्तहार पर लिखा गया है। इश्तहार का कागज चिकना है, पोस्टकार्ड से थोड़ा और चौड़ा। संभवतः पत्र रामलाल गर्ग के हाथ उग्र के पास भेजा गया था। अप्रैल २९ में निराला और उग्र दोनों कलकत्ते में थे; उसी समय यह लिखा गया होगा।]

५३. (क) नन्ददुलारे वाजपेयी को

३६ शंकर घोष लेन
कलकत्ता
शाम ८
[१०-४-२९]

प्रिय वाजपेयी जी,

आज ही आपके पत्र का उत्तर पोस्ट किया है। शाम को आपका दूसरा पत्र मिला। इधर मुझे बिलकुल फ़ुर्सत नहीं। महीने के अन्दर शायद गाँव जा सकूं। आज इसकी बातचीत की। पर जाना ठीक न हो सका। बात यह कि कुछ लिखकर रुपये लेना चाहता हूं। इधर मतवाला के पीछे कुछ दिनों तक बेकारी रही। अब उसके संपादक घर से आ गये हैं। उग्र और विनोद इस समय यहीं हैं, इनका तार जाने पर वे मिर्ज़ापुर से आये। मैं भी निश्चिन्त हुआ। आप result out हो जाने पर क्या कीजियेगा? द्विवेदी जी और मिश्र बन्धुओं से कानपुर और लखनऊ के आपके परिचित दूसरे मित्र भी मिला सकते हैं। यदि ज़रूरत हो तो लिखियेगा, मैं यहां [से] पत्र लिख दे सकता हूं। अन्यथा, यदि संभव हो, १/१॥ महीना बैठ कर स्वास्थ्य सुधारिये। तब तक मैं आ जाऊंगा। आम खाइयेगा या नहीं? आनन्द मोहन जी का विवाह कब है? आनन्द मोहन जी कितने में ठहरे?

आपके पत्र से मालूम हुआ बाबू रामरत्न जी आ गये हैं। मैं तो वाजपेयी जी (रामेश्वर जी) से पता ही पूछता रह गया। उनका एक पत्र मुझे गढ़ाकोला के पते पर मिला था। शायद एक गढ़ाकोला से redirected होकर यहां, पर उसमें पता न था। पुस्तकालय को नवीन रूप से अवश्य जीवित कीजिये।

research का काम तो अच्छा है। पर research scholar होकर कविता लिखना कुछ हास्यास्पद भी है। प्रोफ़ेसरी ही ठीक है। जैसी आप की मर्ज़ी हो।

रहस्यवाद पर मुझ से पूछना क्या है। जैसा आपने सोच रक्खा है, वैसे ही लिख कर कहीं भेज दीजिये। मैं समझता हूं, रहस्यवाद से अधिक आवश्यक वर्तमान कविता पर संगठनात्मक एक वृहत् प्रबन्ध इस समय हो रहा है। बड़ी धांधली मची हुई है। मैं स्वयं एक कवि के नाते समालोचना लिख नहीं सकता और लिखते समय अपना उल्लेख भी नहीं कर सकता, और न करना ठीक भी नहीं—इतिहास के विचार से।

अधिक और क्या लिखूं, अपने समाचार दीजिये। गांव का नाच बहुमत से पास हुआ [।] नारी समागम कवित्व से भरा है ही, फिर आनंद मोहन जी कैसे अपने को कवित्व-रस-ग्राहिता-शून्य साबित करते? बीच में बैठे होंगे डटकर? कौन आई थी "श्मशान" वाली? "सितलन-मुंह-दाग", "बित्ता भरे के बारन कै पातरि चोटी—जैसे खोपरी भरे में डिंयारो लाग होय"—नाटी नाटी—कारि भुजैल—वहै न?

आपका
सूर्य्यकान्त

बाबू श्याम सुन्दर जी को
राय अच्छी तो है।

—नि०

[यह पत्र निराला ने भेजा नहीं। दुबारा मजमून बांधा—अंग्रेजी में। देखें अगला पत्र]

५३. (ख) नन्ददुलारे वाजपेयी को

36 Sanker Ghose Lane
Calcutta
10. 4. 29
11 p. M.

Dear Bajpeye je,

I receive your 2nd letter today by evening mail. Just a few hours before I have posted an answer to the 1st letter. Perhaps you will receive both the letters by the same mail. [At] the present time I am awefully busy in writing a novel Fancy. Sorry that I cannot meet you within the time you expect. Past a few days, a vagabond indeed I had been here to look after the press works and the Matwala. The Editor went to Mirzapur to perform the funeral ceremonies of his dead cousin. He came back after the ceremony done but before the time fixed, by the cause of coming of Ugra je +Vinode je

[यह भी निराला का एक अधूरा पत्र है। शायद अंग्रेजी में इतना लिखने के वाद उन्होंने उसे फिर हिन्दी में ही लिखा।]

५४ केशवलाल त्रिपाठी को

मतवाला
कलकत्ता।

36, SUNKER GHOSE LANE
Calcutta—192
[मई १६२६]

चिरंजीव केशव,

तुम्हारी सब चिट्ठियां मिली हैं, रामगोपाल ने हमको लिखा था कि हम १४) भेजा है। लेकिन तुम आठ ही रुपये लिखते हो। रामगोपाल को और रुपये भेज देने के लिये हमने लिखा है। जल्द ही तुमको रुपये मिलेंगे। बाग़ वेच डाला सो अच्छा किया। खर्च की तकलीफ़ हो तो बरतन बेच डालना। तकलीफ़ न सहना। हम अच्छी तरह हैं। रामकृष्ण मजे में है।

तुम्हारा—काका।

हमको इस पते पर अव चिट्ठी न लिखना। हम दूसरी जगह जाते हैं। तुमको फिर हाल देंगे। रामकृष्ण का प्रणाम। सरोज को स्नेह।

तुम्हारा काका
सूर्य्यकान्त

[पता :]
Shrijut
Keshava Lal Tripathi
Vill. Garhakola
P.O. Magrair
(Unao)

[पोस्टकार्ड पर पुरवा और मगरायर की डाकमुहरों की तारीख है : १० मई २६; कार्ड लिखा गया होगा ७ मई के आसपास।]

५५. सुमित्रानन्दन पन्त को

Gurhakola Village
P.O. Magrair
Unao
[सितंवर १९२९]

प्रियवर पन्त जी,

आपका आकाङ्क्षित प्रिय पत्र मिला। गृह-कलह तथा अर्थ-संकट के कारण मैं आपसे मिल नहीं सका। इससे मेरी मानसिक स्थिति कैसी रही, क्या लिखूं? लज्जा और संकोच से पत्र भी नहीं लिखा। कानपुर में कुछ पहले मालूम हुआ था, आपके वकील-भाई नवीन जी से मिले थे, कहते थे, वह तो अव इतना मोटा हो गया है आप लोग पहचान नहीं सकेंगे।

परिमल आपको पसन्द आया, यह उसका सवसे वड़ा पुरस्कार है। मैंने आपको कार्यारंभ करने के समय ही वुलाया था, आपको स्मरण होगा। आपने सहयोग नहीं किया। आपने मेरी प्रशंसा नहीं की, इससे मुझे विलकुल अन्यमना मत समझिये। बल्कि मुझे हर्ष होता था कि मुझे एक रत्न मिला और रहस्य जनक धोखे से।

आपकी तुलना थोड़ी ही देर के लिये, सीजन फ्लावर के सौन्दर्य की तरह, अजान के सूंघने से पहले तक अच्छी लगी। इतनी वड़ी वड़ी तुलना, इतनी शीघ्रता से, ७०/८० मील की स्पीड से चलती हुई गाड़ी को एकाएक रोक देना है जिससे हानि की ही शंका है और गाड़ी के हमेशा के लिये रुक जाने की। प्रशंसा की वला जब जब, जहां कहीं आई, मैंने आप के सिर टाल दिया। छिपकर रहने में कितनी शक्ति है, यह शायद मुझसे अधिक वहुत कम लोगों को मिली होगी। आप शक्ति भंग भी कर रहे हैं।

मेरे मित्र पन्त जी के 'पल्लव' की परी दिन रात मेरे पलँग पर रहती है, पर

'परिमल' तो कभी कभी वसन्त ही में मिलता है। 'पल्लव' से कोई हानि नहीं, भय भी नहीं, बल्कि आनन्द ही है; पर 'परिमल', कभी कभी किसी किसी वन्य झाड़ से जिस चटखारे से निकलता है, दिमाग़ ही फूंक जाता है, अस्वस्थ भी कर देता है।

आप मुक्ताओं से अक्षर लिखते थे, अब पत्र लिखने के समय ही आपको इतनी जल्दी रहती है। कहीं कहीं मैं पढ़ भी नहीं सका। मिलने के लिये क्या लिखूं, यह क्रिया-फल भाग्य ही पर निर्भर है। मैं बहुत प्रयत्न कर चुका।

"पल्लव" हिन्दी के भाल पर चन्द्रविन्दु है। हताश होते हैं आप?—आपकी रचनाएं अपराजित हैं।—विदा।

आपका
"निराला"

एक वार, इच्छा होती है, आपके स्वरों में भी अपना सितार बांधू। पर आपके फिर उतरने पर ही ऐसा करूंगा।

—नि०

५६. शिवशेखर द्विवेदी को

Lucknow
Ganga Fine Art Press.
Aminabad, 30.9.29

प्रिय शिव शेखर,

तुम अब मुमकिन है, ऊवते हो। तुम्हारे जाने के बाद हमें बुखार आ गया। कई रोज़ तक रहा। अब ६/७ दिन से अच्छे हैं। अगर वहां तकलीफ़ मिलती हो तो बरदाश्त करना। पानी की दिक्कत पड़ती होगी। नाऊ से भरा लेना। हम आकर उसकी मिहनत दे देंगे। अभी हमको यहां ५/६ तारीख तक रहना पड़ेगा। डलमऊ के पते पर पत्र लिखने की ज़रूरत नहीं। तुमको किसी की क्या पड़ी है? तुम अपनी उन्नति की राह देखो। आसीस।

सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

[पता]

Pdt. Shiva Shekhar Dwivedi
C/o Surya Kant Tripathi
Vill. Garhakola
P.O. Magrair
(Unao)

५७. पुरुषोत्तमदास टंडन को

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेता
लखनऊ

तारीख 6/10/1929

टेलीफ़ोन नं० ६
तार का पता—"गंगा, लखनऊ"

श्रीमान् टंडन जी,

आप से मैंने जिक्र किया था कि श्रीपन्त जी को ५०) मैंने भेज दिये हैं। दुलारे लाल जी की सही पर बैंक के मैनेजर ने ४९।।।)दे दिये थे। पर आप के चेक के सम्बन्ध में इधर जो पत्र उन्होंने लिखा है, उसे इस पत्र के साथ भेजता हूं। दुलारे लाल जी को रुपये मिल जायं, ऐसा प्रबंध कर दीजियेगा। आशा है, आप प्रसन्न हैं।

सविनय
—'निराला'

["जो पत्र उन्होंने लिखा है", अर्थात् बैंक वालों ने। दुलारेलाल भार्गव के नाम सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की अमीनाबाद, लखनऊ शाखा के मैनेजर ने ३—१०—२९ को लिखा था :

Dear Sir,

With reference to your enquiry re: the cheque for Rs 50/- on Lahore, we beg to inform you that the same has been received back unpaid with the remark 'Ist payee's endorsement irregular'

yours faithfully
(हस्ताक्षर
सब एजेंट किन्हीं टंडन के।)

निराला के पत्र के नीचे पुरुषोत्तमदास टंडन ने लिखा :

प्रिय निराला जी—

मेरे पास तो बैंक के पत्र भेजने की आवश्यकता न थी—इसका संबन्ध तो श्री दुलारे लाल जी से है। "First payee's endorsement irregular" का अर्थ यह है कि दुलारेलाल जी ने उस प्रकार हस्ताक्षर नहीं किये जिस प्रकार से मैंने उनका नाम चेक पर लिखा था—उनको चाहिये कि अपने Bank द्वारा payment guarantee करवा दें और अपने हस्ताक्षर ठीक कर दें—

आपका
पुरुषोत्तमदास टंडन]

५८. शिवशेखर द्विवेदी को

गंगापुस्तकमाला कार्यालय
[विक्रय विभाग]
लखनऊ 11.11.१९29

प्रिय शिवशेखर,

तुम्हारा दूसरा पत्र भी मिला। तुम्हारी माता की बीमारी के हाल पढ़ कर चिन्ता हुई। हम ३/४ दिन में आते हैं। शुक्रवार को सन्ध्या वाली गाड़ी के समय धनीराम को अवश्य भेज देना। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चले आना। उसी दिन आवेंगे। और सब कुशल है।

आसीस

—सूर्यकान्त त्रिपाठी

[पता]

Shrijut Shiva Shekhar Dwivedi
C/o Surya Kant Tripathi
Village—Gurhakola
P.O. Magrair
(Unao)

५९. रामधनी द्विवेदी को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
२६.१२.२९

चिरञ्जीव रामधनी,

रामकृष्ण का लिखा हुआ एक पत्र हमें मिला था। उससे तुम्हारे वहाँ के समाचार मालूम हुए। यहाँ सब कुशल है। कुछ दिनों में हम लखनऊ जायेंगे। अपनी खैरियत के हाल देते जाना।

अम्मा को प्रणाम। तुम लोगों को आसीस। मनन्ना को स्नेह।

सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

द्विवेदी जी का पत्र अगर, सरोज, तुम्हारे पास आये तो जवाब लिख देना। रामकृष्ण से लिखना सीख लो।

[पता :]

To

Ramdhani Dwivedi,
Sherandazpur, P.O. Dalmau (Rai Bareli)

[मनन्ना : रामधनी द्विवेदी की पुत्री।]

६०. पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र को

[गढ़ाकोला,
२८-१२-२६]

प्रिय कलक्टर— काका कोलाहलकर जी, सप्रेम ।

एक बार 'मतवाला' में पहले जैसे किसी ने 'निराला'-रूपक पहचान लिया था, उसी तरह, उसी आधार पर, आपकी यह पंक्ति—"सोचते हैं ऐं- सें—मुझ सा चमकीला कौन ? ये —दूसरे ! —" मुझ से अगर कुछ भी संबंध रखती है, तो क्या मैं आप से पूछ सकूंगा, कि इस तरह की भावना के प्रमाण, आपके 'मतवाला' में "उग्र" जी की ही तरफ़ से आपको नहीं मिले ?—आप "मतवाला"-मण्डलेश से सलाह कर लीजिये । और आपने उग्र-साहित्य की जैसी तारीफ़ की है, जान पड़ा, वास्तव में आपको वह साहित्य अच्छा लगा है । पर समालोचक क्या अन्धे ही आपको मिलते रहे हैं ? —आप भी एक ही निष्पक्ष लिक्खाड़ दिखाई दिये । आप की इन बातों से एक बार मन ही मन हँस लेने के सिवा और कोई उत्तर नहीं । प्रतिभा की आपने जैसी पहचान कराई, खेद है, सहमत न हो सका [।]

—'निराला'

["मतवाला" के कोलाहलकर संभवतः उग्र थे । यह कार्ड मुझे उन्हीं से प्राप्त हुआ था । मगड़ायर की डाकमुहर में तारीख है : २८ दिसंबर २६]

[पता]

Mr. Kolahalkar
C/o The Editor
'Matwala',
Gaughat
Mirzapur City

६१. नंददुलारे वाजपेयी को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
२०. १. ३०

प्रिय वाजपेयी जी,

आपका सुख-पत्र मिला । बड़ी प्रतीक्षा थी । वैसे ही उत्तर देने में कुछ देर हो गई । शरीर अच्छा नहीं था । अब स्वस्थ हो गया हूं । कुछ शिकायत अभी है । इधर दो कहानियाँ तथा १०/१२ गीत लिख कर 'सुधा' को भेज दिये हैं जो क्रमशः निकलते रहेंगे । कुछ नोट्स भी भेजे हैं । अप्सरा तैयार हो रही है । उसका बड़ा स्लो प्रॉग्रेस है । चैत तक गीत और अप्सरा बाजार में जरूर आ जायंगे । कुछ कहानियाँ भी शायद लिख डालूं ।

आपका प्रश्न बड़ा विकट है । यों तो मुझे ख़ूराक कहीं भी नहीं मिलती जिसके

लिये किन्हीं सज्जन का उल्लेख करूं। पर अपनी अपनी डाल पर जो जिस तरह खिले हुए चमकते हैं, सब की शोभा देख लेता हूं। हृदय की भारती की पसन्द के लिये मैं विवश हूं। उनका शासन मुझ पर बड़ा कठोर, उनका इंगित बड़ा मधुर, वे बड़े बड़े लोगों का सामना करती हुई ज़रा भी त्रस्त नहीं होतीं। आप माने या न माने। यों बाह्य दृष्टि से जिनकी जैसी सेवा, प्रसिद्धि, शिक्षा, अध्ययन है, वे उतने बड़े हैं, मुझ पर यह सब प्रभाव है। जितने आदमियों के नाम आपने लिखे हैं सब की एक अपनी विचित्रता भी है। आप सोच कर आप ही समझ लीजियेगा।

'दो घूंट' आपको जितना पसन्द आया, अभी मुझे भी वैसा ही लगता है। देकर ही लोग बड़े बने हैं, मार कर नहीं बन सके। उस विवाह ने भी समाज+साहित्य को बहुत कुछ दिया है।

द्विवेदी जी की कविता न जाने क्यों अभी नहीं निकाली! १०/१५ दिन बाद जाकर देखूंगा। शायद इधर निकालें। भेज दीजिये उग्र [?] साहित्य जो लिखा और सब जीवयों [कवियों ?] की जन्म-तिथियां। प्रसन्न हूं।

आपका
निराला

[पता]

Pandit
Nandadularey Bajpeyi
M. A.
Arya bhawan
P. O. Lanka
Benares

[यह कार्ड भेजा न गया था; अंतिम अंश में "भेज दीजिये" आदि वाक्य स्पष्ट नहीं है। विवाह—अवश्य ही सरोज का विवाह।]

६२. महादेव प्रसाद सेठ को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
२५. २. ३०

प्रिय सेठ जी,

आपका अमूल्य पत्र "मतवाला" बराबर मेरे पास आ रहा है, इस कृपा के लिये आप का कृतज्ञ हूं। पर कृपा इतनी ही मेरे लिये यथेष्ट हुई, अब आप मेरा नाम काट दीजिये। पत्र लौटाने की अशिष्टता करते हुए संकोच होता है। आशा है, आप मुझे ऐसा न करने देंगे।

आपके जो १२५) एक सौ पच्चीस रु० के लगभग प्राप्य हैं, उनके लिये प्रयत्न कर रहा हूं। विश्वास है शीघ्र ही आपके ऋण से मुक्ति मिलेगी। मैंने अन्दाज़ा लिखा

है, सत्य जो हो, आप भेज दें तो और कृपा होगी। किताब प्रकाशक के पास भेज रहा हूं, वहीं से उक्त रुपये आप को भेज देने के लिये लिख दूंगा।

सविनय—निराला

[पता]

Babu
Mahadev prd Seth
The Editor, The "Matwala"
Gowghat
(मिर्ज़ापुर) Mirzapur City

[यह कार्ड भी भेजा न गया था।]

६३. रामधनी द्विवेदी को

गढ़कोला, मगरायर, उन्नाव
५. ३. ३०

प्रिय रामधनी,

तुम्हारा कार्ड मिला। तुम्हारे रुपये आगए, पढ़कर हर्ष हुआ। तुमने हमें होली के वक़्त बुलाया है। पर शायद हम जा नहीं सकेंगे। इस साल लखनऊ की होली देखने का विचार है। और सब कुशल है। अपने समाचार देते जाना। अगर लखनऊ जाना नहीं हुआ तो तुम्हारे यहां की ही होली देख लेंगे। तुम्हारी बीवी को कमर छूना, और तुमको फागुन के सब भगतों का आशीर्वाद।

तुम्हारा
सूर्य्यकान्त

६४. रामधनी द्विवेदी को

सुधा कार्यालय, अमीनाबाद,
लखनऊ २२-६-१९३०

चिरञ्जीव रामधनी,

अब तुम लोग चांदपुर से आगये होगे। आशा है, अम्मा भी अभी होंगी और तुम सब लोग सानन्द सकुशल होगे। शायद अब तुम मकान आदि के छवाने के काम में लगे हो। अम्मा भी, मुमकिन है, अभी १०/५ दिन कहीं न जायं हम प्रसन्न हैं। काम ज्यादा रहने से हमें अभी फुरसत नहीं मिली। मकान छवाना-छोपाना था। पर अकेले क्या करें? कहीं जल गिरा तो घर बैठ जायगा। अभी ८/१० दिन कम से कम हमको सांस लेने का वक्त नहीं। इससे अधिक समय भी लग सकता है। फिर सरोज को गांव में छोड़ देंगे। द्विवेदी जी को भी वहीं रख देंगे। हमारे हाथ में काम बहुत

आ गया है। हमारी एक किताब महीने भर में छपकर निकल जायगी। दूसरी लिख रहे हैं। ऊपर से सुधा का कुल काम देखना पड़ता है। अम्मा को प्रणाम। तुम्हारी बीबी को भेंट-भेंट। तुमको किसमिश। लड़कों को आसीस।

सूर्य्यकान्त

६५. नारायणदीन अवस्थी को

[लखनऊ]
२५-७-३०

प्रिय नारायण दीन को सूर्यकान्त त्रिपाठी का नमस्कार। आगे हाल यह है कि हम उन्नाव में सभापति त्रिपाठी जी से मिलकर लखनऊ आये और आते ही बीमार पड़ गये। हमें ३ दिन से बुखार आ रहा है और बायें हाथ में एक बहुत बड़ा फोड़ा निकला है। इससे हम परसों इतवार को शायद गांव न जा सकें। यहां हम किसी से मिल भी नहीं सके।

पुरवा में २ अगस्त को रविवार के दिन सभा होगी। त्रिपाठी जी उसमें जायंगे। इसके बाद वाले इतवार को गांव में सभा की उनसे बातचीत हुई है। उन्होंने आने के लिये पूरा पूरा वादा किया है। अब बिना अच्छे हुए कुछ ठीक नहीं कह सकते।

सूर्य्यकान्त

[पता]

श्रीयुत
नारायणदीन अवस्थी
मु० गढ़ाकोला
डाकखाना मगरायर
(उन्नाव)
Unao

[यह कार्ड गढ़ाकोला के किसान नारायण दीन अवस्थी को भेजा गया था। लखनऊ से लौटने पर वह निराला को पुनः प्राप्त हुआ।]

६६. रामघनी द्विवेदी को

Aminabad Hotel,
Lucknow
11. 11. 30

प्रिय रामघनी,

हम सीतापुर चले जाने के कारण तुम्हारे वहां कतकी के समय नहीं पहुंच सके। अम्मा की दवा के लिये अभी तक लिख नहीं सके। वहां से कल लौटे हैं। आज लिख

रहे हैं। दवा ८/१० दिन में पहुंच जायगी। आशा है, तुम लोग अच्छी तरह हो। हम प्रसन्न हैं।

सूर्य्यकान्त त्रिपाठी

६७. रामधनी द्विवेदी को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
३०. १२. ३०

चिरञ्जीव रामधनी,

हम इस समय गांव में हैं। २/३ दिन बाद लखनऊ चले जायेंगे। सकुशल हैं। आशा है, तुम लोग अच्छी तरह हो। खुसरूपुर शायद न जा सकेंगे। सस्नेह

सूर्य्यकान्त

६८. रामधनी द्विवेदी को

Lucknow
24. 3. 31

प्रिय रामधनी,

बहुत दिनों मे तुम लोगों के सुख-समाचार नहीं मिले। आशा है, तुम लोग अच्छी तरह हो। अम्मा इस समय शायद बांदा में होंगी, हम अच्छी तरह हैं, जरा जुकाम और बुखार आ रहा है। दो एक दिन में अच्छा हो जायगा। और सब कुशल है। इति

सस्नेह सूर्य्यकान्त

६९. शिवपूजन सहाय को

[५. ६. ३१]

प्रिय शिवपूजन जी,

मेरे मित्र पद्मादत्त त्रिपाठी हिन्दी में एम्. ए. की तैयारी कर रहे हैं। यहां (कलकत्ते में) हिन्दी वालों को मैथिली भी लेनी पड़ती है। आपसे मैथिली की कुछ पुस्तकों की सहायता, वहां रहने के कारण, मिल सकती है। ये पत्र के साथ आवश्यक अपना कथन तथा पुस्तकों की तालिका देंगे, आप यथाशक्ति इनकी मदद अवश्य कर दें। आप इनको पहचानते हैं—मतवाला में (विद्यार्थी अवस्था में) आते जाते थे—कालेज स्क्वायर में भी थे—अब के [?]।

आशा है, आप प्रसन्न हैं। मैं कल यहां से चलूंगा, लखनऊ होकर घर।

आपका
—'निराला'

कलकत्ता
५. ६. ३१

७०. कन्हैयालाल को

Gurhakola, Magrair,
Unao
16. 8. 31

My dear Kanhaiyalal je,

I receive both of your cards. I am a little late to answer, sorry. You can publish the stories in your collection. For that one, you heard from Munshi je, I request you not to place. It is obscene though instructive, not befitting a collection.

[लखनऊ-स्थित कलाकार मित्र कन्हैयालाल को लिखा हुआ अधूरा कार्ड। कार्ड पर पता नहीं लिखा गया।]

७१. नन्ददुलारे वाजपेयी को

[१९३१]

प्रिय वाजपेयी जी,

आज आपकी 'निराला' आलोचना पढ़ी। विचारों के लिए तो मैं कुछ कह ही नहीं सकता। कारण, वे आपके हैं, पर इतिहास के लिए अवश्य कहूँगा कि सुमित्रा-नंदन जी को प्यार करने के आठ महीने पहले मैं हिन्दी जनता की आँख की किरकिरी हो चुका था। उनको अच्छी तरह लोगों ने तभी जाना जब 'मौन निमन्त्रण' से, शायद १९२४ की 'सरस्वती' के फरवरी वाले अंक से, लगातार उनकी रचनाएँ निकलने लगीं। मैं आठ महीने और पहले से 'मतवाला' के मुख पृष्ठ पर, जिसका आपने उद्धरण दिया है—'छूटता है यद्यपि अधिवास,' और बाद की रचना कहकर भावना सम्वलित बतलाया है, 'मतवाला' के निकलने से भी पहले 'माधुरी' के पहले साल निकल चुकी है और मेरे पास १९१६ की लिखी हुई पड़ी थी। शिव पूजन जी ने 'माधुरी' में भेज दी थी। समन्वय में इससे पहले और रचनाएँ निकल चुकी हैं। पन्त जी का 'उच्छ्वास' सिर्फ छपा था। पर वह हिन्दी जनता के पास, ६-७ पृष्ठों का ।।।) कीमत पर पहुँच चुका था, मैं नहीं कह सकता। गुरु जी का 'ब्लैंकवर्स' वीरांगना काव्य भी पन्त जी की सृष्टियों से पहले 'सरस्वती' में निकला। आपका शायद मतलब है, पन्त जी ने भावना का प्रसार किया, और तभी से जब वे 'मुसक्यानों से उछल-उछल' लिखते थे।

आपका
"निराला"

७२. विनोदशंकर व्यास को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
१८. २. ३२

प्रिय विनोद जी,

२५ दिन लखनऊ रह कर कल घर आया हूं। आपके प्रिय पत्र का इसीलिये समय पर उत्तर नहीं दे सका।

एक प्रति "जागरण" की मिली। पढ़कर तबियत बहुत खुश हुई। बहुत दिनों से बाबू शिवपूजन सहाय जी की प्रतिभा का व्यक्तिगत परिचय नहीं मिल रहा था। उनके हाथ से शीघ्र ही पत्र की प्रतिभा बढ़ जायगी, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। पत्र प्रथम अङ्क से ही आकर्षक है।

एक लिपि इख्तियार कीजिये। जैसे :—"श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार (लङ्कार) लिखित……हिन्दू-संगठन (सङ्गठन)" आदि आदि। या तो हिंदू-संगठन लिखिये या हिन्दू-सङ्गठन। यह दूसरे पृष्ठ के दूसरे कालम में है। एक स्कूल पकड़िये।

एक गीत भेजता हूं। आशा है, आप लोग प्रसन्न हैं। इति

आपका
—निराला

[शिवपूजन सहाय "जागरण" का संपादन कर रहे थे। विनोद शंकर व्यास ने गीत के साथ उन्हें यह पत्र भी भेज दिया होगा। वह उनके—शिवपूजन सहाय के—संग्रह में था।]

७३. शिवपूजन सहाय को

गढ़ाकोला, मगरायर, उन्नाव
१०. ४. ३२.

प्रिय शिवपूजन जी,

आपका प्रिय पत्र मिला। मैंने अपनी राय में प्रवासीलाल जी को आत्मकथाङ्क पर जैसा समझा लिख दिया है। मेरी लड़की सख्त बीमार है। ४ महीने से रायबरेली अस्पताल में पड़ी हैं। बड़ी सङ्कटमय अवस्था है। स्वस्थ समय का फोटो मैंने लिया नहीं। अब तो कृश हो रहा हूं। बाल भी कटवा दिये। कवि-चित्र ८/१० महीने बाद मिल सकेगा। अभी मैं निकलवाना भी नहीं चाहता। कुछ लिख लूं। तब शोभा भी देगा।

क्या 'जागरण' महादेव बाबू के पास जाता है? अवश्य लिखिये [।]

मुझे ३/४ दो अंक पुन: भेज देने की कृपा करें। खो गये हैं।

एक सप्ताह में गद्य-पद्य कुछ भेजूंगा। छठा अंक खाली ही रहेगा।

आपका—सूर्य्यकान्त

५वें अङ्कवाली मेरी कविता की लड़ी में 'उधर देखोगे' गल्ती से 'उधर देखोगें' छप गया !

—नि०

[पता]

Babu
Shivapoojan Sahaya,
The Editor, Jagaran
The Vias Bhawan
Man Mandir
Benares City

७४. शिवपूजन सहाय को

गढ़ाकोला
[अप्रैल, १९३२]

प्रिय शिवपूजन जी,

आपका पत्र। जागरण मिला। वही लड़की है। एक आलोचना और ३ गीत भेजता हूं। आलोचना शीघ्र निकालिये। अपने संवाद देते रहिये। कोई [काम] दिला सकें तो कोशिश कीजिये [।] घर बैठा [हूं]।

आपका
निराला

७५. शिवपूजन सहाय को

गढ़ाकोला
[अप्रैल, १९३२]

प्रिय शिवपूजन जी,

आपके प्रिय पत्र का यथासमय उत्तर न दे सकने का कारण आप समझ गये होंगे, मेरा प्रयाग जाना था; विनोद जी से वहां की बातें आपने सुनी होंगी। अनवकाश वश होलिकाङ्क के लिये गद्य नहीं भेज सका। इस पत्र के साथ एक गीत भेजता हूं।

मैं इस समय विपाद ग्रस्त रहता हूं। मेरी लड़की तीन महीने से रायबरेली-अस्पताल-दाखिल है। बहुत बड़ा Operation हुआ था। जीने की आशा नहीं थी, हुई, अब फिर जा रही है। बायें स्तन की बग़ल से अस्त्रक्रिया हुई है। घाव अच्छा नहीं हो रहा। दो रोज हुए खून परीक्षा के लिये फिर लखनऊ भेजा गया है। घर में एक चाची साल भर से पड़ी हैं। नदी में गिर पड़ी थीं, कूल उतर गया था। वह मृत्यु पर्यन्त अच्छा नहीं होने वाला। किसी तरह दिन पार करता हूं।

'हंस' मे आपने अत्युक्ति की। बहुत अंशों में सत्य का अपलाप हुआ। पर लेखक की कोमलता पाठकों पर अपना सुखद स्पर्श छोड़ती ही है।

'जागरण' में आप अपनी तरफ से भी अपनी अलङ्कृत भाषा में कुछ लिखा करें। इतना समाचार विना पूड़ियों का आचार ही आचार हो जाता है जिसे कुछ हद तक व्यभिचार भी कह सकते हैं।

आशा है, आप खूब स्वस्थ, हृष्टपुष्ट, नये वसन्त की ही तरह अपने गत साहित्यिक जीवन के नवोन्मेष-काल में प्रसन्न हो रहे हैं। इति।

आपका
—निराला

[पत्र अप्रैल ३२ में लिखा गया था, संभवतः तीसरे हफ्ते में।]

७६. जयशंकर 'प्रसाद' को

रँगीला
हास्य-रस-प्रधान हिन्दी साप्ताहिक।

५७, वांसतल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता,
२३-५-१९३२.

प्रिय बाबू साहब,

मैंने आपको नहीं लिखा। कई कारण हैं। आपने भी मुझे नहीं लिखा। मुमकिन है मैंने ग़लती की हो। रंगीला मेरे मित्रों की हठवादिता का रूप है। मुझे उसके प्रकाशित होने की खबर हुई पत्रों में मेरे सम्पादकत्व का विज्ञापन छप जाने के बाद। परिस्थिति सँभालने आया तो प्रकाशन की नौबत आई। कुछ भेजिये ५/६ रोज़ में।

आपका
निराला

[पता]

Babu
Jaya shanker 'Prasad'
Govardhan Sarai
Benares City

७७. शिवपूजन सहाय को

रंगीला
हास्य-रस-प्रधान हिन्दी साप्ताहिक।

५७, बांसतल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता—२३/५/१९३२

प्रिय शिवपूजन जी,

मित्रों ने ढिठाई की। विना पूछे रँगीला का डिक्लरेशन लिया। विना पूछे पत्रों में मुझे भविष्य सम्पादक छापा। मालूम होने पर अनिच्छित मुझे आना पड़ा। आगे

राम मालिक है। पत्र शीघ्र निकलेगा, इस शनि के बाद वाले शनि को। कुछ शीघ्र भेजिये। इति।

आपका
—निराला

[पता]

Babu Shivapoojan Sahaya je
The Editor, Jagaran,
Manmandir
Benares City

७८. जयशंकर 'प्रसाद' को

रँगीला
हास्य-रस-प्रधान हिन्दी साप्ताहिक।

५७, बांसतल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता
६-६-१९३२

प्रिय बाबू साहब,

आपकी कविता रँगीला में निकल गई। पत्र जा रहा है। अपनी सम्मति तथा और कुछ परिश्रम के विना आ सके तो भेज दें। मुझको इस तरह के काम से कष्ट होता है, पर बैठा ठाला मित्रों के कहने पर उठा लिया। आपके समाचार मिलते रहे हैं। मैं सकुशल हूं। इति।

आपका
निराला

[पता :]

Shri Jay shanker Prasad je
Goverdhan Sarai
Benares City

७९. जयशंकर 'प्रसाद' को

रँगीला
हास्य-रस-प्रधान हिन्दी साप्ताहिक।

५७, बांसतल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता
१९-६-१९३२

श्रीमान् बाबू साहब

कुछ भेजिये। अपनी सम्मति के साथ। तीसरे अंक को देखकर सम्मति न दीजिये। बीमार रह कर लिखा है यह अङ्क। दूसरे में स्टन्डार्ड घटा दिया है बाजार देखकर। फिर भी बिक्री अच्छी नहीं, किसी अखबार की नहीं। ४ थे में कोशिश करूंगा। कुल आप लोगों का भी सहारा मिल जायगा। शिवपूजन जी कुछ नहीं भेज

रहे। अकेला हूं, सब विषय हर हफ़्ते अकेला कहां तक पूरे करूं? छापे की गलतियां भी होती हैं। प्रेस अपना नहीं: प्रेस की मशीन अपनी नहीं। अर्थाभाव ऊपर से। अपनी इच्छा की मैंने प्रतिकूलता की, मित्रों के अनुकूल होने के लिए। अब देखूं, कब तक गुण खींचता हूं। आप प्रसन्न होंगे।

आपका
निराला

[पता :]

Babu
Jay shanker je
Prasad
Goverdhan Sarai
Benares City

८०. शिवपूजन सहाय को

रंगीला।
हास्य-रस-प्रधान हिन्दी साप्ताहिक।

५७, बांसतल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता १९/६/१९३२

प्रिय शिवपूजन जी,

आपका प्रिय पत्र मिला। अकेला बड़ी परेशानी में हूं। पहला अङ्क बाजार की समझ से ऊंचा कहा गया। दूसरा ठीक। पूरे कुल कालम भिन्न भिन्न दूसरे के मैंने ही भरे। पहला तो स्पष्ट ही है। तीसरे में अस्वस्थ होकर गिरा दिया। ४था सँभालने का विचार है। क्या आपका वह खून बिलकुल पानी हो गया? हाथ बटाइये, चल गया तो ठीक है। नहीं तो 'मस्तराम के सोंटे से'। कलकत्ता अब वह नहीं, बहुत गिरा है, समय भी वैसा है।

आलोचना कर दीजियेगा। व्यक्तिगत राय भी भेजिये। शिकस्त हो गया हूं। बहुत होता है एक आदमी के लिये। सम्मति प्रथम पर। दूसरे पर भी। कुछ मिलने पर फिर लिखूंगा।

आपका
—निराला

[पता]

Babu
Shivapoojan Sahai
The Editor, Jagaran
The Vias Bhawan
Manmandir
Benares City

८१. बनारसीदास चतुर्वेदी को

[भार्गव मैजेस्टिक होटल,
हेवट रोड, लखनऊ]
४-१०-३२

प्रिय चतुर्वेदी जी,

आपका प्रूफ मिला। आपने अपने मनोभाव वहुत अच्छी तरह आकर्षक ढंग से प्रकट किये हैं। देखूं कैसी कैसी सम्मतियां हिन्दी के हितैषी विद्वानों से आपको मिलती हैं। फिर न हो कहीं कुछ लिखूंगा। आप तो विना समझे कुछ छापेंगे नहीं। निवन्ध यदि नहीं समझ में आया तो राय तो अवश्य ही समझ में आ जायगी। इस तरह की चहलपहल से मुझे भी काफी दिलचस्पी रहती है। समझने और लिखने लायक वहुत सा मसाला मिलता है। आपने अपने आक्रमण का प्रूफ भेजा, यदि चाहते तो प्रवन्ध की टीका करने का निमंत्रण भी दे सकते थे; तव इतना आकर्षक कुछ ज़रूर न रहता पर गुत्थी सुलझ जाती। मुमकिन है, अन्त तक आप ही वदनाम हों। सच वतलाइयेगा, विना कोष देखे, पूछे, सन्निपात की व्युत्पत्ति जानते हैं आप ? यह पत्र भी छापिये।

निराला

[यह पत्र 'विशाल भारत' में नहीं छपा; 'वर्तमान धर्म' की टीका वाले लेख के साथ 'माधुरी' में छपा था।]

८२. बनारसीदास चतुर्वेदी को

भार्गव मेजेस्टिक होटल,
हेवट रोड, लखनऊ।
१७-१०-३२

प्रिय चतुर्वेदी जी,

आपके पत्र का यथासमय उत्तर नहीं दे सका। क्षमा। मैं अभी "वर्तमान धर्म" की टीका लिखकर 'साहित्यिक सन्निपात' उसका खिताव नहीं हटाना चाहता। आपका परिश्रम जो आपने पत्र और प्रूफ भेजकर किया है, विफल हो, मेरा ऐसा उद्देश्य नहीं। मैं आक्षेप हो चुकने के वाद, आप के पास साहित्यिकों की सम्मतियां आ चुकने के वाद अक्षर-अक्षर टीका लिखूंगा। देखना है, सन्निपात-ग्रस्त कौन है। न भेजा हो तो महात्मा जी और रवीन्द्र नाथ के पास भी एक प्रूफ और अनुवाद भेजकर सम्मति अवश्य अवश्य लीजिये। इससे भावी हिन्दी का वड़ा उपकार होगा। शायद सरस्वती ने यही सत्य समझ कर आपको इस प्रकार का योग्यतम मनुष्य समझा है। पहले आप आक्षेप— प्रतिकूल या अनुकूल छापिये। फिर मैं आप को टीका लिख कर दूंगा। अथवा प्रताप की तरह दूसरी जगह का प्रूफ छापने के लिये भेज दूंगा। इति।

आपका
निराला

प्रार्थना है, शीघ्रातिशीघ्र सम्मतियां छापना आरम्भ करें। इसी महीने से हो तो बड़ा अच्छा।

निराला।

८३. जयशंकर 'प्रसाद' को

Bhargava Majestic Hotel,
Hewett Road, Lucknow
24. 4. 33

प्रिय बाबू साहब,

पन्त जी के साथ मैंने निश्चय किया है, एक ड्रामा अच्छा सा लिखकर खेला जाय। मेरा 'ऊषा' नाम उन्हें पसन्द आया है। ऊषा अनिरुद्ध वाला विषय, नामार्यों से आध्यात्मिक पुष्टि के साथ, दृश्य काव्य में आयेगा। पंत जी ऊषा का पार्ट खेलेंगे। शायद मुझे अनिरुद्ध बन कर उतरना पड़े। आज एक ठाकुर साहब बी. एस. सी. एल. एल. बी बाण की भूमिका पूरी करने वाले तगड़े तगड़े मिल गये हैं। खेलने वाले सभी साहित्यिक, चार पांच एम्. ए. भी हैं। ऊषा का अंश मेरा लिखा होने पर भी पंत जी इच्छानुसार सुधार कर लेंगे, ऊषा के गीत उन्हीं से लिखवाऊंगा। कुछ पात्रों की भाषा, मेरे ब्लैंक वर्स में रहेगी जैसे अनिरुद्ध, बाण आदि की। मैं आपकी भी सहायता चाहता हूं। आप अभी, मई तक opening song दीजिये, फिर अपर सहायता लूंगा। ऐसा ही लिखवाकर आपके नाम के साथ मैंने विज्ञापन कर दिया है, अर्थात् हम तीनों की मदद से नाटक तैयार हो रहा है। गुप्त जी से भी एक song लूंगा। आशा है आप आज्ञा देंगे। सविशेष फिर।

आपका
"निराला"

आप प्रसन्न होंगे। मैं स्वस्थ हूं। अभिनन्दन में न जा सकूंगा, कारण आमंत्रित व्यक्ति कुछ पढ़ नहीं सकते।

नि०

[पता :]

Babu Jai Shanker Prasad ji
Govardhan Sarai
Benares City

८४. रामकृष्ण त्रिपाठी को

Bhargava majestic Hotel,
Hewett Road, Lucknow
[अप्रैल, १९३३]

चिरंजीव श्रीरामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। उत्तर देने में कुछ देर हुई। गोपा के चेचक निकलने के समाचार से चिन्ता है। अवश्य छोटी देवी होंगी। शायद परसाल मनन्ना के निकलीं थीं। तुम्हारे मामा लौटे हैं या नहीं, लिखना। अम्मा शायद जेठ अमावस्या तक लौटें। द्विवेदी जी को हमने लिखा है। तुम्हारे वहां हम जाना चाहते थे, पर नहीं गये। हमारी 'अलका' समाप्त होचुकी। ७/८ दिन में निकल जायगी। ७/८ मई तक हमें अपनी छोटी कहानियों का संग्रह "लिली" छापेखाने में दे देना है। फिर मई के अंत तक "अपराजिता", इनके अलावा और बहुत सा काम है। कलकत्ते वाला आर्डर भी ले लिया है। जल्द जल्द काम कर रहे हैं। अब स्थिति अच्छी हो रही है। तुमको १५/२० रोज तक यहीं ले आवेंगे। तब तक अम्मा भी आ जायंगी. और हम कुछ और काम कर चुके होंगे। सरोज क्या अभी रोटी बनाने लायक है? लिखो

—निराला

[डाकमुहर डलमऊ २६-४-३३

पता:] Sriyut Ramkrishna Tripathi
C/o Ramdhani Dwivedi
Sherandazpur
P.O. Dalmau
(Raebareli)

८५. शिवपूजन सहाय को

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
[संपादन-विभाग]
लखनऊ

Office
7.10.33

प्रिय शिवपूजन जी,

आपके पास सुधा भेजी जाती है, जिसमें आपका प्रिय चित्र प्रकाशित हुआ है। यहां आने पर देखा, आपने, मुझे भी याद (?) लिया (किया ?) है।

मैं आपका पहले ही जैसा चिर-शुचि स्नेहाकांक्ष मित्र हूं। ६/७ दिन हुए वाजपेयी नन्ददुलारे जी यहां आये थे। आपके संवाद उनसे प्राप्त कर दुखी हुआ हूं। श्री दुलारे लाल जी कुछ दिनों से लाहौर हैं, शायद शीघ्र आ जायं २/१ दिन में, तब

सविशेष लेख आदि के संबन्ध में कहूंगा। आप इस समय भी कुछ भेजिए। सुधा की ओर से मैं सविनय प्रार्थना करता हूं। यदि मुझे पत्र दें तो

Bhargava Majestic Hotel
Hewett Road, Lucknow

लिखें। आपके स्नेह से मैं सकुशल हूं।

आपका चिर-प्रिय

—'निराला'

मैं कलकत्ते की तरह यहां भी मुक्त रहता हूं।

[पता :]

बावू शिवपूजन सहाय जी,
हिन्दी-भूषण,
महाशक्ति -साहित्य-मंदिर,
बुलानाला, काशी
Benares City

८६. गया प्रसाद शुक्ल सनेही को

The Bhargava Majestic Hotel
Hewett Road, Lucknow.
3.11.33.

आदरणीय सनेही जी,

छायावाद पर एक लेख 'सुकवि' में देखा। ऐसे अन्ट-सन्ट लेख से आपके सुकवियों को कुछ लाभ होगा, मेरे अनुमान से बाहर है। उत्तर के लिये मेरे पास समय कम है, पुनः, गधा घोड़ा नहीं बन सकता यह प्रसिद्धि आप भी जानते हैं। ऐसी हालत में लिखने से क्या फ़ायदा होगा? मुक्त छन्द की मुक्ता का महत्व नराकारवानरमहाशय क्या समझेंगे? उन्हें तो समावर्त केले ही प्रसन्न कर सकते हैं। 'हिन्दी कविता में छायावाद' का उत्तर इससे अधिक नहीं लिख सकता। छापें न छापें, आपकी इच्छा।

सविनय—
निराला

["सुकवि" में महेशप्रसाद मिश्र रसिकेश, मुख्तार, कलक्टरी, गोरखपुर का रीतिवादी दृष्टि से छायावादी काव्यशैली की भर्त्सना करते हुए लेख—"हिन्दी कविता में छायावाद"—प्रकाशित हुआ था। निराला का पत्र उस लेख पर उनकी टिप्पणी के रूप में अक्तूबर १९३३ के "सुकवि" में प्रकाशित हुआ। महेशप्रसाद मिश्र ने उस पत्र में अपनी मानहानि देख कर सनेही को पत्र लिखकर सूचित किया कि निराला अपने पत्र के लिये क्षमा मांगें, नहीं तो वे कानूनी कार्रवाई करेंगे। नवंबर १९३३ के "सुकवि" में निराला का लेख "क्षमायाचना के लिये धमकी" प्रकाशित हुआ। महेशप्रसाद के

लेख की अपमानजनक वातों की चर्चा करने के वाद निराला ने लिखा, "अव रही बात मेरे क्षमा मांगने की। दोष करने पर क्षमाप्रार्थी होना गुण कहलाता है। इस गुण के ग्रहण के लिए मैंने कोशिश की। पर इससे मुझे ऐसी पैरालिसिस हुई कि क्षमा चाहने की शक्ति जाती रही—हाथ जुड़ने को नहीं उठे। कारण आप लोग समझें।"]

८७. जयशंकर 'प्रसाद' को

वावू जयशंकर 'प्रसाद' जी,
सुंघनी साहु, गोवर्धन सराय,
काशी

प्रिय वावू साहव,

यह पत्र कुवंर गजराजसिंह जी लिये जा रहे हैं। हिंदी में कुछ (अच्छी) कविताएं लिखकर वी. ए. की परीक्षा से मुहँ मोड़कर, संन्यास लेने के इरादे पर निकले हुए कुवंर चन्द्रप्रकाश आजकल काशी में हैं, ऐसा पता लगा है। चित्रकूट से वह काशी गये हैं। मुझसे उन्होंने आपकी जैसी तारीफ सुनी थी, और स्वयं आपकी कविताओं से जैसा प्रेम रखते थे, उसके विचार से अनुमान है कि वह आप से मिले होंगे। पत्रवाहक उनके पिता हैं। यदि कुछ उनके संवन्ध में आपको मालूम हो तो इन्हें अच्छी तरह वतलाने की कृपा करें। पत्रवाहक राजा साहव कसमंडा, राजा साहव टिकरी आदि के खानदान के, वैसवाड़े के वैस क्षत्रिय, हम लोगों के राजवंश हैं। आप सकुशल होंगे। वाजपेयी नन्द दुलारे जी के पास भी इन्हें पता वतलाकर भेजवा दें।

पाठक वाचस्पति जी से भी यह मिल सकेंगे।

सविनय
निराला
१६-४-३४

८८. दुलारेलाल भार्गव को

[मार्च '३५]

प्रिय भार्गव जी,

कल घर जाना चाहता हूं। किश्त समझना है। अभी अदालत की नक़ल नहीं ली। सम्भव हुआ—अगर आपसे २५) मिले तो किश्त दे दूंगा, नहीं तो घूम फिर कर होलीवाद चला आऊंगा। यदि २५) नहीं तो १०) दीजियेगा।

इति।
निराला

गीत अभी लिखे कोई
नहीं : कल सुवह
एक लिखूंगा।
नि०

[इस पर दुलारेलाल भार्गव ने लिखा :
किश्तें आप २५ एप्रिल से देना शुरू करें।
२५ एप्रिल तक वड़ा अर्थकष्ट रहेगा। इधर
मैंने काम भी कम किया।
दुलारे०
25/3]

[लखनऊ]

८९. दुलारेलाल भार्गव को

प्रिय भार्गव जी,

मेरे पत्र को २४ घन्टे हो गये : अभी तक निरुत्तर है। क्या मैं अपना स्वतन्त्र कार्य शुरू करूं ? यह अन्तिम सूचना है, अगर निश्चय मुझे न मिला। जिसने घर से रुपया लेकर एक वार चुकाया है, वह फिर चुकायेगा।

आपको उस वार शराफ़त से नहीं लिखा, इस वार साफ़ किये देता हूं—'दुलारे दोहावली' में मेरे जितने संशोधन हैं : हज़ार-हज़ार प्रत्येक के लिये लगाता हूं। अभी मिलाया नहीं। फिर हिसाव पेश करता हूं। सिलाकारी जी ने जिस 'भई भीरु भव भामिनी' की सवसे ज़्यादा तारीफ़ की है, वह पत्थर से वनाया हीरा मेरा कार्य है; और दूसरों को आपने धोखा दिया यह कह कर कि आप का लिखा हुआ है।

निराला
११. ७. ३५.

58 Nariyalwali gali,
Lucknow.
2. 1. 36.

९०. केदारनाथ अग्रवाल को

प्रिय वालेन्दु जी,

आपका पत्र मिला। आप सकुशल, मित्रों के साथ, पहुंच गये, पढ़कर खुशी हुई। आप जो कुछ लिखना चाहते हैं, जहां चाहें, भेजियेगा। मि: राम बिलास शर्मा से अभी तक मुलाकात नहीं हुई। मैं प्रसन्न हूं।

आपका
कुशलकामी
सप्रेम निराला

[पता]

श्री केदारनाथ अग्रवाल 'वालेन्दु

वी. ए.

The Poet "Balendu"

D.A.V. College Hostel,

Cawnpore

६१. जयशंकर 'प्रसाद' को

[डलमऊ]

आदरणीय बाबू साहब,

इधर आपको लिखने वाला था। पर अभी उस उद्देश की पूर्ति कुछ समय लेगी, इसलिये नहीं लिखा। वात यह थी कि 'ऊषा' नाटिका के लिये प्रथम गीत चाहता था; पर अभी उसके लिये कुछ देर होगी। वहुत देर हो गई यह तो आप जानते ही हैं। इस समय मैं 'निरुपमा' उपन्यास तैयार कर रहा हूं : फिर 'उच्छृंखल' की तैयारी में लगूंगा; इसके वाद कुछ समय के लिये उपन्यास लिखना स्थगित करूंगा। अभी ऐसा विचार है, पर यह सब षडैश्वर्यशाली भगवान की इच्छा पर अवलंबित हैं, कारण ऐश्वर्य का असहयोग मुझे विचार वदलने को वाध्य कर सकता है। कामयाव हुआ तो तव नाटक लिखूंगा। इसके लिये ५/६ महीने की देर ज़्यादा से ज़्यादा होगी।

इधर मेरी दो कितावें निकली हैं, छोटी कहानियों का दूसरा संग्रह 'सखी' और उपन्यास तीसरा 'प्रभावती' लखनऊ के एक मामूली प्रकाशक के यहां से। मैंने अपना कुछ भी आपको नहीं दिया और आपका सब कुछ ले लिया। मुझसे कुछ प्राप्ति की आशा आपको होनी भी नहीं चाहिए और मुझे उत्तरोत्तर पाते रहने की छोड़नी नहीं। शायद इसी आधार पर, मैंने अपनी वहुत सी कितावें यद्यपि मित्रों को खरीद-खरीदकर भेंट की, आपके पास एक भी नहीं भेज सका। पर मैंने सुना है, आप उपनिषदों से नीचे उतरना पसन्द नहीं करते। फिर भी मैं प्रयत्न करूंगा, यदि आपको नीचे उतार सकूं। इसके लिए ऐश्वर्यवान या भगवान की कृपा आवश्यक है, क्योंकि कितावें खरीदनी होंगी।

मेरी इच्छा आपसे मिलने की थी, पर वहुत उलझा हुआ हूं; न आ सकूंगा। आपको सादर अभिवादन भेजता हूं। यदि 'ऊषा' और 'अनिरुद्ध' के अर्थ-रूपों को देखकर एक गीत लिख रक्खें तो मेरे चाहने पर आपको जल्दी न करनी पड़ेगी। इति

सविनय

निराला

१८. ४. ३६

['ऊषा' नाटिका और 'उच्छृंखल' उपन्यास लिखने के वानक नहीं वने। 'सखी' और 'प्रभावती' सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ से छपीं। यह पत्र डलमऊ से रजिस्टर्ड भेजा गया था, संभवतः इसलिए कि 'ऊषा' नाटिका के लिये गीतों की मांग कवि प्रसाद तक निश्चित रूप से पहुंच जाय।]

९२. राम विलास शर्मा को

C/o Pandit Vachaspati Pathak Esqr.
The Leader Buildings,
The Leader Press,
Allahabad.
8. 10. 36.

प्रिय शर्मा जी,

मैं फिर काशी नहीं गया। रोक लिया गया। यहाँ आपका इन्स्टालमेन्ट पर लिखा लेख मिल गया है और वह छपने के लिये—'भारत' में दे दिया गया है। मेरी किताबें अभी प्रकाशित नहीं हुईं। होने पर जल्द आपके पास भेज दूंगा। आपने वह लेख पाण्डेय जी को दे दिया होगा। मैं भरसक उन्हें आज एक पत्र लिखूंगा। और सब कुशल है। तिवारी जी को नमस्कार। लल्लू और चौबे को स्नेह।

आपका
निराला

[पता]

Pandit
Rambilas Sharma, M.A.
112 Moqboolganj,
Lucknow

[इंस्टालमेंट—भगवतीचरण वर्मा का कहानी-संग्रह;
पाण्डेय जी—रूपनारायण पाण्डेय;
तिवारी जी—कान्यकुब्ज कालेज लखनऊ में अंग्रेजी के अध्यापक, कवि, निराला के मित्र;
लल्लू—राम प्रसाद यादव, मेरे मित्र, ११२ मकबूलगंज लखनऊ में निराला के भावी मकान मालिक।]

९३. राम विलास शर्मा को

C/o Vachaspati Pathak Esqr.
The Leader Press, Allahabad.
7.11.36

प्रिय शर्मा जी,

आपके पत्र का उत्तर देते हुए कुछ देर हो गई। आपकी आलोचना इन्स्टालमेन्ट पर आज या कल भेजवा रहा हूं; पाठक जी से कह दिया है; साथ प्रेमचन्द जी पर वाला मेरा लेख भी जायगा; आप तिवारी जी को दे दीजियेगा। गीतिका सोम-मङ्गल तक तैयार हो जायगी। शीघ्र भेजवाऊंगा।

आपकी आलोचना मुझे बहुत अच्छी लगी, आपके विचारों को आप ही की दृष्टि से देखने की जब मैंने कोशिश की। 'खल' 'जनरञ्जन'+'धन्य' आदि में कहीं कहीं परिवर्तन मुझे भी ज़रूरी जान पड़ा था। 'गाथा' में छपते समय ठीक कर दूंगा। 'धन्य' तो अच्छा लगता जब 'धन्यकुमार जैन' में जैसे 'धन्य' सिह का विशेषण होता है। 'शशि शेखर' के लिये आपने जो त्रुटि कलाजन्य बतलाई है, उस पर मेरा ध्यान लिखने के वक्त गया था। पहले ऐसा न था। बड़ी जोरदार पंक्ति थी—"अम्बर में हुए दिगम्बर आलिङ्गित शङ्कर"। पर 'राम की शक्तिपूजा' में भाव साद्यन्त शुद्ध है। राम की शक्ति रावण की जैसी शक्ति नहीं। रावण की शक्ति में मैंने कालिका का वर्णन किया है—"श्यामा के पदतल भारधरण हर···" राम की शक्ति में शिव मस्तक पर हैं शक्ति के। फलतः वह पङ्क्ति मुझे बदलनी पड़ी। वहाँ शशिशेखर शिव के ही अर्थ में है। यदि 'शशि' को देखना हो तो अमावस्या में वह कल्पना में ही देख पड़ेगा—वह आकाश में है। दुर्गा के दस हाथ पहाड़ में देख नहीं पड़ते; यह ठीक है; पर दश हाथ दिखाये भी नहीं जा सकते, क्योंकि ऊर्द्ध्व और अध हाथ में रूप में कैसे आयेंगे, आप ही बतायें, पहाड़ में। यों आठ दिशाओं के हाथ दिखाना भी असंभव है: पर यह निर्णय आठ दिशाओं के पहाड़ से किया जा सकता है। जो शुद्धि मैंने की है वह 'सिया' नहीं 'प्रिया' है। 'पुरुषोत्तम नवीन' में पहले 'प्रवीण' रक्खा था जो शब्दोच्चारण के विचार से ज्यादा साफ़ है। पर फिर 'नवीन' कर दिया। मुझे इसमें व्यङ्ग्य अच्छा मालूम दिया।

और सब कुशल है। 'माधुरी' में मुझ पर छपा वह लेख भुवनेश्वरवाला तो देखा होगा?—निराला

[पता:]

Mr. Rambilas Sharma, M. A.
112 Moqboolganj,
Lucknow.

["भारत" में छपे "राम की शक्ति पूजा" के पाठ की आलोचना करते हुए मैंने जो बातें कही थीं, निराला के उत्तर से पाठक उनकी अवधारणा कर सकते हैं। "गाथा" संग्रह में वह "राम की शक्तिपूजा" जैसी कथात्मक रचनाएं देना चाहते थे किन्तु वह योजना पूरी नहीं हुई और "गाथा" नाम से कोई संग्रह छपा नहीं।]

९४. राम विलास शर्मा को

C/o Vachaspati Pathak Esqr.
The Leader, Allahabad
8.11.36.

प्रिय शर्मा जी,

कल आपके पत्र का उत्तर मैं पोस्ट कर चुका हूं। पर चूंकि ४/५ बजे शाम को किया था, इसलिये, मुमकिन, ये दोनों पत्र एक साथ आपको मिलें। आज रवि है।

कल आपके लेख भेजे जायंगे।

दूसरी तरफ का पत्र श्री राजेन्द्र नाथ शुक्ल को अवश्य दीजियेगा।

आपका
निराला

माधुरी का उत्तर कल भेज रहा हूँ। साथ दो और आदमियों के संस्मरण हैं भुवनेश्वर पर।

नि०

[पता]
Mr. Rambilas Sharma, M.A.
112 Maqbool ganj,
Lucknow.

[राजेन्द्र नाथ शुक्ल—निराला के मित्र त्रिभुवन नाथ शुक्ल के पुत्र। 'माधुरी' का उत्तर—निराला पर भुवनेश्वर के आक्षेपपूर्ण लघु लेख का उत्तर। जो लेख मुझे भेजे जानेवाले थे, उनमें मेरा एक ही था—भगवतीचरण वर्मा के कहानी संग्रह "इंस्टालमेंट" की, १३ अक्तूबर सन् ३६ के "भारत" में प्रकाशित, आलोचना; दूसरा लेख प्रेमचंद पर निराला का था। अगला पत्र देखें।]

९५. राम विलास शर्मा को

The Leader Buildings,
Allahabad
9.11.36

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र मिला। आज आपका इन्स्टालमेन्ट और मेरा प्रेमचन्द जी वाला लेख भेज दिया गया। गीतिका निकल गई। आपकी और तिवारी जी की कापी ४/५ दिन वाद, भारत से रुपया मिलने पर भेजूंगा। यहाँ १२ नवम्बर को प्रयाग विश्वविद्यालय में मेरा एक भाषण होने वाला है। यहाँ की प्रदर्शनी में भी जाने का विज्ञापन निकल गया है, पर मैं जाऊंगा नहीं।

कान्यकुब्ज पत्रिका में आपके पद्य एक-एक वार पढ़े। वड़े अच्छे मालूम दिये। फिर कई वार पढ़ूंगा, जैसा मैं पढ़ता हूँ, एक-एक शब्द अच्छी तरह समझ कर। तिवारी जी के Editor's call के लिये धन्यवाद तो वड़ी हल्की बात होगी, वैसी वजनदार क्या दूँ --वही 'राम की शक्तिपूजा' एक वार सुना दीजियेगा।

श्री भुवनेश्वर प्रसाद को उत्तर भेज चुका हूँ। मैंने भूमिका भर लिखी है, मुझे ही लिखना था, क्योंकि बातचीत उन्होंने मेरी लिखी है; उनका परिचय मेरे मित्र पं० वाचस्पति पाठक और पं० वलभद्र प्रसाद मिश्र एम० ए० (आपकी तरह प्रयाग विश्वविद्यालय के रिसर्चस्कालर) ने लिखा है; दोनों पत्र भेज दिये हैं जो बड़े चुभते

हुए हैं। वहाँ छपते छपते पढ़ लीजियेगा। उनके लिये बड़े तिक्त साबित होंगे। पाण्डुलिपियाँ इन्हीं सज्जनों की भेजी हैं।

अनुवाद के सम्बन्ध में क़ानूनी राय मैं इसी वक्त नहीं दे सकता। पर कुछ दिनों में अनुवाद करने का अधिकर हो जाता है चाहे जिसके पास किताब हो। आप जबकि हिन्दी की प्रसिद्धि के विचार से अनुवाद कर रहे हैं तब किसी से बिना पूछे भी कर सकते हैं। मैं यह अवश्य कहूँगा कि आप अच्छी अच्छी कुछ कविताएं एक बार माडर्न रिव्यू को भेज कर देखें, एक तमाशा सही।

एक बार लखनऊ जाने की बड़ी इच्छा होती है। पर शायद बड़ी प्रदर्शनी के समय ही जा पाऊँ।

आप साहित्यिक तरीके से एक लेख लिख कर भुवनेश्वर प्रसाद से अंगरेज़ी और फ्रेंच का ज्ञान थोड़ा-बहुत प्राप्त करने की कोशिश करें तो क्या बुरा है: Morbidity तो वे आपको बहुत दिनों तक बतायेंगे, यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ।

उनके उत्तर में मैंने आपका थोड़ा सा उल्लेख किया है कि "स्कालर कवि मित्र श्री रामविलास शर्मा के यहाँ कला की रूपरेखा लिखी"—ऐसा एक।

आपका
निराला

[पता:]

Mr. Rambilas Sharma M.A.
112 Moqbool ganj,
Lucknow.

[कान्यकुब्ज पत्रिका—कान्यकुब्ज कालेज से एक हिन्दी पत्रिका निकलती थी, "ज्योति," संपादक—मदन गोपाल मिश्र; दूसरी अंग्रेजी की "टॉर्चवेयरर," सं० ब्रजमोहन तिवारी। अंग्रेजी पत्रिका में निराला तथा विक्तर ह्यूगो की कुछ कविताओं के मेरे किये हुए अनुवाद छपे थे।]

९६. ब्रजमोहन तिवारी को

C/o Sjt. Vachaspati Pathak Esq.
The Leader Press, Allahabad.
12. 11. 36.

To
B. M. Tiwary M. A. L. T.
My dear Tiwary je,

I have read you. You bow down before my poetry like a flower on a slender stem, she may accept. A monotony to me all you praise, new what I see is 'trashy' of mine in you: I enjoy: what a fine expression indeed! But do not mind. This causes the chance to call me now and then to twist the tail of the Univer-

sity-bulls, and today is the twelfth, the date of my lecture in the Allahabad University.

I am told that editor, The Bharat, at a glimpse even, is taken aback, and goes (in a bounden duty as if) to take in your notes' Translated forms, not leaving even the trashy one.

I read Dr. Sharma's translations and see no gap to point out Hugo's,—sounds' bomardment, tremendous to me, a timid Indian.

Don't mind if I am rich of my poor English, and delay not writing me your address full. Geetika is published, and I, watching the moment to send it to you.

Yours sincerely
Nirala

[यह पत्र मैंने तिवारी जी को यथासमय दे दिया था; उसकी प्रतिलिपि करके अपने पास रख ली थी। आशय : मैंने आपको पढ़ लिया है। सुकुमार वृन्त पर कुसुम के समान आप मेरी कविता के सामने नत हैं। वह आपको स्वीकार करती है। आपकी प्रशंसा मेरे लिये नीरस है। आप में जो नवीन है, वह मेरी ही तलछट है। मुझे मज़ा आता है। कैसी व्यञ्जना है! बुरा न मानें। इसी से कभी कभी विश्वविद्यालय के वलीवर्दों की पूंछ मरोड़ देता हूं। आज इलाहावाद वि. वि. में मेरा भाषण है। सुना है 'भारत' के संपादक आपकी टिप्पणियों को कर्त्तव्य समझ कर अनुवाद रूप में दे रहे हैं, तलछट वाली भी नहीं छोड़ीं। मैंने डा. शर्मा के अनुवाद देखे। ह्यूगो की धुआंधार ध्वनि की गोलावारी में मुझ दब्बू हिन्दुस्तानी को कहीं खाली जगह न दिखाई दी। अपनी इस अंग्रेज़ी की दरिद्रता से समृद्ध हूं। क्षमा करें। पूरा पता लिखें। गीतिका छप गई और मैं उसे भेजने की ताक में हूं।]

९७. राम विलास शर्मा को

C/o. The Leader press
Allahabad.
20. 11. 36

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र मिला। तिवारी जी ने कोई उत्तर नहीं लिखा। शायद लोहा मान गये। उनका कान्यकुब्ज कालेज से एक पहले का लिखा हुआ पत्र मिला था, कुछ भेजने की मांग या तकाज़े के तौर पर, टार्च-वेयरर के लिये। उनसे मेरी शिकायत कर दीजियेगा। यह भी पूछियेगा कि यह 'मशालची' 'सूर्य्यकान्त' को कैसे सँभालेगा।— दोनों में तो दिन रात का फ़र्क़ है।

गीतिका भरसक कल या परसों भेजवाऊँगा। तिवारी जी वाली उन्हें दे दीजियेगा। अच्छा हो अगर आप 'लीडर' के लिए एक आलोचना लिख कर भेजें और तिवारी जी

'भारत' के लिए। विज्ञापन पाठक जी का लिखा हुआ है। हाँ, तिवारी जी के नोट तो भारत के लिए अनुवादित कराये गए थे, और कम्पोज़ होने को दे भी दिये गये हैं! मुमकिन, निकल भी जायें; इसलिए वे 'माधुरी' या किसी दूसरी अच्छी पत्रिका को दें। आपको हिन्दी में कुछ सहूलियत इसलिए होगी कि आप विस्तार पूर्वक लिख सकेंगे: 'लीडर', मुमकिन, जगह का ख़याल करे। ख़ैर, जैसा जान पड़े, आप लोग करें।

यहां की यूनीवर्सिटी में 'आधुनिक हिन्दी साहित्य की गतिविधि' पर भाषण था। यह यहाँ की एक हिन्दी की सभा है। प्रायः ४०/५० विद्यार्थी और १०/१२ छात्राएँ थीं; पं. देवीप्रसाद शुक्ल और कवि रामकुमार वर्मा जैसे प्रोफेसर; कुछ प्रोफ़ेसर डा. धीरेन्द्र वर्मा जैसे काम से बाहर गये हुए थे; कुछ अन्य सज्जन थे, अतिथि। यहाँ वही छात्र और छात्राएँ आ सकते हैं जो इसके मेम्बर हैं। भाषण और कविता-पाठ दोनों एक प्रकार अच्छे रहे। फिर सब ने एक साथ चाय-नाश्ता किया। भाषण और कविता-पाठ प्राय डेढ़ घन्टे हुआ। पहले एक विद्यार्थी ने निबन्ध पढ़ा, फिर कुछ समय राम कुमार जी ने मेरी तारीफ़ की: कुछ समय तक छात्र और छात्राओं के नोट-बुकों में मैं कविता लिख लिख कर हस्ताक्षर करता रहा; कुछ समय चाय नाश्ता और प्रश्नोत्तर में बीता: इस प्रकार ढाई घन्टे से कुछ अधिक अधिक समय सर्फ़ हुआ, शाम सात बजे तक।

इसी दिन यहाँ की स्वदेशी प्रदर्शनी में एक साथ कवि-सम्मेलन और मशायरा था। डा० ताराचन्द सभापति। मुझे ले जाने के बड़े प्रयत्न हो चुके थे। आज भी दुपहर को लोग आ चुके थे। मैंने धोका देना ही उचित समझा; कह दिया, जाऊँगा। पहले से पत्रों में विज्ञापन भी मेरे नाम का किया जा चुका था। अस्तु, यथासमय, यानी जब ठीक टिकट बिकने का समय हुआ, रेडियो में बार-बार पुकार उठने लगी—निराला जी ·····(आदि आदि) आये हैं, कविता पढ़ेंगे। विद्यार्थी ढेर होते गए। एक ने टिकट वेचने वाले से (यह कवि सम्मेलन वाला टिकट है) पूछा, क्या निराला जी आये हैं? उसने बड़ी प्रसन्नता से कहा, हाँ, अभी उस तरफ गये हैं, उन्हें क्या—वे तो डायस वाले हैं, आप लोगों को फिर अच्छी जगह न मिलेगी। कवि-सम्मेलन जैसा होना था, हुआ; अंगरेज़ी पढ़े कवियों ने कविता में भारतीय स्वर से रोना शुरू कर दिया: एक एक उठता था, और 'बस अब बैठ जाइए—बैठ जाइये' की पुकार आती थी। बिस्मिल की कविता कुछ जमी। कुछ 'रामकुमार की। मुझे, दूसरे दिन, 'भारत' से गये लोगों ने बताया, और वह महाशय भी आये जिन्हें कहा गया था कि निराला जी उधर गए हैं।

यहाँ एक दल ऐसा है, जो उच्च शिक्षित है। शायद सोश्यलिस्ट भी। इसके कुछ लोग योरप भी हो आये हैं। स्त्री और पुरुष, हिन्दू और मुसलमान दोनों। इन्होंने प्रोग्रेसिव राइटर्स मीटिङ् या ऐसोसियेशन नाम की एक संस्था कायम की है। ये उच्च शिक्षित जन कुछ लिखते भी हैं, इसमें मुझे संशय है। शायद इसीलिए लिखने का एक नया आविष्कार इन्होंने किया है, और वह इनमें ज़ोर पकड़ता जा रहा है। कुछ पं० जवाहर लाल जी से काफी मिलते जुलते हैं और देश के उद्धार के लिये कटिबद्ध हैं।

इनमें सज्जाद ज़हीर साहव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये वैरिस्टर होकर आये हैं; पर शायद वैरिस्टरी नहीं करते। सुन्दर, सभ्य, नौजवान आदमी हैं। सुना है, चीफ़ जस्टिस वज़ीर हसन साहव के छोटे साहवज़ादे हैं। जव प्रेमचन्द जी के लिये यहाँ शोकसभा हुई थी, मैं गया था: ये भी आये थे: मुझे हिन्दी वालों ने सभापति वनाया था! वोलने वालों में पहला नाम इन्हीं का था। उस रोज़ पहले पहल मैंने इन्हें देखा था। फिर कई वार स्वदेशी प्रदर्शनी में (इधर) देखा। एक और महिला हैं हाजरा वेगम साहिवा। मुसलमान होती हुई भी रूढिगत मुसलमान नहीं। वाहर निकलतीं, सवसे मिलती जुलती हैं। कहते हैं, इनकी शिक्षा जर्मनी में हुई है। ये इस ऐसोसियेशन के उर्दू विभाग की सेक्रेटरी हैं। उमा जी नेहरू, श्यामकुमारी जी नेहरू, चंद्रावती जी त्रिपाठी आदि को आप जानते होंगे। ये सव उसी सभा की सदस्या हैं। जव सज्जाद ज़हीर साहव प्रदर्शनी में मुझे मिले—उस वक्त साफ़्ट कोक वलों का वायस्कोप से अनेकानेक पंजावी, गुजराती, मदरासी और वंगाली महिलाओं का लड़की [लकड़ी] के धुएँ से परेशान होना, पत्थर के कोयले से हाथ जलना और साफ़ट [साफ़्ट] कोक से प्रसन्न होना विविध भावभङ्गिमाओं से दिखाया जा चुका था और उसी (विज्ञापन वाले वायस्कोप) के पास (जहाँ तम्वू के नीचे पचासों कुर्सियां पड़ी थीं और एक ओर वायस्कोप दिखाया जाता था) (वायस्कोप वन्द होने पर) प्रोग्रेसिव राइटर्स मीटिङ् वैठ चुकी थी और मैं कुछ मित्रों के साथ वैठा हुआ देर से सभ्यों को देख रहा था जिनमें वावू भगवतीचरण वर्मा और प्रो० रघुपति सहाय भी थे, (मीटिङ् खत्म होने पर, शुरू हुआ आधा वायस्कोप देखकर मेरे उठने पर) सज्जाद ज़हीर साहव ने मुझसे कहा, आपके नाम लखनऊ निमन्त्रण भेजा गया है, आप मीटिङ् में ज़रूर तशरीफ़ लायें।...मीटिङ् हुई। पहले रोज़ मैं नहीं गया। दूसरे रोज़ भी (जाने का) विचार न था। पर कलकत्ते से एक मित्र आये थे। उनके+पाठक जी के साथ गया। काफ़ी देर हो चुकी थी। आधे से अधिक वक्ता वोल चुके थे। पहले दिन के सभापति थे रामवृक्ष शर्मा वेनीपुरी और दूसरे दिन के सुदर्शन जी। यों सभापति हिन्दी-विभाग के चुने गये थे मैथिलीशरण जी और उर्दू के 'जोश' मलीहावादी। पर गुप्त जी ने इन्कार कर दिया और जोश शायद नहीं आ सके। प्रदर्शनी में घूम रहे थे हम लोग कि रामकुमार जी मिले। कहा, तुम गये नहीं। मैंने कहा, मुझे निमन्त्रण ही नहीं मिला। ख़ैर निश्चय हुआ कि चलकर देख लिया जाय। हम लोग गये। एक किनारे मैं वैठ गया। देखता रहा। पं. राम नरेश त्रिपाठी जी ग्रामगीतों की व्याख्या कर रहे थे। इसी समय सज्जाद ज़हीर आये और मुझ से कविता सुनाने के लिए पूछा। मैंने इन्कार किया। अस्ली वात यह थी कि भङ्ग ज़्यादा पी ली थी, ज़ोर का नशा था, पर यह कैसे कहता, टालने के लिए एक युक्ति निकाली, कहा, मुझे निमन्त्रण आपका तो मिला नहीं, ज़वानी आपने कहा था, इसलिए आ गया हूं, पर इससे अधिक मैं उचित नहीं समझता और आप समझदार हैं, आपको अधिक कहना व्यर्थ है। वे तो चुप हुए, पर उसी समय श्री चन्द्रावती त्रिपाठी और श्री श्यामकुमारी नेहरू आईं। श्यामकुमारी ने चन्द्रावती जी को आगे कर कहा, आप हमारे प्रोग्रेसिव राइटर्स ऐसोसियेशन की सेक्रेटरी हैं। पहले मैं गर्दन उठाये सुन रहा था,

होश आया कि यार, ये देवियां हैं, उठकर खड़े हो जाओ। चन्द्रावती जी ने कहा, आपको इन्विटेशन लेटर तो मिला होगा ? मैं—नहीं मिला। चंद्रावती जी—लखनऊ से रिडायरेक्ट होकर नहीं आया ? मैं—लखनऊ से रिडायक्टेड होकर नहीं आया। चंद्रा—रिडायरेक्टेड ! श्यामकुमारी फुर्ती से बातचीत को सँभालती हुई, पहले मुस्किरा कर चन्द्रावती को देखकर, मुझसे बोलीं—हम लोग तो आपको सभापति चुन रहे थे—, सबकी बड़ी इच्छा है कि आपकी कविता सुनें। मैंने श्यामकुमारी का सुन्दर मुह एक बार देखा। निराला-साहित्य किसी प्रकार अब तक देवियों का विरोधाचार नहीं कर सका—वह भाव एकएक [एकाएक] जाग्रत हो गया। भङ्ग की याद आई, साथ साथ एक दफ़ा नशे को दबाकर देखा मैं उस पर कुछ देर अब भी प्रभुत्व कर सकता हूं या नहीं। क्षण भर में यह सब हुआ। मैंने कहा, अच्छा। श्यामकुमारी मुस्कराती हुई बोलीं—आप डायस में जाइये। मैं गया। एक ऐसे सज्जन वहां बैठे थे जिन्हें मैं नहीं जानता था। जैनेन्द्रकुमार ने मेरा ध्यान आर्कर्षित करते हुए कहा—निराला जी, ये काका साहब हैं। मैंने अच्छा, धीमे सभ्य स्वर से कह कर काका कालेलकर साहब को प्रणाम किया। काका प्रसन्न होकर काक दृष्टि से मुझे देखने लगे। एक आज्ञा हुई : जैनेन्द्र कुमार ने कहा, रायकृष्ण दास जी ने 'पगला' (या ऐसा ही एक नाम) काका साहब को देने के लिये कहा है, पाठक जी से कह दीजियेगा, भेज देंगे। मैंने कहा, कह दूंगा—हालाँकि मीटिङ् में पाठक जी भी बैठे थे और जैनेन्द्र कुमार वहाँ तक हो आये थे जब मैं डायस पर नहीं गया था। अब काका साहब संयत होकर दूसरी आज्ञा की तैयारी करने लगे होंगे : मैं "एक बार चूकै तो बावन वीर सुहावैं, बार-बार चूकैंतो तो गप्पूनाथ कहावैं" सोच रहा था और अपने को बावन वीरता से नीचे न उतरने के लिए तैयार कर रहा था। बस, काका साहब दो एक बार उच्छ्वसित होकर रह गये : न जाने क्यों कुछ न बोले। मैं बैठा रहा। इस दिन के सभापति सुदर्शन कलकत्ते की गाड़ी पकड़ने के लिए रवाना हो चुके थे, सभापति रामवृक्ष शर्मा थे। एक मुसलमान साहब की पुकार हुई। कहा गया, वे शान्ति-निकेतन के उर्दू-फारसी के प्रोफेसर हैं। उन्होंने कहा, "हिन्दी में क्या है ? जो कुछ है, मुसलमानों का लिखा हुआ है। कालेजों में जो किताबें पढ़ाई जाती हैं, सब मुसलमानों की लिखी होती हैं। दुनिया भर के मुसलमानों में जो ज़बान मुसलमानों की बनाई हुई है [,] वह उर्दू है (फ़ार्म यहीं का है, मेरठ सर्कल का, क्रियापद और विभक्तियाँ; यह कुछ प्रोफ़ेसर साहब को याद न था।) फिर भी हम फ़ारसी लिपि को अच्छा नहीं समझते, पर नागरी लिपि भी ठीक नहीं। रोमन में लिखा जाय।" इस भाव को कुछ देर तक कहते गये। उमा नेहरू जी ने इसका विरोध किया। एक दूसरे हिन्दू ने भी विरोध किया। सज्जाद जहीर ने समर्थन किया, यह कहते हुए कि जब दो विरोध हुए, तब दो समर्थन भी हो जाने चाहिये। मेरा जी ऊब रहा था। मैंने रामवृक्ष से कहा, मेरा नाम कह दीजिये, मुझे जाना है। रामवृक्ष शेखी में आकर सभापति की अकड़ से खड़े हुए और बोले [,] निराला जी चाहते हैं कि अपनी कविता सुनायें, मैंने डाटा। न क्या कह रहे हैं आप, तब इधर से सज्जाद जहीर और उधर से श्यामकुमारी ने कहा नहीं, हमने आपसे रिक्वेस्ट किया था। तब

सभापति जी एक सभ्य की तरह बोले। हालाँकि मेरे खड़े होने के साथ ही एक दूसरे मुसलमान सज्जन खड़े हो रहे थे, क्योंकि समर्थन के दो वोट बाक़ी रहे जा रहे थे। मैंने कहा, अभी शायद सभापति जी ने मुझी पर कुछ कहा था। कह कर सामने चला गया। वे बैठ गये। मेरे यह कहते ही कि 'हिन्दी साहित्य उस जगह है अब, जहाँ संसार के बड़े-बड़े साहित्यिक एक दूसरे से (भावों में) मिलते हैं।' एक मुसलमान ने कहा, यह हिन्दी साहित्य सम्मेलन नहीं है। मैंने डाट कर कहा, बैठ जाइये, पूरा सुन लीजिये। थोड़े और सुथरे शब्दों में मैंने कहा, अक्षर और कुछ शब्दों से हिन्दी का कुछ नहीं बनता बिगड़ता; आप लोग जनता की राय से जैसा चाहें करें, हिन्दी साहित्य सदा आपसे हाथ मिलाने को तैयार है। फिर 'टूटें सकल बन्ध' सार्थ सुनाया। आवाज़ें आईं, कुछ गाकर सुनाइये। भिक्षुक सुनाया। खूब जमा। लोगों की प्रसन्नता में उठकर फिर बाहर चला गया।

—निराला

९८. रामविलास शर्मा को

The Leader, Allahabad
23. 12. 36

प्रिय शर्मा जी,

आपके कार्ड का देर से उत्तर लिख रहा हूं। एक पत्र तिवारी जी का भी आया है। उन्हें कह दीजियेगा, उनकी सहानुभूति को मैं खूब समझता हूं। मैंने पत्र में उन्हें जो कुछ लिखा था, वह सिर्फ़ कला के विचार से। यद्यपि उन्होंने नहीं मागा, फिर भी मैं यदा-कदा उनके लिये अँगरेज़ी में हाथ साफ करने की कोशिश करूंगा। मेरे अनुवाद के लिये अगर मेरे प्रकाशकों की अनुमति ज़रूरी है ऐसा तो मैं नहीं समझता।

यहां शुक्ल त्रिभुवन नाथ जी तशरीफ़ ले आये थे। मैंने ह्यूगो से किये आपके अनुवाद पढ़ने के लिये सस्तुति उन्हें पत्रिका दी है। उनके साथ उनके एक कालेज के वंगाली मित्र थे। इस अनुवाद के लिये आपको एक बार फिर धन्यवाद।

सम्राट् एडवर्ड अष्टम पर मैंने एक कविता लिखी है: ८/१० दिन में, इस बार की सरस्वती में प्रकाशित हो जायगी, देखियेगा।

हर्षवर्धन जी नैथाणी मिले,—मिलते हैं या नहीं आपको,—हैं या नहीं वहां,—परीक्षाफल निकला या नहीं, लिखियेगा।—नन्द दुलारे जी इस वक़्त प्रदर्शनी में, गीता प्रेस की दूकान में हैं, मिले या नहीं—प्रदर्शनी कैसी है। कुछ दिनों में तिवारी जी को कुछ भेजूंगा। अभी दूसरे कामों में व्यस्त हूं।

साथ जो पत्र है, वह श्री राजेन्द्र को खुद दे आइयेगा। क्योंकि private बातें हैं, आप ही तक रहें। षट् कर्ण न हों।

प्रसन्न हूं। आशा है, आप लोग सकुशल हैं।

आपका
—निराला

९९. रामविलास शर्मा को

C/o Pdt. Vachaspati Pathak Esqr.
The Leader Press, Allahabad.
8.2.37

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र मिला। आपका पत्र विश्वविद्यालय में अच्छी तरह समझ में नहीं आया, इसलिये, अनुमान है, वह महत्त्व का होगा। मैं प्रसन्न हूं। पर अभी तक कुछ किया नहीं। पुरानी कविताएँ 'मतवाला' की नक़ल कर रहा हूँ। 'माधुरी' को कुछ भी नहीं भेज सका। कुछ दिनों वाद कुछ कविताएं लिखने का विचार है, यह 'अनामिका' सङ्ग्रह पूरा करने के वाद। पहले इसी नाम की एक काव्य पुस्तिका वावू महादेव सेठ की भूमिका सहित निकल चुकी है [।] अव वे स्वर्गस्थ हैं: उनकी उसी भूमिका के साथ एक वृहत् दूसरा सङ्ग्रह उनकी स्मृति में निकालना चाहता हूं, नई पुरानी कविताओं से, सिर्फ इधर के लिखे Ballads छोड़कर—तुलसी दास, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति आदि। कुंवर चन्द्रप्रकाश जी को कठिन हृद्रोग हो गया है, उनके पत्र से मालूम हुआ, पाठक जी से। शीघ्र घर आने वाले हैं। मेरे दो काम कर दीजिये :—(१) Torch Bearer मैं राजेन्द्र के यहां भूल आया हूँ, भेजवाइये एक प्रति किसी तरह। (२) श्री नारायण जी चतुर्वेदी की किताव, उनकी दी, उन्हीं के तम्वू में छोड़ आया हूं, इसे भी।

मेरी छड़ी कान्यकुब्ज कालेज में कविता पढ़ते समय छूटी या श्री नारायण जी चतुर्वेदी के तम्वू में, पता लगाइयेगा अगर मिली हो। तिवारी जी को नमस्कार —नि०

[पता:]

Dr. Rambilas Sharma M.A.
Maqboolganj,
Lucknow.

[मेरे किस पत्र का उल्लेख है, याद नहीं। 'अनामिका' में महादेव प्रसाद सेठ की लिखी पुरानी 'अनामिका' वाली भूमिका नहीं गई; 'तुलसीदास' छोड़कर अन्य लंवी कविताएँ शामिल की गई। पाठक जी—वाचस्पति पाठक; राजेन्द्र—राजेन्द्र शुक्ल।]

१००. सकलनारायण शर्मा को

महामहोपाध्याय पं० सकल नायाराण शर्मा
काव्य-साङ्ख्य-व्याकरण-तीर्थ
कलकत्ता

पूज्य पण्डित जी,

बहुत दिनों से दर्शन नहीं हुए। उपाधि आपको मिली, आपसे उसकी शोभा वृद्धि हुई। प्रसन्न होंगे।

ये मेरे मित्र पं० रामविलास शर्मा एम. ए, पीएच. डी. कर रहे हैं। ये फ्रेञ्च के भी डिप्लोमा होल्डर हैं। कई भाषाएँ और जानते हैं। कलकत्ता जा रहे हैं इम्पीरियल लाइब्रेरी और यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में न-देखी-हुई अपने विषय की किताबें देखने। आपसे प्रार्थना है, इनकी आप शक्ति भर मदद करें। ये हिन्दी के भी सुयोग्य कवि और लेखक हैं। एफ्. ए. तक संस्कृत ले चुके हैं। इति।

प्रणत
—निराला

सरकार होटल,
अमीनाबाद,
लखनऊ
१८.४.३७.

[अपने शोधकार्य के सिलसिले में मैं जब पहली बार कलकत्ते जा रहा था, तब निराला ने मुझे कुछ परिचयपत्र लिख कर दिये थे। मैंने इनका उपयोग नहीं किया; वे मेरे पास सुरक्षित रहे।]

१०१. विनोदशंकर व्यास को

पण्डित विनोदशङ्कर व्यास,
व्यास भवन, मानमन्दिर,
काशी

प्रिय व्यास जी,

ये मेरे मित्र पं० राम विलास शर्मा एम. ए. 'पीएच. डी' कर रहे हैं। काम पूरा कर चुके हैं। कुछ किताबें देखने के लिये कलकत्ता इम्पीरियल लाइब्रेरी जा रहे हैं। काशी दो चार दिन ठहरेंगे। सारनाथ, विश्वविद्यालय वगैर: देखेंगे। अपने खातिरदार रईस दोस्तों में मुझे तुम्हारा ही सुन्दर मुँह पहले याद आया। इसलिये लिखता हूँ, इन्हें अपने यहाँ जगह देकर मुझे अनुगृहीत करना। इनका सङ्ग सुखकर होगा। ये हिन्दी के नये कवि और लेखकों में अधिक पायेदार हैं यह टामी के यहाँ पत्रों में पढ़ा ही होगा।

नमस्कार।

तुम्हारा
—निराला

सरकार होटल,
अमीनाबाद, लखनऊ
१८.४.३७

[मैंने पूछा—टामी कौन है ?
निराला ने कहा—विनोदशंकर की प्रेमिका।]

१०२. गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री को

श्रीमान् पण्डित गाङ्गेय नरोत्तम जी शास्त्री,
कलकत्ता।

प्रिय शास्त्री जी,

अभी अभी सम्वादपत्रों में आपके मद्रास जाने की खबर पढ़ी थी। आप लौट कर प्रसन्नता पूर्वक होंगे। आपका दिया हुआ वह दामी चदरा मुझे मिला था। पता खो जाने से मैं मन में ही आपको धन्यवाद देकर रह गया। सच तो यह है कि आपने इस तरह मुझे अत्यधिक लज्जित किया। आपकी सुललित रचनाओं का लोकोत्तरानन्द ही मैं चाहता हूँ। आपके एक आधार में सरस्वती और लक्ष्मी की समकृपा देख कर चित्त पुलकित हो जाता है।

पत्र के साथ ये मेरे मित्र पं० रामविलास शर्मा एम० ए०, लखनऊ यूनिवर्सिटी के फ़ेल्लो, अँगरेज़ी और फ्रेञ्च साहित्य के पारंगत पण्डित हैं। कई और भी भाषाएँ जानते हैं। इस समय पी एच० डी० कर रहे हैं, अँगरेज़ी साहित्य में। काम पूरा कर चुके हैं। तीन साल से इसीमें लगे थे। इनकी इच्छा है, इम्पीरियल लाइब्रेरी और यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी की भी न-देखी-हुई अपने विषय की किताबें देख लें। इस उद्देश्य से ये महीने सवा महीने कलकत्ता रहेंगे। आप से अनुरोध है, आप इनके रहने का कोई सुप्रबन्ध अवश्य कर दें। ये हिन्दी के भी प्रशंसित कवि और लेखक हैं। इनसे मिलकर आप सुखी होंगे। इति शम्।

सरकार होटल, अमीनाबाद,
लखनऊ
१८-४-३७

आपका
—"निराला"

१०३. बनारसीदास चतुर्वेदी को

श्रीयुत पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी,
सम्पादक, विशाल भारत,
कलकत्ता

प्रिय चतुर्वेदी जी,

ये मेरे मित्र पं० रामविलास शर्मा एम्० ए० इस समय अँगरेज़ी साहित्य में पीएच० डी० कर रहे हैं। अपने विषय की न-देखी हुई किताबें देखने के लिये कलकत्ता जा रहे हैं, इम्पीरियल लाइब्रेरी और यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी। ये फ्रेञ्च के भी डिप्लोमा होल्डर और विद्वान हैं। इटेलियन पढ़ रहे हैं। हिन्दी के कवि, लेखक, उपन्यास और नाटककार हैं। आप, सम्भव हो, तो इन्हें रामानन्द बाबू के दर्शन करा दें। अपने यहां के और माडर्न रिव्यू और प्रवासी के भी योग्य जनों से मिला दें और कलकत्ते में इनकी यथासाध्य मदद करें। ये मज़े की बँगला भी जानते हैं। रविबाबू को मूलतः पढ़ा है।

इति। ये हिन्दी के बड़े आशाधार हैं।

आपका
निराला

सरकार होटल, अमीनाबाद,
लखनऊ
१८. ४. ३७

१०४. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी को

आचार्य पण्डित जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी,
कलकत्ता,

पूज्य चतुर्वेदी जी,

ये मेरे मित्र पं० रामविलास शर्मा एम्०ए० इस समय पीएच्० डी० कर रहे हैं। काम पूरा कर चुके हैं। कुछ कितावें इम्पीरियल लाइब्रेरी और यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में देखने के लिये जा रहे हैं। आपके दर्शन करें, मैंने इनसे कहा है। आप भी कृपा कर इन्हें रास्ता दिखायें, रास्ता न बतायें।

मैं प्रसन्न हूं। आप स्वस्थ होंगे।

सविनय
निराला

सरकार होटल, अमीनाबाद,
लखनऊ
१८. ४. ३७.

१०५. रामविलास शर्मा को

प्रेमा होटल, अमीनाबाद, लखनऊ
८.५.३७.

प्रिय शर्मा जी,

पत्र आपका मिला। कुछ देर से लिख रहा हूं। मेरे पास पत्र आया है कि इस साल कलकत्ते में गर्मी अधिक पड़ रही है। इसलिये राजेन्द्र को लेकर बरसात में या पूजा की छुट्टियों में जाऊंगा। आपके दीर्घ पत्र के उत्तर में मेरे लिये दीर्घ पत्र देने की कोई बात नहीं, क्योंकि बात आपके पास है, मेरे पास केवल सम्वाद। वहां के विस्तृत समाचार दीजिये। यहां सब कुशल है। मैं कुछ अच्छा हो रहा हूं। इधर कुछ गीत लिखे हैं जो मेरे प्रशंसक मित्रों को पुराने टाइप के मालूम देंगे : अप्रशंसकों के लिये भी ग्रीक और लाटिन हैं। मौसम यहां कुछ अच्छा है। दो दिन से रात को बादल उमड़ आते हैं। परसों बारिश भी हो गई रास्ता गीला करने भर की। वहां तो कभी कभी दौंगरे गिरने लगे होंगे, या गिरेंगे आपके रहते रहते। हसरत एम० ए० तीसरे श्रेणी में पास हो गये। राजेन्द्र इस समय यहां नहीं हैं। आज कुं० चन्द्रप्रकाश यहां आये हुए हैं। दया शङ्कर को सस्नेह। इति।

आपका
—निराला

[पता]

Pdt. Rambilas Sharma, M.A.
C/o Pdt. Daya Shanker Bajpeyi
The Burra Bazar Library
10/1/1 Syed Salley Lane
Calcutta

[राजेन्द्र—राजेन्द्र शुक्ल वल्द त्रिभुवननाथ शुक्ल; हसरत—राम रतन भटनागर हसरत।]

१०६. शिवपूजनसहाय को

११२, मक़बूल गंज, लखनऊ,
112, Maqboolganj, **Lucknow,**
15. 3. 38.

प्रिय शिवपूजन जी,

आपके प्रिय पत्र का उत्तर प्रयाग से दे रहा हूँ। १९,२० मार्च को हिन्दुस्तानी एकेडमी का जल्सा देखकर लखनऊ जाऊँगा। अगर आ सकें तो अवश्य आयें। 'अनामिका' मेरी कविताओं का सङ्ग्रह है, नया। पर, आप जानते हैं, एक छोटी 'अनामिका' सेठ जी निकाल चुके हैं। उसमें सेठ जी की लिखी एक भूमिका भी थी। इस किताब में भी वही भूमिका रहेगी, अपितु किताब समर्पित भी सेठ जी को होगी; सारांश, किताब सेठजी की स्मृति में निकलेगी। आप सेठजी के जीवन की बातें लिखिये संक्षेप में, 'मतवाला' वाली कुछ विस्तार से, कुल १०/१२ पृष्ठों में, कवि निराला को सेठजी ने ही हिन्दी में रक्खा है, 'मतवाला' निकालने का एक उद्देश उसकी कविता निकालना भी था, उसके प्रति सेठजी के भाव-विचार आदि : थोड़े में लिखिये।

—"निराला"

[पता]

Babu
Shivapujan Sahaya
Lahariya Saraya
(Pustak Bhandar)
वाबू शिवपूजन सहाय जी,
पुस्तक भण्डार,
लहरिया सराय

[निराला ने पत्र में अपना पता लखनऊ का दिया है किन्तु जैसा पत्र में लिखा है, उसे प्रयाग से भेजा था। डाकमुहर इलाहाबाद की ही है। कार्ड में एक ओर वाचस्पति पाठक की लिखी ये पंक्तियां हैं :

"सप्रेम नमः
विशेष मैं पत्र लिखकर वताऊंगा—वाचस्पति पाठक"।]

१०७. रामविलास शर्मा को

[लखनऊ,
८-६-३८]

प्रिय शर्मा जी,

बहुत व्यस्त हूं। कल बहू के भाई का जनेऊ है। १ जुलाई को रामकृष्ण की शादी। मैं कलकत्ता गया था, सात रोज में वापस आया, कन्यापक्ष के साथ। आपकी मां को ले आना चाहता था, लेकिन इन लोगों को सेट्ल करने कराने से फुर्सत नहीं मिली, फिर आप की मां चली गई, दो रोज उनके दर्शन हुए थे। आपका लेख देखा माधुरी में। चकल्लस में मेरा इन्टरव्यू पूरा शायद ही आपने देखा होगा। आपको 'कला' का विशेपाङ्क तो मिला होगा। बहुत साधारण निकला। मैंने तीन नोट डिक्टेट करा दिये थे। बहुत व्यस्त हूं। जनेऊ के बाद कल ही रामकृष्ण के फलदान हैं। आप कब तक आयेंगे ? और प्रसन्नता है। इति।

विवाह का निमन्त्रण भेजता हूं।

आपका
निराला

११२, मक़बूलगंज,
लखनऊ
८.६.३८.

[चकल्लस—अमृतलाल नागर द्वारा संपादित-प्रकाशित हास्यरस का साप्ताहिक पत्र;
कला—कुछ समय तक यह पत्रिका कमलाशङ्कर सिंह ने निकाली थी।]

१०८. अमृतलाल नागर को

S.N. CHATURVEDI, M.A. (London) EDUCATION EXPANSION
Civil Secretariat
LUCKNOW
[सितंबर १९३८]

श्री अमृत लाल जी नागर,
सम्पादक, चकल्लस।

प्रिय अमृत जी,

'भाभी अङ्क' अभी नहीं मिला। भेज दीजिये और आदमी के साथ जलद आइये अगर सम्भव हो, पन्त सुमित्रा नन्दन आये हुए हैं।

निराला

स्थान—
प्रिन्सिपल भट्टाचार्य का
बंगला,

[प्रिंसिपल भट्टाचार्य— लखनऊ ट्रेनिंग कालेज के प्रिंसिपल। पत्र किसी के हाथ भेजा गया था।]

१०६. वाचस्पति पाठक को

भूसामंडी, हाथी खाना, लखनऊ
१०,१०,३८
दिन तीन बजे

प्रिय पाठक जी,

आपका पत्र मिला। मेरे शरीर के साथ कोई शाप लगा है। शिमला से आने के बाद जुकाम और बुखार रहा। अब अच्छा हुआ है। पन्द्रह पौण्ड घट गया हूँ।

मैं 'कुल्लीभाट' लिख रहा था धीरे धीरे। कल या परसों अनामिका का प्रूफ़ भेज दूंगा। बाक़ी पद्य, जब तक पूरी छपती है, भेज देने की चेष्टा करूँगा। हिन्दुस्तानी वाले गीत भी भेज दूंगा। गीत अगर आपको पसन्द नहीं तो इसके ये मानी नहीं कि हिन्दी में सुलभ हैं। प्रसाद जी और महादेव बाबू पर भी लिखूंगा। समर्पण वग़ैरः उसी समय दूंगा। महादेव बाबू की भूमिका आपके पास है ही।

रामविलास जी से दो बार मैं कह चुका हूँ अगर हफ्ते भर एक घण्टा रोज़ आयें तो नोट पूरे कर दूं। लेकिन उन्हें इस समय फ़ुर्सत नहीं। इन्कार मैं आसानी से कर सकता हूँ। लेकिन किताब बनाने की ओर ही मैंने ध्यान रक्खा है अब तक, तो इसे सँवार ही दूं सोचता हूँ।

इस समय तो आपका सीजन भी है, और आप मुझसे बिज़नेस भी नहीं करते। रुपया ४००)'चमेली' पर लेकर भेजिये जल्द। रुपया मिलने पर काम में जी लगेगा। जब तक किताबें छपती हैं, उपन्यास भेज दूंगा। मुझे आदमी भी रखना है, लिखने के लिए। अब ड्रामा लिखने वाला हूँ।

राधाकृष्ण जी आये थे कहानी लेखक। मेरे सब उपन्यास पढ़े हैं। निरुपमा सर्वश्रेष्ठ कहते थे।

अगर चार सौ नहीं तो दो ही सौ भेजिये अभी। पत्र जल्द दीजिये। क्योंकि मुझे रुपयों का प्रबन्ध पहले करना है। निरुपमा और तुलसीदास पूरे पूरे हैं ही। प्रबन्ध भी आपके वहाँ हैं—चुन लीजिये। कहानी-संग्रह मैं भेज दूंगा।

रुपयों की बातचीत पक्की कर लीजिये। साल में कितने सौ रुपये आप मुझे देंगे—किताब लेकर। रुपया वसूल हो जाने पर मेरी रायल्टी २० परसेन्ट चलेगी या नहीं।

आपका
निराला

११०. वाचस्पति पाठक को

[लखनऊ, १८-१२-३८]

प्रिय पाठक जी,

आपका पत्र मिला। एक प्रूफ़ जो पहले आया था, वह मैं भेज चुका हूँ। लेकिन वह तो शायद एक ही फार्म था। बाक़ी दो फ़ार्मवाला अभी नहीं मिला।

'अनामिका' में श्रीमान् स्वर्गीय सेठ जी की लिखी भूमिका जायगी जो उन्होंने उस छोटी अनामिका में लिखी थी। आपके पास 'अनामिका' पहलेवाली होगी ही। समर्पण मैं भेज रहा हूँ। अगर अनामिका की अनेक कापियों में से एक भी आपके पास न हो तो सेठ हरगोविन्द जी से ले लीजिये। आपने पत्र में मुझसे अनामिका की भूमिका माँगी है; अवश्य आपको याद न रही होगी। मैंने आपसे ज़बानी यह भी कह दिया था कि समर्पण आप जैसा चाहें लिखकर दे दें, जब आप यहाँ से गये थे।

मेरा पत्र महत्वपूर्ण है, इससे मालूम देता है, आप बदलकर बोल रहे हैं। महत्वपूर्ण तो है, पर आपकी समझ में वेदान्त कैसे आये? बनिया-कुल-मुकुट-मणि महात्मा गान्धी ने जब मुझसे कहा था—मैं तो उथला आदमी हूँ, आपको याद होगा, मैंने जवाब दिया था, हम लोग उथले को गहरा और गहरे को उथला कर सकते हैं।—अब मेरा पत्र इस दृष्टि से देखते हुए फिर समझिये; तब आपको मालूम होगा, तुलसीदास ने क्यों कहा था—सबसे अच्छे मूढ़ जिन्हें न व्यापी जगत् गति !!!

मां को प्रणाम

भूसा मंडी, हाथीख़ाना, लखनऊ
18. 12. 38

सस्नेह—
सूर्यकान्त त्रिपाठी

१११. वाचस्पति पाठक को

बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी
१०/१/१ सैयद साली लेन, कलकत्ता
३१/१२/३८

प्रिय पाठक जी,

मैं आपके वहां से इसलिये नहीं आ सका कि मैंने देहरा से पहुंचने की सूचना दे दी थी, और दूसरे ही दिन ७॥ बजे देहरा चल देना था। आपके वहां जाने पर समय पर नहीं पहुंच सकता था। यहां छात्र और उनके प्रोफ़ेसर स्टेशन पर (हवड़ा में) मिले थे। जैसा प्रचलन है, माला आदि से संवर्द्धना की थी। अच्छी जगह टिकाया और अच्छी तरह बातें कीं। रहा भी अच्छा एक तरह दोनों दिन—२८ और २६। यहां के ऐडवांस में खबरें छपी हैं। अब मैं दो/तीन दिन रहकर लखनऊ जाता हूँ। आपसे मिलने की इच्छा थी। लेकिन कह नहीं सकता, पूरी होगी या नहीं। यहाँ कल पहली को यह लाइब्रेरी एक अभिनन्दन मुझे देगी : एक व्याख्यान छात्रावास में है; बस।

सही काली स्याही की भेजता हूं।

प्रूफ़ भी भेज रहा हूँ। पर 'राम की शक्तिपूजा' एक बार और देखूंगा। कुछ सुधार, कुछ गलती और कुछ परिवर्तन किया है। इसका कुछ भी बिगड़ा रूप मुझे असह्य होगा।

मां को प्रणाम।

सस्नेह—
निराला।

११२. रामविलास शर्मा को

बड़ा बाजार लाइब्रेरी,
१०/१/१ सैयद साली लेन, कलकत्ता
३. १. ३९.

प्रिय शर्मा जी,

यहां अच्छा रहा। Advance में खबरें छपी देखी थीं, अच्छा लिखा था। साधारण अच्छी अदायगी रही। विद्यासागर कालेज में प्रिन्सिपल और कुछ प्रोफ़ेसर और लड़कों के साथ ग्रूप लिया गया था, अच्छा आया है। मुझे एक कापी भेट की गई है। मैं लखनऊ ला रहा हूं। देखियेगा। जब देहरा से उतरा विद्यार्थी अँगरेज़ी के एक प्रोफ़ेसर को लेकर हवड़ा रिसीव करने गये थे मालाएं लेकर। बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी ने मानपत्र दिया, एक प्रति भेजता हूं। तिवारी जी को नमस्कार। लल्लू और चौबे को स्नेह।

आपका
—निराला

आज शाम कालकामेल
से इलाहाबाद जा रहा
हूं।

११३. अमृतलाल नागर, सर्वदानंद, उमाशंकर वग़ैरः को

Kamla Shankar Singh
ARTIST

LUCKNOW
भूसामण्डी, हाथीखाना,
लखनऊ
१९-१-३९.

अमृत लाल, सर्वदानन्द, उमाशंकर वग़ैरः !
दोस्तो,

उस रोज़ नाटक की मीटिङ्ग के सम्बन्ध में सर्वदानन्द जी के कहने के अनुसार निश्चय हुआ था, उनकी जगह यानी माननीय शिक्षामन्त्री के वासभवन में रविवार के दिन मीटिङ्ग होगी। मैं अपना उद्देश ज़ाहिर कर चुका हूँ कि साधारण व्यक्ति सभापति चुना जाय, रामविलास साधारण और योग्य दोनों हैं। लेकिन उमाशंकर जी से सुना, आप लोगों में कुछ की राय है, मान० शिक्षा मंत्री सभापति हों। व्यक्तिगत रूप से उनके प्रति मेरी श्रद्धा है। पर इस सभापति चुनने की वृत्ति को मैं अच्छी निगाह से नहीं देख पा रहा। निश्चय हुआ था, काम करके हुक्कामों की सहानुभूति ली जायगी। अगर आप लोग मेरी तरह पर सहयोग देंगे, तो, और तभी, मैं काम कर सकूंगा; अन्यथा नहीं। क्योंकि ड्रामा लिखने से खेलने तक का भार मेरा ही कुछ अधिक भारी होगा। कृपया सूचित करें, आप लोगों की क्या राय है। मैंने सर्वदानन्द जी के कारण वहाँ जाने में सङ्कोच नहीं किया, यों मुझे वहाँ मीटिङ्ग करते भी सङ्कोच है। अगर आप लोग बुरा न माने तो स्थान बदल दें, मेरे यहाँ या अन्यत्र जहाँ कहें, मीटिङ्ग की जगह

निश्चित हों। यह ज़रूर है कि आदर्श साधारण रूप से ही आदर्श वनाया जायगा। आप जहाँ अड़चन देखते हैं, मुमकिन, वहाँ सुगमता हो; क्योंकि कुछ विचार-शक्ति मेरे अन्दर भी है। अन्य दूसरा प्रेसिडेन्ट भी चुन सकते हैं, लेकिन व्यक्ति साधारण हो, साथ ही योग्य। इस तरह, निश्चय करके चिट्ठी लिखें। मैंने वहाँ कहा था, अगर शिक्षामन्त्री के लड़के न होते तो सर्वदानन्द को सभापति चुन लेने में मुझे एतराज़ न होता। सभापति और मीटिङ्ग की वात सूचित करें कि किसे चाहते हैं और कहाँ चाहते हैं। इति।

आप लोगों का
निराला
१६.१.३६.

११४. अमरनाथ झा को

The Leader Press,
Allahabad.
8. 3. 39.

Dear Sir,

Your invitation in english received. I shall be glad to join your company and entertain you all by my recital, but more I shall be if you won't hasitate [hesitate] to cross the barrier of imaginary greatness, when called, to come to my place.

Pranam.

Sincerely yours,
Nirala

[१४ अक्तूबर, १९६२ के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में इलाचन्द्र जोशी ने निराला के इस पत्र का दूसरा मसौदा उद्धृत किया है, जो इस प्रकार है :

Dear Sir,

If you have the guts to cross the barrier of your imaginary greatness and come with us under the shade of a 'babool' tree, then, and only then, shall we recite our poems to you.

Your's truly, etc.]

[आशय : (१) अंग्रेजी में आपका निमंत्रण मिला। आप लोगों से मिलने और कविता-पाठ से आपका मनोरंजन करने में मुझे प्रसन्नता होगी पर यदि काल्पनिक वड़प्पन की सीमा लांघकर, वुलाये जाने पर, आप मेरे यहां आने में संकोच न करेंगे तो और भी प्रसन्नता होगी।

(२) काल्पनिक वड़प्पन की सीमा लांघने की हिम्मत हो और हमारे साथ ववूल की छांह में वैठ सकें तो, और तभी, हम आपको कविता सुनायें गे।]

११५ सुमित्रानन्दन पन्त को

भूसामंडी, हाथीखाना, लखनऊ
४.४.३९

प्रिय श्री पन्तजी,

आपकी रचना की दोनों चिट्ठियां मिलीं। आज अभी अभी। मुझ पर आप कविता न लिखें, इस आशय का पत्र आपको लिख चुका हूं। मुझे भय था कि आपका कवि इस तरह गिर न जाय। मेरा-आपका हिन्दी साहित्य के इतिहास में अभिन्न सम्वन्ध है। मुझे सवसे वड़ी सफलता यही हुई, मैं समझता हूं। लेकिन आपकी रचना देखकर मैं हैरान रह गया। यह तो कवि और वही कवि जिसे मैं प्यार करता हूं, लिख रहा है।

अधिक क्या लिखूं, एक वात कहता हूं, हिन्दी में अपनी कल्पना-शक्ति के लिये ही आप वेजोड़ समझे जाते हैं और अपनी अपराजिता भाषा के लिये; इसी मौलिक सागर की ओर हिन्दी के नवयुवकों के हृदय के नदी-नद वहे हैं; वे आपसे कुछ हताश हो गये हैं: उन्हें इसी ओजस्विनी वाणी का कल्पनामृत पिलाइये। हिन्दी वड़ी ग़रीव है, कवि, कल्पना से वड़ा धन साहित्य में और नहीं। इति।

आपका
निराला

पुनः

यह पत्र उस कविता के नीचे छापने के लिए भेज दीजिये। मैं अनुचित नहीं समझता। मतलव खुला है। छपना जरूरी मालूम देता है। नरेन्द्र जी चाहें तो अपने नाम से और खुलासा कर दे सकते हैं। इस समय आन्दोलन वाले प्रसङ्ग पर कुछ नहीं लिख सकूंगा।

आपका
—निराला

[कविता 'रूपाभ' में छपी थी।
नरेन्द्रजी—नरेन्द्र शर्मा, 'रूपाभ' के सह संपादक।]

११६. वाचस्पति पाठक को

भूसामंडी, हाथीखाना, लखनऊ
२९-४.३९
सन्ध्या ७

प्रिय पाठक जी,

अभी अभी आपका पत्र मिला। आपको लिखने के वाद मैंने नरेन्द्र जी को भी लिखा था। आपका नाम नहीं लिया था। उन्होंने विल्लेसुर (नं. २) का छपा फ़ार्म भेजते हुए पूछा था, मुझे किसने सूचित किया था कि नहीं छप रहा। मैंने नाम नहीं लिखा।

तीसरे दफ़े में पूरा हो जायगा। एक तरह आपकी कहानी-लेख पूरे हैं।

नन्द दुलारे जी का मेरे पत्र का उत्तर भी आज ही मिला सवेरे। उन्होंने लिखा है, रामकृष्ण जी का पत्र पाठक जी के यहां देखा। उन्होंने सौजन्य को ताक पर रख दिया है।

आपने लिखा है कि अपने पत्र के साथ आप रामकृष्ण जी का पत्र भेज रहे हैं, मैं पढ़कर वापस कर दूं। लेकिन आपके पत्र के साथ कोई दूसरा पत्र नहीं था।

पन्त जी ने मुझ पर जो कविता लिखी है, उसकी प्रति मेरे पास उन्होंने भेजने की कृपा की थी। इस समय वह मेरे पास नहीं।

शौक़ में १) क्या करोड़ों रुपये उड़ गये।

अब मुझे मालूम दे रहा है, दवा से मुझे यही फ़ायदा रहा कि अकारण पतले दस्त आते रहे। जान पड़ता है यह कोई और रोग है। वात होगा। पैर पड़ा है, रहे।

कुल्ली भाट के तीन फ़ार्म छप गये।

रामविलास का कहना है, बिल्लेसुर पहले दफ़े से अबके दफ़े अच्छे आये हैं। श्री नारायण जी का कहना है, पहली सूरत अच्छी है। रामविलास कहते हैं, अबके बहाव है, बात खुलती गयी है—पहले में अलङ्कृत रूप है जो मुझे पसन्द नहीं।

इस समय मैं भोजन भी पकाता हूँ। थोड़ा थोड़ा लिखता पढ़ता हूँ।

मां को प्रणाम।

सस्नेह

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी

सात आठ दिन में 'चरखा' निबन्ध भेज दूंगा। 'कुल्लीभाट' किसे समर्पित करूँ? बहुत बातें भूल रहा हूँ। यह पत्र आज तीन मई को पोस्ट कर रहा हूँ। और कुशल है।

—नि०

११७. राजाबख्श सिंह को

भूसामंडी, हाथीखाना,
लखनऊ,
३-५-३९
शाम ७

प्रिय श्री राजाबख्श,

जितनी जल्दी जाने की बात कही, उतनी जल्दी जाना नहीं हो सका। विचार है, १२ मई को चलेंगे। अगर इस बीच आना हो तो आइएगा। दूसरे पत्र में गाड़ी का समय लिखेंगे। बहुत संभव आपके वहां कुछ दिन रहें।

कुल्लीभाट के तीन फार्म छप चुके हैं। तब तक निकाल देने को कहेंगे। अगर

वहां रहेंगे तो दूसरों से मिलने का समय नियत रहेगा सिर्फ दो घंटे, एक घंटा सुवह, एक घंटा शाम। बाकी वक्त काम करेंगे। आपके वैठक में वहुत गर्मी तो नहीं लगती ?

किसी सभा सम्मेलन में नहीं जायेंगे।

सस्नेह

—निराला

[राजावख्श सिंह—सीतापुर ज़िले के; वलभद्र दीक्षित और चन्द्रप्रकाशसिंह के मित्र ।]

११८. शिवपूजन सहाय को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ,

२७. ९. ३९

प्रिय शिवपूजन जी,

आज जानकीवल्लभ जी साहित्याचार्य के पत्र से मालूम हुआ, वे आपसे मिले थे और आपने 'अनामिका' के लिये सेठ जी पर आग्रह और अनुरोध के अनुसार कुछ लिखकर भेजा था। मुझे आपका लेख नहीं मिला। मैं बल्कि आपसे नाराज़ था।

सुना, आपका वच्चा अस्वस्थ था। अवश्य अब तक वह तनदुरुस्त हो गया होगा।

मुन्शी जी भी गये। अव मेरी वारी है।

आपका उन पर विश्वमित्र में लेख पढ़ा। मेरा हिस्सा मेरे मित्रों को बहुत पसन्द आया। यों आपके लेख की क्या क्षुद्र प्रशंसा ?

छाँट कर साहित्य-परिषद का सभापतित्व मेरे पास पहुँचा है। एक दफ़ा अस्वीकृत कर दिया था। तार से फिर अनुरोध आया है। स्वीकार कर लूंगा। टंडन जी की आज्ञा है। क्या आप सम्मेलन आयेंगे ? आइये, दर्शन हो जायेंगे।

आपका

निराला

११९. वाचस्पति पाठक को

भूसा मंडी, हाथी खाना, लखनऊ

२७-९-३९

प्रिय पाठक जी,

साहित्य परिषद् का सभापतित्व छंटता हुआ मेरे पास पहुँचा है। मेरा शायद अन्तिम नम्बर है। मुझसे प्रवन्ध-मंत्री ने निजी पत्र में अपनी सरल प्रकृति के अनुसार सभापतित्व करने की भीख माँगी : वेचारे जहाँ गये वहीं से टाले गये। पहले मैंने भीख नहीं दी : लिख दिया १०८ वार असमर्थ हूँ। फिर टंडन जी से मिला। टंडन जी ने समझाया; कहा, मेरी निगाह में उसकी इज़्ज़त वढ़ जाती है जो वाद में रहा भी पद

स्वीकार करते अपने को अमर्यादित नहीं समझता। पराड़कर जी की इज़्ज़त उनकी
निगाह में परसाल वढ़ गई। मैंने कहा, जैसी आज्ञा होगी। फिर तार आया है।
स्वीकार कर लूंगा।
और कुशल है। माँ को प्रणाम। वाजपेयी जी एक वार आये थे। इसी वीच
मेरी जवलपुर जाने की वात है।

आपका
निराला

१२०. शिवपूजन सहाय को

भूसामन्डी, हाथीखाना,
लखनऊ
२५.७.३६.
[२५.१०.३६]

प्रिय शिवपूजन जी,

सम्मेलन से इलाहावाद होता हुआ २३ तारीख़ को यहां आया। आपका प्रिय पत्र पढ़ा। सम्मेलन में आपकी वड़ी प्रतीक्षा थी। कुछ विहारी साहित्यिकों से तथा विनोद के पत्र से आपके न पहुँच सकने का कारण मालूम हुआ। चिरञ्जीव की तवियत अव सुधर गई होगी।

सम्मेलन अच्छा रहा। विहारियों ने और यहां वालों ने विहार की नई रीडरों और 'होनहार' की वड़ी मुख़ालिफत की। होनहार के सम्पादक हैं—कौन हैं—राम-लोचन या क्या नाम है, वोलने उठे तो वहुत वनाये गये। राष्ट्रभाषा सम्मेलन की वड़ी धज्जियां उड़ीं।

साहित्य-परिषद के लिये मेरे वोट सवसे कम थे। किसी ने सभापतित्व स्वीकार नहीं किया, तव मेरे पास आमंत्रण आया। मैंने भी इन्कार किया; फिर प्रार्थना की गई. टंडन जी ने भी कहा, तव स्वीकार कर लिया। भाषण की एक प्रति भेजता हूं। सच यह है कि साहित्य-परिषद ही सवसे अधिक सफल रही, पर उसी का पत्रों में उल्लेख नहीं आया।

'अनामिका' अभी यहां नहीं है। फिर भेजवाऊंगा। अच्छी निकली है। अव प्रायः डेढ़ दर्जन से अधिक कितावें हो गई हैं। आप के पास सङ्ग्रह रहता है, इसलिये एक एक प्रति सवकी भेजवाना चाहता हूं। कुछ देर होगी। दो छप रही हैं।

अव किसी दूसरी अच्छी किताव की भूमिका लिखियेगा। किताव मुन्शी जी को समर्पित करूंगा।

आपने वाहर से वहुत ज़्यादा अधिकार न किया हो, पर लोगों के दिलों पर आपका वहुत वड़ा अधिकार है—आज भी आपके गद्य का जोड़ हिन्दी में नहीं। देखूं, 'मतवाला' के आपके अग्रलेख किताव के रूप में निकलवाने में कहां तक कामयाव

हूंगा।—सेठ जी के लड़के हरगोविन्द अक्सर मिलते रहते हैं। प्रकाशन दूसरी जगह से कराया जा सकता है।

जीवन कभी व्यर्थ नहीं जाता, फिर आप लोगों का जीवन। जीवन की वह कीमत नहीं जो आजकल लोग कूत रहे हैं। कुछ निगाह चाहिये गहरी और तेज़।

अधिक क्या लिखूं, जब आप सम्मेलन नहीं पहुंच सके और हिन्दी के प्रेमी और पत्र के सम्पादक—सम्वाददाता वहां की बहुत सी बातों को—भाषणों को जो मौखिक थे, निर्महत्व, समझ बैठे, तब चुप रहना ही अच्छा है, कला-पक्ष की यही सलाह है।

मेरे इस छपे भाषण में संक्षेप का भी संक्षेप है, वहां राष्ट्रभाषा-परिषद् की वक्तृता कुछ मनन करने योग्य थी।

आपका
—निराला

भाषण बुकपोस्ट से
भेज रहा हूं।

[मैंने इस पत्र की जो प्रतिलिपि की थी, उसमें ता: २५ जुलाई है जो ग़लत है; २५अक्तूबर होना चाहिए। सम्मेलन मध्य अक्तूबर में हुआ था और निराला वहां से २३ को लौटने के दो दिन बाद यह पत्र लिख रहे थे।]

१२१. कुंवर सुरेशसिंह को

भूसामन्डी, हाथीखाना,
लखनऊ
२६-११-३६

प्रिय कुंवर साहब,

आपका एक खत आया था, बहुत दिन हुए आपने 'कुमार' के लिए कुछ भेजने को लिखा था। मैं उत्तर नहीं लिख सका, कुछ भेज भी नहीं सका। अब निश्चिन्त हो सका हूँ। लिखकर भेजूंगा।

आपसे एक जरूरी बातचीत है! क्या आप जल्द लखनऊ आयेंगे?

बहुत दिन हुए, इलाहाबाद से एक पत्र पन्त जी को लिखा था: उन्होंने जवाब नहीं दिया: फिर बीमार हो गये। सम्मेलन से इलाहाबाद लौटकर उनके मुकाम पर उनसे मिलने गया नहीं मिले। अब कैसे हैं और कहाँ हैं?

इति शुभ

आपका
निराला

१२२. बनारसीदास चतुर्वेदी को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
१७. १२. ३६

आदरणीय चतुर्वेदी जी,

आपको मुमकिन, मालूम हो, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने इस साल कुछ प्रस्ताव

पास किये हैं जिनकी वुनियाद पर प्रचारात्मक कुछ काम करने के लिये एक कमिटी वनाई गई है सम्मेलन के अन्तर्गत। प्रचारमन्त्री पण्डित पद्मकान्त मालवीय जी भी शायद उस कमिटी के सदस्य हैं। उन्होंने प्रचारमन्त्री के पद से मुझे सम्मेलन के प्रचार में सहयोग देने के लिये आमन्त्रित किया है यानी लिखने के लिये कहा है। आप जानते हैं, मैं केवल नीरस साहित्यिक हूँ और कवि। दूसरों के पद स्वीकार न करने के कारण साहित्य-परिषद का सभापति वनाया गया। इस तरह सम्मेलन में हूं। प्रचार कार्य दस-पांच प्रभावशाली अनुभवी व्यक्तियों के सहयोग से ही हो सकता है। मेरे विचार से आप जैसे योग्य जनों का सहयोग ही प्रचार में सफलता ला सकता है। अवश्य उन्होंने आप को भी लिखा होगा। मेरे कार्य में आपकी सहायता वहुत ही आवश्यक है। पर-साल मैं विद्यासागर-कालेज से प्रधान-अतिथि की हैसियत से वुलाया गया था। मेरी चीजें सुनकर वहां के अध्यापकों ने मुझ से उनका वँगला अनुवाद करने के लिये कहा था। मैं अभी इसी तरह का कुछ काम करना चाहता हूं। दूसरे कामों के लिये आपसे वाद को पूछूंगा। क्या उसी अनुवाद के छपने के सम्वन्ध में आप 'प्रवासी' के कुछ अधिकारियों से मेरा थोड़ा सा परिचय करा देने की कृपा करेंगे?

सविनय—निराला

इति शम।

१२३. दयाशंकर वाजपेयी को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
२६-१२-३६

प्रिय दयाशङ्कर,

तुम्हारा पत्र मिला था। अव तुम पूरे स्वस्थ हो गये होगे। चिन्ता है। अपने समाचार लिख लिखा देना। यहां कुशल है। पर साल कलकत्ते के कुछ वङ्गाली अध्यापकों ने मेरी चीज़ों का वंगला अनुवाद करने के लिये कहा था। इस साल मैं यह काम करना चाहता हूं। अपने साथ औरों के भी अनुवाद दूंगा वाद को। इस प्रसङ्ग पर पं० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी को मैंने लिखा था। उनका वड़ा ही सहृदय उत्तर मिला है। काम हिन्दी का है और रूप व्यापक। इसीलिये पं० वनारसीदास जी को लिखना मैंने आवश्यक समझा। लिखा, पर उत्तर अभी नहीं आया; काफी देर हो चुकी है। कुछ दिनों वाद मैं यह काम शुरू करूंगा। सम्मेलन को लिख चुका हूं। टन्डन जी से व्यक्तिगत रूप से वातें करना चाहता हूं। अगर तुम्हारी तवियत अच्छी हो तो पं० अम्बिका प्रसाद जी से वाजपेयी का पता मेरे पास भेज दो। श्री दुर्गाप्रसाद जी खेतान या काली प्रसाद जी खेतान, जिन्हें वँगला मासिकों के लिये कुछ अधिक प्रभावशाली समझो, उनका भी भेज दो। लेखों में निश्चिन्त रहो भाषा और भाव वंगला में अनादृत नहीं होंगे। इति शम्।

सस्नेह तुम्हारा
निराला

१२४. बनारसीदास चतुर्वेदी को

भूसामण्डी, हाथीखाना, लखनऊ।
२४-१-४०

आदरणीय चतुर्वेदी जी,

आपका सुलिखित कृपापत्र मिला। मैं प्रतीक्षा करता हुआ निराश हो गया था। आपके विचारों से मैं सहमत हूं। मैं बंगला में केवल हिन्दी साहित्य ही रखना चाहता हूं। दूसरे साहित्यिकों को भी लूंगा। समिति वाली बात बड़ी अच्छी है। समिति फिलहाल तीन आदमियों की रहे। आप, हज़ारीप्रसाद और मैं। हंज़ारीप्रसाद जी को मैं सूचित कर चुका हूं, अनुवाद वाली बात। काम अभी मैं करता हूं। चोटी की बंगला होगी सरल, आधुनिक; इधर से निश्चित रहिये। आप सभापति हो जाइये। वर्षों का काम है। साथ मेम्बर बढ़ाते जायंगे। जल्द जवाब दीजिये।

सविनय,
निराला

१२५. दयाशंकर वाजपेयी को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ,
८-२-४०

प्रिय श्री दयाशङ्कर,

तुम्हारे प्रिय पत्र का बहुत देर से उत्तर लिख रहा हूँ। आने के बाद से तुम्हारी बीमारी के बढ़ने का कारण, मैं जहाँ तक समझता हूँ,एकाएक पानी का बदलना है। अब तक तुम्हारी हालत सुधर गई होगी। अब कैसी तबियत है, किसी से लिखा देना। जी लगा रहेगा। खुद न लिखना मस्तिष्क को ज़ोर पहुंचने पर क्षति हो सकती है! चिन्ता न करना। कुछ अच्छे होने पर यहां चले आना।

बङ्किम की अभी सिर्फ पांच किताबें अनुवादित हो सकी हैं। लीडर से ४०० सफों का लेखों का संग्रह निकल रहा है, कम्पोजिङ्ग खत्म हो चुकी है। इसके बाद कहानियों का सङ्ग्रह निकलेगा।

मैं बरेली कालेज गया था, वहां वालों ने एक अभिनन्दन दिया था। ५/६ दिन में लखनऊ वाले एक देने वाले हैं। बरेली वाली तस्वीर यानी फोटो सुना है, बड़ी अच्छी आई है। अभिनन्दन वहीं छोड़ आया था। फोटो के साथ वे लोग जल्द भेज देंगे, लिखा है।

जिनके यहाँ ठहरा था, उनका नाम है श्री ज्ञान प्रकाश जौहरी। ये बरेली कालेज के अंगरेजी के अध्यापक हैं, कालेज की हिन्दी प्रचारिणी सभा के सभापति [,] इन्हीं के [यहाँ] ठहरा था। ये लखनऊ-विश्वविद्यालय के प्रथम श्रेणी पास करने वाले छात्र हैं। तभी से मेरे मित्र हैं। इनकी पत्नी प्रेमा देवी लखनऊ-विश्वविद्यालय की रत्न हैं, एम०ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम आने वाली जूनियर केम्ब्रिज, सीनियर केम्ब्रिज,

एफ.ए., बी.ए., एल.टी. सब में बराबर प्रथम आई। अभी हाल बलायत से लौटी हैं।
२६ की। विवाह प्रेम का किया। मिस प्रेमा खन्ना अब श्रीमती प्रेमा जौहरी
एम.ए., एल.टी. हैं। बलायत वाली डिगरी मुझे नहीं मालूम। दोनों बड़े सज्जन, सदा
प्रसन्न। प्रेमा को बरेली से बाहर, ऊँची जगह मिलती है, पर पति को छोड़ कर नहीं
जातीं। प्रेमा के पिता लखनऊ के मेरे आदरणीय वृद्ध मित्र हैं। प्रेमा के एक लड़का भी
हुआ है एम. ए. करने के एक साल बाद हुआ था, यानी शादी होने के साल भर में; वह
लखनऊ में ही रहता है नानी की गोद में। नाम पुष्कर है।

अब मेरा विचार है, अपनी कुछ चीजें बंगला में अनुवादित करूँ; पहले लेख
रूप में मासिक पत्रों में कुछ छपवाऊं। तुम्हें याद होगा, अगर मैंने कहा है, परसाल
तुम्हारे कहने पर कलकत्ता जाकर विद्यासागर के कुछ अध्यापकों से अपनी चीजों का
बंगला में अनुवाद देने के लिये अनुरुद्ध हुआ था। अब काम पूरा उतारने का इरादा है।
इस सम्बन्ध में मैंने पं० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी और पं० बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखा
था। हज़ारी प्रसाद जी का उत्तर बड़ा ही सहृदय है, चतुर्वेदी जी का भी है, पर वे
अभी तटस्थ हैं। मैं कुछ दिनों में इलाहाबाद जाना चाहता हूँ, लौटने पर यह काम शुरू
करूँगा। इसी तरह का काम मेरे मित्र अंगरेज़ी में करने जा रहे हैं जो यहाँ के अंगरेजी
पत्रों में छपेगा। ३/४ साल बाद, कुछ और गहरे जड़ गई तो मैं भी अंगरेज़ी में कुछ
लिखने की अनुवाद देने की कोशिश करूंगा।

तुम्हारे समाचार की चिन्ता है। अभी ७ दिन यहाँ हूँ। हाल दो। तुम्हारे पिता
जी को और डिप्टी साहब के लड़के तिवारी जी को मेरा प्रणाम। इति।

तुम्हारा
निराला

१२६. दयाशंकर बाजपेयी को

भूसामण्डी, हाथीखाना, लखनऊ
१४-२-४०

प्रिय दयाशङ्कर,

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। दुःख की बात है। मैं १६/१७ को
इलाहाबाद जा रहा हूं। लौटकर तुम्हें लिखूंगा। टी० बी० के इलाज के लिए कहां तक
क्या सम्भव है, समझूंगा।

किसी को [के ?] लिखने से कुछ नहीं होता अगर उद्देश्य अच्छा है। हम हर
बात में महाजनों का अपमान करते हैं। ईश्वर की दुनिया में आदमी के लिए बहुत थोड़ी
जगह है। तुम इतना लम्बा पत्र न लिखना।

उपेन्द्र जी मेरे मित्र हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से उन्हें लिख दूंगा।

लखनऊ वाला अभिनन्दन अलग से तुम्हें भेजा।

इलाहाबाद से या यहाँ से जल्द तुम्हें अच्छी खबरें भेजूंगा।

तुम्हारे पिता जी को और त्रिपाठी जी को नमस्कार।

इति।

सस्नेह तुम्हारा
निराला

[उपेन्द्रजी—निराला के मित्र उपेन्द्रनाथ चतुर्वेदी। इनका उल्लेख दयाशंकर वाजपेयी को लिखे हुए १४-३-४० के पत्र में भी है।]

१२७. रामशंकर शुक्ल को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ,
३. ३. ४०.

प्रिय भाई साहब,

इलाहाबाद में आपकी चिट्ठियां और तार मिले थे। रुपये नहीं मिले। जगदीश के लिखने के अनुसार हमने लिख दिया था। पर बात पर बात टलती गई। दूसरा इन्तज़ाम भी नहीं किया था। अब ६ मार्च को किस्त न चुकाने के लिये दावा दायर होगा जिसकी कोई सुनवाई नहीं होगी। यह फल आगे है। एक तार और करते हैं, फिर हरि इच्छा। गोरखपुर का हाल मालूम हुआ। जैसा उचित जान पड़े कीजिये। हमसे जैसा कहें हम शक्तिभर करने को तैयार हैं। इति।

सविनय
श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी

१२८. दयाशंकर वाजपेयी को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
१४-३-४०.

प्रिय श्री दयाशङ्कर

हमें इलाहाबाद में देर लगी। अड़चनें भी कई रहीं। फिर सविस्तार लिखेंगे। वहां से आते ही कार्यवश गांव जाना पड़ा। दो दिन हुए गांव से आया हूं। अपनी तबियत का हाल जल्द दो। पं० उपेन्द्र नाथ जी चतुर्वेदी इस समय छुट्टी लेकर अपने घर हैं। आने पर कहूँगा। कई आदमियों से पूछने पर मालूम हुआ, गङ्गा की हवा से फायदा पहुँच सकता है। कैसा हाल है, जल्द लिखो। इति।

तुम्हारा
निराला

१२९. दयाशंकर वाजपेयी को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
१-४-४०

प्रिय श्री दयाशङ्कर,

३,४ दिन हुए तुम्हारा पत्र मिला था। इलाहावाद से अव तक मेरी तवियत भीतरी सूरत से वहुत खराव थी। इन्डियन प्रेस के मालिक की लड़की की शादी थी, वे लोग कलकत्ता गये थे; कहते हैं, शादी के वाद से उनके यहाँ रुपये का वड़ा टोटा है। हम लोगों की राय थी कि तुम्हें पहाड़ भेजें। लेकिन वह नहीं हो सका। तुम्हारी दवा की चीजें पोस्ट से नहीं जा सकतीं। देर हो गई। इस समय रिक्त हूं। इरादा है कि ३/४ दिन में खुद लेकर वैसवाड़ा या तकिया से वैलगाड़ी किराये करके जाऊंगा। तुम्हारी दवा का अवश्य अव तक इन्तजाम हो गया होगा। पर, कुछ फल के साथ तुम्हें देखना हो जायगा। रामकृष्ण की स्त्री गोरखपुर में सख्त वीमार है, प्रसूती का ज्वर तीन महीने से है।

अधिक क्या लिखूं, मेरे पैर की हालत—उत्तरोत्तर खराव होती जा रही है। इति।

तुम्हारा
निराला

[दयाशंकर वाजपेयी और रामकृष्ण त्रिपाठी की पत्नी, दोनों का ही उल्लिखित रोगों के कारण निधन हुआ।]

१३०. राजावख्श सिंह को

नैनीताल,
दिनांक ९-६-४०

प्रिय राजावख्श जी,

मैं आपके वहां १० तारीख को पहुंचने का विचार कर रहा था, लेकिन पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी के कहने पर उनके साथ १५ दिन के लिए यहाँ चला आया। अव १५ जुलाई तक शायद आपके वहां आऊंगा। घी और गुड़ आपने खरीद लिया होगा। अगर २५ जून तक किसी के हाथ भेज दें तो भी वन सकता है; और मैं अगर २५/२६ जून तक आपके यहां नहीं पहुंच सका तो १० से १३ जुलाई तक अवश्य आऊंगा। नैनीताल का वयान आपके पास व्यर्थ है क्योंकि आप देख चुके होंगे। जगह मुझे अच्छी लगी। भूख लगती है, पेट साफ रहता है। दृश्य अच्छे अच्छे हैं। आप प्रसन्न होंगे। इति।

सस्नेह आपका,
—निराला

१३१. भगवतीचरण वर्मा को

[लखनऊ,
जुलाई १९४०]

प्रिय भगवती बाबू,

आप का पत्र, नोट और मेरी छपी कविता मिली। अवश्य छापिये। इसमें बुरी बात मुझे कोई नहीं नज़र आती—दार्शनिक रूप स्पष्ट है, आंखें चाहियें। हां, नोट में आप इतना लिखना भूल गये हैं कि यह रचना आपने छापने के लिये ख़ुद मांगी थी और न भेजने पर फिर याद भी दिलाई थी। आपने अपने जैसे और अनेकों का जो मेरी कला के सम्मति दाताओं में उल्लेख किया है, यह उनके प्रति आपकी उदारता है; उनके नाम भी आप लिख देते तो पाठकों को भ्रम में न पड़ना पड़ता। रही बात आपके कलाज्ञान के सम्बन्ध में मेरी, यह आप जनते [जानते] हैं—मैं आपका कितना क़ायल हूं।

मेरे कुछ मित्रों को आपका नोट बहुत पसन्द आया है, छपते ही वे आपके कलाज्ञान की, सौजन्य-शिष्टता की तारीफ़ करेंगे, कहते हैं। आप अपनी प्रसिद्धि से घबराइयेगा नहीं, यद्यपि आप जैसे उदारचेता से घबराहट की ही आशा बंधती है। विश्वविद्यालयों की कृपा से ये लोग मेरी तरह अज्ञातकुलशील नहीं। सुना, श्रीनारायण जी चतुर्वेदी आपको व्यङ्ग्य में सम्मति देने वाले हैं। भगवती बाबू, ईश्वर जाने, बहुत दिनों से अच्छी कलापूर्ण बातें नहीं पढ़ीं [,] न छापकर इनकी जड़ न मारियेगा।

आपका
निराला

[वर्मा जी ने अपना पत्र २७ जून को लिखा था; निराला ने अनुमानतः अपना यह उत्तर जुलाई के पहले हफ्ते में किसी समय लिखा होगा।]

१३२. कुंवर सुरेशसिंह को

भूसामन्डी, हाथीख़ाना, लखनऊ
दीपावली
३०. १०. ४०

प्रिय कुंवर साहब,

आपका कृपापत्र मिला। मेरी आवृत्ति आपको पसन्द आई, आनन्द मिला. मेरे कृत कार्यत्व के लिए इतना बहुत है। आप लोगों के दर्शनों की यों मेरी प्रबल इच्छा है, पर बहुत समय इच्छा को दबाना पड़ता है, वह कार्य में परिणत नहीं की जा सकती। भगवान जाने, नहीं प्रकृति जाने, इससे कौन सी बीमारी पैदा होगी। मेरे दिन किसी तरह कटते जा रहे हैं। आप सपरिवार प्रसन्न होंगे। इति शुभ

आपका
निराला

१३३. कुंवर सुरेश सिंह को

भूसामन्डी, हाथीखाना
लखनऊ
२६-११-४०

प्रिय कुंवर साहब,

आपको शायद यह लिखना भूल गया था कि जिन शब्दों में आपने मेरी आवृत्ति की प्रशंसा की है वे शब्द लखनऊ और दिल्ली, के रेडियो स्टेशन के डायरेक्टरों को लिखकर भेज दें और यह इच्छा भी यदि और सुनना चाहते हैं। आपने देखा होगा, सारङ्ग, आवाज़ और Listener के टाइटिल पेज पर बड़े आकार में मेरी तस्वीर निकली है। मुझे आपसे कुछ साहित्यिक बातचीत करनी है, एक दफा जल्द लखनऊ आयें तो अच्छा हो।

आपका—निराला

१३४. कुंवर सुरेश सिंह को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
८-४-४१
शाम ७

प्रिय कुंवर साहब,

आपसे हिन्दी के स्टेज की संक्षिप्त बातचीत की थी। आप जैसे आदमी के रहने से (साहित्यिकता के साथ साथ) यहाँ के राजा तअल्लुकेदारो का भी थोड़ा बहुत सहयोग मिल सकेगा। आपको, बहुत बड़ी चिन्ता इसके लिए कुछ नहीं करनी होगी। कुछ हाथ पैर डुलाना होगा, और प्रारम्भ में एक साधारण सहायता करना। हिन्दी से करोड़ो रु० बम्बई और कलकत्ते की सिनेमा कम्पनियाँ खीचती हैं। कोई परिस्थिति इसमें बाधक नहीं होगी। पन्त जी सहयोग देंगे और एक सञ्चालक की ही तरह आपके साथ रहेंगे, उन्होंने मुझे वचन दिया है। आप थोड़ा सोचकर जवाब दें : यह उठान जल्द पूरा करना है। मैं अभी कुछ उलझा हूँ। क्या इधर जल्द आना होगा ? मैंने केवल याद दिलाई।

आपका—निराला

१३५. कुंवर सुरेश सिंह को

मारफत लीडर प्रेस, इलाहाबाद
२६-६-४१

प्रिय श्री कुंवर साहब,

आपका पत्र लखनऊ से फिर भेजा जाकर मुझे यहाँ मिला। समाचार मालूम हुए। अब तक पन्त जी आपसे मिल चुके होंगे। दिल्ली रेडियो का उनके सभापतित्व

में होने वाला कवि सम्मेलन मैंने सुना, मुझे वहुत पसन्द आया। मालूम नहीं १६ जुलाई को लखनऊ रेडियो में होने वाले कवि सम्मेलन में वे शरीक हो रहे हैं या नहीं। मेरे पास पत्र आया था। जवाव में शरीक न हो सकने के लिए मैंने लिखा है। वहुत दिनों से अधूरी पड़ी कितावें—चमेली और विल्लेसुर वकरिहा—पूरी कर रहा हूँ। प्रेस से कड़ा तकाज़ा है। कुछ रुपये पेशगी ले चुका हूँ। "कुकुरमुत्ता" एक बड़ी रचना ४५० पङ्क्तियों की इधर लिखी हैं आधुनिक ढंग की हास्य प्रधान : शुरू की १५० लाइनों के करीव मई के हंस में निकल चुका है। ज़वान हिन्दुस्तानी है। मैं इसे अपनी 'तुलसीदास' रचना की कोटि की समझता हूँ।

आपको शूल के आक्रमण से वहाँ मुक्ति मिली, प्रसन्नता की वात है। मिलने जुलने में रोक है, जी ऊवता होगा। इस समय संसार की सामरिक स्थिति वड़ी भयंकर हो रही है। सारा निश्चय समय के हाथ है। आपको सम्वाद पत्र पढ़ने को मिलते होंगे। हिन्दी के प्रकाशन का क्रम यानी लेखक और प्रकाशक के वर्ताव अच्छे नहीं। साहित्य भी अच्छा नहीं। तरह-तरह का प्रभाव है जो मानवीयता के लिए कम है। हम लोग अव तक किसी तरह चले; आगे चलेंगे, उपायों को देखते हुए विश्वास नहीं वँधता।

प्रकाश जी की घवराहट उनके पत्र से जाहिर हो रही थी। आपके लिए इतना कर सकीं, इतना भी वहुत है। आप लोग एकान्तवास ख़ुशी ख़ुशी पार करें मेरी यही कामना है। कुंवर व्रजेश, प्रकाश और आप मेरा नमस्कार ग्रहण करें। उत्तर दे सकें तो १५ रोज के अन्दर ऊपर के पते पर दें। वाद को लखनऊ के पते पर—भूसामन्डी, हाथीखाना। इति

सस्नेह आपका
निराला

[प्रकाश—श्रीमती सुरेशसिंह
कुंवर व्रजेश—कुँवर सुरेशसिंह के भाई, मेरे छात्रजीवन-काल में लखनऊ की मजदूर-सभा के कार्यकर्ता]

१३६. शिवदानसिंह चौहान को

c/o The Leader,
Alld.
1. 7. 41

प्रिय शिवदान सिंह जी,

आप के पत्र का देर से जवाव लिख रहा हूँ। मैं आप को 'खजोहरा' एक लम्वी कविता पहले छापने के लिए भेजूंगा। फिर लेख-कहानी। अभी तक बुरी तरह उलझा रहा अपने आप में। काम वहुत अच्छा नहीं कर सका। कुछ किया है। श्रीपति जी से की वात पूरी नहीं कर सका। मुझे रुपये भी चाहिये। Education Expan.Officer

एक किताब की ७०० प्रतियां ले लेंगे। 'बिल्लेसुर' तैयार कर रहा हूं। 'कुकुरमुत्ता'-संग्रह भी तैयार है। श्रीपति जी हों तो जल्द मुझे लिखें। यहां दूसरे लेने वाले हैं पहला संस्करण।

आप अच्छी तरह होंगे। आप की भाषा मुझे बहुत पसन्द है। जल्दी में हूं। नमोनमः।

आपका
निराला

[पता :]

Shri Shivadan Singh Chauhan,
"The Hans"
Benares City

१३७. कुंवर सुरेश सिंह को

भूसामन्डी, हाथीखाना, लखनऊ
२६-७-४१

प्रिय कुंवर साहब,

आपका पत्र मिला। 'कुकुरमुत्ता' आपको पसन्द आया, श्रम सार्थक है। यहाँ का कवि सम्मेलन साधारण अच्छा रहा। मैं फिर प्रयाग लौट जाना चाहता हूँ। 'हंस' के इस महीने में 'खजोहरा' १३४ लाइन की कविता निकलेगी। साधारण है। पैर का दर्द बहुत बढ़ा है। काम बहुत कम होता है। यहाँ पं० अमर नाथ जी झा आये हैं। एक कवि सम्मेलन उनके सम्वर्धन में हो रहा है। मैं रहूँगा। अब कुछ ध्यान मैंने बँगला की तरफ भी दिया है। यहाँ के विश्वविद्यालय में दो-एक प्रोफेसर बंगाली मित्र हैं, बँगला के अच्छे विद्वान् लेखक हैं। रवीन्द्र जयन्ती में मुझे यहाँ के बङ्गाली समाज ने बुलाया था। डा० राधाकुमुद सभापति थे। मैं छुट्टा बोला। लोगों को बहुत पसन्द आया। वहाँ डा० नन्दलाल चटर्जी ने एक पेपर मेरी और पन्त जी की तारीफ में, रवीन्द्र प्रभाव का उल्लेख करते हुए पढ़ा। अभी कानपुर में, रवीन्द्र जयन्ती में उन्होंने व्याख्यान दिया था (दूसरा)। पन्त जी पर + मुझ पर रवीन्द्र प्रभाव बतलाया था। सच्चे भाव मे कहा था। बड़े सज्जन हैं। पन्त जी के साथ इलाहाबाद में पढ़े हैं। उनका व्याख्यान सुनकर एक सज्जन ने प्रताप में लिखा है—छायावाद के श्रेष्ठ कवि न पन्त जी हैं, न निराला जी, बल्कि प्रसाद जी हैं।

भगवती चरण वर्मा का एक पत्र आपके पत्र के साथ आया है। उसमें उन्होंने लिखा है—हमने सुना है कि आपका यह दावा है कि आप कहानी तगड़ी लिखते हैं। लिहाजा हमें कहना यह है कि 'पूजा' के अवसर विचार का एक विशेषांक निकल रहा है। उसके लिए एक कहानी और एक कविता आप भेजें। कहानी और कविता दोनों ही भेजनी होंगी समझे आप ?

महादेवी वर्मा का गद्य-दर्शन 'रेखाचित्र' या ऐसा ही नाम है कुछ, बड़े थाट से भारती भंडार से निकल रहा है।

मैं अब 'सुरुहटू' पर कविता लिखने वाला हूं। 'विल्लेसुर' बकरी चरा चुके, अब शादी कर रहे हैं। चमेली एक के साथ भाग गयी।

आप प्रसन्न होंगे। बच्चों का कुशल चाहता हूं। नमस्कार—प्रकाश जी को+ आपको। पन्त जी की पायल इधर खूब बज रही है। पानी नहीं बरसा, खेती सूख गई।

आपका

सूर्यकान्त त्रिपाठी

[पन्तजी की पायल—जून १९४१ के 'हंस' में पन्त जी की कविता छपी थी :

बज पायल छम !
छम — छम !
कम्प कम्प में उर के मम
बज पायल छम !
छम — छम !]

१३८. कुंवर सुरेश सिंह को

भूसामन्डी हाथीखाना,
लखनऊ
१६-९-४१

प्रिय कुंवर साहब,

आपको बहुत दिनों बाद लिख रहा हूँ। पैर के दर्द से मानसिक दशा अच्छी नहीं रही। अभी तक कोई किताब पूरी नहीं कर सका। आशा है जल्द कर लूंगा। यहाँ इस समय बड़ी उमस होती है। आपसे पन्त जी मिलते होंगे। वहाँ मौसम अच्छा होगा। आजकल पहाड़ बड़ा सुहावना लगता है। कहानियाँ कुछ लिखना चाहता हूँ। देखूं कब तक सफल हो सकूंगा। मेरी 'सुकुल की बीवी' किताब छप गयी है। 'चाबुक' भी छप गया होगा। चाबुक में 'मतवाला' के और कुछ इधर के लेख हैं। सुकुल की बीवी में चार कहानियाँ। श्रीमती कुंवरानी साहबा अच्छी तरह होंगी। बच्चे भी प्रसन्न। आप लोग मेरा नमस्कार लीजिए। श्री पन्त जी को स्नेह। इति

आपका

सूर्यकान्त त्रिपाठी

निराला

१३९. केदारनाथ अग्रवाल को

मारफ़त पं. राम लाल गर्ग, कर्वी, बांदा।
२३. ६. ४२

प्रिय केदार बाबू,

आपका प्रिय पत्र मिला। मैं भरकोरा (पहाड़ी) रहता हूं। पत्र की सुविधा के लिए वह पता रक्खा है। पहले कुछ दिन वहां भी ठहरा था। वहां से इस बार फिर चित्रकूट गया और 'स्फटिक शिला' एक लम्बी कविता लिखी। नागर जी का पत्र मुझे भी मिला है। आपका उत्तर देखने की प्रतीक्षा है। इस समय राजापुर में पं० राम वहोरी जी शुक्ल से मिलने का विचार है। आपसे मिलने की भी उत्कण्ठा है। अपने प्रकाशक से रुपये मगाये थे, अभी तक उनका उत्तर नहीं मिला। 'बिल्लेसुर बकरिहा' निकल गया है। मेरे पास ५ प्रतियां यहां भेजी गई थीं। आपको एक देना चाहता हूं।

यहां गर्ग जी के मकान में चोरी हो गई। उनकी और उनके मित्र की अमानत में रक्खी बक्सें संघ से निकाल ली गईं।

आपका—"निराला"

राम प्रसाद जी अग्रवाल से मेरी मुलाक़ात नहीं हुई।

—नि०

[पता]

Srijut
Kedarnath ji Agrawal,
B. A, LL.B.
Banda [नागर जी—नरोत्तम नागर।]

१४०. केदारनाथ अग्रवाल को

C/o Pdt. Ramlal Garga,
Karwi, Banda
7. 7. 42.

प्रिय अग्रवाल जी,

पत्र मिला। नागर जी ने फिर अभ्युदय नहीं भेजा। आपका लेख अब तक छप चुका होगा। आप से बांदा चल कर अभी नहीं मिल सकता। यदि आप अगले रविवार की शाम को कर्वी चले आयें तो मैं स्टेशन पर मिलूं। बिल्लेसुर भी आप को दूं और वहीं किसी मित्र के यहां या धर्मशाला में रातभर रह कर बातचीत भी करूं। सुबह आठ की गाड़ी से किताब लिये आप वाला-वाला रवाना हो जायं। एक पत्र पत्र पाते ही डाल दें कि आप आ रहे हैं। और कुशल है। प्रसन्न होंगे। इति।

आपका—निराला

पत्र भरकोर्रा से लिखा

—नि०

[पहलेवाले पत्र में पहाड़ी का नाम भरकोरा लिखा है।]

[पता]

Sri

Kedarnath-ji Agrawal

advocate

Banda

१४१. केदारनाथ अग्रवाल को

C/o Rai Bahadur Pdt. Sri Narayanji
Chaturvedi, M. A. (Lond.)
Daraganj, Allahabad.
१५-१०-४२.

प्रिय अग्रवाल जी,

आपके पत्र का उत्तर नहीं दे सका। मैं प्राय: ३ महीने से मलेरिया के बुखार का शिकार हूं। आप के स्वागत के लिए कर्वी स्टेशन गया था। आप नहीं आये। गाड़ी लेट आई। लौट आया। किताब आप की वहीं रखी है। लेख आपका बड़ा अच्छा लगा उत्तर। बीमारी का हाल पाकर श्री चतुर्वेदी जी ने बुला लिया [।] परसों आया हूं। अच्छी आबोहवा है यहां की। इलाज भी अच्छा। तीन ही दिन में हालत बदल चली। यों वज़न ६० पौन्ड घट गया था। बड़ी तकलीफ मिली। आप प्रसन्न होंगे। आपकी रचनाएं जो न पढ़ी थीं, यहां पढ़ रहा हूं। इति [।] मित्रों को जैसे मि० सिंह, नमस्कार [।]

आपका
निराला

[पता]

Babu

Kedarnath Agrawal,

advocate,

(Banda)

["लेख आपका बड़ा अच्छा लगा उत्तर।" इस वाक्य में निराला ने पहले प्रत्युत्तर लिखा, फिर काट कर उत्तर लिखा। आशय यह कि केदारनाथ अग्रवाल का लेख किसी अन्य के आक्षेपों का उत्तर अथवा प्रत्युत्तर था। मि. सिंह—वीरेश्वर सिंह, "लोक युद्ध" के "गोराबादल"।]

१४२. रामविलास शर्मा को

मार्फ़त रायबहादुर पण्डित श्री नारायण जी चतुर्वेदी,
एम्० ए० (लन्दन)
दारागञ्ज, इलाहाबाद
११-१२-४२

प्रिय श्री डा० रामविलास,

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुए । लखनऊ विश्वविद्यालय की घटना सम्वाद पत्रों में देखी ।

पढ़ीस-जी पर माधुरी का विशिष्ट अंक, शायद आप ही की है, अच्छी सूझ है ।

अच्छा हूँ, ७० पौन्ड घट गया था, २५ पूरे करने हैं ।

मेरे संबन्ध की बातचीत मिलने पर ही अच्छी होगी । लिख-लिखा भी दे सकूँगा । जब आप फ़ुर्सत से मिल सकें, एक बार मिल लें ।

आपका साहित्य-क्रम बहुत पसन्द आया ।

इधर कुछ गीत लिखे हैं । वैसे अच्छे नहीं बन पड़े ।

सुमन जी को लिख दिया है । मेरी कम-से-कम मांग उनके लिये अधिक हो सकती है ।

चौबे जी और लल्लू जी को नमस्कार । इति ।

आपका—निराला

[पता]
Dr. Ram Bilas Sharma,
M. A. Ph. D.

K. C. De Lane,
Sunder Bagh,
Lucknow

[लखनऊ विश्वविद्यालय की घटना—सन् ४२ के आन्दोलन-क्रम में छात्रों की साम्राज्य-विरोधी कार्रवाई । पढ़ीस जी—बलभद्र दीक्षित पढ़ीस, गद्यलेखक, अवधी के कवि, निराला के मित्र । इनके निधन पर मैंने 'माधुरी' के पढ़ीस-अंक का संपादन किया था ।]

१४३. रामविलास शर्मा को

मार्फ़त रायबहादुर पं० श्री नारायण जी चतुर्वेदी
दारागंज, इलाहाबाद
२.२.४३

प्रिय-श्री डाक्टर,

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुए । आपके उत्तर के देखने की प्रतीक्षा है । दीक्षित के लिये बहुत सोचता हूँ, मगर वह नस मेरी कट चुकी है जिसमें स्नेह

सार्थक है : अपने-आप दिनरात जलन होती है। किसी से अपनी तरफ से प्रायः नहीं मिलता। मिल नहीं सकता। कोई आता है तो थोड़ी सी बातचीत। आने वाला ऊब जाता है। मुझे भी बातचीत अच्छी नहीं लगती। कभी रात-रातभर नींद नहीं आती। तम्बाकू छूटती नहीं। खोपड़ी भन्नाई रहती है। चित्रकूट में एकदफ़ा बीमारी के समय छोड़ दिया था खाना, फिर आदत पड़ गई। चतुर्वेदी जी की दया है। रहता हूँ, बहुत अच्छी तरह। उर्दू की, हिन्दी में छपी, ग़ज़लें पढ़ा करता हूँ। एक काम एसप्स् फ़ेब्ल्स के अनुवाद का लिया है, कर रहा हूँ। मज़े में हूँ। कसरत इन दिनों फिर छुटी है। चौधरी साहब से अणिमा वाला हाल कह दीजियेगा। उन्हें अभी मैं उत्तर नहीं लिख सका। शिवपूजन जी को समर्पण बहुत अच्छा है, बड़े सज्जन और चारु साहित्यिक हैं। इति।

काम जितना करूँगा, अच्छा ही करूँगा, कुछ कुछ कर रहा हूँ।
—नि०

आपका
—निराला

[पताः]

Dr. Rambilas Sharma
M. A. Ph. D
Sunder Bagh,
Lucknow

[चौधरी साहब—युगमंदिर के, और सुमित्राकुमारी सिन्हा के, स्वामी, चौधरी राजेन्द्र शंकर।
शिवपूजन जी को समर्पण—निराला पर मेरी प्रस्तावित पुस्तक का समर्पण।]

१४४. रामविलास शर्मा को

C/o S. N. Chaturvedi Esqr.
Dara Gunj, Alld.
3. 2. 43.

Dear Doctor,

Received your both letters. I consent for the poem to be recited on the 7th Feb. Your letter I'll answer very soon dealing all the points.

Yours
Nirala

[पताः]

Dr.
Rambilas Sharma, M. A. Ph. D.
Sundar Bagh,
Lucknow.

[वे कविता-पाठ कहां करनेवाले थे, याद नहीं। संभवतः रेडियो द्वारा कविता का प्रसारण था। अगला पत्र देखें। इस पत्र का आशयः

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। ७ फरवरी के कवितापाठ के लिये मेरी स्वीकृति है। तुम्हारे पत्र की सब बातों का शीघ्र उत्तर दूंगा।]

१४५. रामविलास शर्मा को

C/o Rai Bahadur B. N. Chaturvedi,
Dara Ganj, Allahabad.
18. 2. 43.

प्रिय राम विलास जी,

आपके पत्र का लिफाफा एक महीने से पहले का लिखा है, वह चिट्ठी सुरक्षित होगी, इस समय मिल नहीं रही, इसलिए पायन्ट्स् नहीं लिख सकता, जबानी लिख भी नहीं सकूंगा, फिर भी स्मरण से कुछ लिखता हूं, आप निष्कर्ष निकाल लीजिएगा।

पहले यह सूचित कर दूं कि वह गाना मैंने नहीं सुना। अच्छा ही गाया गया होगा। २०) की एक प्रर्वतिका (Programme) वना कर भेजी गई थी, सही करके भेजने के लिए। मैंने कौशल जी से, अगर वह दूसरे सज्जन नहीं थे, कहा था कि आप के रेडियो को मेरे गाने गवाने के लिए कोई फ़ीस नहीं देनी पड़ेगी, इसलिए Programme का reply sheet मैंने दस्तखत करके नहीं भेजा।

मेरा विरोध 'जुही की कली' न छाप कर पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पहले किया। फिर जिनके उल्लेख आपने किये हैं, उन सवों ने किया, क्रमशः इसकी व्याप्ति वहुत है, अनेक पत्रों, अनेक जनों में। पं० नन्ददुलारे जी वाजपेयी से वहुत कुछ मालूम होगा। श्री कृष्णदेव प्रसाद जी गौड़, बाबू गुलाव राय जी, श्री अवध उपाध्याय जी आदि समर्थकों में थे।

गढ़ाकोला मैं कुल मिलाकर ८/१० वार लम्बे लम्बे अरसे के बाद आ-जा चुका हूं। दादाज़ाद भाई के व्याह में, उम्र ४ साल की, तव। जनेऊ में, उम्र आठ साल। घर बनवाने पिता जी के साथ, उम्र ११ साल। व्याह में, उम्र १४ साल। गवने में, उम्र १६ साल। अव तक महीने महीने, दो-दो महीने रहा। इसके बाद तीन चार वार और गया, और एक-एक साल, ६-६ महीने रहा। इधर ग्यारह साल के अन्दर शायद एक वार २/३ दिन के लिए गया था।

आशा है, आप प्रसन्न हैं। आप के साथ दीक्षित जी का एक लड़का रहता है, सुनकर प्रसन्नता हुई। मैं काम अभी अच्छी तरह नहीं कर पाता। फिर भी कुछ अच्छी परिस्थिति है।

चौवे जी को लल्लू साहव को स्नेह।

आपका
—निराला

[पताः]

Dr. Rambilas Sharma, MA,
Ph. D.
Sunder Bagh.
Lucknow

[दीक्षित जी—वलभद्र दीक्षित ।]

१४६. रामविलास शर्मा को

मार्फ़त रायवहादुर पं० श्री नारायण जी चतुर्वेदी
दारागंज, इलाहाबाद
२२-२-४३

प्रिय श्री डाक्टर,

कल नागर जी आये थे। आपका प्रश्नों वाला पत्र मिल गया। खासा लम्बा उत्तर लिखा दिया। इस पत्र से पहले उनके पत्र के साथ मिल जायगा। आज कुंवर चन्द्रप्रकाश जी की दूसरी कविता पुस्तक 'शम्पा' मिली, 'मेघमाला' पग्ले मिल चुकी थी। आपने दोनों किताबें देखी होंगी। मुझे वहुत पसन्द आई।

मैं स्वस्थ हूं। इधर कुछ पढ़ रहा था। थोड़ा-थोड़ा फिर लिखना शुरू करूंगा।

चौधरी साहब को पूरी रचनाएं नहीं भेज सका। क्योंकि इधर उर्दू शायरी के रसास्वादन में पड़ा था। कुछ चीज़े [चीज़ें] इस हिसाव-किताव की तैयार करनी हैं। आपको जो किताव समर्पित हो, वह 'अणिमा' ही रह जाय, यह दुःख की वात है। देखूं, कहां तक नातवानी रहती है।

आप फ़िराक़ साहव को उत्तर लिखेंगे या नहीं, सूचित कीजिएगा। इति

आपका
—निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma, M. A, Ph. D.
Sunder Bagh,
Lucknow.

[नागर जी—नरोत्तम नागर; इस पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित "प्रश्नोत्तरी" की ओर संकेत है।]

१४७. रामविलास शर्मा को

मार्फ़त रायवहादुर पं. श्री नारायण जी चतुर्वेदी
दारागंज, इलाहावाद
१५.३.४३.

प्रिय डाक्टर,

आपका पत्र समय पर मिला था। आपका माधुरी में निकला लेख भी कल देखा। वहुत पसंद आया।

किताबें जब जिस तरह समर्पित होनी होंगी होंगी। शिवपूजन जी अवश्य ही भरोसे की मदद करेंगे।

इस समय एक छोटे से भ्रमण की चर्चा कर रहा हूँ। यदि आपको फुर्सत हो तो सूचित कीजिये। कलिंजर और चित्रकूट के लिये होली तक, चैत के पहले पक्ष तक, बड़ा अच्छा समय है। अगर चलने का विचार हो तो लिखें। लल्लू जी और चौबे जी से भी पूछ लें। केदार जी आये थे, उनसे मैंने बातचीत कर ली है। हमारे एक ज़मीदार मित्र हैं [,] वे नारायणी से कलिंजर तक बैलगाड़ी देंगे। अच्छी जगह है ऐतिहासिक, चित्रकूट के स्थलों का कहना ही क्या ? लिखिएगा।

इधर जो कुछ काम किया है, चौधरी साहब को होली तक भेजता हूँ। अच्छी किताब हो जायगी। एसप के फ़ेब्ल हिन्दी में लिख रहा हूँ। थोड़ा काम बाकी रह गया है। स्वास्थ्य बुरा नहीं। आप लोग प्रसन्न होंगे। तिवारी व्रजमोहन जी और मालवीय जी को नमस्कार। इति।

आपका

—सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma, M.A., Ph. D.
Sunder Bagh,
Lucknow.

[मालवीय जी—छंगालाल मालवीय, कान्यकुब्ज कालेज लखनऊ में हिन्दी अध्यापक, सुंदरबाग में इनके घर निराला अक्सर आते थे।]

१४८. गंगाप्रसाद मिश्र को

रायबहादुर पं० श्री नारायण जी चतुर्वेदी
एम०ए० (लन्दन)
दारागंज, इलाहाबाद
३.४.४३

प्रिय गंगाप्रसाद जी,

आपकी आलोचना मैंने देखी। वह तारीफ़ है, आलोचना भी बहुत अंशों में है, अगर अदोषदर्शन भी आलोचना की हद में आता है। आपकी आलोचना से मेरे कवि कलाकार को ख़ुशी हुई, इसमें संदेह नहीं; सम्भव है, यह उसकी दुर्बलता हो। आप जैसे नये खून-पानी के सच्चे विद्वान कलाकार से ऐसी ही आलोचना की आशा की जाती है।

इस समय श्री नन्द दुलारे जी वाजपेयी यहां आये हैं, सम्भव है मैं उनके साथ काशी जाऊँ। डा० रामविलास का पत्र आया था। प्रसन्न हैं। श्री चतुर्वेदी जी का

आशीर्वाद, वाजपेयी भगवती प्रसाद जी और अंचल जी का स्नेह लीजिए। आपकी चर्चा हुआ करती है। आशा है आप अन्य किसी पर जल्द कोई दूसरी आलोचना लिखेंगे। इति।

सस्नेह
आपका
—'निराला'

[पता]

Pdt. Ganga prasad Misra, M.A.
Teacher,
The Government High School,
Hardoi (U.P.)

[गंगाप्रसाद मिश्र की सूचना के अनुसार यह पत्र बनारस में पोस्ट किया गया था।]

१४६. रामविलास शर्मा को

[१६.४.४३]

प्रिय डाक्टर, नमस्कार।

आपका पत्र मिला था प्रयाग में। एक यहां भी मिला। सहृदय पद्य देखा। यहां आ सकें तो आयें। अच्छी तरह होंगे। चौबे जी + लल्लू जी को सप्रेम।

आपका
निराला
१६.४/४३

[निराला ने नंद दुलारे वाजपेयी के पत्र में ये पंक्तियाँ लिखी थीं। सहृदय पद्य—"वह सहज विलंबित मंथर गति जिसको निहार" पंक्ति से शुरू होने वाली कविता है। वाजपेयी जी का पत्र इस प्रकार है :

दुर्गाकुंड, बनारस
१६.४.४३

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। निराला जी को कविता दे दी है। इधर सुना 'विशाल भारत' में आपकी पुस्तक पर कोई कड़ी टिप्पणी प्रकाशित हुई है। मैंने अब तक देखा नहीं। इधर परीक्षाओं और परीक्षा-पत्रों में व्यस्त हूं। नागरी प्रचारिणी सभा में अंधेर-खाता चल रहा है। इसका भी पुनरुद्धार हो जाना चाहिए। २ मई को इनका वार्षिक अधिवेशन है। क्या आप उस समय २ दिन को आ सकते हैं ? आ जाएं तो बड़ा अच्छा रहे। लखनऊ के आपके जो मित्र सभा के सदस्य हों उनसे भी चर्चा कीजिएगा। संस्कार अत्यंत आवश्यक है। कानपुर और प्रयाग के भी कुछ लोग शायद आवें। मैं झा साहब को भी बुलाना चाहता हूं। आपका आना आवश्यक है। कुछ 'वोट्स' भी लखनऊ से आपके साथ आ सकते हैं। नियम है कि एक व्यक्ति तीन व्यक्तियों का proxy कर

सकता है। यदि आप आवें तो तुरत सूचना दें। निराला जी पर आपकी पुस्तक लिखी जा रही है, बड़ा ही अच्छा है। मैं जो कुछ संस्मरण हैं, अवश्य भेजूंगा। पत्र भी बहुत से होंगे।

विशेप आपके यहां आने पर, अथवा न आ सकने की हालत में, पत्र मिलने पर।

आपका
नन्ददुलारे वाजपेयी
१६.४.४३

१५०. रामविलास शर्मा को

मार्फ़त प्रोफ़ेसर नन्ददुलारे वाजपेयी
दुर्गाकुण्ड, काशी
११-५-४३

प्रिय डाक्टर, नमस्कार।

आपके पत्रादि समाचार मिले। मैं काम करने लायक़ हो गया हूं। प्रो० वाजपेयी का साथ प्रेरणादायक है। इधर एक रचना लम्वी भी लिखी—स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज, ५३६ पङ्क्तियों की। फ्री-वर्स में है। 'अणिमा' में जायगी। एक, पद्य में, इससे कुछ लम्वी, लिखने का सूत्रपात कर रहा हूँ। 'तुलसीदास' की तरह अलग पुस्तिकाकार छपेगी। 'अणिमा' के लिये कुछ और रचनाएँ दी हैं, कुछ और देने को हैं। ख़ासी किताव वन जायगी।

सम्मेलन के कवि-सम्मेलन में शिरकत करूंगा। १००) देने को लिखा था जवावी तार में उन्होंने; मैंने जवाव में लिखा ५००) फ़ीस है, ३५०) छोड़ता हूँ सम्मेलन के नाम पर। १५०) देने का तार आया है। मञ्जूर कर लिया।

मुमकिन, आपको ड्योढ़ा खर्च देकर वुलाया हो। खास अटकाव न हो तो चलिए। जानकीवल्लभ जी को भी लिखा है मैंने।

लल्लू प्रसन्न होंगे। कोई पत्र नहीं लिखते। आजकल क्या करते हैं?

राम स्वरूप जी को अवश्य कोई अच्छा स्थायी काम मिल गया होगा।

यहाँ दो रोज़ अच्छी वारिश हो गई। वायुमण्डल ठंढा हो गया।

आज एक किश्त फिर चौधरी साहव को भेज रहा हूँ रचनाओं की अणिमा के लिए। वड़ी देर हो गई अगर वन जाय। अभी देर होगी, पर तव क़ीमत एक रुपये से वढ़ानी पड़ेगी।

मुंशी अव किस क्लास में हैं? अवस्थी का हाल भी लिखिये। शिवप्रसाद क्या पढ़ते हैं? इति।

आपका,
निराला

[पता :]

Dr.

Ram bilas Sharma,

M.A. Ph.D.

Sundar Bagh

Lucknow

[मुंशी, अवस्थी मेरे छोटे भाइयों—रामशरण और रामशंकर—के घर के नाम शिवप्रसाद—रामप्रसाद यादव उर्फ लल्लू के छोटे भाई।]

१५१. रामविलास शर्मा को

C/o Prof. Nandadularay Bajpeyi,
Durga Kunda, Benares
17.5.43

प्रिय डाक्टर,

आपका पत्र मिला। आप हरद्वार नहीं चले अच्छा हुआ। मैं भी नहीं गया। वाजपेयी जी भी नहीं जा सके। वहाँ रावरंग विगड़ा है।

आपने यथार्थवाद की अच्छी बात लिखी। इसकी वृद्धि आवश्यक है। मैं आपके पास चीज कोई भेजूंगा।

वाजपेयी जी उत्तर पत्र देखने में पड़े थे। अव, सम्भव है, कुछ भेजें।

मैं अव शायद विहार जाऊँ। लौटकर कानपुर जाऊँगा। 'अणिमा' का आकार-प्रकार देखना है। कुछ और मैटर प्रेस [में] देना है। उसी समय आपसे वातचीत होगी।

अमृत लाल के साथ आप मजे में रहेंगे। मुझे भी उन्होंने बुलाया था। सोचता हूँ, वाहर पैर निकालूं जव मन का साहित्य तैयार कर लूं।

लोक युद्ध के सह-सम्पादक रमेश सिनहा जी ने पत्र लिख कर कुछ मांगा था। मैंने भेजने का उत्तर लिखा है। आप चाहें तो याद दिला दें।

P.W. की मुख्य वातें लिखिएगा, वड़े वड़े कौन-कौन आये, किनसे-किनसे मिले, सभा में क्या-क्या कहा उन्होंने।

कुशल है। वाजपेयी जी का आतिथ्य उच्चकोटि का।

यहाँ दो-तीन सभाओं में गया। अच्छा रहा।

आपका
—निराला

[पता]

Dr. Ram bilas Sharma, M.A. Ph.D.

C/o Pdt. Amrit Lal Nagar

Sera Villa,

Shivaji Park,

Cadell Road, P.O.

Dadar, **Bombay**

[यथार्थवाद की चर्चा "हंस" से संबंधित थी। "आपके पास कोई चीज़" भेजने का आशय है, "हंस" के लिये कोई रचना भेजेंगे। अमृतलाल नागर के साथ—अर्थात् बंबई में जहां के पते पर यह पत्र भेजा गया था। P.W.—उन दिनों बंबई में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक सम्मेलन हुआ था।]

१५२. गंगाप्रसाद पाण्डेय को

C/o Babu Rajendra Shanker Chaudr
[चौधरी]
Yuga Mandir, Unao.
4. 8. 43.

प्रिय पाण्डेय जी,

वहुत कुछ ऐसा ही मतलब था, मैंने देवी जी को नमस्कार सूचित नहीं किया। आप की किताव निकली, लिख रहे हैं; परम हर्ष की वात है। जोशी जी का आदर बढ़ा, यह होना ही था। आप अपनी औपन्यासिक चर्चा में उनके लिए अच्छी ही जगह वनाएंगे। मैं ऐसे ही एक कहानी में हाथ साफ कर रहा हूं। हिन्दी में अर्थाभाव है, कवियों की शिरकत लाज़िमी है। मैं कलकत्ता नहीं जा रहा। पन्त जी किसी के साथ रहें, चमकेंगे, मुझे ऐसी ही आशा है। कुशल है। आप अच्छी तरह होंगे। देवी जी और जोशी जी की नई चीजों से हिन्दी में अच्छी चर्चा रहेगी। आप भी आ पहुंचे हैं। अच्छा क्रम है। आप के वहां नहीं वरसता, यहां रोज़ वारिश हो रही है और दिल को खिला देने वाली ठन्ढक है। अच्छा मौसम है। सावन-वारहमासियां छा जाती हैं। अन्न की ऐसी महगी है और चीजों के दाम वढ़े हुए कि त्राहि त्राहि है। लोग तीन वक़्त में एक वक़्त पेट भर पाते हैं। इति।

आपका
—सूर्यकान्त त्रिपाठी
'निराला'

[पता]

श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जी पाण्डेय,
रिसर्च-स्कालर,
के० पी० होस्टेल,
प्रयाग-विश्वविद्यालय
Allahabad

१५३. केदारनाथ अग्रवाल को

युग-मन्दिर, उन्नाव
२. ६. ४३.

प्रिय केदार वाबू,

पत्र आपका मिला। समाचार ज्ञात हुए। अच्छा हो कि आप सम्मेलन का समय वढ़ा दें। गुलावी जाड़े का वक़्त अच्छा होगा। तव कुछ रुपया भी एकत्र हो जायगा।

मेरे लिए कुछ करने की क्या आवश्यकता है ? मैं तो परिषद् में हूं ही। अवश्य आऊंगा। आपको गाड़ी के खर्च की व्यवस्था करनी होगी। आजकल भीड़ बहुत होती है, दूसरे दरजे से कम में कवियों को कष्ट होगा। कविता-पाठ तो करूंगा नहीं, फिर भी गोष्ठी में मनोरञ्जन का कोई उपाय कर लूंगा। सम्मेलन में प्रबन्ध पढ़ूंगा। सभापति किसी दूसरे को बनाइए। आपके विषय विशद हैं, उन पर वाद विवाद होना निबन्ध आदि पढ़ना आवश्यक है। मेरे सभी मित्र हैं। आपको सबका परिचय मालूम है। प्रगतिशीलों की सङ्ख्या अच्छी होनी चाहिए। जनता उनकी आवाज़ सुन सके, ऐसा प्रबन्ध अवश्य किया जाना चाहिए।

वीरेश्वर जी सकुशल हैं, प्रसन्नता की बात है। उन्हें अभिवादन। रायसाहब और विशू बाबू को सप्रेम-विनय। आप लोग सामने हैं ही, और अच्छी तरह आ जाइए। राठोर साहब आज कल कहां हैं ? जब समय निश्चित हो जायगा, मुझे सूचित कर दीजिएगा; स्थानीय मित्रों को ले चलने का प्रयत्न करूंगा। अपने किसी नौजवान साहित्यिक को क्यों न सभापति बनायें ?

'अणिमा' डा० रामविलास को समर्पित है, बाज़ार में आ गई। गीतों का सङ्ग्रह है [।] 'चोटी की पकड़' छपने के लिए प्रेस जाने वाला है, उपन्यास। आपकी कितनी रचनाएं हुईं ? कोई सङ्ग्रह तो नहीं निकालिएगा।

आपका
—सूर्यकान्त त्रिपाठी

[पता]
Babu
Kedarnath Agrawal.
—B, A, LL. B.
advocate,
Banda

["चोटी की पकड़" किताब महल से प्रकाशित होनेवाला था। वहीं से केदारनाथ अग्रवाल का कविता-संग्रह भी छप सकता है, इस बात की ओर संकेत अंतिम वाक्य में है। यही बात खुलासा केदारनाथ अग्रवाल को लिखे हुए १३-२-४४ के पत्र में है। केदारनाथ उपन्यास लिखनेवाले थे या लिख रहे थे, उसके लिये निराला ने दूसरा प्रकाशक तलाश किया था। देखें, २३-२-४४ का पत्र।]

१५४. रामविलास शर्मा को

C/o B. P. Bajpayi
Dara Ganj, Alld.
2-12-43

प्रिय डा० रामविलास,

आपका पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। जिगर लिखते हैं, ठीक, मैं भी लिखूंगा। अभी आकाश ताका करता हूं। बरसात में चौधरी के यहाँ सुमित्रा के गाने

पुना करता था और एक उपन्यास लिखा करता था। २१ परिच्छेद लिख कर छोड़ दिया, मस्तिष्क और हृदय दुर्बल सा हो गया। खूब बन पड़ा है, दूसरे भी कहते हैं। मुझे भी जान पड़ता है। अभी इतना ही और लिखना है, तब पूरा होगा। अणिमा आपको मिली होगी। साधारण क्या बुरी है? गङ्गा प्रसाद मिश्र ने कवि सम्मेलन के लिये बुलाया है, सिर्फ़ १०१) देंगे। उनकी पुकार है [,] स्कूल देगा भी और क्या? मैं शायद ही पहुँच सकूं। काम भी है। 'हंस' आता नहीं। अभी यही पता है। हो सका तो आगरा आऊँगा, कुछ काम है।

आपका—निराला

[पता]

डा० रामविलास शर्मा
अंगरेज़ी विभाग
बलवन्त राजपूत कालेज
आगरा (Agra.)

[पत्र में निराला का पता मार्फ़त भगवती प्रसाद वाजपेयी है।]

१५५. गंगाप्रसाद मिश्र को

C/o Pdt. Bhagwati Pd. Bajpayi
Daraganj, Allahabad
2.12.43

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। मैं स्कूल के लड़कों को क्या सुनाऊँगा? आप लोगों का स्नेह खींचता है। परन्तु सिद्धान्त से विवश हूं। काम कर रहा हूं। इसमें सन्देह नहीं कि स्कूल १०१) भी प्रायः नहीं दे सकता। कभी आपके उधर जाना हुआ तो निःशुल्क सुनाऊँगा। आप प्रसन्न होंगे। अगर मेरे जाने से आपका व्यक्तिगत श्रेष्ठत्व बढ़ता हो तो रुपये भेज दीजिए। इस तरह मुझे सप्रसार [?] न समझें। इति।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी
'निराला'

[इस संदर्भ में गंगाप्रसाद मिश्र की यह सूचना है :

इसके पश्चात् मैंने १०१) रुपये भेजे पर निराला जी न आए, यद्यपि बीच में समय और तिथि का विस्मरण हो जाने से उन्होंने जवाबी तार देकर मुझसे समय पूछा था, जिससे मुझे पूर्ण निश्चय हो गया था कि वे अवश्य आयेंगे। न आने के कारण इलाहाबाद का ही कोई कवि सम्मेलन सम्भवतः था। मैं आपके साथ जब गया था तब उन्होंने रुपये वापिस कर देने को कहा था पर मैंने कहा कि मैं तो रुपये नहीं चाहता, आपको हरदोई में चाहता हूं। उस समय उन्होंने आने का वायदा किया था पर फिर नहीं ही आये। एक अन्य कवि सम्मेलन का आयोजन मैंने हरदोई में किया था। उसमें सुभद्राकुमारी चौहान प्रयाग होकर हरदोई आई थीं। उनके साथ मेरे रु० उन्होंने भेज दिये थे।

१३-४-४५]

१५६. रामप्रसाद उर्फ़ "लल्लू" को

Daraganj, Allahabad
27. 12. 43

प्रिय लल्लू जी,

डा० रामबिलास बड़े दिनों में वहां आयें तो कहिएगा, वे दारागंज में हमसे मिलें। हमने किराये का मकान ले लिया है। यहां रहेंगे। रोज़ गङ्गा नहाते हैं। नाव पर सैर करते हैं। स्वास्थ्य अच्छा है। खेतों की हरियाली, गङ्गा के रेत की सफ़ेदी और पानी की नीलाई पर नज़र दौड़ाते रहते हैं। कुछ लिखते-पढ़ते भी हैं। उनके लायक अब कुछ लिखेंगे। चौबे जी और मुन्शी, अवस्थी को स्नेह। शिवप्रसाद को स्नेह। बड़े दिनों में कहीं निकलने का विचार नहीं। आजकल इलाहाबाद के अमरूदों की बहार है। हमारी कौन कौन सी पत्रिका अब भी वहां जाती है, लिखना।

सस्नेह निराला

[पता:]

Babu
Ram prasad ji "Lalloo"
Maqbool Ganj,
Lucknow

१५७. केदारनाथ अग्रवाल को

दारागंज, प्रयाग
१३. २-४४

प्रिय केदार बाबू,

आपका पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। श्रीनिवास जी अग्रवाल आपकी किताब छापेंगे। दो महीने का अरसा है। तीसरी किताब आपकी होगी। एक और प्रकाशक हैं। वह भी छापने वाले हैं। अपना उपन्यास और कविता-संग्रह दोनों को दे दीजिए। समय निकाल कर एक दफ़ा चले आइये और दोनों से बातचीत कर जाइए— अपनी शर्तें निश्चित कर लीजिए। खत के ज़रिए बातचीत करना चाहें तो अंचल जी को लिखिए, वह सही जवाब देंगे, रास्ता भी साफ कर देंगे। दूसरे प्रकाशक से हुई बातचीत के दिन वह थे, वाजपेयी भगवती प्रसाद जी भी थे।

आप लोग सकुशल होंगे। वीरेश्वर जी को नमस्कार। क्या कर रहे हैं? घर में कुशल तो है ? उनकी चीज़ें कहां हैं, क्या क्या हैं, लिखने की कृपा कीजिए। अदालती दुनिया से विरले ही लेखक लिखने का समय निकाल पाते हैं।

हरिश्चन्द्र जी का क्या हाल है ? राय साहब तो फिरन्ट जान पड़ते हैं। विश्वा बाबू को सप्रेम।

आपके मित्र बहुत मिलते हैं यानी आज के लोग। आपका विज्ञापन मैंने काफी

कर दिया है, आगे आप के भाग। इति। आपके चाचा साहब को नमस्कार और जितने सज्जन हैं, सबको।

सस्नेह

"निराला"

१५८. रामलाल गर्ग को

दारागंज, इलाहाबाद

१६-२-४४.

प्रिय गर्ग जी,

आपका पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। बहू की तन्दुरुस्ती, बात के कारण, गिरी हुई है, दर्द होता है, यह चिन्ता का विषय है। कुछ अच्छी तरह पीड़ाओं का बयान लिखकर भेजिए। दवा भेज दूं। रुपए २५) से ५०) तक एक महीने के अन्दर कर्वी के पते पर कामता की मारफ़त भेजेंगे, चलकर ले लेना। हम प्रसन्न हैं। थोड़ा थोड़ा काम करते हैं। किताबें छप रहीं हैं। जब तक निकल नहीं जातीं, इलाहाबाद से बाहर निकल नहीं सकते। बड़ा उत्तरदायित्व है। अपनी आध्यात्मिकता न लिखा कीजिए। भगवान को [की] भक्ति करने से वे रास्ता निकाल देते हैं। हमारी उलझनें अब और बढ़ी है। अकेले इस किराये के मकान में दिन बिताते रहते हैं। गङ्गा नहाते हैं और लिखते पढ़ते हैं। किसी मित्र के यहाँ भोजन कर आते हैं। खत-किताबत कम कर दी है। साहित्यिक बखेड़े छोड़ दिये हैं। काम लेकिन अच्छा हो रहा है। बांदा के २६ जनवरी वाले कविसम्मेलन में हम नहीं गये। राम सहाय प्रसन्न होंगे। बँकलवा, पहलवान आदि को स्नेह कहिएगा। बच्चों को आशिर्वाद। माया पढ़ती है, अच्छा है। शेखर को भी साधारण रूप से हिन्दी पढ़ा दीजिए। देवीप्रसाद जी को स्नेह। इति।

सस्नेह

—सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

[पता]

Pandit
Ram Lal ji Garga
C/o Sri Kamtanath Garga,
VII Class
The Chitrakoota M. E. School
Via Karwi G. I. P.
(Banda)

१५९. केदारनाथ अग्रवाल को

दारागंज, इलाहाबाद
२३. २. ४४

प्रिय अग्रवाल जी,

आपके पत्र का उत्तर लिख चुके हैं। मिला होगा। आपने 'अञ्चल' जी को लिखा होगा। हमारे पास वाली आपकी किताब दो महीने बाद, छपेगी। कुशल है। वहां के क्या हालचाल हैं। एक रोज़ श्रीपति के छोटे भाई मिले थे। आपकी बातचीत करते थे। अपने काम से लगे हैं। हमारी किताबें छप रही हैं। रामविलास जी के समाचार नहीं मिले। सुना, इधर आगरे में कोई कवि-सम्मेलन था। इति।

आपका
—सूर्यकान्त त्रिपाठी

[पता]

Shreejut
Babu Kedarnath Agrawalji
Advocate,
The Civil Lines,
Banda G. I. P. Ry

१६०. रामलाल गर्ग को

मार्फ़त राय बहादुर पं० श्री नारायण
चतुर्वेदी, एम्० ए०
दारागंज, इलाहाबाद
[फर्वरी १९४४]

प्रिय रामलाल जी,

आपका पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। आपको बहुत बड़ी मानसिक अशान्ति मिली होगी। पर धैर्य से काम लें। आपका खयाल अच्छा है।

मैंने रामसहाय से वसन्त पंचमी तक भरकोरी आने के लिये कहा था, पर नहीं आ सका। कुछ उलझन है।

आपकी खेती कैसी है, और गाय कब तक बियायगी, सूचित कीजिएगा।

और जो आवश्यक नये समाचार हों, उनसे भी परिचित कराइये।

रामसहाय का पत्र समझ में नहीं आया।

आप लोगों की याद आती है। माया, छाया, काया, कामता, शेखर आदि को स्नेह। इति।

गौतम और मुखिया आदि को स्नेह। देवी प्रसाद को अन्तरङ्गता।

सस्नेह
सुर्यकान्त
त्रिपाठी
निराला

पुन:

आपकी चोरी का पता नहीं लगा, उल्टा ही नज्जारा रहा। आपकी पत्नी और भयहू का स्वास्थ्य अच्छा होगा। आप लोग प्रसन्न हैं, यही चाहिये; आपके स्वास्थ्य का जल्द सुधार हो जायगा। आपको मेरे कारण वड़ा कष्ट उठाना पड़ा। वड़े खेद की वात है। अच्छा होगा अगर मेरी कितावें आप यहाँ दे जायं या रामसहाय के हाथ भेज दें। आपकी व्यथा सचमुच हृदय द्राविनी है। कव तक आ सकेंगे, सूचित करें। मैं जहाँ रहता हूँ, यहाँ आपकी सुविधा न होगी, मुझे दूसरी जगह प्रवन्ध करना पड़ेगा। आपकी नौकरी का उत्तर नहीं मिला। इति।

आपका
निराला

चिन्ता न करें, समय मिला तो हम ही चले आएंगे। और उलझन कैसी है, लिखें।

१६१. रामविलास शर्मा को

दारागंज,
इलाहाबाद,
१४-६-४४.

प्रिय डाक्टर,

अच्छे होंगे। समाचार नहीं। कल 'तार सप्तक' संग्रह मिला। अच्छा निकला है। फिर आलोचना लिखूंगा। अभी वहुत गरमी है। विशेष लिखा नहीं। अज्ञेय का पता नहीं मालूम। हालांकि तार सप्तक उन्हीं का भेजा हुआ है। सिर्फ़ शिलङ्ग लिखा है। इन रचनाओं का रूप मेरी दृष्टि में निखर रहा है। इति।

चौवे, मुंशी, अवस्थी और लल्लू, शिवप्रसाद को नमस्कार। मैं तो दरकिनार हूं। आप लोग मौज में होंगे।

—निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma, M. A. Ph. D.
C/o Mr. Chaube
Ram Swarup Sharma, M. A.
Sunder Bagh, Lucknow.

१६२. रामविलास शर्मा को

Daraganj, Allahabad
13. 8. 44

प्रिय डाक्टर साहब,

आपका पत्र मिला। आप लोग जो कुछ करेंगे, वह अच्छाई के खयाल से। भविष्य में क्या होगा यह सोचने की शक्ति नौजवानों में अधिक है। जापानियों का डर अब उतना नहीं रहा। 'जो तिन कियो सरासन धारन, कपि पखान ढोये किहि कारन'—महाभारत, सबल सिंह—"अर्जुन-हनुमान-सम्वाद"। इसी सिलसिले का कर्णपर्व में—"सर सों सागर बांधि कै जिन जीत्यो हनुमान।" यह सब पढ़कर मुझे जान पड़ता है देश में महान परिवर्तन अपेक्षित है। आप लोग अपने यहां का भी देख चुके हैं। मैं सब कुछ चाहता हूं [;] जितना स्वाधीनता दैशिक के लिए आवश्यक है और स्वाधीनता सार्वभौमिक के लिए।

आपकी बातें मैंने नागर जी से कीं। वह प्रसन्न हैं। आप सकुशल होंगे। इधर कुछ कविताएं लिखी हैं। देशदूत में मेरी कजलियां देखी होंगी। स्वामी विवेकानन्द जी की 'Kali the mother' और 'To the fourth of July' हिन्दी में अनुवादित कर रहा हूं। इति।

आपका
निराला

[पता:]

Prof.
Dr. Rambilas Sharma.
Eng. Deptt.
Balwant Rajput College,
Agra
(नागर जी—नरोत्तम नागर)

१६३. रामविलास शर्मा को

Daraganj, Allahabad
7. 11. 44

प्रिय डाक्टर साहब,

क्या हाल है? जब से गये, पहुंच की सूचना न दी। यहां कुशल है। विषवृक्ष का अनुवाद चल रहा है। शक्ति कई कारणों से पहली जैसी नहीं रही। आशा है, टूटा स्वास्थ्य अच्छे भोजन से जल्द उपलब्ध हो जायगा। कुछ कसरत भी करने का विचार है। इति।

भवदीय—"निराला"

[पता]

Dr. Ram bilas Sharma, M. A., Ph. D.
The English Deptt.
Rajput Jaswant College
Agra

[वलवन्त राजपूत कालेज निराला को यहां राजपूत जसवन्त कालेज के रूप में याद रहा।]

१६४. रामविलास शर्मा को

दारागंज, इलाहावाद
१९-११-४४.

प्रिय डाक्टर साहव,

आपका पत्र मिला। सामयिक समाचार मालूम हुए। गृह-धर्म स्वीकार करने के वाद तल्लीनता आवश्यक है, उसके संचालन के लिये सब लोग प्रसन्न हैं पढ़ कर खुशी हुई। नागर का पत्र मेरे पास नहीं आता। काम आज कल अच्छा कर रहा हूँ। ग़ज़लों के अलावा नये गीत लिख रहा हूँ। काफ़ी लिख चुका हूँ। प्रायः सभी पत्रों को भेज चुका हूँ जिनमें छपते हैं। यही संग्रह पहले निकलेगा [,] फिर ग़ज़लों वाला। ढर्रा पुराना है। कहीं कुछ देहाती लता भी है मगर निखरी। खाना खुद पकाता हूँ, चौका-वरतन खु द करता हूँ। कल आप के पत्र के साथ हंस भी मिला। पन्त जी के गुजरने की ग़लत खवर ने गजव ढा दिया; फिर दूसरे रोज़ निराकरण हुआ। ईश्वर की इच्छा से अच्छे हो रहे हैं। अनुवाद का काम भी चलता जा रहा है। 'चोटी की पकड़' वहुत दिन पड़ी रही। अव पूरी करने वाला हूं। चौधरी खत का जवाव नहीं देते। कुछ गीत भेजता हूँ। रूस की क्रान्ति पर मैंने अभी नहीं लिखा। अभी राग-रागिनी के छन्दों की छानवीन में हूँ। यह काम वड़े पैराये में करने का विचार है। इति।

आपका
—"निराला"

१

आये पलक पर प्राण कि वन्दनवार वने तुम।
उमड़े हो कण्ठ के गान, गले के हार वने तुम।
देह की माया की जोत, जीभ की सीप के मोती,
छन-छन और उदोत, वसंत वहार वने तुम।
दुपहर की घनी छांह, घनी एक मेरे वानिक,
हाथ की पकड़ी वांह, सुरों के तार वने तुम।
भीख के दिन दूने दान, कमल-जल की कान के,
मेरे जिये के मान, हिये के प्यार बने तुम।

२

बातें चली सारी रात तुम्हारी।
आंखें नहीं खुलीं प्रात तुम्हारी।
पुरवाई के झोंके लगे हैं,
जादू के जीवन में आ जगे हैं,
पारस पास कि राग रंगे हैं,
कांपी सुकोमल गात तुम्हारी।
अनजाने जग को बढ़ने की,
अनपढ़ पड़े पाठ पढ़ने की
जगी सुरति चोटी चढ़ने की,
यौवन की बरसात तुम्हारी।

३

साथ न होना।
गाँठ खुलेगी, छूटेगा उर का सोना।
आँख पर चढ़े
कि लड़े, फिर लड़े,
जीवन के हुए और कोस कड़े;
प्राणों से हुआ हाथ धोना।
गाँठ पड़ेगी,
बरछी की तरह गड़ेगी,
मुरझा कर कली झड़ेगी;
पाना ही होगा खोना।
हाथ बचा जा,
फटने से माथ बचा जा,
अपने को सदा लचा जा;
सोच न कर मिला अगर कोना।

४

शुभ्र आनन्द आकाश पर छा गया,
रवि गा गया किरण गीत;
श्वेत शत दल कमल के अमल खुल गये,
विहगकुलकण्ठ उपवीत।
चरण की ध्वनि सुनी सहज शङ्का गुनी
छिप गये जन्तु भयभीत;
बालुका की चुनी पुरलगी सुरधुनी;
हो गये नहा कर प्रीत।

किरण की मालिका पड़ी तनु पालिका,
समीरण वह चला क्रीत :
कण्ठ रत पाठ में, हाट में बाट में
खुल गया ग्रीष्म या शीत।

५

रूप की धारा के उस पार
कभी धंसने भी दोगे मुझे ?
विश्व की श्यामल स्नेह संवार
हंसी हंसने भी दोगे मुझे ?
निखिल के कान बसे जो गान,
टूटते हैं जिस ध्वनि से ध्यान,
देह की वीणा का वह मान,
कभी कसने भी दोगे मुझे ?

शत्रुता से विश्व है उदास;
करों के दल की छांह, सुवास
कली का मधु जैसा, निस्वास
कभी फंसने भी दोगे मुझे ?
वैर यह ! बाधाओं से अन्ध।
प्रगति में दुर्गति का प्रतिबन्ध !
मधुर उर से उर जैसे गन्ध
कभी बसने भी दोगे मुझे ?

६

नाथ, तुमने गहा हाथ, वीणा बजी।
विश्व यह हो गया साथ, द्विविधा लजी।
खुल गये डाल के फूल, रंग गये मुख
विहग के, धूल मग की हुई विमल सुख,
शरण में मरण का मिट गया महादुख,
मिला आनन्द पथ पाथ, संसृति सजी।
जल भरे जलद जैसे गगन में चले,
अनिल अनुकूल होकर लगी है गले,
नमित जैसे पनस-आम-जामुन फले,
भक्ति के सुने गुण गाथ, माया तजी।
मिट गया मोह, स्वर हुआ था जहां जड़,
सहज सारल्य के लिये छोडी अकड़,

सत्य की भूमि की हो गई नित्य अड़,
पदों पर नत हुआ माथ, काया मजी।

७

वीन की झङ्कार कैसी बस गयी मन में हमारे।
धुल गईं आँखें जगत की खुग गये रवि चन्द्र तारे।
शरत के पङ्कज सरोवर के हृदय के भाव जैसे
खिल गये हैं पङ्क से उठकर विमल विश्राव जैसे,
गन्धस्वर पीकर दिगन्तों से भ्रमर उन्मद पधारे।
पवन के उर में भरा कम्पन प्रणय का मन्द गतिक्रम
कर रहा है समम जग की सुप्ति से जो हुआ निर्मम।
हार कर जन सकल जीते, जीत कर जनसकल हारे।
भर गई विज्ञान माया, कर गई आलोक छाया,
छूट गई मिल कर हृदय धन से प्रिया की प्रकृत काया,
दिग्वधू ने दन्तियों के मलिनता मद यथा झारे।

[पता:]

डाक्टर श्री रामविलास शर्मा, एम्०ए०
पी एच्०डी०

स्वदेशी वीमा नगर,
आगरा, Agra

[नागर—अमृतलाल नागर।]

१६५. रामविलास शर्मा को

Daragunj
Allahabad
8.12.44

Sri Ram Krishna.

डाक्टर साहब

पत्र मिला। सङ्गतो जायते कामः वाला भाव ही है। निवृत्ति का विषय भी है। मैं इन दिनों अस्वस्थ रहा। काम बन्द रखना पड़ा। विषवृक्ष के १००/१२५ पृष्ठ अनुवाद किया है। गीतों का सङग्रह भी साथ तैयार . रहा हूँ। समाजवाद की भूमि पर आपकी प्रशंसा हो रही है। पढ़ कर हर्ष होता है आजकल क्या लिख रहे हैं? आपके साथ आपके भाई भी हैं कोई? वड़े .नों में कहाँ रहिएगा? उधर आपके घनिष्ठ मित्रों में कौन कौन हैं? आप तो पन्त जी को देखने गये होंगे? बड़ी बीमारी

पाई। आजकल रेडियो जाना छोड़ दिया होगा, इसलिए दिल्ली न गये होंगे। आपको जलवायु कहाँ का अच्छा लगता है? आगरे का या लखनऊ का?

आपका
निराला

[पता:]
डा० रामविलास शर्मा एम.ए.
पी.एच-डी.
स्वदेशी वीमा नगर
आगरा
Agra.

[यह कार्ड किसी बंगाली संन्यासी को लिखने जा रहे थे: "पूज्यपद महाराज"— बंगला में लिखा हुआ—काट दिया था। संगतो जायते कामः आदि बातें १६-११-४४ के पत्र में उद्धृत कविताओं के संदर्भ में है। इन पर मैंने जो भी उन्हें लिखा हो, पत्र विलंब से ६-१२-४४ को भेजा था, जिसका उत्तर उन्होंने तुरत ८-१२-४४ को दिया।]

१६६. रामविलास शर्मा को

दारागंज, इलाहाबाद
३०-१२-४४

प्रिय डाक्टर साहब,

देर हुई। जवाव में सूचन है कि पहले के कहे अनुसार मेरा छुटकारा मकर सङ्क्रान्ति के पश्चात् हो सकता है। शीघ्र न होने पर भी काम में अब मैं मन्द नहीं। खर्च चल जाता है। तब तक एक सांस स्वस्ति की भरने लगूंगा। फिर नये काम की सोचूंगा। जन प्रकाशन गृह को कोई या कई अच्छी कितावें दे सकूंगा। उनकी खत कितावत भेजिए। क्या समझौते होंगे? कितने सौ तक पेशगी दे पायेंगे? कितनी जल्दी एडीशन खत्म कर सकते हैं हजार का? बाजार हाथ होगा या आ जायगा। प्रसन्न हूं। इति।

आपका
निराला

आगरा माघ के अन्त या फागुन के मध्य में आयेंगे। बड़े दिन का अभिवादन। नि०

कितावों में हमारी जीवन स्मृतियां भी हैं . बड़ा महत्त्व रख सकती हैं। नि०

[पता]
डा० रामविलास शर्मा
स्वदेशी वीमा नगर
आगरा
Agra

१६७ रामविलास शर्मा को

दारागञ्ज, इलाहाबाद
१६-२-४५

प्रिय डाक्टर साहब,

पत्र मिला। समाचार अवगत हुए। टिप्पणी हंस वाली देखी। कुवँर चन्द्र-प्रकाश की योजना (अभिनन्दन वाली) ज्ञात हुई। देश और विश्व की स्थिति बुरी है। अभिनन्दन शोभा नहीं देता। अभी पन्द्रह बीस साल तक यह अवधि बढ़ाई जा सकती है। यदि मेरा अन्त हो गया तो साहित्य में अभिनन्दनीय व्यक्ति का टोटा नहीं रहेगा।

मेरे पत्र बहुत साधारण हैं, मेरे साहित्य में साधारणतया लिखे भी मैंने इने-गिने आदमियों को हैं। उनमें साधारण जन भी हैं। अधिकांश जनों को आप जानते हैं। सबने सङ्कलन कर रखा है, निश्चय नहीं।

पुस्तकों की राइट् के बारे में मिलने पर कहूँगा। छुड़ा कर वह राइट् जाति को ही दी जा सकती है।

मैं लिखने-पढ़ने में रहता हूँ। अभी छुटकारा नहीं हुआ। तीन चार महीने में निकली किताबों से नतीजा मालूम हो जायगा। कुकुरमुत्ते को फिर से संवरा [संवारा] है। छप रहा है। अब की अकेला है। उर्दू में भी छपेगा। बाक़ी रचनाएं और कुछ इधर की मिला कर, छोटा पड़ा तो कुकुरमुत्ता भी रखकर दूसरा सङ्ग्रह 'नये पत्ते' के नाम से निकल [निकाल] रहा हूँ। इसका भी फ़ारसी अक्षरों में मुद्रण होगा। 'वेला' एक पुस्तिका इधर के गीतों की निकाल रहा हूँ। कुल मैटर 'नये पत्ते' को छोड़ कर हिन्दी के लिये जा चुका [।] 'विषवृक्ष' का अनुवाद प्रायः समाप्त है। 'चोटी की पकड़' पूरी करने के लिये लिखना शुरू करने वाला हूँ। 'सखी', 'प्रभावती' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' के भी दूसरे संस्करण की तैयारी हो चुकी। इन्हीं उलझनों में हूं। जाड़ा भी अभी नहीं घटा। चैत दो हैं। एक तक फ़ारिग़ हो जाऊंगा। 'साहित्यकार-संसद्' महा-देवी जी वाली मेरी चुनी, अब तक की कविताओं में श्रेष्ठ रचनाओं, का सङ्ग्रह निकाल रही है 'अपरा' नाम से : काग़ज़ सिर्फ़ २५० पृष्ठों की किताब का मिला है। सङ्ग्रह मैंने प्रायः आधा लिख दिया है, आधे में निशान लगा दिये हैं : देवी जी अपनी छात्राओं से नक़ल करा लेंगी। तब तक कुछ किताबें निकल जायंगी। आपको आंखों का सुख मिलेगा। एक सङ्ग्रह महा० पन्त० निरा० के १०० गीतों का कर रहा हूँ : वहीं से निकलेगा। प्रसन्न हूं। अकेला बैठा झरोखों से आकाश देखा करता हूँ।

आपका
निराला

[पता :]

डा० रामविलास शर्मा, एम०ए० पी० एच्० डी०
स्वदेशी बीमा नगर,
आगरा **Agra**

[निराला ने अंतिम वाक्य यों पूरा किया था—"जव थक जाता हूँ सोचते सोचते या काम करते करते तव"; इसे काट दिया और विराम "हूँ" के वाद लगाया।]

१६८. शिवमंगल सिंह 'सुमन' को

दारागंज,
इलाहावाद
१६.३.४५

प्रियवर,

आपका स्नेह। मैं सकुशल लखनऊ होता हुआ यहां आया। किताबें छप रही हैं। कुछ कम एक दरजन हैं। मुमकिन, दरजन पूरा हो जाय।

गरमियों में कहां रहने का विचार है? महीने भर बाद बाहर निकलने का इरादा है।

आप लोगों के कवि सम्मेलन और १५१) की खबर मैंने 'भारत' में ठाट से छपा दी। आप लोगों के नाम हैं। मिलिन्द जी का हाल लिखिएगा। शान्ति जी को नमस्कार। वच्चों को स्नेह।

आपका
निराला

[पता :]
Prof. Shiva Mangal Singh, M. A.
Sumanji,
The New Colony, Gwalior
(G. I. P.)
Gwalior State

[शान्ति जी—कवि सुमन की साध्वी पत्नी।]

१६९. रामविलास शर्मा को

दारागंज,
इलाहाबाद,
१९-३-४५.

प्रियवर,

सकुशल लखनऊ होता हुआ यहाँ आया। ग्वालियर में अच्छा प्रदर्शन हुआ। किताबें छप रही हैं। शायद महीना पूरा यानी तीस दिन लगेंगे। कोंच में कवि सम्मेलन है। बुलाया है। रुपये देंगे तो जाऊँगा।

लखनऊ में १२ घन्टे ठंहरा। चौबे, मुन्शी, अवस्थी, शिवप्रसाद, लल्लू, गंगा प्रसाद मिश्र आदि मिले। प्रसन्न हैं।

आपको रुपये महीने के अन्त में भेजूंगा। इति।

आपका
निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma, M.A., Ph.D,
Swadeshi Bima Nagar,
Agra.

१७०. कुंवर सुरेश सिंह को

दारागंज, इलाहाबाद
२८-३-४५

प्रिय कुंवर साहब, नमस्कार

पत्र मिला। बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई। बड़े पेंच में था। इधर की निकली रचनाएँ आप देखते होंगे। साधारण हैं। उनका संग्रह छप रहा है। नई पुरानी ८-१० किताबें निकल रही हैं। दो महीने में कुल बाजार में आ जायेंगी। (१) बेला (गीत संग्रह) (२) नये पत्ते (आधुनिक कविता संग्रह नया) (३) चोटी की पकड़ (नया उपन्यास) (४) विष वृक्ष (अनुवाद) ये नये हैं।

कुकुरमुत्ता, बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार, प्रभावती, इनका दूसरा संस्करण हो रहा है। साहित्यकार संसद 'अपरा' नाम से मेरा एक संग्रह २५० पृष्ठों का निकाल रही है। बाकी कुशता [कुशल] है।

मैंने देहली में पन्त जी को दो दिन देखा था। बुखार आ गया था। होली में स्नान भोजन करके बाहर बैठे थे। प्रकाश जी प्रसन्न होंगी।

आपका—निराला

१७१. रामविलास शर्मा को

Daragunj.
Allahabad.
31.3.45

प्रिय डाक्टर,

आपका पत्र मिला। गरमियों में क्या यहाँ गङ्गा नहाने का आनन्द लेने आयेंगे ? इस साल मेरा अन्यत्र जाना न होगा। मेरी भतीजी की शादी है। यहाँ कुछ और बातें ज्ञात होंगी। कुशल है। शिवपूजन जी का कोई पत्र नहीं आया। महादेवी जी प्रसन्न हैं। 'अपरा' छप रही है। गीतों वाला संग्रह जल्द दे रहा हूँ। फिर स्वरलिपि भी करानी है। रामकृष्ण करेंगे। किताब महल से अनबन हो गई। इसलिये रुपये नहीं भेजे। इम्तहान हो जाने पर एक दफ़े आ जाइये। स्थिति मालूम हो जायगी। अब कुछ कहानियाँ लिखने का विचार है। आज से शुरू करूँगा। इति।

आपका
निराला

[पता]

Dr.
Rambilas Sharma,
M. A. Ph. D.
Swadeshi Bima Nagar,
Agra

१७२. नलिन विलोचन शर्मा को

दारागंज, इलाहाबाद
२.४.४५

प्रिय श्री नलिन विलोचन जी,

पत्र मिला। कवि सम्मेलन में इसलिए नहीं जाता कि उसकी फ़ीस हज़ारों कर रखी है मैंने, ताकि लोग न आयें, मगर दो तीन सौ से पांच सौ तक देने वाले आ जाते हैं। मैं प्राय: नहीं जाता। खास बात हुई तो गया। आपका कालिज साधारण है, शहर भी साधारण। मेरी माग पूरी करके ले जाने में असमर्थता होगी। आपकी मैत्री अमूल्य है, इस नाते रुपयों वाला हिसाब छोड़ना बाधक नहीं, फिर भी एक काफी लम्बे खर्च का हिसाब होगा। यह रुपया मनी आर्डर द्वारा, तारीख लिखकर भेज दीजिए। आपका पत्र खो गया है। यह पत्र अन्दाज़न भेजता हूं। प्रसन्न हूं।

आपका
निराला

१७३. केदारनाथ अग्रवाल को

दारागंज, इलाहाबाद
२-४-४५

प्रिय केदार,

आपके पत्रों का उचित उत्तर आप स्वयं हैं। इसलिए नहीं लिख सका। यहां था भी नहीं। आज तक उस संग्रह का संवाद न मिला। वह आपके मामा या रिश्तेदार के यहां है या कहां है।

अब मेरी फ़ीस खुल चुकी हैं। सबको मालूम हो चुका है। आगे पीछे आपका शहर मेरा अधिवेशन फीस देकर करा सकता है। आपके मित्र अवश्य बाधक नहीं होंगे। चेयर मैं रखता ही हूं। चीजें जो अच्छी हैं, वे फ़ीस मिलने पर ही सुनाई जा सकती हैं। ठाकुर साहब सानन्द होंगे। इति।

आपका
निराला

[ठाकुर साहब—वीरेश्वर सिंह।]

१७४. केदारनाथ अग्रवाल को

दारागंज, इलाहाबाद
७. ४. ४५

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। निबन्ध कहां पढ़े जायंगे ? आप अधिक से अधिक कितना रुपया पाँच निबन्धों के लिए दिला सकते हैं अग्रिम ? आखिर तक कितना ? यानी, कुल कितना होगा।

आजकल विज्ञापित कवि सम्मेलन रेडियो विरोधी कवियों के किये जा रहे हैं। आप एक कराइये और जल्द सूचना दीजिए। इस तरह जनता में जागृति फैलेगी। मेरी फ़ीस वहां जो मेरी उसकी कई गुनी अधिक है। पूरी नहीं दे पाइएगा तो चौथाई तो दे ही सकते हैं।

बाकी कुशल है। आपके साले आपकी तरह समझदार नहीं। मुमकिन आपके दोस्तों के जादू से प्रकाशक भी अन्धे हो रहे हों।

ठाकुर साहब को सलाम।

आपका
निराला

१७५. शिवमंगलसिंह 'सुमन' को

Dalmau, Rae Bareli
23.4.45

प्रिय सुमन,

याद नहीं, तुम्हारे पत्र के उत्तर का उत्तर आया, तो लिखा भी मैंने या नहीं। गर्मियों में इस साल मुझको शायद ही फ़ुर्सत मिले। मेरी भतीजी का ब्याह होने वाला है। पहाड़ या तुम लोगों के यहां की यात्रा स्थगित रहेगी। छुट्टियां हो चुकी होंगी। शायद तुम गांव नहीं आने वाले। अवश्य प्रसन्न होंगे। इधर मैं आरा और पटना गया था। अच्छा रहा। कालिज की बैठकें थीं। लड़के खुश थे। डा० रामविलास के इधर के समाचार नहीं मिले। कुछ ठहर कर इलाहाबाद, दारागंज, पत्र देना। शान्ति जी को नमस्कार। लड़कों को स्नेह। इति।

सस्नेह
निराला

१७६. रामविलास शर्मा को

Yugmandir, Unao, U.P.
5.5.45

श्री:

प्रिय डाक्टर,

आपका पत्र अगर इधर कोई गया तो मेरे यहाँ चले आने के कारण नहीं मिल सका, वहीं होगा। मैं घरेलू कामों से लखनऊ और डलमऊ रहा। मेरे बाग़ की प्राथमिक डिक्री मेरे खिलाफ़ हो चुकी है। इस समय वह पूरा बाग़ चार-पाँच हज़ार रुपये क़ीमत का होगा। रुपया मैंने एकत्र कर लिया है। श्री रामकृष्ण के नाम बेंक में जमा कर दिया है। क़र्ज वाली डिक्री का रुपया चुका दिया जायगा। मुकद्द[मे] में मैं हाज़िर नहीं हुआ। पैत्रिक सम्पत्ति रामकृष्ण के नाम कर देना चाहत [चाहता] हूँ, जो कुछ है। मेरी आयरशिप (authorship) वाली किताबें भी उनकी होंगी। पारिवारिक हिसाब फिर जैसा होगा। आपको सूचित किया। प्रसन्न होंगे। कुशल है। यहाँ शिवशेखर, रामकृष्ण हैं, चौधरी भी।

आपका
निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma
Swadeshi Bima Nagar.
Agra.

[पहले लिखा था—"चाहते हैं"; फिर काटकर "चाहता हूँ" कर दिया। 'त' के बाद मात्रा लगाना भूल गये।]

१७७. कुंवर सुरेशसिंह को

Daraganj Allahabad.
11. 5. 45

प्रियवर

पत्र मिला। इधर आपके यहाँ वहाँ आने का इरादा था। आपके एक शिक्षक से मालूम हुआ, आप कहीं गये हैं। जैन कालिज आरा और बी० एन० कालिज पटना गया था। अच्छा रहा। लखनऊ और दलमऊ भी हो आया। मेरे खिलाफ एक डिकरी हुई है। मुकदमे में मैं हाज़िर नहीं हुआ। कुछ रुपया लड़की की बीमारी के समय लिया था एक बाग रेहन रखकर। रुपया देने के इन्तजाम में उन्नाव गया था। बाग अच्छा है। थोडे दामों में नीलाम हो जायगा जैसे ४००) में ३०००) की सम्पत्ति। पैत्रिक है, लड़का हकदार है, बाल बच्चे वाला है। इन्तजाम कर देना चाहिए, इस खयाल से गया था। आपका आना हो चुका है, मालूम होता तो मिलकर इलाहाबाद आता। पन्त जी अच्छे हो गए अति प्रसन्नता की बात है। मेरा कुशल है। कई किताबें निकल रही हैं। यथासमय मुलाकात होगी। स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। प्रकाश जी और बच्चों को सस्नेह नमस्कार

आपका निराला

१७८. केदारनाथ अग्रवाल को

Daraganj, Allahabad
15.5.45

प्रियवर,

पत्र का उत्तर देते देर हुई। कारण, मैं लखनऊ, उन्नाव आदि गया था। मेरे लिए विशेष उद्विग्न न हूजिए। क्योंकि लेखनी मेरे पास है और वह आप की सभा-परिषद् से कम शक्तिशालिनी नहीं।

'साहित्यकार संसद्' नाम से अपनी व्याख्या करती है। साहित्यिकों की एक ही संस्था है। साहित्यिक और धनिक मदद कर रहे हैं। आप भी कुछ कीजिए। महादेवी जी Secretary हैं, मैथिलीशरण जी सभापति, बहुत से गण्य लेखक सभासद हैं, राय कृष्णदास कोषाध्यक्ष, मैं साहित्यकार हूँ, प्रकाशन मेरे सङ्ग्रह का पहला हो रहा है, रुपये ५००) अग्रिम मिले।

नरेन्द्र ने १००) भेजे हैं, कुछ कुछ आप लोग भी भेजिए।

सर तेज की भोजन की बाद वाली बदहज़मी है। जब तक इनका फ़ैसला होगा तब तक युग इनकी अमान्यता कर जायगा। वे मुझ को बुला नहीं सकते, कारण लिख चुका। कविता फिर भेजूंगा। डा० रामविलास आने वाले थे, नहीं आये। ठाकुर साहब को स्नेह।

आपका
निराला

[पता]
Babu Kedarnath
Agrawal,
Advocate,
Civil Lines,
(Banda) U.P.

१७९. रामविलास शर्मा को

Daragunj. Alld.
19.5.45

प्रिय डाक्टर,

आपका पत्र मिला। यथासमय आप नहीं आये। एक पत्र अवस्थी का आपके नाम आया है। सुमन ने जैसा लिखा है, शायद फ़ैज़ाबाद आपका मुकाम हो, सुमन की ससुराल। मेरा जाना न होगा। काम है। इति।

आपका
निराला

[पता]
Dr. Rambilas Sharma, M. A. Ph. D.
Swadeshi Bima Nagar,
Agra.

१८०. रामविलास शर्मा को

Daragunj, Allahabad
23.5.45

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र लिखा है। यहाँ आने की अवधि में आपका आना नहीं हुआ। आप शायद त्रिलोकी नारायण दीक्षित को जानते हैं। लखनऊ से हिन्दी में फ़र्स्ट क्लास फ़र्स्ट हैं एम्.ए.। इस समय स्कालरशिप लेकर रिसर्च स्कालर हैं। इस साल फ़ाइनल ला भी दे चुके हैं। आपके कालिज में हिन्दी अध्यापक की जगह खाली हुई है उसके लिये

अप्लीकेशन दे रहे हैं। आप सिफ़ारिश कीजियेगा जहाँ तक सम्भव हो। इन्होंने कुछ अच्छे निबंध भी लिखे हैं।

कुशल है। जानकी वल्लभ की कई किताबें निकलीं। शिप्रा, तीर-तरंग, और रस गंगाधार भाष्य। कई निकलने वाली हैं। अवस्थी का एक कार्ड यहां है। हमारी किताबें निकल रही हैं—छप रही हैं।

आपका

निराला

आपके रुपयों की देर हुई। हमको भी देने वाले देर कर रहे हैं।—नि०

१८१. रामविलास शर्मा को

दारागंज, इलाहाबाद

२६.५.४५.

प्रिय डाक्टर, नमस्कार।

पत्र आया। समाचार ज्ञात हुए। नागर जी से मैंने पूछा था, मगर कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं मिला कि आये। डलमऊ मैं रामकृष्ण आदि को देखने, बाग़ के रुपयों की हुई डिक्री पर बातचीत करने और रुपये देने के लिये गया था लखनऊ और उन्नाव होता हुआ। रामकृष्ण की दूसरी स्त्री को पहली बार तीन साल बाद देखा। उसके लड़का होने वाला है।

पुरवा (रंजीत) में रामकृष्ण की उस स्त्री से हुई लड़की को देखा।

अभी साले की लड़की की शादी नहीं हुई।

इधर वहीं विषवृक्ष का अनुवाद पूरा करके दिया है। कुछ कविताएं लिखी हैं। एक लोकयुद्ध को भेजने के लिये कामरेड कृष्णदास को दे दी है। 'चोटी की पकड़' पूरी कर रहा हूँ। 'अपरा' संग्रह साहित्यकार संसद में छप रहा है। ४ किताबें किताब महल छाप चुका, ३ छाप रहा है।

आपका—निराला

पं० जानकी वल्लभ शास्त्री इधर बड़ा काम कर रहे हैं। उनकी 'तीर-तरंग' 'शिप्रा' आदि किताबें निकल गई।

आरा जैन कालिज और बी० एन० कालिज, पटना गया था। पटने में उनको बुलाया था।

[उस स्त्री से अर्थात् पहली पत्नी से।]

१८२. अमृतलाल नागर को

Daraganj, allahabad
29. 5. 45

प्रिय अमृत लाल नागर, नमस्कार।

आपका पत्र आया। समाचार विदित हुए। आप लोग नये साहित्य में शान से आये। घूमे भी खूब। आपके उपन्यास के समाचार से खुशी हुई। हमारी व्यस्तता अस्तव्यस्त है। किताबें नई पुरानी आठ दस निकल रही हैं। यहां अब काफ़ी गरमी पड़ने लगी है। कल ज़ोर की आंधी चली, काफी पेड़ टूटे, जल भी गिरा। समय सुहावना रहा। आज लू बन्द है, धूप काफी तेज़ है। रामविलास की किताब के बारे में सुना है। आप के यहां से निकल रही है, अच्छा है। एक कविता लिखकर 'लोक युद्ध' को देने के लिए कामरेड दास को दी थी, अगर अब तक 'लोक युद्ध' के दफ़्तर पहुंच चुकी है और आपको शीघ्रता है तो उसको ले लीजिए; नहीं, तो कुछ ठहर जाइए, समाचार दीजिए, तब तक कोई अच्छी रचना भेज देंगे।

हमारे कविता पाठ का चित्र तैयार किया जाय तो कैसा हो? कितना देंगे? खपत तो काफी होगी।

यहां कुशल है। जून में डा. विलास आने वाले हैं। इति।

आपका
निराला

[उपन्यास : "महाकाल"। कामरेड दास: इलाहाबाद के श्री कृष्णदास। नागर जी इन दिनों 'नया साहित्य' का संपादन कर रहे थे; उसी के लिए कविता भेजने की बात है। 'नया साहित्य' जनप्रकाशनगृह से निकलता था; वहीं से निराला पर मेरी किताब प्रकाशित होने वाली थी।]

[पता:]

श्रीयुत पण्डित अमृतलाल नागर
शिवाजी पार्क रोड, नं० २,
दादर, बम्बई
Shivaji Park Road, No. 2,
Dadar, Bombay.

१८३. रामविलास शर्मा को

Daragunj, Allahabad
8.6.45

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। त्रिलोकी नारायण जी यहीं हैं। कुशल है। प्रूफ़ देखता हूं। किताब

महल से चार किताबें निकल गईं दूसरे संस्करण वाली, तीन छप रही हैं मौलिक। 'विषवृक्ष' अभी छपने को नहीं दिया गया। पूरा हो चुका है। सा० संसद से 'अपरा' सङ्ग्रह के आठ फ़ार्म छप चुके। 'गीतिका' का भी संस्करण हो रहा है। 'अनामिका' का भी होगा। इस साल के वाद साधारणतः अच्छा हिसाव आ जायगा। यों ५० ई० तक लगेगा। काम की सचाई तभी देख पड़ेगी।

यहां १५ दिन पहले पानी वरसा था। अव कड़ी धूप होती है। गरमी जवानी पर है। थोड़ा थोड़ा लिखता हूं। भोजन अपने हाथ पकाता हूं। ग़ज़लें कुछ और लिखी हैं। गरमी के वाद 'चमेली' पूरी करूँगा। एक ग़ज़ल भेजता हूं—

(फ़फ़लुन् फ़लुन ४)

लू के झोंकों झुलसे हुए थे जो
हरा दौंगरा उन्हीं पर गिरा।
उन्हीं वीजों के नये पर लगे,
उन्हीं पौधों से नया रस झिरा।
उन्हीं खेतों पर नये हल चले,
उन्हीं माथों पर नये वल पड़े,
उन्हीं पेड़ों पर नये फल फले,
जवानी फिरी जो पानी फिरा।
पुरवा हवा की नमी वढ़ी,
जुही के जहां की लड़ी कढ़ी,
सविता ने क्या कविता पढ़ी,
वदला है वादल से सिरा।
जग के अपावन धुल गये,
ढेले गड़ने वाले थे, घुल गये,
समता के दृग दोनो तुल गये,
तपता गगन घन से घिरा।

आपका
निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma, M.A.Ph.D.
Mahtab Bhawan,
Wazeer Gunj,
Agra

[वज़ीरपुरा की जगह निराला ने पते में वज़ीरगंज लिखा है।]

Daragunj.
Allahabad
13.6.45

१८४. केदारनाथ अग्रवाल को

लाला जी, नमोनमः

पत्र का उत्तर नहीं मिला। आप पिछड़े जा रहे हैं। आप लोग ही तो हैं, और कौन भिड़ेंगे ? जहां हम नही गये वहां न जाना ही अच्छा था। ठाकुर साहब को नमस्कार। एक ग़ज़ल इधर की भेजते हैं।

आपका निराला

ग़ज़ल

"लूके झोंकों झुलसे हुए थे जो
हरा दौंगरा उन्हीं पर गिरा;
उन्हीं बीजों के नये पर लगे,
उन्हीं पौधों से नया रस झिरा।
उन्हीं खेतों पर नये हल चले,
उन्हीं माथों पर नये वल पड़े,
उन्हीं पेड़ों पर नये फल फले,
जवानी फिरी जो पानी फिरा।
पुरवा हवा की नमी वढ़ी,
जुही के जहां की लड़ी कढ़ी,
सविता ने क्या कविता पढ़ी,
वदला है वादल से सिरा।
जग के अपावन धुल गये,
ढेले गड़ने वाले थे घुल गये,
समता के दृग दोनों तुल गये,
तपता गगन घन से घिरा।"

और क्या हाल हैं ? साहित्यकार संसद् के लिए कितना चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं ? हमारी सिट्टिङ्ग कव करा रहे हैं ? चेयर तो हमारा ही है ? रामविलास खुश हैं।

आपका
निराला

[पता]
Babu
Kedarnath Agrawal ji,
Advocate,
Civil lines (Banda) U. P.

१८५. रामविलास शर्मा को

दारागंज, इलाहाबाद
18. 6. 43[१] [४५]

प्रिय डाक्टर साहब,

पत्र हस्तगत हुआ। आपकी पुस्तक का रुपया मेरे पास भेजा गया, इस मज़ाक़ का कारण मेरी समझ में नहीं आता। चेक अभी रक्खा है। या तो रुपये ही भेज दूंगा या चेक हीं। यहाँ भी बड़ी गरमी है। १५/२० दिन पहले एक दौंगरा गिरा था। अब फिर बदली है। पं० जवाहर लाल जी के स्वागत की बड़ी तैयारियां हैं। आज आने वाले हैं, इसी समय। आठ बजने को हैं शाम के। गङ्गा का आनन्द इस साल नहीं ले रहा। कभी कभी जाता हूँ। कुशल है। केदार अग्रवाल का पत्र आया है। मज़े में हैं। एक कविता लिख भेजी है। अच्छी है। कुछ ग़ज़लें लिखी हैं मैंने। आपने जानकी वल्लभ की शिप्रा देखी होगी। प्रसन्न होंगे। हां, अमृत नागर का पत्र आया है। मैंने पूछा था, सिनेमा में आवृत्ति की रील निकालेंगे तो क्या देंगे। लिखा है, हो सकता है, स्थिर करके लिखेंगे। इति।

आपका
—"निराला"

ग़ज़ल

दोनों लताएं आपके बाज़ू-बाज़ू खिलीं;
ख़ुशबू की सैंकड़ों बाहों गले-गले मिलीं।
दिल को तमाशायी बनाया दोनों जहां में,
जिसने उसी की आंखों के इशारे पर हिलीं।
फूलों ने पत्तों के जो मारे पर आई बहार,
चिड़ियों की छिड़ी तानें, हवा की पैंगें झिलीं।

(२)

सङ्कोच को विस्तार दिये जा रहा हूं मैं;
क्या छन्द को निस्तार दिये जा रहा हूं मैं।
प्रस्तार को प्रस्तार दिये जा रहा हूं मैं,
वैसे विजय को हार दिये जा रहा हूं मैं।
उड़ जाने को हवा के साथ खेला खेलाया,[२]
हल्का जो उसको भार दिये जा रहा हूं मैं।
क्या छोरों पर कला की साड़ी के लगाये हंस,
हस्ती को गुनहगार दिये जा रहा हूं मैं।
उपवन में शायरी के मेरे शब्द यों आये,
जैसे गुलों को ख़ार दिये जा रहा हूं मैं।
तुलसी की सूर की किताबों में जो आ गई,

उस युवती को सिंगार दिये जा रहा हूं मैं।
उतरी हैं आपसे वे कलाएं यहां, कहा—
उन किरनों को निखार दिये जा रहा हूं मैं।
युग को किया सुरूप दुनिया की आंखों में,
जैसे मदन को प्यार दिये जा रहा हूं मैं।
—निराला

[पता]
Dr. Rambilas Sharma, M. A, Ph. D.
Mahtab Bhawan,
Wazirpura, Agra.

[१. यहां सन् '४५ होना चाहिये था; तभी पंडित जवाहरलाल छूटे थे।
२. पहले लिखा था—'खेलने वाला' जो काट दिया है।]

दारागंज, इलाहाबाद
४. ७. ४५

१८६. रामविलास शर्मा को

प्रिय डाक्टर साहब,

पत्र हस्तगत हुआ। समाचार मालूम हुए। अभी वम्बई से चेक के रुपये नहीं आये। आजकल में आजायंगे।

मेरे संस्मरण वाली किताव के वारे में कई वातें हैं समझौते के लिये। इससे पहले उस प्रकाशन से सम्वन्ध निश्चित हो जाना चाहिये जो दो सौ रुपये का चेक आपकी मारफ़त भेजता है, मुझ से जिसकी खत किताबत नहीं।

संस्मरण वाली किताव वारह सौ-डेढ़हज़ार सफ़हों की होगी, दो वालूमों में। क़ीमत आज को देखते १५) से १८) तक होगी। अगर पहला एडीशन दो हज़ार का भी मानें तो वीस सैकड़े के हिसाव से सात हज़ार रुपये से ज़्यादा की रायल्टी होती है। चाहिये कि हिन्दी एडीशन पहला पाँच हज़ार का हो। पार्टी के पास वेचने के साधन हैं। किताव संसार के साहित्य में एक होगी, क्योंकि उसका मसाला वैसा है,—संसार के प्राय: सभी वड़े आदमी आते हैं। हम इसका अंगरेज़ी संस्करण भी करेंगे, वंगला भी, उर्दू भी। प्रकाशन को वड़ा काम मिलेगा, नामवरी भी होगी। अंगरेज़ी वाले में आपका सहयोग रहेगा अगर आपकी इच्छा हुई। अंगरेज़ी की खपत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। ऐसी हालत में ये दो सौ रुपये कौन होंग हैं, मेरी समझ में नहीं आता। और हिन्दी संस्करण के लिये ३०००) कम से कम अग्रिम मिलना चाहिये। इस समय १)।) से अधिक नहीं पहले को देखते। खैर आपको इतना इशारा काफ़ी है। आप उनसे वातचीत कीजिये। इस वड़े काम के लिये वे ख़ुद भी यहाँ आ सकते हैं, आप भी रहें, दो एक और। समझौता हो जाय, रुपये दें, हम काम देने लगें। आगरा रहकर भी काम किया जा सकता है।

यों २००) में एक किताब कोई देंगे। जल्द जवाब दीजिये। उनसे भी मालूम कीजिये। सविशेष फिर।

आपका
निराला

[पता :]

Dr. Rambilas Sharma,
M. A. Ph. D.
Mahtab Bhawan,
Wazirpura,
Agra

१८७. रामविलास शर्मा को

ग़ज़ले [ग़ज़लें]

(१)

बदलीं जो उनकी आंखें इरादा बदल गया,
गुल ज्यों ही चमचमाया कि बुलबुल मचल गया।
यह टहनी से हवा की छेड़छाड़ थी, मगर
खिलकर सुगंध से किसी का दिल बहल गया।
ख़ामोश फ़तह पाने को रोका नहीं रुका,
मुश्किल, तमाम जिन्दगी का जब सहल गया।
मैंने कला की पाटी ली है, शेर के लिये,
दुनियां के गोलन्दाजों को देखा, टहल गया।

(२)

दोनों लताएं आपके बाज़ू-बाज़ू खिलीं,
ख़ुशबू की सैकड़ों बाहों गले-गले मिलीं।
दिल को तमाशायी बनाया दोनों जहां में,
जिसने उसी की आंखों के इशारे से हिलीं।
फलों ने पत्तों के जो मारे पर, आई बहार,
चिड़ियों की छिड़ीं तानें, हवा की पैंगें झिलीं।

(३)

सङ्कोच को विस्तार दिये जा रहा हूं मैं,
छन्दों को विनिस्तार दिये जा रहा हूं मैं।
प्रस्तार को प्रस्तार दिये जा रहा हूं मैं,

रहा हूं मैं।
जैसे विजय को हार दिये जा रहा हूं मैं।
उड़ जाने को हवा के साथ खेला खेलाया,
हल्का जो उसको वार[1] दिये जा रहा हूं मैं।
क्या छोरों पर कला की साड़ी के लगाये हंस,
हस्ती को गुल हज़ार दिये जा रहा हूं मैं।
उपवन में शायरी के मेरे शब्द यों आये
जैसे फलों को भार दिये जा रहा हूं मैं।
तुलसी की सूर की कितावों में जो आ गई
उस युवती को सिंगार दिये जा रहा हूं मैं।
उतरी हैं आपसे जो कलाएं यहां, कहा,
उन किरनों को निखार दिये जा रहा हूं मैं।
युग को किया सुरूप दुनियां की आंखों में
जैसे मदन को प्यार दिये जा रहा हूं मैं।

—निराला

दारागंज, इलाहावाद
६-७-४५

प्रिय डाक्टर साहव,

एक पत्र उत्तर में लिख चुका हूं। तीन ग़ज़लें और भेजता हूँ। वातचीत का ज्ञापन शीघ्र करेंगे, आशा है। प्रकाशक ध्यान देंगे, क्योंकि विषय महत्त्वपूर्ण है।

यहाँ जमुना में इतना पानी आ गया था कि गङ्गा लवालव भर गई थीं, मुहाने का पानी रेल कर आ गया था। वारिश भी हुई अच्छी। कुछ दिनों वाद आगरा आना चाहता हूँ। कल सुमन जी आये थे, रात रहे, खाना खाया काशी गये हैं। यहाँ से ग्वालियर जायंगे। नागर का तार आया था, नये साहित्य के लिये कविता मागी थी, दो भेज दी हैं। 'अपरा' छप रही है सा० संसद वाली मेरी संग्रहणी। महादेवी जी अभी पहाड़ में नहीं आई। आजकल में आने वाली हैं। कुशल है। आगरे में मेरी आवृत्ति का प्रवंध करा सकते हों तो कराइए। पुरस्कार अच्छा होना चाहिये। लेक्चर सुनना चाहें लडके तो वही सही, इस युग के काव्य साहित्य पर हो जायगा। इति।

आपका
निराला

[पता :]
Dr. Rambilas Sharma,
M.A. Ph. D.
Mahtab Mahal,
Wazeerpura, Agra

[१. अर्थात् वार शायद **भार** को उर्दू रूप देने के लिए, किन्तु तीन पंक्तियों वाद भार का प्रयोग किया है। १८ जून १९४५ के पत्र में जो पाठ है, उसे जहाँ तहाँ वदला है।]

१८८. केदारनाथ अग्रवाल को

Daraganj
Allahabad
8.7.45

प्रियवर,

क्या हाल हैं ? वीरेश्वर जी सकुशल होंगे। आजकल आप लोगों में कैसी साहित्य चर्चा है ? हमने इधर कुछ ग़जलें लिखी हैं, पत्रों में यदाकदा निकलती हैं।

डा० रामविलास प्रसन्न हैं। यहां आने वाले हैं अगर आ पाये। सुमन ग्वालियर जाते हुए यहां आये थे बनारस के रास्ते, लौटकर ग्वालियर जायंगे। गरमियों की छुट्टियों के बाद अब लोग पहाड़ से लौट रहे हैं। महादेवी जी आजकल में आने वाली हैं।

आपके कविसम्मेलन या निबन्ध-पाठन का क्या हुआ ? जल्द फिर साहित्य और राजनीति की चलने वाली है। यहां कुशल है।

आजकल बांदे का जलवायु बिगड़ चला होगा। सम्भव है, पहाड़ियों के कारण अच्छा रहता हो। यहां पानी गिरा। एकाएक यमुना में बाढ़ आई, गंगा भर गई— मुहाने का पानी रेलकर चढ़ आया, रेती डूबी गई। हमारी चार किताबें निकल गईं, छः निकल रही हैं। इति।

आपका
निराला

[पता :]

Babu Kedarnath ji
Agrawal, B.A., LL.B.
Advocate,
Civil Lines
(Banda)
G.I.P.R. (U.P.)

१८९. केदारनाथ अग्रवाल को

Daraganj
Allahabad
8.7.45

प्रियवर,

आपका पत्र नहीं मिला। आपके साहित्य-समारोह के उपलक्ष्य में शरत् पूनो ही है क्या ? आपका नगर जिन हाथों में है उनका दाक्षिण्य यहां नहीं हो पाता. वाम्य ही

रहता है, फलतः याम्य ही होगा। रहीमवाला भाड़ किस जगह है ? सम्भवतः आगरा आऊंगा। अभी अलीगढ़ होता हुआ देहली जा रहा हूं। एक हफ्ते के बाद।

आपका
निराला

[पता]
Babu Kedarnath Agrawal
B.A.LL.B.

Civil Lines
(Banda)

[इस कार्ड पर, और इससे पहले वाले कार्ड पर, एक ही तारीख पड़ी है, किन्तु दोनों कार्ड एक ही दिन के लिखे नहीं जान पड़ते। पहले वाले कार्ड पर दारागंज इलाहाबाद की डाकमुहर ९ जुलाई की है, दूसरे पर १० जुलाई की।]

Daraganj,
Allahabad
25-7-45

१६०. रामविलास शर्मा को

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। उत्तर देर से जा रहा है। आपके जनप्रकाशनगृह को लिखे पत्र का उत्तर आया। उन्होंने छोटी स्मृति-पुस्तिका मांगी है। दो आधुनिक रचनाएं भेजीं, १५) उन्होंने भेजे। फ़िराक़ से नहीं मुलाक़ात होती। उर्दू का रंग उनका नहीं। कुशल है। अभी तक आगरा चलने का हिसाब नहीं आया। समाचार देते रहें। सम्मेलन का क्या हुआ (?) आगरा हमारी बातें क्या जाने ? हमारा शायद व्यक्तिगत है ?

आपका
निराला

[पता :]
Dr.
Rambilas M.A. Ph.D
Wazeerpura
Agra

१९१. रामविलास शर्मा को

Daraganj
Allahabad
8.7.45
[8-8-45]

प्रियवर,

पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। अगरे [आगरे] के लोगों को प्रदर्शन दे सकता हूं। दर्शन मैं नहीं देता। मगर इन लोगों की भेंट वहुत कम होती है। खैर। हो सका तो जल्द मिलूंगा। पार्टीवन्दी का परिणाम कैसा हो रहा है। कुशल है। शनिवार को सम्भवतः मिलूंगा। नहीं तो एक हफ्ते वाद। यहाँ पानी नहीं वरस रहा है। वड़ी गरमी है। मैथिलीशरण हीरक जयन्ती का निमन्त्रण आया है। लिखा था, १०००) लूंगा कवि गोष्ठी के लिये। सिर्फ़ निमन्त्रण आता है। नागर को लिखा था, स्क्रीन में आवृत्ति करा सकते हो ? हाँ करके मौका देख रहे हैं। खैर। पुत्तन वहाँ हैं अच्छा है। अभी इतर विशेष नहीं कर रहे। इति।

आपका
निराला

[पता]
Dr. Rambilas Sharma
Mahtab Mahal,
Wazeer Pura,
Agra

[पुत्तन—युक्तिभद्र दीक्षित, कवि, पुतान नाम से अधिक प्रसिद्ध, वलभद्र दीक्षित के पुत्र; पते में महताव भवन को सानुप्रास महताव महल कर दिया गया है। डाक मुहर में अगस्त है।]

१९२. केदारनाथ अग्रवाल को

Daraganj
Allahabad
20.8.45

प्रियवर,

फिर भी उत्तर नहीं आया। मैं आगरा, दिल्ली, मेरठ, मुरादावाद, लखनऊ, उन्नाव होकर कल आ गया। डाक्टर राम विलास प्रसन्न हैं। दिल्ली, मेरठ, मुरादावाद, लखनऊ, उन्नाव के साहित्यिकों के यहां कोई ग़मी नहीं हुई। आपके लक्चर भी न हुए, कवि सम्मेलन भी रह गया। श्रीयुत राव जैसे साहित्यिक से भी आप लोग कुछ कर न गुज़रे।

ठाकुर साहब के क्या हाल हैं? इधर कई उल्लेख आये हैं। कुछ मित्र बम्बई बुला रहे हैं। दो हज़ार मासिक के कई आये, मगर अभी साहित्य में रहना अच्छा लगता है।

आशा है, कुशल है।

आपका
निराला

[पता:]
Babu
Kedarnath Agrawal
Advocate,
The Civil Lines
(Banda)

१६३. रामविलास शर्मा को

दारागंज, इलाहाबाद
२०.६.४५

प्रिय डाक्टर,

आपका कार्ड मिला। अभी अभी (नागर) नरोत्तम गये। उनसे मालूम हुआ कि २७ को आ रहे हैं, अब समझे, नहीं। प्रतीक्षा थी।

जानकीवल्लभ इधर से गये। लिख चुका हूं, आये थे पिता के साथ, मथुरा, आगरा होते हुए। इस समय शिवशेखर जी हैं। अच्छी तरह हैं।

पत्र में ग़लत ठिकाना लिख जाना बड़ी बात नहीं।

'पारिजात' देखा पटने वाला। अच्छा निकला है। आपका लेख प्रथम पृष्ठ पर है। परिचय लिखा है, अंगरेज़ी के लेखकों का जैसा, अख़ीर में; वह लेखानुक्रमिक है, नामाक्षरानुक्रमिक नहीं, यानी वह भी शुरू में।

पानी फुटकर बरस जाता है। गङ्गा में परसाल की जैसी बाढ़ नहीं आई।

उपन्यास लिखा रहा हूं।

आपका
निराला

[पता:]
Dr. Rambilas Sharma.
M. A. Ph. D.
Mahtab Bhawan,
Wazirpura,
Agra

१- लिख— देखें १२.११.४५ का पत्र

१६४. नलिन विलोचन शर्मा को

Daraganj
Allahabad
10.10.45

प्रियवर, नमस्कार।

एक पत्र यहां आकर भेजा था। मिला होगा। तब से मौन हैं। प्रसन्न होंगे। बड़ी क़ैद है। जानकीवल्लभ सख्त बीमार फिर हो गये। काम गरमी में न हुआ था [,] कर रहा हूं।

संसद चली चल रही है।
तिवारी जी से पूजा बाद मिलूंगा।

निराला

१६५. केदारनाथ अग्रवाल को

Daraganj,
Allahabad
10.10.45

प्रियवर,

नये साहित्य वाली चीज़ें तुम्हारी सबसे अच्छी रहीं। डाक्टर रामविलास आये थे। अच्छी चर्चा रही। कुशल है। गरमी में काम कम हुआ था, कर रहे हैं। संसद् चल रही है। इति।

सस्नेह
निराला

[पता:]

Babu Kedarnath Agrawal
Advocate
Civil Lines
(Banda) U.P.

१६६. रामविलास शर्मा को

Dara Ganj,
Allahabad
10.10.45

डाक्टर,

पत्र मिला। चित्र के साथ वाला पत्र देखा था। सबने फ़ोटो की तारीफ की। शिवशेखर गये। काम चल रहा है। सर्दी शुरू हुई। गङ्गा उतर गईं। दसहरे का

निराला

नमस्कार। इति।

[पता]
Dr. Rambilas Sharma,
M. A, Ph. D.
Mahtab Bhawan,
Wazirpura,
Agra

[आगरे में मेरे साथ खिंचाये हुए फोटो का जिक्र है। उससे निराला का फोटो अलग निकलवा कर भी उन्हें भेजा था और वह उन्हें बहुत पसन्द था।]

१९७. नलिन विलोचन शर्मा को

Dara Ganj
allahabad
12.11.45

प्रियवर,

पत्र मिला। उत्तर को देर हुई। आपका लेख दीवाली अङ्क विश्वमित्र में देखा। आपकी शैली बहुत पसन्द है। जानकीवल्लभ जी बीमार हैं। एक उपन्यास लिख रहा हूं। नमस्कार।

आपका
निराला

१९८. रामविलास शर्मा को

दारागंज
इलाहाबाद
कार्तिकी पूनो

डाक्टर साहब,

आपका पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुए। यहां कुशल है। काम धीरे धीरे हो रहा है। 'अपरा' छप गई। निकलने को है। "चोटी की पकड़["] भी प्रायः समाप्त है। 'काले कारनामे' उपन्यास आधा पूरा हुआ।

आपका
निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma,
M. A. Ph. D.
Mahtab Bhawan
Wazirpura
Agra

[इलाहावाद की डाकमुहर की तारीख : १९ नवंबर १९४५]

१९९. रामधनी द्विवेदी को

तालिका

४३।।।) ईरिङ् एक
२७) – साड़ी एक सूती-जर्रीन
७।।) सूती साड़ी एक
१३) स्विटर एक ऊनी
११) एक जोड़ी सूती चद्दर
५) – चप्पल एक जोड़ी
४।।) ≡ रामायण गो० तुलसीदास जी की एक
४) भक्तमाल एक
२।।) शीशा एक
।।।) कंघा एक
१) कस्तूरी सेन्ट एक शीशी
१) वेसलिन एक शीशी
।।।) साबुन दो

---

१२२) –
१४) मेवा, कत्था-सुपारी आदि।

---

१३६) –

एक सौ छत्तीस रुपये
और एक आने का कुल सामान }

प्रिय भैया रामधनी,

यह सामना खरीदा जा चुका है। एक पत्र तुमको लिख चुके हैं। हमारी तबियत ठीक कम है। अगर पहुँच न हुई तो ले जाने की व्यवस्था करना। रामकृष्ण दलमऊ

आ गये होंगे। आशा है, कुशल हैं। अञ्जनी आदि को स्नेह। प्रणाम आदि। इति।

सस्नेह

सूर्यकान्त त्रिपाठी
निराला

दारागंज
इलाहाबाद
२७. ११. ४५.

[अञ्जनी—रामधनी द्विवेदी के पुत्र।]

२००. रामधनी द्विवेदी को

दारागंज इलाहाबाद
३०, ११. ४५

प्रिय भैया रामधनी,

रामकृष्ण कल रात वाली गाड़ी से सामान लेकर गये। तालिका, दामों के साथ, पिछली डाक से तुम्हारे पास भेज दी गई है, मिली होगी। अपने सामान और खर्च का हिसाब एक एक, पत्र पाते ही, लिखकर भेज दो। जो नई बात या नई घटना हो, सूचित करो। यहाँ कुशल है। काम जारी है। रूपया आने पर बहू के लिए कुछ खरीद-कर रामकृष्ण के हाथ भेज देंगे। अञ्जनी, छोटे आदि के लिये भी। होली तक इन लोगों को यहां बुलाने का विचार है। कुछ रोज़ रह जायेंगे। जगन्नाथ भैया को भी बुलाया है। रामगोपाल और केशव की चिठ्ठी आई है। वे लोग प्रसन्न हैं। एक ख़त कालीचरण का आया था कि बहुत अस्वस्थ हैं, जवाब हमने लिख दिया है। उनका क्या हाल है, क्या शिकायत है, मालुम होने पर जल्द लिखना। चांदपुर के कौन कौन लोग आये, नाम लिखना। शुक्लों के यहां से कितने दिन में बिटिया को विदा करा ले आने का विचार है, वे लोग गौने में भी कोई ज़ेवर लाते हैं, या नहीं, ज़ाहिर करना। खुसरूपुर कबतक आओगे, रामकृष्ण कब लखनऊ के लिए रवाने होंगे, सामान और सीधा पिसान के साथ कुल कितना खर्च बैठा, कतकी कितने की लगी, कुल सामाचार ब्योरे से लिखना और यह भी कि बिहारीलाल आये या नहीं। इति। अम्मा को और अपने सास-ससुर जी तथा भगवद्दास जी को प्रणाम कहना।

सस्नेह
—सूर्यकान्त त्रिपाठी

[छोटे—अञ्जनी के भाई मारुतीशरण।
चाँदपुर—जिला फतहपुर में, रामधनी द्विवेदी जहां के मूल निवासी थे।
शुक्लों के यहां से—भोजपुर में गोपा की ससुराल से।
खुसरूपुर—चाँदपुर के पास गांव।
भगवद्दास—डलमऊ के पड़ोसी।
(रामकृष्ण त्रिपाठी की सूचना के अनुसार)।]

२०१. रामविलास शर्मा को

Dara Ganj
Allahabad
13.1.46.

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। बम्बई जाने का समाचार मिला था। हाल मालूम हुए। मगर कोई पत्र वहां से नहीं आया। एक किताब गीतों की छप गई है। निकलने पर भेजेंगे। कुछ और भी जल्द निकलने वाली हैं। देखें, कहां तक शीघ्रता होती है। 'वेला' गीतों और ग़ज़लों का संग्रह है, ८० अस्सी गीत+ग़ज़लें (आधे-आधे) अब तक छप चुके हैं। मुमकिन १०० पूरे हों या दूसरे संग्रह में जायं—नरगिस में, जिसमें सिर्फ़ गज़लें होंगी। वेला जानकीवल्लभ को समर्पित है। 'चोटी की पकड़' का पहला भाग दे दिया गया। चार भागों में होगी। छोटे छोटे भाग। १५०/२०० सफ़ों का हर एक। यह उपन्यास मास के अख़ीर तक निकल जायगा। नये पत्ते—अब प्रेस जाने वाला है। एक और उपन्यास छप रहा है 'काले कारनामे' [।] यह समाचार है। अनुवाद अभी नहीं छप रहे। इति।

अभी जाना न होगा। जाड़ा घटने पर विचार है। वहीं सूरदास लिखेंगे।

आपका
निराला

[पता]

Dr. Rambilas Sharma
M, A, Ph, D.
Mahtab Mahal
Wazir pura
Agra

[नारगिस नाम से संग्रह नहीं छपा; आगरे आकर सूरदास पर कविता नहीं लिखो। महताब भवन की जगह एक बार फिर महताब महल।]

२०२. नलिन विलोचन शर्मा को

Dara Ganj
Allahabad
7.2.46

प्रियवर,

समय पर उत्तर नहीं जा सका। बड़े दिनों में आपका आना नहीं हुआ। इधर गीत और गज़लों का संग्रह 'वेला' निकल गई। 'नये पत्ते' आधुनिक काव्य छप रहा है।

कई और किताबें लगी हैं। भेजवाऊंगा। कुशल है। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।
इति।

आपका
निराला

[पता]
Prof.
Nalin Vilochan Sharma, M. A.,
Jain College,
Arrah
(Bihar)

२०३. कुंवर सुरेश सिंह को

C/o Pdt. Ram Krishna Tripathi
Dalmau
Rae Bareli
11-6-46

प्रियवर,

आपके यहां क्या मोटर मिल सकेगा ? यहां तक आयेगा, फिर लखनऊ जायगा। तेल का खर्चा न हो, हमीं दे लेंगे अगर राजा साहब न उठा सकें। क्या- तेल का अभाव होगा ? प्रसन्न होंगे।

आपका
निराला

२०४. रामविलास शर्मा को

C/o Pdt. Ram Krishna Tripathi, S.V.
Dalmau, Rae-Bareli
23.6.46

प्रिय डाक्टर,

आगरा पहुंच कर अपनी स्त्री के समाचार जल्द दीजिए कि अब कैसी हैं। यहां देवियों का जी लगा है। उन्होंने दुःखद समाचार सुना है। हम को भी उद्वेग है। समाचार लेकर हम प्रयाग रवाना होंगे। बाकी पड़ा काम पूरा करेंगे। वहां से छपती किताबों के निकलने के साथ प्रायः एक सेट् का पार्सल आपके पास करेंगे। रामधनी की वैसी ही हालत है। यन्त्र मंत्र पूजापाठ औषध उपचार सब कुछ हो रहा है। चिन्ता

है, समाचार जल्द दीजिएगा। इति।

आपका
निराला

[पताः]

Dr. Rambilas Sharma, M. A,
Ph. D.

Mahtab Mahal,
Wazirpura
Agra

[मैं उनसे मिलने डलमऊ गया था। वहीं पत्नी की अस्वस्थता का समाचार मिला और आगरा लौट आया था। उसके बाद निराला ने यह पत्र लिखा था।]

२०५. रामविलास शर्मा को

C/o Pdt. Ram Krishna Tripathi
S.V.
Dalmau,
Rae Bareli
भाद्र शु० ११.

प्रियवर,

हमारे साले साहब का चार मास की बड़ी बीमारी के बाद देहान्त हो गया। अब तक इन्हीं कारणों से ख़त नहीं जा सका। इति।

आपका
—नि०

[पताः]

Prof.
Dr. Rambilas Sharma
M.A. Ph.D.
Mahtab Bhawan,
Wazirpura
Agra

[डलमऊ की डाकमुहर की तारीख: ६ सितंबर ४६]

२०६. नरोत्तम नागर को

[इलाहाबाद]

नरोत्तम जी नागर
प्रिय नागर जी,

हम लोग मोती झील तक गये, फिर लौट आये। मुलाकात नहीं हुई। फिर कभी—

निराला
३१ ५/४७

२०७. रामशंकर शुक्ल को

Dalmau
Rae Bareli
1.8.47

भाई साहब,

हम डेढ़ मास यहीं हैं। केशव का विवाह हो गया। आज तुम्हारा पत्र पढ़ [पढ़ा]। अभी तक लिखना वन्द था। रामकृष्ण के खर्च में और विवाह में ३००) के इधर उधर लगा, केशव ८००) ले आये थे। इसी फेर में न कुछ भेज सके, न लेने पहुच सके। अब इलाहाबाद जाते हैं। यहां भी खर्च चुका है।

पुनः, साल भर वैठे विश्राम करते रहे। अब काम करने जा रहे हैं। जल्द मिलेंगे। भौजी को नमस्कार प्रणाम। इति

सूर्यकान्त त्रिपाठी

काम ये कुछ करते नहीं अभी।
कुशल है। प्रणाम।

निराला

[पताः]

Shreeyut
Pandit Ram Shanker
Sukul ji
Po. R. Purwa
(Pachhi Tola)
Unao

२०८. रामशंकर शुक्ल को

राष्ट्रभाषा विद्यालय,
गायघाट, काशी
३१. १२. ४७

प्रियवर,

पत्र मिला। कल ३०) तीस रुपये आपके नाम भेजे। छाया का समाचार रामकृष्ण के पत्र से भी मिला। उनकी हज़ारों की माग पहले से पेश रहती है। ख़ैर, काम से हज़ारों का भी हिसाब आ जाता है। बिहारी लाल ने क्या तकिया के मेले में कोई दूकान की ? आपका काम अगले साल से जारी हो जायगा। यहां हमारा अच्छा काम चल रहा है। एक महीना और रहेंगे। अब पहले की तरह हो आये। रुपया कुछ फिर भेजेंगे। फिर सहूलियत आ जायगी। छाया को तथा अन्य लड़कों को स्नेह। इति।

आपका
सूर्यकान्त

[पता]

Pandit Ram Shankar Sukul, Esqr,
Pachhi Tola,
P. O. R. Purwa
(Unao)
U.P.

२०९. परमानन्द शर्मा को

शिव की बारात

दोहा—कहा विष्णु ने बिहंस कर, बुलवाकर दिग्राज
बिलग-बिलग होकर चलो निज-जिन-सहित-समाज।

चौ०—वर-अनुहर बारात नहीं है,
ऐसे पर-पुर गये हंसी है।
विष्णु-वचन से जन मुसकाये,
अपनी सेना से बिलगाये।
मन ही मन शिव भी हंसते हैं,
हरि के व्यङ्ग्य वचन लसते हैं।
प्रिय के प्रति प्रिय वचन श्रवणकर,
भृङ्गी को टेरा डेरे पर।

बुलवाये कुल गण, अनुशासन,
सुनकर आये सब शीश-चरण ।
बनी वाहिनी नाना वेशा,
विहंसा जिसने भी रुख देखा ।
कुछ मुखहीन, विपुल मुख कुछ के,
विना-चरण-कर-पद, दुख कुछ से ।
विपुल-नयन, फिर दृग-विहीन हैं,
हृष्ट-पुष्ट या महा क्षीण हैं ।
छन्द—तन क्षीण कोई, पीन, पावन-तन, अपावन गति धरे,
भूषण-कराल, कलाप-कर, सब सद्य-शोणित तन भरे ।
खर-श्वान-सुअर-शृगाल-मुख गण, वेश अगणित क्या गने ?
योगी-पिशाच-जमात, करने वात चलने की बने ।
सो०—नाचें गायें गीत, परम तरङ्गी भूत सब,
देखे अति विपरीत, बोले वचनविचित्र विधि ।
चौ०—जैसा दूलह है, बरात है,
मग कौतुक की चली घात है ।
यहाँ हिमाचल के वितान हैं,
तरह-तरह के सजे प्राण हैं ।
शैल सकल जितने तक जग में,
लघु विशाल, आये श्री-मग में ।
वन, सागर, तालाव, नदी, नद,
बुला पठाये हिमगिरि ने सब ।
कामरूप सुन्दर-तनुधारी,
निज समाज सोही वर नारी ।
आये सकल हिमाचल के घर,
गाये मङ्गल विमल स्नेह-स्वर ।
पहले से गिरि ने गृह वासे ।
जथा जोग सब लोग सुपासे ।
सुन्दर पुरशोभा विलोक कर
विधि की लगी निपुणता लघुतर ।
छन्द—लघु लगी विधि की निपुणता, लखिए नगर-शोभा सही,
वन, बाग, कूप, तड़ाग, सरिता, सुभग, किसकी क्या कही !
मङ्गल-विपुल-तोरण-पताका-केतु गृह-गृह सोहते,
वणिता-पुरुष सुन्दर-चतुर छवि देखकर मुनि मोहते ।

दो०—जगदम्बा अवतरीं जव, पुर शोभा साकार,
ऋद्धि, सिद्धि, सम्पत्ति, सुख, नित्य नये विस्तार।

चौ०—सुनकर नगर-निकट वरात है,
पुर खरभर, शोभा निवात है।
करके रुचिर वनाव सवाहन,
लेने चले लोग आगमन।
सुरसेनाएं देखीं हरषे,
हरि को जव देखा, रस वरसे।
शिव समाज को देखा जिस छन,
भगे विड़रकर, जितने वाहन।
धीरज धरकर रहे सयाने,
वालक लेकर जीव पराने।
गये भवन, पूछें मातागण,
कहें वचन वे भय-कम्पित-तन।
कहें, नहीं कुछ कह जाता है,
जम की धार वरात कि क्या है!
वर वौराह, सवार वलद पर,
व्याल-विभूषण हैं कपाल-कर।

छन्द—तन, छार, व्याल-कपाल-भूषण, नग्न-जटिल, करालतर,
भय, भूत-प्रेत-पिशाच कटु-मुख, विकट-भट-नट-तिमिरचर,
जीता हुआ वारात देखे पुण्य उसकी है वड़ी,
देखे व' उमा-विवाह घर-घर बात लड़कों ने कही।*

—निराला

*गो० तुलसीदास जी के रामचरित मानस का अनुवाद, आज की हिन्दी में—

(आदि-आदि)

निराला

प्रिय परमानन्द जी,

पत्र मिला। एक हिस्सा भेजते हैं।. रुपये की क्या वात है? शिव शेखर कहाँ हैं? कुशल है। उमाशङ्कर को स्नेह। इति

निराला
२/५/४८

दया शङ्कर की स्त्री को कुछ भेजेंगे सहायता। कुछ मुंशी जी की स्त्री के लिए किया है।

[मुंशी जी—मुंशी नवजादिक लाल श्रीवास्तव;
दयाशंकर—दयाशंकर वाजपेयी;
रामचरित मानस के खड़ी वोली रूपान्तर में "वनिता" की जगह "वणिता" निराला का
लिखा हुआ है।]

राष्ट्रभाषा विद्यालय
गायघाट,
काशी
७. ५. ४८

२१०. रामशंकर शुक्ल को

प्रिय भाई साहब,

पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। रामकृष्ण को २२५) दो सौ पच्चीस रुपये भेज चुके तीन दिन हुए। कतकी से अवतक सात सौ से अधिक नक्द रुपया गया। काम चलता रहेगा। भिक्खू को काम कराना चाहिए। २५) रुपये पच्चीस भेजते हैं। अत्र यहां पत्र न देना। डलमऊ या कानपुर रहेंगे। कुछ लोग पहाड़ चलने के लिए कहते हैं। फिर मुलाक़ात होगी। इति। चिन्ता न कीजिएगा।

आपका
निराला

२५०) ढाई सौ रु० की दो साड़ियाँ और जम्पर वनारसी खरीदीं

[पता:]
Pdt. Ram Shankar Sukul,
Pachhi Tola,
P.O. R. Purwa,
(Unao) U.P.

Dalmau
Rai Bareli
8.3.49

२११. परमानन्द शर्मा को

प्रियवर,

पत्र मिला। साधना भी प्राप्त हुई। देखकर प्रसन्न हुआ। एक चीज दो चार दिन में भेजी जाती है। शिवशेखर का पत्र आया है। होली में उनको बुलाया है। कलकत्ता जायंगे तो खर्च दे दिया जायगा। यहां कुशल है। अनुष्ठान कर रहा हूँ ब्राह्मण धर्म वाले। व्रत उपवास आदि चल रहे हैं। देवी पक्ष में दुर्गासप्तशती और व्रत पूजादि रहेंगे [,] फिर भागवत और रामायण वाल्मीकीय और व्यास वाली महाभारत के

पाठ। समाचार देना। सविशेष फिर—

निराला

S. Tagore
C/o Nirala
Sherandazpur
Dalmau P.O.
(Rae Bareli) U.P.

[पता:]

Pdt, Paramananda Shuklaji
Editor, The Sadhana
15, Bhavani Dutt Lane
Calcutta.

[हिंदी में हस्ताक्षर के बाद ऐस्. टैगोर लिखने का आशय संभवतः टैगोर खानदान से सूर्यकान्त का संवन्ध जोड़ना है किन्तु ऐस्. टैगोर को पत्र मिले गा "निराला" के ही मार्फत। 'साधना' पत्रिका कुछ समय तक परमानन्द शर्मा के संपादन में कलकत्ते से प्रकाशित हुई थी।]

२१२. परमानन्द शर्मा

Sherandazpur
Dalmau
Rae Bareli
13-3-49

प्रियवर,

पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुए। आपके पत्र के लिये कुछ लिखना असम्भव सा हो रहा है। सुबह से शाम तक फुरसत नहीं होती। काम में लगा रहता हूं। कोशिश करूंगा कि कल-परसों तक कोई चीज आपके पत्र के लिए भेज दूं।

सम्मेलन के लिए क्या जवाब मेरा हो सकता है? मैं व्रती हो रहा हूं, हिन्दू-विधान की पूर्ति में लगा हूं; उधर आपका दूसरा ही अनुष्ठान है। अगर रुपये के विचार से हां करूंगा तो शैथिल्य भी होगा और सम्मेलन मेरी लम्बी फ़ीस पूरी न कर पायेगा; दूसरे मेरे दूसरे नाम [काम ?] उर्दू के लिये गुणग्राम आपको मालूम नहीं, अर्थात् उधर से भी मेरी शिरकत हो सकती है। मुमकिन, करने वाले आप लोगों को चकमा दे रहे हों, सरकारी तौर से।

सस्नेह
निराला

[पता:]
Pandit
Parmananda Shukla
15, Bhawani Dutt Lane,
Calcutta.

२१३. रामशंकर शुक्ल को

Sherandazpur
Dalmau
Rae Bareli
8.4.49

भाई साहब, प्रणाम।

हम अनुष्ठान कर रहे हैं। इस लिए समय पर नहीं रह पाते। अब आवेंगे और छाया को इलाहाबाद ले जायंगे। हमको इक्कीस सौ रुपये का इनाम सरकार से मिला है। अखबार में देखा होगा। कुशल है। जगदीश सिंह का एक पत्र आया है। छाया का प्रवन्ध करके तब दूसरी बात करेंगे। महादेवी जी के साथ रहेगी। इति

निराला

मन्ना की जायदाद अपनी है। वह क्या कहते हैं। तुम्हारी भी ठीक कर देनी है।

[पता:]
Pdt. Ram Shankar Shukla
Pachhi Tola
P.O. R. Purwa
(Unao)

[रामकृष्ण त्रिपाठी की सूचना के अनुसार :
मन्ना बाबू— मनिकापुर, जिला उन्नाव के निवासी, रामशंकर शुक्ल के बहनोई, बजबज (बंगाल) में कारोबार।]

२१४. परमानन्द शर्मा को

गीत

कमरख की आँखें भर आईं;
वन वर का सौदा कर आईं।
नयनों की नाव चढ़ा कोई,
यह खाली पांव बढ़ा कोई,

मोती के मोल कहां कोई,
गागर में भंवर उतर आई।
ये भय या परिणय के फूटे
आंखों से जो आंसू टूटे?
पूछें किससे संशय छूटे—,
ये हर लाई या हर आई?

—"निराला"

साहित्यकार-संसद्-भवन,
रसूलाबाद, प्रयाग
९-८-४६

प्रिय परमानन्दजी,

मैं घायल होकर रायबरेली के सरकारी अस्पताल में एक अरसे तक रहकर प्रयाग आया। दो महीने हो गये, अभी तक पूर्ण-अरोग नहीं हुआ। एक कविता भेजता हूं। फिर और भेजूंगा। उत्तर दीजिएगा। पत्र मिलते रहे हैं। प्रसन्न होंगे। घाटा भर जाता है। इति

आपका निराला

२१५. परमानन्द शर्मा को

साहित्यकार संसद्, रसूलाबाद,
प्रयाग
४-१०-४६

प्रियवर,

पत्र मिला। उत्तर तत्काल नहीं दे पाये। अभी आंख में दर्द है। पूरे-पूरे अच्छे हो आये हैं। विजयदशमी के बादवाली एकादशी को हमने संन्यास ले लिया है। कुशल है। अब कुछ लिखेंगे। इति।

आपका
नि०

[निराला अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशित यह पत्र परमानन्द शर्मा की अनुमति से यहां उद्धृत है।]

Dara Ganj
Alld
19.4.52

२१६. गंगाधर शास्त्री को

प्रिय मिश्र जी,

पत्र मिला। रामायण के अनुवाद 'विनय खण्ड' की एक-दो प्रतियां लेते आइये या भेज दीजिए। हमारा काशी जाना न हो सकेगा। नियम का उल्लंघन भी नियम-पूर्वक होना चाहिए। बलदेव जी को नमस्कार। इधर ३०/४० गीत लिखे हैं।

आपका
निराला

अभिवादन।

[पता]
Pdt. Gangadhar Shastri
Gaya ghat
Benares

['विजय खण्ड' का प्रकाशन गंगाधर शास्त्री ने ही किया था। बलदेव जी—बलदेव महरोत्रा, हिंदी प्रेमी युवक, शास्त्री जी के शिष्य।]

Dara Ganj
Allahabad
3. 4. 53.

२१७. रामविलास शर्मा को

Dear doctor,

I received your letter but due to restriction I did not write you. Now, that I forget the principal points in the letter, I mere shoot in the void. Kindly do not feel otherwise, rather note down a second one if necessary. I shall guide Shiva Gopal to take down and drop it. I am teaching him Shakespeare.

Yours
Nirala

[पता:]
Dr. Ram Bilas Sharma M.A. Ph.D.
Gokul Pura
Agra
Agra (U.P.)

[कार्ड निराला ने लिखा, पता शिवगोपाल मिश्र ने। आशय : पत्र मिला। लिखने पर रोक है, इसलिये नहीं लिखा। पत्र की मुख्य बातें भूल गया हूं। अँधेरे में तीर मार रहा हूं। बुरा न मानना। चाहो तो दूसरा पत्र भेज दो। शिवगोपाल से लिखवाकर भिजवा दूंगा। मैं उन्हें शेक्सपियर पढ़ा रहा हूं।]

२१८. रामशंकर शुक्ल को

१९.५.५४

बच्चा बाबू,

तोमार पत्र पेये खुसि हलाम। एखन आमार शरीर सुस्थ। तिन मास परे पा भाल ह'ल। किछु किछु कसरत करि। १००० एक हाजार टाका रामकृष्ण के बियेर जन्य दिलाम। बिहारीलालेर मेयेर बिये देबार कि व्यवस्था ?

S.

[पता]

Ram Shankar Sukulji
Pachchi Tola
R. Purwa
(Unao) U.P.

[मूल पत्र बँगला में था। रामशंकर शुक्ल को घरेलू नाम बच्चा बाबू से संबोधित करते हुए लिखा है : तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। अब शरीर स्वस्थ है। तीन महीने में पैर ठीक हुआ। थोड़ी कसरत करता हूं। व्याह के लिये रामकृष्ण को एक हज़ार रुपये दिये। बिहारीलाल की लड़की के व्याह की क्या व्यवस्था है ?

यह पत्र भेजा न गया था।]

२१९. रामशंकर शुक्ल को

प्रिय भाई साहब,

आपका पहले वाला पत्र भी मिला था। इस बादवाले का कड़ा तक़ाज़ा रहा। छाया के सम्बन्ध में एक हज़ार रूपये हम रामकृष्ण को दे चुके थे। सरकार या सेठों के यहां अबतक लाखों रूपये का हमारा हिसाब पड़ा होगा। छाया के लिये ढाई पौने तीन सौ रूपये के दो थान गहने उसी के साथ, काटकर, खरीदकर, दिये थे। कुछ निष्कर्ष न समझ में आया। वहां की सम्पत्ति आपके साथ है। हाल हमारा उसी हिसाब चलेगा जिससे आप-ये होंगे। और क्या लिखें ? हम अकेले क्या कर सकते हैं जब हमारा माल हड़पा जा सकता है या दूसरे हिसाब में खर्च किया जा रहा है ? आपको इतना काफ़ी होगा। इति। नमस्कार।

भवदीय
निराला

दारागंज, प्रयाग
४. १२. ५४

२२०. नागार्जुन को

८-१२-५४

एलाहाबाद

आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। जवाब में देर आने की वजह लिखने वाले जयगोपाल मिश्र उपस्थित न थे।

आपके जैसे कलीम दोस्त के खत से जैसा ग़ालिब ने लिखा है, लिखने वाले ही से चार आँखें होती हैं। आप खुश रहें और हर हालात से वाक़िफ़ करते रहें यह आपसे अर्ज़ है।

आपका
निराला

[पता:]
महामनीषी
पं० नागार्जुन जी
पडुई कोठी
लंगर टोली, पटना-४

२२१. रामशंकर शुक्ल को

दारागंज, इलाहाबाद
२५ दिसम्बर '५६

भाई साहब,

आपका ख़त मिला। सामाचार मालूम हुए। रुपये हमारे ही बहुत होते हैं। वसूल न होने की वजह दूसरी जगह होगी। सरकार के यहां, मुमकिन, हो। जानकर आगे का किया किया जा सकता है। कुशल है। पांडे जी से ख़त मिला, उन्हीं को जवाब दिया जाता है। इति।

—निराला

[पता:]
श्री रामशङ्कर जी शुक्ल
पन्छी टोला, पुरवा
उन्नाव

[पत्र व्यक्ति के हाथ भेजा गया है; पता लिफाफे पर नहीं, पत्र में ही लिखा है।]

२२२. गंगाधर शास्त्री को

प्रियवर,

आपकी किताब चि० गौरीशङ्कर के हाथ मिली। हम इस लायक नहीं कि स्थानान्तर चल सकें। दूसरी पुस्तकों के देखने की लालसा रही। पिछले क्रम से आज के क्रम का साधारण संघर्ष नहीं। हम इतने ही से मुकाविल हैं। फैसला कौन करेगा ?

निराला

६-१-५७

[यह पत्र कैलेंडर के कागज़ के टुकड़े पर लिखा गया था और चि० गौरीशंकर—गंगाधर शास्त्री के सुपुत्र के हाथ—भेजा गया था।]

२२३. रामशंकर शुक्ल को

दारागंज

इलाहाबाद

१५/७/५८

प्रिय भाई साहव,

खत आपका मिला। सरकार जहां कच्ची होगी, वहां किताबत की पूरी पकड़ के साथ हम जल्दी या देर से ग़ुज़र रहे हैं। जो विद्वान वच्चे हैं, उनको राज़ समझा जाते हैं। ज्यादा हम क्या लिखें [,] जब-खाते पीते घरबार करते वहुत रँगे-रँगाये जा चुके हैं। विवाह शास्त्रोक्ति रीति से कहां तक बन पड़ेगा, इसकी निगरानी आप खुद कीजिये। हम शास्त्र से वाहर क़दम रखने में असमर्थ हैं गोकि वाउण्ड्री के बाहर जाना ही पड़ा, मुमकिन पड़ता भी हो। हम खाने पीने का इन्तजाम कर जायेंगे तो दूसरे मुंतज़िम भाड़ फोड़ने वाले चने या चिल्ले तैयार करेंगे तो कोई समझौता क्यों होगा। रंग [?] आदि का व्यवहारिक ब्यौरा संसार ही की तरह वड़ा है। थोड़े में क्या आवेगा ?

ह : सूर्य्यकान्त

शिवगोपाल मिश्र

[विवाह—छाया का, जो १९६० में सम्पन्न हुआ; १९६७ में छाया का देहान्त हुआ। (रामकृष्ण त्रिपाठी की सूचना के अनुसार।)]

[इलाहाबाद
संभवतः १९५८]

२२४. छाया को

चिरञ्जीवि छाया,

यह खत डा. शिवगोपाल से लिखा रहा हूँ। तुम्हारे दोनों पत्र मिले। पढ़ाई और लिखाई अभी वहुत कच्ची है। किताबें लेकर हिन्दी पका लो। हमारा हिसाब तुम्हारी समझ में न आयेगा। वहां से गांव तक मिले मिलाये खाते रहना। जाति, वर, घर आदि के निश्चय के विना तुम्हारे विवाह की ठान नहीं ठान सकता। इतर विवाह हमको धोखे जान पड़ते हैं। तुम्हारे घर में वूढ़ी-वूढ़े हैं, उनकी सेवा कौन करेगा।

तुम्हारा वावा
निरालाजी

[पता]
श्री रामशंकर जी शुक्ल
पच्छी टोला
रनजीत पुरवा
उन्नाव (Unnao)

[पिछले पत्र की तरह यह भी शिवगोपाल मिश्र का लिखा हुआ है।]

780 A
Dara Ganj
Allahabad
6. 10. 59

२२५. रामशंकर शुक्ल को

भाई साहव,

आपका पत्र मिला। यहां कुशल है। रूपये पैसे वदमाशों से फंसे हैं। यही मुख्य वात है। इसी से हिसाव है। ज़वानी वाक़ी कह दिया गया है। घवराहट की वात तभी है जव इधर का उधर होता है। हम रास कुल पकड़े हैं। उस्ताद जला साहव का एक काम रूपये वाला है, दूसरा हमारा, और कुश्ती वाली वात। वहां की तीसरी। इति।

—नि०

[पता :]
Pandit Ram Shankar Sukul
Pachi Tola
P. O. R. Purwa (Unao)

[यह निराला का अंतिम पत्र है जो मेरे देखने में आया है। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में उनकी हस्तलिपि सधी हुई है।

रामकृष्ण त्रिपाठी की सूचना के अनुसार—उस्ताद जला साहव स्वयं रामकृष्ण त्रिपाठी हैं।]

तीसरा भाग

(निराला से सम्बन्धित कागज-पत्र)

कलकत्ते के प्रमाण पत्र

१. साधारण मनुष्यों की अपेक्षा ऊंचे पर

"श्री"

श्री पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी जी साधारण मनुष्यों की अपेक्षा कुछ ऊंचे पर रहते हैं। सृष्टि के वाह्य रूप में उसके अन्तरंग का विशेष अनुसंधान करते हैं। ऐसे मनुष्य संसार में थोड़े होते हैं। इन्हीं में प्रतिभा होती है और यदि परिस्थिति इन्हें प्रापंचिक चिन्ताओं के परे कर दे तो इनसे साहित्य का बड़ा उपकार हो सकता है। पं० सूर्यकान्त के गुणों का और क्रिया का प्रकाश फैले, इसकी बड़ी आवश्यकता है। विज्ञेषु किमधिकम् ?

ल० ना० गर्दे

भाद्र शुक्ल १ सं० १९८३

[इस प्रमाण पत्र के लेखक लक्ष्मण नारायण गर्दे का उल्लेख निराला ने महादेवप्रसाद सेठ आदि के साथ अपने मान्य जनों अर्थात् समर्थकों में किया है (देखें "प्रश्नोत्तरी", प्रश्न ४ का उत्तर)। प्रमाण पत्र में मराठी-भाषी हिन्दी-प्रेम गर्दे जी ने औपचारिकता का निवाह न करके निराला के व्यक्तित्व के संबन्ध में अपनी अन्तर्दृष्टि का परिचय दिया है।]

२. हिन्दी संसार में युगान्तर

श्री

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

९०, सीताराम घोष स्ट्रीट,

कलकत्ता मिती भा. कृ. १५-१९८३

श्रीयुत पण्डित सूर्य्यकान्त जी त्रिपाठी से मैं परिचित हूं। आप हिन्दी साहित्य के मर्म्मज्ञ हैं। आप के निराले ढंग के पद्यों ने हिन्दी संसार में युगान्तरसा उपस्थित कर दिया है। आपकी गद्य रचना भी प्रौढ़, पुष्ट और पाण्डित्यपूर्ण होती है। हिन्दी के अतिरिक्त आप संस्कृत, बंगला और अंगरेजी भी अच्छी जानते हैं। मैं आपकी उन्नति चाहता हूं।

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

(द्वादश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति ।)

[चतुर्वेदी जी निराला के समर्थक थे, मुक्त छंद का मज़ाक उड़ाने वाले उनके विरोधी भी ।]

३. भाव—विरक्त साधुओं के

आशुतोष विल्डिंग-कलकत्ता विश्व विद्यालय
कलकत्ता-७-६-२६

मैं श्री पंडित सूर्यकान्त जी त्रिपाठी को बहुत दिनों से जानता हूँ । ये हिन्दी संस्कृत तथा बंगला के बड़े सुयोग्य विद्वान् हैं । इनका ज्ञान अंग्रेजी में भी अभिनिविष्ट है । इनकी लिखी हुई छन्द तथा अन्त्यानुप्रास रहित कविताएँ हिन्दी साहित्य भाण्डार का रत्न समझी जाती हैं । इनके भाव बड़े उच्च होते हैं और हिन्दी रसिकों के हृदयों को अपना लेते हैं । दार्शनिक गद्य ऐसे सरल होते हैं । [,] जिन्हें हिन्दी भाषा का थोड़ा भी ज्ञान है वे उन्हें भलीभाँति समझ सकते हैं । भाषा प्रौढ़ सरल और शुद्ध होती है । लोगों को इनका निराला नाम ही ज्ञात है क्योंकि ये प्राय: उसी नाम से गद्यपद्य लिखा करते हैं । मैंने एक बार इनसे वेदान्त विषयक एक संस्कृत ग्रन्थ के संवन्ध में बातें की थीं तो म हुआ कि आपके हार्दिक भाव विरक्त साधुओं के से हैं । मैं बहुत प्रसन्न हूँगा यदि लिखे सज्जनों में इनका उचित मम्मान होगा ।

सकल नारायण शर्मा

(काव्य—व्याकरण—सांख्यतीर्थ, विद्याभूषण, शिक्षा सम्पादक, कलकत्ता संस्कृत कौलेज के अध्यापक, कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी तथा संस्कृत के व्याख्याता आदि)

[प्रमाणपत्र बोलकर लिखाया गया है; केवल हस्ताक्षर सकल नारायण शर्मा के हैं]

४. नामी लेखकों में हैं

श्री. पं० सूर्यकान्त जी त्रिपाठी से मैं पूर्णतया परिचित हूँ । आप अच्छे विद्वान और हिन्दी साहित्य के नामी लेखकों में हैं । कविता आप उच्च श्रेणी की करते हैं जो राष्ट्र-प्रेमी नवीन साहित्य सेवीयों [सेवियों] को खूब ही रुचिकर होती है । आप को अंग्रेजी इत्यादि अन्य भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान है । विद्याप्रेमी सज्जनों को आप की योग्यता से लाभ उठाना चाहिये । आशा है आप के गुणों की अवश्य कदर होगी ।

वालमुकुन्द डागा

Calcutta }
6.10.26 }

[साहित्य क्षेत्र में अपनी किसी कृति के लिये वालमुकुन्द डागा को ख्याति मिली हो, ऐसा नहीं सुना । उनसे निराला ने प्रमाणपत्र लिया, इससे उस समय की उनकी विवशता काही बोध होता है ।]

५. केदारनाथ अग्रवाल के लिये प्रमाणपत्र

श्री केदारनाथ अग्रवाल "बालेंदु" बी० ए० को मैं जानता हूँ; वह हिन्दी गद्य और पद्य के उत्तम लेखक हैं। उनकी विचारधारा मार्जित और भाव गंभीर होते हैं। उनका विषय-प्रवेश सराहनीय है। आधुनिक गद्य और पद्य के लेखकों में वह सर्वोत्कृष्ट होनहारों में से हैं। बातचीत में सरल, सहृदय और ओजस्वी प्रतीत होते हैं, जिससे उनके पुष्ट पवित्र चरित्र और अध्ययन का पता चलता है। ऐसे नवयुवक हिन्दी साहित्य का एक दिन मुखोज्ज्वल करेंगे। मैं समझता हूँ, वह किसी भी कालेज में हिन्दी शिक्षक का कार्य भली भाँति कर सकेंगे।

शुकदेव बिहारी मिश्र
(रायबहादुर)
२८-७-३५

[सन् ३५ में केदारनाथ अग्रवाल वकील रूप में प्रतिष्ठित न हो पाये थे। कहीं अध्यापन कार्य मिल जाय, प्रयत्न कर रहे थे। उनकी इच्छानुसार निराला ने शुकदेव बिहारी मिश्र से यह प्रमाण पत्र प्राप्त किया था। निराला बोलते गये थे, मैं लिखता गया था; घर से प्रमाण पत्र तैयार करके मिश्र बन्धुओं के यहां गये थे। शुकदेव बिहारी मिश्र ने हस्ताक्षर करने के बाद नीचे रायबहादुर भी लिख दिया था।]

६. प्रश्नोत्तरी

[सन ४३ में लखनऊ से मैंने नरोत्तम नागर को कुछ प्रश्न लिख भेजे थे। निराला ने इन प्रश्नों के जो उत्तर दिये, नरोत्तम नागर ने उन्हें ज्यों का त्यों लिख कर इलाहाबाद से मेरे पास भेज दिया था। प्रश्नों की सीमा की चिन्ता न करके निराला ने वह सब कहा जो उस समय उनके मन में था। उन्हें इस बात का ज्ञान था कि उनकी "मानसिक स्थिति डाँवाडोल" है। इस डाँवाडोल स्थिति को सँभालने का प्रयत्न भी उनके उत्तरों में निहित है।]

प्रश्न १—श्री बनारसी दास से पहली मुलाकात—आपके विरुद्ध उनके पहले लेख कब निकले ?

उत्तर—वास्तव में मेरा विरोधाचार बनारसी दास जी से शुरू नहीं हुआ। पं० बनारसी दास चतुर्वेदी काफी प्रकाश में विशाल भारत के निकलने के बाद आए हैं। इसके तीन-चार साल पहले 'मतवाला' निकल चुका था, १९२३ में। उसमें लगातार मेरी कविताएँ छपती थीं। जो वर्णात्मक और मात्रात्मक मुक्त छंद में थीं। इससे भी पहले 'समन्वय' में मेरी रचनाएँ निकलीं। इसी समय प्रो० शिवपूजन सहाय, हिन्दी भूषण जी ने 'आदर्श' और 'मारवाड़ी सुधार' में मेरी रचनाएँ निकालीं। 'जुही की कली' पहले 'आदर्श' में ही निकली है। जब भी कई साल पहले की लिखी हुई मुझे याद थी। ऐसी और कई रचनाएँ थीं। १९१९ में पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी महाराज की सेवा में 'सरस्वती' में छपने के लिए मैंने यही ('जुही की कली') रचना भेजी थी। लेकिन

यह छपी नहीं। उन्होंने इसे वापिस कर दिया। जब भी मेरा हिन्दी काव्य-रचना-काल मेरी चौदह-पंद्रह साल की उम्र से, यानी सन १६०६-१० से शुरू होता है। फिर भी वह, व्रजभाषा की कविता में मित्रों को पत्रादि लिखने के लड़कपन के सिवा विशेष महत्व नहीं रखता, पर काव्यगत सौन्दर्य की उसमें कमी नहीं। खड़ी बोली मैंने वाद को सीखी—जैसा कि 'कुल्ली भाट' में लिखा है। १६२० में मेरी एक रचना 'प्रभा' में निकली थी जो किसी संग्रह में नहीं आई। 'प्रणवीर' में भी दो-एक रचनाएँ निकली हैं, 'सरस्वती', 'विश्वमित्र' (साप्ताहिक) आदि पत्रों में जिनका संग्रह अपने अपरिणामदर्शी स्वभाव के कारण मैंने नहीं किया, न जो किसी संग्रह में आ सकीं। 'मतवाला' में हर तरह की आज़ादी लिए हुए निकलने वाली रचनाओं से हिन्दी साहित्य में एक सन्नाटा सा छाया। फिर प्रतिक्रिया होना शुरू हुई। चूंकि मेरा प्राथमिक काल था, इसलिए उपेक्षा ही लोगों में प्रधान थी। पर चीज़ों के वोझ को वे देर तक सँभाल नहीं सके। पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने एक वैसा ही छंद लिख कर, मुझ से शुद्ध कराकर, मित्रों को सुना कर, पटना से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र 'शिक्षा' में छपाया। फिर हिन्दी के आचार्यगण खुल्लमखुल्ला विरोध कर चले। मेरी दो-एक रचनाएँ ऐसी भी थीं जिनका, मुखपृष्ठ पर प्रकाशन होने के कारण, 'मतवाला' सम्पादक ने अनूदित या भावानुसारी लिखकर उनकी वक़अत साधारण नहीं की। 'प्रभा' में, शायद १६२४ में, ऐसी दो रचनाओं की चोरी प्रमाणित की गई। लिखने वाले ने उपनाम देकर लिखा। पं० वालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को उनका असली नाम मालूम होगा। लेखक ने साथ ही रचनाओं की तुच्छता पर पुर असर प्रकाश डालते हुए लोगों की सहानुभूति ली। इन दो रचनाओं में जो विशिष्ट है, वह है—'तट पर'। इसका कारण यह है कि मुंशी जी ने एक लेख मेरी रचनाओं की तारीफ में छापा था। और मुझे विशेषणों से याद किया था। आलोचना के छप जाने पर नवीन जी ने सम्पादक की हैसियत से अपना एक नोट 'प्रभा' में प्रकाशित किया। मेरी काफी तारीफ उन्होंने की। इसके वाद 'माधुरी' में आलोचना प्रत्यालोचना शुरू हुई। पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी का दल विरोध में था। लखनऊ के मृत्युञ्जय औषधालय वाले पं शालिग्राम शास्त्री जी ने विरोध किया था। डॉ० अवध उपाध्याय, प्रो० गुलाव राय एम० ए०, प्रो० कृष्णदेव प्रसाद गौड़ एम० ए० ने समर्थन किया। यह चढ़ाई और लड़ाई छायावाद के नाम से हुई। इन्हीं दिनों आचार्य पं० राम चन्द्र शुक्ल ने एक कविता लिखी जो 'सुधा' में प्रकाशित हुई। उसकी एक लाइन मुझे याद है—'काव्य में रहस्य कोई वाद है न ऐसा जिसे लेकर निराला कोई पंथ ही खड़ा करे।' इसका जवाव पं० मातादीन जी शुक्ल ने उसी तरह कविता में लिख कर दिया। पश्चात् आचार्य शुक्ल जी का 'काव्य में रहस्यवाद' निकला। स्मरण से तमाम नाम नहीं गिनाए जा सकते। इतना ही कहा जा सकता है कि हिन्दी के वीस साल के इतिहास में छायावाद और रहस्यवाद के विरोध और अनुकूल में हजारों सफे रंगे गए हैं और उस समय के जितने वड़े आचार्य थे, मिश्र वंधुओं को छोड़ कर, प्रायः सभी तीव्र विरोधी थे। वनारसी दास चतुर्वेदी अपने पत्र की प्रसिद्धि के लिए यद्यपि एक-एक आदमी और एक-एक विरोधी चुने रहते थे, फिर भी उन्होंने मेरे सम्वन्ध में कुछ देर की और वड़ी समझ से

काम लिया। पं० बनारसीदास से मेरी पहली मुलाकात शायद सन् १९२८ में हुई। उन्होंने मुझे बुलाया था। मैं उनसे मिलने उनके आफिस गया था। वड़ों का जैसा स्वभाव है, उन्होंने वैसा ही वरताव किया—एक, मैं आपका राज्य [राज़] लेना चाहता हूँ। दो, उन्हें आप क्या समझते हैं ? मेरा उत्तर—किन्हें ? बनारसी दास जी ने कहा —किसी का नाम लीजिए। मैंने कहा किसका नाम लूँ ? उन्होंने कहा, बस आप हार गए।

१. मैंने आप को बुला लिया।

२. मैंने आप से वातचीत करायी।

३. और अब मैं आगे-आगे चलता हूँ, आप मेरे पीछे-पीछे आइए।

मैं उनके पीछे-पीछे चला। वस, यही मेरी उनकी पहली मुलाकात और वातचीत है। मछुआ स्ट्रीट के पास मैंने कहा—मैं अब इधर जाऊँगा। उन्होंने कहा—"Go Coward! Don't you know that I am always with the great men; like Mahatma Gandhi & Ravindra Nath Tagore? I can show you the way if you follow me—and I am in the position to give you a superior place to which you are situated."

मैं एक हक्के-वक्के उल्लू के पट्ठे की तरह उनका मुँह देखता हुआ मछुआ वाज़ार स्ट्रीट से 'मतवाला' आफिस के लिए मुड़ा।

इसके वाद 'विशाल भारत' देखने से मालूम होगा कि १९३१-३२ से उन्होंने मेरे विरुद्ध तैयारी करके लिखना शुरू किया। जिन आचार्यों के नाम वह नहीं देना चाहते थे, उनमें पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी और पं० पद्म सिंह शर्मा आदि-आदि रहे होंगे। जिस 'वर्तमान धर्म' शीर्षक, भारत में छपे, लेख को लेकर उन्होंने आन्दोलन उठाया था, उस पर राय देने वालों में कि लेखक पागल है, पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी और प्रो० रामदास गौड़ भी थे। पं० मोहन लाल महतो वियोगी भी पं० वनारसी दास जी के सहयोगियों में हैं। इसका विवरण वहुत वड़ा है। साहित्य उस समय का पढ़िए। पं० नन्ददुलारे जी वाजपेयी ने जो उस समय अर्द्ध साप्ताहिक 'भारत' के सम्पादक थे, इस लेख की विरोधिता का अपने पत्र में सम्पादक की जिम्मेदारी के रूप से सुंदर उत्तर लिखा था। जिन पत्रों ने 'विशाल भारत' के इस आन्दोलन का समर्थन किया था, उनमें एक 'प्रताप' भी है। ऐसे अनेक पत्र एक साथ मेरे खिलाफ हो गये थे। आप जानते हैं, पं० वनारसी दास जी चतुर्वेदी भी अच्छे प्रापगेंडिस्ट हैं। मेरा उत्तर जो 'माधुरी' में संपादक पं० मातादीन शुक्ल की कृपा से निकला, वह 'प्रबंध-प्रतिमा' में आ चुका है।

प्रश्न २—पद्मसिंह शर्मा से क्या आप की कभी भेंट या वातचीत हुई थी ?

उत्तर—पद्मसिंह जी से मेरी कई वार मुलाकात हुई। 'सुधा' के एक साहित्य-अंक का उन्होंने संपादन किया था। उस वक़्त लखनऊ तशरीफ ले आए थे। काफी वातचीत हुई थी। सज्जन, विद्वान् और विनम्र थे। परन्तु प्रचारक का रूप प्रवलतर था। पहले द्विवेदी जी से उनकी पटरी नहीं बैठी। जिसे वे आदर्श हिन्दी समझते थे, उसे द्विवेदी जी नहीं। पुनः उनमें उर्दू और व्रजभाषा के ज्ञान की अधिकता थी, संस्कृत के साथ। उन्होंने मुझ से कहा—"आप हम से वातचीत में शरकत नहीं कर रहे ? हम

एक आन्दोलन आप पर चलवाएँगे। इससे आप की जानकारी की पोल खुल जाएगी।"
यह जहाँ तक स्मरण है, सन् १९२८-२९ की बात है।

प्रश्न ३—आपकी कविताएँ छपने पर आपके प्रमुख विरोधियों में कौन थे और विरोध का कौन रूप था ?

उत्तर—विरोधियों के प्रायः नाम मैं गिना चुका हूँ। छंद, ध्वनि और अलंकार शास्त्र के अनुसार मेरी कविताएँ, उनकी समझ में, नहीं आती थीं। वे समझते थे, ऐसी स्वतन्त्रता स्वेच्छाचारिता है, साहित्य का इससे नाश होता है।

प्रश्न ४—कलकत्ता और लखनऊ के जीवन के बारे में जो विशेष आप बता सकें ?

उत्तर—बंगाल मेरी जन्मभूमि है। इसलिए मुझे बहुत प्रिय है। सिटी-लाइफ़ का जो उपयोग और आनन्द मुझे कलकत्ता में मिला, वह लखनऊ में नहीं। लेकिन लखनऊ के चौदह साल में मेरा साहित्य-सर्जन कलकत्ता के 'परिमल' से अधिक ही महत्त्व रखता है। पं. दुलारेलाल जी भार्गव की कृपा से लखनऊ में मुझे बहुत तरह की सहूलियतें रहीं, लेकिन कलकत्ता का मुक्त, निष्कपट वातावरण, लखनऊ में नहीं मिला। कुछ साहित्यिक मित्र, आपकी तरह के, जो भविष्य के उज्ज्वलतर ज्योतिष्क हैं, लखनऊ से ही मुझे अपना प्रकाश दिखा सके। कलकत्ता में बाबू महादेव जी प्रसाद सेठ, मुंशी नवजादिक लाल जी, पं० लक्ष्मण नारायण जी गर्दे, पं० अम्बिका प्रसाद जी वाजपेयी, बाबू मूल चन्द जी अग्रवाल, पं. जगन्नाथ जी प्रसाद चतुर्वेदी, पं. सकल नारायण जी शर्मा आदि मेरे मान्यजन थे। मित्रों में बाबू शिवपूजन सहाय, उग्र, पं० रामशंकर त्रिपाठी आदि-आदि थे। अन्तरंगों में पं० शिवशेखर द्विवेदी, स्व० दयाशंकर वाजपेयी, स्व. विजय और दुर्गादत्त त्रिपाठी एम०ए० बी-एल आदि थे।

स्वास्थ्य लखनऊ में बहुत अच्छा हुआ। पर मैं स्वास्थ्य का दुर्बल कभी भी नहीं था। लखनऊ का जो प्रभाव मुझ पर पड़ा है, वह मेरे साहित्य के लिए बहुत बुरा नहीं, पर बहुत अच्छा भी नहीं। क्योंकि मेरे [मेरी] पहले की भाषा देखने पर आप ही समझ में आसानी से आ जाएगा कि बैसवाड़े—मेरे घर—की बोली ही मुझ पर ग़ालिब थी। लखनऊ के वातावरण से बैसवाड़े का वातावरण मुझे बहुत पसंद है, कविता के लिए कलकत्ते का। लखनऊ में मुझे एक फ़ायदा हुआ। कलकत्ते की मेरी चढ़ी आँख लखनऊ में झुक गई। मैं समतल पर आ गया। यों एकांतप्रिय मैं कलकत्ता में भी था, लखनऊ में आपने मुझे देखा ही है।

बंगाल में पैदा होने के कारण प्रचुर जलाशयता मुझे बहुत पसंद है। लखनऊ में इसकी कमी थी, जब भी नमी शहर में बहुत है। मेरी बँगला की नफ़ासत लखनऊ की सीढ़ियों से उतरते-उतरते उतर गई। मैं समझा, लखनऊ की भाषा में ही कहूँ, 'ख़ार जारे इश्क़ में मुश्किल जो है मंज़िल में है।' जब तक मेरी आँख खुली है, मैं कलकत्ता को भूल नहीं सकता और लखनऊ की श्रेष्ठता मेरी निगाह में आधुनिक नहीं, प्राचीन है।

प्रश्न ५ – आपके प्राथमिक समर्थकों में सुमन, नन्ददुलारे जी के अतिरिक्त और कौन लोग रहे हैं ?

उत्तर—बाबू महादेव प्रसाद जी सेठ, 'मतवाला'—संपादक, मेरे सबसे पहले और सम्मान्य समर्थक थे। हिन्दी के लिए उनका जैसा प्यार मैंने अन्यत्र नहीं देखा। 'मतवाला' के निकलने का एक मुख्य उद्देश्य मेरी कविताओं का प्रकाश में लाना ही था। वह महत् चरित्र थे। महत् होकर ही गुज़रे। कलकत्ता में उनके पृष्ठ पोषण के कारण मेरे अनेक प्रशंसक थे। बहुत से आवृत्ति के कारण हुए। मुंशी जी का और शिवपूजन जी का नाम लेना अनुचित है क्योंकि हम सब एक ही थे। पं० सकल नारायण शर्मा, पं. लक्ष्मण नारायण गर्दे, पं. चन्द्रशेखर शास्त्री और पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी मेरे समर्थक ही थे, मुझे स्नेह करते थे, प्रोत्साहन देते थे। पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी भी मुझ पर कृपा करने वाले व्यक्तियों में थे। उन्होंने रेल के निकलने की कथा सुनाई थी और कहा था—"हम तुम्हारा विरोध इसलिए करते हैं कि तुम बड़े बनो। बग़ैर तुम्हारा विरोध किये हम रह नहीं सकते। क्योंकि ज़माना हमारे साथ है, तुम्हारे साथ नहीं। तुम बड़े यदि होगे तो इस विरोध से उभर कर।" प्रायः सब विरोधियों के लिए ऐसा ही समझिए।

प्रसाद जी ने जो फ्रीवर्स में दो रचनाएँ की हैं, यह इसलिए नहीं कि वे मेरे अनुगामी हुए, बल्कि इसलिए कि उन्होंने कलात्मिकता से मेरा समर्थन किया। नवीन जी भी मेरे प्रशंसकों में हैं और अमर शहीद पूज्यपाद गणेश शंकर जी विद्यार्थी भी। सुमन और नन्द दुलारे जी तो हैं ही। और अब शायद सभी को फ्रीवर्स की मान्यता स्वीकृत हो चुकी है।

प्रश्न ६—गाँव में कुल मिलाकर आप कितने दिन रहे हैं ?

इसका उत्तर मैं अपने पत्र में दे चुका हूँ। [देखें १८-२-४३ का निराला का पत्र]

प्रश्न ७—अपने नाम से प्रकाशित पुस्तकों के सिवा जीविकोपार्जन के लिए आपने जो लेखन-चर्चा की हो, उसका ज़िक्र करें।

उत्तर—मैंने रामकृष्ण मिशन में प्रायः दो हज़ार सफों का अनुवाद किया। किताबें निकल रही हैं। वात्स्यायन कामसूत्र और कुछ बँगला पुस्तकों का अनुवाद, दूसरों के नाम से, किया है। हिन्दी में लिखी पांडुलिपियाँ शुद्ध की हैं। तुलसीदास की रामायण की टीका लिखी है। पत्रों में बहुत से लेख और नोट लिखे हैं जो मेरे संग्रह में नहीं आए। कलकत्ता से निकलीं ६ किताबें मेरे नाम से हैं, जो बाज़ार के लिए ही लिखी गई हैं। दो नाटक हैं जिनमें एक समाज है दूसरा शकुंतला, जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये। समाज को हम लोगों ने कलकत्ता के मनमोहन स्टेज पर खेला था। कुछ पहली-दूसरी किताबें लिखी हैं जिन पर मेरा नाम नहीं है। एक रस और अलंकार पुस्तिका लिखी है। वह निकली या नहीं, नहीं मालूम।

प्रश्न ८—विरोधी आलोचकों की बातों पर आपकी राय ?

उत्तर—मैंने अपनी चीज़ों का आवृत्ति द्वारा जितना प्रदर्शन किया है, और इस तरह विरोध न होने का निराकरण, उतना मेरे साथियों में किसी ने भी नहीं किया। न किसी ने आवृत्ति में वैसी ख्याति पाई। फिर भी जब विरोध होता है तो यही निष्कर्ष मेरी दृष्टि में है कि यह विरोध का मनुष्य का स्वभाव है।

प्रश्न ९—आगे आपने जो लिखने का विचार किया हो, उसकी रूपरेखा ?

उत्तर—मैं गीतशास्त्र और तुलसीदास जैसी चीजों से अपने साहित्य को अधिक समृद्ध देखना चाहता हूँ। आपसे काफी बातचीत कर चुका हूँ। जव भी मेरी मानसिक स्थिति डाँवाडोल है, फिर भी वह अपूर्णता मुझे वहुत खटकती है कि मेरा काव्यशास्त्र अभी अधूरा पड़ा है। नाटक भी लिखना चाहता हूँ और उपन्यास भी। समय और सुयोग की प्रतीक्षा में हूँ। कुछ तैयार भी कर रहा हूँ।

प्रश्न १०—मेरी पारिवारिक स्थिति आप अच्छी तरह जानते हैं। [नरोत्तम नागर निराला के उत्तर भेजते समय यहाँ प्रश्न लिखना भूल गये हैं। उत्तर से प्रश्न का आशय स्पष्ट है।]

७. सरोज का विवाह

निराला जी के साथ हमारे परिचय और सरोज की शादी में कोई चकित करने वाली औपन्यासिक घटना नहीं है। असल इतना ही है कि दयाशंकर वाजपेयी हमारे गहरे दोस्त थे।—यह सम्बन्ध उनके परिवार से आज भी वैसा ही है। हम लोग पढ़ना चाहते थे हि० सा० सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए इसी मतलब से हम लोग मतवाला गये। कारण वाजपेयी जी सेठ जी को जानते थे। हम लोग निराला जी से पढ़ने के इच्छुक थे। सेठजी बड़े खुश हुए और उन्होंने ही हम लोगों का परिचय निराला जी से कराया। निराला जी ने पढ़ाना मंजूर किया; पर यह केवल भावुकता थी। फलतः ३ माह लगातार जाकर और जैसे के तैसे लौट आकर वाजपेयी जी ऊब गये और पढ़ना वन्द कर दिया। हम जाते ही रहे। वहीं से हमने विशारद की परीक्षा दी। इस तरह हमारे धैर्य ने संबंध दृढ़ किया। साथ ही इस अर्से में उनकी कुछ कठिनाइयों में भी हम लोग यथाशक्ति काम आये। इसलिए विश्वास करने का उनका मन निश्चिन्त हुआ। तव से बराबर संबंध रहा।

अचानक सरोज की समस्या आयी। वे घर थे। पैसों की तंगी थी। एक रचना वेचने के लिए वे गाँव से गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ पैदल ही गये। फिर काम बना। किन्तु जो कुछ वसूल होता, उसका आधा, कभी-कभी आधे से अधिक कवित्वशक्ति की उत्फुल्लता में वहीं खर्च हो जाता। इस प्रकार जरूरत भर की रकम का संग्रह ही असंभव था।

फिर भी उनकी कामना थी, पास-पड़ोस में किसी अति कुलीन के घर सरोज की शादी करने की। दो एक जगह चर्चा भी उन्होंने की। पर कहीं से कोई सहानुभूति न मिली। तव उन्होंने हमारे लिए श्री दयाशंकर वाजपेयी को लिखा। वाजपेयी ने हमें कुछ वताने के पहले ही स्वीकृति भेज दी। फिर हमें वताया। इसके तीन माह के बाद हमें गढ़ाकोला जाने के लिए तार मिला। हम वहुत ही श्रद्धा करते थे। हम गये और वहाँ जाकर देखा; कुछ भी पास नहीं है। सिर्फ नब्वे रुपये हमारे पास थे। यही धन हमारी शादी में सहायक था। विना किसी आडम्बर के उन्होंने जैसा चाहा, वैसा हमने पूरा किया। पुरोहित को वे मनोनुकूल देने में असमर्थ थे। इसीलिए वे पुरोहित थे।

माली का काम भगवान वेद व्यास और महाकवि तुलसीदास ने किया—गीता-रामायण ही मौर्य-मौरी थे।

साहित्यिकों में श्री पं० नंददुलारे जी वाजपेयी और स्व० पं० आनन्द मोहन जी वाजपेयी उपस्थित थे। इस कृत्य के बाद दो सप्ताह वहाँ रह कर हम लौट आये। सरोज वहीं रही। वह पूरे डेढ़ साल बाद हमारे घर आयी, जब हम वहाँ दोबारा गये।

सरोज की विदाई उसके ननिहाल से हुई थी। कारण, जीवन में स्नेह—सच्चे स्नेह के नाते जो कुछ उसे प्राप्त था, एकमात्र नानी से। उसी ने ६ मास की इस मातृ-हीना बालिका का पालन किया था। उस वृद्धा के स्नेह की सीमा न थी और सरोज को किसी भी मूल्य पर उससे वंचित करना कठिन था।

इस प्रकार हमारा अटूट संबंध १४ साल तक साथ रहने का—कलकत्ते और लखनऊ का था। बाद, घर की हमारी कठिनाइयाँ हमारी लापर्वाही से इतनी बढ़ गयीं कि जिन्हें हम हल न कर सके। हमें अपनी ही उलझनों में कसे रहना पड़ा।

बस। इतनी ही मूल बात है। तिल का ताड़ करने के लिए १४ साल के लम्बे अर्से में काफी मसाला है, पर अब उसकी चर्चा हमें न तो प्रिय है, न निराला जी के यश: शरीर में उसका योग उपयोगी।

कलकत्ता : ५-३-६२

शिवशेखर द्विवेदी
(रामविलास शर्मा को पत्र)

८. सरोज की बीमारी और मृत्यु

सरोज की कहानी लम्बी है। वह पहले पहल बीमार हुई—अचानक काँख में (बाईं) फोड़ा हुआ। देहात में दवा होती रही। फल न हुआ। महीनों बाद पता चला अँधा फोड़ा है। वह उस समय ननिहाल में थी। नानी ने पाला था। वहीं इलाज कराती थीं और जब देहात में ऊब गयी तथा सांघातिक फोड़ा है, पता चला, तब वह उसे लेकर रायबरेली हास्पिटल गयीं। वहाँ आपरेशन हुआ। किन्तु कंधे के ऊपर नासूर हो गया, यह बात ७ बार के आपरेशन के बाद जानी गयी। वह बराबर १४ माह वहीं रही और देखभाल के लिए उसका ननिहाल का पूरा परिवार भी। खर्च वे लोग ही चलाते थे। बीच-बीच में हमसे और निराला जी से कुछ मदद उन्हें मिलती थी, पर मदद यह नगण्य ही थी।

१४ माह के बाद निराश होकर वे लोग उसे लेकर घर चले गये। वहाँ अचानक एक परमहंस से भेंट हुई और उनकी दवा से नासूर अच्छा हुआ।

फिर थोड़े दिनों बाद वह ज्वर से पीड़ित हुई। दवा होती रही। यह ज्वर प्राय: साल भर तक बना रहा। इस दफे बांदा के एक वृद्ध अनुभवी वैद्य ने निदान किया कि उसे यक्ष्मा है और अब चरमसीमा पर रोग है। तब एक्सरे हुआ। पता चला बाँया पंजर खराब गया—हर पसली छिद्रों से नष्ट है। फलत: दवा के साथ ही उसके गंगा की धारा में रखने का आदेश हुआ। वैद्यों और डा० ने कहा, ११ वर्ष पार होने पर इसके संभलने की आशा बँधेगी। एक माह से अधिक गंगा की धारा से सटे डलमऊ

के एक मठ में रखने की व्यवस्था थी। वहीं श्रावण शुक्ला प्रतिपदा को करीब साढ़े ग्यारह बजे वह सदा के लिए शान्त हो गयी। नानी की गोद में ही पली, उन्हीं की देख-रेख में रही और उन्हीं के प्यार की गोद में मरी भी। असल में इस दुनियां में सम्पूर्ण निर्दोष और सच्चा स्नेह उसे अपनी नानी का ही प्राप्त था। बस।

शिवशेखर द्विवेदी
(रामविलास शर्मा को पत्र)

कलकत्ता : २२-३-६२

६. जैसे अभी अभी रोगशय्या से उठे हों

निराला जी के यहाँ जब मैं पहुँचा तो वे बैठे चौका लगा रहे थे। घर में अंधकार छाया हुआ था, ऊपर के एक कमरे के कोने में मिट्टी का छोटा सा दीपक अवश्य टिमटिमा रहा था। केश और दाढ़ी मूछ बढ़े हुए, अस्तव्यस्त, जैसे अभी २ रोग शय्या से उठे हों। मुझे बिजली की करेंट का धक्का सा लगा, दिल दहल उठा, पर चुपचाप उनकी ओर ताकता खड़ा रह गया। वे थोड़ी ही देर पहले शाम का भोजन पकाकर उठे थे। मुझे देखकर बहुत ही खुश हुए। बिना कुशल समाचार पूछे ही बोल पड़े, आज खाना ज़्यादा बना लिया था, सोच ही रहा था कि इतना खाना कौन खाएगा? पर तुम अच्छे आ गए, अब खाना खाकर ही जाना। फिर घी की और दूध की तारीफ़ के पुल बांध दिए। आज बहुत ही बढ़िया घी लाया हूँ, ऐसा तो बैसवारे के गांवों में भी मिलना दुर्लभ है, आजकल। बहरहाल मुझे जबरदस्ती बिठाकर खिलाया। और सच पूछो तो खुद भूखे रह गए। मुश्किल से दो या तीन रोटियां खाई होंगी। तीन चौथाई दूध भी रोटी मीसकर मेरे सामने रख गए, बहुत मना करने पर भी नहीं माने। कहने लगे कि तुम आदमी हो कि क्या हो। मैं बेवकूफ़ हूँ जो तुम्हारे लिए भूखा रह जाऊंगा। मुझे चारपाई पर गद्दा बिछाकर सुलाया, स्वयं खरेरे तख़त पर सोए। तुम्हारे कुशल समाचार पूछे। तुम्हारी वाली पुस्तक का तो उन्हें पहले ही पता लग चुका था, पता नहीं कैसे, शायद तुम्हारे ही द्वारा। खाने के पहले एक पोटली में बँधा हुआ आटा अन्दर से लाए और मटकी में भरने लगे। मैंने कहा लाइए मैं भर दूंगा, आप नहाने जाइए, तो बिगड़ पड़े। फिर जब स्नान करने जाने लगे तो उसी कपड़े को जिसमें आटा बंधा हुआ था, झाड़ कर पहनने के लिए ले गए। सब कपड़े मैले हो गए थे। धुलवाने की कौन फ़िकर करे? घर तो तुमने देखा ही है। कच्चा, खपरैल की छत और सीलन।

सोते समय मैंने गवालियर चलने की बात की तो सफा नाहीं कर गए। मैंने बड़ी चिरौरी मिन्नत की पर वे अपने निश्चय से न डिगे। डा० महावीर सिंह की ओर से संदेश भी दिया। तुम्हारा भी नाम लिया पर वे टस से मस न हुए। फिर पन्त जी के विषय में बड़ी व्यग्रता से पूछते रहे। प्रातः काल भी मुझे रोक लिया। कलिया बनाकर खिलाई अपने हाथ से। मेरे सोकर उठने के पहले ही बाजार से जलेबी लाकर रख दी थी। रात को उनके मना करने पर भी लगभग एक घंटे मैंने हाथ पैर और शरीर दबाया था, पहले तो मना किया पर बाद में चुपचाप दबवाते रहे। बारह बजे मुझे जबरदस्ती

सुला दिया। दिन में फिर मैंने गवालियर चलने पर ज़ोर दिया तो कहने लगे कि पुस्तकें आधी छप चुकी हैं, मेरे पास उनके प्रूफ भी आने लगे हैं, मैं विना पुस्तकें पूरी किए कहीं आ जा नहीं सकता। कुछ कितावों के प्रूफ भी दिखाए। खासकर उसके जो महादेवी जी के संसद की ओर से छप रही थी। फिर कहने लगे अभी 'चोटी की पकड़' नामक आलोचनात्मक पुस्तक पूरी करना है और विना उसे पूरा किए मैं कहीं आ जा नहीं सकता। तुम्हें यह लिख देने को कहा कि पुस्तकें पूरी हो जाने पर—लगभग दो महीने वाद—एक सप्ताह के लिए—केवल एक सप्ताह के लिए आगरे आऊँगा और फिर वहाँ से शायद गवालियर भी एक सप्ताह के लिए चला जाऊँ पर गवालियर के वारे में अभी कुछ निश्चय नहीं कह सकता। मेरी सारी मनुहारें व्यर्थ हो गई, दिल इतना गिरा गिरा रहा कि तुम्हें क्या लिखूं, कुछ समझ में ही न आया। हो सकता है उन्हें गवालियर लाने के लिए ज़िद करने में मुझ से कुछ मनोवैज्ञानिक भूलें हो गई हों, जो शायद तुम होते तो न होतीं। यह मैं अव अनुभव कर रहा हूँ। आजकल गज़लें भी अच्छी लिख रहे हैं। अभी नई छै गज़लें लिखी हैं। मुझे पढ़ने को दी थीं। जव सो गए तो उन्हें मैंने एक कागद पर उतार लिया। उपयोग करने की इच्छा है। कुछ काफी सुन्दर वन पड़ी हैं।

ग्वालियर : [१९४४] शिवमंगलसिंह 'सुमन'

(रामविलास शर्मा को पत्र)

१०. आखें सजल हो गईं, वोले कुछ नहीं

'निराला' जी सकुशल एलाहावाद पहुंच गए। यहाँ जव तक रहे काफी स्वस्थचित्त रहे। एक दिन मुरार गए थे और एक दिन डा० महावीर सिंह के यहाँ गोष्ठी में। मुरार में उन्हें १५१) की थैली भेंट की गई जिसे उन्होंने पहले तो साहित्य सभा को दे देना चाहा पर मिलिन्द जी और हरिहरनिवास जी आदि के अनुरोध करने पर स्वीकार कर लिया। सवसे अच्छी वात तो यह रही कि वे डा० महावीर सिंह जी से वहुत प्रसन्न हो गए हैं, यहां तक कि, एक वार वोले कि अवकी वार जव आएँगे तो डा० सा० के ही यहाँ ठहरेंगे। डा० सा० ने उनके Blood-pressure आदि की जांच भी की। वड़ी खुशी २ जाँच करवाई। फिर डा० सा० ने कहा कि मैं आपके पूरे शरीर का X-Ray लेना चाहता हूँ तथा Blood, stool और urine तीनों की परीक्षा करना चाहता हूँ। इस पर वहुत खुशी से स्वीकारोक्ति दे दी। यह शर्त्त अवश्य लगा दी कि इस वार मुझे समय नहीं है। दूसरी वार आऊँगा तो आप फुर्सत से मेरे शरीर की जाँच कर सकते हैं। उनकी मुखाकृति से भी यह मालूम पड़ रहा था कि इस प्रस्ताव से वे वहुत संतुष्ट हुए हैं। तुम जानते ही हो कि निराला जी वहुत सी वातें चाहने पर भी व्यक्त नहीं करते, चुपचाप पी जाते हैं, विशेषतः व्यक्तिगत हर्षपुलक संवंधी [।] दो तीन दिन भी रुक जाते तो रक्त-परीक्षा हो गई होती, पर वे नहीं माने और अधिक हठ करना उचित नहीं मालूम पड़ा। यहाँ से लखनऊ गए थे। झांसी तक मैं स्वयं पहुंचाने गया था। फिर उन्होंने मुझे आगे नहीं जाने दिया, शायद जान गए कि मैं

उन्हीं के कारण जा रहा हूँ [।] झाँसी पर पूरी वर्थ सेकंड क्लास की खाली मिल गई थी, उसी पर मैंने विस्तर लगा दिया था। वहाँ चलकर गाड़ी लखनऊ ही खड़ी होती है, पूछा भी कि लखनऊ आप किसके यहाँ ठहरना चाहेंगे जिससे मैं तार दे दूँ। पर उन्होंने कहा कि कोई आवश्यकता नहीं, रामविलास का घर तो है ही। वहाँ उनके छोटे भाई मिल ही जायँगे। चलते समय मैंने कुछ भावुक शब्द कह दिए जिस पर उनकी आँखें सजल हो गईं, वोले कुछ नहीं, केवल शून्य में ताकते रह गए। मैं पैर छूकर वाहर निकल आया, गाड़ी चल दी।

ग्वालियर : ३१-३-४५

शिवमंगलसिंह 'सुमन'
(रामविलास शर्मा को पत्र)

११. स्वस्थ देह, भद्रवेश

अच्छा, निराला जी के वारे में लोकयुद्ध ने जैसी खवर फैला रखी थी, या उस लेख से फैल गई थी, उसका दसवाँ अंश ही शायद ठीक हो। निराला जी जैसा खुद बता रहे थे कि उनके मित्र ने कहा कि "हम तो सुना रहै कि तुम भूख हड़ताल कइ रहे हो मुला तुम खाय खाय कै पड़वा ह्वै रह्यो है।" वात यही ज्यादा सच थी। निराला जी को ऐसा तंदुरस्त हमने भी कभी ही कभी देखा है। उस दिन सफेद तहमत, रेशमी कुर्ता और गांधी टोपी लगाये हुए थे। विद्यार्थी जी ने आवाज दी—चौवे जी—। वाहर निकल कर आये तो निराला जी को देखा। हम अचंभे में रह गये। दफ्तर से आये थे। दूर से ही हमने नमस्कार किया और जवाव मिला नमोनमः। वाद में मुंशी आये और पैर छुए। शिवप्रसाद आये तो पैरों पर सिर ही रखकर रगड़ने लगे। निराला जी वाहर तखत पर पल्थी मारे वैठे थे। हमने कहा, यह हिमाकत हमसे न होगी, पता नहीं विगड़ने लगें। हम उनसे थोड़ी थोड़ी वातचीत करते रहे पर अपना दाँव तैयार रखे थे कि कुछ उल्टी पुल्टी वात कहें तो वैसा ही जवाव दें। यह सीखा तो हमने तुम्हीं से है। मगर निराला जी वहुत प्रसन्न थे। ऐसी कोई वात नहीं हुई। मुंशी ने जो एक मजेदार प्रश्न पूछा, वह यह कि निराला जी आप जाइयेगा कव? निराला जी ने कहा, रात वाली गाड़ी से।

एक सिगरेट पी रहे थे। आधी से ज्यादा जल गई थी। और उंगली के पास सरक रही थी। वात करते करते उसे जमीन पर फेंक दिया, फिर तहमत सँभालते हुए उतरे और उसे उठा लिया। वोले, दुनियाँ में देखो कितना वेस्टेज होता है, और उसे पीने लगे। थोड़ी देर वातें करते रहे कि अचानक उँगली की तरफ आग पहुंचने पर फिर उसे फेंक दिया और फिर तहमत सँभाल कर उतरे और उठा लिया—वोले, देखो आदत कितनी खराव है। ज़रा-सी आंच उँगली में लगी कि सिगरेट अपने आप ज़मीन पर चली जाती है और एक फूंक उन्होंने फिर खींची। हमने पूछा, निराला जी, कौन सी सिगरेट है। वोले—होगी कैप्स्टन, डिलक्स, नेवीकट।…टेनर है टेनर। थोड़ी देर वाद खाना मँगाया। चावल दाल तरकारी नियमानुसार एक करके खा गये और कहने लगे आप

लोगों के यहाँ बड़ा सात्विक भोजन बनता है। हमें शक हुआ कि कहीं इन्हें नमक तो कम नहीं लगा। थोड़ी देर बाद बोले, चलना चाहिये—सेकंड क्लास टिकट भी लेना है। हमने कहा—कहाँ यह सेकंड क्लास ट्रैवेल और कहाँ सिगरेट को बार बार जमीन से उठाकर पीना। यही इनके दिमाग की विचित्रता है।

घंटा डेढ़ एक हो गया था। कहने लगे, चलो घूम आयें। हमने सोचा जितना साथ हो उतना ही सही। रामकिसन के यहाँ गये। रास्ते में निराला जी बोले कि रिसर्च करो। इससे ज़्यादा लाभ होगा। दो चार आदमी आपस में भी तैयार होने चाहिये। फिर रुक कर हाथ से बल्ले दबा कर देखे। बोले, पहले से दुबले भी हो। हमने कहा, क्या करें। जो काम कर रहे हैं वह हमारी बहुत रुचि का नहीं है पर आवश्यक तो है ही। रामकिसन के यहाँ गवैयों की मंडली बैठी थी। हम, मुंशी, निराला जी बाहर बैठ कर गाना सुनते रहे। शिवप्रसाद कमरे के अन्दर ठेका देने चले गये। ठेका देने में शिवप्रसाद एक दफे दो मात्रा पहले ही सम दिखा गये तो रामकिसन ने निराला जी स्टाइल में डाट बताई।

मुंशी और रामकिसन सामान इक्के पर रखकर स्टेशन आये और रामकिसन ने एक 2nd क्लास में सामान रख दिया। बाद में निराला जी हमारे साथ आये और सामान बर्थ पर बिछाने लगे तो टी० टी० आई ने उज्र किया। सब बर्थ्स रिजर्व थीं। देखिये पहले ही से कार्ड लगे हैं। निराला जी को इंटर में आना पड़ा। बोले, अच्छा ही हुआ। हमें लोगों के लिये 2nd का सफर मँहगा भी पड़ता है। जगह उसमें काफी थी। धीरे २ और लोग आने लगे। गंगा, लल्लू, शिवप्रसाद, गिरजा, मुंशी सभी लोग आ गये। गंगा के आने पर निराला जी का कुछ साहित्यिक पिटारा खुला और थोड़ी देर में धुंवा, कंकड़-पत्थर उसमें से उछलने लगे। हमें डर लगा कि कहीं शेर से लड़ाई न होने लगे पर मामला शांत ही रहा। जब सब लोग विदा होने लगे तो उन्होंने फिर कहा कि देखो रिसर्च करना। यह जरूरत का काम है। घर आने पर उनकी एक बात याद आई, वह यह कि 'तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी थी, अच्छा लिखते हो, नन्ददुलारे तुम्हारे गद्य की तारीफ करते थे।' हम में थोड़ी सी उदासी आ गई। तुम समझ गये होगे क्यों।

लखनऊ; १-४-४५ रामस्वरूप शर्मा

(रामविलास शर्मा को पत्र)

[बंबई से प्रकाशित होनेवाले कम्युनिस्ट पार्टी के साप्ताहिक "लोकयुद्ध" में निराला की चिन्ताजनक स्थिति का जो विवरण छपा था, पत्र के आरंभ में उसीकी ओर संकेत है। पत्र लेखक रामस्वरूप शर्मा—उर्फ चौबे—मेरे छोटे भाई, हिन्दी में एम्.ए. पास करने के बाद, उन दिनों किसी दफ्तर में नौकरी कर रहे थे। लल्लू—रामप्रसाद यादव, मेरे और बाद को निराला के मित्र, हम दोनों के मकान मालिक; शिवप्रसाद—लल्लू के छोटे भाई, संगीतज्ञ, हास्य-विनोद की सजीव मूर्ति। निराला के चरणों पर सिर रगड़ना उनकी भक्ति से अधिक उनकी विनोदवृत्ति का परिचायक था। विद्यार्थी जी—प्राणि-शास्त्र पर अनेक पुस्तकों के लेखक, लखनऊ में मेरे पड़ोसी, जब-तब अखाड़े के सहयोगी—रामदास विद्यार्थी। गंगा—कहानी-उपन्यास लेखक—गंगाप्रसाद मिश्र।

मुंशी—रामशरण शर्मा, रामस्वरूप से छोटे मेरे भाई; गिरजा—मैया के साले।
निराला इस युवक मंडली में मन से घुलमिल जाते थे।)

१२. करवी के जंगल और शेरों से मुकावला

शाम को एक दिन इला- में निराला जी के यहाँ पहुँचे। मकान तुम जानते ही होगे। आँगन में पहुँच कर आवाज लगाई तो वोले कौन? हमने वताया तो कहने लगे कि ऊपर आ जाव। अव हम चारों ओंर देखने लगे तो ऊपर जाने का रास्ता ही न मिले। जिधर जाँय उधर ही सामने दिवाल। खैर थोड़ी देर में सफल हुए और छत पर पहुँचे जहाँ निराला जी टहल रहे थे। हमने पैर छुए। पास में एक कुर्सी पड़ी थी [,] उसी पर वैठने को उन्होंने कहा। और उनका पहला प्रश्न हुआ कि कहो कसरत करते हो। हमने हामी भरी। मिलने पर प्रायः वह इस वात को अवश्य पूछते हैं। हमसे खासतौर से क्योंकि एक मर्तवा हम अपने एक शो में उन्हें युनिवर्सिटी ले गये थे। इसके पश्चात् घर के वे और हालचाल पूंछने लगे। तुम्हारे विषय में भी पूंछ रहे थे। वोले इला-मे कहाँ जाओगे [।] हमने वताया कि करवी विदा करवाने जा रहे हैं। वोले—करवी के उधर वड़ा जंगल है। हम भी वहाँ कई वरस रहे हैं। रात को झुटपुटा होने के वाद कभी घर से वाहर न निकलना। और इसके वाद उनकी वाघों वाली कथा का श्रीगणेश हो गया जो तव तक समाप्त न हुई कि जव हमने स्वयं ही कह दिया कि—अव हम चलेंगे। रात हो रही है और अँधेरा होता जा रहा है। शेरों और वाघों की कथा का हाल पहले भी तुम्हारे मुँह से सुन चुके थे पर निराला जी से पहले ही पहल सुनने को मिला। कहने लगे "वहाँ से मैंने चार २ शेर पकड़वा कर लखनऊ भिजवाये हैं। पहले किंग कमीशन आता था। मुझे वहुत परेशानी रही। ट्रेन तक में इन्होंने पीछा नहीं छोड़ा। एक दफे एक शेरनी हमारी छत पर आ गई। तुम जानते हो कि लियोपर्ड कितनी छलांग मार सकता है। अच्छा तुम्हारा कभी साविका पड़ा है?" इसका हम क्या जवाव देते। चुप रहे। पर इन सव वातों को न समझते हुए भी वहुत कुछ समझ गये। निराला जी की यह वातचीत रूपक में होती है पर उनका लक्ष्य किस ओर है इसको हम पूर्णतया निश्चित नहीं कर सकते क्योंकि वह रूपक कहीं-कहीं पर इतना मैटर ऑफ फैक्ट हो जाता है कि यह भ्रम होने लगता है कि यह लक्ष्यार्थ से वात कर रहे हैं या जो कुछ यह कह रहे हैं—इनका उतने से ही मतलव है। पर वात तत्व की है अवश्य। इसको दिमाग का फितूर कहना शायद उचित न होगा। इसी वीच में वह वहुत-सी गालियों के रूप में वेहूदी वातें भी वकते रहे। उनके साथ जो स्वामी जी रहते हैं उनसे भी वीच-वीच में हुँकारी भरवाते जाते थे। उनका निराला जी के साथ न जाने कैसे निवाह हो जाता है। जव उन्होंने हमसे पूछा कि हमारा भी साविका पड़ा है कि नहीं तो मन में आया कि वात को स्पष्ट करलें पर समय की कमी, और लड़ाई हो जाने के भय से हमने वैसा नहीं किया। वीच २ में मिठाई, दूध, वगैरह के लिये पूछते गये और हम नाहीं करते गये। वह चौराहे तक छोड़ने आये। वोले आइसक्रीम पी लो।

हमने सोचा अब नाहीं करना ठीक नहीं और उस खातिरदारी के बाद घर चले आये। निराली जी जहाँ रहते हैं वहाँ अपने ही आप प्रसिद्ध हो जाते हैं। उनका मकान ढूंढने में हमें जरा भी कठिनाई नहीं हुई।

लखनऊ : २३-१०-४५

रामस्वरूप शर्मा
(रामविलास शर्मा को पत्र)

१३. मैले कपड़े, धूलि-धूसरित

संसद के कवि सम्मेलन में एक महीने पहले प्रयाग गया था, उन्हें देखकर सन्न रह गया। बड़ी बुरी हालत थी। मुझे घर तक में नहीं घुसने दिया; कहने लगे 'हुआँ मेहरिया बैठी हैं, हुआँ जइहौ तो मारि २ चोकरा कइ डरिहैं।' बहुत कोशिश की पर वे एक न माने। तुम्हारा ज़िक्र आया पर तब भी 'हाल' में ही रहे, कहने लगे रामविलास जी आपके मित्र होंगे, मेरे तो उनसे कोई विशेष सम्बन्ध नहीं। मैं सन्न रह गया। पागलपन की सीमा थी। मैले कपड़े, धूलधूसरित, हाँफते से।

बनारस : २४-१२-४५

शिवमंगलसिंह 'सुमन'
(रामविलास शर्मा को पत्र)

१४. रात भर जगते हैं, सोचते हैं, हँसते हैं

इधर मैं एक दिन इलाहाबाद गया था, पिता जी से मुलाक़ात हुई; कुछ देर बातचीत हुई, फिर उन्होंने मुझे विदा होने के लिए कहा, किंतु मैं अपनी तरफ से उस दिन रह गया। उनकी 'अपरा' 'चोटी की पकड़' और बेला आदि पुस्तकें छपने के क़रीब थीं, शायद अब छप गई होंगी। उनका रहन-सहन देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ। निहायत गन्दे कपड़े, कई दिनों में खाना पकाते हैं, राशन वगैरह के झंझट से सिर्फ़ साग ही उबाल कर खा लेते हैं। सारा जाड़ा खत्म हो गया, एक चादर तक न ओढ़ी, यूँ ही काट दिया। रास्ते में चाय ली, कुल्हड़ हाथ में लिए पीते हुए चले जा रहे हैं। लोग हँस रहे थे। उनकी बातें बहुतांश में न समझ सकने वाली होती हैं। रात भर जगते हैं, सोचते हैं, हँसते हैं। इन बातों को देखकर, मुझे आप की बात याद आई। आप सही कहते थे। आप तो जानते हैं, वह मेरी कोई बात मानेंगे नहीं, न मुझ में उनसे कुछ कहने का सामर्थ्य ही है। हाँ, आप लोग कह सकते हैं और ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं कि कुछ दिनों उनका सोचना और लिखना बन्द रहे। शायद इससे लाभ हो। क्या करूँ, जब से लौटा हूँ, चित्त को बड़ी अशान्ति रहती है।

लखनऊ : १६-२-४६

रामकृष्ण त्रिपाठी
(रामविलास शर्मा को पत्र)

१५. चौमंज़िला मकान, २४ परी संगमर्मर की

निराला जी अभी तक यहीं हैं। मामा की हालत बहुत खराब हो गई है। छोटा बच्चा डेढ़ महीने बाद मीयादी बुखार से उठा है। मैं इन्हीं झंझटों में फँसा हूँ।

कुछ नहीं कर पा रहा और न कहीं जा सकता हूँ। बीच में आर्थिक कठिनाई पड़ गई थी किन्तु किसी प्रकार निपट गए। चार महीने में अभी १००) निराला जी के आए हैं, वह भी कहीं से अग्रिम लिया है। और, एक करोड़ का हिसाब कहते हैं हुआ अब तक। चौमंजिला मकान है उनका, उसमें २४ परी संगमरमर की हैं। मगर, रहेंगे ससुराल में या किराये के मकान में।

डलमऊ; २२-८-४६

रामकृष्ण त्रिपाठी
(रामविलास शर्मा को पत्र)

१६. सरकारी सहायता के नमूने

10. 9. 59

No. CA-5/APP/59-60/2220

Subject:—Financial assistance to persons distinguished in arts etc. who may be in indigent circumstances. Case of Sri Surya Kant Tripathi, 'NIRALA'.

In continuation of this office letter No. CA-5/APP/58-5676 dated 31. 3. 59 on the above mentioned subject, I am to state that as sanctioned by the Government of India Ministry of Scientific Research & Cultural Affairs, in their letter No. F. 1-57/59-C-4 dated 5. 8. 59, you are hereby authorised to continue to pay a sum of Rs 100/-p.m. (Rs one hundred only) for one year beginning from March 1959 to District Magistrate Allahabad for payment to Sri Surya Kant Tripathi NIRALA, a Hindi Poet of Allahabad on presentation of a duly receipted bill in Form No. TR-42 supported with a life certificate of Sri Nirala signed by the District Magistrate of Allahabad.

22. 7. 60

No. CA—5/APP/60—61/1301

In continuation of this office letter No. CA-5/APP/59-60/2220 dated 10. 9. 59, I am to state that as sanctioned by the Govt. of India Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs, in their letter No. F. 1-95/C-4 dated 13. 7. 60, you are hereby authorised to pay a sum of Rs 100/- p. m. (Rs one hundred only) for one year beginning from March 1960 to District Magistrate, Allahabad on behalf of Sri Surya Kant Tripathi NIRALA, a Hindi poet of Allahabad on production of receipted bill in form TR-42 duly supported with a life certificate attested by the former District Magistrate of Allahabad.

The expenditure, involved, is debitable to the head, "57-Mis.c Central, B 3 Misc. & Unforeseen charges (Non-Plan) B3(2) Misc. expenditure lump sum grants or allowances etc" and is adjustable in the books of the office.

Payments :—

1. March 59 to August 59	600/-	3. 10. 59
2. Sept. 59 to Dec. 59	400/-	7. 1. 60
3. Jan. 60 to Feb. 60	200/-	3. 3. 60
4. March 60 to Sept. 60	700/-	17. 10. 60
5. Oct. 60 to Dec. 60	300/-	20. 1. 61
6. Jan. 61 to Feb. 61	200/-	11. 3. 67

[रमेशचन्द्र दुबे के प्रयत्न से प्राप्त]

१७. अग्निचक्र से मुक्ति

निराला जी से संबधित एक छोटी सी फिल्म बन रही है, यू०पी० शिक्षा प्रसार विभाग की ओर से। उन्हें लखनऊ के वे स्थान दिखाये जहाँ निराला जी रहते थे। फिर अमृत नागर को लेकर इलाहाबाद गया। अब तुम से क्या वर्णन करूँ। कवि खाट पर बैठे थे। बाल काफी सफेद हो गये हैं लेकिन घने हैं अब भी। और दाढ़ी भी कुछ respectable हो गयी है, पहले की एकदम हुमायूँ जैसी नहीं है। आँखों की ज्योति भी अधिक स्पष्ट है। अब बुदबुदाते नहीं हैं; न उँगलियाँ चलाया करते हैं; न उठकर घूमने लगते हैं। अपने श्वेत वर्ण, अंग्रेजी-ज्ञान, सम्पत्ति आदि की फंटसी रचने के बाद बोले कि लंबे भाषण से तुम्हें परेशान किया! महाशुभ चिन्ह! विक्षिप्त होने की पहली मंज़िल में यही लक्षण थे। हमारा प्यारा कवि नरक-यात्रा करके फिर स्वर्ग की ओर उठ रहा है। कितनी बार Lear पढ़ते-पढ़ाते हुए मैंने उन्हें याद नहीं किया। लियर ने विक्षिप्त अवस्था के बाद जब पहली बार ज्ञान नयन खोले और सामने angel जैसी अपनी निर्दोष कन्या Cordelia को देखा तो कहा :

You do me wrong to take me out o' the grave.
Thou art a soul in bliss ; but I am bound
Upon a wheel of fire, that mine own tears
Do scald like molten lead. (iv,7)

उस अग्निचक्र से निराला जी भी बँधे रह चुके हैं। अब मानों grave में एक पैर रहते हुए भी वे दुनिया को झाँक कर देख रहे हैं, उसे फिर पहचान रहे हैं।

हाँ, तो उन्होंने अमृत को और मुझे खाट पर बिठाया। पैरों पर रजाई डालने को कहा। जलेबियाँ आईं। अमृत ने चारपाई पर ही खाना शुरू किया। निराला जी ने कई बार कहा—तुम टपका दोगे लेकिन अमृत आश्वासन देते रहे कि रजाई खराब

न होगी। और निराला जी ने पैरों पर से रजाई खींचकर एक ओर रख दी। फिर मिल्टन पढ़ने को कहा। कुछ समय बाद उन्हें ख़याल आया कि उसमें [मिल्टन वाली पोथी में] फ़ारसी की पहली किताब रखी थी। खोज शुरू हुई। पुस्तक (Milton) में तो थी ही नहीं। हम खाट छोड़ कर उठे। रजाई उठाकर देखी। फिर इधर-उधर की बात हुई। लेकिन ध्यान उसी किताब पर। जेबें देखने को कहा। हम लोगों ने अपनी जेबों की खुद तलाशी ली। कमला शंकर ने कहा कि दूसरी मँगा देंगे। फिर इधर-उधर की बातें हुईं। और बीच-बीच में तब भी उसी किताब का ज़िक्र। किसी बूढ़े बाबा को जैसे अपने नातियों से प्यार होता है, वैसे ही महाकवि को अपनी पुस्तकों का मोह है। उस अल्मारी में—जिसमें किवाड़े नहीं हैं—उनकी सारी संपदा है। वैसे सामने की बड़ी कोठी उन्होंने अपने भक्तों के लिये अपनी रायल्टी से बनवा दी है।

किस तन्मयता से उन्होंने "सिरि रामचंद्र कृपालु भजु मन" हारमोनियम लेकर गाया। एक बार '३४-'३६ का निराला फिर उदय हुआ। भारति जय विजय करे! टूटें सकल बन्ध! नयनों के डोरे लाल! बँगला के कई गीत, विवेकानन्द की एक बँगला कविता! लगभग दो ढाई घंटे तक गाते रहे।

शाम को शिक्षा प्रसार विभाग के Studio आये। लेकिन वहाँ उन्होंने किसी को इंच भर भी lift न दिया। काली टोपी, काला बंद कालर का कोट, धोती, मोज़े, जूते—ख़ासे भलेमानुस लगते थे। काश! ये इलाहाबादी......उन्हें उस गली से निकाल कर किसी बँगले में बसा पाते। दो महीने में निराला दूसरा हो जाता।

रामविलास शर्मा
(केदारनाथ अग्रवाल को पत्र)

आगरा :
[जनवरी, १९५९]

१८. पौत्री के विवाह का उपक्रम (१)

कल प्रयाग में गुरूजी से निराली भेंट हुई। वाचस्पति जी पाठक के दफ़्तर में कल सुबह दस बजे वर्षों के बाद श्री रामकृष्ण त्रिपाठी मिले थे। उनकी बड़ी लड़की भा० छाया का विवाह लखनऊ जिले के इस्माईल गंज ग्राम निवासी शुक्लों के लड़के से तय हुआ है। लड़का एम. एस-सी० में पढ़ रहा है। रामकृष्ण बोले कि लड़के के पिता हमारे मित्र हैं इसलिए तीन हजार पर मान गये हैं, १७ फ़रवरी को तिलक देना है और निराला जी रॉयल्टी की रसीद पर दस्तखत करने से इन्कार कर रहे हैं। पाठक जी चार हजार रुपयों की चैक और रसीद तैयार किये बैठे थे। कहने लगे कि आठ रोज़ पहले निराला जी इसी बात को लेकर उन पर ख़ूब गर्मा चुके हैं लेकिन यह काम तो करना ही है, हमारी समझ में आप जाइये।......

वसन्तपञ्चमी के अवसर पर निराला जी के एकाएक प्रयाग से 'ग़ायब' हो जाने और फिर वाराणसी में उपस्थित होने की नाटकीय घटना के बाद उन्हें देखने की तड़प तो जी में थी ही मगर इस प्रस्ताव को लेकर जाने में उस समय अज्ञात संकोच उपजा। पौत्री के विवाह में निराला जी का पैसा लगे यह अवश्य चाहता था, अनदेखी छाया के

लिये भी ममत्व था, बेटी के बाप के रूप में रामकृष्ण के प्रति भी सहज सहानुभूति थी,—यह सब होते हुये भी संकोच था। निराला जी लीडर प्रेस से अपनी रॉयल्टी का पैसा उठाने से सदा इंकार करते हैं। अनेक वर्ष पूर्व तीन आदमियों की ज़मानत पर पाठक जी ने रामकृष्ण को ढाई हजार रुपया दिलवाया था, निराला जी ने तब भी रसीद पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया था। रामकृष्ण इस बार भी उनके पास गये थे और उन्हीं के कथनानुसार निराला जी ने कहा कि मैं हस्ताक्षर नहीं करूंगा, वैसे तुम्हारा तो है ही, जाकर ले लो। निराला जी की यह दृढ़ हठवादिता अपने कुछ मानसिक कारण रखती है और निराला जी को समझते हुये ही मैं इस काम में हाथ नहीं डालना चाहता था। उस समय का अनबूझा संकोच इस समय स्पष्ट समझ में आ रहा है। खैर। वैसे ही भगवती बाबू (वर्माजी) भी लीडर प्रेस पहुँच गये। मैंने कहा कि डेपुटेशन के लीडर 'नेता' होंगे, मैं साथ चलूंगा।

दोपहर के भोजन के लिये मैं और नेता जी दोनों ही पंत जी के यहां आमंत्रित थे। पाठक जी अपने दामाद को लेकर वहीं आ गये। एकाएक भगवती बाबू बोले: "भइ हम नहीं जायेंगे। हम चार बजे की गाड़ी से लखनऊ जायेंगे।" पाठकजी नाराज हो गये। भगवती बाबू और दम साध गये। बोले: "मैं कहता हूँ कि निरालाजी जब इस बात पर सरासर पागलपना बरत रहे हैं—और पागल तो वे हैं ही—तब उनके पास जाने से लाभ ही क्या? मैं कहता हूँ कि लाइये काग़ज़ मैं ड्राफ़्ट बनाये देता हूँ, निराला का पैसा उनके पागलपन की हालत में उनके एकमात्र उत्तराधिकारी पुत्र को दे दिया जाय। उसपर पंत जी मैं और नागर जी दस्तखत कर देंगे फिर आप रामकृष्ण को पैसा दे दीजियेगा।" पंत जी बोले: "खैर वह तो अंतिम अस्त्र है मगर मैं समझता हूँ कि आप लोगों को निराला जी के पास अवश्य जाना चाहिये। वे किसी कारणवश रामकृष्ण की बात नहीं मानते होंगे मगर आप लोगों की बात अवश्य मान जायेंगे। वे तो औढरदानी हैं, औरों की सहायता करते हैं, फिर यह तो पौत्री के विवाह का प्रश्न है।" भगवती बाबू और तन गये, बोले: "अब तो हम चार बजे की ट्रेन से जायेंगे।" मैंने कहा कि तब मैं आप के साथ न लौट सकूंगा, रात को आऊंगा।—प्रसंगवश यह लिख दूं कि हम दोनों ही परसों प्रातःकाल रेडियो हास्य गोष्ठी में भाग लेने के लिये प्रयाग पहुँचे थे। मेरे कथन पर भगवती बाबू ढीले पड़ गये।

ढाई बजे हमारा मिशनरी क़ाफ़िला दारागंज पहुँचा। श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय, श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी और श्री उमा शंकर सिंह गली के बाहर एक बंद दूकान के चबूतरे पर बैठे हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। पहुँचने पर मालूम हुआ, "निराला जी अभी सो रहे हैं।"

उमाशंकर को अकेले में घसीट कर पूछा कि गुरू कैसी मौज में हैं। उमा बोला: "तुहार काम न बनी। अबकी जब से बनारस से आये हैं बहुत चिड़चिड़ाते हैं। ऊ सब लोग वहां पैसावैसा दिहिन—रोज शराब कलिया का सत्कार ओत्कार पाये हैं न निराला जी, ओही से दिमाग इस बखत चढ़ा भया है।" उमाशंकर ने बतलाया कि काशी की राष्ट्रभाषा परिषद वाले चंगेर भर के बनारसी मिठाई लाये और आशुतोष

को रिझाकर टैक्सी में ही ले गये। यहां (प्रयाग में) साहित्यिकों पत्रकारों ने उनकी जन्मतिथि मनाने के लिए जो आयोजन किया था, वह बिन दूल्हा की बरात जैसा बिखर गया। वाराणसी में तीन चार दिन सत्कार से बिता कर निराला जी फिर टैक्सी पर ही वापस आये। काशी की कोई भक्त नवयुवती उनके साथ आई थी उसे कंबल इत्यादि बहुत सा सामान खरीद कर दिया। आजकल रोज रात में पीते हैं और रोज कलिया खाते हैं।

महाकवि की नींद पूरी हुई। हम लोग पहुंचे। निराला जी का स्वास्थ्य देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। देह खूब भरी हुई है। दाढ़ी और सिर के बाल कुछ छंटे हुये थे और अच्छे लग रहे थे। निराला जी भव्य लग रहे थे।

१३-२-१९६०

अमृतलाल नागर

(रामविलास शर्मा को पत्र)

[अमृतलाल नागर ने यह पत्र पूरा न किया था, न उसे इस अधूरे रूप में मेरे पास भेजा ही था। किन्तु वह उनके पास सुरक्षित रहा और जो बातें यहां छूट गई थीं, उन्हें आठ वर्ष बाद—१६.५.६८ के पत्र में—पूरा करके उन्होंने मेरे पास भेज दिया था।]

१९. पौत्री के विवाह का उपक्रम (२)

स्व० छाया के विवाह से पहले राम कृष्ण आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिये लीडर प्रेस गये थे। वाचस्पति जी पाठक उन्हें रुपया देना तो चाहते थे किन्तु निराला जी के हस्ताक्षर कानूनी खानापूरी के लिये आवश्यक थे। निराला जी दस्तखत करने की बात रामकृष्ण अथवा उनके किसी पैरोकार के सामने यह कह कर गोल कर चुके थे कि 'मेरे बाद वह पैसा राम कृष्ण ही को मिलेगा।' संयोग से मैं और भगवती बाबू रेडियो के किसी विशेष कार्यक्रम में भाग लेने के लिये उसी समय इलाहाबाद गये थे। मैं लीडर प्रेस में पाठक जी के यहाँ ही ठहरा था। पाठक जी ने प्रस्ताव किया कि एक बार तुम और भगवती बाबू भी निराला जी से मिलकर उन्हें रसीद पर हस्ताक्षर करने के लिये समझा-बुझाकर राजी करने का प्रयत्न करो। विचार विमर्श के बाद अंत में यह तय हुआ कि हम दोनों के अलावा पाठक जी और श्री गंगाप्रसाद पांडेय भी साथ चलें। पाठक जी के दामाद चि० प्रेमचंद्र भी उन दिनों वहीं आये हुए थे। चूंकि पाठक जी की बेटी, सौ० मुन्नी को बचपन में निराला जी का बड़ा लाड़ मिला था, इसलिये यह तय हुआ कि चि० प्रेमचंद्र को भी साथ ले लिया जाय जिससे कि नि० जी पर अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़े। यह सब तय होने के बाद हम लोग पंत जी के यहाँ गये···(या शायद मेरा और भगवती बाबू का वहां पहले ही से जाना तय था इसलिये वहाँ गये।) पंत जी स्वयं भी निराला जी से हस्ताक्षर करने की प्रार्थना करने चलना चाहते थे पर उनसे कहा गया कि आप कृपया न चलें। हो सकता है कि प्रभाव उलटा पड़े। बहरहाल, भगवती बाबू, पाठक जी, उनके जामाता और मैं दारागंज गये। रामकृष्ण और गंगाप्रसाद पाण्डेय रास्ते में एक दूकान पर बैठे हमारी प्रतीक्षा कर रहे

थे। पाण्डे हमारे साथ चले। पाठक जी को देखते ही नि० जी शायद हमारे आने का कारण भांप गये। भगवती बाबू ने बात आरम्भ की। उन्होंने कहा, कोई और बात करो। मैंने चि० प्रेमचंद्र को बहाना बनाकर बात उठाई; किंतु बात के उस विंदु को छूते ही वे डपट कर बोले : "क्वायट-क्यू, यू, आई, ई, टी—अण्डरस्टैण्ड।" उमाशंकर सिंह ने तब सूत्र साधना चाहा परंतु निराला जी ज़ोर से गर्मा उठे। बैंसवारी में बमकना शुरू किया। वह 'गद्य' भगवती बाबू को प्रलाप लगा लेकिन मैं उनकी नाराज़गी के सूत्र पकड़ रहा था। रायबरेली में रामकृष्ण के दूसरे ससुर के प्रति नि० जी का क्रोध बरस रहा था। हस्ताक्षर करने की बात फिर उठ ही न सकी। बाद में एक पंचनामा बना जिसमें निराला जी को मानसिक रोगी और रामकृष्ण को उनका एकमात्र वारिस बतला कर नि० जी की पौत्री के विवाह कार्य के लिये रामकृष्ण को रुपया देने की सिफारिश की गई थी। पंचनामे पर महादेवी जी, पंत जी, भगवती बाबू, गंगा पांड़े और मैंने हस्ताक्षर किये थे।

१६-५-६८ अमृतलाल नागर

(रामविलास शर्मा को पत्र)

२०. चेहरे की चमक उड़ गई है

मैं २/६ को इलाहाबाद में था। सबेरे ही वहां पहुंचा जहां निराला जी थे। वह अपने छोटे से कमरे की दीवार की तरफ मुँह किये—तहमत लपेटे—उघारे बदन, लेटे थे। पता नहीं कि सो रहे थे या जग रहे थे। हो सकता है कि शिथिलतावश मौन लेटे रहे हों। मैंने उन्हें बखोरना उचित नहीं समझा। अतएव मैं श्री रामकृष्ण के घर गया। वहां उनसे मिला। निराला जी के हालचाल पूछता रहा। पता चला कि कुछ दिनों पूर्व वह डांवाडोल हालत में थे। तमाम सूजन आ गयी थी। आशंका उत्पन्न हो गयी थी। दवा डाक्टर दास करते थे। परन्तु कवि ने उनसे दवा कराना स्वीकार नहीं किया। तब फिर दूसरे डाक्टर शायद व्रजविहारी से वही दवा कराने पर राजी हुए जो दवा उन्हें पिछले बार दी जाया करती थी। मालुम हुआ कि उससे लाभ भी हुआ। फिर मैं श्री रामकृष्ण के साथ निराला जी के कमरे में आया। तब तक वह हमारी तरफ हेर रहे थे। हम लोग बैठे। मैंने देखा कि हमारे महाकवि के चेहरे की चमक उड़ गयी है। गाल पिचक गये हैं। चमड़ा सांवला पड़ गया है। दाढ़ी लटक गयी है। वह लेटे थे। पेट लम्बोदर के पेट की तरह हो गया है। पेड़ू के नीचे ही तहमत काफी उठी हुई लगी। पूछने पर पता चला कि अपेन्डीसाइटिस का बहुत सा झोंझ निकल आया है। यह बात तब तक आ गये श्री जयगोपाल मिश्र ने बताई। वह निराला जी को चांपते रहे। पावों में सूजन कम हो गयी है। और कहीं सूजन नहीं दिखी। बीमारी का हाल पूछ ही रहा था कि कवि ने स्वयं बताया कि पेशाब काफी मात्रा में होने लगा है। यह लक्षण अच्छा है। केवल दूध और फलों का रस पीते हैं। पर मानते नहीं। इतवार के दिन—कुछ दिन पहले उन्होंने गोश्त खुद ही पकाया था और जल गये थे। वहीं मालूम हुआ कि

ठर्रा की बोतल मँगायी थी। छनी थी। यह कुतर्क भी होते चलते हैं। मुझे पहचान गये थे। हालांकि कि मिश्र जी ने मेरा नाम बता दिया था। बांदा का हाल पूछते रहे। किसी मिथिलेश कुमारी का नाम लेकर उसका हाल पूछा। पर मैं उसे नहीं जानता था। एक सुन्दर स्त्री को जानता था। मैंने कह दिया कि वह अब बांदा में नहीं है। कहीं और है। मिश्र जी से धीरे चांपने को कहा तो मिश्र जी ने हास्य में कहा : अब वह निराला कहां है कि ज़ोर से चांपू—कलकत्ते की चर्चा चल पड़ी। मिश्र जी ने ही बताया कि जिस घर में कवि और वह लोग ठहरे थे वहां ही ख़ूब छानी थी। वह बेचारा वैष्णव था। घबरा गया था। उसी दिन उसके बच्चा भी पैदा हो गया था। मिश्र जी ने कहा कि कवि अस्पताल जाने को तयार नहीं हुए क्योंकि उन्होंने कहा कि बहुत लोग बीमार हैं। पहले उनका इलाज हो। देखा तुमने। निराला संघर्ष कर रहा है शासकीय व्यवस्था के ख़िलाफ़। उसका रोग असहनीय बातों के कारण ही इतना उग्र रूप धारण कर लेता है। वह नेता नहीं है कि जुलूस निकाले। आवाज़ बुलंद करे। अब वह इस दशा में है कि पड़े-पड़े सब कष्ट अपने जर्जर शरीर पर ही झेल जाना चाहता है। मेरे सामने उनका सारा जीवन झलक मार गया। मैं उन्हें देखता था और देखकर मन में गुनने लगता था कि उनकी बीमारी के मूल में असंगतियों का बड़ा ज़बरदस्त तनाव हुआ होगा और है तभी वह इतना उग्र रूप ले लेती है। ऐसे रोग का उपचार दवा से नहीं हो सकता। मुझसे इसी हालत में कविता सुनाने की बात कही। पर मैं तयार न था। कापी न ले गया था। जबानी याद भी न थी। मैं इनकार कर गया। कोई मौक़ा न था। न मन था। तभी फिर बोले कि सनेही जी आये थे। मैंने उनका शिमला में अपमान नहीं किया था। उन्होंने उस दिन प्रयाग में गाना गाया था। कविता सुनाई थी। ख़ूब रस मिला था। दाद दे रहे थे। और अपने शिमला के व्यवहार की सफाई दे रहे थे। मैंने पूछा कि पंत जी भी आते हैं या नहीं। मालुम हुआ कि एक दिन आये थे। जी छौंक खा [सा ?] गया। उन्हें तो प्रतिदिन आना चाहिए। अपने से स्नेह पाकर बीमारी हल्की हो जाती है। इलाहाबाद के वातावरण में अजीब बेरहमी और ममत्वहीनता व्याप गयी है। फिर हम चले। पान मँगाकर कवि ने खिलवाये थे। वहाँ से हमें मिश्र जी श्री नारायण चतुर्वेदी जी के पास ले गये। वहीं दारागंज में हैं। उसी घर में जिस में एकबार मैं तुम्हारे साथ कई साल पहले गया था। निराला की बीमारी की चर्चा वहां भी चली। उन्होंने अपने सफेद बालों की परिपक्वता के स्वर में कहा कि निराला के भक्त ही उनकी बीमारी के कारण हैं क्योंकि वह ही हल्ला मचा मचा कर उत्पात खड़ा किये रहते हैं। एक बात उन्होंने यह भी कही कि यह गलत है कि निराला को लोगों ने ठुकराया है—चपत मारे हैं और तभी वह इस दशा को प्राप्त हुए हैं। अपनी दलील के समर्थन में उन्होंने नज़ीर दी कि तब मतवाला में निराला तो खुद ही दूसरों को कस-कस कर कोड़े मारते थे। वह फिर अपने साथ क्यों अच्छे व्यवहार की कल्पना के अधिकारी हैं। मैं चुप सुनता रहा। मुझे उनकी दलील कुछ भी न जँची।

बांदा : ५-६-६१

केदारनाथ अग्रवाल

(रामविलास शर्मा को पत्र)

२१. अशोक हाल और कान्स्टीट्यूशन क्लब में निराला-चर्चा

राष्ट्रपति-भवन का उत्सव मज़े का रहा, मगर तुम्हारे बिना बड़ा फीका लगा। मुंशी मिले थे, अधिक हाल नहीं पूछ पाया, उसके पहले बच्चन से पूछा कि रामविलास क्यों नहीं आए तो कहा कि निमंत्रण तो गया था पर पता नहीं क्यों नहीं आए, आशा तो थी। राष्ट्रपति का भाषण यथावत्, पुष्पितां वाचं···। एक बात समन्वय के संपादक होने की उनके मतलब की निकल आयी थी। नन्ददुलारे जी से बड़ी आशा थी पर बहुत ठंडे बोले। बच्चन ने 'मैं अकेला' और 'स्नेह निर्झर बह गया है' तथा नरेन्द्र जी ने 'जूही की कली' की आवृत्ति की, जैसे रस्म अदाई कर रहे हों। मैंने कुछ अंश पुरानी कविता का और एक 'नयी रचना' सुनाई जो लिखकर नहीं भेजूंगा, मिलने पर ही सुनाऊँगा। दिनकर कुछ काम की बातें बोलें, अपेक्षाकृत जीवट का आदमी है। कुल मिलाकर १ घंटे का नपानपाया उत्सव, शाही साज-सामान वाले अशोक हाल में। संत महाराज आ जाते तो घिसी पनहियाँ सिलवा दी जातीं।

शाम को कान्स्टीट्यूशन क्लब में मैंने संस्मरणों के साथ तुम्हारी रचना का भी अंश सुनाया, झुंझला २ कर। न जाने क्यों तुम्हार नाम मुंह मँ अउतै परी भर खून सूख जात है। फिर जुही की कली और अपनी लंबी कविता। इलाहाबाद वालों ने भावावेश तो दिखाया पर संतुलित नहीं रह सके। पर उसका राज़ तो खुला दूसरे दिन कमला-रत्नम के यहाँ की गोष्ठी में जब सबने निराला जी के विरुद्ध अपना दबा बुख़ार निकाला। सुनकर सन्न रह गया। सब से मतलब है नरेन्द्र, बच्चन और दिनकर से। तभी से कुछ ऊना ऊना हो रहा हूँ। मिलकर कार्यक्रम निश्चित करूँगा।

उज्जैन : २०-२-६२ शिवमंगलसिंह सुमन

(रामविलास शर्मा को पत्र)

[परी भर खून घटने की बात सुमन ने अवधी में लिखी है। अब वह मेरा नाम स्मरण नहीं करते, इसलिए स्वास्थ्य अच्छा है।]

२२. मनी आर्डर की रसीदें और कूपन

संयुक्त परिवार की देखभाल करने वाले निराला ने समय समय पर लोगों को रुपया भेजा था, उसके प्रमाणस्वरूप मनीआर्डर की कुछ रसीदे हैं जो उन्होंने सुरक्षित जमा कर रखी थीं।

(१) रामगोपाल त्रिपाठी के मार्फत पंडित मन्नीलाल सुकुल को २६, शंकर घोष लेन, कलकत्ता से निराला ने ५०) भेजे। मगड़ायर की डाक मुहर में तारीख है : २ मार्च '२६। (मन्नीलाल सुकुल महाजन थे; कर्ज़ चुकाने के लिये ये रुपये भेजे गये होंगे।)

(२) रामविहारी मिश्र के नाम शिवशेखर द्विवेदी, मार्फत केशवप्रसाद तेवारी, गढ़ा-कोला, पो० मगड़ायर उन्नाव ने १०) भेजे। (इन चारों रसीदों में भेजनेवाले का पता रोमन लिपि में निराला का लिखा हुआ है। ये रुपये शिवशेखर द्विवेदी की ओर से

निराला ने भेजे होंगे।) मगड़ायर की डाक मुहर में तारीख है : २ अक्तूबर '२८।
(रामविहारी मिश्र के बारे में कुछ नहीं मालूम।)
(३) केशव प्रसाद त्रिपाठी को निराला ने ३६ शंकर घोष लेन कलकत्ता से १०) भेजे। पुरवा की डाकमुहर में तारीख है : २२ जनवरी '२९।
(४) केशवप्रसाद त्रिपाठी को निराला ने कलकत्ते के उसी ठिकाने से १५) भेजे।

इनके अलावा मनीआर्डर के दो कूपन हैं जिनमें पहला निराला की हस्तलिपि में है और दूसरा संभवतः महादेवी वर्मा की हस्तलिपि में। दोनों में उल्लिखित रुपये रामशंकर शुक्ल को भेजे गये थे। उन्हीं ने दोनों कूपन मेरे पास भेजे थे।

(क) वीस रुपये भेजते हैं। छाया को रेशमी साड़ी ले दीजिए। केशव को १११) भेजे

पहले २७) इति।

निराला

25/-

(ख) श्री निराला जी के आदेशानुसार पच्चीस रुपये भेजे जा रहे हैं।

मन्त्री
साहित्यकार-संसद
प्रयाग

२३. 'वर्तमान धर्म' और मुंशी अजमेरी के पत्र

'वर्तमान धर्म' नाम के निराला के लेख को लेकर जो आन्दोलन चलाया गया था, उससे सम्बन्धित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे हुए मुंशी अजमेरी के कुछ पत्र 'सम्मेलन पत्रिका' भाग ५१, संख्या १-२ में प्रकाशित हुए थे। ये पत्र, आन्दोलन के समय, सन् ३२ में लिखे गए थे; चतुर्वेदी जी ने इन्हें उस समय प्रकाशित नहीं किया था। उनके आवश्यक अंश परिस्थिति की पूरी जानकारी के लिए साभार उद्धृत किए जाते हैं।

शान्तिकुटीर,
बनारस सिटी,
२५-११-३२

प्रिय श्री चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

'वर्तमान धर्म' को लेकर इधर बहुत कुछ लिखा गया। आपने लेखक का नाम नहीं दिया था, इससे कदाचित् कुछ ही लोग समझ सके होंगे कि लेख किसका है। परन्तु अब, जब श्री नन्द दुलारे वाजपेयी एम० ए० ने नाम खोल दिया तब 'विशाल भारत' के सब पाठक जान गए कि वह लेख 'निराला' जी का है।

मैं जानता हूँ कि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी एक विद्वान् एवं प्रतिभावान् पुरुष हैं। यद्यपि मेरा उनका मार्ग एक नहीं है और न मैं उनकी सभी रचनाओं को ही समझ सकता हूँ, परन्तु मेरे हृदय में उनके प्रति आदर और प्रेम का भाव है। मैं मानता

हूँ कि उनका पथ भी एक पथ है और वही नहीं, अन्य अनेक कवि उस पथ के पथिक हैं, जिनमें कई सुलेखक और सुलेखिकाएँ भी हैं। हां, यह हो सकता है कि वह पथ अभी उतना परिष्कृत न हुआ हो, जितना उसे होना चाहिए। परन्तु यह कोई विरोध की बात नहीं है, यदि अभी परिष्कृत नहीं हुआ तो आगे चलकर हो जाएगा। फिर यह बात भी नहीं है कि 'निराला' जी जो कुछ लिखते हैं, वह सभी अगम्य या असंगत अथवा असम्बद्ध होता है। उनकी अनेक रचनाएँ तुकान्त, बोधगम्य, और बहुत ही अच्छी हैं। उनमें से कुछ कविताओं के अंश यहाँ उद्धृत करता हूँ। देखिए, कितने सुन्दर हैं!

[यहाँ 'यमुना के प्रति' से चार पंक्तियां, 'तुम और मैं' से छह पंक्तियाँ, 'क्या दूँ' से सात, 'विधवा' से पाँच और 'दीन' से आठ पंक्तियां तथा 'शेफालिका' पूरी की पूरी उद्धृत करते हैं।] इन उद्धरणों में यह अन्तिम कविता-शेफालिका—'निराला' जी के मुक्त छन्द में है। उनके मुक्त छन्द के विषय में उस वर्ष कलकत्ता-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर उनसे बातें हुई थीं। मैं उनके डेरे पर गया था। उस समय उन्होंने अपने मुक्त छन्द मुझको सुनाए थे। सुनकर मैंने कहा था कि इस प्रकार से तो कोई सा भी गद्य पढ़ा जा सकता है। 'निराला' जी बोले—नहीं। उन्होंने अपनी 'अप्सरा' में से एक गद्य-अंश मुझे पढ़ने को दिया। मैंने वह पढ़ सुनाया। तब बोले कि मात्रा देकर अर्थात् लय में इस तरह पढ़िए। मैंने वैसे भी पढ़ दिया। तब उन्होंने कहा कि इसे पढ़िए—यह 'बहने दो' है, यदि 'बहने न दो' कर दिया जाएगा तो इस तरह नहीं पढ़ा जाएगा। मैंने उनके 'बहने दो' की तरह 'बहने न दो' भी पढ़ दिया। वे हंस पड़े। उस समय वहाँ श्री पद्मदत्त जी त्रिपाठी एम० ए०, श्री शिवशेखर जी द्विवेदी, श्री शान्तिप्रिय जी द्विवेदी आदि कई सज्जन उपस्थित थे। उनमें से श्री शशि शेखर जी या शिव शेखर जी, अच्छी तरह नाम स्मरण नहीं रहा, द्विवेदी जी ने कहा था कि हम यह मान लेते हैं कि जो संगीत जानता है, वह गद्य को इस तरह—मुक्त छन्द के पद्यवत्—पढ़ सकता है।

परन्तु निराला जी का मुक्त छन्द सर्वत्र गद्यवत् नहीं है। इसी 'शेफालिका' को लीजिए। इसकी सब पंक्तियाँ कवित्त—घनाक्षरी—के टुकड़ों की तरह हैं और उसी तरह पढ़ भी ली जाती हैं क्योंकि गति है उन टुकड़ों में। गति के लिए ही तीसरी पंक्ति में 'शेफाली' न लिखकर 'शेफालि' लिखा गया है। अन्त की दोनों पंक्तियों में—भर जाती और झर जाती—तुक भी मिली है, चाहे वह स्वयं मिल गयी हो या मिलाई गयी हो। अब इस रचना को हम चाहे 'निराला' जी के मुक्त छन्द में मानें, चाहे गद्य में, पर रचना बड़ी सुन्दर है—"यौवन उभार में प्यार से कंचुकी के सब बन्द खोल दिए, पल्लव-पर्यंक पर सोती हुई शेफाली के। मूक आवाहन से भरे लालसा वाले कपोलों के व्याकुल विकास पर गगन के चुम्बन शिशिर से झरते हैं।" प्रेयसी है शरीरधारिणी छोटी-सी शेफाली और उसका प्रेमी है अशरीर, अनन्त आकाश! वह उस सोती हुई यौवनमती को चूम रहा था कि वह जाग पड़ी। "उस जागती हुई प्रिया के वक्ष पर, नक्षत्र दीप कक्ष में लिए हुए, संतरण-आशी आकाश है।" अनन्त आकाश ने उस सोती हुई शेफाली पर इतने शिशिर चुम्बन बरसाये थे कि वह आर्द्र ही गयी, उसका मानस भर गया! जब वह जगी तब आकाश उसके वक्ष पर था, नक्षत्र दीप कक्ष में थे और वह अनन्त

आकाश उस छोटी सी शेफाली के वक्ष में वद्ध एवं संतरण-आशी था, अर्थात् उसके मानस में डूवता नहीं था, तैरकर "पार करना चाहता था सुरभिमय समीर लोक और शोक-दु:ख-जर्जर इस नश्वर संसार की क्षुद्र सीमा।" वह पहुंचना कहाँ चाहता था ?—"प्रणय से छाए हुए अमर विराम के सप्तम सोपान पर।" अर्थात् वह अनन्त जो—शेफाली के मानस रूप—छोटे से स्थान में प्रतिविम्व रूप से वद्ध हो गया था, फिर अनन्त में लीन होना चाहता था, पर होता क्या है कि—"पाती अमर प्रेमधाम, आशा की प्यास एक रात में भर जाती है, सुवह को आली, शेफाली झर जाती है।" अमर प्रेमधाम पाना तो चाहता है आकाश और पाती है शेफाली। यह विचित्रता है और कुछ भी नहीं क्योंकि जव जीव अमर प्रेमधाम में पहुंच जाएगा तव उसमें वद्ध ब्रह्म तो पहुँच ही चुका। इसलिए अनन्त की अनन्त में लीन होने वाली वात नहीं कही गयी। उसे कह देने में वह चमत्कार न रहता। मेरी राय में यह रचना इस विषय के अच्छे अन्य भाषा-भाषी कवियों की भी रचनाओं से टक्कर लेने वाली है।

यह 'शेफालिका' 'निराला' जी के 'परिमल' में पाई जाती है, पर मैं इस 'शेफालिका' में परिमल पाता हूं। अस्तु, इतना सव लिखने का तात्पर्य यह है कि उनकी ऐसी सुन्दर कृतियों को, उनकी सम्पूर्ण सेवाओं को इस 'वर्तमान धर्म' के कारण क्या भूल जाना चाहिए ? कदापि नहीं, हमें उनके उस 'वर्तमान धर्म' को ही भूल जाना चाहिए।

अव मैं उस 'वर्तमान धर्म' की वात कहूंगा। मैंने उसे पढ़ा और कुछ नहीं समझा। जोर लगाकर समझने की कोशिश भी नहीं की क्योंकि वह व्यर्थ होती। उस समय मुझे एक वात याद आ गयी थी। एक वार प्रवास में कहीं किसी ने मुझसे कहा था कि अमुक छायावादी कवि की अमुक कविता हम नहीं समझे, हमने उक्त कवि को पत्र लिखकर उस कविता का भाव समझा देने की प्रार्थना की। उत्तर में उक्त कवि महोदय ने लिखा—"हम कह नहीं सकते कि जव हमने यह कविता लिखी थी, तव हम किस स्थान और किस अवस्था में थे, इसलिए, इस अवस्था में उसका भाव समझा देने में हम असमर्थ हैं।" मैंने सोचा, कदाचित् यह लेख भी उन कवि जी की उक्त कविता की भाँति किसी विशेष स्थान से और विशेष अवस्था में लिखा गया हो।

हो सकता है कि मेरा वैसा सोचना ठीक न हो और 'निराला' जी उक्त कवि का अनुकरण न करके समझाने को उद्यत हो जायँ एवं समझाने भी लगे, परन्तु फिर भी हम लोग यदि न समझ सकें तो क्या उपाय है ? कुछ नहीं। इसलिए हम ऐसी चीज़ को समझने की चेष्टा ही क्यों करें। मान लीजिए, हम किसी दुकान में गए। हमने वहाँ वहुत सी चीज़ें रखी देखी। कोई एक चीज़ हमारी समझ में नहीं आयी। हमने दुकान-दार से उसका नाम पूछा। उसने जो नाम वतलाया वह भी हमारी समझ में न आया। उपयोग की वात भी हम नहीं समझे। तव क्या हमें उस दुकानदार के पीछे पड़ जाना चाहिए ? नहीं। हमें समझ लेना चाहिए कि उसने यह वस्तु हमारे या हम जैसों के लिए नहीं रखी है। सम्भव है उसका भी कोई ग्राहक हो। ऐसा समझकर, उस वस्तु से अपनी दृष्टि हमें ओझल कर लेना चाहिए, न कि उस दुकानभर से। मैं तो यही समझता हूँ और यही समझने की आपसे प्रार्थना करता हूं। यदि आपने मेरे विचार से सहमत होने की

कृपा की तो मैं हृदय से कृतज्ञ होऊँगा।

आपका, अजमेरी।

(मुंशी अजमेरी दरबारी आदमी थे किन्तु छायावादी कविता समझने में उन्होंने यहाँ जिस विवेक का परिचय दिया है, वह अनेक प्रतिष्ठित समालोचकों में दुर्लभ था, और है। विवेक के अलावा उनका पत्र समर्थ गद्य लेखक की रचना है। दूसरे दिन उन्होंने चतुर्वेदी जी को दूसरा पत्र लिखा।)

शान्ति कुटीर,
रामघाट, बनारस,
२६-११-३२

पूज्य चतुर्वेदी जी महाराज, प्रणाम !

यहाँ मैं श्री राय कृष्णदास जी के पास ठहरा हुआ हूँ। पर आते समय लखनऊ होकर आया था। वहाँ श्री दुलारे लाल भार्गव के यहाँ २-३ दिन ठहरा था। श्रीयुत निराला जी से कई बार वहाँ भेंट हुई थी। श्रीयुत श्रीराम जी शर्मा ने आपको लिखा ही होगा। अब मैं भी अपनी राय लिखता हूँ। मुझे श्री दुलारे लाल जी से मालूम हुआ कि निराला जी आजकल बहुत दुखी हैं। हाथ बहुत तंग है और उनकी एक मात्र कन्या बहुत बीमार है। इत्यादि। यही बातें यहाँ श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने सुनाई। ऐसे दुखी मनुष्य पर इस समय चारों ओर से साहित्यिक वार भी हो रहे हैं। तब उसका मस्तिष्क कैसे ठीक रह सकता है ? इस समय वे बहुत घबरा गए हैं और इसीलिए बौखला भी गए हैं। ऐसे समय में उन्हें सहानुभूति की आवश्यकता है। नहीं तो ऐसा आदमी कि जिसके—जोड़ू न जाँता, खुदा से नाता—है, ऐसे संकट के समय में सताया जाकर—घात और आत्मघात जैसे कुकर्म भी कर सकता है—आरत काह न करहिं कुकरमू। और, रहत न आरत के चित चेतू। उनकी दशा देखकर मेरा हृदय द्रवित हो गया और श्री शान्तिप्रिय जी ने तथा श्रीमन् राय साहब ने भी मुझसे कहा, इसलिए मैंने वह बड़ा पत्र आपको लिखा है जो इस पत्र के साथ है। अब कृपा करके इस झगड़े को समाप्त कर दीजिए। मेरी यह प्रार्थना है और श्रीमान् राय साहब की भी यही राय है। मेरा वह पत्र अगले ही अंक में—विशाल भारत में—छाप देने की कृपा कीजिए। ऊपर लिख दीजिए—मुंशी अजमेरी का पत्र। उस पत्र पर आप अपनी सम्मति भी प्रकाशित कर देने की कृपा कीजिए। मेरे पत्र से सहमत होकर इस 'वर्तमान धर्म' वाले झगड़े को बन्द करने की बात होनी चाहिए। बस, अब यह झगड़ा बन्द ही हो जाना चाहिए। बहुत हो गया और निराला जी की तथा नन्ददुलारे जी की दोनों की खूब छीछालेदर हो गयी। श्री राय साहब मज़ाक के टोन में कहते हैं कि एक ब्राह्मण की रोटी तो ले ली, अब क्या किसी की जान लीजिएगा ?

मेरा पत्र अगले ही अंक में छप जाना चाहिए। यदि गुंजाइश न रही हो तो कृपा कर कुछ मैटर उसमें से निकालकर इस पत्र के लिए जगह कर दीजिएगा। बड़ी कृपा होगी। मैं बहुत सोच-विचारकर इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इस झगड़े को इस तरह समाप्त कर दिया जाय। स्वीकृति देकर कृतार्थ कीजिए······

एक प्रार्थना और है, कृपा करके इस पत्र को पढ़कर फाड़ फेंकियेगा। इस पत्र की बात किसी को मालूम न हो, आपके सहकारियों को भी नहीं। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखिएगा। विशेष विनय।

आपका, अजमेरी

(चतुर्वेदी जी को पत्र संग्रह करने का बड़ा शौक है। यह दूसरा पत्र उन्होंने फाड़कर फेंका नहीं, इससे साहित्य के इतिहास की एक कड़ी सुरक्षित रही। किन्तु मुंशी अजमेरी ने पहले वाला पत्र छाप देने पर बड़ा जोर दिया था। चतुर्वेदी जी ने उसे नहीं छापा।)

['वर्तमान धर्म' वाला विवाद शुरू होने पर निराला ने ४ अक्तूबर सन् ३२ को जो पत्र बनारसीदास चतुर्वेदी को भेजा था, उसके अन्त में लिख दिया था, "यह पत्र भी छापिए।" चतुर्वेदी जी ने यह पत्र भी नहीं छापा था।

१७ अक्तूबर सन् ३२ के पत्र में निराला ने चतुर्वेदी जी को लिखा था, "न भेजा हो तो महात्मा जी और रवीन्द्र नाथ के पास भी एक प्रूफ और अनुवाद भेजकर सम्मति अवश्य-अवश्य लीजिए।" निराला के निबन्ध पर चतुर्वेदी जी ने इनकी सम्मतियाँ शायद नहीं मगायीं किन्तु उग्र की पुस्तक 'चाकलेट' पर—घासलेट-विरोधी आन्दोलन के दौरान—गाँधी जी की सम्मति मँगाई थी। इसे भी चतुर्वेदी जी ने उस समय प्रकाशित न किया था। गाँधी जी ने लिखा था, "मेरे मन पर जो असर आप पर हुआ नहीं हुआ है। मैं पुस्तक का हेतु शुद्ध मानता हूँ। इसका असर अच्छा पड़ता है या बुरा मुझे मालूम नहिं हैं। लेखक ने अमानुषी व्यवहार पर घृणा ही पैदा की है।"

गाँधी जी की राय प्रकाशित न करने पर मोहनसिंह सेंगर ने जुलाई १९५२ के 'नया समाज' में लिखा था :

"यदि वे इस पुस्तक के बारे में बापू जी से कुछ न पूछते तो कोई बात ही नहीं थी। पर जब उन्होंने उनके पास पुस्तक भेजी, तो एक जिम्मेदार और ईमानदार पत्रकार की हैसियत से उसके सम्बन्ध में बापू जी का जो मत था, वह भी प्रकाशित करना चाहिए था—भले ही उनके आन्दोलन पर इसका चाहे कैसा भी असर क्यों न पड़ता। बापू का मत एक निरपेक्ष समाज नेता का मत था। पाठक उसे पढ़कर अपना मत स्थिर करने अथवा निर्णय देने में स्वतंत्र थे। किन्तु अपने आन्दोलन को सफल बनाने के मोह ने चतुर्वेदी जी को इस पत्र को प्रकाशित न करने के लिए राजी कर लिया और वे इसे इन २० वर्षों तक दबाए बैठे रहे, यह नम्र से नम्र शब्दों में किसी भी सच्चे और जिम्मेदार पत्रकार की प्रतिष्ठा, बौद्धिक ईमानदारी और सार्वजनिक दायित्व की दृष्टि से शोभन नहीं कहा जा सकता।

"इतना ही नहीं, हमारी समझ में तो ऐसा करके चतुर्वेदी जी ने जाने या अनजाने एक बहुत बड़े साहित्यिक अनर्थ का पाप अपने सिर लिया है।"

इस पर चतुर्वेदी जी ने सेंगर जी को लिखा, "चलते वक्त स्वयं महात्मा जी ने कहा, 'आपने बहुत अच्छा किया कि कलकत्ते से अहमदाबाद चले आए। यदि मैं अपनी सम्मति छाप देता तो बड़ा अहित हो जाता।' "

अन्य पत्र में उन्होंने सेंगर जी को फिर लिखा, "उन्होंने खुद कहा था—'यदि मेरी सम्मति छप जाती, तो ऐसे साहित्य को प्रोत्साहन मिलता।' "

तीसरे पत्र में, इस बार अंग्रेजी में, उन्होंने सेंगर जी को पुनः सूचित किया, "it would have been quite improper to publish the letter without giving the gist of the entire talk." (सारी बातचीत का सारांश दिये बिना पत्र छापना निहायत अनुचित होता।—देखें, 'नया समाज,' जुलाई १९५२)।

प्रश्न यह है कि चतुर्वेदी जी ने गाँधी जी के पास जाकर उनसे 'चाकलेट' के बारे में बात भी की या नहीं। उग्र के निधन के बाद १९६७ में उन्होंने उग्र पर एक लेख लिखा। यह लेख १५ अप्रैल, १९६७ के 'हिन्दी टाइम्स' में प्रकाशित हुआ। इसमें एक तरह से घासलेट-विरोधी आदोलन की जिम्मेदारी उन्होंने उग्र पर डाली और उग्र की नियत सही थी, गांधी जी की यह बात मानी। उग्र के आत्मचरित 'अपनी खबर' के बारे में उन्होंने लिखा, "यदि इस ग्रन्थ को उग्र जी प्रारम्भ में ही, यानी सन् १९२७ के आसपास छपा देते तो उनकी मनोवृति को समझने में पाठकों और आलोचकों को पूरी-पूरी मदद मिलती।" किन्तु उग्र जी ने यह किताब सन् १९२७ में लिखी न थी, इसलिए उसे तब छपाना ज़रा मुश्किल था। किन्तु गांधी जी अपना पत्र बनारसीदास के नाम लिख चुके थे और उसे भेज चुके थे; यदि इसे वह छपा देते तो आत्मचरित के बिना भी, गांधी जी की राय के सहारे, उग्र की मनोवृत्ति समझने में—पाठकों और आलोचकों के अलावा, उन्हें भी—पूरी-पूरी मदद मिलती।

दरअसल इस मदद की उन्हें जरूरत नहीं थी। उग्र की मनोवृत्ति वह जानते थे, और गांधी जी की राय भले ही छपी न हो, चतुर्वेदी जी से वह छिपी नहीं थी। गांधी जी जल्दबाज़ी में राय कायम नहीं करते, यह बात वह जानते थे। इसलिए जब वह गांधी जी से मिले, तब उन्होंने और बहुत सा अंश्लील साहित्य गांधी जी को सुनाया किन्तु 'चाकलेट' के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

उसी लेख में चतुर्वेदी जी का बयान है, "चाकलेट नामक पुस्तक की चर्चा मैंने जानबूझकर बापू से नहीं की। मैं जानता था कि बापू प्रत्येक पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर अपनी सम्मति निश्चित करते थे और उस पर से उन्हें डिगा देना आसान काम न था। इसलिए 'सीधे आक्रमण' के बजाय घुमा फिराकर हमला करना मैंने ठीक समझा।"

गांधी जी से जब 'चाकलेट' पुस्तक की चर्चा ही नहीं हुई, तब उस पर अपनी सम्मति न छापने की बात गांधी जी कहते ही कैसे? चतुर्वेदी जी ने सेंगर जी को जो पत्र लिखे थे, उनमें कहीं स्पष्ट 'चाकलेट' पर गान्धी जी की राय नहीं दी गई।

'हिन्दी टाइम्स' वाले लेख के अन्त में चतुर्वेदी जी ने लिखा है, "यदि उग्र जी के जीवन काल में उनके प्रति कुछ अन्याय हुआ हो तो उनके स्वर्गवास के पश्चात् तो पूर्ण न्याय ही होना चाहिए।" अन्याय उग्र के प्रति हुआ, इसमें "यदि" की शर्त लगाना जरूरी नहीं है; निराला के प्रति और भी अधिक अन्याय हुआ, इसमें सन्देह नहीं। इसीलिए उनके जीवन काल में, और उनके स्वर्गवास के पश्चात्, अन्याय के प्रतिकार के

लिये इस विषय की संक्षिप्त चर्चा कर दी गयी है।।

२४. निराला वंशावली

(ग्राम-गढ़ाकोला, पो० चमियानी, ज़िला—उन्नाव)

१. श्री शिवाधार त्रिपाठी उर्फ (सधारी बाबा)—के चार पुत्र

१. सर्वश्री गयादीन, २. जोधा प्रसाद ३. रामसहाय ४. रामलाल

जोधा प्रसाद के एकमात्र पुत्र श्री बदलू प्रसाद
|
के चार पुत्र
१. बिहारीलाल २. रामगोपाल
३. केशवलाल ४. कालीचरण (स्वर्गीय)

इन चारों भाइयों के अनेक पुत्र और पुत्रियाँ हैं :—लक्ष्मी नारायण, कौशल किशोर, उमाकान्त, रमाकान्त, आदि।

रामसहाय
|
के एकमात्र पुत्र श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला," घर का नाम सूर्य कुमार
|
के एक पुत्र, एक पुत्री,
पुत्र रामकृष्ण त्रिपाठी,
पुत्री सरोज (स्वर्गीया १६३५)
रामकृष्ण त्रिपाठी के चार पुत्र,
दो पुत्रियाँ; पुत्र :
१. गिरिजा कान्त २. अवधेश कुमार,
३. अमरेश कुमार, ४. अखिलेश कुमार;
पुत्रियाँ : १. छाया (स्वर्गीया १६६७)
२. अलका रानी।

विशेष

१. निराला जी का वास्तविक परिवार निराला जी की बीमारी के समय से ही इलाहाबाद में रहता है। पता—श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, आत्मज, महाकवि निराला, २६५, बस्की खुर्द, दारागंज, इलाहाबाद;

२. ग्राम गढ़ाकोला में जो पैतृक मकान है, उसमें श्री बिहारीलाल त्रिपाठी सपरिवार रहते हैं;

३. केशवलाल, स्वर्गीय कालीचरण और रामगोपाल क्रमशः दलमऊ, लालगंज (रायबरेली) तथा कलकत्ता (बंगाल) में रहते रहे हैं।

४. बिहारीलाल त्रिपाठी तथा उनके बन्धु या पुत्र लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी वगैरह पं० जोधाप्रसाद के पुत्र बदलूप्रसाद के वंशज हैं। ये पं० रामसहाय त्रिपाठी के पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के वंशज नहीं हैं। किन्तु अपने को निराला का भतीजा और पौत्र बतलाकर सरकार तथा जनता से अपना स्वार्थ साधन करना, रुपये पैसे तथा किसी प्रकार की भी सहायता प्राप्त करना, इनका धर्म हो गया है।

ये हमारे पट्टीदार हैं, जो निराला की महानता से जलते हैं तथा उनकी कीर्ति में कालिख पोतने का प्रयास करते रहते हैं। ये अपने पिता, पितामह का नाम न लेकर मेरे पिता श्री निराला के वंशज या आश्रित बनकर उनके नाम से गर्हित उपार्जन करते

हैं। सरकार को तो चाहिए कि इनको ऐसा करने से रोके, इन्हें किसी प्रकार की सहायता न दे और जो कुछ दिया हो, उसे वापस ले ले। क्योंकि ये लोग निराला के नाम से या सम्बन्ध से किसी भी प्रकार की सहायता पाने का नैतिक अधिकार नहीं रखते।

मैंने इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री भा० सरकार, मु० मंत्री उ० प्र० तथा डी० एम० उन्नाव को भी लिखा था, पता नहीं उस पर कोई कार्यवाही हुई या नहीं, मुझे कोई सूचना नहीं मिली।

रामकृष्ण त्रिपाठी

परिशिष्ट

('मतवाला'—संपादक के नाम एक पत्र)

नवजादिकलाल श्रीवास्तव को

[कलकत्ता,
अगस्त १९२४]

श्रद्धेय मुंशी जी,

मतवाला के गत किसी अंक में आपने मेरे सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उस पर मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। आशा है, आप मेरा पत्र 'मतवाला' में प्रकाशित कर देंगे।

मेरे कुछ मित्रों का आग्रह है, अपनी कविता की मौलिकता और अमौलिकता के सम्बन्ध में मैं स्वयं कुछ लिखूँ; अतएव स्वतंत्र रूप से कुछ न लिखकर मैं आपके इस पत्र में ही उनके सम्बन्ध में कुछ निवेदन करूँगा।

आपके पत्र में मेरी जितनी कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, उनमें मौलिक कविताओं की संख्या ही अधिक है। उन अधिक-संख्यक कविताओं का नामोल्लेख मैं निष्प्रयोजन समझता हूँ। अतएव मैं केवल उन्हीं कविताओं का उल्लेख करूँगा जिन्हें मैंने पहले डाक्टर टगोर की कविताएँ पढ़ लेने पर, दो भिन्न रूपों के चित्रण में सादृश्य देखने के अभिप्राय से, लिखा था। मेरी 'क्यों हँसती हो, कहाँ देश है' कविता की ४३ लाइनों में ७/८ लाइनें डाक्टर टगोर की हैं। मेरी 'प्रिया से' और 'क्षमा-प्रार्थना' में डाक्टर टगोर के ही भाव अधिक हैं। कविवर की 'जीवन देवता' का उद्देश दूसरा है; मेरा दूसरा, उनकी कविता में वही भाव दूसरी ओर झुकाए गए हैं, मेरी में दूसरी ओर। मेरी यह कविता उन्हीं के भावों पर लिखी गयी है। 'तट पर' में चार-पाँच लाइनें महाकवि की हैं। 'ज्येष्ठ' के भाव में उनके 'वैशाख' के कुछ भाग आए हैं। सम्भव है, और इसी कविता में उनका कोई भाव आ गया हो, परन्तु उसके लिए मैं कुछ कह नहीं सकता। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखने की इच्छा थी। परन्तु किसी विशेष कारण से आज यहीं तक।

एक बात और। मेरी 'अनामिका' पुस्तिका की 'लज्जिता' कविता को, सुना, लखनऊ के कोई 'साहित्य-सेवी मेरे एक मित्र से रवी बाबू की कविता का अनुवाद या ऐसा ही कुछ बतलाते थे। सौभाग्य से, 'केन जामिनी ना जेते जागाले ना नाथ बेला

होलो मरी लाजे,' मैं भी गाता हूँ। मैंने अपने मित्र को दोनों के पद सुनाए। न जाने क्यों, उन्होंने उसे न अनुवाद कहा और न भावापहरण।

'कवीन्द्र' में मेरी एक कविता निकली है, मुझे उसका नाम याद नहीं। कोई सज्जन उसमें भी रवी बाबू के काव्य की छाया पाते हैं। कलकत्ते में मेरे एक मित्र से उन्होंने कहा भी था। यह चोरी मेरी समझ में नहीं आयी। रवी बाबू की कविता के साथ उसका उद्धरण करने से, सम्भव है, मेरी समझ में आ जाय।

विनीत—

सूर्यकान्त

[यह पत्र ३० अगस्त १६२४ के मतवाला में प्रकाशित हुआ था। इस पत्र का संबन्ध उस विवाद से है जो निराला की रचनाओं में भावापहरण को लेकर चला था।]

●●●